स्थापित वि. संवत् १९३२ (१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

जम्मू व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए. प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी (लाहौर) की असली व प्रामाणिक पंचांग 2010-11 ई.
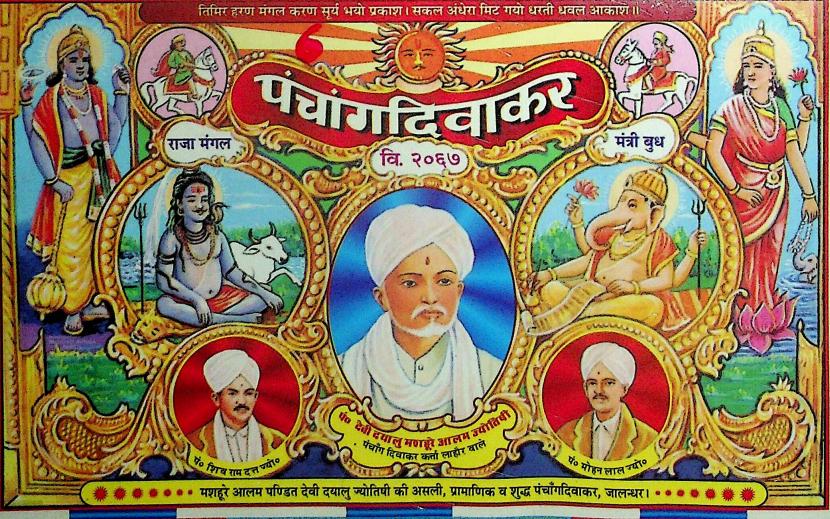
इस पंचांग का कापी राइट नं. A 27587/80 तथा Trade Mark No. 472584 भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है।

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १३५ वाँ (कुम्भ-महापर्व संस्करण)

एकमात्र वितरक :
मॉडर्न पब्लिशर्ज़
रेलवे रोड, जालन्धर
फोन : 2457160

मशहूरे आलम
पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़
माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008

अन्य प्राप्ति स्थान :
जनरल बुक डिपो
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 2457959

मूल्य: रु० 60.00

स्थापित सं० 1875 ई०

गौरवमयी वर्ष प्रवेश 135 वां

मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी के सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित

पंचाँग दिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद-आलम जन्त्री उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्त्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि, में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं बर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश यात्रा योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित निर्दिष्ट किए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री—संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 351 रुपए होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 700 रुपए अथवा 11 पौंड होगी।

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री—आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विशेष रूप से विवरण तथा हस्तलिखित उपाये दिए जाते हैं। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता तथा माता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। इस वृहद् जन्मपत्री के लिए फीस 701 रुपए से 1100 रुपए तक होगी। विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 1000 रुपए अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

कम्प्यूटर (Computerized) शुद्ध/वैज्ञानिक जन्मपत्री—लेटैस्ट प्रामाणिक सौफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री एवं हस्तलिखित उपायों सहित मध्यम 351/- रुपये, वृहद् षड्वर्गी फलादेश व हस्तलिखित उपायों सहित 751 रुपये।

पत्र व्यवहार एवं मनीआर्डर/ड्राफ्ट भेजने के लिए पता —
पं. पन्ना लाल ज्योतिषी M.A.
पंचांगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय (पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़)
चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)-पिन-144008

वायदा एवं शेयर व्यापारियों को विशेष सूचना

वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, सोना, चाँदी, कापर, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए दैनिक चाँस की एडवांस (Advance) रूप में अर्थात् आने वाले महीने की खास मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। एक मास की प्रति (एक) जिन्स की फीस 601 रुपए होगी। जोकि मनीआर्डर या ड्राफ्ट आने पर लिखित रूप में एक महीने की एडवांस रिपोर्ट भेजी जाएगी।

जो सज्जन/व्यापारी प्रतिदिन लिखित रिपोर्ट के अतिरिक्त फोन पर भी बातचीत कर किसी जिन्स या शेयर बाजार का रूख जानना चाहते हैं, उनके लिए फीस 2500 रुपए मासिक होगी। फीस (Advance) आने पर ही आगामी मास की रिपोर्ट भेजी जाएगी।

शेयर-बाज़ार—शेयर बाज़ार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों में तेज़ी के चाँस के लिए शेयर बाज़ार की दैनिक अर्थात् एडवांस मासिक रिपोर्ट की फीस 601 रुपए। साथ में अपनी जन्मपत्री की फोटो कापी भी भेज दें। विस्तृत विज्ञापन 'व्यापारिक वस्तुओं व शेयरों में मन्दा-तेजी' लेख के लिए प्रारम्भ में देखें। प्रतिदिन फोन पर रुख जानने के लिए फीस 2500 रुपए मासिक होगी।

वर्षफल—आपके लिए आगामी वर्ष कैसा रहेगा? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन् ई० व्यवसाय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 401 रुपए होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

M.O./ड्राफ्ट भेजने के लिए पता : ☎ 0181-2457959
पं. विवेक शर्मा सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-8 (पं.)

गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

श्री गणेशाय नमः

संस्थापक : पं. देवी दयालु ज्योतिषी

श्री सरस्वत्यै नमः

स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

नया "शोभन" नामक वि. संवत् पंचाँग दिवाकर के पाठकों के लिए शुभ एवं मंगलमय हो

वि. संवत् २०६७ (सन् 2010-11 ई.)

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

राजा मंगल

मन्त्री बुध

मशहूरे आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

लेखक एवं गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी) (स्वर्णपदक प्राप्त)
सुपुत्रः स्वर्गीय पं. चूनी लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी
संपादक : पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल एल.बी.,), पं. पंकज शर्मा (एम.कॉम)
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144 008 (भारत) फोन नं. 0181-2457959, फैक्स 2227388

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १३५वां

स्थापित वि. संवत् १९३३

प्रकाशक : मॉडर्न पब्लिशर्ज़, रेलवे रोड, जालन्धर शहर, फोन : 2458388

ध्यान दें—पंचांग की प्रारम्भिक कुछ प्रतियों में भूलवश पक्ष वाले पृष्ठ 87 से 112 तक में "चन्द्र राशि प्रवेश" वाले Sub Heading में "घड़ी-पल" की बजाए "घण्टे-मिंट" छप गया है। कृपया सुधार कर घड़ी-पल पढ़ें। पंचांग की शेष प्रतियों तथा इस प्रति में यह अशुद्धि नहीं है। —संपादक

विषय-सूची—पंचांगदिवाकर संवत् २०६७ (सं. 2010-11 ई.)

✤ देखें पृष्ठ 63-64

वर्ष का राजा—मंगल✤, मन्त्री—बुध

इस वर्ष के नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

≈आगामी वर्ष के नवीन विषय≈

(1) पितृदोष कारण एवं निवारण —विशेष लेख

(2) हस्तरेखा सम्बन्धी विशेष योग

(3) विवाह एवं सन्तान सम्बन्धी विशेष

(4) कुण्डली में चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योग

(5) म. प्र. के अक्षांश—रेखाँश

नोट—पृष्ठों की सीमित संख्या के कारण पूर्व घोषित एक लेख नहीं दे पाएँ, आने वाले वर्ष में सम्मिलित करने का प्रयास करेंगे।

पंचाँग दिवाकर के १३५वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानन्द तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यतायाः गौरवान्वितायाः समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्यः प्राक् गणिताचार्येण सु-प्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्रः गणिताचार्यः पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिषः व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामु-पेयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयोः सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुरः प्रचारः प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मानः शुभाशीरपि कामये।

तिथौ

वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासरः

प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी

श्री हस्त-मुद्रा—

१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ रामेश्वर मठः

श्री काशी धर्मपीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम्(वाराणसी)

प्रमुख व्रत, पर्व, त्यौहार एवं छुट्टियाँ (सन् 2010-11 ई.)

जनवरी 2010 ई.

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. शुक्र
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	3 जन. रवि
गु. गोबिन्दसिंह जयं. (ना.शा.)	5 जन. मंग
षट्तिला एकादशी व्रत	10 जन. रवि
लोहड़ी पर्व	13 जन. बुध
मकर संक्रान्ति (माघी)	14 जन. गुरु
मौनी अमावस	15 जन. शुक्र
कंकण सूर्यग्रहण	15 जन. शुक्र
मे. फाल्गू (पिहोवा) हरि.	15 जन. शुक्र
श्रीगौरी तृतीया व्रत	18 जन. चंद्र
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	19 जन. मंग
वसन्तपंचमी, श्रीपंचमी	20 जन. बुध
सरस्वती जयन्ती	20 जन. बुध
रथ-आरोग्य सप्तमी	22 जन. शुक्र
पुत्र सप्तमी व्रत	22 जन. शुक्र
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. मंग
भीष्म द्वादशी	27 जन. बुध
माघ पूर्णिमा	30 जन. शनि
श्रीगुरु रविदास जयंती	30 जन. शनि
माघ स्नान समाप्त	30 जन. शनि

फरवरी

अङ्गारकी गणेश चतुर्थी	2 फर. मंग
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फर. शुक्र
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	12 फर. शुक्र
प्रथम शाही स्नान-कुम्भ महापर्व, हरिद्वार	12 फर. शुक्र
शनिवारी फागु. अमावस	13 फर. शनि
फागुन अमावस स्नान	14 फर. रवि
होलाष्टक प्रारम्भ	22 फर. चंद्र
गोबिन्द द्वादशी	25 फर. गुरु
फा. पूर्णिमा, होली	28 फर. रवि
होलाष्टक समाप्त	28 फर. रवि
होलिका दहन	28 फर. रवि

मार्च

वसन्तोत्सव	1 मार्च चंद्र
होला मेला (आनंदपुर सा.)	1 मार्च चं.
शीतलाष्टमी व्रत	8 मार्च चंद्र
वारुणी पर्व	13 मार्च शनि
सोमवती चैत्र अमावस	15 मार्च चं.
द्वितीय शाही स्नान-कुम्भ महापर्व, हरिद्वार	15 मार्च चंद्र
वि. संवत् 2066 पूर्ण	15 मार्च चंद्र
वि. संवत् 2067 प्रा.	16 मार्च मंग
चैत्र(वासन्त)नवरात्रे शुरु	16 मार्च मंग
गौरी तृतीया (गणगौर)	18 मार्च गुरु.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	20 मार्च शनि
महाविषुव दिन	20 मार्च शनि
स्कन्द षष्ठी	21 मार्च रवि
श्रीदुर्गाष्टमी व्रत	23 मार्च मंग
मे. बाहूफोर्ट (जम्मू)	23 मार्च मंग
श्रीरामनवमी	24 मार्च बुध
वासन्त नवरात्रे समाप्त	24 मार्च बुध
अनङ्ग त्रयोदशी	28 मार्च रवि
श्रीमहावीर जयन्ती	28 मार्च रवि
वैशाख स्नान प्रारम्भ	30 मार्च मंग.

अप्रैल

गुड फ्राइडे	2 अप्रै. शुक्र
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै. बुध
मुख्य शाही स्नान-कुम्भ महापर्व, हरिद्वार	14 अप्रै. बुध
डॉ. अम्बेदकर जयन्ती	14 अप्रै. बुध
वैशाख अधिक मास प्रा.	15 अप्रै. गु.
अधि. वैशाख पूर्णिमा	28 अप्रै. बुध

मई

वैशाख अधिक मास समाप्त	14 मई शुक्र
अक्षय तृतीया	16 मई रवि
श्रीपरशुराम जयंती	16 मई रवि
आद्यगुरु शंकराचार्य जयं.	18 मई मंग
श्रीगङ्गा जयन्ती	20 मई गुरु
श्री सीता नवमी	22 मई शनि
श्रीबगुलामुखी जयं.	22 मई शनि
नृसिंह जयन्ती	26 मई बुध
वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा	27 मई गुरु
श्रीकूर्म जयन्ती	27 मई गुरु
वैशाख स्नान समाप्त	27 मई गुरु

जून

भद्रकाली एकादशी	8 जून मंग
भावुका शनि अमावस	12 जून शनि
वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष)	12 जून श.
शनैश्चर जयन्ती	12 जून शनि
रम्भा तृतीया व्रत	14 जून चंद्र
श्रीदुर्गाष्टमी	19 जून शनि
सा. दक्षिणायन प्रारम्भ	21 जून चंद्र
श्रीगंगा दशहरा	21 जून चंद्र
निर्जला एकादशी व्रत	22 जून मंग
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	26 जून शनि
सन्त कबीर जयन्ती	26 जून शनि
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण	26 जून शनि

जुलाई

रथ यात्रा (पुरी)	13 जुला. मंग
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. शुक्र
कुमार षष्ठी	16 जुला. शुक्र
विवस्वत सप्तमी	17 जुला. शनि
हरिशयनी एकादशी	21 जुला. बुध
चातुर्मास्य व्रतादि प्रा.	21 जुला. बुध
कोकिला व्रत	25 जुला. रवि
गुरुपूर्णिमा, व्यास पूजा	25 जुला. रवि

अगस्त

हरियाली अमावस	10 अग. मंग.
मधुश्रवा-हरियाली तीज	12 अग. गुरु
नाग-पंचमी	14 अग. शनि
श्रीकल्कि जयन्ती	14 अग. शनि
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. रवि
भाद्रपद संक्रान्ति	16 अग. चंद्र
गो. तुलसीदास जयं.	16 अग. चंद्र
दुर्गाष्टमी (मे. चिन्तपूर्णी)	17 अग. मंग
ऋक् उपाकर्म	23 अग. चंद्र
श्रावण पूर्णिमा	24 अग. मंग
रक्षा-बन्धन (राखी)	24 अग. मंग
श्रावणी उपाकर्म	24 अग. मंग
दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा	24 अग. मंग
श्रीगणेश बहुला चतुर्थी	28 अग. शनि
चन्दन षष्ठी व्रत	30 अग. चंद्र

सितम्बर

श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	1 सितं. बुध
श्रीकृष्णजन्माष्टमी (वैष्णव)	2 सितं. गुरु
गोकुलाष्टमी	2 सितं. गुरु
श्रीगुग्गा नवमी	3 सितं. शुक्र
वत्स द्वादशी (पूजा)	5 सितं. रवि
कुशोत्पाटनी पिठोरी अमावस	8 सितं. बुध
हरितालिका तृतीया	10 सितं. शुक्र
साम उपाकर्म	10 सितं. शुक्र
गौरी तृतीया	10 सितं. शुक्र
सिद्धिविनायक व्रत	11 सितं. शनि
कलंक चतुर्थी (चंद्रदर्शन निषेध)	11 सितं. शनि
ऋषि पंचमी	12 सितं. रवि
सूर्य षष्ठी व्रत	13 सितं. चंद्र
सन्तान सप्तमी व्रत	14 सितं. मंग
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा.	15 सितं. बुध
श्रीराधाष्टमी	15 सितं. बुध
श्रीचन्द्रनवमी (उदासीन)	16 सितं. गुरु
श्रीवामन जयन्ती	19 सितं. रवि
अनन्त चतुर्दशी व्रत	22 सितं. बुध
मेला बाबा सोढल (जालंधर)	22 सितं. बुध
प्रोष्ठपदी, पूर्णिमा श्राद्ध	23 सितं. गुरु
पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रा.	24 सितं. शुक्र
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा.	30 सितं. गुरु

अक्तूबर

जीवित्पुत्रिका व्रत	1 अक्तू. शुक्र
महात्मा गाँधी जयंती	2 अक्तू. शनि
सर्वपितृ श्राद्ध	7 अक्तू. गुरु
महालय श्राद्ध समाप्त	7 अक्तू. गुरु
शरद् नवरात्रे प्रारम्भ	8 अक्तू. शुक्र
उपाङ्ग ललिता व्रत	11 अक्तू. चंद्र
सरस्वती आवाहन	13 अक्तू. बुध
सरस्वती पूजन	14 अक्तू. गुरु
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	15 अक्तू. शुक्र
सरस्वती बलिदान	15 अक्तू. शुक्र
महानवमी, शस्त्र पूजा	16 अक्तू. शनि
सरस्वती विसर्जन	16 अक्तू. शनि
नवरात्रे समाप्त	16 अक्तू. शनि
विजयादशमी (दशहरा)	17 अक्तू. रवि
भरत मिलाप	18 अक्तू. चंद्र
शरद् पूर्णिमा व्रत	22 अक्तू. शुक्र
आश्विन पूर्णिमा	22 अक्तू. शुक्र
महर्षि वाल्मीकि जयं.	22 अक्तू. शुक्र
कार्तिक स्नान प्रारम्भ	22 अक्तू. शुक्र
करवा चौथ व्रत	26 अक्तू. मंग
अहोई अष्टमी व्रत	30 अक्तू. शनि

नवम्बर

गोवत्स द्वादशी	3 नवं. बुध
धन त्रयोदशी	3 नवं. बुध
श्रीहनुमान जयन्ती	4 नवं. गुरु
नरक चतुर्दशी	5 नवं. शुक्र
दीपावली	5 नवं. शुक्र
कार्तिक अमावस स्नान	6 नवं. शनि
अन्नकूट-गोवर्धन पूजा	6 नवं. शनि
विश्वकर्मा डे (पंजाब)	6 नवं. शनि
भाई दूज, यम द्वितीया	7 नवं. रवि

श्रीविश्वकर्मा पूजा	7 नवं. रवि
सूर्य षष्ठी व्रत	11 नवं. गुरु
गोपाष्टमी	14 नवं. रवि
अक्षय, कूष्माण्ड नवमी	15 नवं. चंद्र
भीष्मपंचक प्रारम्भ	17 नवं. बुध
चातुर्मास्य व्रतादि समा.	17 नवं. बुध
तुलसी विवाह	18 नवं. गुरु
वैकुण्ठ चतुर्दशी	19 नवं. शुक्र
कार्तिक पूर्णिमा	21 नवं. रवि
श्रीगुरु नानक जयंती	21 नवं. रवि
भीष्मपंचक समाप्त	21 नवं. रवि
मे. पुष्कर, रामतीर्थ (अमृतसर)	21 नवं. रवि
कार्तिक स्नान समाप्त	21 नवं. रवि
श्रीकालभैरवाष्टमी	28 नवं. रवि

◆ दिसम्बर ◆

स्कन्द-गुह षष्ठी	11 दिसं. शनि
मित्र सप्तमी	12 दिसं. रवि
मोक्षदा एकादशी व्रत	17 दिसं. शुक्र
श्रीगीता जयन्ती	17 दिसं. शुक्र
पिशाचमोचन श्राद्ध	20 दिसं. चंद्र
सायन उत्तरायण प्रारम्भ	22 दिसं. बुध
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शनि

◆ जनवरी-2011 ई. ◆

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. शनि
सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य)	4 जन. मंग
लोहड़ी पर्व	13 जन. गुरु
मकर संक्रान्ति (माघी)	14 जन. शुक्र
पुत्रदा एकादशी व्रत	16 जन. रवि
माघ स्नान प्रारम्भ	19 जन. बुध
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	22 जन. शनि
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. बुध
षट्तिला एकादशी व्रत	29 जन. शनि

◆ फरवरी ◆

माघ (मौनी) अमावस	2 फर. बुध
माघ अमावस स्नान	3 फर. गुरु
श्रीगौरी तृतीया व्रत	6 फर. रवि
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	6 फर. रवि
वसन्तपंचमी, श्रीपंचमी	8 फर. मंग
सरस्वती जयन्ती	8 फर. मंग
पुत्र सप्तमी व्रत	10 फर. गुरु
भीष्म द्वादशी	15 फर. मंग
माघ पूर्णिमा	18 फर. शुक्र
श्रीगुरु रविदास जयंती	18 फर. शुक्र
माघ स्नान समाप्त	18 फर. शुक्र

◆ मार्च ◆

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	2 मार्च बुध
होलाष्टक प्रारम्भ	13 मार्च रवि
गोविन्द द्वादशी	16 मार्च बुध
फा. पूर्णिमा, होली	19 मार्च शनि
होलिका दहन (प्रदोष में)	19 मार्च शनि
वसन्तोत्सव	20 मार्च रवि
होला मेला श्रीआनंदपुर व पांओटा साहिब	20 मार्च रवि
अङ्गारकी गणेश चतुर्थी	22 मार्च मंग
शीतलाष्टमी व्रत	26 मार्च शनि
वारुणी पर्व	31 मार्च/1 अप्रै.

◆ अप्रैल ◆

वि. संवत् 2067 पूर्ण	3 अप्रै. रवि

एकादशी व्रत-सं. २०६७

षट्तिला (माघ कृष्ण)	10 जन. रवि
जया (माघ शुक्ल)	26 जन. मंग
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	9 फर. मंग
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	25 फर. गुरु
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	11 मार्च गुरु
कामदा (चैत्र शुक्ल)	26 मार्च शुक्र
वरुथिनी (शुद्ध वैशाख कृ.)	10 अप्रै. श.
पुरुषोत्तमा (अधि. वैशाख शु) वै.	25 अप्रै. र.
पुरुषोत्तमा (अधि. वैशाख कृ.) स्मा.	9 मई र.
मोहिनी (शुद्ध वैशाख शु.)	24 मई चं.
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	8 जून मंग
निर्जला एका. (ज्येष्ठ शुक्ल	22 जून मंग
योगिनी (आषाढ़ कृष्ण)	8 जुला. गुरु
हरिशयनी (आषाढ़ शुक्ल)	21 जुला. बुध
कामिका (श्रावण कृष्ण)	6 अग. शुक्र
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	20 अग. शुक्र
अजा (भाद्र कृ.) स्मार्त	4 सितं. शनि
अजा (भाद्र कृ.) वैष्णव	5 सितं. रवि
पद्मा (भाद्र. शुक्ल) स्मा.	18 सितं. शनि
इन्दिरा (आश्विन कृष्ण)	4 अक्तू. चंद्र
पापांकुशा (आश्विन शुक्ल)	18 अक्तू. च.
रमा (कार्तिक कृष्ण)	2 नवं. मंग
देवप्रबोधिनी (कार्तिक शु.)	17 नवं. बुध
उत्पन्ना (मार्ग. कृ.) स्मार्त	1 दिसं. बु.
उत्पन्ना (मार्ग. कृ.) वैष्णव	2 दिसं.गुरु
मोक्षदा (मार्ग. शुक्ल)	17 दिसं. शुक्र
सफला (पौष कृष्ण)	31 दिसं. शु.

(सन् 2011 ई.)

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	16 जन. रवि
षट्तिला (माघ कृष्ण)	29 जन. शनि
जया (माघ शुक्ल)	14 फर. चंद्र
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	28 फर. चंद्र
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	16 मार्च बुध
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	30 मार्च बुध

श्रीसत्यनारायण व्रत

श्रीसत्यनारायण व्रत का पूर्णमाशी के स्नान, दानादि उदयव्यापिनी के पर्वकालीन तारीख से कभी-कभी एक तारीख का अन्तर पड़ सकता है। क्योंकि चन्द्रोदय कालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

माघ	29 जन. शुक्र
फाल्गुन	28 फर. रवि
चैत्र	29 मार्च चंद्र
अधि. वैशाख	27 अप्रै. मंग.
शुद्ध वैशाख	27 मई गुरु
ज्येष्ठ	25 जून शुक्र
आषाढ़	25 जुला. रवि
श्रावण	24 अग. मंग
भाद्रपद	22 सितं. बुध
आश्विन	22 अक्तू. शुक्र
कार्तिक	21 नवं. रवि
मार्गशीर्ष	20 दिसं. चंद्र

——(सन् 2011 ई.)——

पौष	19 जन. बुध
माघ	17 फर. गुरु
फाल्गुन	19 मार्च शनि

अमावस्याएँ (स्नान-दानार्थ)

माघ	15 जन. शुक्र
फाल्गुन (शनैश्चरी)	13 फर. शनि
चैत्र (सोमवती)	15 मार्च चंद्र
शुद्ध वैशाख	14 अप्रै. बुध
अधि. वैशाख	14 मई शुक्र
ज्येष्ठ (शनैश्चरी)	12 जून शनि
आषाढ़	11 जुला. रवि
श्रावण (भौमवती)	10 अग. मंग
भाद्रपद	8 सितं. बुध
आश्विन	7 अक्तू. गुरु
कार्तिक	6 नवं. शनि
मार्गशीर्ष	5 दिसं. रवि
पौष (सन् 2011 ई.)	4 जन. मंग
माघ	2 फर. बुध
फाल्गुन	4 मार्च शुक्र
चैत्र	3 अप्रै. रवि

◆ मुस्लिम त्यौहार ◆

चेहलुम	5 फर. शुक्र
आखिरी चहार	10 फर. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	13 फर. शनि
ईद-ए-मिलाद	27 फर. शनि
ईद-ए-मौलाद	4 मार्च गुरु
ग्यारहवीं शरीफ	28 मार्च रवि
उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	14-19 जून
जन्म श्रीहजरत अली	26 जून शनि
शबे-मिराज	10 जुला. शनि
शबे-बारात	28 जुला. बुध
रमज़ान (रोज़े शुरु)	12 अग. गुरु
शहादत-ए-हजरत अली	1 सितं. बुध
शबे-कदर	7 सितं. मंग
जमातुलविदा	10 सितं. शुक्र
ईदुलफितर	11 सितं. शनि
ईदुलजुहा (बकरीद)	17 नवं. बुध
मुहर्रम (हिजरी 1432 प्रा.)	8 दिसं. बुध
मुहर्रम (ताजिया)	17 दिसं. शुक्र

मुस्लिम त्यौहार

(सन् 2011 ई.)

चेहलुम	25 जन. मंग
आखिरी चहार	2 फर. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	2 फर. बुध
ईद-ए-मिलाद	16 फर. बुध
ईद-ए-मौलाद	21 फर. चंद्र
ग्यारहवीं शरीफ	17 मार्च गुरु

श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

माघ कृ. (संकट चौथ)	3 जन. रवि
माघ शु. (तिल चौथ)	19 जन. मंग
फाल्गुन (अङ्गारकी)	2 फर. मंग
चैत्र	3 मार्च बुध
शुद्ध वैशाख	2 अप्रै. शुक्र
अधि वैशाख	1 मई शनि
ज्येष्ठ	31 मई चंद्र
आषाढ़	30 जून बुध
श्रावण	29 जुला. गुरु
भाद्रपद (बहुला चतु.)	28 अग. शनि
सिद्धिविनायक व्रत (भा. शु.)	11 सितं. श.
आश्विन	27 सितं. चंद्र
कार्तिक (अङ्गारकी)	26 अक्तू. मंग
मार्गशीर्ष	25 नवं. गुरु
पौष	24 दिसं. शुक्र

(सन् 2011 ई.)

माघ कृ. (संकट चौथ)	22 जन. शनि
माघ शु. (तिल चौथ)	6 फर. रवि
फाल्गुन	21 फर. चंद्र
चैत्र (अङ्गारकी)	22 मार्च मंग

इस वर्ष का महान् पुण्य पर्व

कुम्भ महापर्व

(हरिद्वार)

मुख्य स्नान तिथियां, माहात्म्य, कथा व स्नान विधि विधि सहित देखें पृष्ठ 9 से 11

पितृपक्ष में श्राद्ध-2010 ई.

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए पितृ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु एवं सुख-शान्ति रहती है। सन् 2010 ई. में श्राद्ध की तिथियों का विवरण—

पूर्णिमा का श्राद्ध	23 सितं. गु.
प्रतिपदा का श्राद्ध	24 सितं. शु.
द्वितीया का श्राद्ध	25 सितं. श.
तृतीया का श्राद्ध	26 सितं. र.
चतुर्थी का श्राद्ध	27 सितं. चं.
पंचमी का श्राद्ध	28 सितं. मं.
षष्ठी का श्राद्ध	29 सितं. बु.
सप्तमी का श्राद्ध	30 सितं. गु.
अष्टमी का श्राद्ध	1 अक्तू. शु.
नवमी का श्राद्ध	2 अक्तू. श.
दशमी का श्राद्ध	3 अक्तू. र.
एकादशी का श्राद्ध	4 अक्तू. चं.
द्वादशी का श्राद्ध	4 अक्तू. चं.
त्रयोदशी का श्राद्ध	5 अक्तू. मं.
चतुर्दशी का श्राद्ध*	6 अक्तू. बु.
अमावस का श्राद्ध	7 अक्तू. गु.
सर्वपितृ श्राद्ध	7 अक्तू. गु.

* = चतुर्दशी को केवल शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में मृतों का श्राद्ध अमावस्या में करने का विधान है।

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	22 जन. शु.
श्रीहोलिका दहन	28 फर. र.
श्रीभगवतनारायण जयं.	4 मार्च गु.
रामनवमी पर्व	24 मार्च बु.
वैशाखी पर्व	14 अप्रै. बु.
जानकी जयन्ती	22 मई श.
गंगा दशहरा	21 जून चं.
गुरु पूर्णिमा	25 जुला. र.
तुलसी जयन्ती पर्व	16 अग. चं.
कृष्ण जयन्ती पर्व	1-2 सितं.
वामन जयन्ती	19 सितं. र.
शरद् पूर्णिमा व्रत	22 अक्तू. शु.
महंत गु. गोबिन्ददास जयं.	27 अक्तू. बु.
श्रीहनुमान जयन्ती	4 नवं. गु.
श्रीगीता जयन्ती	17 दिसं. शु.

प्रदोष व्रत-2010 ई.

माघ कृष्ण (भौम)	12 जन. मं.
माघ शुक्ल	28 जन. गु.
फाल्गुन कृष्ण	11 फर. गु.
फाल्गुन शुक्ल	26 फर. शु.
चैत्र कृष्ण (शनि)	13 मार्च श.
चैत्र शुक्ल (शनि)	27 मार्च श.
प्र. शुद्ध वैशाख कृष्ण	11 अप्रै. र.
प्र. अधि. वैशाख शुक्ल	26 अप्रै. चं.
द्वि. अधि. वैशाख कृष्ण	11 मई मं.
द्वि. शुद्ध वैशाख शुक्ल	25 मई मं.
ज्येष्ठ कृष्ण	10 जून गु.
ज्येष्ठ शुक्ल	23 जून बु.
आषाढ़ कृष्ण	9 जुला. शु.
आषाढ़ शुक्ल	23 जुला. शु.
श्रावण कृष्ण	7 अग. श.
श्रावण शुक्ल	21 अग. श.
भाद्रपद कृष्ण (सोम)	6 सितं. चं.
भाद्रपद शुक्ल (सोम)	20 सितं. चं.
आश्विन कृष्ण (भौम)	5 अक्तू. मं.
आश्विन शुक्ल	20 अक्तू. बु.
कार्तिक कृष्ण	3 नवं. बुध
कार्तिक शुक्ल	19 नवं. शु.
मार्गशीर्ष कृष्ण	3 दिसं. शु.
मार्गशीर्ष शुक्ल	18 दिसं. श.

श्रीनिजात्म प्रेमधाम आश्रम, हरिद्वार भूपतवाला रोड, हरिद्वार

स्वा. स्वरूपानन्द जयन्ती	20 जन.
निर्वाण स्वा. निजात्मानन्द जी	3 मार्च
निर्वाण स्वा. स्वरूपानन्द जी	31 मार्च
स्वा. निजात्मानन्द जयन्ती	15 मई
गुरु प्रेमानन्द जी जयन्ती	25 जुला.
निर्वाण गु. प्रेमानन्द जी	13 अग.

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन

स्वामी विवेकानन्द जी	6 जन. बु.
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	6 जन. बु.
सिद्ध बा. लालदयाल जी	17 जन. र.
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. श.
लाला लाजपतराय जी	28 जन. गु.
श्रीगुरु रविदास जी	30 जन. श.
गुरु रामदास जी	7 फर. र.
स्वामी दयानन्द सरस्वती	8 फर. चं.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	16 फर. मं.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	28 फर. र.
सन्त तुकाराम जी	2 मार्च मं.
शहीदी स. भगत सिंह	23 मार्च मं.
श्रीमहावीर	28 मार्च र.
श्रीवल्लभाचार्य जी	10 अप्रै. श.
डॉ. बी. आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. बु.
श्रीरविन्द्रनाथ टैगोर	7 मई शु.
श्रीछत्रपति शिवाजी	15 मई श.
भगवान् परशुराम	16 मई र.
आद्यगुरु शंकराचार्य जी	18 मई मं.
स्वामी रामानुजाचार्य	19 मई बु.
महात्मा बुद्ध	27 मई गु.
श्रीनारद जयन्ती	29 मई श.
श्रीमहाराणा प्रताप	15 जून मं.
श्री ध्यानू भगत	24 जून गु.
सन्त कबीर जयन्ती	26 जून श.
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला. शु.
ऋषि वेदव्यास	25 जुला. र.
लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव	1 अग. र.
गो. तुलसीदास जी	16 अग. चं.
सन्त ज्ञानेश्वर	2 सितं. गु.
भक्त नवल (जोधपुर)	2 सितं. गु.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. बु.
श्रीचन्द्र महाराज (उदासीन)	16 सितं. गु.
महात्मा गाँधी, शास्त्री जी	2 अक्तू. श.
महाराजा अग्रसेन	8 अक्तू. शु.
श्रीमाधवाचार्य जी	17 अक्तू. र.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू. शु.
श्रीधनवन्तरी	3 नवं. बु.
श्रीहनुमान	4 नवं. गु.
श्रीविश्वकर्मा जयं.	8 नवं. चं.
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. श.
श्रीजवाहर लाल नेहरू	14 नवं. र.
शहीदी लाला लाजपतराय	17 नवं. बु.
श्री वीर वैरागी	19 नवं. शु.
श्रीगुरु नानक देव जी	21 नवं. र.
सत्य श्रीसाईं बाबा	23 नवं. मं.
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. शु.
श्रीदत्तात्रेय	21 दिसं. मं.

—(सन् 2011 ई.)—

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. र.
स्वामी विवेकानन्द जी	25 जन. मं.
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	25 जन. मं.
लाला लाजपतराय जी	28 जन. शु.
सिद्ध बा. लालदयाल जी	5 फर. श.
श्रीगुरु रविदास जी	18 फर. शु.
गुरु रामदास जी	26 फर. श.
स्वामी दयानन्द सरस्वती	27 फर. र.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	6 मार्च र.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	19 मार्च श.
सन्त तुकाराम जी	21 मार्च चं.
शहीदी स. भगतसिंह जी	23 मार्च बु.

क्रिश्चियन त्यौहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. शु.
गुड फ्राइडे	2 अप्रै. शु.
ईस्टर सण्डे	4 अप्रै. र.
लो सण्डे	11 अप्रै. र.
रोगेशन सण्डे	9 मई र.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. श.

—(सन् 2011 ई.)—

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. श.
गुड फ्राइडे	22 अप्रै. शु.

दशमहाविद्या जयन्ती

श्रीमहातारा जयन्ती	24 मार्च बु.
श्रीमातङ्गी जयन्ती	16 मई र.
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	22 मई श.
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	27 मई गु.
श्रीधूमावती जयन्ती	19 जून श.
श्रीमहाकाली जयन्ती	2 सितं. गु.
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	20 सितं. चं.
श्रीकमला जयन्ती	26 अक्तू. मं.
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	21 दिसं. मं.
श्रीललिता जयन्ती	18 फर. (2011 ई.)

दशावतार जयन्तियां

श्रीमत्स्यावतार जयन्ती	18 मार्च गु.
श्रीरामावतार जयन्ती	24 मार्च बु.
श्रीपरशुराम जयन्ती	16 मई र.
श्रीनृसिंहावतार जयन्ती	26 मई बु.
श्रीकूर्मावतार जयंती	27 मई गु.
श्रीबुद्धावतार जयन्ती	27 मई गु.
श्रीकल्कि अवतार	14 अग. श.
श्रीकृष्णावतार	1 सितं. बु.
श्रीवाराहावतार	10 सितं. शु.
श्रीवामनावतार	19 सितं. र.

मास-शिवरात्रि व्रत

माघ	13 जन. बुध
फाल्गुन	12 फर. शुक्र
चैत्र	13 मार्च शनि
शुद्ध वैशाख	12 अप्रै. चंद्र
अधि.-वैशाख	12 मई बुध
ज्येष्ठ	10 जून गुरु
आषाढ़	10 जुला. शनि
श्रावण	8 अग. रवि
भाद्रपद	6 सितं. चंद्र
आश्विन	6 अक्तू. बुध
कार्तिक	4 नवं. गुरु
मार्गशीर्ष	4 दिसं. शनि

—(सन् 2011 ई.)—

पौष	2 जन. रवि
माघ	1 फर. मंग
फाल्गुन	2 मार्च बुध
चैत्र	1 अप्रै. गुरु

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और यू.पी. के मुख्य मेले—सन् 2010 ई.

मेला	तिथि
मेला लोहड़ी (सर्वत्र)	13 जन.
मे. दांऊ (रोपड़)	13 जन.
मे. माघी (मुक्तसर) पं.	14 जन.
मे. पोंगल (द.भारत)	14 जन.
मे. मौनी अमावस, यू.पी. (प्रयाग, हरिद्वार आदि)	14 जन.
कुम्भ स्नान माहात्म्य प्रा. (हरिद्वार)	14 जन.
मे. बसन्त पंचमी	20 जन.
मे. जैसलमेर (राज.)	28-30 जन.
जयन्ती देवी (चण्डीगढ़)	28-30 जन.
माघी पूर्णिमा (यू.पी.)	30 जन.
मेला मस्तुआणा (पं.)	1 फर.
मे. श्रीमहाशिवरात्रि	12 फर.
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल)	12 फर.
होलियां-होलाष्टक (यू.पी.)	22-28 फर.
मे. सावात्तिला	26 फर.
होला (श्रीआनन्दपुर साहिब)	1 मार्च
मे. श्री रामराय (देहरादून)	5 मार्च
मे. नवचण्डी (मेरठ)	5 मार्च
श्रीवीरमदास, बघोछी, पटियाला	7 मार्च
मे. शीतलामाता, कुराली (पं.)	7-8 मार्च
पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	14 मार्च
मे. नानकसर चीमा	16 मार्च
मेला नवरात्रे-मनसादेवी [हरिद्वार व (हरियाणा)]	16-23 मार्च
गौरी तृतीया (जयपुर)	18 मार्च
माईसरखाना (बठिण्डा)	21 मार्च
मे. नरीमैरी (मथुरा)	22-23 मार्च
मे. कौंसा देवी (चण्डीगढ़)	29-30 मार्च
देवी मेला हथोहरा (कुरुक्षेत्र)	29 मार्च
भण्डारा स्वा. सन्तदास जी, गोपाल नगर, जालन्धर	30 मार्च
मेला वैसाखी (पं.)	14 अप्रै.
मे. पिंजौर (हरियाणा)	14 अप्रै.
मे. रामथनदास (फाजिल्का)	14 अप्रै.
मे. कुम्भ महापर्व हरिद्वार	14 अप्रै.
गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	20 मई
जोड़ मेला, संत खुशीरामजी गाँव भरोमजारा, नवांशहर (पं.)	23-24 मई
मे. भद्रकाली, कपूरथला (पं.)	8 जून
साईं टेऊँराम पुण्यतिथि भूपतवाला रोड, हरिद्वार	17 जून
गंगा दशहरा (हरिद्वार)	21 जून
रथयात्रा उत्सव, पुरी, उड़ीसा	13 जुला.
साईं टेऊँराम जयन्ती भूपतवाला, हरिद्वार	17 जुला.
गुरु पूर्णिमा उत्सव	25 जुला.
मे. काहनूवाल, (गुरदासपुर)	25 जुला.
मे. नागपंचमी-राज., बंगाल	31 जुला.
मे. पं. जोगराज (जंडियाला)	9-10 अग.
सिंघारा तीज	12 अग.
गौरी तीज, जयपुर, राज.	12 अग.
मेला बग्गी देहरी गां-कण्डे लालोवाल, गुरदासपुर	24 अग.
मे. भरोमजारा, नवांशहर (पं.)	27-28 अग.
कृष्णजन्माष्टमी पर्व, मथुरा	2 सितं.
मे. गुग्गा नवमी, अम्बाला	2-3 सितं.
गुग्गा जाहिरपीर, नकोदर, पं.	3 सितं.
गोगामेड़ी, श्रीगंगानगर, राज.	3 सितं.
मे. सुथरेशाह, दिल्ली	8 सितं.
मे. गोसाईंआणां, कुराली, पं.	10 सितं.
रामदेव रोणेचा, जोधपुर, राज.	17 सितं.
वामन द्वादशी, पटियाला	19 सितं.
मे. छपार, मलेरकोटला, पं.	21-24 सितं.
मे. बाबा सोढल, जालन्धर	22 सितं.
श्रीगोइंदवाल साहिब, तरनतारन (पं.)	23 सितं.
गुग्गापीर, लुधियाना	23 सितं.
आशापूर्णी, पठानकोट	8-16 अक्तू.
मे. हरचोवाल, गुरदासपुर	15-16 अक्तू.
बाबा बुड्ढा सा., अमृतसर	17 अक्तू.
अचलेश्वर (बटाला)	16-17 नवं.
मे. जन्मवीर वैरागी, नकोदर	19 नवं.
मे. बग्गी देहरी, गाँ-कण्डे लालोवाल (गुरदासपुर)	20-21 नवं.
मे. रामतीर्थ, अमृतसर	21 नवं.
कपालमोचन, हरियाणा	21 नवं.
मे. श्रीगढ़गंगा, पुष्कर तीर्थ	21 नवं.
भण्डारा संत प्रीतमदास जी गोपाल नगर, जालन्धर	30 नवं.
मे. चमकौर साहिब	26-28 दिसं.
मे. जोड़ फतेहगढ़ सा. प्रा.	26 दिसं.

जम्मू-कश्मीर के मेले

मेला	तिथि
लोहड़ी पर्व	13 जन.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	13-14 मार्च
गुफागंगा, कफी-अरवनूर	14 मार्च
नवरात्रे पर्व	16-24 मार्च
मे. बाहूफोर्ट	23 मार्च
मे. रामबन	24 मार्च
गुरुगद्दी 1008 सतगुरु बाबा कांशीगिरजी (सुन्दरवनी)	13-14 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	26 मई
मे. मानसर	17-18 मई
मे. क्षीर (खीर) भवानी	19 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	26 जून
शहीदी दिवस	13 जुला.
मे. शरीक भवानी	19 जुला.
मे. हरिप्रयाग (बनी)	21 जुला.
मे. ज्वालामुखी	24 जुला.
मे. रुद्रगंगा, चंद्रेणीदेसा, डोडा	25 जुला.
दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा	24 अग.
मे. स्वामी शंकराचार्य	24 अग.
मे. रामबन	1-2 सितं.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	6-7 सितं.
मेला पात, भद्रवाह	12-14 सितं.
मे. आशापति, मार्तण्ड	6-7 अक्तू.
मे. झिड़ी बाबा	21 नवं.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	4 दिसं.

हिमाचल प्रदेश के मेले—सन् 2010 ई.

मेला	तिथि
मेला श्री ब्रह्मा, कुल्लू	20 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	20 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	12-21 फर.
कालेश्वर महादेव, नादौन	12 फर.
मे. काठगढ़	12 फर.
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	13 फर.
बड़भाग सिंह (ऊना)	26-28 फर.
सुजानपुर टिहरा, हमीरपुर	1-4 मार्च
होला मेला, पौंटा साहिब	1 मार्च
मेला बाबा बालकनाथ प्रा.	14 मार्च
मे. कनिहारा (धर्मशाला) प्रा.	14 मार्च
बालासुन्दरी, सिरमौर	16-30 मार्च
नयनादेवी, बिलासपुर	16-24 मार्च
मे. नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मे. ललवाड़, सुन्दरनगर	18-23 मार्च
मे. नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
मे. लाहौल, मण्डी	22 मार्च
श्रीदुर्गाष्टमी, कांगड़ा	23 मार्च
रोहरू (महासू)	26-27 मार्च
मे. नलवाड़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रै.
मे. मारकण्डा (बिसासपुर)	13-16 अप्रै.
नैणा देवी, धर्मपुर (बनवार)	13 अप्रै.
कालेश्वर महादेव, देहरा, कांगड़ा	14 अप्रै.
मे. राजगढ़ (सिरमौर)	14-16 अप्रै.
मे. बिशु प्रारम्भ	14 अप्रै.
मे. कशाधा हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. त्राम्बली (कुल्लू)	17-18 अप्रै.
मे. खनाणी (शिम., कुल्लू)	20-21 अप्रै.
पीपल जातर, कुल्लू	28-30 अप्रै.
मेला स्वीटी	30 अप्रै.
मेला आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मे. घावरस (बिलासपुर)	14 मई
मे. ढुंगरी जातर (मनाली)	14-15 मई
मे. बंजार (कुल्लू)	14-18 मई
मे. कमलाहिया (धर्मपुर)	16 मई
मे. माहूनाग-करसोग	17-18 मई
हरिदेवी (घुमारवीं)	21 मई
मनीकरण (कुल्लू)	23-27 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	24-25 मई
शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मे. मुरारीदेवी (सरकाघाट)	25-27 मई
ग्राम पंजगाई, बिलासपुर	29-30 मई
मे. स्थूल मढोल	1-4 जून
नारकाण्डा (बिलासपुर)	3-5 जून
श्यामाकाली (सरकाघाट)	5 जून
भुन्तर मेला	15-17 जून
मे. बाड़ी-सरयांझ (सोलन)	15 जून
मे. अहल (हमीरपुर)	15 जून
नौवाहीदेवी (सरकाघाट)	15 जून
मेला पीपलू (हमीरपुर)	22 जून
टाणी देवी (हमीरपुर)	24 जून
मे. माँ शूलिनी (सोलन)	27 जून
त्रिमौणी, सिरमौर	11 जुला.
मे. नागनी (नूरपुर)	16 जुला.
सिद्ध बाबा शिव्वो, ज्वाली	18 जुला.
मे. मिंजर (चम्बा) प्रा.	25 जुला.
मे. चिन्तपूर्णी छिन्नमस्तिका (ऊना)	11-17 अग.
संतोषी माता (लहरौर)	16 अग.
नयनादेवी (बिलासपुर)	17 अग.
गुग्गा नवमी (बिलासपुर)	3 सितं.
मे. गुग्गा माड़ी सुबाथू, सोलन	3-4 सितं.
मेला बंद्राल (कुल्लू)	3 सितं.
अम्बिकादेवी, सदर (मण्डी)	7 सितं.
श्रीगणपति उत्सव (मण्डी)	11-22 सितं.
गुग्गा माड़ी, सुबाथू, सोलन	15-17 सितं.
मे. नलवाड़ (चिच्चोट)	16-23 सितं.
मे. लदरौर (हमीरपुर)	16 सितं.
मे. सायर, अर्की	16-17 सितं.
वामन द्वादशी (नाहन)	19 सितं.
बगुलामुखी (वनखण्डी)	8-17 अक्तू.
मेला रामलीला	8-17 अक्तू.
मेला चामुण्डा (काँगड़ा)	8-16 अक्तू.
मेला तारादेवी (शिमला)	15-17 अक्तू.
मेला ज्वालामुखी	15-17 अक्तू.
शीतलामाता (मच्छिभवन)	15 अक्तू.
मे. दशहरा (अर्की)	17 अक्तू.
मे. दशहरा (कुल्लू)	17-23 अक्तू.
मे. काली बाड़ी (शिमला)	5-6 नवं.
लावी (रामपुर-चिच्चोट)	11-14 नवं.
रेणुका-नाहन (सिरमौर)	17-18 नवं.
बाबा रुद्रीनन्दनारी (ऊना)	17-21 नवं.
मे. जोगी पांगा (ऊना)	21 नवं.

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल सन् 2010-11 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टे. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन. गुरु	12-38	सूर्योदय से प्रारम्भ
फागुन संक्रान्ति	12 फर. शुक्र	25-38	अगले दिन प्रात: 8/02 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च रवि	22-30	मध्याह्न बाद
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै. बुध	6-57	सूर्योदय से दोपहर 13/21 तक
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई शुक्र	27-47	अगले दिन प्रात: 10/11 तक
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून मंग	10-21	मध्याह्न तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. शुक्र	21-11	मध्याह्न बाद
भाद्र. संक्रान्ति	16 अग. चंद्र	29-34	अगले दिन मध्याह्न तक
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं. गुरु	29-29	अगले दिन मध्याह्न तक
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू. रवि	17-27	दोपहर 11/03 बाद से
मार्ग. संक्रान्ति	16 नवं. मंग	17-18	प्रात: 10/54 बाद
पौष संक्रान्ति	16 दिसं. गुरु	7-59	दोपहर 14/23 तक
माघ संक्रान्ति (11)	14 जन. शुक्र	18-44	मध्याह्न बाद
फागुन संक्रान्ति	13 फर. रवि	7-43	दोपहर 14/17 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च चंद्र	28-33	अगले दिन प्रात: 10/57 तक

जैन व्रत-पर्व व उत्सव (2010-11 ई.)

मेरू त्रयोदशी	12 जन. मं.	ओली तप शुरु	15 अक्तू. शु.
मर्यादा महोत्सव	22 जन. शु.	ओली तप समाप्त	23 अक्तू. श.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	26-28 फर.	श्रीमहावीर निर्वाण	6 नवं. श.
ऋषभदेव जयन्ती	7 मार्च र.	श्रीवीर संवत 2536 प्रा.	7 नवं. र.
वरसी तप प्रारम्भ	8 मार्च चं.	आचार्य श्रीतुलसी जन्म	7 नवं. र.
ओली तप प्रारम्भ	23 मार्च मं.	ज्ञान पंचमी	10 नवं. बु.
श्रीमहावीर जयन्ती	28 मार्च र.	चातुर्मास्य व्रत समाप्त	21 नवं. र.
ओली तप समाप्त	30 मार्च मं.	श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	1 दिसं. बु.
वरसी तप समाप्त	16 मई र.	मौनी एकादशी	17 दिसं. शु.
केवल ज्ञान दिवस	23 मई र.	आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	25 दिसं. श.
मे. चक्रेश्वरीदेवी (सरहिंद)	5-7 जून	श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	30 दिसं. गु.
चातुर्मास्य नियम प्रा.	25 जुला. र.	—(सन् 2011 ई.)—	
तेरापन्थ स्थापना दिवस	25 जुला. र.		
जैन महोत्सव	10 अग. मं.	मेरू त्रयोदशी	31 जन. चं.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	5 सितं. र.	मर्यादा महोत्सव	10 फर. गु.
श्रीजयाचार्य निर्वाण	5 सितं. र.	जैन महोत्सव (कांगड़ा)	18-19 फर.
संवत्सरी महापर्व	12 सितं. र.	ऋषभदेव जयन्ती	25 फर.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	13 सितं. चं.	वरसी तप प्रारम्भ	26 फर.
श्रीतुलसी पट्टारोहण	16 सितं. गु.		

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2010-11 ई.)

(इन छुट्टियों को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लें)

श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	5 जन. मं.	जन्म श्रीहजरत अली	26 जून श.	ईदुलजुहा (बकरीद)	17 नवं. बु.
मकर संक्रान्ति	14 जन. गु.	रथयात्रा (पुरी) उड़ीसा	13 जुला. मं.	श्रीगुरु नानक जयंती	21 नवं. र.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. मं.	शहीदी स: ऊधम सिंह	31 जुला. श.	मुहर्रम (ताजिया)	17 दिसं. शु.
श्रीगुरु रविदास जयंती	30 जन. श.	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. र.	क्रिसमिस डे	25 दिसं. श.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	12 फर. शु.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	2 सितं. गु.	(सन् 2011 ई.)	
ईद-ए-मिलाद	27 फर. श.	जमातुलविदा	10 सितं. शु.	गु. गोबिन्द सिंह जयंती	5 जन. बु.
होला मेला (पं.)	1 मार्च चं.	सिद्धि विनायक व्रत (महारा.)	11 सितं. श.	मकर संक्रान्ति	14 जन. शु.
श्रीरामनवमी	24 मार्च बु.	ईदुलफितर	11 सितं. श.	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. बु.
श्रीमहावीर जयंती	28 मार्च र.	महात्मा गांधी जयंती	2 अक्तू. श.	ईद-ए-मिलाद	16 फर. बु.
गुड फ्राईडे	2 अप्रै. शु.	दशहरा	17 अक्तू. र.	श्रीगुरु रविदास जयं.	18 फर. शु.
वैशाखी	14 अप्रै. बु.	महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	22 अक्तू. शु.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	2 मार्च बु.
श्रीबुद्ध जयन्ती	27 मई गु.	दीपावली	5 नवं. शु.	होला मेला (पं.)	20 मार्च र.

सिक्ख पर्व एवं गुरुपर्व आदि—2010-11 ई.

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार)			(नानकशाही कलैण्डर अनुसार)		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	21 नवंबर	जन्म से	3 अक्तू.	21 नवंबर	जन्म से	22 सितंबर
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	14 मई	28 सितंबर	19 मार्च	18 अप्रैल	18 सितंबर	16 अप्रैल
3. श्रीगुरु अमरदास जी	26 मई	16 मार्च	23 सितंबर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितंबर
4. श्रीगुरु रामदास जी	25 अक्तूबर	21 सितंबर	10 सितंबर	9 अक्तूबर	16 सितंबर	16 सितंबर
5. श्रीगुरु अर्जनदेव जी	5 अप्रैल	10 सितंबर	16 जून	2 मई	16 सितंबर	16 जून
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	27 जून	5 जून	20 मार्च	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	28 जन., 10 ई. 16 फर., 11 ई.	13 मार्च, 10 ई. 1 अप्रै., 11 ई.	31 अक्तूबर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	4 अगस्त	31 अक्तूबर	29 मार्च	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
9. श्रीगुरु तेगबहादुर जी	3 अप्रैल	28 मार्च	10 दिसंबर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवंबर
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	11 जन., 11 ई.	8 दिसंबर	10 नवंबर	5 जनवरी	24 नवंबर	21 अक्तूबर
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार		9 सितं.	17 भादों (ना.शा.)		1 सितं., 2010 ई.
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल द्वितीया तदनुसार		7 नवंबर	6 कार्तिक (ना.शा.)		20 अक्तू., 2010 ई.
खालसा पंथ साजना दिवस	1 वैशाख प्रविष्टे तदनुसार		14 अप्रैल	1 वैशाख (ना. शा.)		14 अप्रैल, 2010 ई.

वि. संवत् २०६७ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा–मंगल | **वर्ष का मन्त्री–बुध**

- वि. संवत् (शोभन) २०६७ का शुभारम्भ = 16 मार्च, मंगलवार
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,111 वर्ष
- सृष्टि का आरम्भ वर्ष = 1,95,58,85,109 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,889 वर्ष
- २०६७ में कलि वर्ष = 5111वां वर्ष (14 अगस्त, शनिवार)
- श्री कृष्ण जन्म संवत् = 5246 प्रा., (1 सितम्बर, बुधवार)
- सप्तर्षि संवत् 5086 प्रारम्भ = 16 मार्च, मंगलवार
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2634 प्रा., = 27 मई, गुरुवार
- महावीर निर्वाण संवत् 2536 प्रा. = 6 नवम्बर, शनिवार
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2011 प्रारम्भ = 1 जनवरी, शनिवार
- (i) शाका संवत् 1932 प्रा. = 22 मार्च, 2010 ई., सोमवार
  (ii) शाका संवत् 1933 प्रारम्भ = 22 मार्च, 2011 ई., मंगलवार
- हिजरी सन् 1432 (मुस्लिम) प्रा. = 8 दिसम्बर, 2010-ई. बुधवार
- बंगाली सन् 1417 प्रारम्भ = 16 मार्च, 2010 ई. मंगलवार
- नानकशाही संवत् 542 प्रारम्भ = 14 मार्च, 2010 ई., रविवार
- खालसा सम्वत् 312 प्रारम्भ = 14 अप्रैल, 2010 ई., बुधवार
- जय हिन्द संवत् 64वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, 2010 ई.
- पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 135वाँ = 16 मार्च, 2010 ई., मंगलवार

सन् 2010–11 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा आदि—एक दृष्टि में

(मास) 2010 ई.↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत (स्मा.)	प्रदोष व्रत	सत्य-नारायण व्रत	पूर्णिमा	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदानार्थ)
जनवरी	14 (माघ)	10, 26	12, 28	29	30	3	15
फरवरी	12 (फागु.)	9, 25	11, 26	28	28	2	13-14
मार्च	14 (चैत्र)	11, 26	13, 27	29	30	3	15
अप्रैल	14 (वैशा.)	10, 24	11, 26	27	28	2	14
मई	14 (ज्ये.)	9, 24	11, 25	27	27	1,31	14
जून	15 (आषा.)	8, 22	10, 23	25	26	30	12
जुलाई	16 (श्राव.)	8, 21	9, 23	25	26	29	11
अगस्त	16 (भाद्र.)	6, 20	7, 21	24	24	28	10
सितम्बर	16 (आश्वि.)	4, 18	6, 20	22	23	27	8
अक्तूबर	17 (कार्ति.)	4, 18	5, 20	22	22-23	26	7
नवम्बर	16 (मार्ग.)	2, 17	3, 19	21	21	25	6
दिसम्बर	16 (पौष)	1,17,31	3, 18	20	21	24	5
जनवरी (11)	14 (माघ)	16, 29	1,17,31	19	19	22	4
फरवरी	13 (फाल्गु.)	14, 28	16	17	18	21	4
मार्च	14 (चैत्र)	16, 30	2,17,31	19	19	22	4

आगामी वि. संवत् २०६८ के प्रमुख व्रत-पर्व

वासन्त नवरात्रे प्रा.	4 अप्रै. चं.
श्रीदुर्गाष्टमी	11 अप्रै. चं.
श्रीरामनवमी	12 अप्रै. मं.
वैशाखी	14 अप्रै. गु.
श्रीमहावीर जयंती	16 अप्रै. श.
अक्षय तृतीया	6 मई शु.
श्रीबुद्ध जयन्ती	17 मई मं.
श्रीगंगा दशहरा	11 जून श.
गुरु पूर्णिमा	15 जुला. शु.
रक्षा–बन्धन	13 अग. श.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत	21 अग. र.
सिद्धि विनायक व्रत	1 सितं. गु.
श्राद्ध (पक्ष) प्रारम्भ	13 सितं. मं.
सर्वपितृ श्राद्ध	27 सितं. मं.
शरद् नवरात्रे प्रा.	28 सितं. बु.
श्रीदुर्गाष्टमी	4 अक्तू. मं.
दशहरा (विजयादशमी)	6 अक्तू. गु.
शरद् पूर्णिमा व्रत	11 अक्तू. मं.
महर्षि वाल्मीकि जयं.	11 अक्तू. मं.
करवा चौथ व्रत	15 अक्तू. श.
दीपावली	26 अक्तू. बु.
भाई दूज	28 अक्तू. शु.
श्रीगुरु नानक जयं.	10 नवं. गु.
गीता जयन्ती	6 दिसं. मं.
(सन् 2012 ई.)	
लोहड़ी पर्व	13 जन. शु.
मकर संक्रान्ति	14 जन. श.
वसन्त पंचमी	28 जन. श.
श्रीगुरु रविदास जयं.	7 फर. मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	20 फर. चं.
होली पर्व	8 मार्च गु.

(सम्भावित)

कुम्भ महापर्व-हरिद्वार (14 अप्रैल, बुधवार-2010 ई.)

'कुम्भ' महापर्व की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। यह पर्व भारत की प्राचीन गौरवमयी वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है। इस महापर्व के अवसर पर सारे भारत से ही नहीं, अपितु विश्व के अनेक देशों से असंख्य धर्मपारायण श्रद्धालुगण एकत्र होकर श्री गङ्गा जी में स्नान, दान, तपादि करके तथा वहां के समीपवर्ती तीर्थस्थल पर रहने वाले महात्माओं के अमृत वचनों का श्रवण करके धन्य होते हैं।

हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग एवं नासिक—इन तीर्थों पर हर बारह (12) वर्षों के पश्चात् सूर्य, चन्द्र एवं बृहस्पति—इन तीनों ग्रहों का विशेष योग बनने पर **'कुम्भ महापर्व'** का आयोजन किया जाता है। स्कन्दपुराण के अनुसार, जिस समय बृहस्पति कुम्भ राशि पर स्थित हो और सूर्य मेष राशि पर रहे, उस समय गंगाद्वार (हरिद्वार) में कुम्भ योग होता है।

"पद्मिनी नायके मेषे कुम्भ राशिगते गुरौ।
गंगाद्वारे भवेद्योगः कुम्भनामा तदोत्तमः॥" (स्कन्द पुराण)

अन्यत्र भी हरिद्वार में कुम्भ स्नान की महिमा के बारे में लिखा गया है कि—

'कुम्भ राशि में बृहस्पति हो तथा मेष राशि पर सूर्य हो तो हरिद्वार के कुम्भ में स्नान करने से मनुष्य पुनर्जन्म से रहित हो जाता है।'

कुम्भ राशिं गते जीवे तथा मेषे गते रवौ।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति वर्जनम्॥

इस महापर्व का स्नान-दान-जपादि का प्रमुख दिन **शुद्ध वैशाख-कृष्ण** पक्ष की अमावस के दिन तद्नुसार 14 अप्रैल, प्रविष्टे 1 वैशाख को बुधवार की प्रातः 6 बजकर 57 मिनट पर घटित होगा, उस समय **सूर्य मेष राशि में, चन्द्रमा रेवती नक्षत्र एवं मीन राशि में तथा बृहस्पति (गुरु) कुम्भ राशि में संचरण कर रहे होंगे।**

● स्नानादि का **विशेष पुण्यकाल एवं** माहात्म्य प्रातः सूर्योदय (**6 बजकर 03 मिनट) से प्रारम्भ** होकर दुपैहर **13 बजकर 21 मिनट तक रहेगा।** कुछ आचार्य **वैशाख आदि संक्रान्तियों** में स्नानादि का पुण्यकाल सूर्योदय से **पूर्व अरूणोदय काल से भी पुण्यकाल** का प्रारम्भ मानते हैं। तदनुसार 14 अप्रैल को **महापर्व कुम्भ का पुण्यकाल** श्री हरिद्वार में सूर्योदय (6/03) से 4 घड़ी पूर्व अर्थात् प्रातः **4 बजकर 27 मिनट से अरुणोदय काल प्रारम्भ होगा।**

कुम्भ पर्व क्यों मनाया जाता है ?

कुम्भ पर्व की परम्परा मूल रूप में मनुष्य के द्वारा रत्नों, धन-ऐश्वर्य, सुख-आरोग्य, आत्म-ज्ञान एवं अमरत्व की इच्छाओं से जुड़ी हुई है। वेद-पुराण आदि ग्रन्थों में इन अदम्य इच्छाओं से सम्बन्धित अनेक आख्यान वर्णित मिलते हैं, जिनमें (1) **भगवान् शिव व गङ्गा जी की कथा** (2) **महर्षि दुर्वासा की कथा** (3) **कद्रू-विनता की कथा** और (4) **समुद्र-मन्थन की कथा**—ये प्रसिद्ध हैं। इनमें सर्वाधिक प्रचलित आख्यान **समुद्र मंथन** की कथा है। **स्कन्द पुराण** में वर्णित कथानुसार देवताओं और दानवों के बीच **अमृत-कुम्भ** प्राप्ति के लिए क्षीरोद् सागर में 'मन्दराचल पर्वत' एवं 'वासुकि' नाग के द्वारा सागर **मन्थन** किया गया। इस समुद्र मन्थन में कालकूट विष, ऐरावत हाथी, पारिजात वृक्ष, श्री लक्ष्मी सहित अनेक दिव्य एवं दुर्लभ वस्तुओं के बाद महाविष्णु धनवन्तरि के हाथों में शोभित **अमृत-कलश** प्रकट हुआ। देवताओं के संकेत पर इन्द्र पुत्र जयन्त **अमृत-कुम्भ** लेकर बड़े वेग से भागने लगे। दैत्यगण जयन्त का पीछा करने लगे। अमृत प्राप्ति के लिए देवताओं और राक्षसों के मध्य बारह दिव्य दिन (मानुषी बारह वर्ष) तक भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध के दौरान जिन-जिन स्थानों पर 'कुम्भ' से अमृत की बूंदें गिरी थीं, उन-उन स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कुम्भ महापर्व मनाया जाता है। तत्पश्चात् भगवान् विष्णु ने मोहिनी अवतार लेकर अमृत को देवताओं में बांटा।

पुराणानुसार 'अमृत कुम्भ' की रक्षा में बृहस्पति, सूर्य व चन्द्रमा ने विशेष सहायता की थी। **'चन्द्रमा'** ने अमृत को कुम्भ से गिरने से, **'सूर्य'** ने कुम्भ को फूटने से और **'बृहस्पति'** ने असुरों द्वारा अमृत के अपहरण होने से तथा **'शनि'** ने देवराज इन्द्र के भय से **'अमृत कुम्भ'** की रक्षा की थी। इसी कारण सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति—**तीनों ग्रहों** के विशेष योग में ही कुम्भ महापर्व मनाया जाता है।

कुम्भ महापर्व के स्नान-दान, जपानुष्ठान का लाभ एवं सिद्ध महात्माओं के समागम का विशेष पुण्य लाभ प्राप्त करने के लिए धर्मपरायण अनेक श्रद्धालु लोग कुम्भ पर्व के मुख्य स्नान दिन से लगभग तीन मास पूर्व ही श्रीगंङ्गा जी (हरिद्वार, कनखल, ऋषिकेश, काशी आदि) के पार्श्ववर्ती स्थानों पर अस्थायी तौर पर डेरा डालकर रहना शुरु कर देते हैं। स्नान-दान जपानुष्ठानादि की दृष्टि से प्रविष्टे 1 वैशाख, अर्थात् 14 अप्रैल बुधवार से पूर्व एवं पश्चात् के दिनों की कुछ महत्त्वपूर्ण तिथियों का वर्णन किया जाता है, जो कि 14 अप्रैल के मुख्य गङ्गा स्नान की भान्ति ही पुण्यप्रदायक होंगी—

सन् 2010 ई. में कुम्भ महापर्व में पुण्य स्नान तिथियाँ

(1) **मकर संक्रान्ति**—14 जनवरी, गुरुवार, (2) **मौनी अमावस्या**—सूर्यग्रहण स्नान, 15 जन., शुक्रवार, (3) **वसन्त पंचमी**—20 जन., बुधवार, (4) **माघ पूर्णिमा**—30 जनवरी, शनिवार, (5) **श्रीमहाशिवरात्रि स्नान (12 फर., शुक्रवार)** (प्रथम शाही स्नान) (6) **वारुणी पर्व स्नान** (13 मार्च, शनिवार) (7) **चैत्र सोमवती अमावस** (15 मार्च, सोमवार) (द्वितीय शाही स्नान) (8) **नवसंवतारंभ स्नान** (16 मार्च, मंगल), (9) **महाविषुव दिवस स्नान** (20 मार्च, शनि), (10) **श्रीरामनवमी** (24 मार्च, बुध), (11) **चैत्र पूर्णिमा** (30 मार्च, मंगल), (12) **वैशाख संक्रान्ति—तीसरा प्रमुख शाही स्नान** (14 अप्रैल, बुधवार) स्नान-दान जपादि का विशेष पुण्यकाल दुपैहर 1 बजकर 21 मिनट तक। (13) वैशाख अधिमास **पूर्णिमा स्नान** (28 अप्रैल, बुध), (14) वैशाख अधिमास पूर्ति स्नान (14 मई), (15) अक्षय तृतीया स्नान, 16 मई, रवि, (16) आद्यगुरु शंकराचार्य जयन्ती—18 मई, (17) **श्रीगंगा जयन्ती**—20 मई, (18) वैशाख पूर्णिमा स्नान, 27 मई, वीरवार।

ध्यान रहे, 2 मई रविवार से **गुरु मीन राशि प्रविष्ट** होने से आगे की तारीखों में कुम्भ पर्व स्नान का विशेष माहात्म्य नहीं होगा, परन्तु तिथि, मासादि स्नान का महत्त्व अवश्य रहेगा।

विशेष—कुछ विशेष सम्प्रदाय से सम्बन्धित **सन्त समाज** के मतानुसार कुम्भ महापर्व को गंगा स्नान, दान, जप, होमादि का विशेष पुण्यकाल, **14 अप्रैल (1 वैशाख) बुधवार** को अरूणोदय काल से प्रारम्भ होकर सारा दिन (सूर्यास्त तक) रहेगा। उसके आगे चूंकि 15 अप्रैल वीरवार से 14 मई, शुक्रवार तक वैशाख अधिकमास तथा तदनन्तर विश्वघस्र (13 दिनात्मक) पक्ष 27 मई तक होगा। 2 मई के पश्चात् गुरु भी मीन राशि में संचार करेगा। इस कारण कुम्भ महापर्व के उपलक्ष्य में स्नान, जपादि, अनुष्ठान का विशेष माहात्म्य नहीं रहेगा। यद्यपि वैशाख अधिक (पुरुषोत्तम) मास में स्नान-दान, जपादि का महत्त्व तो रहेगा ही। इसी कारण कुम्भ—महापर्व के उपलक्ष्य में स्नान-दान, जपादि की विशेष तिथियों का विवरण ऊपर दे दिया गया है।

☆कुम्भ महापर्व पर स्नान-दान जपादि की महिमा☆

14 अप्रैल, बुधवार को ब्रह्म मुहूर्त्त एवं उषाकाल से ही कुम्भ के पावन पर्व पर सहस्रों की संख्या में सन्त, महात्मा, नागा संन्यासी एवं विभिन्न अखाड़ों से सम्बन्धित महात्मा तथा लाखों की संख्या में श्रद्धालु जन हरिद्वार की पैड़ी पर स्नान, दान, जप-होमादि करके पुण्यार्जन करेंगे। शास्त्रों में कुम्भ स्नान की विशेष महिमा कही गई है।

श्रीविष्णु पुराणानुसार— अश्वमेघ सहस्राणि वाजपेयशतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भ स्नानेन तत्फलम्॥

अर्थात्—"सहस्रों अश्वमेघ-यज्ञ करने से, सैंकड़ों वाजपेय-यज्ञ करने से और लाख वार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जो फल प्राप्त होता है, वह पुण्य-फल केवल कुम्भ स्नान से प्राप्त होता है।"

वैशाख (मेष) संक्रान्ति पर तो गंगा स्नान-दानादि की विशेष महिमा कही गई है—

धन्यानां पुरुषाणां हि गंगाद्वारस्य दर्शनम्।
विशेषतस्तु मेषार्के संक्रमेऽती व पुण्यदे॥

कुम्भ स्नान की विधि एवं दानादि का महत्त्व

प्रातःकाल उठकर सर्वप्रथम अपने इष्टदेव का स्मरण करना चाहिए, उसके पश्चात् शौचादि क्रियाओं से निवृत्त होकर कुम्भ-पर्व-पुण्य सूचक श्लोकों का उच्चारण करें। तदनन्तर यथा समय कुम्भ-स्नानार्थ गङ्गा आदि पवित्र नदी में जाकर अपने दोनों हाथों द्वारा कुम्भ मुद्रा (कलश-मुद्रा) बनाकर उसमें अमृततत्त्व की भावना करते हुए निम्नलिखित श्लोकों को पढ़े—

'देव दानव मथ्यमाने महोदधौ, उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः। सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रूद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफल प्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं स्नानं कर्तुमीहे जलोद्भव॥
सान्निध्यं कुरू मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥ "ॐ कुम्भाय नमः।"

स्नान एवं मन्त्रोच्चारण के बाद सन्ध्या-तर्पणादि से निवृत्त होकर श्री गणेश आदि पूजन सहित कुम्भ स्थापन करे। फिर श्रद्धा-भक्ति से कुम्भ का षोडशोपचार पूर्वक पूजन करे। तत्पश्चात् एक, चार, ग्यारह आदि यथाशक्ति संख्या में सुवर्ण, चाँदी, पीतल या ताम्र के कलशों में घृत भरकर वस्त्र, फल, गुड़ादि मिष्टान्न, एवं दक्षिणा, संकल्प सहित किन्हीं सुपात्र विद्वान् ब्राह्मणों को दान करें।

कुम्भ-पर्व के समय यथाविधि घृतपूर्ण कुम्भ का पूजन कर, उसे वस्त्र अलंकार, आभूषण सुवर्ण या चांदी की मुद्रा सहित सदाचारी ब्राह्मण या विद्वान् को संकल्पपूर्वक देने से सैंकड़ों गोदान करने का फल मिलता है। कुम्भ पर्व पर साधु-महात्माओं को भोजन खिलाना व दक्षिणा देने से आत्म कल्याण के साथ-साथ पितरों की भी तृप्ति होती है

कुम्भ पर्व पर मनुष्यों को मन की निर्मलता, सादगी एवं सदाचार का पालन अवश्य करना चाहिए। इस दिन (14 अप्रै.) को बुधवार एवं अमावस का भी संयोग होने से यदि सम्भव हो, तो गंगाजी के जल में खड़े होकर **'ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः। नमस्ते विष्णुरुपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमोऽस्तुते॥** स्तुति करके **गंगास्तोत्र, गङ्गाष्टक'** आदि स्तोत्रों का पाठ करता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। आगामी पृष्ठ पर दिया जा रहा स्वामी शंकराचार्य द्वारा रचित 'श्रीगङ्गाष्टक स्तोत्र' तथा गङ्गा स्तुति का पाठ भी कल्याणप्रद माना गया है।

—पं. पन्ना लाल ज्यो. जालन्धर।

श्रीगङ्गाष्टकम्

(स्वामी शंकराचार्य द्वारा रचित)

भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहं
विगतविषयतृष्णः कृष्णमाराधयामि।
सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानसङ्गे
तरलतरतरङ्गे देवि गङ्गे प्रसीद ॥१॥

भगवति भवलीलामौलिमाले तवाम्भः
कणमणुपरिमाणं प्राणिनो ये स्पृशन्ति।
अमरनगरनारीचामरग्राहिणीनां
विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति ॥२॥

ब्रह्माण्डं खण्डयन्ती हरशिरसि जटावल्लिमुल्लासयन्ती
स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात्स्खलन्ती।
क्षोणीपृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमूर्निर्भरं भर्त्सयन्ती
पाथोधिं पूरयन्ती सुरनगरसरित्पावनी नः पुनातु ॥३॥

मज्जन्मातङ्गकुम्भच्युतमदमदिरामोदमत्तालिजालं
स्नानैः सिद्धाङ्गनानां कुचयुगविगलत्कुङ्कुमासङ्गपिङ्गम्।
सायंप्रातर्मुनीनां कुशकुसुमचयैश्छन्नतीरस्थनीरं
पायान्नो गाङ्गमम्भः करिकलभकराक्रान्तरंहस्तरङ्गम् ॥४॥

आदावादिपितामहस्य नियमव्यापारपात्रे जलं
पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्।
भूयः शम्भुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरियं
कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते ॥५॥

शैलेन्द्रादवतारिणी निजजले मज्जज्जनोत्तारिणी
पारावारविहारिणी भवभयश्रेणीसमुत्सारिणी।
शेषाहेरनुकारिणी हरशिरोवल्लीदलाकारिणी
काशीप्रान्तविहारिणी विजयते गङ्गा मनोहारिणी ॥६॥

कुतो वीचिर्वीचिस्तव यदि गता लोचनपथं
त्वमापीता पीताम्बरपुरनिवासं वितरसि।
त्वदुत्सङ्गे गङ्गे पतति यदि कायस्तनुभृतां
तदा मातः शातक्रतवपदलाभोऽप्यतिलघुः ॥७॥

गङ्गे त्रैलोक्यसारे सकलसुरवधूधौतविस्तीर्णतोये
पूर्णब्रह्मस्वरूपे हरिचरणरजोहारिणी स्वर्गमार्गे।
प्रायश्चित्तं यदि स्यात्तव जलकणिका ब्रह्महत्यादिपापे
कस्त्वां स्तोतुं समर्थस्त्रिजगदघहरे देवि गङ्गे प्रसीद ॥८॥

मातर्जाह्नवि शम्भुसङ्गवलिते मौलौ निधायाञ्जलिं
त्वत्तीरे वपुषोऽवसानसमये नारायणाङ्घ्रिद्वयम्।
सानन्दं स्मरतो भविष्यति मम प्राणप्रयाणोत्सवे
भूयाद्भक्तिरविच्युताहरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती ॥९॥

गङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतो नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति ॥१०॥

श्री गङ्गा स्तुति

यत् - संस्मृतिः सपदि कृन्तति दुष्कृतौघं, पापावलीं जयति योजन-लक्षतोऽपि।
यन्नाम नाम जगदुच्चरितं पुनाति, दिष्ट्या हि सा पति दृशोर्भविताऽद्य गङ्गा ॥ ३
आलोकोत्कण्ठितेन प्रमुदित-मनसा वर्त्म यस्याः प्रयातं,
सद् यस्मिन् कृत्यमेतामथ प्रथम-कृती जज्ञिवान् स्वर्ग-सिन्धुम्।
स्नानं सन्ध्या निवापः सुर-यजनमपि श्राद्ध-विप्राशनाद्यं,
सर्वं सम्पूर्णमेतद् भवति भगवतः प्रीतिदं नात्र चित्रम् ॥ ४॥
द्रवी-भूतं परं ब्रह्म, परमानन्द-दायिनि। अर्घ्यं गृहाण मे गङ्गे ! पापं हर नमोऽस्तु ते ॥ ५

श्रीगङ्गा-स्तुति—जिनकी स्मृति पाप-राशि का तत्काल नाश कर देती है, जो लाख योजन दूर से भी पापों के समूह को परास्त करती हैं, जिनका नाम उच्चारण किए जाने पर सम्पूर्ण जगत् को पवित्र कर देता है, वे गङ्गा जी आज सौभाग्य-वश मेरे दृष्टि पथ में आएँगी।

मनुष्य दर्शन के लिए उत्कण्ठित तथा प्रसन्न-चित्त होकर जिनके पथ का अनुसरण करता है, जिनके तट पर समस्त शास्त्र-विहित कर्म उत्तमता-पूर्वक सम्पन्न होते हैं, उन गङ्गा जी को आदि-सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी ने पहले स्वर्ग-गङ्गा के रूप में उत्पन्न किया था। उनके तट पर किया हुआ स्नान, सन्ध्या, जप, तप, ध्यान, तर्पण, देव-पूजा, श्राद्ध और ब्राह्मण-भोजन दान आदि सब कु परिपूर्ण एवं भगवान् को प्रसन्नता प्रदान करने वाला होता है—इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

परमानन्द प्रदान करने वाली हे गङ्गा जी ! आप जल-रूप में अवतीर्ण साक्षात् पर-ब्रह्म हैं। आपको नमस्कार है। आप मेरा दिया हुआ 'अर्घ्य' ग्रहण कीजिए और मेरे पाप हर लीजिए।

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०६७ वि.

(1 जनवरी सन् 2010 ई. से 5 अप्रैल 2011 तक)

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती—ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं—इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्र में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट—हमारे कार्यालय से छपी **'सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग'** पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। **मूल्य 40 रु., पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर**

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.
2 जन.	25 12	4 जन.	20 24
11 जन.	20 18	13 जन.	25 03
21 जन.	21 06	23 जन.	23 51
30 जन.	12 28	1 फर.	6 31
7 फर.	26 05	10 फर.	6 57
17 फर.	27 01	20 फर.	6 21
26 फर.	23 45	28 फर.	17 57
7 मार्च	9 09	9 मार्च	13 20
17 मार्च	8 52	19 मार्च	11 52
26 मार्च	8 53	28 मार्च	4 19
3 अप्रै.	17 54	5 अप्रै.	20 58
13 अप्रै.	15 43	15 अप्रै.	18 06
22 अप्रै.	15 23	24 अप्रै.	12 09
30 अप्रै.	27 23	3 मई	5 37
10 मई	23 43	12 मई	25 52
19 मई	20 44	21 मई	17 54
28 मई	12 10	30 मई	14 16
7 जून	8 16	9 जून	10 50
15 जून	27 05	17 जून	23 27
24 जून	19 24	26 जून	21 58
4 जुला.	16 27	6 जुला.	19 53
13 जुला.	11 37	15 जुला.	6 39
21 जुला.	25 15	24 जुला.	4 25
31 जुला.	23 36	2 अग.	27 55
9 अग.	21 57	11 अग.	16 06
18 अग.	6 52	20 अग.	10 07

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.
28 अग.	5 45	30 अग.	10 28
6 सितं.	8 37	7 सितं.	26 56
14 सितं.	13 42	16 सितं.	16 12
24 सितं.	11 37	26 सितं.	16 07
3 अक्तू.	17 49	5 अक्तू.	13 19
11 अक्तू.	22 26	13 अक्तू.	23 41
21 अक्तू.	18 07	23 अक्तू.	22 11
30 अक्तू.	24 37	1 नवं.	21 36
8 नवं.	8 28	10 नवं.	8 42
17 नवं.	25 46	20 नवं.	5 41
27 नवं.	6 00	28 नवं.	27 32
5 दिसं.	18 10	7 दिसं.	18 15
15 दिसं.	10 11	17 दिसं.	14 31
24 दिसं.	12 21	26 दिसं.	9 03
(सन् 2011 ई.)			
1 जन.	25 58	3 जन.	26 46
11 जन.	18 29	13 जन.	23 34
20 जन.	21 18	22 जन.	16 34
29 जन.	7 47	31 जन.	9 25
7 फर.	25 54	10 फर.	7 34
17 फर.	8 14	18 फर.	26 46
25 फर.	13 22	27 फर.	14 56
7 मार्च	8 21	9 मार्च	14 08
16 मार्च	18 59	18 मार्च	14 04
24 मार्च	20 44	26 मार्च	21 07
3 अप्रै.	[illegible] 22	5 अप्रै.	19 59

पंचकारम्भ एवं समाप्ति काल—सं० २०६७ वि.

(1 जन. 2010 से 5 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.
17 जन.	23 36	22 जन.	22 48
14 फर.	5 44	19 फर.	4 55
13 मार्च	12 05	18 मार्च	10 34
9 अप्रै.	19 09	14 अप्रै.	17 08
6 मई	26 55	11 मई	25 05
3 जून	10 55	8 जून	9 53
30 जून	18 32	5 जुलाई	18 29
27 जुला.	25 23	1 अग.	26 01
24 अग.	7 33	29 अग.	8 17

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.
20 सितं.	13 36	25 सितं.	14 01
17 अक्तू.	20 13	22 अक्तू.	20 20
13 नवं.	27 49	18 नवं.	27 58
11 दिसं.	12 11	16 दिसं.	12 37
(सन् 2011 ई.)			
7 जन.	20 33	12 जन.	21 14
4 फर.	4 00	9 फर.	4 51
3 मार्च	10 19	8 मार्च	11 19
30 मार्च	16 07	4 अप्रै.	17 15

पंचक-नक्षत्र-विचार

वासवोत्तर दलादि पंचके याम्यदिग्गमनं गृहगोपनम्।
प्रेत दाहतृणं काष्ठ संचयं शय्यका वितरणं च वर्जयेत्॥

—पंचक नक्षत्रों में काष्ठ छेदन (लकड़ी तोड़ना), तिनके तोड़ना, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतादि-दाहसंस्कार, स्तम्भारोपन, तृण, ताम्बा, पीतल, लकड़ी आदि का संचय, दुकान, मकान या झौंपड़ी आदि की छत डालना, चारपाई, खाट, चटाई आदि बुनना, बैठक की गद्दियों का निर्माण करना त्याज्य माना गया है। पंचकों में हानि, लाभ एवं व्याधि आदि पाँच गुणा, त्रिपुष्कर में तीन गुना तथा द्विपुष्कर में दोगुणा लाभ या हानि की सम्भावना होती है। विधिवत् नक्षत्र पूजा, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना शुभप्रद होता है। प्रेत दाह अथवा किसी अन्य कारण से हानि की आशंका हो तो उस स्थिति में किसी विद्वान् ब्राह्मण से पंचक शान्ति करवाने का विधान होता है।

ध्यान रहे, मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू-प्रवेश, उपनयन आदि तथा रक्षा-बन्धन, भैय्या दूज आदि पर्वों में पंचक नक्षत्रों के निषेध के वारे में कहीं भी विचार नहीं किया जाता।

बृहद् ज्योतिषानुसार तो धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद व रेवती नक्षत्र सभी कार्यों में सिद्धिप्रदायक एवं शुभ माने जाते हैं जबकि पू. भाद्रपद एवं शतभिषा नक्षत्र साधारण रूप से कार्य सिद्धि कारक माने गए हैं।

—सम्पादक।

ग्रहण विवरण (संवत् २०६७ वि.)

वि. संवत् २०६७ (सन् 2010–11 ई.) में पृथ्वी पर कुल चार ग्रहण घटित होंगे—

(1) **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** (भारत में दृश्य) (26 जून, 2010 ई., शनिवार)
(2) **खग्रास सूर्यग्रहण** (भारत में अदृश्य) (11/12 जुलाई, 2010 ई., रविवार)
(3) **खग्रास चन्द्रग्रहण** (भारत में अदृश्य) (21 दिसम्बर, 2010 ई., मंगलवार)
(4) **अल्प खण्डग्रास सूर्यग्रहण** (भारत में दृश्य) (4 जनवरी, 2011 ई., मंगलवार)

● भारत में अदृश्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण ●

(1) खग्रास सूर्यग्रहण (11 जुलाई, 2010 ई., आषाढ़ अमावस, रविवार)—

यह खग्रास सूर्यग्रहण 11 जुलाई, 2010 ई., रविवार को भा. स्टैं. टा. अनुसार रात्रि 10 बजकर 40 मिंट (22/40) से प्रारम्भ होकर 12 जुलाई की प्रातः 3 बजकर 27 मिनट तक (अथवा 11 जुला.-27 घं. 27 मिं.) पृथ्वी पर दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। **इसलिए इसके स्नान, दान, सूतकादि का विचार नहीं होगा।** यह ग्रहण दक्षिण अमरीका के देशों, जैसे—चिली, अर्जन्टीना तथा प्रशान्त महासागर में ही दिखाई देगा।

(2) खग्रास चन्द्रग्रहण (21 दिसं., 2010 ई., मार्गशीर्ष पूर्णिमा, मंगलवार)—

यह खग्रास चन्द्रग्रहण 21 दिसम्बर, 2010 ई., मंगलवार को भा. स्टैं. टा. के अनुसार दोपहर 12 घं. 02 मिं. पर प्रारम्भ होकर दोपहर बाद 15 घं. 32 मिं. पर समाप्त होगा। इसका खग्रास रूप (परमग्रास) 13 घं. 47 मिं. पर होगा। भारत में ग्रहण समाप्ति से पहले चन्द्र-उदय नहीं होगा, अतः यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा।

यह ग्रहण यूरोप, पश्चिम अफ्रीका, अमेरकि, प्रशान्त महासागर, पूर्वी आस्ट्रेलिया, फिलीपीन्ज, उत्तरी तथा पूर्वी ऐशिया (जैसे—रूस, मध्य चीन, इण्डोनेशिया), न्यूज़ीलैण्ड में दिखाई देगा।

✤ भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण ✤

(1) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (ज्येष्ठ पूर्णिमा, शनिवार-26 जून, 2010 ई.)—

यह ग्रहण 26 जून, 2010 ई. को सायं चन्द्रोदय के समय अरुणांचल प्रदेश, नागालैण्ड, पूर्वी उड़ीसा, दक्षिण-मध्य व पूर्वी बंगाल, मिज़ोरम, मणिपुर, आसाम, त्रिपुरा तथा मेघालय में बहुत अल्प समय के लिए दिखाई देगा। इन स्थानों पर चन्द्रमा ग्रस्त ही उदित होगा और उदय के कुछ मिनटों बाद ही ग्रहण समाप्त हो जाएगा। इन नगरों/स्थलों पर उपरोक्त चन्द्रग्रहण ग्रस्तोदय रूप में ही दिखाई देगा। भारत के शेष भागों (उत्तरी, उत्तर-पश्चिम व दक्षिण भारत) में यह ग्रहण दिखलाई नहीं देगा। भारत के केवल उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में यह ग्रहण समाप्ति काल (मोक्ष) के समय दिखाई देगा।

अगले पृष्ठ पर ग्रहण चित्र (1) में 'क-ख' रेखा से दाईं ओर बसे नगरों पर ही यह ग्रहण दिखाई पड़ेगा। आगामी पृष्ठ 14 पूर्वी भारत के लगभग 70 नगरों के चन्द्रोदय का समय दे दिया गया है। ताकि पाठकों को स्पष्ट रूप से पता चल सके कि अमुक नगर में चन्द्रग्रहण दिखाई देगा अथवा नहीं। जिन नगरों में चन्द्रोदय सायं ग्रहण समाप्ति से (18 घं. 30 मिं.) पहिले होगा, केवल उन्हीं नगरों में यह अल्पग्रास खण्ड चन्द्रग्रहण दिखाई देगा।

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण का समय—

ग्रहण प्रारम्भ	15 घं. 47 मिं.	(भा. स्टैं. टा.)
ग्रहण मध्य	17 घं. 09 मिं.	
ग्रहण समाप्ति	18 घं. 30 मिं.	

यह ग्रहण भारत के केवल पूर्वी क्षेत्रों (देखें ग्रहण चित्र-1) में चन्द्रोदय के समय पूर्वी क्षितिज में ही दिखाई देगा। अतएव ग्रहण के स्नान, दान, जपादि अनुष्ठान का माहात्म्य भी उन्हीं स्थलों पर होगा।

चूंकि यह ग्रहण भारत के उत्तर, पश्चिम एवं दक्षिण भागों, जैसे—महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, उत्तराखण्ड, उ.प्र., पंजाब, हि.प्र., जम्मू-का., हरियाणा, दिल्ली आदि प्रदेशों में दिखाई नहीं देगा, अतएव इन प्रदेशों में ग्रहणकालिक स्नान-दान, जप-तपादि अनुष्ठान, पुण्यादि एवं विवाहादि शुभ कार्यों के निषेध का विचार नहीं होगा।

यह ग्रहण भारत के पूर्वी प्रदेशों के अतिरिक्त, पूर्वी एशिया के देशों (जापान, इण्डोनेशिया, मंगोलिया, बांगलादेश, सिंगापुर, फिलीपीन्ज़), आस्ट्रेलिया, उत्तर-पूर्वी अमरीका, मध्य चीन, हिन्द तथा प्रशान्त महासागर में भी दिखाई देगा।

ग्रहण का सूतक—भारत के पूर्वीय प्रदेशों में जहाँ-जहाँ उपरोक्त चन्द्रग्रहण दृश्य होगा, वहाँ पर ही ग्रहण के सूतकादि का विचार होगा। ग्रहण का सूतक 26 जून की प्रातः 6 बजकर 47 मिनट से प्रारम्भ हो जाएगा।

सूतक एवं ग्रहणकाल में ईश्वर एवं अपने इष्टदेव का पूजन, जप-पाठ, तर्पण, हवन आदि कृत्यों का सम्पादन तथा ग्रहणोपरान्त स्नान, दानादि करना शुभ एवं कल्याणकारी होता है।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण मूल नक्षत्र तथा धनु राशिकालीन घटित हो रहा है। अतएव धनु राशि वालों को इस ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण का फल प्रायः अशुभ रहेगा। सभी राशियों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार से होगा—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	गुप्त चिन्ता	सौख्य प्राप्ति	स्त्री कष्ट	रोग भय	मान हानि	कार्य सिद्धि	धन लाभ	कष्ट, हानि	शरीर कष्ट	धन हानि	धन लाभ	चोट भय
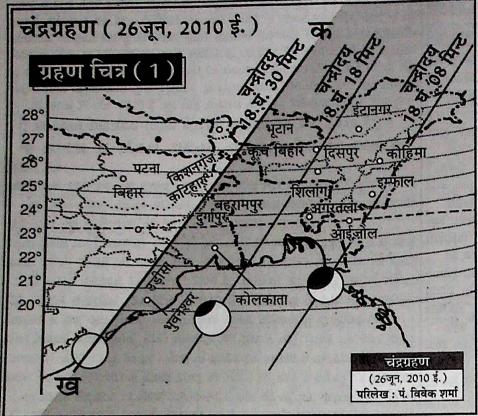
नोट—यह ग्रस्तोदय खण्ड चन्द्रग्रहण क, ख रेखा के दाईं ओर के नगरों में ही दिखाई देगा।

ग्रहण का अन्य फल—ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण का विशेष प्रभाव भारत के पूर्वी प्रदेशों (आसाम, बंगाल, नागालैण्ड, अरु. प्रदेश आदि), बांगलादेश, चीन, रूस, मंगोलिया आदि पर विशेष रुप से अधिक होगा। धनु राशि वाले देशों (सा. अरब, गुजरात, आस्ट्रेलिया, उ.प्र.) के राष्ट्र नेताओं के लिए कठिन हालात पैदा करेगा। व्यापारी, बीज, अनाज तथा इन वस्तुओं से आजीविका करने वालों, ब्राह्मणों, स्त्रियों, प्रतिष्ठित लोगों को पीड़ा हो। शनिवार को ग्रहण होने से तेल, लोहा, सरसों, सोना, तांबा, गुड़, क्रूड-आयल में विशेष तेजी बनेगी।

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (26 जून, 2010 ई.)

पूर्वी भारत के मुख्य नगर जहाँ खण्डग्रास चन्द्रग्रहण दिखाई देगा।

(जहाँ चन्द्रोदय 18 घं. 30 मिं. से पहले होगा, वहीं चन्द्रग्रहण दिखाई देगा)

नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल मिंट	नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल मिंट
अगरतला (त्रि.)	18 13	17	दिसपुर (आसा.)	18 18	12
अम्बासा (त्रि.)	18 09	21	दुर्गापुर (बं.)	18 30	—
आसनसोल (बं.)	18 29	01	डिब्रूगढ़ (आसा.)	18 10	20
इम्फाल (मणि.)	18 08	22	नवापाड़ा (बं.)	18 26	04
ईटानगर (अरुणां.)	18 14	16	नयागढ़ (उड़ी.)	18 29	01
उखरूल (मणि)	18 07	23	पुरुलिया (बं.) ×	18 33	—
ऐज़वाल (मिज़ो)	18 11	19	पोर्ट-ब्लेयर	17 35	55
उत्त. लखीमपुर(आसा.)	18 15	15	बांकुरा (बं.)	18 30	—
कटक (उड़ी.)	18 26	04	बरहामपुरा (उड़ी.)	18 28	02
करीमगंज	18 12	18	बाराकपुर (बं.)	18 21	09
कूचबिहार (बं.)	18 29	01	बुरनपुर (बं.) ×	18 34	—
कोहिमा (ना.)	18 06	24	बेलूर (बं.)	18 26	04
कोकराझार (आ.)	18 25	05	बालासोर (उड़ी.)	18 27	03
कोलकाता (बंगा.)	18 25	05	बालेश्वर (उड़ी.)	18 27	03
कटिहार (बि.) ×	18 36	—	भाटपाड़ा (बं.)	18 25	05
किशनगंज (बि.) ×	18 35	—	भुवनेश्वर (उड़ी.)	18 27	03
कोतालपुर (बं.)	18 28	02	मुर्शिदाबाद (बं.)	18 29	01
खातरा (बं.) ×	18 31	—	मेदिनीपुर (बं.)	18 27	03
खुर्दा (उड़ी.)	18 27	03	मैनागुड़ी (बं.) ×	18 35	—
गंगासागर (बं.)	18 24	06	रानाघाट (बं.)	18 25	05
गंगटोक (सि.) ×	18 36	—	रानीगंज (बं.) ×	18 32	—
गोवाहाटी (आ.)	18 20	10	रायगढ़ (उड़ी.) ×	18 42	—
गोलाघाट (आ.)	18 13	17	लालबाग (बं.)	18 28	02
चम्पाहटी (बं.)	18 22	08	लखीमपुर (आसा.)	18 14	16
चांदपाड़ा (बं.)	18 24	06	शिलीगुड़ी (बं.) ×	18 35	—
चित्तरंजन (बं.) ×	18 33	—	शिलांग (मेघा.)	18 20	10
छत्रपुर (उड़ी.)	18 27	03	श्रीकाकुलम (आध्रां.)	18 28	02
जोरहाट (आसा.)	18 13	17	सोनामुखी (बं.)	18 29	01
टीटागढ़ (बं.)	18 26	04	सोनारपुर (बं.)	18 22	08
तारकेश्वर (बं.)	18 27	03	सिबसागर(आसा.)	18 12	18
तूफानगंज (बं.)	18 29	01	सिलचर (आसा.)	18 14	16
तेजपुर (आसा.)	18 19	11	हावड़ा (बं.)	18 23	07
दार्जिलिंग (बं.) ×	18 37	—	हासनाबाद (बं.)	18 22	08
देवगढ़ (उड़ी.) ×	18 37	—			

(1) × = चिन्ह वाले नगरों में यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण दिखाई नहीं देगा। क्योंकि यहाँ चन्द्रोदय 18 घं. 30 मिं. के बाद हुआ है। (2) त्रि = त्रिपुरा, अरु. = अरुणांचल प्रदेश, बं. = पश्चिम बंगाल, नागा. = नागालैण्ड, आ. = आसाम, बि. = बिहार, मणि. = मणिपुर समझें। (3) ग्रहण-समाप्ति = सभी जगह 18 घं. 30 मिं. पर ग्रहण समाप्त हो जाएगा।

(2) अल्प खण्डग्रास सूर्यग्रहण (पौष अमावस, 4 जनवरी, 2011 ई. मंगलवार)—भारत में इस खण्डग्रास सूर्यग्रहण की अल्प ग्रास वाली खण्डग्रास आकृति ही दिखाई पड़ेगी, जो पश्चिम-उत्तर भारत के पंजाब, जम्मू-काश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर-पश्चि. गुजरात, उ.प्र. के उत्तर-पश्चिमी भागों तथा उत्तराखण्ड में दोपहर के समय दिखाई देगा।

भारत के इन प्रदेशों के नगरों में यह अल्प खण्डग्रास सूर्यग्रहण अलग-अलग समय पर प्रारम्भ होकर अलग-अलग समय पर समाप्त होगा। वैसे पृथ्वी पर यह ग्रहण भा. स्टैं. टा. अनुसार दुपैहर 12 घं. 10 मिं. से सायं 16 घं. 31 मिं. तक रहेगा। परन्तु भारत के श्रीनगर शहर में सबसे पहले यह 14 घं. 37 मिं. से प्रारम्भ होगा। उत्तर-पश्चिमी भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण इंग्लैण्ड, जर्मनी, इटली, हालैण्ड, नार्वे आदि यूरोपीय देशों, उत्तरी-अफ्रीका, मध्य-पूर्वी तथा पश्चिमी एशिया (अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईरान आदि), उत्तर-पश्चिमी चीन, पश्चिमी मंगोलिया में दिखाई देगा।

ग्रहण चित्र (2) में दी गई 'क-ख' रेखा से बाईं ओर स्थित प्रदेशों में ही यह ग्रहण दिखाई पड़ेगा, इससे दाईं ओर स्थित नगरों एवं प्रदेशों में यह ग्रहण नहीं दिखाई देगा। ग्रहण चित्र (3) में दी गई A-B रेखा के दोनों ओर बसे निकटवर्ती नगरों को विस्तार से प्रदर्शित किया गया है। इससे स्पष्ट हो रहा है कि अमुक नगर में सूर्यग्रहण दिखाई देगा अथवा नहीं।

ग्रहण चित्र (2) में इस ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) और मोक्ष (समाप्ति) बतलाने वाली टेढ़ी रेखाएँ अंकित की गई है। इन रेखाओं के छोर पर लिखे घं. मिं. प्रकट करते हैं कि उन स्थलों पर जहाँ से ये रेखाएं गुजर रही हैं, इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्षकाल (भा. स्टैं. टा.) क्या होगा। इन रेखाओं से इधर-उधर स्थित अभीष्ट नगर पर ग्रहण का स्पर्श-मोक्षकाल निकटवर्ती दो रेखाओं से उस नगर की दूरी के अनुसार जाना जा सकता है। भारत में इस खण्डग्रास सूर्यग्रहण का ग्रास अत्यन्त अल्प होगा। यह 19 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा। श्रीनगर में इसका अधिकतम ग्रास 18 प्रतिशत रहेगा। पंजाब, हि.प्र., राजस्थान, दिल्ली, उत्तराखण्ड, गुजरात, हरियाणा में इसका ग्रास 13 प्रतिशत से कम ही रहेगा। जयपुर, शिमला, नैनीताल, अजमेर, दिल्ली, हरिद्वार, देहरादून, चण्डीगढ़, अम्बाला, कुरुक्षेत्र आदि नगरों में तो इस ग्रहण का ग्रासमान एक अंगुल अर्थात् 10 प्रतिशत से भी कम होगा। जालन्धर में भी इसका मान 12 प्रतिशत ही होगा। शास्त्रकारों का वचन है कि एक अंगुल से अल्पग्रास वाले ग्रहण की चर्चा पंचांग आदि में नहीं करनी चाहिए—**ग्रासो नादेश्योऽङ्गुलाल्यो रवीन्द्वोः।** क्योंकि ऐसे ग्रहण का स्पर्श-मोक्षकाल अर्थात् कब ग्रहण प्रारम्भ हुआ और कब समाप्त हुआ—यह साधारण जनता के लिए जान सकना कठिन हो सकता है। अपितु इतने अल्प ग्रास को नंगी आंखों/साधारण शीशे से भी देख पाना सम्भव नहीं है। परन्तु आजकल टी.वी. आदि न्यूज चैनलों में कम-से-कम ग्रास को भी जनता को स्पष्टता से दिखा दिया जाता है। (टी.वी. चैनलों पर तो आजकल भारत में न दिखाई देने वाले ग्रहणों का प्रभाव/राशिफल तथा वृथा भय दिखाकर लोगों को भ्रमित किया जा रहा है—जोकि शास्त्र मर्यादा के विरुद्ध है।)

आगे पंजाब, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर आदि उन प्रान्तों के प्रसिद्ध नगरों में जहाँ-जहाँ यह ग्रहण दृश्य होगा, इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्ष का समय, पर्वकाल दिया गया है।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 4 जनवरी, सन् 2011 ई. की प्रातः 2 बजकर 37 मिं. (भा. स्टैं. टा.) पर ही प्रारम्भ हो जाएगा। सूतक काल में बाल, वृद्ध, रोगी एवं गर्भवती स्त्रियों को छोड़कर अन्य लोगों को सूतक से पूर्व भोजनादि ग्रहण कर लेना चाहिए। ग्रहण/सूतक से पहले ही दूध/दही, आचार, चटनी, मुरब्बा में कुशातृण रख देना श्रेयस्कर होता है। इससे ये दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य पदार्थों में कुशा डालने की आवश्यकता नहीं।

भारत के पूर्वी दक्षिणी क्षेत्र (मुम्बई, म.प्र., मध्य-पूर्वी, पूर्वी उ.प्र. आदि अन्य) में जहाँ यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा, वहाँ ग्रहण सम्बन्धी दान, सूतक आदि का माहात्म्य नहीं होगा।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र और धनु राशि में घटित होगा। अतएव यह ग्रहण पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र और धनु राशि वाले जातकों के लिए विशेष कष्टकारक होगा। अन्य राशि वालों के लिए ग्रहण का फल इस प्रकार से होगा—(जहाँ यह ग्रहण दिखाई देगा)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	संतान संबंधी गुप्त चिन्ता	सौख्य प्राप्ति	स्त्री वियोग, कष्ट	रोग भय	मान हानि अपयश	कार्य सिद्धि	धन लाभ	कष्ट, हानि	मित्र को कष्ट, रोग भय धन क्षय	धन हानि	धन लाभ	चोट भय, धन का क्षय

ग्रहण का अन्य फल—यह ग्रहण पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में होने से सत्यवादी, सुशील, धनाढ्य, फल, पुष्प, ईमारत, पुल आदि बनाने वालों को कष्ट एवं परेशानियां रहें। ध्रुव योग में घटित होने से वेद, पुराण पाठी, पुजारी और उत्तर दिशा की ओर यात्रा करने वालों को पीड़ा हो। राजनेताओं, ब्राह्मणों को कष्ट हो। पश्चिम दिशा में दुर्भिक्ष हो।

आदित्यग्रासकाले तु दुर्भिक्षं प्रायशो भवेत्॥

सूर्यग्रहण मंगलवार को घटित होने से दुर्भिक्ष का भय रहे, चोरों, अग्निकाण्ड, उपद्रव तथा उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में प्राकृतिक आपदाओं का भय रहे।

यथा— राजकुंजरपीडा च दुर्भिक्षं तस्कराद्भयम्।
अवन्तिदेशपीड़ा च मङ्गले ग्रहणं यदि॥

पौष मास में घटित होने से धान्य, अनाजादि तेज होंगे।
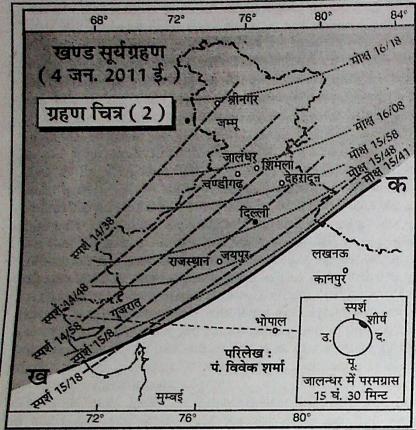
सूर्य–चन्द्र ग्रहण के सम्बन्ध शास्त्रानुमोदित वचन

● **ग्रहण में चूड़ामणि योग–**

रविवारे सूर्यग्रहश्चन्द्रवारे चन्द्रग्रहः।
चूड़ामणि संज्ञस्तत्र दानादिकमनन्त फलम्॥ (धर्मसिन्धु)

—अर्थात् रविवार को सूर्यग्रहण और सोमवार को चन्द्रग्रहण हो, तो वह चूड़ामणि योग होता है, उसमें दान आदि का अनन्त फल होता है॥

● ग्रहणस्पर्शकाले स्नानं मध्ये होमः सुरार्चनम्।
श्राद्धं च मुच्यमाने दानं मुक्ते स्नानमिति क्रमः। (धर्मसिन्धु)
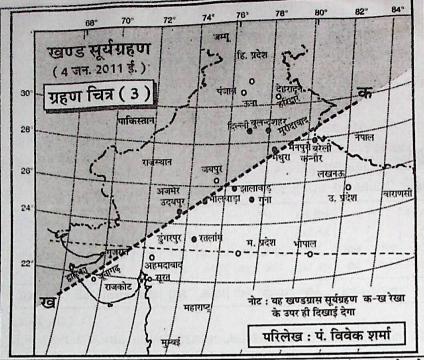
—अर्थात् ग्रहण में स्पर्श के समय स्नान, मध्य में होम और देव पूजन और ग्रहण मोक्ष के समय में श्राद्ध और अन्न, वस्त्र, धनादि का दान और सर्व मुक्त होने पर स्नान करें—यह क्रम है।

● **तीर्थादि जल स्नान का महत्त्व–**

तत्र स्नान जलेषु तारतम्यम्॥ शीतमुष्णोदकात्पुण्यमपारक्यं परोदकात्।
भूमिष्ठमुद्धृतात्पुण्यं ततः प्रस्रवणोदकम्॥ ततोऽपि सारसं पुण्यं ततः पुण्यं नदीजलम्।
ततस्तीर्थनदी गंगा पुण्यात्पुण्यस्ततोऽम्बुधिः'' इति॥

स्नान के जलों में तारतम्य (न्यूनाधिक भावे) है कि ऊष्ण जल से शीतजल पवित्र है, पराये जल से अपना जल कूप (कूआं) वापी आदि से निकाले हुए जल से भूमि में स्थित जल श्रेष्ठ होता है और उससे झरने का जल श्रेष्ठ है, उससे भी तालाब का पवित्र है और उससे नदी का जल तथा नदी के जल से तीर्थ की नदी गंगाजल पवित्र है एवं उससे भी समुद्र जल पवित्र है, ग्रहण में सचैल स्नान करें॥

● **'सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहु दर्शने'**—अर्थात् ग्रहण में सब वर्णों को सूतक होता है।

● **तेन ग्रहणकाले स्पृष्टवस्त्रादेः क्षालनादिना शुद्धिः कार्या॥**—ग्रहण के समय धारण किए हुए वस्त्र आदि को ग्रहण के पश्चात् प्रक्षालन (धोकर) एवं शुद्ध करके धारण करें।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (4 जनवरी, 2011 ई.)

[उत्तर-पश्चिम भारत के मुख्य नगरों में ग्रहण का प्रारम्भ-समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) और पर्वकाल]

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं.	मिं.	ग्रहण समाप्त घं.	मिं.	पर्व-काल घं.	मिं.
अजमेर	15	13	15	43	0	30
अमृतसर	14	45	16	11	1	26
अम्बाला	14	59	16	04	1	05
अबोहर	14	44	16	04	1	20
अनन्तनाग (का.)	14	40	16	15	1	35
अमरोहा (उ.प्र.)	15	19	15	49	0	30
अर्की (हि.प्र.)	14	57	16	07	1	10
अल्मोड़ा	15	22	15	50	0	28
अलवर	15	17	15	46	0	29
उदयपुर	15	15	15	36	0	21
ऊधमपुर (का.)	14	42	16	14	1	32
ऊना	14	51	16	09	1	18
कठुआ	14	45	16	13	1	28
करनाल	15	03	15	58	0	55
कपूरथला	14	47	16	11	1	24
कांगड़ा	14	50	16	12	1	22
कालका	14	58	16	05	1	07
कुल्लू	14	54	16	11	1	17
कुराली	14	55	16	06	1	11
कुरुक्षेत्र	15	02	16	02	1	00
कैथल	14	59	16	00	1	01
कोटखाई	14	59	16	06	1	07
खन्ना	14	54	16	07	1	13
खुर्जा (उ.प्र.)	15	19	15	34	0	15
गाज़ियाबाद	15	14	15	50	0	36
गुड़गांव	15	11	15	51	0	40
गुरदासपुर	14	44	16	12	1	28
चण्डीगढ़	14	57	16	05	1	08
चम्बा	14	48	16	13	1	25
चुरू	15	00	15	56	0	56
जयपुर	15	19	15	41	0	22
जम्मू	14	42	16	13	1	31
जालन्धर	14	48	16	10	1	22
जालौर	15	08	15	42	0	34
जीन्द	15	00	15	58	0	58

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं.	मिं.	ग्रहण समाप्त घं.	मिं.	पर्व-काल घं.	मिं.
जैसलमेर	14	45	15	58	1	13
जोधपुर	15	01	15	48	0	47
ज्वालाजी (हि.प्र.)	14	52	16	06	1	14
झुंझुनूं	15	02	15	52	0	50
टोंक	15	21	15	30	0	09
थानेसर	15	02	16	01	0	59
दिल्ली	15	12	15	52	0	40
देवनन्द	15	07	15	59	0	52
देहरादून	15	05	16	01	0	56
द्वारिका (गु.)	15	07	15	28	0	21
धर्मशाला	14	51	16	11	1	20
धूरी	14	50	16	07	1	17
नवलगढ़ (रा.)	15	08	15	53	0	45
नागौर	15	02	15	53	0	49
नाभा	14	54	16	04	1	10
नाहन	15	00	16	01	1	01
नालागढ़	14	52	16	10	1	18
नैनीताल	15	22	15	47	0	25
नारनौल	15	08	15	48	0	40
पटियाला	14	56	16	04	1	08
पठानकोट	14	46	16	12	1	26
पानीपत	15	09	15	54	0	45
पालमपुर	14	51	16	11	1	20
पाली	14	58	15	44	0	46
पिलानी	14	55	15	58	1	03
पुँछ	14	37	16	16	1	39
फगवाड़ा	14	49	16	11	1	22
फरीदकोट	14	46	16	06	1	20
फरीदाबाद	15	14	15	48	0	34
फ़ाज़िल्का	14	45	16	07	1	22
फिरोज़पुर	14	45	16	08	1	23
फिल्लौर	14	50	16	09	1	19
बाड़मेर	14	50	15	48	0	58
बिलासपुर (हि.प्र.)	14	56	16	07	1	13
बीकानेर	14	51	15	58	1	07

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं.	मिं.	ग्रहण समाप्त घं.	मिं.	पर्व-काल घं.	मिं.
बुलन्दशहर	15	19	15	45	0	26
बून्दी	15	17	15	27	0	10
बठिण्डा	14	50	16	05	1	15
भिवानी	15	06	15	55	0	49
भुज	14	59	15	35	0	36
मण्डी (हि.प्र.)	14	54	16	08	1	14
मथुरा	15	17	15	32	0	15
महेन्द्रगढ़	15	09	15	50	0	41
मलेरकोटला	14	56	16	05	1	09
मेरठ	15	14	15	53	0	39
मुज़फ्फरनगर	15	08	15	55	0	47
मुरादाबाद	15	22	15	45	0	23
मोगा	14	48	16	07	1	19
यमुनानगर	15	03	16	03	1	00
रतनगढ़	15	01	15	55	0	54
रामपुर बुशैहर	15	00	16	07	1	07
रिवाड़ी	15	10	15	50	0	40
रोपड़	14	53	16	07	1	14
रोहतक	15	09	15	54	0	45
लुधियाना	14	51	16	08	1	17
शाहदरा (दि.)	15	12	15	52	0	40
शिमला	14	57	16	06	1	09
श्रीनगर (का.)	14	38	16	18	1	40
श्रीगंगानगर	14	44	16	03	1	19
संगरूर	14	53	16	03	1	10
सरहिन्द	14	56	16	04	1	08
सहारनपुर	15	04	15	57	0	53
सांगनेर	15	21	15	40	0	19
सिरसा	14	55	16	02	1	07
सीकर (राज.)	15	06	15	50	0	44
सोलन	15	00	16	04	1	04
हमीरपुर	14	53	16	09	1	16
हरिद्वार	15	08	15	58	0	50
होशियारपुर	14	50	16	10	1	20
हिसार	14	59	15	59	1	00
हापुड़	15	14	15	49	0	35

सोमवती, भौमवासरी आदि अमावस्या का माहात्म्य 2010–11 ई.

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। स्कन्द पुराण के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी-कभी होता है। इस दिन भगवान शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्त्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होता है—

अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते। तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्॥

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्थान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है।

पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार, यदि अमावस्या सोमवार या मंगलवार अथवा गुरुवार को हो तो उस योग के पर्व को **पुष्कर योग** कहते हैं। इन योगों का फल सूर्यग्रहणों में किए हुए दान-पुण्य से सौ गुणा अधिक होता है—

अमा सोमे तथा भौमे गुरूवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्॥

स्नानदान आदि पुण्य कर्मों में मंगलवारी अमावस्या भी सोमवती अमावस्या के समान मनानी चाहिए। यदि मंगलवारी अमावस्या हो तो गंगा के स्नानमात्र से सहस्त्र गौओं के दान का फल होता है—

स्नानदानादौ भौमवती अपि सोमवती समा ज्ञेया। अमावस्या भवेद्वारे यदा भूमिसुतस्य वै। जाह्नवी स्नान-मात्रेण गोसहस्त्रफलं लभेत्। —हेमाद्रौ शातातप

सोमवार से युक्त अमावस्या हो तो वहाँ अनन्त फल देने वाली और पितृगणों को दिया हुआ श्राद्ध अक्षय होता है—

सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्। तत्रानन्तफलं श्राद्धं पितृणां दत्तभक्षयम्॥

सोमवती एवं मंगलवारी अमावस्या के विशिष्ट योग में पितृदोष शान्ति, सम्पदा सम्बन्धी परेशानियां, लड़के/लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्म शुद्धि, स्नानदान, जप-पाठ आदि का विशेष माहात्म्य होता है। इस दिन व्रत धारण करके भगवान श्री विष्णु एवं शिवपूजन, चन्द्रपूजन तथा पीपल वृक्ष की गंगाजल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत, एवं पुष्प-फल-मिष्ठान से धूप-दीप आदि से पूजन करके 108 प्रदक्षिणा के उपरान्त ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

वर्ष 2010—2011 ई. में प्रमुख अमावस्याएँ

(1) 13 फरवरी 2010 ई. (शनिवासरी)
(2) 15 मार्च 2010 ई. (सोमवती)(कुंभ स्नान)
(3) 13 मई, 2010 ई. (गुरूवासरी)
(4) 12 जून 2010 ई. (शनिवासरी)
(5) 9 अगस्त 2010 ई. (सोमवती 12/15 बाद)
(6) 10 अगस्त 2010 ई. (मंगलवासरी)
(7) 7 अक्तूबर 2010 ई. (गुरूवासरी)
(8) 6 नवम्बर 2010 ई. (शनिवासरी)
(9) 4 जनवरी 2011 ई. (मंगलवासरी)
(10) 3 फरवरी 2011 ई. (गुरूवासरी)

चन्द्रमा का उपच्छाया ग्रहण

आगामी वर्ष (2010-11 ई.) में भूगोल पर दो चन्द्रग्रहण ही दिखाई देंगे। प्रत्येक चन्द्रग्रहण के घटित होने से पूर्व चन्द्रमा पृथ्वी की उपच्छाया में अवश्य प्रवेश करता है जिसे चन्द्र मालिन्य अथवा Penumbra भी कहा जाता है। उसके बाद ही वह पृथ्वी की वास्तविक छाया (दूसरे शब्दों में भूभा (Umbra) में प्रवेश करता है।

ध्यान रहे, इस उपच्छाया के समय चन्द्रमा का बिम्ब केवल धुंधला पड़ता है, काला नहीं होता। कई बार तो चन्द्रमा उपच्छाया में प्रवेश कर, उपच्छाया शंकु से ही बाहर निकल जाता है। तथा इसे धुंधलेपन को साधारण नंगी आंख से देख पाना सम्भव नहीं होता। धर्मशास्त्रकारों ने इस प्रकार के उप-ग्रहणों (उपच्छाया) में चन्द्र बिम्ब पर मालिन्य मात्र छाया आने के कारण उन्हें **ग्रहण की कोटि में नहीं रखा।**

चन्द्रग्रहण घटित होने से पूर्व तथा बाद में भी चन्द्रमा को पृथ्वी की इस उपच्छाया में से गुज़रना पड़ता है। जिसे ग्रहण काल नहीं कहा जा सकता।

अगले वर्ष घटित होने वाले दोनों चन्द्र ग्रहणों का उपच्छाया विचरण काल लिख रहे हैं—

(*i*) 26 जून, 2010 ई. को चन्द्रमा भा.स्टै.टा. अनुसार 14 घं. 26 मिं. से 15 घं. 47 मिं. तक तथा 18 घं. 30 मिं. से 19 घं. 51 मिं. तक उपच्छाया में विचरण करेगा। जबकि वास्तविक छाया (भूभा) अर्थात् चन्द्रग्रहण 15 घं. 47 मिं. से 18 घं. 30 मिं. तक रहेगा। इस वर्णित उपच्छाया काल में चन्द्रमा केवल धुंधला होगा। ग्रसित नहीं होगा।

(*ii*) 21 दिसंबर, 2010 ई. को चन्द्रमा भा.स्टैं.टा. अनुसार 10 घं. 58 मिं. से 12 घं. 02 मिं. तक तथा पुन: 15 घं. 32 मिं. से 16 घं. 36 मिं. तक उपच्छाया में विचरण करेगा। वास्तविक छाया अर्थात् चन्द्र ग्रसित काल तो पहले वर्णित 12 घं. 02 मिं. से 15 घं. 32 मिं. तक ही रहेगा।

टैलीविज़न चैनलों एवं कुछ समाचार पत्रों में ग्रहण सम्बन्धी मिथ्या एवं भ्रामक उद्घोषणाओं से सावधान

गतवर्ष कई टी.वी. चैनलों ने और कुछ समाचार पत्रों में भी उपरोक्त उपच्छाया को ग्रहणों की कोटि में मानते हुए एवं मास में तीन-तीन ग्रहणों की घोषणाएँ की। और फिर तथाकथित अल्पज्ञ पण्डितों द्वारा इन उपच्छाया ग्रहणों द्वारा बारह राशियों पर पड़ने वाले काल्पनिक प्रभावों की विवेचना करते रहे। और लोगों को अकारण ही भयभीत करते रहे। और भोली-भाली जनता को गुमराह करते रहे। केवल तीन ग्रहण में से 22 जुलाई को घटित होने वाला सूर्यग्रहण ही ग्रहण की कोटि में वैज्ञानिक दृष्टि एवं फलित ज्योतिष की दृष्टि से प्रभावकारक था। अन्य उपच्छाया हण न तो अन्य प्रतिष्ठित ग्रहणों की भांति पृथ्वी पर उनकी काली छाया पड़ता है, न ही सौरपिंडों (सूर्य-चन्द्र) की भांति उनका वर्ण काला होता है। केवल चन्द्रमा की आकृति थोड़ी धुंधली-सी हो जाती है। इसका स्पष्ट प्रमाण लोगों ने फरवरी एवं जुलाई 2009 ई. में प्रसारित होने वाले टी.वी. चैनलों पर देख लिया हुआ होगा। इस सम्बन्ध में हमें बहुत से पत्र तथा Telephone प्राप्त हुए हैं। इसलिए पाठकों की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए उपरोक्त विवरण दिया जा रहा है।

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं पाया विचार सं. २०६७ (सन् 2010-11 ई०)

गतवर्ष शनि ने 9 सितंबर, 2009 ई. को कन्या राशि में प्रवेश किया था। आगामी सम्पूर्ण संवत् में (16 मार्च, 2010 ई. से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक) शनि कन्या राशि में ही संचार करेगा।

वर्षारम्भ 13 जन., 2010 ई. से 30 मई, 2010 ई. तक शनिदेव वक्री अवस्था में कन्या राशि में ही विचरण करेंगे। तदुपरान्त 30 मई, 2010 ई. से 25 जनवरी, 2011 ई. तक मार्गी रहेगा। तत्पश्चात् 26 जन., 2011 ई. से संवत् के अन्त तक (3 अप्रैल, 2011 ई.) वक्री अवस्था में ही कन्या राशि में संचार करेगा।

ध्यान रहे, शनि मंगल आदि क्रूर ग्रह जब गोचरवश वक्री होकर संचार करते हैं, तो प्रजा में अशान्ति, विग्रह, आवश्यक वस्तुओं की कमी, महँगाई, व्याधि-भय, राजनीतिक टकराव, उपद्रव, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), भूकम्प, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप, हिंसक घटनाएं आदि घटित होती हैं।

गोचरवश जब शनि किसी जातक की जन्म-राशि (अथवा नाम राशि) से द्वादश, प्रथम या द्वितीय स्थान में हो, तो शनि की प्रस्तुत गोचर स्थिति शनि साढ़ेसाती कहलाती है। इसके **प्रभावस्वरूप** मानसिक संताप, शारीरिक कष्ट, कलह-क्लेश, आर्थिक-परेशानियां, आय कम व खर्च की अधिकता, रोग एवं शत्रु भय, बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ, सन्तान एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियां उत्पन्न होती हैं। यथा—

राशौ द्वादशमूर्ध्नि जन्म हृदये पादौ, द्वितीयेशनिः।
नानाकलेश-करोति दुर्जन भयं पुत्रान् प्रशुन् पीडयेत्॥

शनि प्रत्येक राशि में लगभग अढ़ाई वर्ष तक संचार करता है। शनि की वक्री-मार्गी गति के कारण अढ़ाई वर्षों के काल में न्यून-अधिकता भी होती रहती है। शनि जिस राशि पर संचरित होता है, उससे पहले, बाहरवें और दूसरे भावों में स्थित राशियों को विशेषतः प्रभावित करता है। इसी को शनि की साढ़ेसाती (साढ़ेसात वर्षीय) कहा जाता है।

शनि की ढैय्या—जब गोचरवश शनिं चन्द्रराशि (या नाम राशि) से चौथे या आठवें स्थान पर संचार करता है, तब शनि की ढैय्या कहलाती है, यह अढ़ाई वर्ष की होती है, इसका प्रभाव भी अशुभ होता है—

''लघु कल्याणी (ढैय्या) प्रददाति वै रविसुतोः राशे चतुर्थाष्टमे,
व्याधिं बन्धुविरोधं विदेशगमनं, क्लेशं च चिन्ताधिकम्॥''

अर्थात् शनि की ढैय्या के प्रभावस्वरूप जातक को रोग, शोक, कलह-क्लेश, धन-हानि, बन्धु-विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहता है।

● कन्या राशि में संचरणकालीन शनि-साढ़ेसाती एवं ढैय्या ●

[सम्पूर्ण संवत् (16 मार्च, 2010 ई. से 3 अप्रै., 2011 ई. तक)]

साढ़ेसाती—

✤ सिंह राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती पाँव पर उतरती हुई अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

✤ कन्या राशि वालों को शनि साढ़ेसति हृदय पर चढ़ती हुई अर्थात् मध्यम अवस्था में होगी।

✤ तुला राशि वालों को शनि साढ़ेसति सिर पर चढ़ती हुई अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी।

ढैय्या विचार—मिथुन एवं कुम्भ राशि वालों को शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा।

सुवर्णादि पाया निर्णय—गतवर्ष 9 सितम्बर, 2009 ई. को शनि भरणी नक्षत्र एवं मेष के चन्द्रमाकालीन बुधवार रात को कन्या राशि में प्रवेश किया है। मेष, वृषादि राशियों पर शनि का सुवर्णादि पाया वही रहेगा। यथा—

(1) मेष, मिथुन व वृश्चिक राशियों पर सोने का पाया मिश्रित फलदायक।
(2) वृष, कन्या व मकर राशि वालों को लोहे का पाया अशुभ फल।
(3) कर्क, तुला व कुम्भ राशि वालों को ताम्र का पाया शुभ होगा।
(4) सिंह, धनु व मीन राशि वालों को चाँदी का पाया शुभ होगा।

(क) सोने का पाया हो, तो जातक को उस अवधि में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें अधिक होंगी। शत्रु एवं रोग भय, मानसिक तनाव अधिक रहे। वृथा खर्च एवं कलह-क्लेश अधिक रहे।

(ख) लोहे का पाया हो, तो जातक को आर्थिक व पारिवारिक परेशानियाँ अधिक होती हैं। स्वास्थ्य में गड़बड़ तथा तनाव एवं उलझनें बढ़ती हैं। दुर्घटना से चोटादि का भय, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ हों, प्रयत्न करने पर भी लाभ कम व खर्च अधिक रहे।

(ग) ताम्र का पाया—इसका फल शुभ होता है। कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनते हैं। उच्च विद्या में सफलता, विवाह एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति, सवारी आदि सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होती है। देश-विदेश की यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होते हैं।

(घ) चाँदी का पाया हो, तो जातक को गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है। आकस्मिक धन लाभ, उच्च-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, स्त्री-सन्तान एवं भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है।

● कन्या राशिगत शनि का द्वादश राशियों पर प्रभाव ●

[वर्षारम्भ से संवतान्त तक]

मेष—शनि षष्ठ स्थान में संचार करने तथा पाया सुवर्ण होने से कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना रहेगा। परन्तु 20 जुला. से 19 अक्तू. के मध्य मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा तथा निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

वृष—शनि पंचमस्थ होने से पूज्य होगा। उच्च विद्या प्राप्ति में बाधाएँ उत्पन्न हों। स्त्री को कष्ट एवं सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता हो। कार्यों में संघर्ष के बाद सफलता मिले। शनि का पाया लोहा होने से भाई-बन्धुओं से कलह एवं तकरार तथा शत्रु, रोग एवं आर्थिक उलझनें रहें।

मिथुन—शनि चतुर्थ होने से (ढैय्या आदि के कारण) संघर्ष, धन-हानि, तनाव आदि अशुभ फल घटित होंगे। शनि का पाया भी सोना होने से रोग एवं शत्रु भय, पारिवारिक कलह, तनाव एवं वृथा खर्च भी रहेंगे।

कर्क—राशि को शनि तृतीयस्थ होने से धन लाभ, मकान, वाहनादि सुख-सुविधाओं एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। पाया ताम्र होने से भी लाभ व उन्नति के भी अवसर प्राप्त होंगे। वर्षारम्भ से 26 मई तक मंगल का संचार होने से खर्च, तनाव व उत्तेजना बढ़ेगी।

★ **सिंह**—राशि को शनि द्वितीय रहेगा, शनि-साढ़ेसति का प्रभाव अभी रहेगा। घरेलू एवं आर्थिक उलझनें, आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। परन्तु शनि का पाया रजत (चान्दी) होने के कारण बीच-बीच में धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

★ **कन्या**—राशि को लग्न भाव पर ही शनि-साढ़ेसति होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे, बनते कार्यों में अड़चनें एवं विलम्ब हो, किसी रोग के कारण कष्ट हो। शनि का पाया लोहा होने से भी संघर्ष व तनाव अधिक रहें। स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें।

★ **तुला**—राशि को शनि द्वादशस्थ होने से परिवार एवं व्यवसाय सम्बन्धी दौड़-धूप अधिक रहे, वृथा परिश्रम एवं खर्च भी बहुत अधिक रहे। परन्तु शनि का पाया ताँबा होने से कुछ बिगड़े कार्य भी बनेंगे। अचानक धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

वृश्चिक—राशि को शनि एकादश (लाभ) स्थान में होने से परिश्रम के बाद धन लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। तृतीय दृष्टि के कारण स्त्री, सन्तान एवं सवारी आदि की चिन्ता भी रहेगी। शनि का पाया सुवर्ण होने से भी धन लाभ मध्यम रहेगा तथा खर्च अधिक होंगे।

धनु—राशि को दशमस्थ शनि होने से व्यवसाय एवं गृह सम्बन्धी कठिन आर्थिक परिस्थितियों का सामना रहेगा। परन्तु पाया चाँदी होने से विविध अड़चनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। शुभ कार्यों पर खर्च भी होंगे।

मकर—राशि को शनि नवमस्थ होने से भाग्योन्नति में विघ्न एवं विलम्ब पैदा होंगे। खर्च अधिक, व्यापार में लाभ कम, निकटस्थ भाई-बन्धुओं से मतान्तर हों। शनि का पाया लोहा होने से आय के साधन सीमित, परन्तु खर्चों में वृद्धि रहे, मानसिक तनाव भी बढ़े।

कुम्भ—राशि को शनि अष्टम (ढैय्या के कारण) होने से अशुभफली होगा। कार्य-व्यवसाय में विघ्न-बाधाओं के बाद सफलता मिले। परन्तु पाया ताम्र होने से निर्वाह योग्य आय के साधन तथा कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

मीन—राशि को शनि सप्तमस्थ होने से परिवार एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियाँ अधिक होंगी। बनते कार्यों में अड़चनें पैदा हों, स्वास्थ्य में कमी, परन्तु इस राशि को शनि का पाया चाँदी होने से बीच-बीच में धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

शनि–साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी उपाय

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा—ऐसा आवश्यक नहीं। ध्यान रहे, शनि सभी राशियों पर एक जैसा प्रभाव नहीं करता है, बल्कि स्वराशि, उच्च-मित्रादि स्थिति से एवं शुभाशुभ दृष्टियों के प्रभावस्वरूप इसके फल में न्यूनाधिक अन्तर पड़ना भी सम्भव है। जन्मकुण्डली एवं नवांश में शनि की स्थिति अच्छी हो एवं जातक की ग्रह-दशा भी शुभ हो, तो शनि की साढ़ेसति या ढैय्या का अशुभ प्रभाव भी अपेक्षाकृत कुछ कम होगा। इसके अतिरिक्त वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ राशि पर शनि की स्थिति या दृष्टि शुभ, लाभदायक एवं योगकारक भी हो सकती है। किसी विशेष राशि पर शनि साढ़ेसाती का विचार करते समय उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि आदि का प्रभाव, सुवर्णादि पाया का अवश्य विचार करना चाहिए।

कुण्डली में शनि की स्थिति एवं दशाऽन्तर्दशा शुभ होने पर कार्य-व्यवहार व योजनाओं में सफलता, लाभ, व्यवसायिक विद्याओं में उन्नति, क्रय-विक्रय विशेषकर लोहे, तेल के कार्य-व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

शनि की दशाऽन्तर्दशा अथवा साढ़ेसाती अशुभ स्थिति में होने से व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता अथवा परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती। वह कुछ चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है, उसके प्रत्येक कार्य में विघ्न पैदा होते हैं। निकट सहयोगी भी परायों जैसे व्यवहार करने लगते हैं। अतएव ऐसी स्थिति में जातक को शनि का पूजन, दान, मन्त्र-जाप तथा औषधि स्नान आदि करने से शनि के अरिष्ट की शान्ति होती है।

जन्म कुं. में शनि यदि अशुभ हो अथवा जन्म-नक्षत्र पर शनि का संचार हो, तो जातक/जातिका को वायु-विकार, त्वचा रोग, घुटनों में दर्द, उच्च या निम्न रक्तचाप आदि रोग होते हैं।

शनि प्रायः क्लिष्ट रोग एवं दुःख देकर दुष्ट-कर्मों का भुगतान करवाता है। शनि के अरिष्टकाल में कोई-न-कोई झंझट चलता रहता है। आर्थिक संकट एवं घरेलू कलह का भय होता है। वायु प्रकोप आदि शरीर कष्ट, मानसिक अशान्ति रहती है। अपने भी पराये होने लगते हैं। आय कम तथा खर्चों में अधिकता होने लगती है।

उपाय—शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ पहुँचेगा।

(1) प्रत्येक शनिवार को शनि मन्त्र का संकल्पपूर्वक पाठ करें—

'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'

कम-से-कम 3 माला अवश्य करें। पाठ उपरान्त निम्न शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा—

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥

(2) शनिवासरी अमावस्या हो, तो उस दिन सायं, सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र-जाप एवं स्तोत्र पाठ करना विशेष लाभकारी होगा।

विधि—सायं सूर्यास्त के बाद, स्नानादि उपरान्त पश्चिम दिशा की ओर मुख करके काले रेशमी आसन (कम्बलादि) पर बैठ जाएँ। सामने स्टील की थाली में लगभग 100 ग्राम जौं, 100 ग्राम काले तिल, काले वर्ण के कुछ फूल, 1 मुट्ठी चावल, 5 साबुत सुपारी, मौली, धूपबत्ती, रोली, लाल चंदन, काली मिठाई जैसे—गुलाब जामुन भी रख लें।

स्टील की कटोरी में तेल सरसों का दीपक जलाकर रखें। सामने एक नारियल तिलक लगाकर, स्टील का लोटा शुद्ध जल भरकर रखें।

मन्त्र–जाप–ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः

मन्त्र की 1 या 3 माला करके उसे पूजन सामग्री के साथ बहते पानी में विसर्जित कर देवें।

(3) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ या श्रवण करना शुभ होगा।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र की 23 हजार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित शनि यन्त्र धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—*"ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।"*

शनि का वैदिक मन्त्र—

"ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥ शं नमः॥"

सर्वारिष्ट शान्त्यर्थ शनि स्तोत्र—

"ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥"

(धर्मसिन्धु)

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजनोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

● गुरु का शुभाशुभ गोचरफल–संवत् २०६७ ●

[16 मार्च, 2010 ई. से 3 अप्रै., 2011 ई. तक]

वर्षारम्भ 2010 ई. में गुरु कुम्भ राशि में संचार कर रहा है। ता. 1 मई 2010 ई. तक गुरु कुम्भ राशि में ही विचरण करेगा। ता. 2 मई को शीघ्र गति से मीन राशि में प्रवेश करेगा। ता. 23 जुला. को मीन राशिकालीन वक्री होगा तथा 31 अक्तूबर, 2010 ई. तक मीन राशि में ही वक्री अवस्था में संचार करेगा।

तदुपरान्त गुरु वक्री अवस्था में 1 नवं. को पुनः कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। फिर ता. 18 नवं. 2010 ई. को मार्गी होकर 6 दिसं., 2010 ई. को पुनः स्वराशि मीन में प्रवेश करेगा तथा संवतान्त 3 अप्रैल, 2011 ई. तक मीन राशि में संचरणशील रहेगा।

कुम्भ राशि में संचरणकाल शुभाशुभ गोचरफल यद्यपि गतवर्षीय पंचांग में लिख चुके हैं। पाठकों की सुविधा के लिए पुनः लिख रहे हैं—

● कुम्भ राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ गोचरफल ●

[वर्षारम्भ 1 जन., 2010 ई. से 1 मई, 2010 ई. तक तथा पुनः 1 नवं., 2010 ई. से 5 दिसं., 2010 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
धन लाभ के अवसर मिले, नए कार्य की योजना बने प्रिय मिलन	आय कम व खर्च अधिक परिवार में मन-मुटाव, तनाव व परे-शानी हो।	विद्या में सफलता, सन्तान सुख, बिगड़ा कार्य बने, भूमि, वाहनादि का सुख	शरीर कष्ट, खर्च अधिक, अचानक धन हानि, घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।	स्त्री/ पति सुख, धर्म-कर्म में प्रवृत्ति, मान-सम्मान	रोग व शत्रु भय, मानसिक तनाव व उलझनें बढ़ेंगी। निजबंधु से विरोध	भूमि-वाहनादि सुख हों, धन लाभ, धर्म में रूचि, गृह में शुभ कार्य पर खर्च हो।	कार्यों में विघ्न-बाधाएं व खर्च अधिक, स्वास्थ्य हानि व तनाव	धन लाभ हो, किसी प्रिय बन्धु का सुख, पदोन्नति विदेश यात्रा के योग हैं।	अचानक धन लाभ सुख-साधन बढ़ें परन्तु खर्च अधिक	संघर्ष से निर्वाह योग्य धन लाभ, खर्चों की अधिकता, परिवार में वैमनस्य	धन लाभ अल्प रहे, धर्म-कर्म में प्रवृत्ति, शुभ कार्यों पर खर्च अधिक रहे।

● मीन राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल ●

[2 मई, 2010 ई. से 31 अक्तू., 2010 ई., पुनः 6 दिसं., 2010 ई. से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अल्प धन लाभ, धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति, शुभ कार्यों पर खर्च हो।	धन-सम्पदा सवारी का सुख, भाग्य में उन्नति प्रिय मिलन, व्यय अधिक	धन हनि, मित्र से धोखा मिले, तनाव एवं उलझनें रहें	संतान सम्बन्धी सुख, विद्या-कम्पीटीशन में सफलता	आय कम व खर्च अधिक हों, ऋण व रोग का भय, घरेलू उलझनें बढ़ेंगी	विशेष परिश्रम से भाग्य उन्नति, कार्यों में सफलता	बनते कार्यों में अड़चनें, शरीर कष्ट, रोग भय	संतान संबंधी सुख, भूमि-वाहनादि सुख हो, गृह में शुभ कार्य हो।	भूमि-जायदाद से लाभ, स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, मन-उचाट रहे।	आय साधारण, स्त्री/ पति एवं दाम्पत्य सुख रहे।	अचानक धन लाभ के अवसर, भाग्य में वृद्धि, श्रेष्ठजन से मेल, विदेश यात्रा	गुज़ारे योग्य आय, धार्मिक कार्यों में रूचि, शरीर कष्ट भय।

गुरु का कारकत्व—गुरु पति-सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक, बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन-प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरु अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरु सम्बन्धित सुख में कमी करता है।

हमारे कार्यालय से छपी ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-I में गोचर विचार पढ़ना चाहिए।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति–अथवा गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मन्त्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मन्त्र, व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार को केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र—''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्''

गुरु बीज मन्त्र—''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः॥''

● राहु का शुभाशुभ गोचरफल-संवत् २०६७ ●

गतवर्ष 16 नवं., 2009 ई. को राहु ने धनु राशि तथा केतु ने मिथुन राशि में प्रवेश किया था। आगामी सम्पूर्ण संवत् २०६७ (16 मार्च, 2010 ई. से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक) में राहु धनु व केतु मिथुन राशि में ही संचार करेगा। यद्यपि धनु राशिस्थ राहु का फल लिख आए हैं। तथापि पाठकों की सुविधा के लिए पुनः लिख रहे हैं।

धनु राशिस्थ राहु का गोचर फल (संक्षेप में)

(16 मार्च, 2010 ई. से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
बिगड़े कामों में सुधार हो, वाहन आदि के सुख हों, खर्च बढ़ेंगे।	कार्य व्यवसाय में विघ्नों के बाद जूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनें।	बनते, कामों में विघ्न, लाभ कम व खर्च अधिक रहेंगे। किसी प्रिय बंधु से तकरार हो।	विशेष परिश्रम के बाद भी आय कम व खर्च अधिक रहें।	भाग्य-उन्नति में विघ्न बाधाएँ हों, आर्थिक उलझनों के कारण गुप्त चिन्ताएँ।	निकट बन्धु से तनाव बढ़ें। आय में कमी व खर्च बढ़ेंगे। निकट बंधु से तनाव हो।	धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त, विदेश यात्रा के चाँस बनेंगे। कोई खुश-खबरी मिले।	कार्य व्यवसाय में विघ्नों के बाद सफलता मिले, खर्च भी बढ़ेंगे।	किसी प्रिय बन्धु से तकरार, लाभ कम तथा खर्च अधिक होंगे।	अड़चनें रहें, पर गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहें।	धन-लाभ व उन्नति के चाँस, विदेश यात्रा के योग, खर्च भी बढ़ेंगे।	बनते कामों में विघ्न रहें, वृथा दौड़-धूप व खर्च हो सुख में कमी हो।

केतु का कर्कराशिस्थ गोचर फल संवत् २०६७

(16 मार्च, 2010 ई. से 3 अप्रै., 2011 ई. तक)

केतु भी सम्पूर्ण सम्वत् मिथुन राशि में संचार करेगा।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आर्थिक संकट के कारण घरेलू झंझट व अशान्ति रहे।	बिगड़े कामों में सुधार परिश्रम से धन लाभ अच्छा, वाहन सुख मिले।	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, लाभ कम व खर्च अधिक रहे। तनाव हो।	शरीर कष्ट व तनाव रहे, बनते कामों में विघ्न, खर्च ज्यादा हो।	रोग व शत्रु भय अपने परायों जैसा व्यवहार रखें। खर्च अधिक रहेंगे।	धन लाभ साधारण वाहन, भूमि आदि साधनों की प्राप्ति, संघर्ष अधिक रहे।	लाभ अल्प व खर्च अधिक रहे। गृह में कोई मंगल कार्य हो। विदेश यात्रा योग बने।	भाग्य उन्नति में विघ्न, वृथा खर्च बढ़े, दुर्घटना से चोट आदि का भय।	धन-हानि, रोग व शत्रु भय विद्या में विघ्न, परिवार सम्बन्धी चिन्ता, खर्च अधिक रहें।	कुटुम्ब में किसी प्रियजन से वैमनस्य, खर्च अधिक, किसी से धोखा मिले।	पराक्रम से धन लाभ हो बिगड़े कामों में सुधार, खुश-खबरी मिले।	घरेलू कलह-क्लेश, मन अशान्त, लाभ कम व खर्च अधिक।

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र—

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा श्री गणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र—

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाश्य पुस्तक अनिष्ट ग्रह शान्ति और उपयोगी उपाय मँगवाकर पढ़ें।

—पं. पंकज शर्मा ज्यो.

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योग-वि. संवत् २०६७ (सन् 2010-11)

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में—अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों** में स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, विदेश यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि। रवि योग स. सि. योगों की भान्ति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। रवि योग की उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी हो, तो '**रवि योग**' अन्य कुयोगों का नाश करके शुभ फल प्रदान करता है।

रविपुष्य योग—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषध तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में यह योग शुभ होते हैं।

गुरुपुष्य योग—गुरु अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरू धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्र निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल में, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना प्रशस्त होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों में ही करने कल्याणकारी होंगे।**

—पण्डित विवेक शर्मा, पंचाँगकर्त्ता।

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2010 ई.	घं. मिं.	2010 ई.	घं. मिं.
16 मार्च	6 48	17 मार्च	सू. उ.
18 मार्च	सू. उ.	19 मार्च	11 52
22 मार्च	सू. उ.	23 मार्च	सू. उ.
25 मार्च	सू. उ.	26 मार्च	सू. उ.
28 मार्च	25 48	29 मार्च	सू. उ.
2 अप्रै.	17 36	3 अप्रै.	सू. उ.
4 अप्रै.	19 03	5 अप्रै.	सू. उ.
13 अप्रै.	सू. उ.	13 अप्रै.	15 43
15 अप्रै.	सू. उ.	15 अप्रै.	18 06
17 अप्रै.	18 52	18 अप्रै.	सू. उ.
19 अप्रै.	सू. उ.	19 अप्रै.	18 20
22 अप्रै.	सू. उ.	22 अप्रै.	15 23
25 अप्रै.	10 18	26 अप्रै.	सू. उ.
29 अप्रै.	27 21	30 अप्रै.	27 23
2 मई	सू. उ.	3 मई	5 37
9 मई	21 46	10 मई	सू. उ.
11 मई	25 05	12 मई	सू. उ.
15 मई	सू. उ.	15 मई	25 18
23 मई	सू. उ.	24 मई	सू. उ.
27 मई	11 58	28 मई	12 10
30 मई	सू. उ.	30 मई	14 16

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2010 ई.	घं. मिं.	2010 ई.	घं. मिं.
6 जून	6 03	7 जून	सू. उ.
8 जून	9 53	9 जून	सू. उ.
12 जून	सू. उ.	12 जून	9 49
15 जून	5 00	15 जून	सू. उ.
15 जून	27 05	16 जून	सू. उ.
20 जून	सू. उ.	20 जून	19 34
23 जून	18 48	24 जून	19 24
27 जून	23 57	28 जून	सू. उ.
28 जून	26 21	29 जून	सू. उ.
4 जुला.	सू. उ.	4 जुला.	16 27
6 जुला.	सू. उ.	6 जुला.	19 53
7 जुला.	20 33	8 जुला.	सू. उ.
12 जुला	14 5	13 जुला	सू. उ.
13 जुला	11 37	14 जुला	सू. उ.
21 जुला	सू. उ.	21 जुला	25 15
25 जुला	6 37	26 जुला	सू. उ.
26 जुला	9 09	27 जुला	सू. उ.
1 अग.	26 01	2 अग.	सू. उ.
4 अग.	5 10	5 अग.	सू. उ.
8 अग.	24 36	9 अग.	21 57
10 अग.	सू. उ.	10 अग.	19 04

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2010 ई.	घं. मिं.	2010 ई.	घं. मिं.
18 अग.	सू. उ.	18 अग.	6 52
22 अग.	सू. उ.	22 अग.	15 11
23 अग.	सू. उ.	23 अग.	18 4
28 अग.	5 45	28 अग.	सू. उ.
29 अग.	8 17	30 अग.	सू. उ.
31 अग.	12 11	2 सितं.	सू. उ.
5 सितं.	10 53	6 सितं.	8 37
11 सितं.	15 59	12 सितं.	सू. उ.
13 सितं.	13 39	14 सितं.	सू. उ.
18 सितं.	21 09	19 सितं.	सू. उ.
24 सितं.	11 37	25 सितं.	सू. उ.
26 सितं.	सू. उ.	26 सितं.	16 07
28 सितं.	सू. उ.	28 सितं.	19 16
29 सितं.	सू. उ.	30 सितं.	सू. उ.
3 अक्तू.	सू. उ.	3 अक्तू.	17 49
9 अक्तू.	सू. उ.	9 अक्तू.	24 27
11 अक्तू.	सू. उ.	11 अक्तू.	22 26
15 अक्तू.	27 54	17 अक्तू.	सू. उ.
21 अक्तू.	18 07	23 अक्तू.	सू. उ.
25 अक्तू.	24 49	26 अक्तू.	सू. उ.
27 अक्तू.	सू. उ.	27 अक्तू.	25 58
28 अक्तू.	25 57	29 अक्तू.	25 31

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2010-11	घं. मिं.	2010-11	घं. मिं.
3 नवं.	17 21	4 नवं.	सू. उ.
6 नवं.	सू. उ.	6 नवं.	10 56
8 नवं.	सू. उ.	8 नवं.	8 28
12 नवं.	11 54	13 नवं.	14 25
16 नवं.	23 09	17 नवं.	सू. उ.
18 नवं.	सू. उ.	20 नवं.	5 41
22 नवं.	7 40	23 नवं.	सू. उ.
24 नवं.	सू. उ.	24 नवं.	7 57
25 नवं.	7 34	26 नवं.	6 55
1 दिसं.	सू. उ.	1 दिसं.	22 55
10 दिसं.	सू. उ.	10 दिसं.	22 56
14 दिसं.	7 24	15 दिसं.	सू. उ.
16 दिसं.	सू. उ.	17 दिसं.	14 31
20 दिसं.	सू. उ.	21 दिसं.	सू. उ.
23 दिसं.	सू. उ.	24 दिसं.	सू. उ.
31 दिसं.	26 09	1 जन.	सू. उ.
(सन् 2011 ई.)			
2 जन.	26 09	3 जन.	सू. उ.
11 जन.	सू. उ.	11 जन.	18 29
13 जन.	सू. उ.	13 जन.	23 34
15 जन.	26 21	16 जन.	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2011 ई.	घं. मिं.	2011 ई.	घं. मिं.
17 जन.	सू. उ.	17 जन.	26 10
20 जन.	सू. उ.	20 जन.	21 18
23 जन.	14 14	24 जन.	सू. उ.
28 जन.	7 40	29 जन.	सू. उ.
30 जन.	8 23	31 जन.	सू. उ.
6 फर.	22 54	7 फर.	सू. उ.
9 फर.	4 51	9 फर.	सू. उ.
10 फर.	सू. उ.	10 फर.	7 34
12 फर.	11 30	13 फर.	सू. उ.
14 फर.	सू. उ.	14 फर.	12 32
17 फर.	सू. उ.	17 फर.	8 14
20 फर.	सू. उ.	21 फर.	सू. उ.
24 फर.	13 36	25 फर.	सू. उ.
27 फर.	सू. उ.	27 फर.	14 56
6 मार्च	सू. उ.	7 मार्च	सू. उ.
8 मार्च	11 19	9 मार्च	सू. उ.
12 मार्च	सू. उ.	12 मार्च	20 24
20 मार्च	सू. उ.	21 मार्च	4 43
23 मार्च	21 45	24 मार्च	21 44
27 मार्च	22 26	28 मार्च	सू. उ.
28 मार्च	24 22	29 मार्च	सू. उ.
3 अप्रै.	सू. उ.	3 अप्रै.	14 22

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2010-11	घं. मिं.	2010-11	घं. मिं.
22 मार्च	13 21	23 मार्च	सू. उ.
25 मार्च	10 41	26 मार्च	सू. उ.
17 अप्रै.	18 52	18 अप्रै.	सू. उ.
19 अप्रै.	सू. उ.	19 अप्रै.	18 20
22 अप्रै.	सू. उ.	22 अप्रै.	15 23
11 मई	25 05	12 मई	सू. उ.
15 मई	सू. उ.	15 मई	25 18
23 मई	15 09	24 मई	सू. उ.
8 जून	9 53	9 जून	सू. उ.
12 जून	सू. उ.	12 जून	9 49
20 जून	सू. उ.	20 जून	19 34
23 जून	18 48	24 जून	सू. उ.
6 जुला	सू. उ.	6 जुला	19 53
21 जुला	सू. उ.	21 जुला	25 15
18 अग.	सू. उ.	18 अग.	6 52
28 अग.	5 45	28 अग.	सू. उ.
24 सितं.	11 37	25 सितं.	सू. उ.
22 अक्तू.	सू. उ.	22 अक्तू.	20 20
20 दिसं.	16 33	21 दिसं.	सू. उ.
23 दिसं.	13 51	24 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2011 ई.)			
15 जन.	26 21	16 जन.	सू. उ.
17 जन.	सू. उ.	17 जन.	26 10
20 जन.	सू. उ.	20 जन.	21 18
9 फर.	4 51	9 फर.	सू. उ.
12 फर.	11 30	13 फर.	सू. उ.
14 फर.	सू. उ.	14 फर.	12 32
17 फर.	सू. उ.	17 फर.	8 14
20 फर.	20 54	21 फर.	सू. उ.
8 मार्च	11 19	9 मार्च	सू. उ.
12 मार्च	सू. उ.	12 मार्च	20 24
20 मार्च	7 50	21 मार्च	4 43
23 मार्च	21 45	24 मार्च	सू. उ.

रवि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2010 ई.	घं. मिं.	2010 ई.	घं. मिं.
19 मार्च	11 52	20 मार्च	12 47
21 मार्च	13 17	22 मार्च	13 21
24 मार्च	12 03	26 मार्च	8 53
28 मार्च	4 19	28 मार्च	25 48
4 अप्रै.	19 3	5 अप्रै.	20 58
17 अप्रै.	18 52	18 अप्रै.	18 45
19 अप्रै.	18 20	20 अप्रै.	17 38
22 अप्रै.	15 23	24 अप्रै.	12 09
26 अप्रै.	8 26	27 अप्रै.	6 39
27 अप्रै.	22 45	28 अप्रै.	5 7
4 मई	7 45	5 मई	10 25
16 मई	24 25	17 मई	23 19
18 मई	22 5	19 मई	20 44
21 मई	17 54	23 मई	15 9
25 मई	12 57	25 मई	13 5
26 मई	12 16	27 मई	11 58
2 जून	21 26	3 जून	24 26
15 जून	5 00	15 जून	27 5
16 जून	25 12	17 जून	23 27
19 जून	20 34	21 जून	18 55
24 जून	19 24	25 जून	20 27
2 जुला.	11 02	3 जुला.	13 55
14 जुला	9 5	15 जुला	6 39
16 जुला	4 27	16 जुला	26 37
18 जुला	24 23	21 जुला	25 15
24 जुला	4 25	25 जुला	6 37
31 जुला	23 36	1 अग.	26 1
12 अग.	13 15	13 अग.	10 42
14 अग.	8 36	15 अग.	7 6
18 अग.	6 52	20 अग.	10 7
22 अग.	15 11	23 अग.	18 4
30 अग.	10 28	30 अग.	25 37
31 अग.	12 11	1 सितं.	13 19
10 सितं.	18 10	11 सितं.	15 59
12 सितं.	14 25	13 सितं.	13 39
13 सितं.	19 23	14 सितं.	13 42
16 सितं.	16 12	18 सितं.	21 09
20 सितं.	27 7	22 सितं.	6 7
29 सितं.	20 9	30 सितं.	20 29
2010-11	घं. मिं.	2010-11	घं. मिं.
9 अक्तू.	24 27	10 अक्तू	23 4
10 अक्तू	23 54	11 अक्तू	22 26
12 अक्तू	22 38	13 अक्तू	23 41
16 अक्तू	3 54	18 अक्तू	9 44
20 अक्तू	15 34	21 अक्तू	18 7
28 अक्तू	25 57	29 अक्तू	25 31
9 नवं.	8 13	10 नवं.	8 42
11 नवं.	9 57	12 नवं.	11 54
14 नवं.	17 17	16 नवं.	23 9
18 नवं.	27 58	19 नवं.	24 39
20 नवं.	5 41	21 नवं.	6 55
27 नवं.	6 00	28 नवं.	4 52
8 दिसं.	19 12	9 दिसं.	20 47
10 दिसं.	22 56	11 दिसं.	25 33
14 दिसं.	7 24	17 दिसं.	14 31
19 दिसं.	16 29	20 दिसं.	16 33
26 दिसं.	9 3	27 दिसं.	7 25
(सन् 2011 ई.)			
7 जन.	7 23	8 जन.	9 49
9 जन.	12 35	10 जन.	15 32
11 जन.	12 13	11 जन.	18 29
13 जन.	23 34	15 जन.	26 21
17 जन.	26 10	18 जन.	25 3
24 जन.	12 6	24 जन.	14 35
25 जन.	10 18	26 जन.	8 56
5 फर.	19 59	6 फर.	17 40
6 फर.	22 54	7 फर.	25 54
9 फर.	4 51	10 फर.	7 34
12 फर.	11 30	14 फर.	12 32
16 फर.	10 20	17 फर.	8 14
23 फर.	14 31	24 फर.	13 36
8 मार्च	11 19	9 मार्च	14 8
10 मार्च	16 42	11 मार्च	18 51
13 मार्च	21 15	15 मार्च	20 32
17 मार्च	16 47	18 मार्च	12 54
18 मार्च	14 4	19 मार्च	11 1
24 मार्च	21 44	25 मार्च	20 31

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2010-11 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे-ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि कोई अनिष्ट हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है। तो त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर में दो गौओं के मूल्य और तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ.)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2010-11	घं. मिं.	2010-11	घं. मिं.
17 जन.	10 2	17 जन.	18 5
26 जन.	24 49	27 जन.	सू. उ.
31 मार्च	5 5	31 मार्च	सू. उ.
15 मई	25 18	16 मई	4 11
25 मई	सू. उ.	25 मई	7 59
17 जुला	25 14	18 जुला	4 31
27 जुला	11 55	28 जुला	सू. उ.
19 सितं.	24 5	20 सितं.	सू. उ.
23 नवं.	8 00	23 नवं.	22 18
16 जन.	26 38	17 जन.	सू. उ.
25 जन.	10 18	26 जन.	7 19
21 मार्च	4 43	21 मार्च	सू. उ.
(रवि पुष्य योग)			
8 अग.	24 36	9 अग.	सू. उ.
5 सितं.	10 53	6 सितं.	सू. उ.
3 अक्तू.	सू. उ.	3 अक्तू.	17 49
(गुरु पुष्य योग)			
25 फर.	26 20	26 फर.	सू. उ.
25 मार्च	10 41	26 मार्च	सू. उ.
22 अप्रै.	सू. उ.	22 अप्रै.	15 23
26 नवं.	6 55	26 नवं.	सू. उ.
23 दिसं.	13 51	24 दिसं.	सू. उ.
20 जन.	सू. उ.	20 जन.	21 18
17 फर.	सू. उ.	17 फर.	8 14

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2010-11	घं. मिं.	2010-11	घं. मिं.
6 जन.	6 20	6 जन.	सू. उ.
16 फर.	सू. उ.	16 फर.	13 9
21 फर.	7 14	21 फर.	18 27
2 मार्च	सू. उ.	2 मार्च	12 29
11 अप्रै.	11 26	11 अप्रै.	14 7
20 अप्रै.	17 38	21 अप्रै.	सू. उ.
25 अप्रै.	10 18	25 अप्रै.	24 55
4 मई	18 15	5 मई	सू. उ.
22 जून	18 39	23 जून	सू. उ.
27 जून	23 57	28 जून	सू. उ.
3 जुला.	सू. उ.	3 जुला.	13 55
21 अग.	12 29	21 अग.	15 39
31 अग.	12 11	1 सितं.	सू. उ.
5 सितं.	5 56	5 सितं.	10 53
19 अक्तू	12 44	19 अक्तू	25 29
24 अक्तू	23 41	25 अक्तू	सू. उ.
2 नवं.	21 58	3 नवं.	सू. उ.
7 नवं.	8 7	7 नवं.	9 25
13 दिसं.	4 26	13 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2011 ई.)			
15 फर.	11 49	15 फर.	23 10
19 फर.	23 47	20 फर.	6 40
1 मार्च	सू. उ.	1 मार्च	18 38
6 मार्च	4 43	6 मार्च	5 22

द्वादश संक्रान्तियों का प्रवेश फल-सन् 2010-2011 ई०

वैशाख संक्रान्ति—14 अप्रैल, 2010 ई., बुधवार, प्रथम शुद्ध वैशाख कृष्ण पक्ष, अमावस तिथि को प्रातः 6 बजकर 57 मिनट पर रेवती नक्षत्र में प्रवेश करेगी। वैशा. संक्रान्ति 30 मुहूर्ति है। इस का पुण्यकाल सूर्योदय से दोपहर 13/21 घं. मि. (1 बजकर 21 मिनट दोप.) तक होगा। वैशाख संक्रान्ति के दिन अमावस तिथि है। इसी दिन हरिद्वार में **कुम्भ महापर्व** गंगातट पर घटित होगा। स्नान-दान, जप-पाठ, देव-ऋषि तर्पण आदि का माहात्म्य सूर्योदय से प्रारम्भ हो जाएगा। पितृ-तर्पण का समय मध्याह्न काल होगा। 15 अप्रैल, 2010 ई० वृहस्पतिवार को वैशाख पुरूषोत्तम अधिक मास शुरू होगा। इस मास में वैशाख मास एवं पुरूषोत्तम मास माहात्म्य का, श्री विष्णुसहस्रणाम एवं **"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय"**—मन्त्र का पाठ करने का विशेष माहात्म्य होता है। नित्य प्रति प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व शुद्ध जल में, तीर्थस्थान पर या धर्मस्थान पर अथवा घर में ही गंगाजल मिश्रित पवित्र जल से स्नान, जपादि करके यथा शक्ति अनाज, वस्त्रों, फलादि का दान करने का विधान एवं माहात्म्य है। उस से रोग-शोक दूर होते हैं तथा उसे आरोग्य, धन सम्पदादि सुखों की प्राप्ति होती है। संक्रान्ति कुंडली की ग्रहस्थिति अनुसार पड़ोसी देशों के साथ सीमा विवाद एवं टकराव होने के संकेत हैं। महंगाई, आरक्षण एवं साम्प्रदायिक विवादों के कारण सरकार एवं विपक्षी दलों में टकराव की स्थिति हो। **ता. 15 अप्रै. से 14 मई के मध्य वैशाख अधिक मास** होने से नये गृह में प्रवेश, विवाह, मुंडन संस्कार आदि शुभ कार्यों को करने का **निषेध माना** गया है। मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशि वालों को वैशाख संक्रान्ति का फल शुभ होगा।

ज्येष्ठ संक्रान्ति—14 मई, 2010 ई., शुक्रवार, की अर्द्ध-रात्रि 3 बजकर 47 मिनट (27/47) पर वृष राशि में प्रवेश होगा। यह संक्रान्ति 45 मुहूर्ति है। वैशाख अधिक मास 14 मई, शुक्रवार की प्रातः 6/35 पर समाप्त होगा। इस संक्रान्ति का पुण्यकाल अगले अर्थात् 15 मई, शनिवार की प्रातः सूर्योदय से लेकर प्रातः 10 बजकर 11 मिनट तक रहेगा। इस मास में **14 मई से 27 मई के मध्य 13 दिन** का पक्ष (त्र्योदश दिनात्मक पक्ष) होने से भी विवाह, मुंडन, नए घर में प्रवेश, जनेऊ संस्कार आदि शुभ कार्यों का निषेध माना गया है। इस पक्ष के प्रभाव से सामान्य लोगों में रोग, बेईमानी, दंगाफसाद और हिंसक घटनाएँ होने के योग हैं। संक्रान्ति 45 मुहूर्ति होने से सोना, चांदी, तांबा, गुड़, खांड, शक्कर, कपास, तिल, तेल, सरसों आदि के भाव तेज़ होंगे। आवश्यक उपयोगी वस्तुओं की कमी रहेगी। इस मास में **अक्षया तृतीया** (16 मई), **गंगाजयंती** आदि शुभ पर्वों पर जप, पूजन, होमादि करने का पुण्य होता है। इस दिन ब्राह्मण को अनाज, दूध-दही, वर्फी, फल जलापूरित घड़ा, छाता एवं नववर्ष संवत के पंचांग का दान करना पुण्यप्रद होता है। यह संक्रान्ति मेष, वृष, सिंह, तुला, वृश्चिक व मीन राशि वालों के लिए शुभ होगी।

आषाढ़ संक्रान्ति—15 जून, 2010 ई., मंगलवार को प्रातः 10 बजकर 21 मिनट पर मिथुन राशि में प्रवेश करेगी। 30 मुहूर्ति संक्रान्ति का पुण्यकाल सूर्योदय से मध्याह्न तक रहेगा। महोदरी नामक यह संक्रान्ति चोरों एवं भ्रष्ट लोगों के लिए लाभकारी और प्रवेश समय पुष्य नक्षत्र होने से वैश्यों के लिए शुभ रहेगी। इस संक्रान्ति के पुण्यकाल में स्नानोपरान्त भगवान श्री लक्ष्मी-नारायण की पूजार्चना के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना। इसके अतिरिक्त **गंगादशमी, निर्जला एकादशी** आदि शुभ पर्वों पर श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर जलापूरित घड़ा, अनाज, सत्तु, आँवला, आम, वस्त्र, पंखा, खरबूजे आदि मौसमी फल, दूध-चीनी एवं ग्रीष्मोपयोगी वस्तुओं के दान करने का विशेष माहात्म्य है। आषाढ़ संक्रान्ति मंगलवार को होने से तिल, तेल, घी, वनस्पति, रसादि वस्तुएँ तथा सर्वप्रकार के माल पंसारी तेज़ भाव होंगे। मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर, कुम्भ व मीन राशि वालों को आषा.-संक्रान्ति लाभकारी रहेगी।

श्रावण संक्रान्ति—16 जुलाई, 2010 ई०, शुक्रवार, श्रावण शुक्ल पंचमी तिथि, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में रात्रि 9 बजकर 11 मिनट (21/11) पर कर्क राशि में प्रवेश करेगी। 45 मुहूर्त्ति इस संक्रान्ति का पुण्यकाल दोपहर से होगा। यह संक्रान्ति ध्रुव संक्षक नक्षत्र में होने से द्विजों (ब्राह्मणों) के लिए लाभकारी एवं सुख देने वाली होगी। श्रावण मास में भगवान शंकर की पूजा का विशेष महत्त्व है। प्रतिदिन श्रावण माहात्म्य, श्री शिवमहापुराण एवं श्री शिवस्तोत्रों का विधिपूर्वक पाठ करके दूध, गंगा-जल, बिल्वपत्र, फलादि सहित शिवलिङ्ग का पूजन **"ॐ नमः शिवाय"** मन्त्र का जप करते हुए करना चाहिए। इस मास के प्रत्येक मंगलवार को श्री **मङ्गलागौरी** का व्रत, पूजनादि विधिपूर्वक करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान, सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति होती है। ता. 21 जुलाई (देवशयनी एका.) से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक तपस्वी लोग चार्तुमास व्रत आदि नियमों का पालन करते हुए चातुर्मास पूर्ण करते हैं। (25 जुला.) को गुरू पूर्णिमा का शुभ पर्व मनाया जाएगा। मेष, वृष, सिंह, कन्या, वृश्चिक और मीन राशि वालों के लिए यह संक्रान्ति शुभ और लाभदायक रहेगी।

भाद्रपद संक्रान्ति—16 अग. 2010 ई., सोमवार को रात्रि 29/34 घं. मिनट (16/17 की रात्रि प्रातः 5 बजकर 34 मिनट) पर सिंह राशि में प्रवेश होगी। 45 मुहूर्त्ति संक्रान्ति का पुण्य काल अगले दिन 17 अग. को मध्याह्न तक रहेगा। ध्वांक्षी नामक यह संक्रान्ति वैश्यों को लाभ एवं सुख देने वाली होगी। इस मास में पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी एवं भाद्रपद कृष्ण

अष्टमी को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का व्रत विशेष रूप से संतानादि सुखों के लिए करना शुभ है। यह संक्रान्ति मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मकर और मीन राशि वालों के शुभ फलदायक होगी।

आश्विन संक्रान्ति—16 सितम्बर 2010 ई., गुरूवार को 29/29 घं. मिं. (अर्थात् 17 सितं. की प्रात: 5 बजकर 29 मिनट) पर कन्या राशि में प्रवेश करेगी। 30 मुहूर्त्ति संक्रान्ति का पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक रहेगा। इस मास में ता. 23 सितं. से महालय श्राद्धारम्भ होंगे। श्राद्ध पक्ष में (5 अक्तू. एवं 7 अक्तू.) गजच्छाया योग दो बार बना है। इस योग में स्नान, दान, जप एवं ब्राह्मणों को भोजन, तर्पण व श्राद्ध करने का विशेष महत्त्व माना गया है। ता. 8 अक्तू. से **शरद् नवरात्रों** में श्री दुर्गापूजन का विशेष महत्त्व होता है। मेष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु व मीन राशि वालों को संक्रान्ति शुभ व लाभ देने वाली होगी।

कार्तिक संक्रान्ति—17 अक्तूबर, 2010 ई. रविवार को धनिष्ठा नक्षत्र कालीन सायं 5 बजकर, 27 मिनट (17/27) पर तुला राशि में प्रवेश होगी। 30 मुहूर्त्ति संक्रान्ति का पुण्यकाल प्रात: 11 बजकर 03 मिनट से आरम्भ होगा। इसी दिन (17 अक्तूबर) विजयदशमी का पर्व धूमधाम से मनाया जाएगा। इस मास में प्रतिदिन कार्तिक माहात्म्य का पाठ तथा नित्य श्री भगवान विष्णु का पूजन, तुलसी पूजा, तुलसी व पीपल के मूल पर दीपक जलाने का विशेष माहात्म्य है। रविवार की संक्रान्ति होने से देश में राजनेताओं में परस्पर टकराव, साम्प्रदायिक दंगे-फिसाद, सीमाओं पर शत्रुओं की घुसपैठ, देश में युद्ध जैसे हालात बनें। इसी मास में **करवाचौथ,** अहोई अष्टमी एवं **दीपावली** का शुभ पर्व मनाया जाएगा। इस मास में गंगादि तीर्थों पर दीपदान का विशेष महत्त्व होता है।

मार्गशीर्ष संक्रान्ति—16 नवम्बर 2010 ई., मंगलवार पूर्वा-भाद्रपद नक्षत्र कालीन सायं 5 बजकर 18 मिनट (17/18 घं. मिं.) पर वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगी। 30 मुहूर्त्ति संक्रान्ति का पुण्यकाल प्रात: 10 बजकर 54 मिनट से प्रारम्भ होगा। महोदरी एवं घोरा नामक यह संक्रान्ति चौर व तस्कर प्रवृत्ति के लोगों, शूद्र एवं नीच जनों को लाभ तथा सुख देने वाली होगी। ता. 17 से 21 नवं. के मध्य **देवप्रवोधिनी** एकादशी, तुलसी **विवाह, वैकुण्ठ चतुर्दशी एवं कार्तिक पूर्णिमा को** विशेष रूप से भगवान श्री विष्णु जी का पूजन एवं दीपदान करने का विशेष विधान एवं महत्त्व होता है। मार्गशीर्ष संक्रान्ति मंगलवार को होने से देश के राजनीतिक व सामाजिक हालात अस्थिर होंगे। सभी प्रकार के अनाज, दालें, सब्जियां व करियाना वस्तुएँ, चीनी, खल-बिनौले आदि तेज भाव होंगे। मेष, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर व कुम्भ राशि वालों को इस संक्रान्ति का फल शुभ एवं लाभप्रदायक रहेगा।

पौष संक्रान्ति—16 दिसम्बर 2010 ई., गुरूवार, दशमी तिथि एवं रेवती नक्षत्र कालीन प्रात: 7 बजकर 59 मिनट पर धनु राशि में प्रवेश करेगी। 30 मुहूर्त्ति संक्रान्ति का पुण्यकाल सूर्योदय से दोपहर 2 बजकर 23 मिनट तक रहेगा। इस मास में (17 दिसं.) **मोक्षदा** एकादशी का व्रत करना और नित्यप्रति श्रीमद्भागवत पुराण एवं श्री मद्भगवद्गीता का पाठ करना विशेष पुण्यप्रद एवं मोक्षदायक होता है। पौष मास में गेहूँ, धान्य, चावल, चने आदि अनाज, कम्बलादि गर्मवस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल, मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। (4 जन. 2011 ई.) **भौमवासरी अमावस को सूर्यग्रहण** भी होने के कारण हरिद्वार, कुरूक्षेत्र आदि तीर्थों पर स्नान दानादि का विशेष माहात्म्य होगा। मकर, कुम्भ, मीन, मेष, सिंह, तुला राशि वालों के लिए संक्रान्ति का फल शुभ एवं लाभदायक रहेगा।

माघ संक्रान्ति—14 जनवरी 2011 ई., शुक्रवार, दशमी तिथि एवं भरणी नक्षत्र कालीन सायं (6 बजकर 44 मिनट (18/44) पर मकर राशि में प्रवेश करेगी। 15 मुहूर्त्ति संक्रान्ति का पुण्यकाल मध्याह्न से होगा। मकर संक्रान्ति को स्नानादि उपरान्त तिलों से हवन, तिलयुक्त वस्तुओं का दान तथा भगवान श्री विष्णु व सूर्यदेव की उपासना विधान है। इस मास के शुभ पर्वों में हरिद्वार, काशी आदि तीर्थों पर स्नानदानादि का विशेष माहात्म्य होता है। (16 जन.) **पुत्रदा एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक रखने से दम्पत्ति को मनोवांछित पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। **माघ मौनी अमावस** (2 फर.) को हरिद्वार, प्रयाग आदि तीर्थों पर स्नान, तर्पण, दान, जपादि का विशेष माहात्म्य रहेगा। मकर, मीन, वृष, कन्या, तुला व वृश्चिक राशि वालों के लिए संक्रान्ति का फल शुभ एवं कल्याणकारक रहेगी।

फाल्गुन संक्रान्ति—13 फरवरी, 2011 ई. रविवार, दशमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र कालीन प्रात: 7 बजकर, 43 मिनट पर कुम्भ राशि में प्रवेश करेगी। घोरा नामक संक्रान्ति शूद्रों व नीचों को लाभ व सुख देने वाली होगी। रोहिणी नक्षत्रानुसार नन्दा नामक संक्रा. द्विजों को लाभप्रद एवं सुखदायक होगी। 45 मुहूर्त्ति संक्रान्ति का स्नान-दानादि का पुण्यकाल सूर्योदय से मध्याह्न तक रहेगा। **माघी पूर्णिमा** (18 फर.) को तीर्थ जल से स्नान करके देवताओं, पितरों आदि का तर्पण करने के बाद गुड़, तिल, अनाज, घी, फल, वस्त्रों आदि का दान करने का विशेष फल प्राप्त होता है। श्री **महाशिवरात्रि** (2 मार्च) का व्रत विधिपूर्वक रखकर शिवपूजन, शिवकथा, शिवस्तोत्रों एवं "ॐ नम: शिवाय" का पाठ करते हुए रात्रि जागरण करने से अश्वमेध तुल्य फलों की प्राप्ति होती है।

चैत्र संक्रान्ति—14 मार्च 2011 ई., सोमवार, दशमी तिथि पुनर्वसु नक्षत्र कालीन 28/33 घं.मिं. अर्थात् (15 मार्च प्रात: 4 बजकर 33 मिनट पर) पर मीन राशि में प्रवेश करेगी। 45 मुहूर्त्ति चैत्र संक्रा. का पुण्यकाल आगामी दिन प्रात: 10 बजकर 57 मिनट तक रहेगा। फाल्गुन पूर्णिमा **को होली का त्यौहार** समस्त भारत में बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाई जाती है। 14 मार्च से सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग होने से राजनैतिक वातावरण अशान्त एवं असमंजसपूर्ण रहेगा। लोगों में क्लिष्ट रोग का भय, पीड़ा एवं कहीं दुर्भिक्ष, छत्रभंग होने का भय रहे। मीन, मेष, वृष, तुला, वृश्चिक, मकर राशि वालों के लिए संक्रां. शुभ एवं लाभदायक रहेगी।

तीन एवं चार ग्रहों के योगों का फल

सूर्य-चन्द्रादि ग्रह योगों के सम्बन्ध में विशेष

कुंड़ली में सूर्य आदि पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को पिता के कष्ट या सुख में कमी एवं सरकारी क्षेत्रों से परेशानी होती है। यदि चन्द्र पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो माता को कष्ट या सुख में कमी व मानसिक तनाव व खर्च अधिक होते हैं। इसी भांति यदि सूर्य शुभ ग्रहों से युक्त हो, तो जातक को पिता से लाभ व सुख में वृद्धि, सरकारी क्षेत्रों से लाभ तथा यदि चन्द्र शुभ ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हो, तो माता एवं मातुल पक्ष से सुख-लाभ, स्त्री एवं धन सम्पदा के सुख होते हैं। यह नियम केवल सूर्य और चन्द्र पर ही लागू नहीं होता बल्कि अन्य ग्रहों पर भी लागू होता है। जैसे मंगल शुभ एवं मित्र ग्रहों से युक्त हो, तो जातक को भूमि, मकान, भाई, पुत्रादि सुखों की प्राप्ति हो तथा यदि शनि आदि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो इन सुखों में कमी रहेगी। यदि बुध शुभ एवं मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को बुद्धि, विद्या, मामा अदि सुख तथा शिल्प कला, गणित, ज्योतिष आदि में कुशलता प्रदान करता है। यदि पाप ग्रहों से युक्त हो, तो इन सुखों में कमी करता है।

गुरू : यदि नीच या पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को उच्च विद्या, बड़े भाई, पति एवं पुत्र संतति के सुख की हानि करता है। यदि शुभ ग्रह युक्त हो, तो उच्च विद्या, पति संतान आदि सुखों में वृद्धि करता है।

शुक्र : यदि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को धन-सम्पति, स्त्री-सुख, मित्र, संगीत-सौन्दर्य आदि सुखों की वृद्धि करता है तथा पाप-ग्रहों के योग से हानि करता है।

शनि : यदि शुभ एवं मित्र ग्रहों के योग में हो, तो जातक दीर्घायु, धैर्य, व्यापार का तैल, लोहा या तकनीकी कार्यों से अच्छा लाभ करवाता है। यदि शुभ ग्रहों के सम्बन्ध में हो, तो अपनी कारक वस्तुओं के सुख की हानि करवाता है।

सभी ग्रहों से सम्बन्धित वस्तुओं के सम्बन्ध में संक्षिप्त वर्णन आगामी पृष्ठों के पंचग्रही योग सम्बन्धी वर्णन में देखें अथवा ग्रहों के स्थिर कारक एवं भाव आदि सम्बन्धित विस्तृत ज्योतिष तत्त्व फलित प्रथम खंड में पढ़ें।

सूर्य-चन्द्र-मंगल—तीनों ग्रह एक ही भाव में हों, तो जातक तीक्ष्ण बुद्धि, पराक्रमी, तामसिक प्रवृत्ति, शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाला, निज परिश्रम द्वारा धनार्जन करने वाला, दस्तकारी व हस्त शिल्प कला विशेषज्ञ, लौह, स्वर्ण, चांदी, पत्थर आदि से कला कृतियां बनाने में कुशल तथा तकनीकी कार्यों में कुशल होगा। ऐसा जातक शत्रुओं पर विजयी, स्वाभिमानी एवं कुछ कठोर प्रकृति का होगा। माता को कष्ट अथवा सुख में कमी रहे।

सूर्य-चन्द्र-बुध—ग्रह एक ही भाव में होने से जातक विद्वान्, उच्च विद्या प्राप्त, गुणवान, सम्मानित एवं प्रतिष्ठित, साधु-सन्तों एवं प्रभावशाली व उच्च प्रतिष्ठित लोगों की संगति करने वाला, प्रियभाषी एवं शिष्टवाणी का प्रयोग करने वाला, गुणवान, धन-धान्य, भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त, धर्म, ज्योतिष, काव्य कलाओं में रूचि रखने वाला होता है। ऐसा जातक जो भी काम करे उसे पूरे दिल व दिमाग से करता है। देखें उदा. कुं. नं. 90.

सूर्य-चन्द्र-गुरू—तीनों ग्रह एक भाव में हों, तो जातक विद्वान्, उच्च शिक्षा, परोपकारी, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, बुद्धिमान, बन्धुओं-बांधवों से आदर पाने वाला, देवताओं और ब्राह्मणों की सेवा में तत्पर, विद्वानों की संगति करने वाला, प्रत्येक कार्य को युक्तिपूर्वक एवं होशियारी से कराने में कुशल, व्यवहार कुशल एवं सर्विस आदि में विशेष लाभ उठाने वाला होगा। ऐसा जातक अपनी जन्मभूमि से अन्यत्र देश-विदेश आदि में अधिक सफल होता है।

सूर्य-चन्द्र-शुक्र—तीन ग्रहों का योग हो, तो जातक सुन्दर व्यक्तित्व वाला, व्यवहार कुशल, लोकप्रिय, कार्यों एवं व्यवसाय में अस्थिरता हो तथा गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने में कुशल हो, कामुक एवं विलासी प्रकृति, मदिरा, परस्त्री आदि व्यसनों के प्रति आसक्ति, दन्त रोग, उदर विकार, मधुमेह आदि गुप्त रोगों का भय हो। अल्प सन्तति अथवा सन्तान के बारे में चिन्तित हो। धन का अपव्यय (वृथा खर्च) अधिक हों।

सूर्य-चन्द्र व शनि—तीनों ग्रह एक ही राशि में हों, तो जातक कुटिल बुद्धि वाला, अपना कार्य सिद्ध करवाने के लिए झूठ-सच का आश्रय लेने वाला, रहस्यमय प्रकृति, दूसरों के मनोभावों को समझ लेने में कुशल, हाथी, घोड़े, गाय, भैंस आदि पशुओं की सेवा करने वाला एवं धातु (लोहा, पीतल, चान्दी, सोना आदि) के कार्य करने में कुशल, परस्त्री, तम्बाकू, शराब आदि मादक वस्तुओं के सेवन में प्रवृत्ति, व्यसनी। जातक व्यर्थ परिश्रम करने वाला तथा आर्थिक क्षेत्र में परेशान तथा माता-पिता एवं पारिवारिक जीवन में सुख की कमी होती है।

सूर्य-मंगल-बुध—यह तीनों ग्रह एक ही भाव में हों, तो जातक पराक्रमी, साहसी, लोक प्रसिद्ध, नीतिवान, उच्च प्रतिष्ठित किन्तु कभी निष्ठुर चित्तवृत्ति वाला, निर्लज्ज, जिद्दी, स्पष्टवादी (Bold), धन सम्पदा, वाहन, स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों से युक्त, परामर्श (सलाह) देने में कुशल होता है। जातक को ज्योतिष, धर्म, मन्त्र आदि शास्त्रों में भी विशेष रूचि होती है। यदि इस योग पर पाप दृष्टि हो, तो जातक वृथा तर्क-वितर्क या (वृथालाप) एवं निर्लज्जतापूर्वक तुच्छ कार्य भी कर सकता है। यदि गुरु आदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। देखें कुं. नं. 51 ज्यों. तत्त्व (खण्ड 1) देखें उदा. कुं. नं. 60, 74, 91. (ज्योतिष तत्त्व-फलित खण्ड-भाग द्वितीय)

सूर्य-मंगल-गुरू—तीनों ग्रह एक ही राशि/भाव में हों, तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान, उच्च शिक्षित, प्रभावशाली व्यक्तित्व, भाग्यवान, तेजस्वी, कुलीन, प्रियभाषी, सत्यनिष्ठ, ईमानदार एवं कुछ तेज प्रकृति का होता है। कार्य-व्यवसाय को सुनियोजित ढंग से करने वाला, पैतृक सम्पदा से लाभान्वित तथा भूमि, जायदाद एवं वाहन, पुत्र, सन्तान आदि सुखों

से युक्त होता है। ऐसा जातक सेना में उच्च अफसर, मन्त्री आदि भी हो सकता है। यदि पाप दृष्ट हो, तो नेत्रों में कष्ट, सिर पीड़ा, सन्तान सम्बन्धी चिन्ता व पितृ कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

सूर्य-मंगल-शुक्र—तीनों ग्रह एक राशि में हों, तो जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, विनम्र, प्रियभाषी, स्वकुल में श्रेष्ठ, धन सम्पदा, वाहन, सुन्दर स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों से सम्पन्न होता है। ऐसा जातक कामुक वृत्ति एवं विषयासक्त भी हो सकता है। ऐसे जातक को संगीत, अभिनय, सौन्दर्य के प्रति भी विशेष रूचि होती है। कई बार आवेश पूर्वक गलत निर्णय लेने पर हानि उठानी पड़े। सामान्यतः निज पराक्रम से उन्नति करता है।

सूर्य-मंगल-शनि—तीनों ग्रह एक ही राशि में हों, जो जातक अपने आत्मीय लोगों से विरोध तथा उनसे सहयोग न प्राप्त करने वाला अर्थात् उनके सुख से रहित, एकान्तप्रिय, हस्तशिल्प एवं तकनीकी कार्यों में कुशल, अत्यधिक संघर्ष एवं परिश्रम से निर्वाहयोग्य धनार्जन करने वाला, निकट बन्धु भी परायों जैसे व्यवहार रखें, बिना वजह झगड़े रहें। दुर्घटना से चोट आदि का भय हो। सुख साधनों में कमी एवं अशान्त चित्त हो।

सूर्य-बुध-गुरू—तीनों ग्रहों का सम्बन्ध होने से जातक उच्च शिक्षित, विद्वान्, बुद्धिमान, धर्म, ज्योतिष एवं साहित्य आदि शास्त्रों को मानने वाला अथवा उनमें विशेष रूचि रखने वाला, साहित्य, एकाऊंट्स, वकालत, कला, पठन-पाठन एवं लेखन कार्यों व भाषण कला में कुशल, धार्मिक प्रवृत्ति, गुणी, धन-सम्पदा एवं सन्तान एवं सुख-साधनों से सम्पन्न परन्तु नेत्रों में कष्टकारी होता है। देखें उदा. कुं. नं. 77, कुं. नं. 63, 85 (धर्मेन्द्र)

सूर्य-बुध-शुक्र—ये तीनों ग्रह एक राशि में हों, जो जातक बातचीत करने में कुशल, उच्च विद्या प्राप्त, स्वावलम्बी, परिश्रमी एवं अपने पुरुषार्थ एवं परिश्रम द्वारा उच्च पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, साहित्यिक अभिरुचियों से युक्त, धर्म, ज्योतिष एवं साहित्य में रुचि रखने वाला तथा अपनी उच्च विद्या एवं कलात्मक गुणों के कारण धन लाभ करने वाला, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुखों से युक्त, विलास प्रिय, स्त्री चालाक व चुस्त होगी एवं कभी स्त्री के कारण संतप्त व परेशान होगा। यदि इस योग पर गुरु एवं चन्द्र की शुभ दृष्टि हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित प्राध्यापन के क्षेत्र में सफल होता है। देखें उदा. कुं. नं. 88, जातक मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर भी अधिक खर्च करता है। देखें कुं. नं. 78.

सूर्य-बुध-शनि—तीनों ग्रह एक भाव में हों, तो जातक को आत्मीय बन्धुओं के सुख में कमी होती है। अत्यधिक संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद आय के साधन बन पाते हैं। दुर्बल शरीर, निकट बन्धुओं के साथ मन-मुटाव एवं तनाव रहे। नीच लोगों के साथ संगति अधिक रहे। आय कम व खर्च अधिक रहें। व्यसनों आदि पर खर्च अधिक हो। विदेश जाने की भी सम्भावना हो। गुप्त चिन्ताएं तथा अशान्ति अधिक रहे। छोटी अवस्था में स्वस्थ एवं सुन्दर हो। 36 वर्ष की आयु के बाद स्वास्थ्य में विकार हों। ज्योतिष धर्म, योग आदि गूढ़ विषयों में रुचि रहे। देखें कुं. नं. 65, 80. (ज्योतिष तत्त्व-फलित खण्ड-भाग-द्वितीय)

सूर्य-गुरू-शुक्र—का योग हो तो जातक कुशाग्र बुद्धि, उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान, उच्च प्रतिष्ठित, धार्मिक विचारों से युक्त, उदार हृदय, परोपकारी, योजनाबद्ध विधि से कार्य करने वाला, पराक्रमी तथा जातक निज-परिश्रम एवं पुरुषार्थ से धन लाभ व उन्नति करने वाला, पिता एवं सरकारी क्षेत्रों द्वारा विशेषतः लाभान्वित होता है। यदि यह योग षष्ठ, आठवें या 12वें (अशुभ) भावों में हो या शनि या राहु आदि ग्रह से दृष्ट हो तो स्त्री को कष्ट अथवा जातक स्त्री के कारण परेशान एवं नेत्रों में कष्ट हो।

सूर्य-गुरू-शनि—तीनों ग्रहों का योग होने से जातक निडर, आकर्षक व्यक्तित्व, गम्भीर, धर्म परायण, उच्चशिक्षित, परोपकारी, ब्राह्मणादि विद्वानों की सेवा में तत्पर, धातु, शिल्प एवं तकनीकी कार्यों में कुशल, मित्रों, स्त्री, सन्तान (पुत्र सहित), मकान, सवारी, आदि सुखों से युक्त होगा, देखें उदा. कुं. नं. 62 परन्तु जातक को प्रत्येक क्षेत्र में विघ्नों का सामना रहता है। यह ग्रह योग मेष, मिथुन, सिंह, वृश्चिक, धन, कुम्भ व मीन लग्नों में शुभभावस्थ हो, तो अधिक अच्छा फल प्रदान करता है। देखें उदा. कुं. नं. 62

सूर्य-शुक्र-शनि—तीनों ग्रहों का योग होने से जातक चंचल किन्तु बुद्धिमान, शिल्प, कला, हुनर व तकनीकी कार्यों में कुशल, चित्रकारी एवं ड्राईंग इत्यादि में रुचि, ऐसा जातक कामुक वृत्ति तथा वह सौन्दर्य प्रसाधन, स्त्री, वाहन, मकान, मनोरंजन एवं विलास आदि कार्यों पर अधिक व्यय करता है। त्रि-ग्रही योग वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर व कुम्भ लग्नों में विशेष फलदायक होता है। अशुभ भावों एवं अन्य लग्नों में यह योग जातक को अत्यधिक विलासप्रिय, दुराचारी, बन्धुओं के सुख में कमी, दाद-खुजली, कुष्ठ, मधुमेह आदि रोगों से कष्ट देता है।

चन्द्र-मंगल-बुध—त्रि-ग्रही का योग हो, तो जातक साहसी, कुशाग्र बुद्धि, कुछ तीक्ष्ण स्वभाव, वाक्चातुर्य में कुशल, लोक व्यवहार में भी कुशल, संगीत, कला एवं साहित्य में रुचि रखने वाला, ज्योतिष, वकालत, राजनीति, मन्त्रादि तथा हस्त-शिल्प हुनर, कैमीकल व तकनीकी कार्यों में सफल, स्वतन्त्र आचरण करने में उत्सुक, गुणी तथा अपने विशेष गुणों एवं विशिष्ट युक्तियों व साधनों द्वारा धनार्जन करने वाला होगा। यह योग मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन लग्नों में अच्छा फल देता है।

चंद्र-मंगल-गुरू—इन त्रिग्रहों का योग हो, तो जातक बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, सुन्दर मुखाकृति, साहसी, उत्साहशील, धर्म-परायण, परोपकारी, प्रसन्नवदन, मिलनसार, स्त्रियों में प्रिय, परस्त्री आसक्त, शिल्प कला, हुनर एवं तकनीकी कार्यों में कुशल, गुणवान तथा अपने गुणों द्वारा व्यवसाय में अच्छा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। ऐसा जातक न्यायाधीश, प्राध्यापन, चिकित्सा, वकालत, सेना एवं उच्च सरकारी क्षेत्रों में सफल होता है। धर्म, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में भी रुचि होती है।

चन्द्र-मंगल-शुक्र—जातक बुद्धिमान, व्यवहार-कुशल, बुद्धि, व्यवहार कुशल, हंसमुख एवं भ्रमणशील प्रकृति का होता है। ऐसा जातक कामुक प्रवृत्ति, विलासप्रिय, परस्त्रियों के प्रति आसक्त रहने वाला अथवा स्त्रियों के वशीभूत होकर अनीतिपूर्ण आचरण भी कर सकता

है। क्रय-विक्रय एवं व्यापार करने में कुशल तथा जातक संगीत, कला, अभिनय, गायन, नृत्य, फैशन, डिज़ाईनिंग, सौन्दर्य प्रसाधनों, कम्प्यूटर, टेलीविज़न, फिल्मी क्षेत्रों एवं सौन्दर्य एवं स्त्रियों से सम्बन्धित कार्य/व्यवसाय में अधिक सफल होते हैं। तृतीय भाव में हो, तो भाई कम तथा बहिनों का सुख होता है। देखें कुं. नं. 112

चन्द्र मंगल-शनि—का योग हो तो जातक उदासीन एवं चिड़चिड़े स्वभाव का, परन्तु वाद-विवाद एवं तर्क-वितर्क करने में कुशल, वृथा विवादों में संलिप्त, अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए उचित/अनुचित का भी ध्यान न करे। ऐसा जातक हस्त कला निपुण तथा तकनीकी कार्यों में कुशल, व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों का सामना रहे। पत्थर एवं धातुओं सम्बन्धी कार्यों में विशेष लाभ होने की सम्भावना हो, माता के सुख में कमी के योग।

चन्द्र-बुध एवं गुरु—एक साथ हों तो जातक व्यवहार-कुशल, वाक्पटु, प्रसन्नचित्, धनी, कार्य कुशल, अपने निजपुरुषार्थ से धनवान्, मधुरभाषी, भाग्यवान्, विद्वान्-बुद्धिमान, भूमि-वाहन आदि सुख साधनों से युक्त होता है। देखें कुं. नं. 87.

चन्द्र-बुध-शुक्र—एक राशि में हों तो जातक अनेक विद्याओं में निपुण, लोक व्यवहार में कुशल, अपने स्वार्थ के प्रति सतर्क रहने वाला तथा व्यवहार में नीति/अनीति का भी विचार न करने वाला, धन लोलुप होता है। कार्य व्यवसाय में भारी स्पर्धा भी उठानी पड़ती है। अभिनय, संगीत, कला एवं साहित्य में विशेष रुचि रखने वाला होता है।

चन्द्र-बुध-शनि—सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान्, दूरंदेशी, विनीत, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रखने वाला, धन, भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। ज्योतिष, मंत्र आदि विद्याओं में भी रुचि रखे।

चन्द्र-गुरु-शुक्र—एक राशि में हों तो जातक भाग्यवान, तीव्र बुद्धिमान, धनी, उच्च प्रतिष्ठित, अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान, धर्म परायण अर्थात् धर्म कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला, धर्म, ज्योतिष, योग आदि विद्याओं में रुचि रखने वाला होता है।

चन्द्र-गुरु-शनि—एक राशि में हो, तो जातक विद्यावान्, नेतृत्व करने में कुशल (नेता), व्यवहार कुशल, उच्चाधिकारी, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, ज्योतिष आदि विभिन्न शास्त्रों में रुचि रखने वाला, कार्य व्यवसाय में कुशल, अध्यापन, ज्योतिष, राजनीति, वकालत और व्यवसाय में विशेष सफल रहने वाला, धन, जायदाद, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है।

चन्द्र-शुक्र-शनि—तीनों एक ही राशि में इकट्ठे हों, तो जातक धर्मपरायण, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, अभिनय, संगीत, कला, राजनीति, ज्योतिषी, कलाकार, प्राध्यापन, सम्पादन, वकालत, बैंकिंग, ड्रैस डिज़ाईनिंग, लेखन-अध्यापन, शिल्प, कार्य, मूर्ति कला, चित्रकला, पेय पदार्थ, नक्शा निर्माण, शृंगार, सौन्दर्य, पार्लर आदि कार्यों में सफल होता है। देखें कुं. नं. 93. (ज्योतिष तत्त्व-फलित खण्ड)

मंगल-बुध-गुरु—तीनों ग्रहों का सम्बन्ध हो, तो जातक धार्मिक विचारों वाला, बुद्धिमान, धर्म, योग, दर्शन, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि विद्याओं में रुचि रखने वाला, महत्त्वाकांक्षी, परोपकारी स्वभाव, भूमि-जायदाद-वाहन, स्त्री आदि सुख सुविधाओं से युक्त, संगीत-गायन आदि कलाओं में रुचि, उच्च स्तरीय व्यवसाय करने में प्रयत्नशील रहता है। जातक बौद्धिक कार्यों में अधिक सफल रहता है।

मंगल-बुध-शुक्र—तीनों ग्रह एक राशि में हों, तो जातक दुर्बल एवं कृश शरीर युक्त, चंचल वृत्ति, अध्ययनशील, सुन्दर वक्ता, गुणवान, निज परिश्रम द्वारा धन, सम्पदा, सवारी आदि सुखों का लाभ एवं उन्नति करने वाला, क्रय-विक्रय करने में कुशल, परोपकारी, अपनी उन्नति के लिए सदैव उत्साहशील और अधिक बोलने वाला होता है, यद्यपि प्रत्येक स्थिति में सन्तुष्ट रहने का प्रयास करता है।

मंगल-बुध-शनि—जातक अत्यंत परिश्रमी, मुंहफट एवं स्पष्टवादी, अपने स्वास्थ्य के प्रति चिन्तित, आंखों या गले एवं मुख में कष्ट, प्रतिनिधित्व का काम करने में कुशल, कुछ लापरवाह प्रकृति, अपने जन्म स्थल से अतिरिक्त स्थान (विदेश आदि) में सफल, व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यन्त कठिन परिश्रम करने वाला, स्वर्ण लोह, चांदी आदि हस्तशिल्प के कार्यों या रबड़, तैल, कैमिकल के कार्यों में विशेष सफल होता है।

मंगल-गुरु-शुक्र—जातक तीव्र बुद्धिमान, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, ऐश्वर्यवान, विलासप्रिय, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, भाई, स्त्री, पुत्र संतति आदि सुखों से युक्त, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न, प्रसन्नवदन, मिलनसार, लोकप्रिय एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होता है।

मंगल-गुरु-शनि—विघ्न/बाधाओं के बावजूद उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान्, स्वास्थ्य के प्रति चिन्तित, जातक अध्यात्म, योग, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में रुचि रखने वाला, परन्तु जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में विघ्न/बाधाओं के पश्चात् सफलता मिलती है। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रहे। यदि यह योग केन्द्र या त्रिकोण भावों में हो, तो भी जातक को परेशानियों एवं संघर्ष के बाद भूमि, जायदाद-वाहन एवं सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है। जीवन के अन्त में दुःखों के बाद जातक अध्यात्म की ओर प्रवृत्त होता है।

मंगल-शुक्र व शनि—जातक चतुर बुद्धि, व्यवहार कुशल, कामुक प्रवृत्ति परन्तु स्पष्टवादी, मिलनसार नए-नए मित्र बनाने में कुशल, परिस्थिति के अनुसार आचरण करने वाला, नीतिवान, अधिकांश समय एवं धन सिनेमा, संगीत, मनोरंजन एवं स्त्रीसंग में बिताने को इच्छुक, टेलीविज़न, कम्प्यूटर्ज आदि का शौक, अपने जन्म स्थान से अतिरिक्त स्थान (विदेश आदि) पर भाग्योन्नति एवं लाभ प्राप्त करने वाला होता है। दाम्पत्य (विवाह) सुख भी परेशानियों एवं उलझनों के बाद प्राप्त होता है। पूर्वार्द्ध भाग अशांत एवं उलझनों से युक्त रहता है। स्त्री के साथ विचार वैषम्य का सम्भावना, जीवन के उत्तरार्ध भाग में जातक का रुझान आध्यात्मिकता की ओर बढ़ जाता है।

बुध-गुरु-शुक्र—तीन ग्रहों का योग हो, तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला, गायन, संगीत, कला, कामर्स एवं गणित के प्रति विशेष झुकाव हो। जातक बुद्धिमान, अच्छा वक्ता, अध्ययनशील, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, लेखन एवं पठन-

से युक्त होता है। ऐसा जातक सेना में उच्च अफसर, मन्त्री आदि भी हो सकता है। यदि पाप दृष्ट हो, तो नेत्रों में कष्ट, सिर पीड़ा, सन्तान सम्बन्धी चिन्ता व पितृ कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

सूर्य-मंगल-शुक्र—तीनों ग्रह एक राशि में हों, तो जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, विनम्र, प्रियभाषी, स्वकुल में श्रेष्ठ, धन सम्पदा, वाहन, सुन्दर स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों से सम्पन्न होता है। ऐसा जातक कामुक वृत्ति एवं विषयासक्त भी हो सकता है। ऐसे जातक को संगीत, अभिनय, सौन्दर्य के प्रति भी विशेष रूचि होती है। कई बार आवेश पूर्वक गलत निर्णय लेने पर हानि उठानी पड़े। सामान्यत: निज पराक्रम से उन्नति करता है।

सूर्य-मंगल-शनि—तीनों ग्रह एक ही राशि में हों, जो जातक अपने आत्मीय लोगों से विरोध तथा उनसे सहयोग न प्राप्त करने वाला अर्थात् उनके सुख से रहित, एकान्तप्रिय, हस्तशिल्प एवं तकनीकी कार्यों में कुशल, अत्यधिक संघर्ष एवं परिश्रम से निर्वाहयोग्य धनार्जन करने वाला, निकट बन्धु भी परायों जैसे व्यवहार रखें, बिना वजह झगड़े रहें। दुर्घटना से चोट आदि का भय हो। सुख साधनों में कमी एवं अशान्त चित्त हो।

सूर्य-बुध-गुरु—तीनों ग्रहों का सम्बन्ध होने से जातक उच्च शिक्षित, विद्वान्, बुद्धिमान, धर्म, ज्योतिष एवं साहित्य आदि शास्त्रों को मानने वाला अथवा उनमें विशेष रूचि रखने वाला, साहित्य, एकाउंट्स, वकालत, कला, पठन-पाठन एवं लेखन कार्यों व भाषण कला में कुशल, धार्मिक प्रवृत्ति, गुणी, धन-सम्पदा एवं सन्तान एवं सुख-साधनों से सम्पन्न परन्तु नेत्रों में कष्टकारी होता है। देखें उदा. कुं. नं. 77, कुं. नं. 63, 85 (धर्मेन्द्र)

सूर्य-बुध-शुक्र—ये तीनों ग्रह एक राशि में हों, जो जातक बातचीत करने में कुशल, उच्च विद्या प्राप्त, स्वावलम्बी, परिश्रमी एवं अपने पुरुषार्थ एवं परिश्रम द्वारा उच्च पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, साहित्यिक अभिरुचियों से युक्त, धर्म, ज्योतिष एवं साहित्य में रुचि रखने वाला तथा अपनी उच्च विद्या एवं कलात्मक गुणों के कारण धन लाभ करने वाला, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुखों से युक्त, विलास प्रिय, स्त्री चालाक व चुस्त होगी एवं कभी स्त्री के कारण संतप्त व परेशान होगा। यदि इस योग पर गुरु एवं चन्द्र की शुभ दृष्टि हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित प्राध्यापन के क्षेत्र में सफल होता है। देखें उदा. कुं. नं. 88, जातक मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर भी अधिक खर्च करता है। देखें कुं. नं. 78.

सूर्य-बुध-शनि—तीनों ग्रह एक भाव में हों, तो जातक को आत्मीय बन्धुओं के सुख में कमी होती है। अत्यधिक संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद आय के साधन बन पाते हैं। दुर्बल शरीर, निकट बन्धुओं के साथ मन-मुटाव एवं तनाव रहे। नीच लोगों के साथ संगति अधिक रहे। आय कम व खर्च अधिक रहें। व्यसनों आदि पर खर्च अधिक हो। विदेश जाने की भी सम्भावना हो। गुप्त चिन्ताएं तथा अशान्ति अधिक रहे। छोटी अवस्था में स्वस्थ एवं सुन्दर हो। 36 वर्ष की आयु के बाद स्वास्थ्य में विकार हों। ज्योतिष धर्म, योग आदि गूढ़ विषयों में रुचि रहे। देखें कुं. नं. 65, 80. (ज्योतिष तत्त्व-फलित खण्ड-भाग-द्वितीय)

सूर्य-गुरु-शुक्र—का योग हो तो जातक कुशाग्र बुद्धि, उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान, उच्च प्रतिष्ठित, धार्मिक विचारों से युक्त, उदार हृदय, परोपकारी, योजनाबद्ध विधि से कार्य करने वाला, पराक्रमी तथा जातक निज-परिश्रम एवं पुरुषार्थ से धन लाभ व उन्नति करने वाला, पिता एवं सरकारी क्षेत्रों द्वारा विशेषतः लाभान्वित होता है। यदि यह योग षष्ठ, आठवें या 12वें (अशुभ) भावों में हो या शनि या राहु आदि ग्रह से दृष्ट हो तो स्त्री को कष्ट अथवा जातक स्त्री के कारण परेशान एवं नेत्रों में कष्ट हो।

सूर्य-गुरु-शनि—तीनों ग्रहों का योग होने से जातक निडर, आकर्षक व्यक्तित्व, गम्भीर, धर्म परायण, उच्चशिक्षित, परोपकारी, ब्राह्मणादि विद्वानों की सेवा में तत्पर, धातु, शिल्प एवं तकनीकी कार्यों में कुशल, मित्रों, स्त्री, सन्तान (पुत्र सहित), मकान, सवारी, आदि सुखों से युक्त होगा, देखें उदा. कुं. नं. 62 परन्तु जातक को प्रत्येक क्षेत्र में विघ्नों का सामना रहता है। यह ग्रह योग मेष, मिथुन, सिंह, वृश्चिक, धन, कुम्भ व मीन लग्नों में शुभभावस्थ हो, तो अधिक अच्छा फल प्रदान करता है। देखें उदा. कुं. नं. 62

सूर्य-शुक्र-शनि—तीनों ग्रहों का योग होने से जातक चंचल किन्तु बुद्धिमान, शिल्प, कला, हुनर व तकनीकी कार्यों में कुशल, चित्रकारी एवं ड्राईंग इत्यादि में रुचि, ऐसा जातक कामुक वृत्ति तथा वह सौन्दर्य प्रसाधन, स्त्री, वाहन, मकान, मनोरंजन एवं विलास आदि कार्यों पर अधिक व्यय करता है। त्रि-ग्रही योग वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर व कुम्भ लग्नों में विशेष फलदायक होता है। अशुभ भावों एवं अन्य लग्नों में यह योग जातक को अत्यधिक विलासप्रिय, दुराचारी, बन्धुओं के सुख में कमी, दाद-खुजली, कुष्ठ, मधुमेह आदि रोगों से कष्ट देता है।

चन्द्र-मंगल-बुध—त्रि-ग्रही का योग हो, तो जातक साहसी, कुशाग्र बुद्धि, कुछ तीक्ष्ण स्वभाव, वाक्चातुर्य में कुशल, लोक व्यवहार में भी कुशल, संगीत, कला एवं साहित्य में रुचि रखने वाला, ज्योतिष, वकालत, राजनीति, मन्त्रादि तथा हस्त-शिल्प हुनर, कैमीकल व तकनीकी कार्यों में सफल, स्वतन्त्र आचरण करने में उत्सुक, गुणी तथा अपने विशेष गुणों एवं विशिष्ट युक्तियों व साधनों द्वारा धनार्जन करने वाला होगा। यह योग मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन लग्नों में अच्छा फल देता है।

चंद्र-मंगल-गुरु—इन त्रिग्रहों का योग हो, तो जातक बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, सुन्दर मुखाकृति, साहसी, उत्साहशील, धर्म-परायण, परोपकारी, प्रसन्नवदन, मिलनसार, स्त्रियों में प्रिय, परस्त्री आसक्त, शिल्प कला, हुनर एवं तकनीकी कार्यों में कुशल, गुणवान तथा अपने गुणों द्वारा व्यवसाय में अच्छा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। ऐसा जातक न्यायाधीश, प्राध्यापन, चिकित्सा, वकालत, सेना एवं उच्च सरकारी क्षेत्रों में सफल होता है। धर्म, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में भी रुचि होती है।

चन्द्र-मंगल-शुक्र—जातक बुद्धिमान, व्यवहार-कुशल, बुद्धि, व्यवहार कुशल, हंसमुख एवं भ्रमणशील प्रकृति का होता है। ऐसा जातक कामुक प्रवृत्ति, विलासप्रिय, परस्त्रियों के प्रति आसक्त रहने वाला अथवा स्त्रियों के वशीभूत होकर अनीतिपूर्ण आचरण भी कर सकता

है। क्रय-विक्रय एवं व्यापार करने में कुशल तथा जातक संगीत, कला, अभिनय, गायन, नृत्य, फैशन, डिज़ाईनिंग, सौन्दर्य प्रसाधनों, कम्प्यूटर, टेलीविज़न, फिल्मी क्षेत्रों एवं सौन्दर्य एवं स्त्रियों से सम्बन्धित कार्य/व्यवसाय में अधिक सफल होते हैं। तृतीय भाव में हो, तो भाई कम तथा बहिनों का सुख होता है। देखें कुं. नं. 112

चन्द्र मंगल-शनि—का योग हो तो जातक उदासीन एवं चिड़चिड़े स्वभाव का, परन्तु वाद-विवाद एवं तर्क-वितर्क करने में कुशल, वृथा विवादों में संलिप्त, अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए उचित/अनुचित का भी ध्यान न करे। ऐसा जातक हस्त कला निपुण तथा तकनीकी कार्यों में कुशल, व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों का सामना रहे। पत्थर एवं धातुओं सम्बन्धी कार्यों में विशेष लाभ होने की सम्भावना हो, माता के सुख में कमी के योग।

चन्द्र-बुध एवं गुरु—एक साथ हों तो जातक व्यवहार-कुशल, वाक्पटु, प्रसन्नचित्, धनी, कार्य कुशल, अपने निजपुरुषार्थ से धनवान्, मधुरभाषी, भाग्यवान्, विद्वान्-बुद्धिमान, भूमि-वाहन आदि सुख साधनों से युक्त होता है। देखें कुं. नं. 87.

चन्द्र-बुध-शुक्र—एक राशि में हों तो जातक अनेक विद्याओं में निपुण, लोक व्यवहार में कुशल, अपने स्वार्थ के प्रति सतर्क रहने वाला तथा व्यवहार में नीति/अनीति का भी विचार न करने वाला, धन लोलुप होता है। कार्य व्यवसाय में भारी स्पर्धा भी उठानी पड़ती है। अभिनय, संगीत, कला एवं साहित्य में विशेष रुचि रखने वाला होता है।

चन्द्र-बुध-शनि—सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान्, दूरंदेशी, विनीत, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रखने वाला, धन, भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। ज्योतिष, मंत्र आदि विद्याओं में भी रुचि रखे।

चन्द्र-गुरु-शुक्र—एक राशि में हों तो जातक भाग्यवान, तीव्र बुद्धिमान, धनी, उच्च प्रतिष्ठित, अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान, धर्म परायण अर्थात् धर्म कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला, धर्म, ज्योतिष, योग आदि विद्याओं में रुचि रखने वाला होता है।

चन्द्र-गुरु-शनि—एक राशि में हो, तो जातक विद्यावान्, नेतृत्व करने में कुशल (नेता), व्यवहार कुशल, उच्चाधिकारी, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, ज्योतिष आदि विभिन्न शास्त्रों में रुचि रखने वाला, कार्य व्यवसाय में कुशल, अध्यापन, ज्योतिष, राजनीति, वकालत और व्यवसाय में विशेष सफल रहने वाला, धन, जायदाद, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है।

चन्द्र-शुक्र-शनि—तीनों एक ही राशि में इकट्ठे हों, तो जातक धर्मपरायण, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, अभिनय, संगीत, कला, राजनीति, ज्योतिषी, कलाकार, प्राध्यापन, सम्पादन, वकालत, बैंकिंग, ड्रैस डिज़ाईनिंग, लेखन-अध्यापन, शिल्प, कार्य, मूर्ति कला, चित्रकला, पेय पदार्थ, नक्शा निर्माण, शृंगार, सौन्दर्य, पार्लर आदि कार्यों में सफल होता है। देखें कुं. नं. 93. (ज्योतिष तत्त्व-फलित खण्ड)

मंगल-बुध-गुरु—तीनों ग्रहों का सम्बन्ध हो, तो जातक धार्मिक विचारों वाला, बुद्धिमान, धर्म, योग, दर्शन, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि विद्याओं में रुचि रखने वाला, महत्त्वाकांक्षी, परोपकारी स्वभाव, भूमि-जायदाद-वाहन, स्त्री आदि सुख सुविधाओं से युक्त, संगीत-गायन आदि कलाओं में रुचि, उच्च स्तरीय व्यवसाय करने में प्रयत्नशील रहता है। जातक बौद्धिक कार्यों में अधिक सफल रहता है।

मंगल-बुध-शुक्र—तीनों ग्रह एक राशि में हों, तो जातक दुर्बल एवं कृश शरीर युक्त, चंचल वृत्ति, अध्ययनशील, सुन्दर वक्ता, गुणवान, निज परिश्रम द्वारा धन, सम्पदा, सवारी आदि सुखों का लाभ एवं उन्नति करने वाला, क्रय-विक्रय करने में कुशल, परोपकारी, अपनी उन्नति के लिए सदैव उत्साहशील और अधिक बोलने वाला होता है, यद्यपि प्रत्येक स्थिति में सन्तुष्ट रहने का प्रयास करता है।

मंगल-बुध-शनि--जातक अत्यंत परिश्रमी, मुंहफट एवं स्पष्टवादी, अपने स्वास्थ्य के प्रति चिन्तित, आंखों या गले एवं मुख में कष्ट, प्रतिनिधित्व का काम करने में कुशल, कुछ लापरवाह प्रकृति, अपने जन्म स्थल से अतिरिक्त स्थान (विदेश आदि) में सफल, व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यन्त कठिन परिश्रम करने वाला, स्वर्ण लोह, चांदी आदि हस्तशिल्प के कार्यों या रबड़, तैल, कैमिकल के कार्यों में विशेष सफल होता है।

मंगल-गुरु-शुक्र—जातक तीव्र बुद्धिमान, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, ऐश्वर्यवान, विलासप्रिय, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, भाई, स्त्री, पुत्र संतति आदि सुखों से युक्त, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न, प्रसन्नवदन, मिलनसार, लोकप्रिय एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होता है।

मंगल-गुरु-शनि—विघ्न/बाधाओं के बावजूद उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान्, स्वास्थ्य के प्रति चिन्तित, जातक अध्यात्म, योग, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में रुचि रखने वाला, परन्तु जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में विघ्न/बाधाओं के पश्चात् सफलता मिलती है। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रहे। यदि यह योग केन्द्र या त्रिकोण भावों में हो, तो भी जातक को परेशानियों एवं संघर्ष के बाद भूमि, जायदाद-वाहन एवं सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है। जीवन के अन्त में दुःखों के बाद जातक अध्यात्म की ओर प्रवृत्त होता है।

मंगल-शुक्र व शनि—जातक चतुर बुद्धि, व्यवहार कुशल, कामुक प्रवृत्ति परन्तु स्पष्टवादी, मिलनसार नए-नए मित्र बनाने में कुशल, परिस्थिति के अनुसार आचरण करने वाला, नीतिवान, अधिकांश समय एवं धन सिनेमा, संगीत, मनोरंजन एवं स्त्रीसंग में बिताने को इच्छुक, टेलीविज़न, कम्प्यूटर्ज़ आदि का शौक, अपने जन्म स्थान से अतिरिक्त स्थान (विदेश आदि) पर भाग्योन्नति एवं लाभ प्राप्त करने वाला होता है। दाम्पत्य (विवाह) सुख भी परेशानियों एवं उलझनों के बाद प्राप्त होता है। पूर्वार्द्ध भाग अशांत एवं उलझनों से युक्त रहता है। स्त्री के साथ विचार वैषम्य का सम्भावना, जीवन के उत्तरार्ध भाग में जातक का रुझान आध्यात्मिकता की ओर बढ़ जाता है।

बुध-गुरु-शुक्र—तीन ग्रहों का योग हो, तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला, गायन, संगीत, कला, कामर्स एवं गणित के प्रति विशेष झुकाव हो। जातक बुद्धिमान, अच्छा वक्ता, अध्ययनशील, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, लेखन एवं पठन-

पाठन का भी शौक, धर्म, योग, ज्योतिष, आदि गूढ़ विषयों की ओर भी रुचि, धार्मिक एवं उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ अधिक सम्पर्क हों।

बुध-गुरु-शनि—तीनों एक ही राशि में हों, तो जातक बुद्धिमान, उच्च शिक्षित, विद्वान, भाग्यशाली, धार्मिक संस्कारों से युक्त, धर्म, अध्यात्म, ज्योतिष, योग आदि गूढ़ शास्त्रों में रुचि रखने वाला, विद्वान् एवं उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ संगति रखने वाला, धैर्यवान, अड़चनों के बावजूद धन, भूमि, आवास एवं वाहन आदि सुख-साधनों से युक्त होता है।

बुध-शुक्र-शनि—एक ही राशि में हों, तो जातक प्रियभाषी, चतुरबुद्धि, व्यवहार-कुशल, कामुक, उच्च प्रतिष्ठित, भ्रमणशील-आय के सम्बन्ध में देश-विदेश की यात्राएं करने वाला, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, गुणी, तर्क-वितर्क करने में कुशल, अध्यापन, वकालत, सेल्समैन, हस्त-शिल्प, तकनीकी कार्यों, प्रतिनिधि, चिकित्सा, ज्योतिष आदि व्यवसायों में सफल, गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने में कुशल होता है। व्यवहार में कई बार उचित-अनुचित का भी ध्यान नहीं करता। धन-सम्पदा आदि सुविधाओं से सम्पन्न होता है। स्त्री, सुन्दर, सुशील व परिवार में सहयोग करने वाली होती है।

गुरु-शुक्र-शनि—एक ही राशि में हों. तो जातक उच्चशिक्षित, तीव्र बुद्धिमान, उच्च पद प्रतिष्ठित, परोपकारी, उदार हृदय, ज़मीन-जायदाद, धन-सम्पदा एवं वाहन आदि संसाधनों से युक्त, सुन्दर व सुशील स्त्री व सन्तान आदि सुखों से युक्त, स्वाभिमानी एवं श्रेष्ठ मित्रों से युक्त होता है। ऐसा जातक धर्म, अध्यात्म, योग, ज्योतिष, तंत्र आदि गूढ़ विद्याओं में भी विशेष आस्था रखता है।

चार ग्रहों के योग का फल

1. **सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध**—चार ग्रह एक ही राशि में हों, तो जातक विद्वान्, शिक्षित, चतुर बुद्धि, व्यवहार कुशल, उचित-अनुचित का ध्यान किए बिना कार्य/व्यवहार करने वाला, कामुक प्रवृत्ति, स्त्रियों के संग में प्रसन्न रहने वाला, अध्ययनशील, पठन-पाठन, चित्रकारिता, लेखन, शिल्प, दस्तकारी, ज्योतिष, गणित, कम्प्यूटर, डिज़ाईनिंग, कैमीकल्ज़, रबड़, पत्थर, अध्यापन, वकालत आदि के कार्यों में शीघ्र सफल होता है।

2. **सूर्य-चन्द्र-मंगल-गुरु**—जातक उच्च शिक्षित, विद्वान्, धर्म-परायण, सत्यप्रिय, स्पष्टवादी परन्तु कुछ तेज़ प्रकृति का होता है। जातक अपने कार्य में कुशल तथा प्रत्येक कार्य सुनियोजित एवं नीति के अनुसार करने वाला, धन, भूमि, जायदाद, वाहन एवं पैतृक सुख सम्पदा सें सम्पन्न, तकनीकी कार्यों में कुशल, स्त्री एवं सन्तान सुख यथेष्ट होता है।

3. **सूर्य-चन्द्र-मंगल-शुक्र**—जातक उच्च विद्या प्राप्त, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, स्वाभिमानी, विलासप्रिय एवं कामुक प्रवृत्ति, क्रय-विक्रय करने में कुशल, जातक संगीत, गायन, कला, फैशन आदि में विशेष रुचि रखने वाला, जातक कम्प्यूटर, टैलीविजन, सौन्दर्य प्रसाधन, वस्त्रों एवं स्त्रियों से सम्बन्धित कार्यों में विशेष सफल, हस्त कला, दस्तकारी, शिल्प आदि कार्यों में भी कुशल होता है। ऐसा व्यक्ति विलासप्रिय एवं स्त्रियों में विशेष आसक्ति रखता है।

4. **सूर्य-चन्द्र-मंगल-शनि**—जातक अनेक गुणों से युक्त, तीव्र बुद्धिमान, विचित्र एवं रहस्यमय प्रकृति, धनवान, स्वर्णकार अथवा लोह, चांदी, पीतल, सुवर्ण आदि धातुओं के काम, पत्थर, रबड़, कैमिकल्ज़, शिल्प कला, दस्तकारी, चर्म उद्योग, तैल, कृषि, अनाज सम्बन्धी आढ़त आदि के कामों में अधिक सफल हो, मंगल-शनि में से कोई ग्रह नीच या अस्तंगत हो, तो जातक को स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार, पारिवारिक सुख में कमी और स्त्री एवं धन सम्बन्धी परेशानियां अधिक होती हैं।

5. **सूर्य-चन्द्र-बुध-गुरु**—एक ही राशि में हो तो जातक सूक्ष्म, बुद्धिमान, परिश्रमी, सुन्दर, श्वेत वर्ण एवं सुन्दर नेत्रों वाला, मधुरभाषी, चित्रकारी, डिज़ाईनिंग, कम्प्यूटर, प्राध्यापन, लेखन, पठन-पाठन, बैंकिंग आदि के कार्यों में सफल, धर्म परायण-धर्म, ज्योतिष, योग आदि विद्याओं में रुचि रखने वाला होता है।

6. **सूर्य-चन्द्र-बुध-शुक्र**—सभी एक ही राशि में हों तो जातक सुन्दर व्यक्तित्व एवं मध्यम कद वाला, भ्रमण प्रिय, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के सात्र मैत्री रखने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल एवं वाक् शक्ति अच्छी होती है। सुन्दर एवं सुशील स्त्री, व्यवहार कुशल, विलासप्रिय, सौन्दर्य प्रिय, सिनेमा, संगीत आदि कार्यों पर व्यय अधिक करने वाला, पत्थर, कोयला, तैल, रबड़ आदि के कार्यों में विशेष सफल। देखें उदाहरण कुंडली नं. 114

7. **सूर्य-चन्द्र-बुध-शनि**—जातक भ्रमणप्रिय, एक से अधिक साधनों द्वारा धन अर्जन करने पर भी अधिक धन लाभ नहीं हो पाता, व्यर्थ दौड़ धूप व खर्च अधिक होते हैं। जातक को ज्योतिष, तंत्र आदि विषयों में भी रुचि रहे। भाई-बन्धुओं का सुख कम रहे। अत्यधिक संघर्ष व कठिनाइयों के बाद आय के साधन बनते हैं।

8. **सूर्य-चन्द्र-गुरु-शुक्र**—एक राशि में हों, तो बुद्धिमान, विवेकशील, धर्मपरायण, परोपकारी स्वभाव, किसी सभा-सोसाइटी का प्रतिनिधित्व करने वाला, उच्च शिक्षित, धर्मनिष्ठ, महात्माओं के साथ संगति रखने वाला, प्रत्येक कार्य को युक्तिपूर्ण ढंग से करने वाला, देश-विदेश में भ्रमण करने के अवसर प्राप्त करने वाला, सुन्दर-सुशील स्त्री व संतान आदि सुखों से युक्त होता है। गुरु या शुक्र ग्रह अस्त हो, तो इन सुखों में कमी होती है।

9. **सूर्य-चन्द्र-गुरु-शनि**—एक ही भाव में हो तो जातक धार्मिक प्रवृत्ति वाला, परोपकारी, भाई-बन्धुओं के सुख से युक्त, परन्तु उच्च शिक्षा एवं व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष एवं कठिनाइयों के पश्चात् धनार्जन करने वाला होता है। सुन्दर एवं सुशील स्त्री व सन्तान तथा भूमि, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। यदि गुरु या शनि अस्त हों, तो सुखों में कमी होती है।

10. **सूर्य-चन्द्र-शुक्र-शनि**—चारों ग्रह एक भाव में हों, तो जातक अस्वस्थ या दुर्बल शरीर परन्तु लोकप्रिय तथा अपने अधिकारी एवं भाई बन्धुओं के अनुकूल आचरण वाला, कामुक एवं विलासी प्रकृति, व्यवसाय में भी गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने वाला, सुन्दर व सुशील स्त्री, सन्तान आदि सुखों से युक्त, कन्या सन्तति अधिक होती है। जातक आवास, वाहन आदि सुख साधनों से युक्त, परन्तु व्यर्थ चिन्तनशील रहता है। धन का खर्च अधिक होता है।

11. **सूर्य-मंगल-बुध-गुरु**—चारों ग्रह एक ही राशि में हों, तो जातक चतुर बुद्धि,

निजी-व्यवसाय द्वारा अच्छा धनार्जन करने वाला, उच्च प्रतिष्ठित, धर्म परायण, परोपकारी स्वभाव, धर्म, ज्योतिष, योग, तंत्र आदि विषयों में रुचि रखने वाला, भूमि, वाहन, सम्पदा, उच्च विद्या आदि सुख-सुविधाओं से युक्त तथा व्यवहार कुशल होता है। यदि मं., बु., गुरु ग्रहों में से कोई अस्त हो, तो सुखों में कमी होती है। देखें उदा. कुं. नं. 107.

12. सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र—एक ही राशि में हो तो जातक पराक्रमी व व्यवहार कुशल, कुशल वक्ता, संगीत, कला, साहित्य, गायन आदि कलाओं में रुचि रखने वाला, भूमि, जायदाद, सुन्दर एवं सुशील स्त्री, संतान आदि सुखों से समन्वित, नीति एवं परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करने में कुशल, अपने व्यवसाय में भी कुशलता से धन का अर्जन करने वाला होता है। कभी-कभी मुंहफट या स्पष्टवादिता के कारण हानि भी उठानी पड़ती है। देखें उदा. कुं. नं. 105 (फलित खण्ड-भाग द्वितीय)

13. सूर्य-मंगल-बुध-शनि—चार ग्रह एक राशि में होने से जातक साहसी, परिश्रमी, स्पष्टवादी एवं निष्ठुर प्रकृति का होता है। उच्च विद्या में विघ्नों के बाद सफलता मिलती है। कार्य व्यवसाय में भी अत्यंत संघर्ष व कठिनाइयों के बाद धनार्जन होता है। भूमि जायदाद, कैमिकल्ज़, रबड़, पत्थर, तैल, अनाज, लौह, सोना आदि धातुओं के व्यवसाय से विशेष लाभान्वित होने की संभावना हो। मं., बु. या शनि अस्तंगत हो तो सुखों में तथा निकट बंधुओं से विरोध रहता है।

14. सूर्य-मंगल-गुरु-शुक्र—सभी एक ही भाव में हो तो जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, तेजस्वी, पराक्रमी, बुद्धिमान, नीतिज्ञ एवं परिश्रमी होता है। ऐसा जातक उच्च व्यावसायिक विद्या में सफलता प्राप्त करने में कुशल होता है। जातक धन-सम्पदा, भूमि, जायदाद, सुन्दर व सुशील स्त्री व संतान आदि सुखों से युक्त एवं उच्च प्रतिष्ठित होता है। यदि मं., गु., शुक्र अस्त हों तो उपरोक्त सुखों में कमी होती है।

15. सूर्य-मंगल-गुरु-शनि—एक ही राशि में हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली वाणी का प्रयोग करने वाला, विघ्न/बाधाओं के बाद उच्च विद्या की प्राप्ति, कार्य/व्यवसाय में भी संघर्ष व कठिनाइयों के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त हों। अध्यापन, चिकित्सा, वकालत आदि कामों में सफल। स्त्री एवं संतानसुख भी बाधाओं के बाद मिलता है। भौम, गुरु या शनि इनमें ग्रह अस्त हो, तो उपयुक्त सुखों में कमी होती है।

16. सूर्य-मंगल-शुक्र-शनि—एक ही राशि में हो, तो जातक कटुभाषी, भाई/बन्धुओं एवं मित्रों के सहयोग एवं सहायता में कमी, परन्तु जातक स्वयं परिश्रमी, स्वाभिमानी, मनमाना आचरण करने वाला, विलासप्रिय, कामुक प्रवृत्ति, संगीत, गायन एवं मदिरा आदि के सेवन में प्रवृत्ति, जातक तकनीकी एवं हस्तकला, कम्प्यूटर, कामर्स, बैंकिंग आदि के कार्यों में सफल, संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त करता है। यदि मं., शु. या शनि अस्तगत हों, तो सुखों में कमी तथा पारिवारिक लोगों के साथ विरोध होता है।

17. सूर्य-बुध-गुरु व शुक्र—चारों ग्रह कुंडली में एक ही राशि में हों तो जातक तीव्र बुद्धिमान, उच्च शिक्षित, उच्च पद प्राप्त, मुख्याधिकारी, लोकमान्य, नीतिज्ञ, भाई-बन्धुओं के सुख से युक्त, अध्ययनशील, भूमि, मकान, वाहन, स्त्री, संतान आदि सुखों से युक्त, अध्यात्म, योग, ज्योतिष, तंत्र आदि गूढ़ विषयों में रुचि होती है। गुरु, शुक्रादि अस्त हों, तो जातक का जीवन संघर्षमय एवं कठिनाइयों से युक्त होता है।

18. सूर्य-बुध-गुरु-शनि—जातक स्वाभिमानी, कुछ स्वार्थी, अपने ज्ञान को श्रेष्ठ समझने वाला, भाई-बन्धुओं के सहयोग में कमी, जातक को धर्म/शास्त्र, ज्योतिष, संगीत एवं साहित्य के प्रति विशेष रुझान, पठन-पाठन, लेखन, सम्पादन, अध्यापन, कम्प्यूटर, डिज़ाइनिंग, कामर्स आदि के क्षेत्रों में विशेष सफलता प्राप्त होती है।

19. सूर्य-बुध-शुक्र-शनि—जातक तीव्र बुद्धिमान, उच्च विद्या प्राप्त, व्यवहार कुशल, स्पष्टवादी, आकर्षक व्यक्तित्व, प्रतिभावान, परिश्रमी, निज परिश्रम एवं पुरुषार्थ द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, संगीत, साहित्य, अध्यात्म, ज्योतिष, तंत्र आदि गूढ़ विषयों में विशेष रुचि रखने वाला, धन-सम्पदा, सुन्दर एवं सुशील स्त्री व सन्तान आदि सुखों से युक्त होता है। शुक्र या शनि अस्त हो, तो उपर्युक्त सुखों में कमी होती है।

20. सूर्य-गुरु-शुक्र-शनि—एक ही राशि में हो तो जातक उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध रखने वाला, स्वयं भी उच्च पद प्राप्त अथवा उच्च स्तरीय व्यवसाय में संलग्न होता है। संगीत, गायन, कला एवं साहित्य की ओर विशेष रुचि हो, निकट भाई/बन्धुओं के सुख में कमी, विघ्न-बाधाओं के बाद उच्च-व्यावसायिक विद्या प्राप्त, सुशील एवं सुन्दर स्त्री, प्रिय सन्तान, धन-सम्पदा वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हो। यदि गुरु, शुक्र अस्त हो, तो इन सुखों की प्राप्ति में अड़चनें होती हैं।

21. चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु—का योग एक राशि पर हो, तो जातक अति बुद्धिमान, तकनीकी अथवा व्यावसायिक विद्या में उच्च शिक्षित, अध्यात्म, योग, ज्योतिष, तंत्र आदि विद्याओं में विशेष रुचि, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध, दस्तकारी, शिल्प आदि कलाओं में कुशल, भूमि-जायदाद, धन, वाहन, संतान आदि सुखों से युक्त, लोकप्रिय, वकालत, न्यायाधीश, प्राध्यापन, चिकित्सा, कम्प्यूटर आदि क्षेत्रों में सफल होता है।

22. चन्द्र-मंगल-बुध-शुक्र—एक ही राशि में हों, तो जातक चंचल बुद्धि, व्यवहार, कुशल, हंसमुख, भ्रमणशील, क्रय-विक्रय करने में कुशल, विभिन्न स्रोतों में धनार्जन करने वाला, संगीत, अभिनय, फैशन डिज़ाइनिंग, ब्यूटी पार्लर, टेलीविज़न, वस्त्र डिज़ाइनिंग आदि के कार्यों में सफल, जातक विलासप्रिय एवं कामुक प्रवृत्ति, स्त्रियों की संगति में खुश रहने वाला, गणित, ज्योतिष, कामर्स, राजनीति, वकालत, प्रतिनिधि आदि क्षेत्रों में अधिक सफल होता है। यदि मं., शुक्र आदि अस्त हो तो संघर्ष अधिक रहेगा। इस योग पर गुरु की विशेष पंचम दृष्टि हो, तो मैडीकल के क्षेत्र में सफलता मिलती है। देखें उदा. कुं. नं. 69.

23. चन्द्र-मंगल-बुध-शनि—जातक पराक्रमी, संघर्षशील, पराक्रमी, हस्तशिल्प एवं तकनीकी कार्यों में सफल, पत्थर, कोयला, जवाहरात, तैल, लौह आदि धातुओं के कार्य द्वारा विशेष लाभान्वित। व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों का सामना, जातक भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुख-साधनों से समन्वित, प्रत्येक कार्य में अड़चनों के बाद सफलता, जातक कैमिकल्ज़, रबड़, चमड़ा, अनाज के कार्यों में भी सफल, ज्योतिष, तंत्र, धर्म आदि शास्त्रों में विशेष रुचि रहे।

24. चन्द्र-मंगल-गुरु-शुक्र—ग्रहों का योग एक ही राशि में हो, तो जातक पराक्रमी, स्वाभिमानी, धर्मात्मा, परोपकारी, स्वभाव, साहसी, उच्च शिक्षित, विद्वान, भूमि-जायदाद, वाहन, सुंदर एवं अनुकूल स्त्री आदि सुखों से युक्त, धर्म, ज्योतिष एवं संगीत का शौक, उच्च पद

प्रतिष्ठित अथवा उच्च स्तरीय व्यवसाय में संलग्न, दूरंदेशी, नई-नई योजनाएं बनाने में कुशल होता है। ऐसे जातक को अपनी उच्च विद्या एवं ज्ञान का कुछ अभिमान भी होता है।

25. चन्द्र-मंगल-गुरु-शनि—एक ही राशि में हों, तो जातक अपने कर्त्तव्य के प्रति गम्भीर, ईमानदार, परिश्रमी, धैर्यवान, पुरुषार्थी, उच्च विद्या, विद्वान्, धनवान, भूमि, आवास-वाहन एवं माता के सुखों से युक्त, उच्च पदासीन या निजी व्यवसाय द्वारा अच्छा धन अर्जित करने वाला, यद्यपि शनि के कारण व्यवसाय में संघर्ष व अड़चनें भी होती हैं। ऐसा जातक प्राध्यापन, वकालत, चिकित्सा, कम्प्यूटर, हस्तशिल्प व तकनीकी कार्यों में सफल होता है। गले एवं कानों में दोष की सम्भावना होती है।

26. चन्द्र-मंगल-शुक्र-शनि—एक ही राशि में हों, तो जातक व्यवहार कुशल, भ्रमणशील, हंसमुख, चंचल स्वभाव, स्वच्छन्द प्रकृति, अपनी मनमानी करने वाला, तकनीकी कार्यों में कुशल, संगीत, गायन एवं साहित्य, कला आदि के रूझान, विवाह के बाद स्त्री की सहायता एवं सहयोग प्राप्त करने वाला, भाई-बन्धुओं का सहयोग कम प्राप्त हो। व्यवसाय में निज उद्यम द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

27. चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र—जातक उच्च शिक्षित, विद्वान्, धनवान, धर्म-परायण, गम्भीर विचारक, अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क रहने वाला, सुन्दर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, भाई/बन्धुओं के सुख से युक्त, संगीत, साहित्य एवं गायन आदि मनोरंजक कार्यों में रुचि, धर्म-अध्यात्म, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में भी रुचि, मकान, वाहन, सन्तान अदि सुख साधनों से सम्पन्न होगा। यदि गुरु, शनि नीच आदि स्थिति में हो, तो उपरोक्त सुखों में कमी होती है।

28. चन्द्र-बुध-गुरु-शनि—एक ही राशि में हों तो जातक पराक्रमी, तेजस्वी, गम्भीर प्रकृति, अपने कार्य क्षेत्र में कुशल, वार्तालाप करने में कुशल, दूरंदेशी, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनाने में प्रवीण, अपने भाई-बन्धुओं से प्रेम करने वाला, धार्मिक विचार, कर्त्तव्य परायण, ज्योतिष, धर्म एवं पौराणिक साहित्य के प्रति विशेष रुचि, निज उद्यम एवं पुरुषार्थ द्वारा जीवन में उच्च पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, प्रतिनिधित्व करने में कुशल, राज-मंत्री तथा भूमि, जायदाद, वाहन, स्त्री एवं सन्तान आदि पारिवारिक सुखों से युक्त होता है।

29. चन्द्र-बुध-शुक्र-शनि—चतुर बुद्धि, वाक्पटु, लोक व्यवहार में कुशल, परिश्रमी, भाई-बन्धुओं में प्रिय, उच्चाकांक्षी, जीवन में निज परिश्रम से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, गुणवान, अपने कार्य सिद्धि के लिए उचित/अनुचित का विचार न करने वाला, राजसिक प्रवृत्ति, भूमि, जायदाद, सुशील स्त्री, संतान, वाहन आदि से युक्त, अभिनय, संगीत, कला एवं पौराणिक ज्योतिष व धार्मिक साहित्य में विशेष रुचि रखने वाला, नेतृत्व करने में कुशल, स्त्री वर्ग तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों द्वारा लाभान्वित होता है। ऐसा जातक तकनीकी कार्यों में कुशल होता है। देखें उदा. कुं. 113

30. चन्द्र-गुरु-शुक्र-शनि—एक ही राशि में हों, तो जातक व्यावसायिक व तकनीकी विद्या क्षेत्र में सफल, बुद्धिमान, परिश्रमी, परोपकारी स्वभाव एवं अपने आश्रितों पर दया भाव रखने वाला, वार्तालाप करने में कुशल, कामुक, प्रवृत्ति, विलास आदि कार्यों पर अधिक खर्च करने वाला तथा स्त्रियों के संग में प्रसन्न रहने वाला होता है।

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र														जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दाने के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनःशिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मनःशिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंदन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानंना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास पाताल में होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ॥१ ॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)—"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम ॥२ ॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से) "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च-नीच, स्व-गृह राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रह राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पशि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, बृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दुःख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शुद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व—उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, चर का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभात होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग **'चर'** का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी—स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**—मान लीजिए, सौम्य राशि मीन में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा—ऐसा कहना चाहिए। जैसे—यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

अरिष्ट ग्रहों के दान, पूजा एवं उपाय

[पं. विवेक शर्मा (एम.ए., एल.एल.बी.)]

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए ज्योतिष शास्त्र में अनेक प्रकार के उपाय बतलायें गए हैं—जैसे मंत्रजाप-हवन, दान, ग्रह औषधि स्नान, तीर्थ-स्नान, व्रत रखना, नग एवं यंत्र धारण करना इत्यादि। पाठकों के लाभार्थ, आगे कुछ उपायों का संक्षिप्त विवरण लिखा जाता है। **ध्यान रहे,** सूर्य चन्द्रादि ग्रहों की उपासना के माध्यम से हम सर्वपिता परमात्मा की ही उपासना करते हैं। क्योंकि विश्व के सभी सौरपिण्डों के द्वारा ईश्वर की असीम शक्ति की ही सतत अभिव्यक्ति हो रही है।

पूर्वा जन्मों में कृत शुभाशुभ कर्मों के अनुसार एवं ग्रहों के द्वारा अनुप्रेरित होकर मनुष्य ऐहिक जीवन में सुख-दुख, लाभ-हानि, इष्ट-अनिष्टादि फल प्राप्त करता है। जन्मपत्री एवं वर्ष कुण्डली में पड़े क्रूर ग्रह मनुष्य को प्रतिकूल एवं कठिन समस्याएं उत्पन्न करवाते हैं, जबकि शुभ एवं योगकारक ग्रह अनुकूल व सौभाग्यवर्द्धक परिस्थितियां बनाने में सहायक होते हैं।

यदि अशुभ ग्रहों के प्रभावस्वरूप बार-बार प्रयत्न करने पर भी जीवन में विघ्नों एवं विफलताओं का सामना पड़े और भाग्य साथ न देता हो, तो अशुभ ग्रहों की अनुकूलता हेतु ज्योतिष आचार्यों द्वारा प्रतिपादित अनिष्ट ग्रहों के उपायों को अपनाकर जीवन को स्वस्थ, खुशहाल एवं सुखी बनाने का प्रयास करना चाहिए।

परन्तु जन्मकुण्डली में किसी ग्रह का शुभाशुभ निर्णय करना सरल कार्य नहीं। किसी जातक की कुण्डली में यदि मंगल आदि कोई ग्रह नीचादि अशुभ अवस्था में स्थित होने पर भी तुरन्त एकदम अशुभ फल नहीं कह देना चाहिए। देखना चाहिए कि विचारणीय ग्रह किस भाव का स्वामी होकर नीचावस्था में बैठा है। नीचस्थ मंगल पर यदि गुरु की पंचम/नवमादि शुभ दृष्टि पड़ रही हो अथवा यदि नवांश कुण्डली में मंगल मित्र या उच्च राशि में पड़ा हो, अथवा मंगल स्थित राशि (कर्क) का स्वामी ग्रह चन्द्रमा मित्र या उच्चादि राशि में स्थित हो अथवा मंगल, चन्द्रमा, गुरु आदि शुभ ग्रहों के साथ बैठा हो, तो ऐसी स्थिति में मंगल विशेष अधिक अशुभ फल नहीं करेगा। इसके अतिरिक्त विचारणीय भाव के कारक ग्रह की भी शुभाशुभ स्थिति का भी विचार कर लेना चाहिए।

◆सूर्य शान्ति के लिए उपाय◆

यदि किसी जातक की जन्म अथवा वर्ष कुंडली में सूर्य अशुभ कारक हो तो उसको निम्नलिखित मन्त्र की (अपनी सामर्थ्यानुसार) कम-से-कम 7000 की संख्या में जप करना चाहिए। जप का आरम्भ शुक्लपक्षीय रविवार प्रातः सूर्योदय से करना चाहिए। पाठ करते समय समीप ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, ताण्डुल, लाल चन्दन, लाल पुष्प, गंगाजल, थोड़ा गुड़ डालकर पात्र को लाल वस्त्र, आम के पत्तों एवं नारियल द्वारा ढक लेना चाहिए। साथ ही दान योग्य वस्तुओं को संकल्पपूर्वक पहले से पास में रख लेनी चाहिएं।

बीज मंत्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (जप संख्या 7000)

सूर्य दान हेतु वस्तुएँ—गेहूँ, लाल चन्दन, गुड़, लाल पुष्प, लाल वस्त्र, घी, लाल वर्ण की गाय, सुवर्ण, माणिक्य, ताम्र बर्तन, नारियल आदि लाल फल, मिष्ठान, दक्षिणा आदि।

उपाय—(1) तांबे की अँगूठी में माणिक्य अथवा विधिवत् तैयार किया हुआ सूर्य-यन्त्र (ताम्र पत्र पर) धारण करें।

(2) खाना खाते समय सोने अथवा तांबे के चम्मच का प्रयोग करना तथा 11 रविवार तक सूर्य स्नान करना। जब जन्म या वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभ हो तो—

(3) 108 रविवार तक ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन मिलाकर सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य स्तोत्र का पाठ करना शुभ है।

(4) 40 या 43 दिन तक चलते पानी में गुड़ या तांबे के सिक्के बहाना शुभ होगा।

(5) सर्वप्रथम प्रातःकाल उठकर स्नान उपरान्त ताम्र कलश (गड़वी) में जल, दूध, पुष्प, गंध, लाल-चंदन आदि लेकर पूर्व दिशा में मुख करके गायत्री मंत्र तथा सूर्यार्घ्य मंत्र के उच्चारण से सूर्य को अर्घ्य प्रदान करना चाहिए।

(6) रविवार को नमक से परहेज़ रखें। लवणरहित सादा भोजन करें। ग्यारह रविवार पर्यन्त केवल दही और चावल का सेवन करना चाहिए।

(7) जिन जातकों का सूर्य नीच का हो, उन्हें कार्तिक मास में तुलसी पौधे पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिए तथा पं. देवीदयालु कृत 'कार्तिक माहात्म्य' का पाठ करना चाहिए।

◆चन्द्रमा शान्ति के लिए उपाय◆

जब जन्म या वर्ष कुण्डली में चन्द्र ग्रह अशुभ कारक हो तो निम्नलिखित मन्त्र की 11 हजार की संख्या में जप करना और तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा। जप का आरम्भ पूर्णिमा या शुक्ल पक्ष के सोमवार से करना चाहिए।

तन्त्रोक्त चन्द्र मंत्र—ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (जप संख्या 11,000)

दान योग्य वस्तुएँ—चावल, सफेद चन्दन, शंख, कपूर, घी, दही, चीनी या मिश्री, क्षीर, मोती, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत फल, चांदी, मिठाई और दक्षिणा। **उपाय=**

(1) चांदी के बर्तनों का प्रयोग करना एवं चारपाई के पायों में चांदी के कील ठुकवाना।

(2) सफेद मोतियों की माला अथवा चांदी की अँगूठी में मोती धारण करना।

यदि कुण्डली में चन्द्र अशुभ हो, तो चन्द्रमा के अशुभत्व के निवारण हेतु उपाय—

(3) शीशे के गिलास में दूध, पानी आदि पीने से परहेज़ रखना तथा चाँदी के बर्तनों में दूध, पानी पीना शुभ होगा।

(4) पानी में कच्चा दूध मिलाकर चन्द्रमा का बीज मन्त्र पढ़ते हुए पीपल को डालना।

(5) लगातार 16 सोमवार व्रत रखकर सायंकाल सफेद वस्तुओं का दान करना चाहिए तथा पाँच छोटी कन्याओं को क्षीर सहित भोजन कराना चाहिए।

(6) सोमवार को ही प्रातःकाल स्नानादि करके ताम्र बर्तन में कच्ची लस्सी (जल तथा थोड़ा सा दूध) भगवान् की मूर्ति या शिवलिंग पर चढ़ाना चाहिए।

(7) चांदी का कड़ा, चैनी या सिक्का धारण करना चाहिए।

◆मंगल शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में मंगल अशुभकारक एवं बाधाकारक हो, तो निम्न मन्त्र की कम-से-कम 10 हज़ार संख्या में शुक्ल पक्ष के मंगलवार से प्रारम्भ करें।

तन्त्रोक्त मंगल मन्त्र—ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (जप संख्या 10,000)

दान योग्य वस्तुएँ—गेहूँ, मसूर, लाल बैल, घी, गुड़, सुवर्ण, मसूर, मूंगा, ताम्र बर्तन, कनेर पुष्प, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, केशर, लाल फल, नारियल, मीठी चापाती, गुड़ से निर्मित रेवड़ियां, दक्षिणा आदि। मंगल का दान युवा ब्राह्मण को करना शुभ है।

उपाय—जब कुण्डली में मंगल शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फल न करता हो तो निम्नलिखित उपाय शुभ होंगे—

(1) तांबे की अँगूठी में मूँगा धारण करना अथवा तांबे का कड़ा पहनना।

(2) मंगलवार को घर में गुलाब का पौधा लगाना तथा 108 दिन तक रात को तांबे के बर्तन में पानी सिरहाने रखकर घर में लगाए हुए गुलाब के पौधे को वहीं पानी डालना।

(3) मंगलवार का व्रत रखकर 27 मंगल किसी अपाहज को मीठा विशेषकर गुड़ से निर्मित भोजन खिलाना।

(4) नारियल को तिलक करके तथा लाल कपड़े में लपेटकर लगातार 3 मंगलवार चलते पानी में बहाएँ।

(5) लाल रंग की गाय या लाल वर्ण के कुत्ते को भोजन खिलाना शुभ होगा।

(6) मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। विशषकर उन कन्याओं को जिनकी कुण्डली में मंगल मंगलीक योग बनकर विवाह में बाधा, विलम्ब उत्पन्न कर रहा हो—उन्हें मंगलागौरी का व्रत लगातार 7 मंगलवार रखना चाहिए।

◆बुध शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में बुध ग्रह अशुभफली हो तो भगवान् विष्णु का ध्यान करके शुक्ल पक्ष के बुधवार को आरम्भ करके 9000 की संख्या में बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र—ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (जप संख्या 9000)

दान योग्य वस्तुएँ—मूंगी, 5 हरे फल, चीनी, हरे पुष्प, हरी इलायची, कांस्य-पत्र, पन्ना, सोना, हाथी का दांत, षड्रसों से युक्त भोजन हरी सब्जी, हरा कपड़ा, दक्षिणा सहित दान करें।

उपाय—कुंडली में बुध शुभ होता हुआ भी फलकारक न हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे—

(1) हरे रंग का पन्ना बुधवार को सोने की अँगूठी में धारण करना। हरे रंग के वस्त्रों को पहनना तथा हरे रंग के पर्दे लगाना शुभ होगा। हरे रंग की गाड़ी, स्कूटर या साईकिल आदि का प्रयोग करें। परन्तु यदि बुध अशुभ हो, तो हरे वस्त्र कदापि न पहनें।

(2) बुधवार को चाँदी या कांस्य के गोल टुकड़े को हरे रंग के कपड़े में लपेट कर जेब में रखें या भुजाओं के साथ बांधें।

यदि बुध अशुभ हो तो—(3) मूंगी साबत के सात दाने, हरा पत्थर, कांसे का गोल टुकड़ा, हरे वस्त्र में लपेट कर बुधवार को चलते पानी में बहाना शुभ होगा। पानी में बहाते समय कम-से-कम 7 बार बुध का बीज मन्त्र पढ़ें।

(4) हरे रंग के वस्त्र (परिधान) किसी हिजड़े को बुधवार के दिन शुभ होगा।

(5) बुधवार के दिन 6 इलायची हरे रूमाल में लपेटकर अपने पास रखें तथा इसके पश्चात् एक इलायची व तुलसीपत्र का सेवन करना शुभ रहेगा।

◆गुरु शान्ति के लिए उपाय◆

जब किसी व्यक्ति की जन्म या वर्ष कुंडली में गुरु शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो उसे शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार को, शुभ मुहूर्त में निम्नलिखित मन्त्र का 19,000 की संख्या में पाठ करना तथा तदोपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा।

तन्त्रोक्त गुरु मन्त्र—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः (जप संख्या 19,000)

गुरु दान की वस्तुएं—पीले चावल, पुखराज, चने की दाल, हल्दी, शहद, पीला कपड़ा, पीले पुष्प व पीले फल (जैसे—आम, केले आदि), कांस्यपात्र, घोड़ा, लवण, शक्कर, घी, धर्मग्रन्थ, सुवर्ण, पीली मिठाई, दक्षिणा आदि।

उपाय—जन्म कुंडली में बृहस्पति शुभ व योगकारक होता हुआ भी शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

(1) सोने या चांदी की अँगूठी में तर्जनी अंगुली में तथा शुभ मुहूर्त में पुखराज धारण करें।

(2) 27 गुरुवार केसर का तिलक लगाना तथा केसर की पुड़िया पीले रंग के कपड़े या कागज़ में अपने पास रखना शुभ होगा।

गुरु के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु निम्नलिखित उपाय करें—

(3) चलते पानी में बादाम एवं नारियल पीले कपड़े में लपेटकर बहाना शुभ होगा।

(4) पीपल के वृक्ष को गुरुवार एवं शनिवार को गुरु का बीज मन्त्र एवं गुरु गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए जल दें।

(5) वृद्ध ब्राह्मण को यथाशक्ति पीली वस्तुएँ, जैसे—चने की दाल, लड्डू, पीले वस्त्रों, शहदादि का दान करना चाहिए।

◆शुक्र शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में शुक्र अशुभकारक हो तो शुभ मुहूर्त में निम्न मन्त्र का 16,000 की संख्या में जाप करना तथा तदुपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र—ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (जप संख्या 16,000)

शुक्रदान की वस्तुएँ—चाँदी, चावल, सुवर्ण, दूध, दही अथवा दुग्ध निर्मित वस्तुएँ, मिश्री, श्वेत चन्दन, श्वेत घोड़ा, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत फल एवं सुगन्धित पदार्थ।

उपाय—कुंडली में यदि शुक्र शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फलीभूत न हो रहा हो तो निम्न उपाय कल्याणकारी रहेंगे—

(1) चाँदी की कटोरी में सफेद चन्दन, मुश्कपूर, सफेद पत्थर का टुकड़ा रखकर सोने वाले कमरे में रखे चन्दन की अगरबत्ती जलाना शुभ होगा।

(2) घर में तुलसी का पौधा लगाना, सफेद गाय रखना, सफेद पुष्प लगवाना शुभ होगा तथा क्रीम रंग के रेशमी कपड़े में चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवाकर विधिपूर्वक अपने पास रखें।

शुक्र अशुभ प्रभावी होने की स्थिति में नीचे लिखे उपाय कल्याणकारी होंगे—

(3) शुक्रवार को श्री दुर्गा पूजन, 5 कन्या पूजन उन्हें खीरादि श्वेत वस्तुएँ देना तथा गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, शक्कर एवं चरी डालना।

(4) सफेद रंग के पत्थर पर चन्दन का तिलक लगाकर चलते पानी में बहा देना या चांदी के टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवा कर रेशमी क्रीम रंग के वस्त्र में लपेट कर शुक्रवार को नीम के वृक्ष के नीचे दबाना।

(5) शुक्रवार का विधिवत् व्रत रखना चाहिए तथा पाँच शुक्रवार पाँच कन्याओं का पूजन कर उन्हें मिश्री सहित श्वेत वस्तुओं की भेंट देनी चाहिए।

◆शनि शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुण्डली में शनि अशुभ फल प्रदायक हो तो किसी शुभ मूहूर्त्त में आरम्भ करके निम्न मन्त्र का श्रद्धापूर्वक भगवान् शंकर का एवं शनि के रूप का ध्यान करते हुए 23 हजार संख्या पूर्ण करने के पश्चात् उसी मन्त्र सहित दशांश की संख्या में हवन करने से शुभ प्रभाव पड़ता है।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र—ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (जप संख्या 23,000)

शनि के दान योग्य वस्तुएँ—नीलम, लोहा, तिल, उड़द (माश), सरसों का तेल, काला वस्त्र, काली गाय, कुल्थी, लौह निर्मित पात्र, जूता, भैंस, कस्तूरी, सुवर्ण, नारियल, काले अथवा नीले पुष्प, फल, दक्षिणा इत्यादि।

उपाय—शनि शुभ होता हुआ भी शुभफल प्रकट न कर रहा हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे—

(1) सोने की अँगूठी में नीलम धारण करें। उसके अभाव में नाव के कील की अँगूठी अथवा काले घोड़े के नाल (खुरों) की अँगूठी बनवाकर मध्यमा अंगूली में धारण करें।

(2) घर में नीले रंग के पर्दे तथा नीले रंग की चादरों का प्रयोग करना और स्वयं भी बहुधा नीले रंग के वस्त्रों का प्रयोग करना शुभ होगा। जब कुण्डली में शनि नीच या अरिष्टकर फल प्रकट कर रहा हो तो निम्न उपाय करें—

(3) शनिवार का व्रत और दशरथकृत 'शनि स्तोत्र' का पाठ करें।

(4) स्टील या लोहे की कटोरी में तेल का छाया-पात्र करके तेल पाँच शनिवार तक आक के पौधे पर अथवा 'शनि मन्दिर' में डालना शुभ होगा। 5वें शनिवार को तेल चढ़ाने के बाद तेल वाली कटोरी को वही दबा देना या वही चढ़ा देना शुभ होगा। तेल चढ़ाते समय शनि का बीज मन्त्र पढ़ें।

◆राहु शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में राहु अशुभ फलदायक हो तो निम्नलिखित मन्त्र का 18,000 की संख्या में जाप करके दशमांश का हवन करें—

मन्त्र—ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (जप संख्या 18,000)

राहु दान योग्य वस्तुएँ—सप्तधान्य, गोमेद, सीसा, काला घोड़ा, तिल, तैल, सोने या चाँदी का सर्प, उड़द, खड्ग (तलवार), कवच, नीला वस्त्र, काले रंग के पुष्प, नारियल, दक्षिणा आदि।

उपाय—अशुभ राहु या राहु की महादशा या अन्तर्दशा में निम्नलिखित उपाय करें—

(1) काले व नीले वस्त्र पहनने से परहेज़ करें तथा चाँदी की चेनी व लॉकेट पहनना शुभ होगा।

(2) चापाती को खीर लगाकर कौओं को एवं काले रंग की गाय को खिलाएँ।

(3) काले तिल, कच्चा कोयला, नीले रंग के ऊनी कपड़े में बाँधकर शनिवार अथवा राहु के नक्षत्रों में घर के आंगन में दबाना शुभ होगा। अथवा नीले वस्त्र के बांधे रूमाल को राहु मन्त्र पढ़ते जल में प्रवाह कर देवें।

◆केतु शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुण्डली में केतु अशभु फलकारी हो तो किसी शुभ मुहूर्त्त में नीचे लिखे मन्त्र की 17 हजार की संख्या में जाप करें तथा दशमांश का हवन करें।

मन्त्र—ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (जप संख्या 17,000)

केतु की दान योग्य वस्तुएँ—लहसुनिया, लोहा, बकरा, नारियल, तिल, सप्तधान्य, धूम्र (धुएँ जैसा) वर्ण का वस्त्र, कस्तूरी, लौह चाकू, कपिला गाय, दक्षिणा सहित।

उपाय—(1) केतु की शान्ति के लिए श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखें तथा श्रीगणेश पूजन तथा लड्डुओं का भोग लगाना शुभ होगा।

(2) काले वस्त्र में बाँधकर काले व सफेद तिल चलते पानी में बहाना।

(3) रंग-बिरंगी (चितकबरी) गाय की सेवा करना एवं रंग-बिरंगे कुत्ते को दूध व चापाती (Bread) डालना।

स्त्री जातक विचार

(विवाह, सन्तान आदि सम्बन्धी विशेष योग) ज्योतिष तत्त्व (फलित) भाग दो से उद्धृत

आजकल परिवर्तित परिस्थितियों में लड़कियां भी पुरुषों के समान उच्च विद्या प्राप्त करके लगभग प्रत्येक क्षेत्र में उच्च पद की नौकरी अथवा व्यवसाय करते हुए अपने परिवार एवं समाज में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इस प्रकार परिवारिक एवं आर्थिक, दोनों क्षेत्रों में अपना उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक निभा रही हैं। इसलिए स्त्री सम्बन्धित ज्योतिष के अनेक प्राचीन योगों को आधुनिक सन्दर्भों में विश्लेषण करके वर्णित करने की विशेष आवश्यकता है। आगे स्त्री जातक सम्बन्धी कुछ विशेष योग दिए जाते हैं। ध्यान रहे, स्त्रियों सम्बन्धी फलादेश जन्म लग्न के अतिरिक्त चन्द्रमा को भी लग्न मानकर करना चाहिए।

(1) यदि स्त्री की कुण्डली में लग्न व चन्द्रमा समराशि में हों, तो स्त्री पतिव्रता, सुन्दर, सुशील, चरित्रवान्, गुणवती एवं रूपवती होती है। यदि समराशिस्थ लग्न व चन्द्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो,तो स्त्री अनेक गुणों से युक्त तथा सुवर्ण आभूषण, अलंकारों, भूमि एवं वाहन आदि सुखों से युक्त होती हैं—

प्रकृतिस्था लग्नेन्द्वोः समभे सच्छोलरूपाढया।
भूषण गुणैरुपेता, शुभवीक्षितयोश्च युवतिः स्यात् ॥ सारावली॥

(2) यदि स्त्री की कुण्डली में लग्न व चन्द्रमा विषम राशि में हों, तो स्त्री पुरुष की आकृति के समान मुखाकृति वाली एवं पुरुषों जैसे कठोर स्वभाव से युक्त एवं स्वाभिमानी परन्तु परेशानियों से घिरी रहने वाली होगी। यदि विषम राशिस्थ लग्न व चन्द्र पाप (क्रूर) ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, तो स्त्री कुटिल बुद्धि की, पति से उग्र (क्रोधपूर्ण) व्यवहार करने वाली, नियन्त्रण में न रहने वाली, पर पुरुष में चेष्टा रखने वाली तथा दूसरों से ईर्ष्या व द्वेष करने वाली होती है।

(3) यदि लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में हों तथा वह शुभ ग्रह से युक्त व उन्हें शुभ ग्रह देखते हों, तो स्त्री मिश्रित (शुभाशुभ) गुणों वाली, पुरुष-स्त्री मिश्रित आकृति, स्थिर, चाल और मिश्रित बुद्धि वाली होती है।

(4) लग्न व चन्द्रमा में से जो अधिक बली हो, उससे स्त्रियों की देह का शुभाशुभ फल का विचार करे। सप्तम भाव से पति के सुख एवं सौभाग्य का, अष्टम से पति की मृत्यु का तथा पंचम भाव से सन्तति का विचार करें—

वैधव्यं निधने चिन्त्यं शरीरं जन्मलग्नतः। सप्तमे पतिसौभाग्यं पंचमे प्रसवस्तथा॥

(5) यदि 1, 4, 5, 7 एवं 12वें भावों में शुभ ग्रह हों, तो ऐसी स्त्री अपने पति के वश में रहती है तथा उसका पति भी उसके वश में रहता है तथा पति-पत्नी में अच्छा प्रेम रहता है।

6. वैधव्य योग—(क) जिस स्त्री की कुण्डली में सप्तमेश अष्टम स्थान में बैठा हो और अष्टमेश सप्तम स्थान में बैठा हो और वे पापग्रह से युक्त या दृष्ट हों, तो स्त्री को वैधव्य योग होता है।

(ख) जब सप्तमेश तथा अष्टमेश छठे या बारहवें भावों में पापग्रह के साथ पड़े हों, तो ऐसी स्त्री को वैधव्य अथवा पति के सुख में कमी होती है।

सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः। पापेक्षणयुताद् वाला वैधव्यं लभते ध्रुवम्। सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितो। तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः॥

(ग) लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम अथवा अष्टम स्थान में पापग्रह होने से स्त्री को वैधव्य होने की सम्भावना होती है।

(घ) यदि दो पापग्रह सप्तम स्थान में हों, तो स्त्री काम से पीड़ित, विधवा और कुल का क्षय करने वाली होती है।

(ङ) यदि तीन पापग्रह सप्तम स्थान में हों, तो स्त्री कुलटा तथा परपुरुष गामिनी एवं पति की घातिनी होती है।

(च) सप्तम स्थान में राहु नित्य अरिष्ट करके स्त्री की हानि करता है।

(छ) लग्न से अष्टम क्रूर ग्रह, नीच, शत्रु या पापवर्गों में हों, तो पति की आयु के लिए अरिष्टकर होता है

क्रूर व्योमचरः स्त्रीणामष्टमस्थो विलग्नतः। नीचारिपाप वर्गेषु पत्युः मृत्यु करः स्मृतः॥

इसके अतिरिक्त 8वें एवं 12वें स्थानों पर पापयुक्त मंगल हो, लग्न में राहु हो, तो भी वैधव्य की सम्भावना होती है. यदि लग्न में सूर्य, मंगल अथवा शनि हो, तो भी दुर्भाग्य युक्त होती है—

व्ययाष्टगे कुजे क्रूरयुते राहौ विलग्नगे। रण्डाथ लग्नगे सूर्ये वा भौमे वा दुर्भगाशनौ।

(झ) चन्द्रमा से सप्तम एवं अष्टम स्थान में पापग्रह हों, अथवा कन्या अमावस्या के दिन उत्पन्न हुई हो, तो पति के सुख में कमी रहती है। यदि चन्द्रमा पापग्रह से युक्त अथवा पापग्रहों के मध्य में हो, तो भी पति सुख में कमी होती है।

7. यदि लग्न अथवा चद्रमा से सप्तम स्थान में शुभग्रह अथवा सप्तमेश हो, तो वैधव्य दोष, सन्तानहीन सम्बन्धी एवं विषकन्या सम्बन्धी दोषों एवं विषकन्या सम्बन्धी दोषों का नाश हो जाता है।

लग्नात् विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपस्च।
द्यूनस्थितो हन्ति अनपत्यदोषं वैधव्य दोषं च विषांगनाख्यम्॥

8. किसी जातिका के गुरु नवम, पंचम या केन्द्र में स्थित हो अथवा उच्चादि स्थिति में हों, तो जातिका शील से युक्त, (सुशील), साध्वी, सुपुत्र आदि सुखों से युक्त, पति को सुख देनें वाली, गुणवती और निश्चय ही दोनों कुलों का यश बढ़ाने वाली होती है।

वाचस्पतौ नवमपंचम केन्द्र संस्थे तुंगादिके भवति शीलसमन्विता च।
साध्वी सुपुत्र जननी सुखिनी गुणढयां नूनं कुल द्वययशस्कारिणी भवेत्सा॥ जा. पा.

9. यदि कुण्डली में शुभ ग्रह लग्न को देखते हों, तो स्त्री शिल्प, कला, संगीत आदि कलाओं की जानकार, शुद्ध चित्त वाली, स्त्रियोचित लज्जावान्,रमणीय मूर्ति, पुत्रवती, पति की प्रिया, धन-वाहन आदि सुखों से युक्ता, पति के प्रति समर्पित तथा शुभ लक्षणोंसे युक्त होती है।

10. यदि सप्तम भाव में शुभ राशि, शुभ ग्रहों का योग, शुभ ग्रह की दृष्टि एवं शुभ ग्रह का नवांश हो, तो उस स्त्री को आकर्षक व्यक्तित्व वाला, यश, विद्या, धन-सम्पदा आदि से युक्त, उच्चप्रतिष्ठित पति मिलता है। यदि इसका उलटा हो, अर्थात् सप्तम भाव मध्य पर अशुभ राशि, अशुभ नवांश हो, तो कुत्सित शरीर वाला, चालाक तथा साधनहीन पति मिलता है।

11. किसी स्त्री की कुण्डली के सप्तम भाव में सूर्य सिंह राशि में हो अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी ही सिंह का नवांश हो, तो ऐसी स्त्री का पति सुन्दर, कामुक परन्तु क्रोधी होता है।

12. यदि सप्तम भाव में कर्क राशि का चन्द्रमा हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी कर्क नवांश हो, तो उस जातिका का पति कामुक, सुख साधनों से युक्त परन्तु मृदु स्वभाव का होता है।

13. सप्तम भाव मं मंगल मेष या बृश्चिक राशि का हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी ग्रह का नवांश हो, तो ऐसी कन्या को सुन्दर, विद्वान, धनी एवं योग्य पति मिलता है।

15. यदि गुरु सप्तम भाव में धनु या मीन राशिगत हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी गुरु का नवांश हो, तो ऐसी कन्या का पति उच्च विद्या प्राप्त, प्रतिष्ठित, विद्वान एवं गुणवान् होता है।

16. यदि शुक्र वृष या तुला राशिगत सप्तम भाव में अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी शुक्र का नवांश हो,तो ऐसी कन्या का पति सुन्दर व्यक्तित्व, रोमांटिक, संगीत, गायन अभिनय आदि कलाओं का शौकीन होता है।

17. यदि शनि सप्तम भाव में मकर या कुम्भ राशिगत हो अथवा नवांश कुण्डली में सप्तम भाव से सम्बन्धित ग्रह की राशि हो, तो ऐसी कन्या का पति अधिक आयु का दिखने वाला, चिन्तनशील एवं सदा परेशानियों से घिरे रहने वाला होता है।

विवाह में विलम्ब योग–

(क) द्वितीय (कुटुम्ब) भाव तथा सप्तम भाव में सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह पड़े हों, तो कन्या के विवाह में विलम्ब एवं विघ्न होते हैं।

(ख) सप्तमेश अष्टम में हो एवं अष्टमेश सप्तम में होकर दोनों में राशि परिवर्तन हो, तो भी विवाह कार्य में अनावश्यक विलम्ब होते हैं।

(ग) चन्द्रमा या राहु सप्तम भाव में हो तथा सप्तमेश ग्रह तथा गुरु का सम्बन्ध दुःस्थानों (6, 8, 12वें) में हो, तो विवाह में विलम्ब होता है।

(घ) सप्तम, अष्टम एवं द्वितीय भावों में पापग्रह पड़ें हों तो तथा अष्टमेश पंचम भाव में हो, तो भी वैवाहिक सुख में विलम्ब होते हैं।

(ङ) सप्तमेश एवं चन्द्र दोनों पापग्रह से युक्त तथा पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो भी वैवाहिक सुख में विलम्ब अथवा कमी रहती है। देखें उदाहरण कुण्डली संख्या नं० 103।'ज्यो. तत्त्व', फलित भाग-दो

(च) सप्तम भाव पर भौम आदि पाप ग्रह की दृष्टि हो, सप्तमेश एवं लग्नेश पर शनि की क्रूर दृष्टि हो तथा पंचम भाव भी दूषित हो, तो विवाह में विशेष विलम्ब होता है। प्रस्तुत कुण्डली की जातिका अमावस तिथि को मीन लग्न में उत्पन्न हुई है। कुण्डली में सप्तम भाव पर मंगल की अशुभ दृष्टि है तथा सप्तमेश बुध एवं सूर्य, गुरु आदि पर भी शनि की वक्री दृष्टि पड़ रही है। पंचम भाव में केतु तथा उस पर पुनः शनि की क्रूर दृष्टि और पंचमेश चन्द्र का अष्टम भाव में होना इत्यादि कारणों से 32 वर्ष की आयु तक भी कन्या का विवाह नहीं हो पाया है।

इसके अतिरिक्त (क्षीण चन्द्र) अमावस तिथि में उत्पन्न कन्या के विवाह सुख में विलम्ब या विघ्न होते पाए जाते हैं।

(छ) विवाह एवं सन्तानकारक ग्रह अकेला सप्तम भाव में हो तथा उस पर मंगल, शनि आदि ग्रहों की अशुभ दृष्टि पड़ती हो, तो भी जातिका का विवाह विलम्ब से होता है। प्रस्तुत कुण्डली की जातिका जिसका जन्म 29 नवं., 1963 ई. में हुआ—का विवाह 34 वर्ष की आयु में हुआ, उस समय इसको चन्द्र मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा चल रही थी।

उदाहरण कुण्डली
जन्म 17-11-1971 ई.

12, 1, 2 श. (व), 3, 4 के., 5, 6, 7 चं., 8 सू. बु. गु., 9, 10 रा., 11 मं.

उदाहरण कुण्डली
जन्म 29-11-1963 दिल्ली

6, 7, 8 सू. बु., 9 मं. शु. के., 10 श., 11, 12 गु., 1 चं., 2, 3 रा., 4, 5

सन्तान योग–

(क) स्त्री की कुण्डलीी में उपचय स्थान (3, 6, 10 एवं 11वें) में गोचरवश बलवान् चन्द्र व मंगल आ जावे अथवा स्वराशि या स्वनवांश में आने पर उस मास एवं उस दिन में स्त्री को गर्भ स्थिति होनी सम्भव होती है।

(ख) पंचम भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो उस स्त्री को पुत्र सन्तान अधिक होती है।

(ग) पंचम भाव में चन्द्र, शुक्र या शनि हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती है।

(घ) पंचम में जितने ग्रह हों और इस स्थान पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो, उतनी संख्या में सन्तान संख्या जाननी चाहिए। पुरुष ग्रहों के योग और दृष्टि से पुत्र और स्त्री ग्रहों के योग और दृष्टि से कन्या सन्तति की संख्या का अनुमान करना चाहिए।

(ङ) सूर्य, गुरु, मंगल तथा पंचमेश ग्रह—ये चारों पुरुष राशि के नवांश में हों अथवा कुण्डली में पुरुष ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, तो पुत्रों की संख्या अधिक होती है।

(च) पंचम में स्त्री ग्रह हों अथवा पंचमेश स्त्री ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, नवम में भी शुक्र हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती है।

(छ) पंचम, अष्टम या 12वें भावों में पापग्रह हों, तो सन्तान सुख में कमी होती है।

★ लग्न में चन्द्र-गुरु का योग हो तथा सातवें भाव में शनि या मंगल हो तो सन्तान अभाव का योग होता है।

★ सातवें भाव में बुध-शुक्र, चतुर्थ भाव में पाप ग्रह और पंचम भाव में अकेला गुरु हो, तो पुत्र सन्तान प्रतिबन्धक योग होता है।

★ लग्नेश, पंचमेश और नवमेश—ये तीनों ग्रह शुभग्रह से युक्त होकर 6, 8, या 12वें भाव में पड़े हों, तो विलम्ब से सन्तान होती है।

★ पंचम या पंचमेश द्वारा ग्रहीत राशि का स्वामी, पंचमेश द्वारा अधिष्ठित नवांश राशि का स्वामी अथवा गुरु स्थित राशि के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में पुत्र सन्तान प्राप्ति के योग होते हैं।

नोट—और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए विवाह एवं सन्तान सम्बन्धी हमारी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली ''सुतभाव प्रकाश'' फलित नामक पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

विवाह एवं सन्तान सुख में बाधक अनिष्ट ग्रह और उनके उपाय—

20. (क) सूर्य पंचम या सप्तम भाव में नीच (तुला) राशि का होकर पड़ा हो, तथा नवांश कुण्डली में सूर्य शनि की राशि में होकर पाप पीड़ित हो, अथवा सूर्य अष्टम भाव में, शनि पंचम में तथा पंचमेश राहु से युक्त हो, अथवा गुरु सिंह राशि में हो, पंचम भाव में पाप ग्रह हों तथा पंचमेश सूर्य के साथ हो, तो पितृ श्राप/दोष के कारण विवाह एवं सन्तान सुख में कमी होती है।

(ख) सूर्य, गुरु एवं सप्तमेशया पंचमेश राहु, शनि, केतु आदि पाप ग्रहों से युक्त या आक्रान्त हों, तो भी पितृ दोष के कारण सन्तानाभाव या सुख में कमी होती है।

(ग)सप्तम/सप्तमेश एवं पंचमेश, पंचम या नवम भाव में चन्द्रमा राहु, शनि या मंगल आदि पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मातृ श्राप के कारण विवाह एवं सन्तान सुख में विलम्ब होता है।

(घ) निष्कर्षत:—विवाह या सन्तान बाधाकारक सूर्य हो, तो भगवान् शंकर और गरुड़ के क्रोध के कारण अतवा पितरों के श्राप का फल है। यदि विवाह या सन्तान में प्रतिबन्धक चन्द्रमा है, तो माता या किसी अन्य स्त्री के चित्त को दुख पहुंचाने के कारण या भगवती का शाप या (अनादर) विवाह या सन्तान सुख में बाधाकारक होता है—

द्रोहात् शंभु सुपर्णयो हि सुतः शापात् पितृणां रवेः,
इन्दोःमातृ सुवासिनी भगवती कोपात् मनोदोषतः।

यदि मंगल विवाह सुख बाधक हो, तो ग्राम देवता, भगवान् कार्तिकेय स्वामी की अवज्ञा करने से अथवा भाई बन्धुओं के श्राप से या गौओं के प्रति दुष्ट व्यवहार से वैवाहिक कष्ट होता है।

यदि बुध विवाह/संतति सुख में बाधक हो, तो बिल्ली को मारने, मछलियों या किसी अन्य प्राणियों के अण्डों को नष्ट करने या छोटे बालक, बालिका के श्राप से या भगवान विष्णु के कोप से विवाह कष्ट होता है। यदि कुण्डली में गुरु (बृहस्पति) विवाह या सन्तान सुख में बाधाकारक हो, तो यह समझना चाहिए कि जातक ने पिछले जन्म अपने कुल गुरु या कुल पुरोहित का अपमान किया है या पूर्व जन्म में फलदार वृक्षों को काटा है।

यदि जन्म कुण्डली में शुक्र के कारण सन्तान सुख में बाधा हो, तो उस व्यक्ति ने किसी फूलों वाले वृक्षों को कटवाया है, या गाय के प्रति कोई पाप किया है, अथवा किसी साध्वी स्त्री के श्राप से ऐसा हुआ है। ऐसी स्थिति में प्रायः यक्षिणी का श्राप समझना चाहिए। यदि जन्म कुण्डली में विवाह या सन्तान भाव शनि के कारण दूषित हुआ है, तो समझिए कि जातक/जातिका ने पीपल के पेड़ कटवाए हैं और यमराज, प्रेत, पिशाच पितरों आदि के श्राप से विवाह या सन्तान कष्ट हुआ है।

यदि विवाह या पंचम में राहु हो, या वह इन भावों के स्वामी को दूषित करता हो, और उसके कारण विवाह या सन्तान सुख में बाधा हो रही हो, तो सर्प के शाप का प्रभाव समझें। यदि केतु के कारण विवाह आदि सुख में कमी हो, तो उसमें हेतु ब्राह्मण का शाप समझना चाहिए। जिस ग्रह के कारण विवाह / सन्तान आदि सुख में कमी आती हो, उस ग्रह सम्बन्धी जप, दान एवं सम्बन्धित दोष का प्रतिकार करना चाहिए। जैसे सूर्य विवाह या सन्तान सुख में बाधक हो, तो अपने पित्तरों के निमित्त श्राद्ध, तर्पण, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए। अनिष्ट ग्रहों के उपायों सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से शीघ्र प्रकाशित होने वाली **"अनिष्ट ग्रह और चमत्कारी उपाय"** नामक पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

विवाह में विलम्ब निवारक विशेष उपाय

हमारे प्राचीन ज्योतिष आचार्यों ने मनुष्य जीवन में मिलने वाले कष्टों एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में अनुकूलता लाने के लिए अनेक प्रकार के उपायों को ग्रहण करने के परामर्श दिए हैं, जैसे रत्न धारण करना, श्री भगवत् स्तुति, मन्त्र-जाप, तन्त्र, यन्त्र, शुभमुहूर्त्त एवं औषधि प्रयोग, व्रतोपासना, दान, हवन-यज्ञादि अनुष्ठान, औषधि स्नान इत्यादि। स्थानाभाव के कारण यहाँ पर सभी सम्भव उपायों का वर्णन करना सम्भव नहीं, तथापि कुछेक प्रयोग देंगे। अधिक जानकारी के लिए उपायों सम्बन्धी हमारी शीघ्र प्रकाशिताधीन पुस्तक का अध्ययन करें।

प्रयोग (१) : श्री दुर्गा या गौरां के मन्दिर में अथवा अपने घर में किसी पवित्र स्थान पर माता की मूर्ति स्थापित करके उसके सम्मुख शुद्धासन पर बैठकर प्राणायाम, आचमन एवं पवित्रीकरण आदि के मन्त्र पढ़कर शुद्ध चित्त होकर एक माला अथवा कम-से-कम २१ बार निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें। पाठ करते समय पास में लाल पुष्प, देसी घी ज्योत, नारियल, प्रसाद एवं जल से भरी गड़वी पास रखनी चाहिए।

ॐ सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥१॥

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र की भी एक माला का पाठ करना चाहिए। ऐसा नियमित रूप से ३१ दिन तक करें—

मन्त्र—"हे माते ! त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती।
पतिं देहि गृहं देहि सुतान् देहि नमोऽस्तुते"॥ २॥

जप का अनुक्रम बीच में ही छोड़ नहीं देना चाहिए। यदि अस्वस्थता आदि के कारण किसी दिन पाठ न कर सकें, तो आपके स्थान पर आपकी माता, बहन आदि कोई निकटस्थ बन्धु भी कर सकता है। ३१ दिन पूर्ण हो जाने पर उद्यापन के रूप में किसी ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन, मिष्ठान्न एवं दक्षिणा सहित खिलाना चाहिए। इसी बीच गौओं को मीठी चापातियाँ, कौओं एवं कुत्तों को तैल से चुपड़ कर चापातियाँ भी डालनी चाहिएं। सब कार्य श्रद्धापूर्वक करना चाहिए। भगवती माँ की कृपा से विवाह/सन्तान आदि की कामना अवश्य पूरी होगी। यदि किसी कारणवश विलम्ब रहे, तो उपरोक्त उपाय की पुनरावृत्ति करनी चाहिए।

प्रयोग (२) : ऊपरलिखित द्वितीय (२) मन्त्र के स्थान पर निम्नलिखित प्रचलित मन्त्रों का पाठ भी किया जा सकता है—

(क) ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधीश्वरी।
नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरू ते नमः॥ (भागवत)

(ख) हे गौरि शंकर अर्धाङ्गि यथा त्वं शंकर प्रिया।
तथा मां कुरू कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥

इसके अतिरिक्त कई अन्य विशिष्ट उपाय (लड़की या लड़के के विवाह, सन्तान सम्बन्धी विलम्ब एवं विघ्नों के निवारण हेतु) हमारी उपायों सम्बन्धी शीघ्र प्रकाशनाधीन पुस्तक मँगवाकर लाभ उठाएँ।

—पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी

वास्तु दोष निवारण हेतु विशेष उपाये

यदि आपका भवन/निवास स्थान वास्तु सिद्धान्त के विपरीत हो तो कुछ निम्न दैनिक दिनचर्या में परिवर्तन कर आप शुभ फल प्राप्त तथा अनिष्ट प्रभाव से बच सकते हैं।

1. जब भी पानी पीएं अपना मुख उत्तर-पूर्व की ओर रखें।
2. जब भी भोजन ग्रहण करें थाली दक्षिण-पूर्व की ओर रखें और पूर्वाभिमुख होकर भोजन करें।
3. जब भी सोएं दक्षिण-पश्चिम कोण में दक्षिण की ओर सिरहाना करके सोने से नींद गहरी और अच्छी आती है।
4. जब भी पूजा करें तो मुख उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर करके बैठें।
5. सम्यक उन्नति हेतु लक्ष्मी, गणेश, कुबेर, स्वास्तिक, ॐ, मीन, एवं आदि मांगलिक चिह्न मुख्यद्वार के ऊपर स्थापित करें।
6. यदि घर में कोई पूजा-स्थल नहीं है तो उस उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण में रखें।
7. दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम कोण में कुआं या ट्यूबवैल है तो उसे भरवाकर उत्तर-पूर्व कोण में ट्यूबवैल या कुआँ खुदवाएँ। अन्य दिशा में कुएँ को भरवा न सकें तो उसे प्रयोग में लाना बन्द कर दें अथवा उत्तर-पूर्व में एक ओर ट्यूबवैल या कुआँ लगवाएँ जिससे वास्तु का सन्तुलन हो सके।
8. दक्षिण-पश्चिम दिशा में अधिक दरवाजे और खिड़कियां हों तो उन्हें बन्द करके उनकी संख्या कम कर दें।
9. रसोईघर गलत स्थान पर हो तो अग्निकोण में एक बल्ब लगा दें और सुबह-शाम उसे अनिवार्य रूप में जलायें।
10. बीम के दोष को शान्त करने के लिए बीम को सीलिंग टॉयल्स से ढंक देवें। बीम के दोनों और बाँस की बाँसुरी लगायें।
11. दुकान की शुभता बढ़ाने के लिए प्रवेश द्वार के दोनों ओर गणपति की मूर्ति या स्टिकर लगायें। एक गणपति की दृष्टि दुकान पर पड़ेगी, दूसरे गणपति की बाहर की ओर।
12. द्वार दोष और वेध दोष को दूर करने के लिए शंख, सीप, समुद्र झाग, कौड़ी, ताम्बे या सोने की तुश लाल कपड़े में या मोली में दरवाजे पर लटकायें।
13. यदि दुकान में चोरी होती हो या अग्नि लगती हो तो भौम यन्त्र की स्थापना करें। यह यन्त्र पूर्वोत्तर कोण या पूर्व दिशा में, फर्श के नीचे दो फीट गहरा गड्ढा खोदकर स्थापित किया जाता है।
14. घर के सभी प्रकार के वास्तु दोष दूर करने के लिए मुख्य द्वार पर एक ओर केले का वृक्ष, दूसरी ओर तुलसी का पौधा गमले में लगायें।
15. यदि प्लाट खरीदे हुए बहुत समय हो गया हो और मकान बनने का योग न आ रहा हो तो उस प्लाट में अनार का पौधा पुष्य नक्षत्र में लगायें।
16. घर के दरवाजे पर घुड़नाल (लोहे की) लगायें। यह अपने आप गिरि होनी चाहिए।
17. अगर आपका घर चारों और बड़े मकानों से घिरा हो तो उनके बीच बाँस का लम्बा फ्लेग लगायें या कोई बहुत ऊँचा बढ़ने वाला पेड़ लगायें।
18. फैक्ट्री-कारखाने के उद्घाटन के समय चाँदी का सर्प पूर्व दिशा में जमीन में स्थापित करें।
19. घर में अखण्ड रूप से श्री रामचरितमानसके नौ पाठ करने से वास्तुजनित दोष दूर हो जाता है।
20. घर में नौ दिन तक अखण्ड भगवन्नाम-कीर्तन करने से वास्तुजनित दोष का निवारण हो जाता है।
21. मुख्य द्वार के ऊपर सिन्दूर से स्वस्तिक का चिह्न बनायें। यह चिह्न नौ अंगुल लम्बा तथा नौ अंगुल चौड़ा होना चाहिए। घर में जहाँ-जहाँ वास्तु दोष हो, वहाँ-वहाँ यह चिह्न बनाया जा सकता है।

इन नियमों को व्यवहार में लाकर सुख-समृद्धि को अपनी अंगशयनी बनाएं।

—वास्तुदोष शान्ति के लिए उपयोगी मंत्र—

ॐ नमस्तेवास्तु देवेश सर्वदोष हर भव सुखं देहि, शान्ति देहि, सर्वकामान् प्रयच्छ मे।
ॐ वास्तु पुरुषाय नमः॥

कार्तिक शान्ति हेतु एक विशेष प्रयोग

कार्तिक प्रसूताजन्य दोष की शान्ति के लिए प्राचीन कर्मकाण्डी ब्राह्मणों द्वारा एक अन्य विशेष प्रभावी प्रयोग का प्रचलन मिलता है—इसके अनुसार कार्तिक मास में सम्भावित बच्चे को जन्म देने वाली माता के अभिषेक के लिए आश्विन मास में ही (विशेषकर आश्विन शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से त्रयोदशी तक) ताम्र या मिट्टी के घड़े में स्वच्छ जल आपूरित करके उसमें देवदारू, इलायची, केशर, खश, रक्तपुष्प, रक्तचंदन, कनेर पुष्प, कुशा, गंगाजल आदि डालकर ऊपर महीन लालवस्त्र मौली से बाँध दें। दिन के समय धूप में उस घड़े को रख दिया करें। तदनन्तर कार्तिक मास में जन्म होने के पश्चात् स्त्री द्वारा (लगभग 11 दिन बाद) शुद्ध स्नान करने के पश्चात् घड़े के जल को अतिरिक्त स्वच्छ जल में मिलाकर अभिषेक मन्त्रों द्वारा स्नान करने से कार्तिक मास जन्य प्रसूतास्त्री तथा बालक के अरिष्ट की शान्ति होती है। इसके अभिषेक के पश्चात् भी ब्राह्मण को भोजन, वस्त्र,फलादि का दान करना चाहिए। अभिषेक के पश्चात् मिट्टी के घड़े को चलते पानी में बहा देना चाहिए। यदि ताम्र का घड़ा हो, तो ब्राह्मण को दान कर देना चाहिए।

यदि कार्तिक मास रहते ही कार्तिक-प्रसूता स्त्री एवं शिशु की शान्ति (किसी कारणवश) न करवाई जा सकी हो, तो फिर **बालक के प्रथम, द्वितीय** आदि जन्मदिन पर कार्तिक शान्तिः करवाने का विधान है। जन्मदिन से पूर्व प्रत्येक संक्रान्ति को बालक एवं उसकी माता को धर्म स्थान में ताम्र पात्र सहित कनक या दलिया, लाल-वस्त्र, गुड़, लाल फलादि का दान संकल्पपूर्वक करना चाहिए तथा प्रतिदिन सूर्यदेव को मंत्रपूर्वक अर्घ्य व सूर्य गायत्री, शिव सहस्रणाम एवं महामृत्युंजय आदि मन्त्रों का जाप करते रहना चाहिए।

कार्तिक प्रसूता-शान्ति वास्तव में भगवान् सूर्य की पूजा के माध्यम से कार्तिक मास में शान्ति कर्म करना अभीष्ट होता है। कार्तिक मास में जन्म होने पर यदि उसी मास के भीतर शान्ति कार्य न हो सकता हो, तो कार्तिक मास के बचे शेष दिनों में आदित्य हृदय स्तोत्र, सूर्याष्टक, सूर्यकवच, सूर्यगायत्री, सूर्य चालीसा, महामृत्युञ्जय मंत्र का पाठ एवं नित्य प्रति सूर्यार्घ्य, सूर्य के द्वादश नमस्कार नाम आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ एवं दानादि करना आरोग्यवर्द्धक एवं कल्याणकारी होता है। इसके अतिरिक्त आगामी जन्म मास एवं जन्मदिन पर कार्तिक महात्म्य का पाठ एवं बालक का अनाज द्वारा तुलादान (संकल्पपूर्वक) करवाकर ब्राह्मण भोजन के बाद वस्त्र, फल, मिष्ठान्न एवं दक्षिणा सहित दान करवाना कल्याणप्रद होता है। सूर्य सम्बन्धी और अधिक विस्तृत उपायों एवं जानकारी के लिए हमारी शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक ''अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय'' का अध्ययन करें।

व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयरों में मन्दा-तेजी-सन् 2010 ई०

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव—व्यापारिक वस्तुओं अथवा जिन्सों के दैनिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। संसार के सभी पदार्थों पर प्रभाव रखने वाले ग्रह होते हैं तथा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियां होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि-भोग करता है, तो उसकी हर गति का प्रभाव हर वस्तु पर पड़ता है, क्योंकि उस समय वे पदार्थ उस ग्रह के प्रभाव में रहते हैं और वस्तु के मूल्यों में जो परिवर्तन (घटाबढ़ी) होता है, उसे हम तेज़ी-मन्दी कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाज़िर एवं वायदा बाज़ार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विंशोंतरी ग्रह दशा तथा आथिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म / वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रहदशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रह दशा अकस्मात् धन हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी कि हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गत वर्षों सन् 2007, 2008, 2009 ई. में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रह स्थिति एवं तेजी-मन्दी के चांसों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, कॉपर, तेल, लोहे, स्टील चने तथा शेयरों से सम्बन्धित अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए।

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक मन्दा-तेज़ी की विशेष लाइनों एवं तूफ़ानी तेज़ी आदि का विवरण लिख रहे हैं। यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स (वस्तु) की दैनिक तेज़ी-मन्दी रिपोर्ट या वायदा हाज़िर बाज़ार का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 601 रु०, 2 मास की फीस 1100 रु० होगी। पूरी फीस अग्रिम भेजें। रिपोर्ट लिखित रूप में रजिस्ट्री या कोरियर के माध्यम से भेज दी जाएगी। D.D. (ड्राफ्ट) या चैक या मनीआर्डर इस पते पर भेजें—

—पं० विवेक शर्मा C/o पं० देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर—144008 (पंजाब), फोन 0181-2457959

● **जनवरी**—मासारम्भ के प्रथम सप्ताह लगभग सभी व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी के मध्य मन्दी का वातावरण रहेगा। चाँदी, रूई, चीनी, कपास, शक्कर में तेजी रहेगी। 5 जन. को गुरु धनि. (4) में आने से गेहूँ, चावल, जौं, चना में पहले मन्दी परन्तु अगले दिन तेज़ी बनेगी। रूई, चांदी में अच्छी घटाबढ़ी रहेगी।

10 जन. को वक्री बुध पूर्व से उदय होगा तथा बुध ही मूल नक्षत्र में आने से सोना, चांदी, गेहूँ में मन्दी बनेगी। जौं, चना, लाल मिर्च, घी, अलसी, बिनौला, उड़द, तिल, चीनी, सरसों, गुड़, शक्कर में अच्छी तेज़ी बनेगी। रूई में पहले मन्दी, फिर बाद अचानक अच्छी तेज़ी की लाईन बनेगी।

11 जन. को सूर्य तथा शुक्र उ.षा. में आने से सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड में मन्दी बनेगी, उड़द, मूँग, चावल, चना, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, पिप्पलामूल, चमड़ा, सरसों, पटसन में तेजी बनेगी।

13 जन. को शुक्र मकर राशि में प्रवेश कर मंगल के साथ समसप्तक योग बनाएगा। इसी दिन कन्या राशिस्थ शनि वक्री भी हो रहा है। मंगल पहले से वक्री चल रहा है। शेयर, गुड़, खाण्ड, घी, अफीम, गेहूँ, चना, चावल आदि सब अनाजों में तेज़ी बनेगी। रूई, चांदी, सोना में पहले घटाबढ़ी, फिर बाद में अच्छी तेज़ी बनेगी। अलसी, सरसों, तांबा, तिलहन, क्रूड-आयल में भी अच्छी तेज़ी बनेगी। तेल, प्रापर्टी शेयर्ज़ में तेजी की लाईन चलेगी।

14 जन. को सूर्य मकर राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि है। तिल, सरसों, गुड़, घी, तेल, अलसी, शक्कर, खाण्ड, रूई, सोना, चांदी, कॉपर, जिस्त में अच्छी तेज़ी बनेगी। गेहूँ, चावल आदि अनाज व बारदाना में भी मामूली मन्दी बनकर तेजी का रुख बनेगा।

15 जन. को खण्डग्रास सूर्यग्रहण घटित हो रहा है। इसी दिन रात्रि को बुध मार्गी होगा। रूई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। गेहूँ, जौं, चना, अनाज में भी तेजी बने। गुड़, तेल, अलसी, बिनौला, मूँगफली, कपूर में मामूली मन्दी बन सकती है।

16 जन., शनिवार को चन्द्रदर्शन होने से सोना, चाँदी, रूई, सूत, सरसों, मूँगफली में तेज़ी रहेगी। (19) जन. को राहु पू.षा. (4), केतु पुर्न (2) में आने से चना, सरसों, तेल, बिनौला, नारियल आदि में तेजी का व्यापार कर लाभ लें।

21 जन. को बुध पू.षा. में, गुरु शतभिषा में तथा शुक्र श्रवण में आने से सोना, चांदी, गुड़, खांड, शक्कर, मूँग, मोठ, उड़द, अनाज, सुपारी, केसर, हल्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, तिल, तेल, सरसों में तेजी, रुई में पहले मन्दी होकर फिर तेजी बनेगी। सोना, चांदी, कापर में अचानक तेजी का रुख बनेगा।

24 जन. को सूर्य श्रवण में आएगा. शुक्र भी श्रवण नक्षत्र में चल रहा है जिससे गेहूँ, जौं, चावल, रूई, सूत, सन, सोना, चांदी, गुड़, खांड, अलसी, सुपारी, लौंग, पीतल, साफ्टवेयर शेयर्ज़ में तेज़ी बनेगी।

27 जन. को वक्री मंगल पुष्य में तथा यूरेनस मीन राशि में आएगा। गुड़, चांदी, रूई, सोना, कॉपर, शक्कर में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी की लाईन बनेगी।

शेयर बाज़ार—ता. 6,10,11,13,14,15,16,24,25,27 विशेष तेजीकारक रहेंगी।

● **फरवरी**—1 फर. को शुक्र धनिष्ठा में आने से चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चाँदी, सोना, रूई, कपास में अच्छी तेज़ी बने, गेहूँ में मन्दी बनेगी।

3 फर. को बुध उ.षा. में आने से चावल, गेहूँ, चना आदि अनाजों में मन्दी का रुख रहेगा।

4 फर. को गुरु शतभिषा के दूसरे चरण में आकर गेहूँ, चावल आदि अनाज, हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ, सोना में मन्दी करेगा।

5 फर. को बुध मकर राशि में आकर सूर्य व शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि है। सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातुओं तथा चना, मूंग, चावल आदि सब प्रकार के अनाजों में तेजी करेगा।

6 फर. को सूर्य धनिष्ठा तथा शुक्र कुम्भ राशि में आएगा। सोना, चांदी, मोती, कॉपर, मणि आदि जवाहरात, मूँग, मसूर, गेहूँ, चावल आदि अनाजों व अलसी, रूई में तेजी बनेगी।

8 फर. को शुक्र पश्चिम में उदय होने से घी, खाण्ड, चना में मन्दी, रूई, सूत, सन, सोना, चांदी एवं चावल में तेजी रहे।

9 फर. को वक्री शनि उ.फा. (4) में आने से कपास, सूत, सन, लोहा-सोना, चांदी, तांबा, क्रूड आयल में तेजी बनेगी।

11 फर. को शुक्र शतभिषा में आने से गेहूँ, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रूई, सोना, चांदी में तेजी बनेगी।

12 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में आकर गुरू एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। वायदा एवं हाजिर बाज़ार में अच्छी उथल-पुथल होगी। घी, तेल, लवण, सरसों, मूँगफली, राई, सोना, चांदी, क्रूड-आयल में अच्छी तेज़ी तथा रूई, पाट, अलसी, एरण्ड, गेहूँ आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड में साधारण तेज़ी बनेगी।

13 फर. को बुध श्रवण में आने से गुड़, खांड, अलसी, चना, चावल में तेज़ी बनेगी। (15) फर. सोमवार को चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत, सोना, तांबा में तेजी, चांदी, अनाज में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने।

16 फर. को गुरु पश्चिम में अस्त होने से रूई व शेयर बाज़ार में तेजी बनेगी। सोना-चांदी, कॉपर, चना, चावल आदि अनाजों में भी अच्छी तेज़ी बनेगी।

18 फर. को गुरु शतभिषा के तृतीय चरण में आने से गेहूँ, चावल आदि अनाज, हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ व सोने में मन्दी का रुख रहेगा। (19) फर. को सूर्य शतभिषा में आने से सोना, चांदी, सूत, सन, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूँ, गुड़ आदि में तेजी बनेगी।

21 फर. को बुध धनिष्ठा में आने से चावल, अनाज में तेजी, सोना, चांदी में मन्दी, रूई में घटाबढ़ी रहेगी।

22 फर. को शुक्र पू.भा. में आने से रूई में तेज़ी, सोना, चांदी, चावल में मन्दी बनेगी।

25 फर. को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य, गुरु, शुक्र के साथ मेल करेगा। इन चारों पर मंगल की अष्टम दृष्टि पड़ रही है। रूई, चांदी, अलसी, शेयरों में पहले मामूली मन्दी बनकर फिर तेजी का रुख बने, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, सरसों, बैंकिंग शेयर्ज, मूँग, ज्वार, चावल आदि अनाजों में तेजी बने।

26 फर. को बुध पूर्व में अस्त होने से घी, गेहूं, चावल आदि में मन्दी, रूई, सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

[**शेयर बाज़ार**—ता. 5, 6, 12, 13, 25, 26, 27, 28 विशेष तेज़ीकारक रहेगी।]

● **मार्च**—1 मार्च को बुध शतभिषा में आकर गुरु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चांदी, चावल, दालवाना, गेहूँ में घटाबढ़ी के बाद मामूली मन्दी बनेगी।

2 मार्च को शुक्र मीन राशि में प्रवेश करने से शुक्र-शनि के मध्य समसप्तक योग बनेगा। चांदी, रुई, अलसी, अनाज, सरसों, तेल, तिलहन, अरण्डी, गुड़, खाण्ड, सोने में मन्दी की जगह अच्छी तेजी का चांस बनेगा।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. में तथा गुरु शतभिषा (4) में आने से सोना, चाँदी, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, हल्दी, सुपारी, केसर, तांबा, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, रुई में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी का रुख बनेगा।

5 मार्च को शुक्र उ.भा. में आने से चावल, मोती, चांदी, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मामूली मन्दी बनेगी। (9) मार्च को भी बुध पू.भा. में आने से सोना, चांदी, तांबा, लोहा तथा अनाज में मन्दी और रूई में घटाबढ़ी होगी।

10 मार्च को नीचराशिगत मंगल मार्गी होने से रूई में मन्दी, तेल, पीपल, चांदी गुड़, सोने में अच्छी तेजी बनेगी।

14 मार्च को सूर्य एवं बुध मीन राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेंगे। इन पर मंगल की दृष्टि हटकर शनि की दृष्टि में आ जाएंगे। तिल, तेल, सरसों, अलसी, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रूई, सोने, चांदी में तेजी बनेगी। गेहूँ, चना आदि में मामूली मन्दी बने। तांबा, क्रूड-आयल के भावों में भी विशेष परिवर्तन होंगे।

15 मार्च को सोमवती अमावस चांदी, सोना, रूई में कुछ मन्दी लाएगी। जबकि 16 मार्च से पुनः मुख्य धातुओं एवं अनाजों में तेजी का रूख बनेगा।

18 मार्च को सूर्य उ.भा. और गुरु पू.भा. (1) में आने से चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, तेल, अनाज, सोना, चांदी में तेजी बनेगी।

20 मार्च को गुरु पूर्व से उदय होने से चांदी, रूई, अनाज, चने में तेजी, सोने में मामूली मन्दी बने।

22 मार्च को बुध रेवती में आने से केसर, मजीठ, लाल चन्दन, गेहूँ, गुड़, लाल-मिर्च आदि लाल वस्तुओं में विशेष तेजी जबकि सरसों, घी, तेल, शेयरों में साधारण तेज़ी बनेगी।

23 मार्च को राहु पू.षा. (3), केतु पुर्न (1) में आने से सोना, चांदी, लोहा, स्क्रैप, कॉपर, रूई, कपास खाण्ड, चावल में तेजी बनेगी।

26 मार्च को शुक्र अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में प्रवेश करेगा। जौं, चना, गेहूँ आदि अनाज, घी, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। ऊन, तिल, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी में कुछ मन्दी बनेगी। 27 मार्च को बुध पश्चिम से उदय होने से रूई में पहले मन्दी बनकर तेजी बने, तेल, तिलहन, चांदी, कॉपर में भी घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बनेगी।

29 मार्च को बुध मेष राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। वक्री शनि उफा. (3) में आएगा। मूँग, मोती, जवाहारात, सोना, चांदी आदि धातु, गेहूँ, चना, जौं, आदि अनाज, तिल, तेल, सरसों, रूई, कपास, घी, गुड़ खण्ड में मन्दी का योग होने पर भी हमारे विचार से तेज़ी बनेगी। ताज़ा मशवरा प्राप्त करना ठीक रहेगा।

31 मार्च को सूर्य रेवती में आने से अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, रूई, गेहूँ, जौं, चना, चावल में तेजी बनेगी।

शेयर बाज़ार—ता. 2, 3, 14, 20, 21, 22, 27, 28, 31 को तेज़ी बनेगी।

● **अप्रैल**—1 अप्रै. को गुरु पू.भा.(2) में आने से अनाज, सोना, चांदी, सन, वस्त्र, सूत में तेजी और रूई में मन्दी बनेगी।

6 अप्रै. को शुक्र भरणी में आने से सोना, चांदी, अफीम, लाल रंग की वस्तुओं, सरसों, तिल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में मन्दी, चना, मूँग, मोठ, ज्वार, तूअर में घटाबढ़ी तथा रूई में तेजी बनेगी।

8 अप्रै. को बुध भरणी में आने से चावल, गेहूँ आदि अनाजों, चने, खाण्ड में तेज़ी बनेगी।

9 अप्रै. से 13 अप्रै. के मध्य व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी के मध्य मुख्यत: तेजी को ही लाईन रहेगी।

14 अप्रैल को सूर्य मेष राशि में बुध एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। (इसी दिन हरिद्वार में कुम्भ महापर्व का भी आयोजन होगा।) रूई, घी, तेल, तिल, सरसों, कपास, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी, कॉपर में तेज़ी बने। गेहूँ, चावल, उड़द, मूँग, अरहर, चना, जौं, मटर, में मन्दी बने।

15 अप्रैल गुरुवारको चन्द्रदर्शन तथा वैशाख अधिक मास प्रारम्भ होगा। रुई, सूत, सरसों, तेल, घी में तेज़ी, जबकि सोना, चांदी, कॉपर, गुड़ में मन्दी बनेगी।

16 अप्रै. को गुरु पू.भा. (3) में आने से सोना, चांदी, चावल, गेहूँ आदि अनाज, सन, वस्त्र, सूत, खाण्ड में तेज़ी और रूई में मन्दी बनेगी।

17 अप्रैल को शुक्र कृतिका में आने से जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रूई, सूत, सोना, चांदी, हीरा, कॉपर, जिस्त आदि में मन्दी बनेगी।

18 अप्रैल को बुध वक्री होने से नारियल, सुपारी, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, बैंकिंग शेयर्ज में अच्छी तेजी बनेगी।

20 अप्रैल को शुक्र वृष राशि में आएगा। इसी दिन वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा। सोना, चांदी, रूई, कपास, शेयरों में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी बनेगी।

26 अप्रैल को मंगल आश्लेषा में आने से चांदी, रूई, गुड़ मन्दी बनेगी। 27 अप्रैल को सूर्य भरणी में आने से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जिस्त आदि धातु तथा गेहूँ, जौं, चना, चावल, मोठ, अलसी, रूई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी बनेगी।

28 अप्रैल को शुक्र रोहिणी में आने से सोना, चांदी, कॉपर आदि धातु तथा अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी बनेगी।

30 अप्रैल को वक्री बुध अश्विन(4) में आने से गेहूँ, ज्वार, चावल, जौं, बाजरा, चना आदि अनाज, अलसी, मूँग, मोठ, में तेजी जबकि घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल, चाँदी में मन्दी बनेगी।

शेयर बाज़ार—ता. 5. 6, 13, 14, 15, 20, 21, 22 अप्रै. को अच्छी तेज़ी बनेगी।

● **मई**—ता. 2 को गुरु मीन राशि में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। रूई, घी, तिल, तेल, सरसों में पहले अच्छी मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी। गेहूँ, गुड़, शक्कर, खाण्ड, उड़द, मोठ, सुपारी, सोना, कॉपर, नारियल, हाथी दाँत, कपूर, नमक में भी तेजी बनेगी।

6 मई को वक्री बुध पूर्व से उदय होने से गेहूँ, चना, चावल, तिलहन, घी, खाद्य-तेल, रूई, कपास, खल-बिनौला, चांदी तथा शेयरों में तेजी बने।

9 मई को शुक्र मृगशिर में आने से गेहूँ, चना, ज्वार में मन्दी तथा गुड़, खाण्ड, शक्कर, अरहर में तेजी बनेगी।

11 मई को सूर्य कृतिका में आने तथा बुध मार्गी होने से घी, रूई, सोना, चांदी, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई में तेज़ी, सरसों, अलसी, एरण्डी में मन्दी बनेगी।

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में तेजी बने। जौं, चना, गेहूँ, मटर, अरहर, मूंग, चावल में कुछ मन्दी बनेगी।

15 मई को शुक्र मिथुन राशि में आकर केतु के साथ योग करेगा। इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। रूई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार आदि में **अच्छी मन्दी** और अलसी गुड़, घी में अच्छी घटाबढ़ी होगी। गेहूँ, चना, जौं, चावलों में तेज़ी बनेगी।

20 मई को शुक्र आर्द्रा में आने से गेहूँ, चना, अरहर में अचानक मन्दी का वातावरण बनेगा।

23 मई को बुध भरणी में आने से गेहूँ, चावल, आदि अनाजों, चना, गुड़, अरहर, तांबे में 8 दिन में तेज़ी बनेगी।

24 मई को राहु पूषा. (2) तथा केतु आर्द्रा (4) में आने से तिलहन, सरसों में अच्छी तेजी बनेगी।

25 मई को सूर्य रोहिणी में आने से घी, रूई, सोना, तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, सुपारी, मिर्च, राई में तेजी का रुख बनेगा। चांदी में पहले मन्दी बाद में मामूली सुधार होगा।

26 मई को मंगल सिंह राशि में प्रवेश कर गुरु पर दृष्टिपात करेगा। सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि धातु, गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूँ, अलसी, रूई, लाल मिर्च, हल्दी, घी में तेज़ी बनेगी।

30 मई को शनि मार्गी होगा। अचानक बाज़ारों का रुख बदल सकता है। रुई में मन्दी बनकर बाद में साधारण तेजी बने। सोना, चांदी, तांबा, तिल, तेल, सरसों, हींग, काली मिर्च, सोयाबीन में तेजी, शेयर बाज़ार में झटके की तेज़ी बनेगी। सावधानीपूर्वक आगे बढ़ें।

31 मई को शुक्र पुर्न. में आनें से गेहूँ, चावल आदि अनाज, बिनौला तेज़, सोना, चांदी, रूई, कपास, सूत में मन्दी बनेगी।

शेयर बाजार—मई मास की ता. 2, 3, 6, 7, 11, 12, 14, 15, 26, 27, 30 अच्छी तेज़ी बनेगी।

● **जून**—4 जून को बुध कृतिका में आने से चाँदी, घी, खाण्ड में विशेष घटाबढ़ी होकर मामूली मन्दी बनेगी। अनाज, गेहूँ, चावलादि तथा रूई में पहले तेज़ी फिर मन्दी बने।

6 जून को बुध वृष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। शेयरों तथा लगभग सभी करियाना वस्तुओं में घटाबढ़ी रहेगी। गेहूँ, जौं, चना, चावल, रूई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी बनेगी।

8 जून को सूर्य मृगशिर में आने से रूई, सूत, रेशम, सन्, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चाँदी, उड़द, मूँग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी नारियल में तेजी बनेगी।

9 जून को शुक्र कर्क राशि में आएगा। कर्क राशि पर गुरु की उच्च दृष्टि पड़ रही है। रुई में विशेष घटाबढ़ी रहेगी। अलसी, एरण्डी, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी तथा चांदी, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर में मन्दी बने। (11) जून को गुरु उ.भा. (2) में आने से चांदी, चना में मन्दी, सोना, रूई, गेहूँ, गुड़ में तेज़ी बने।

12 जून को बुध रोहिणी में तथा शुक्र पुष्य में आएगा। इसी दिन शनिवारी अमावस भी है। रूई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खांड में तेजी बनेगी। राई, तुअर, सन, ऊनी वस्त्र, रूई, चमड़ा, कपूर, पारा, हींग, शक्कर में मन्दी बने।

13 जून, रविवार को चन्द्रदर्शन होने से गुड़, तेल, सोना-चाँदी, अरहर में तेज़ी तथा रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

15 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चना, चावल आदि अनाज, सोना, चांदी में तेजी बनेगी।

17 जून को बुध पूर्व में अस्त होने से घी, अनाज में थोड़ा मन्दा, रूई, सोना, चांदी, तांबे में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी।

19 जून को बुध मृगशिर में आने से रूई, खाण्ड में तेज़ी, चाँदी, गेहूँ, तिल, सरसों, उड़द में मन्दी बनेगी।

20 जून को मंगल पू.फा. में आने से तिल, तेल, सरसों, मूँगफली, घी, गुड़, खांड, नमक में तेज़ी बनेगी।

22 जून को सूर्य आर्द्रा में तथा बुध मिथुन राशि में आकर सूर्य, केतु के साथ मेल करेगा तथा इन पर शनि की दृष्टि भी चल रही है। रूई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौं, चांदी में तेज़ी बनेगी। सोने, कॉपर, शेयर-बाज़ार में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

23 जून को शुक्र आश्लेषा में आएगा। (9) जून से चांदी, चावल, रूई, तूअर, ग्वार में जो लाईन बनी होगी लगभग वही लाईन रहेगी।

25 जून को बुध आर्द्रा में आकर सूर्य, केतु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। हमारे विचार से गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, दालें, खाण्ड में मन्दी के स्थान पर तेजी का रुख बनेगा।

यह तेजी मासान्त तक चल सकती है।

शेयर बाज़ार—ता. 6, 7, 8, 9, 15, 21, 22, 23 जून को शेयर-बाज़ार में तेजी रहेगी।

● **जुलाई**—मासारम्भ ता. 1 को बुध पुनर्वसु में आने से 8 दिन में चाँदी, रूई, कपास, सूत, सन, में मन्दी का रुख बनेगा।

परन्तु 5 जुला. को शुक्र सिंह राशि में आकर मंगल के साथ योग करेगा। गेहूँ, चावल आदि अनाज, सोना, ताँबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च अन्य लाल रंग की वस्तुएँ, घी में तेज़ी बनेगी। चांदी में तेज़ी बनेगी।

6 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु में आने से रूई, सोना, चांदी, गुड़, खांड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, उड़द, चावल, नारियल, केसर में तेजी बनेगी। परन्तु इसी दिन बुध कर्क राशि में आकर गुरु की दृष्टि में आएगा। इसलिए हमारे विचार से अचानक इन जिन्सों में घटाबढ़ी के बाद मन्दी का रुख भी बना सकता है। सावधानीपूर्वक चलें। ताज़ा मशवरा प्राप्त करें।

8 जुला. को भी बुध पुष्य में आने से सोना, चाँदी, कॉपर, रूई, मूँग, दालादि में घटाबढ़ी होकर मामूली मन्दी बने।

10 जुला. को बुध पश्चिम से उदय होगा। बुध पर गुरु की दृष्टि चल रही है। रूई, चने, चांदी, चावल आदि में तेज़ी के स्थान पर मन्दी का रुख बनेगा।

13 जुलाई, मंगलवार को चन्द्रदर्शन होने से रूई, सोना, चांदी, गुड़, सरसों, मूँगफली में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

14 जुलाई को मंगल उ.फा. में आने से गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, सोयाबीन में तेजी बनेगी।

15 जुलाई को बुध आश्लेषा में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूँगफली में तेजी बनेगी।

16 जुला. को सूर्य कर्क राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की उच्च दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप रूई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चाँदी, सोना आदि में तेज़ी का योग होने पर भी तेजी न बन पाए। तथा बाज़ार थोड़ा तेज़ होने के बाद मन्दी की तरफ बढ़ेंगे। गेहूँ, जौं, चना, अरहर, उड़द, मूँग, चावल में भी मन्दी बने।

17 जुला. को शुक्र पू.फा. में आने से गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूँग, चना में कुछ मन्दी बनेगी।

20 जुला. को सूर्य पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करेगा। मंगल कन्या राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की सप्तम दृष्टि रहेगी। रूई, चाँदी, सोना, अलसी, गेहूँ, लाल रंग की अन्य वस्तुओं, तिल, तेल, सरसों, खाण्ड, चावल, हींग, हल्दी, लाख, ग्वार, मोम में तेजी बनेगी।

23 जुला. को बुध सिंह राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इसी दिन गुरु वक्री भी होगा। सोना, चाँदी, सूत, रूई, सरसों, कपास, बैकिंग शेयर्ज़, I.T. सेक्टर में विशेष तेजी का चांस बनेगा। कपूर, गुड़, खाण्डस शक्कर, घी, तेल, नमक में मन्दी के स्थान पर तेजी का जोर रहेगा।

26 जुला. को राहु पू.षा.(1) तथा केतु आर्द्रा(3) में आने से तिलहन, दालें, अरहर आदि, फल, सरसों आदि में तेजी बनेगी।

29 जुला. को शुक्र उ.फा. में तथा शनि उ.फा.(4) में आने से गेहूँ, चना, चावल आदि अनाजों में तेजी, सोना, चांदी में घटाबढ़ी रहेगी।

शेयर-बाज़ार—ता. 5, 6, 14, 16, 20, 21, 23, 24, 30 जुला. को अच्छी तेज़ी बनेगी।

● **अगस्त**—**ता. 1 अग. को शुक्र कन्या राशि में आकर मंगल एवं शनि के साथ मेल करेगा। जिससे बाज़ार में अचानक तूफानी तेज़ी बनेगी। परन्तु गुरु की दृष्टि के कारण अचानक मन्दी की तरफ भी बढ़ेगे। इसलिए तुरन्त सौदे कर पीछे हट जाएं। गेहूँ, चावलादि अनाज, गुड़, खाण्ड, ऊनी-रेशमी वस्त्रों, चांदी, घी, रूई, तेल, साफ्टवेयर तथा आई टी सेक्टर, तेल से सम्बन्धित शेयरों में भी विशेष तेज़ी बनेगी।**

2 अगस्त को ही बुध पू.फा. में आने से 10 दिन में गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चावल आदि अनाज मन्दे होंगे।

3 अग. को सूर्य आश्लेषा में आने से सोना, चांदी, कॉपर, रूई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च मजीठ में तेज़ी बनेगी।

5 अग. को मंगल हस्त में आने से घी, गुड़ खांड, नमक, गेहूँ, तेल, हल्दी, लाल मिर्च में तेजी बनेगी।

9 अग. को सोमवती अमावस बाज़ारों में कुछ मन्दीकारक रहेगी।

11 अग., बुधवार को चन्द्रदर्शन होने से सोना, चाँदी, रूई, सूत, सन, बारदाना, जूट आदि गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी बने। इसी दिन शुक्र हस्त में आने से सोना, तांबा, जिस्त में घटाबढ़ी चलेगी।

16 अग. को सूर्य सिंह राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। सोना, चांदी, कॉपर, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों तथा लाल रंग की वस्तुएं तेज होंगी। शेयरों तथा अनाजों में कुछ मन्दी बने।

20 अग. को सिंहराशिगत बुध वक्री होगा, सूर्य भी सिंह राशिगत है। घी, गुड़, शक्कर, गेहूँ, जौं, चना आदि बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी बने।

24 अग. को शुक्र चित्रा में आने से सोना, चांदी तथा गेहूँ, चावल आदि अनाजों के भाव सम रहेंगे।

26 अग. को मंगल भी चित्रा में आकर शुक्र के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। जिससे सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, गेहूँ, गुड़ में तेजी बनेगी।

27 अग. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चाँदी, घी में अच्छी तेज़ी, रूई, शेयर-बाज़ार में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी, अलसी, चने, बिनौले भी तेज होंगे।

30 अग. को सूर्य पू.फा में आने से जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, रूई, सूत में तेजी तथा चांदी में घटाबढ़ी रहे।

31 अग. को शनि हस्त नक्षत्र में आने से सरसों, सोयाबीन, खाण्ड, गुड़, क्रूड-आयल में तेज़ी बने। सोने में भी आगे जाकर तेजी बनेगी।

शेयर-बाजार—ता. 1. 2, 3, 5, 20, 21, 27, 30 अग. को अच्छी तेज़ी बनेगी।

● **सितम्बर**—मासारम्भ ता. 1 सितं. को शुक्र तुला राशि में प्रवेश करेगा। रूई, चाँदी, अफीम में घटाबढ़ी के बाद मामूली मन्दी, सोने, गुड़, कॉपर, खाण्ड, चने में कुछ तेजी का वातावरण बनेगा।

4 सितं. को वक्री गुरु उ.भा.(1) में आने से चांदी में पुनः मन्दी तथा सोना, कॉपर, रूई, गेहूँ, चावल आदि अनाजों में तेजी बनेगी।

5 सितं. को मंगल तुला राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। रूई, कपास, सूत, सन, पाट, बारदाना, मूँगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूँ तथा उड़द, मूँग आदि अनाजों में तेजी बनेगी।

7 सितं. को वक्री बुध मघा(4) में आने से गेहूँ, चना, जौं, सूत, रूई, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी बनेगी।

9 सितं. को शुक्र स्वाती में आने से गुड़, खाण्ड, शक्कर, चना क्रूड-आयल में तेजी, अनाज के भावों में मन्दी बनेगी।

10 सितं., शुक्रवार को चन्द्रदर्शन होने तथा वक्री बुध पूर्व से उदय होने से गेहूँ, चना, चावल, तिलहन, घी, खाद्य-तेल, रुई, कपास, खल-बिनौला, सोना-चाँदी तथा शेयरों में तेजी बनेगी।

12 सितं. को बुध मार्गी होने से रूई, शेयरों, चाँदी में पहले घटाबढ़ी या मन्दी बनकर बाद में तेज़ी बने, गेहूँ, जौं, चना, अनाज, सोने में तेजी बने। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर, चंदन, अगर आदि में मन्दी बनेगी।

13 सितं. को सूर्य उ.फा. में आएगा। इसी दिन शनि पश्चिम में अस्त होगा। रूई, कपास, रेंशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल में पहले अच्छी तेजी बनेगी। परन्तु रूई, शेयर, सोने में बाद में मन्दी बनेगी।

15 सितं. को मंगल स्वाती में आने से रूई, ऊनी वस्त्र, गेहूँ, तिल, तेल तेज, चाँदी में घटाबढ़ी, सोने में कुछ मन्दी बने।

16 सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि भी रहेगी। रूई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, लाल रंग की वस्तुएं, लाल-मिर्च, चना तेज होंगे। क्रूड-आयल, चाँदी तथा शेयरों में मन्दी का रुख बन सकता है।

18 सितं. को बुध पू.फा. में आने से गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चावल आदि अनाज मन्दे होंगे।

[18 सितं. से 26 सितं. के मध्य मुख्य जिन्सों व शेयर-बाज़ार में घटाबढ़ी के मध्य मुख्यतः मन्दी का रुख रहेगा।]

27 सितं. को सूर्य हस्त नक्षत्र में आकर शनि के साथ एक-नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गेहूँ, जौं, ज्वार, गुड़, खांड, कपास, रूई, सूत, जूट, नमक, हरड़, हींग, हल्दी, सन में तेज़ी बनेगी। इसी दिन राहु मूल(4) केतु आर्द्रा (2) में आने से रूई, चांदी, सोना, बारदाना, बिनौला, अन्न आदि तेज़ होंगे।

28 सितं. को बुध उ.फा. में आने से उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेज़ी, रूई तथा चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने।

29 सितं. को वक्री गुरु पू.भा. में आने से सभी अनाज, चना, सोना, चाँदी, सन, सूत, रूई में अच्छी तेज़ी बनेगी।

30 सितं. को बुध कन्या राशि में आकर सूर्य एवं शनि के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। इसी दिन बुध पूर्व में अस्त भी होगा। गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, सोने, कॉपर में तेज़ी बनेगी। रूई, चाँदी, घी में घटाबढ़ी के मध्य मामूली मन्दी का रुख बनेगा।

शेयर-बाज़ार—ता. 1, 5, 7, 12, 13, 27, 29, 30 सितं. को तेज़ी की उम्मीद है।

● अक्तूबर

अक्तूबर—मासारम्भ में कुछ मन्दी का रुख रहने के बाद ता. 5 को मंगल विशाखा में आएगा। इसी दिन बुध हस्त नक्षत्र में आकर सूर्य एवं शनि के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। अनाज, गेहूँ, चावल, बैंकिंग शेयर्ज़, रूई, कपास में तेजी बनेगी।

8 अक्तू. को शुक्र वक्री होने से रूई में पहले तेज़ी फिर मन्दी, घी, तेल, गुड़, चीनी, शक्कर, चना, गेहूँ और जौं में तेज़ी बनेगी। अलसी, सोयाबीन, सोना, चाँदी में घटाबढ़ी चलेगी।

9 अक्तू., शनिवार को चन्द्रदर्शन होने से रूई, सूत, चाँदी, सोना, सरसों, मूँगफली आदि में अच्छी तेजी बनेगी।

10 अक्तू. को भी सूर्य चित्रा में आने से रूई, सोना, चाँदी, कॉपर, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, कपूर में तेज़ी बनेगी।

13 अक्तू. को बुध भी चित्रा में आकर सूर्य के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, चाँदी, गेहूँ, चावल आदि अनाज, बैंकिंग शेयर्ज में घटाबढ़ी होकर तेज़ी बने।

17 अक्तू. को सूर्य और बुध तुला राशि में प्रवेश कर मंगल एवं शुक्र के साथ मेल करेंगे। यह योग विशेष तेजीकारक प्रतीत हो रहा है। गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, तांबा, रक्तचन्दन, मजीठ, श्रीफल, सुपारी, खाण्ड, गुड़, रूई में अच्छी तेज़ी बने, चाँदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली में भी मन्दी की जगह तेज़ी का रुख बनेगा।

18 अक्तू. को शनि पूर्व में उदय होने से मक्की, गेहूँ आदि अनाज, उड़द, तिलहन, व पैट्रो शेयर्ज में तेज़ी बनेगी। लोहे, जिस्त, सीसा, लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड में भी तेज़ी बनेगी।

19 अक्तू. को मंगल वृश्चिक राशि में आएगा। इस पर शनि एवं गुरु दोनों ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। गुड़, रूई, सोना, चाँदी, कॉपर, जिस्त, तेल, क्रूड-आयल में तेज़ी बनेगी।

20 अक्तू. को शुक्र पश्चिम में अस्त होने से सोना, चांदी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली आदि में मन्दी बनेगी। रूई, चावल में तेजी बने।

21 अक्तू. को बुध स्वाती में आने से रूई, चने, चावल, कपास, बैंकिंग शेयर्ज़ में मन्दी बनेगी।

24 अक्तू. को सूर्य स्वाती में तथा मंगल अनुराधा नक्षत्र में आएंगे। रूई, सूत, सन, रेशम, कपड़ा, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, लाल मिर्च, गेहूँ, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुगुल में तेज़ी बने।

29 अक्तू. को बुध विशाखा में आने से गेहूँ, चावल आदि अनाज, रूई में मन्दी बने।

शेयर-बाज़ार—ता. 8 10, 11, 17, 18, 19, 20, 24, 25 को तेज़ी बनेगी।

● नवम्बर

नवम्बर—ता. 1 को ही वक्री गुरु कुम्भ राशि में आने से रूई, सोना, तांबा, पीतल, लोहा में पहले मन्दी फिर तेज़ी का रुख बनेगा। रूई, चांदी, चना, खाण्ड में पहले तेज़ी फिर मन्दी का रुख बनेगा।

2 नवं. को शुक्र पूर्व में उदय होने से रूई, घी, सूत, चांदी, चावल, में तेज़ी आएगी।

4 नवं. को बुध वृश्चिक में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। घी, तेल, सरसों, रूई, सोने, चाँदी, कॉपर, गुड़, सरसों में अच्छी तेज़ी बनेगी।

6 नवं. को सूर्य विशाखा में तथा वक्री शुक्र चित्रा में आने से जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खांड, रूई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम तेज़ होंगे। अलसी, चांदी, साफ्टवेयर शेयरों में घटाबढ़ी होकर तेज़ी बनेगी।

7 नवं., रविवार को चन्द्रदर्शन होने तथा बुध अनुराधा में आने से गुड़, तेल, सोना-चांदी में तेज़ी तथा रूई में घटाबढ़ी से मन्दी होगी।

11 नवं. को मंगल ज्येष्ठा में आने से रूई, चाँदी, खाण्ड में मन्दी तथा रूई में घटाबढ़ी होगी।

16 नवं. को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। रूई, ताँबा, चाँदी, सोना व ऊनी वस्त्रों में तेजी और लाल रंग की वस्तुओं में कुछ मन्दी का रुख रहेगा। इसी दिन बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। मन्दी के स्थान पर तेजी का रुख बन जाएगा।

18 नवं. को गुरु और शुक्र मार्गी होने से रूई व चांदी में मन्दी बनकर तेजी बने, चावल अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाकू, सोना, तांबा तेज होंगे। सूत, घी, चावल व हाथी दाँत की वस्तुओं में एक मास बाद तेजी बनेगी।

19 नवं. को सूर्य अनुराधा में आने से जौं, चना आदि धान्यों में तथा ऊन व धातुओं में तेजी हो। गेहूँ, अलसी, मिर्च में तेजी होकर मन्दी बने। सोना, चाँदी में भी मन्दी रहे।

24 नवं. को शनि हस्त(4) में आने से सरसों, जीरा, काली-मिर्च, सोने में साधारण तेज़ी बनेगी।

25 नवं. को बुध धनु राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। रुई, कपास, सूत, चाँदी, घी, हल्दी में मन्दी की जगह तेज़ी का रूख बनेगा।

27 नवं. को मंगल पश्चिम में अस्त होने से रूई में मन्दी, गेहूँ, अलसी में विशेष तेज़ी। जौं, चना, गुड़ में भी तेज़ी बनेगी।

29 नवं को मंगल धनु राशि में आकर बुध एवं राहु के साथ मेल करेगा। राहु मूल(3), केतु आर्द्रा(1) में आने से रूई में घटाबढ़ी होकर तेज़ी रहे। चाँदी आदि धातु, सूत, सन, तृण, बिनौला, सरसों, घी तथा सब प्रकार के अनाजों में तेजी बने।

शेयर-बाज़ार—ता. 1, 2, 4, 5, 6, 16, 27, 29 नवं. को तेज़ी बनेगी।

● **दिसम्बर**—मासारम्भ में ता. 1 को शुक्र स्वाती में आने से गुड़, खांड, मैदा. ग्वार में तेजी, अन्न के भावों में मन्दी बनेगी।

2 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा में आने से सोना, चांदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग गुग्गुल, गुड़, खाण्ड में तेज़ी हो। रूई में पहले मन्दी बाद में तेज़ी रहे।

7 दिसं., मंगलवार को चन्द्रदर्शन होने से रूई में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी, सोना, चाँदी, कॉपर में घटाबढ़ के बाद तेज़ी हो। गुड़, सरसों, मूँगफली भी तेज़ हो।

10 दिसं. को बुध वक्री होने से घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, बैंकिंग शेयर्ज़ तथा शेयर बाज़ार में तेज़ी बने। गेहूँ, जौं, चना में मन्दी बने।

14 दिसं. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से रूई, शेयरों, घी में मन्दा, चाँदी सोने में तेज़ी बनेगी।

16 दिसं. को सूर्य धनु राशि में आकर मंगल, बुध एवं राहु के साथ मेल करेगा। रूई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चाँदी, कॉपर में तेज़ी बने। चना, चावल, खाण्ड आदि अनाज कुछ मन्दे रहे।

17 दिसं. को मंगल पू.षा में आने से सोना, चाँदी, चावल, उड़द, घी, दूध, तिल, तेल, सरसों, मूँगफली तेज़ होंगे।

21 दिसं. को शुक्र विशाखा में आने से रूई, अनाज, चाँदी, जीरा, चावल, खाण्ड आदि में मन्दी बनेगी।

23 दिसं. को वक्री बुध वृश्चिक राशि में आकर शनि की दृष्टि में आएगा। घी, तेल, सरसों, रूई, चाँदी, सोना, काली मिर्च, क्रूड-आयल में तेजी बने।

25 दिसं. को वक्री बुध पूर्व से उदय होने से अनाज, सोने में मन्दी, गेहूँ, जौं, चना, लाल मिर्च, अलसी, बिनौला, शेयर्ज़ में तेजी बनेगी।

29 दिसं. को सूर्य पूर्वाषाढ़ा में जाने से तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, कपूर, ऊनी वस्त्र, चांदी में तेजी बने।

30 दिसं. को बुध मार्गी होगा। एरण्ड बिनौला, गेहूँ, जौं, चाँदी, चना, अनाज, सोने, रूई में तेजी, तेल, गुड़, मूँगफली, कपूर में मन्दी बनेगी।

नोट—ऊपर दिए गए व्यापारिक रुख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाज़ार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाईन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें तथा तुरन्त एडवांस फीस भेजकर टेलीफोन से ताज़ा मशवरा प्राप्त करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम ज़िम्मेवार न होंगे।

—पं. विवेक शर्मा, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब) फोन—0181-2457959

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पूफा आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।
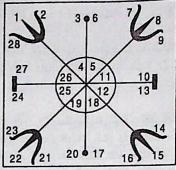
➲ खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. सुलोचन नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. मध्याक्ष नक्षत्र में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. मन्दाक्ष नक्षत्र में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं—

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोहणी	पुष्य.	उफा.	विशा.	पूषा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृतिका	पुन.	पूफा.	स्वा.	मूला.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्विनी	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उषा.	शत.	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य की प्रेरणा देनी वाली शक्ति साधना को भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है—

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरैः। न भावेन विना देवो यन्त्रमन्त्राः फलप्रदाः॥

अर्थात् चाहे कितना भी अधिक जप, होम तथा शारीरिक प्रयास किया जाए, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनाचार्यों ने मन्त्र-तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों को पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे-गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ मुहूर्त्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी प्रकाशित पुस्तक '**शिव मन्त्रावली**' में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षय तृतीया, सायन एवं निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि-गुरु पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल—सन् 2010-11 ई.

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2010-11 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
20 जनवरी	कुम्भ	9-58	प्रात: 3/58 से दोपहर 15/58 तक
18 फरवरी	मीन	24-06	सायं 18/06 से 30/06 तक
20 मार्च	मेष	23-02	सायं 17/02 से 29/02 तक
20 अप्रैल	वृष	10-00	प्रात: 4/00 से सायं 16/00 तक
21 मई	मिथुन	9-04	प्रात: 3/04 से सायं 15/04 तक
21 जून	कर्क	16-58	प्रात: 10/58 से रात्रि 22/58 तक
22 जुलाई	सिंह	27-51	रात्रि 21/51 से अगले दिन प्रात: 9/51 तक
23 अगस्त	कन्या	10-57	प्रात: 4/57 से सायं 16/57 तक
23 सितम्बर	तुला	8-39	प्रात: 2/39 से दोपहर 14/39 तक
23 अक्तूबर	वृश्चिक	18-05	दोपहर 12/05 से रात्रि 24/05 तक
22 नवम्बर	धनु	15-45	प्रात: 9/45 से रात्रि 21/45 तक
21 दिसम्बर	मकर	29-08	रात्रि 23/08 से अगले दिन दोप. 11/08 तक
20 जन.(2011)	कुम्भ	15-49	प्रात: 9/49 से 21/49 तक
18 फरवरी	मीन	29-55	रात्रि 23/55 से अगले दिन दोप. 11/55 तक
20 मार्च	मेष	28-51	रात्रि 22/51 से अगले दिन प्रात: 10/51 तक
20 अप्रैल	वृष	15-47	प्रात: 9/47 से रात्रि 21/47 तक

क्रान्तिसाम्य काल—2010-11 ई.

यहां नीचे सूर्य-चन्द्र का सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। (महापात गणित द्वारा) विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को वर्जित किया गया है। इस समय विवाह आदि शुभ मुहूर्त के लिए अशुभ परन्तु मंत्र-यन्त्र अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ समय होता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
9 जन.	22	02	10 जन.	6	37
23 जन.	24	38	24 जन.	6	39
4 फर.	18	14	4 फर.	23	31
18 फर.	13	44	18 फर.	18	39
2 मार्च	14	17	2 मार्च	18	19
28 मार्च	11	22	28 मार्च	15	10
10 अप्रै.	6	30	10 अप्रै.	11	33
22 अप्रै.	27	43	23 अप्रै.	7	59
5 मई	14	46	5 मई	20	54
18 मई	17	58	18 मई	24	03
30 मई	28	20	31 मई	13	28
13 जून	11	47	13 जून	29	19
23 जून	15	07	23 जून	27	32
7 जुला.	22	28	8 जुला.	7	30
19 जुला.	22	40	20 जुला.	6	12
2 अग.	20	28	2 अग.	26	33
14 अग.	18	00	14 अग.	22	54
28 अग.	7	40	28 अग.	12	43
9 सितं.	14	59	9 सितं.	18	50
22 सितं.	15	18	22 सितं.	20	07
5 अक्तू.	11	19	5 अक्तू.	15	16
17 अक्तू.	20	44	17 अक्तू.	25	58
30 अक्तू.	25	35	30 अक्तू.	30	30
11 नवं.	26	46	12 नवं.	9	22
25 नवं.	11	25	25 नवं.	19	18
7 दिसं.	14	05	7 दिसं.	26	16
21 दिसं.	10	22	21 दिसं.	26	26
31 दिसं.	25	28	1 जन.(2011)	15	11
(सन् 2011 ई.)					
14 जन.	20	31	14 जन.	29	34
26 जन.	21	11	26 जन.	27	41
9 फर.	8	02	9 फर.	13	58
21 फर.	12	46	21 फर.	17	18
6 मार्च	13	33	6 मार्च	18	39
19 मार्च	8	28	19 मार्च	12	20
31 मार्च	17	28	31 मार्च	22	35

वारुणी पर्व (सन् 2010 ई.)

सन् 2010 में वारुणी योग का अभाव है।

(सन् 2011 ई.)

31 मार्च 1 अप्रै.	12 38 सूर्योदय	31 मार्च 1 अप्रै.	सूर्यास्त 8 25

गजच्छाया योग

5 अक्तू. 7 अक्तू.	10 58 7 43	5 अक्तू. 7 अक्तू.	13 19 सूर्यास्त

अर्धोदय योग

(सन् 2011 ई.)

3 फर.	सूर्योदय	3 फर.	8 00

सूर्यग्रहण–चन्द्रग्रहण

(1) खण्ड चन्द्रग्रहण = (26 जून, 2010 ई.)
(2) खण्ड सूर्यग्रहण = (4 जन., 2011 ई.)

पर्वकाल के लिए देखें पृष्ठ 13 से 18

दीपावली पर्व

5 नवं., 2010 ई., शुक्रवार को दीपावली पर्व होने के कारण यन्त्र-मन्त्र अनुष्ठान, साधन के लिए विशेष सिद्धिदायक होगा। देखें पृष्ठ 84-85

'सर्वव्याधि नाश के लिए महामृत्युञ्जय मन्त्र'

'ॐ हौं जूँ सः, ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ हौं ॐ।'

अर्थ—हम परमपिता त्र्यम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक हैं। जैसे तरबूज आदि फल (पक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छूटूँ।

संक्षिप्त विधि—यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। ॐकार का प्रतीक शिवलिङ्ग है; उसी के ऊपर अविच्छिन-अनवरत जलधारा के प्रवाहवत अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वासपूर्वक मृत्युंजय महामन्त्र का जाप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

किसी शुभ मुहूर्त में शुद्ध शान्तचित्त, संयमपूर्वक देवालय (विशेषकर शिव मन्दिर), गंगादि तीर्थ स्थान, जलाशय, पीपल वृक्ष के पास अथवा अपने निवास स्थान में स्वच्छ एकान्त स्थान पर संकल्पपूर्वक निश्चित विषम संख्या (एक, तीनादि) में नियमित रूप में श्रद्धापूर्वक पाठ करने से अवश्य लाभ मिलता है। जप संख्या में उलट-फेर या कमी बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण हो जाने पर जपसंख्या का दशमांश हवन, हवन का दशांश तर्पण तथा एवं तर्पण का दशांश मार्जन एवं यथेष्ठ दानादि सहित ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए तथा पाठोपरान्त शिव कवच पढ़ना चाहिए। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादन्महेश्वर॥
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥

श्रीमहामृत्युञ्जय मंत्र के जप से अकालमृत्यु का निवारण, दीर्घायु व आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली में ग्रह-नक्षत्र दोष, नाड़ी दोष, मंगलीक दोष, शत्रुषडाष्टक, विधुर एवं वैधव्यादि दोषों के निवारण हेतु तथा अतिशय क्लिष्ट एवं असाध्य रोगों और मृत्युतुल्य शारीरिक एवं मानसिक रोगों में उपायस्वरूप अचूक एवं सिद्ध मन्त्र माना गया है।

''श्रीमहामृत्युंजय कवच यन्त्रम्''

भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यन्त्र लिखकर गुग्गुल का धूप देकर पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें हाथ में बाँध देना चाहिए। गोत्र, पिता का नाम, पुत्र या पुत्री (रोगी) का नाम यथास्थान लिख देना चाहिए। साथ में रुद्राक्ष माला से महामृत्युञ्जय जप करते रहें।
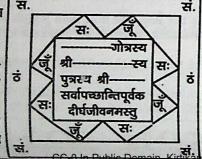
श्री बगुलामुखी देवी का मन्त्र ('शत्रुविजयी मन्त्र')

श्री बगला महाविद्या की उपासना गुरु के सान्निध्य में रहकर सतर्कता, इन्द्रियनिग्रहपूर्वक सफलता की प्राप्ति होने तक प्रयत्नपूर्वक करते रहना चाहिए।

आपका विरोधी अथवा शत्रु आपको अन्यायपूर्वक तंग कर रहा हो अथवा राजकीय रुकावटों के कारण उपयुक्त प्रमोशन न मिल पा रहा हो अथवा व्यवसाय में गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने का यत्न करते हों अथवा आपको अनावश्यक रुपेण, झगड़े आदि में फंसाया जा रहा हो तो निम्न श्री बगुलामुखी मन्त्र विशेष सहायक सिद्ध होता है।

साधक को गुरु से बगला मन्त्र का उपदेश ग्रहण कर ब्रह्मचर्यपूर्वक देवीमन्दिर में, पर्वतशिखर पर, शिवालय में, गुरु के समीप या जैसी सुविधा हो पीताचार से बगलामहामन्त्र का पुरश्चरण करना चाहिए। महाविद्या बगुलामुखी का ३६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है—

''ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं।
स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥''

मन्त्र के जपादि के विषय में बगलापटल (सिद्धेश्वर तन्त्र) में विशेष विधान बताए हैं, जो इस प्रकार हैं—

पीताम्बरधरो भूत्वा पूर्वाशाभिमुखः स्थितः। लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हरिद्राग्रन्थिमालया॥
ब्रह्मचर्यरतो नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परः। प्रियङ्गु कुसुमेनापि पीतपुष्पैश्च होमयेत्॥

बगला के जप में पीले रंग का विशेष महत्त्व है। जपकर्ता को पीला वस्त्र पहनकर हल्दी की गाँठ की माला से जप करना चाहिए। देवी की पूजा और होम में पीले पुष्पों, प्रियङ्गु, कनेर, गेंदा आदि के पुष्पों का प्रयोग करना चाहिए। शुचिर्भूत हो पीले कपड़े पहनकर साधक पूर्वाभिमुख बैठकर ही जप करें। उसे ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्यतः करना चाहिए। जप के पूर्व पूर्वाभिमुख आसन पर बैठकर आसनशुद्धि, भूशुद्धि, भूतशुद्धि, अङ्गन्यास, करन्यास आदि करना चाहिए। जप संख्या एक लाख बतलाई गई है। विशेष बात यह बताई है कि प्रतिदिन जप के अन्त में दशांश होम पीले पुष्पों से अवश्य करना चाहिए।

विनियोग— 'ह्लीं ॐ अस्य श्रीबगुलामुखीमन्त्रस्य नारद ऋषिः, बृहती छन्दः, बगुलामुखी देवताअभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।'

अङ्गन्यास—'ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा। ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रया वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।'

महाविद्या बगुलामुखी का ध्यान निम्नलिखित है, जो जप से पूर्व करणीय है—

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं, हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां स्रक्चम्पकस्रग्युताम्। हस्तैर्मुद्गरपाशबद्धरसनाः सम्बिभ्रतीं भूषणैः, व्याप्त बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये॥

विदेश-यात्रा हेतु प्रयोग

आजकल बहुतात लोगों की रोजगार अथवा वैवाहिक दृष्टि से विदेश भ्रमण की इच्छा रहती है, परन्तु किन्हीं कारणों से विघ्न-बाधाओं का सामना रहता है। उन्हें निम्न मन्त्र का जप करना शुभ रहेगा—**''ॐ अनंग बल्लभाये विदेश गमनाय कार्य सिद्धयर्थे नमः''**

किसी भी शुक्ल पक्ष के शुभ शुक्रवार प्रातः स्नानादि के पश्चात् स्वच्छ कपड़े पहनकर सफेद रंग के सूती आसन पर बैठकर अपने सामने एक लकड़ी के पट्टे पर सफेद वस्त्र को

बिछाकर उस पर दक्षिणावर्ती शंख रखकर केसर से स्वास्तिक चिन्ह व तिलक लगाकर श्रद्धापूर्वक उपरोक्त मंत्र का जाप स्फटिक की माला से करें।

मंत्र जप समापन होने पर उस सफेद वस्त्र में दक्षिणावर्ती शंख को भली-भांति लपेटकर अपने पूजा स्थल पर रख देने से विदेश भ्रमण की सभी बाधाएं स्वत: ही दूर हो जाती हैं तथा विदेश भ्रमण की संभावनाएं प्रबल हो जाती है।

अभीष्ट वर प्राप्ति के लिए

जिस कन्या के विवाह-कार्य में बार-बार विघ्न-बाधाएँ पड़ती हों। उसको गुरु-पुष्य, रवि पुष्य, अक्षया तीज, श्रावण मास में, दीपावली, वसन्त अथवा नवरात्रों में निम्नलिखित मन्त्र का आरम्भ करके यथेष्ठ संख्या में 51 हज़ार अथवा सवा लाख की संख्या में नियमित रूप में, शिव-पार्वती अथवा माता के मन्दिर में धूप, दीप जलाकर पीले एवं लाल पुष्प चढ़ाकर सुनिश्चित समय में नियमित रूप से संकल्पपूर्वक एवं विधिवत् जप करना चाहिए। इससे देवी की कृपा से अवश्य कामना सिद्धि होती है—

(१) ॐ ह्रीं गौर्ये नमः

हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वं शंकर प्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥

(हे गौरी, शङ्कर की अर्द्धाङ्गिनी ! जिस प्रकार तुम शङ्कर की प्रिया हो, उसी प्रकार हे कल्याणी ! मुझ कन्या को दुर्लभ वर प्रदान करो।)

एक अन्य उपयोगी मन्त्र—

(२) ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधीश्वरी।
नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरु ते नमः॥

(हे कात्यायनि, महामाया, महायोगिनियों की अधीश्वरि ! मुझे भगवान् कृष्ण सदृश पति प्रदान करो ! तुम्हें नमस्कार है।)

(३) ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनी।
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रं लाभं च देहि मे॥

(ॐ देवेन्द्राणि ! देव इन्द्र की प्रिय पत्नी ! तुम्हें नमस्कार है। मुझे विवाह, भाग्य, आरोग्य और शीघ्र लाभ प्रदान करें।)

इस मन्त्र का जप भी प्रतिदिन कम से कम 108 बार लगातार अभीष्ट सिद्धि तक करते रहें। जप करने से पहले प्रतिष्ठित तुलसी-पादप की पूजा करके 12 परिक्रमाएँ करें, तदनन्तर दाएँ हाथ से दुग्ध और बाएँ हाथ से जल द्वारा श्रीसूर्यनारायण को 12 बार समन्त्र अर्घ्य दें। तदनन्तर जप करें। इस प्रकार प्रतिदिन अर्घ्यदान और जप करने से तथा प्रयास करते रहने से शीघ्र कार्य सिद्धि होगी।

—मनोवांछित पत्नी प्राप्ति के लिए—

(१) पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसार सागरस्य कुलोद्भवाम्॥ (दुर्गा. सप्त., २४)

प्रातःकाल शुद्ध होकर दुर्गाजी के चित्रपट या मूर्ति पर लाल पुष्प समर्पित करें। दीप प्रज्वलित करके षोडशोपचार पूजन करें, तथा उपर्युक्त मन्त्र की कम से कम 5 माला प्रतिदिन जप करें। किसी ब्राह्मण से जप कराना हो तो भी एक माला जप स्वयं विवाह सम्पन्न होने तक करना चाहिए। साथ ही दुर्गासप्तशती का इसी मन्त्र से सम्पुट करके 18 पाठ करना या कराना चाहिए।

सम्पूर्ण जानकारी के लिए हमारी पुस्तक 'दुर्गा सप्तशती' (भाषा-टीका) पढ़ें।

(२) 'ॐ क्लीं विश्वावसुर्नाम गन्धर्वः कन्यानामधिपतिं लभामि
देवदत्तां कन्यां सुरूपां सालंकारां तस्मै विश्वावसवे स्वाहा।'

सवा लाख जप करने या कराने के बाद दशांश हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन अवश्य कराना चाहिए।

—दरिद्रता नाशक कुबेर मन्त्र—

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये।
धनधान्यसमृद्धि मे देहि दापय स्वाहा॥

उपरोक्त कुबेर मन्त्र धर्मस्थान या शिवमन्दिर में द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में अथवा दीपावली या नवरात्रों में संकल्पपूर्वक प्रारम्भ करके सवा लाख की संख्या में पाठ करें। प्रतिदिन नियमित रूप से तीन अथवा एक माला का पाठ (अपनी सामर्थ्यानुसार) करें। सम्पूर्ति पर ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन करवाना शुभ होगा।

ऋणमुक्ति एवं लक्ष्मी प्राप्ति के लिए श्री गणेश मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चिरचिर गणपतिवर वरदेयं मम वांछितार्थ कुरू कुरू स्वाहा।

विशेष विधि—श्री गणपति जी का विशेष रूप से अंगारकी चतुर्थी के दिन नित्यकर्म से निवृत होकर धूप-दीप आदि से पूजन करके इस मंत्र का 10 हजार की संख्या में रूद्राक्ष या मूंगे की माला से जप करके पश्चात् 108 आहुतियां इसी मंत्र से देवें। *दक्षिणा, आरती, मन्त्रपुष्पांजलि, प्रणामादि करके (21) लड्डूओं का भोग लगावें। जपारम्भ करने से पहले एवं हवनादि के पश्चात् भी 108 बार मंत्र जप करना विशेष लाभप्रद होगा। श्री गणेश जी को सिंदूर व दूर्वा चढ़ाकर पूजन करें। स्वयं भी लड्डूओं का प्रशाद लें।

*हवन सामग्री—हवन में केवल पलाश की समिधा प्रयोग करें। गुग्गल 101 रक्त करबीर पुष्प एवं 101 लड्डू का चूरमा, ये तीनों वस्तुयें एकत्रित कर उपर्युक्त मंत्र से 108 आहुति देवें। विशेष ध्यान रखें—जप-पूजन के समय आरम्भ से अन्त तक घृत (देशी) का दीप प्रज्जवलित रहना चाहिए। पूर्णाहुति सुपारी से देना शुभ होगा। इस विधि से तीन पुरश्चरण करने पर ऋणग्रस्त हो तो ऋण से मुक्ति के साधन बनेंगे। तृतीय पुरश्चरण करने के पश्चात् श्री गणेश सहस्रणाम का पाठ भी करना विशेष फलप्रद होता है।

पुत्र सन्तति प्रदायक :—संतान गोपाल मंत्र

मंत्र— **"ॐ क्लीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।**
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ॥"

विनियोगः—अस्य श्रीसन्तान गोपाल मंत्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्द, श्री कृष्ण देवता, ग्लौं बीजम्, नमः शक्तिः, अभीष्ट पुत्र प्राप्तयर्थे जपे विनियोगः।

न्यासः—देवकी सुत, हृदयाय नमः। वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा। देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै वषट्। त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम्। ॐ क्लीं देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते नेत्राय वौषट्। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः, अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र— कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नन्दनाय च।
नन्दगोप कुमाराय गोविन्दाय नमो नमः॥

जपविधान—उपरोक्त सन्तान-गोपाल मंत्र का सवा लाख की संख्या में जप करना चाहिए। शहद, घी एवं शक्कर मिश्रित तिलों से दस हजार आहुतियां डालनी चाहिए। एक हजार की संख्या में तर्पण तथा एक शत संख्या में मार्जन करें, तत्पश्चात् दस ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन करवाना चाहिए। भगवान् श्री कृष्ण की विधिवत् पूजा करने के पश्चात् संकल्पपूर्वक जपारम्भ करना चाहिए। पूजास्थल में भगवान् श्री कृष्ण-गोपाल की एक छोटी सौम्य सुन्दर मूर्ति रखनी चाहिए। मंत्र जप के पश्चात् मंत्र-पुष्पांजलि, गोविन्दाष्टक एवं श्रीकमलनेत्र स्तोत्र का पाठ करना शुभ होता है।

—लक्ष्मी प्राप्ति के लिए श्री कुबेर देव का मंत्र—

धन के अधिष्ठाता श्री कुबेर देवता का मन्त्र जपने से व्यक्ति को धन-सम्पत्ति का अभाव नहीं रहता। 'कुबेर' शब्द ही धनिक का पर्याय है। यक्षों के सम्राट कुबेर देवता अपनी सम्पत्ति के लिए पुराणों में भी वर्णित है। उनकी साधना का मंत्र निम्नांकित है। एक लाख जप करके तिल के द्वारा दशांश (दस हजार अथवा एक हजार, जैसी सामर्थ्य हो) हवन करने से कुबेर देव की कृपा, साधक का दारिद्रय दूर कर देती है।

ध्यान मंत्र— मनुजबाह्य विमानवर स्थितं, गरुड़ रत्ननिभं निधि नायकं।
शिव सखं मुकुटादि विभूषितं, वरगदे दधतं भज तुन्दिलम्॥

मंत्र—'ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्यादिपतये समृद्धिं में देहि दापय स्वाहा।'
"ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।"

दुर्लभ बीसा यन्त्र प्रयोग

अष्टगन्ध की स्याही* अथवा शुद्ध सिन्दूर को शुद्ध घी (गौ का), इसके अभाव में मीठा तेल में मिलाकर अनार अथवा तुलसी की लकड़ी का कलम (प्रमाण 8 अंगुल) से मकान अथवा दुकान की पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख दीवार पर दीपावली के शुभ पर्व पर** प्रदर्शित बीसा यंत्र लिखें। इस यंत्र को लिखने से पहले उस स्थान को गाय के गोबर से पवित्र कर लेना चाहिए। गाय के गोबर में गंगाजल भी मिला लेना चाहिए। इस यंत्र को लिखने से ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि और धन की वृद्धि होती है। अचला भगवती लक्ष्मी एक वर्ष तक वहाँ निवास करती है।

यंत्र लिखने के पश्चात् 卐 (स्वस्तिक), ॐ 'ऐश्वर्य- लाभ', 'श्री गणेशाय नमः', 'श्री महालक्ष्म्यै नमः', 'श्री सरस्वत्यै नमः', 'श्री महाकाल्यै नमः', 'श्री विष्णवेनमः', 'श्री शिवाय नमः', 'श्री कुबेराय नमः' आदि मङ्गलवाक्य भी शुद्ध घी एवं मीठा तेल मिश्रित सिंदूर द्वारा लिख देने से उस स्थान से दुःख-दरिद्रता का नाश होता है। ये यंत्र और मंङ्गलमन्त्र कष्ट निवारक, पापनाशक और कल्याणप्रद हैं। लाभ उठाइये।

—कुछ शाबर मन्त्र—

कार्य सिद्धि हेतु—किसी भी शुक्ल पक्ष के दिन सायं 6 बजे एक देशी पान, दो साबुत लौंग, सात बताशे लेकर नदी के किनारे जाकर मंत्र 108 बार पढ़ें। उसके पश्चात् प्रसाद को जल में प्रवाहित कर दें। सात दिन तक ऐसा करें, तो रूके कार्य बन जाएंगे।

मन्त्र—पहिले नाम भगवान् का। दूजे नाम औतार का। तिजे नाम सत्-गुरु, जिनका नाम गोरखनाथ। उनकी कृपा और उनकी दया। इस ख्वाजा-खिदर पूजने के लिए परसाद लेकर आया। लोना चमारी दिरन्त की दुहाई। वैष्णों शाकुंबरी और औतार पीर और पैगम्बर इन सबकी दया के साथ दरिया के किनारे, जिससे हमारी आत्मा ठंडी। लोना चमारी, दुहाई। वस्तम पेरूल युसूफ की तरह, भूरे देव की तरह, सत्यनारायण की तरह मैंने भी पैर बढ़ाया। लोना चमारी की दुहाई। हरी-हरी, शिव-शिव, जयन्ती भद्रकाली।

शत्रुता शमन-मन्त्र—निम्न मन्त्र को मंगलवार के दिन से आरम्भ करना चाहिए और 31 दिन तक प्रतिदिन 1108 बार जप करें। प्रतिदिन मोतीचूर के लड्डुओं का भोग लगाकर बच्चों को बांटे। इस प्रकार करने से शत्रु स्वयं ही झुकेगा।

'ॐ नमो आदेश, कामरू देश कामख्या देवी। जले तेल-तेल, महातेल तारे। अमुक लहर पीर पल में टारे। मन्त्र पढ़े नरसिंह देव कुटिया में बैठ के, श्री रामचन्द्र जी रहि-रहि फूंक के। जाय अमूक जलन एक पलज में, जाय-खाय सागर की नीर नोन में। आज्ञा हाडि दास। फुरो मन्त्र, चण्डी वाचा।

वशीकरण हेतु—(1) किसी भी स्त्री या पुरुष को मोहित, आकर्षित अथवा अपने वश में करने के लिए रोज़ाना सायंकाल 108 बार निम्न मन्त्र का जाप प्राण-प्रतिष्ठित स्फटिक की माला से करें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो मोहिनी महामोहनी अमृत वासनी ऐं नमो सिद्धि। गुरु के पाय जानुं। अर्जुन के वान। धनेश्वरी की माटी बन्धो। घाउन बन्धो। पाटि मेरि, भक्ति गुरु की फुरो मंत्र ईश्वरों वाचा।

*श्वेत चन्दन, लाल चन्दन,. अगर, तगर, केशर, कस्तूरी, कर्पूर और गोरोचन।
**[illegible] पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र नहीं होने चाहिए।

कुछ उपयोगी टोटके

(1) *शीघ्र विवाह के लिए*—(*i*) विवाह के इच्छुक युवक या युवती को प्रत्येक बृहस्पतिवार को स्नान करने वाले जल में एक चौथाई चम्मच हल्दी डालकर स्नान करना चाहिए। हल्दी के स्थान पर केसर का उपयोग भी किया जा सकता है। यदि ऐसे युवक या युवती बृहस्पतिवार को गाय को भोग (आटे के दो गोलों पर थोड़ी सी हल्दी लगाकर, थोड़ा गुड़ तथा चने की गीली दाल) दें तो उनके विवाह का योग शीघ्र बन सकता है।

(*ii*) मंगली होने के कारण विवाह में बाधा आ रही हो, तो कन्या प्रत्येक मंगलवार **'श्रीमंगल चंडिका स्तोत्र'** (देखें गतवर्ष सं. २०६६ की पंचांगदिवाकर अथवा हमारी पुस्तक 'चमत्कारी सुनहरी उपाय') का पाठ करें तथा लाल मूंगे की माला से निम्न मंत्र का जप करें—

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्व पूज्ये देवि मंगल चंडिके हूँ फट् स्वाहा।'

इस मंत्र जाप के साथ सुन्दरकाण्ड का पाठ भी करें।

(*iii*) विवाह सम्बन्ध बनते-बनते टूट रहे हो, तो पूर्णिमा को किसी भी वटवृक्ष की 108 परिक्रमा करने से विवाह की विघ्नता दूर हो जाती है। गुरुवार को वट, पीपल एवं केले के वृक्ष पर जल अर्पित करने से विवाह की बाधा टूट हो जाती है।

(2) *दाम्पत्य सुख के लिए*—पति-पत्नी में परस्पर तनाव एवं झगड़ा रहता हो तथा स्त्री सदेव पति से प्रताडित होती रहती हो, तो वह बेल के तीन पत्तों पर अपने पति का नाम गोरोचन में काली हल्दी का घोल बनाकर मोर पंख की कलम से लिखे। फिर उन्हें चाँदी की डिब्बी में भरकर, उसे अपने दाएं हाथ की हथेली में रखें और निम्न मंत्र का मन ही मन 11 बार, 11 दिन तक जाप करें—**'ॐ नमः शिवाय शंकराय'**

जब 11 दिन पूरे हो जाएं, तब डिब्बी को उसी बेल वृक्ष को समर्पित कर आए, जिसके वे तीन पत्ते लिए थे। कुछ ही दिनों में पति के व्यवहार में परिवर्तन होगा।

षष्ठी देवी के स्तोत्र की महिमा

जन्म कुण्डली अथवा वर्ष कुण्डली में कोई अरिष्ट योग पड़ा हो, तो षष्ठी देवी का षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन करके, स्तोत्र का श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक जन्मदिन पर षष्ठी देवी का पाठ करने से अरिष्ट योगों का निवारण हो जाता है। जन्मदिन को मार्कण्डेयादि अष्ट चिरंजीवी महापुरुषों के पूजन के साथ-साथ षष्ठी देवी का पूजन व आहुतियाँ देने से जातक को स्वास्थ्य लाभ, धनादि सम्पदा का लाभ तथा पुत्र सन्तति का सुख प्राप्त होता है।

[विशेष पूजन विधि के लिए देखें—पं. पन्ना लाल कृत 'जन्मदिन पूजा पद्धति']

इस स्तोत्र की महिमा में कहा गया है कि—जो निःसंतान व्यक्ति षष्ठीदेवी के इस स्तोत्र को निरन्तर एक वर्ष तक सुनते (पाठ करते) हैं, उन्हें श्रेष्ठ और दीर्घजीवी पुत्र प्राप्त होता है। जो महावंध्या (बाँझ नारी) एक वर्ष तक षष्ठी देवी की भक्ति के साथ पूजा करके इस स्तोत्र को सुनती है, वह सब पापों से छूट जाती है और महावंध्या होने पर भी षष्ठी देवी के प्रसाद से वीर, गुणी, विद्वान्, यशस्वी, दीर्घायुसम्पन्न पुत्र उत्पन्न करती है। जो नारी काकवंध्या हो (जिसे केवल एक संतान उत्पन्न हो) और जिस स्त्री के पुत्र पैदा होकर मर जाते हों, वह यदि स्तोत्र को एक वर्ष तक लगातार सुनती रहे तो षष्ठीदेवी अनुग्रह से पुत्रवती हो जाती है। बालक के रोगी होने पर, यदि उसके माता-पिता इस स्तोत्र को सुनें तो षष्ठीदेवी की कृपा से एक महीने के भीतर ही बालक रोगमुक्त हो जाता है।

—श्री षष्ठी देवी का स्तोत्र—

नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धयै शान्त्यै नमो नमः। शुभायै देवसेनायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः। सुखदायै मोक्षदायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
शक्तेः षष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमो नमः।

देवी को नमस्कार है। महादेवी को नमस्कार है। भगवती सिद्धि एवं शान्ति को नमस्कार है। शुभा, देवसेना एवं भगवती षष्ठी को बार-बार नमस्कार है। वरदान देने वाली, पुत्र देने वाली, धन देने वाली, सुख प्रदान करने वाली एवं मोक्षदाता भगवती षष्ठी को बार-बार नमस्कार है। मूल प्रकृति के छठे अंशसे प्रकट शक्तिस्वरूपा भगवती सिद्धा को नमस्कार है।

मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ पारायै पारदायै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
सारायै शारदायै च पारायै सर्वकर्मणाम्॥ बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम्॥ प्रत्यक्षायै च भक्तानां षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
पूज्यायै स्कन्दकान्तायै सर्वेषां सर्वकर्मसु॥ देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
शुद्धसत्त्वस्वरूपायै वन्दितायै नृणां सदा॥ हिंसाक्रोधवर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि॥

माया, सिद्धयोगिनी, स्वयंमुक्त एवं मुक्तिदात्री, सारा, शारदा और परादेवी नाम से शोभा पाने वाली भगवती षष्ठी को बार-बार नमस्कार है। बालकों की अधिष्ठात्री, कल्याणदात्री, कल्याणस्वरूपिणी एवं कर्मों का फल प्रदान करने वाली देवी षष्ठी को बार-बार नमस्कार है। अपने भक्तों को प्रत्यक्ष दर्शन देने वाली तथा सबके लिये सम्पूर्ण कार्यों में पूजा प्राप्त करने की अधिकारिणी स्वामी कार्तिकेयकी प्राणप्रिया देवी षष्ठी को बार-बार नमस्कार है। मनुष्य जिनकी नित्य वन्दना करते हैं और देवताओं की रक्षा में जो तत्पर रहती हैं, उन शुद्धसत्त्वस्वरूपा देवी षष्ठी को बार-बार नमस्कार है। हिंसा और क्रोध से रहित देवी षष्ठी को बार-बार नमस्कार है। हे सुरेश्वरि ! आप मुझे धन दें, प्रिय पत्नी दें, पुत्र देने की कृपा करें।

धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः। भूमिं देहि प्रजां देहि देहि विद्यां सुपूजिते॥
कल्याणं च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः।

मुझे धर्म दें, यश दें, हे षष्ठीदेवि ! आपको बार-बार नमस्कार है। हे सुपूजिते ! आप मुझे भूमि दें, प्रजा दें, विद्या दें तथा कल्याण एवं जय प्रदान करें। हे षष्ठीदेवि ! आपको बार-बार नमस्कार है।

—पुत्र अभिलाषाष्टकस्तोत्र—

ऋषिवर विश्वानर की धर्मपत्नी शुचिष्मतीने अपने पति से प्रार्थना की कि 'मेरे शिव-समान पुत्र हो।' यह सुनकर विश्वानर क्षणभर तो चुप रहे, फिर बोले 'एवमस्तु' और उन्होंने स्वयं ही १२ महीने तक फलाहार, जलाहार और वाय्वाहार के आधार पर घोर तप किया। फिर काशी जाकर विकरादेवी तथा सिद्धि-विनायक के समीप चन्द्रकूप में स्नान करके वहीं वीरेश्वर के समीप अभिलाषाष्टक के आठ मंत्रों से बड़ी श्रद्धापूर्वक स्तुति की। इससे भगवान् शंकर प्रसन्न हो गये और कुछ ही दिन बाद विश्वानर की पत्नी शुचिष्मती को गर्भ रह गया। समय आने पर उसने शिवसदृश पुत्र गृहपति (अग्नि) को जन्म दिया। अतः संतान की कामना वाले पति या पत्नी को चाहिये कि प्रातः शौच-स्नानादिसे निवृत्त हो शिवजी का पूजन करे और इस स्तोत्र का आठ या अट्ठाईस बार पाठ करे। इस प्रकार एक वर्षपर्यन्त पाठ करते रहने से पुत्र की प्राप्ति होती है। मूल स्तोत्र इस प्रकार है—

स्तोत्र—

एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं समस्तं सत्यं सत्यं नेह नानास्ति किञ्चित्।
एको रुद्रो न द्वितीयोऽवतस्थे तस्मादेकं त्वां प्रपद्ये महेशम्॥१॥
एकः कर्ता त्वं हि विश्वस्य शम्भो नाना रूपेष्वेकरूपेऽस्यरूपः।
यद्वत्प्रत्यस्वर्क एकोऽप्यनेक-स्तस्मान्नान्यं त्वां विनेशं प्रपद्ये॥२॥
रज्जौ सर्पः शुक्तिकायां च रूप्यं नैरः पूरस्तन्मृगाख्ये मरीचौ।
यद्वत्तद्वद् विश्वगेष प्रपञ्चो यस्मिन् ज्ञाते तं प्रपद्ये महेशम्॥३॥
तोये शैत्यं दाहकत्वं च वह्नौ तापो भानौ शीतभानौ प्रसादः।
पुष्पे गन्धो दुग्धमध्ये च सर्पिर्यत्तच्छम्भो त्वं ततस्त्वां प्रपद्ये॥४॥
शब्दं गृह्णास्यश्रवास्त्वं हि जिघ्रे-रघ्राणस्त्वं व्यंघ्रिरायासि दूरात्।
व्यक्षः पश्येस्त्वं रसज्ञोऽप्यजिह्वः कस्त्वां सम्यग् वेत्त्यतस्त्वां प्रपद्ये॥५॥
नो वेदस्त्वामीश साक्षाद्धि वेद नो वा विष्णुर्नो विधाताखिलस्य।
नो योगीन्द्रा नेन्द्रमुख्याश्च देवा भक्तो वेद त्वामतस्त्वां प्रपद्ये॥६॥
नो ते गोत्रं नेश जन्मापि नाख्या नो वा रूपं नैव शीलं न देशः।
इत्थंभूतोऽपीश्वरस्त्वं त्रिलोक्याः सर्वान् कामान् पूरयेस्तद् भजे त्वाम्॥७॥
त्वत्तः सर्वं त्वं हि सर्वं स्मरारे त्वं गौरीशस्त्वं च नग्नोऽतिशान्तः।
त्वं वै वृद्धस्त्वं युवा त्वं च बाल-स्तत्किं यत्त्वं नास्यतस्त्वां नतोऽस्मि॥८॥

यहां सब कुछ एकमात्र अद्वितीय ब्रह्म ही है। यह बात सत्य है, सत्य है। इस विश्व में भेद या नानात्व कुछ भी नहीं है। इसलिये एक अद्वितीयरूप आप महेश्वर की मैं शरण लेता हूँ॥१॥

शम्भो ! आप रूपरहित अथवा एकरूप होकर भी जगत् के नाना स्वरूपों में अनेक की भाँति प्रतीत होते हैं। ठीक उसी तरह, जैसे जल के भिन्न-भिन्न पात्रों में एक ही सूर्य अनेकवत् दृष्टिगोचर होता है। अतः आपके सिवा और किसी स्वामी की मैं शरण नहीं लेता॥२॥

जैसे रज्जुका ज्ञान हो जाने पर सर्प का भ्रम मिट जाता है, सीपी का बोध होते ही चाँदी की प्रतीति नष्ट हो जाती है तथा मृगमरीचिका का निश्चय होने पर उसमें प्रतीत होने वाली जलप्रवाह असत्य सिद्ध हो जाता है, उसी प्रकार जिनका ज्ञान होने पर सब ओर प्रतीत होने वाला यह सम्पूर्ण प्रपंच उन्हीं में विलीन हो जाता है, उन महेश्वर की मैं शरण लेता हूँ॥३॥

शम्भो ! जैसे जल में शीतलता, अग्नि में दाहकता, सूर्य में ताप, चन्द्रमा में आह्लाद, पुष्प में सुगन्ध तथा दूध में घी स्थित है, उसी प्रकार सम्पूर्ण विश्व में आप व्याप्त हैं, इसलिये मैं आपकी शरण लेता हूँ॥४॥

आप बिना कान के ही शब्द को सुनते हैं, नासिका के बिना ही सूँघते हैं, पैरों के बिना ही दूर से चले आते हैं, नेत्रों के बिना ही देखते और रसना के बिना ही रसका अनुभव करते हैं, आपको यथार्थ-रूप से कौन जानता है ? अतः मैं आपकी ही शरण लेता हूँ॥५॥

ईश ! वेद भी आपके साक्षात् स्वरूप को नहीं जानता, भगवान् विष्णु, सबके स्रष्टा ब्रह्मा भी आपको नहीं जानते, बड़े-बड़े योगीश्वर तथा इन्द्र आदि देवता भी आपको यथार्थ रूप से नहीं जानते, परन्तु आपका भक्त आपकी ही कृपा से आपको जानता है, अतः मैं आपकी ही शरण लेता हूँ॥६॥

ईश ! आपका न कोई गोत्र है, न जन्म है, न नाम है, न रूप है, न शील है और न कोई स्थान ही है, ऐसे होते हुए भी आप तीनों लोकों के स्वामी हैं और सभी मनोरथों को पूर्ण करते हैं, इसीलिये मैं आपकी आराधना करता हूँ॥७॥

कामारे ! आपसे ही सब कुछ है ; आप ही सब कुछ हैं, आप ही पार्वतीपति हैं, आप ही दिगम्बर है और अति शान्तस्वरूप हैं, आप ही वृद्ध हैं, आप ही तरुण हैं और आप ही बालक हैं। कौन-सा ऐसा तत्त्व है, जो आप नहीं हैं, सब कुछ आप ही हैं, अतः मैं आपके चरणों में मस्तक नवाता हूँ॥८॥

—त्रिखल जन्म फल एवं शान्ति—

तीन कन्याओं के पश्चात् लड़का उत्पन्न होना तथा तीन लड़कों के पश्चात् कन्या की उत्पत्ति त्रिखल दोषकारक मानी जाती है। इसके कारण लड़का पिता, नानके पक्ष को हानि तथा कन्या माता के लिए कष्टप्रद होते हैं। त्रिखल शान्ति करवा लेने से गृह में सुख शान्ति रहती है। शान्ति हेतु सूतकादि के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त्त में पत्नी सहित शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्रीगणपति-पूजन व नवग्रहादि पूजनोपरान्त कलश स्थापन करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान् की स्वर्णमयी मूर्त्ति (उसके अभाव में ताम्र की) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखलशान्ति कर्म किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश आप पूजा न कर पाए हों तो फिर बच्चे के जन्मदिन के आसपास किसी मुहूर्त्त में त्रिखल पूजा करवा लेनी कल्याणकारी होगी। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चाँदी, ताँबा) तथा साथ में गुड़, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का हाथ लगवाकर मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।

मेषादि राशियों का ग्रहगोचर फलादेश-2010 ई.

आगे बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिखा गया है। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण विषयों जैसे-विद्या, व्यवसाय, विवाह, सन्तान, विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं के उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म-समय, जन्म स्थान (Place & Time of Birth), माता-पिता एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। बड़ी विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 751 रु. से 1150 रु.। मध्यम जन्मपत्री की 375 रु., वार्षिक वर्षफल, उपाय आदि सहित की फीस 351 रु.। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पौंड अथवा 40 डालर होगी। डाक व्यय अतिरिक्त होगा, फीस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम इस पते पर भेजें-

-पं. विवेक शर्मा, सुपुत्र पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 (पंजाब), फोन-0181-2457959

राशिफल-जनवरी-सन् 2010 ई.

मेष—मासारम्भ में राशिस्वामी मंगल वक्री होकर नीच अवस्था में संचार करने से घरेलू सुखों में कमी व अशान्ति रहेगी। वृथा वाद-विवाद से मानसिक तनाव व हानि होगी। गत किए प्रयासों में सफलता प्राप्ति में विलम्ब होने से असन्तोष व्याप्त रहेगा। स्वास्थ्य के बारे में विशेष सावधानी रखें।

वृष—राशिस्वामी शुक्र अष्टम भावस्थ अस्त होकर संचार करने से बनते कार्यों में विलम्ब एवं अड़चनें रहेंगी। स्वास्थ्य कुछ ठीक न रहे। उत्तरार्द्ध भाग में शुक्र भाग्य स्थान में जाने से भाग्य से धन प्राप्ति और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

मिथुन—मासारम्भ में ही केतु का संचार तथा सूर्य-गुरु की दृष्टि रहेगी। अत्यधिक भाग-दौड़ के उपरान्त कार्यों का सफलता मिले। शनि की ढैय्या एवं दृष्टि के प्रभावस्वरूप भी व्यर्थ की भाग-दौड़ से परेशानी होगी। आय कम व व्यय अधिक रहेगा।

कर्क—मंगल इस राशि पर होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। व्यवसाय में संघर्ष तथा घरेलू उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। शरीर कष्ट हो। सन्तान सम्बन्धी कष्ट एवं चिन्ता बढ़ेगी। श्रीहनुमान उपासना करनी शुभ होगी।

सिंह—मासारम्भ में राशि स्वामी सूर्य बुध, शुक्र, राहु आदि पंचम भावस्थ है। विद्या एवं कार्य-व्यवसाय में नवीन क्षेत्रों में धन नियोजन करने की योजना बनेगी। राहु के कारण लाभ में अड़चनें भी रहेंगी, परन्तु गुरु की दृष्टि के कारण निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कन्या—शनि साढ़ेसति एवं शनि का संचार होने से बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ उत्पन्न होंगी। व्यवसाय एवं नौकरी में कठिन हालात का सामना हो। गृह कलह के कारण मानसिक तनाव एवं उलझनें बढ़ेंगी। नजदीकी मित्रों द्वारा परायों जैसा व्यवहार होने से मन विक्षुब्ध होगा।

तुला—मासारम्भ में शुक्र अस्तगत होने से सोची गई योजना में विघ्न-बाधाएँ पड़ेंगी। आय कम व खर्च अधिक होंगे। गुरु की दृष्टि होने से धर्म-कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी। ता. 12 के पश्चात् किसी निकट बन्धु से टकराव होगा।

मेष राशि (Aries)

(चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 26 मई तक राशि स्वामी मंगल नीच राशि में संचार करने से संघर्षपूर्ण हालात रहेंगे। 20 जुलाई से 19 अक्तू. तक मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से निर्वाह योग्य धन के साधन बनेंगे। 17 अक्तू. से 16 नवं. तक सूर्य की भी दृष्टि रहने से उत्तेजना एवं क्रोध से बचें।

वृश्चिक—राशिस्वामी मंगल नीचराशिगत होने तथा शनि की दृष्टि रहने से आय कम व खर्च अधिक रहेगा। स्वभाव में तेजी एवं भाई-बन्धु से मन-मुटाव रहेगा। अपने पुरुषार्थ से उन्नति और निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। स्वास्थ्य में विकार, किसी निकट बन्धु के साथ तकरार का भय।

धनु—मासारम्भ में ही इस राशि पर सूर्य, बुध, शुक्र, राहु आदि चतुर्ग्रही योग होने से धन-लाभ, निकट भाई-बन्धुओं के सहयोग से लम्बित एवं बिगड़े हुए कार्य बनेंगे। परन्तु प्रत्येक कार्य में विलम्ब से ही सफलता प्राप्त होगी। राहु के प्रभाव से अकारण क्रोध, उत्तेजना, व्यर्थ की भाग-दौड़ लगी रहेगी।

मकर—मासारम्भ से मंगल की उच्च दृष्टि पड़ने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. 14 के बाद सूर्य के प्रभाव से बनते कार्यों में विघ्न पैदा होंगे। आय की अपेक्षा खर्च अधिक होंगे।

कुम्भ—मासारम्भ से गुरु का संचार एवं मंगल की दृष्टि के प्रभाव से किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की सहायता द्वारा व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। आर्थिक उलझनों के कारण मानसिक तनाव भी रहेगा। चोटादि का भय रहेगा।

मीन—राशि स्वामी गुरु द्वादशभाव होने से अत्यधिक संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनेंगे। भूमि, मकान एवं वाहन सम्बन्धी परेशानियां पैदा हों। परिवार में व्यर्थ की भाग-दौड़ और खर्च की अधिकता रहेगी। माता-पिता को सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी।

राशिफल-फरवरी-सन् 2010 ई.

मेष—12 फर. तक सूर्य-मंगल के मध्य समसप्तक योग होने से व्यर्थ की दौड़-धूप, खर्चों की अधिकता होगी। क्रोध की अधिकता से कार्य बिगड़ने के योग हैं। आकस्मिक खर्चों के कारण परिवार में चिन्ता व परेशानी का माहौल होगा।

वृष—6 फर. से मासान्त तक शुक्र दशमस्थ गुरु के साथ संचार करने से मित्रों अथवा गुरुजनों की सहायता से रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त हो। कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी।

मिथुन—गुरु की दृष्टि के प्रभावस्वरूप विपरीत परिस्थितियों एवं रुकावटों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधन बढ़ेंगे। व्यवसायिक व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। माता-पिता का सहयोग विशेष लाभकारी होगा। धार्मिक कार्य करने की इच्छा जागृत होगी।

कर्क—मंगल की स्थिति के कारण व्यवसाय में भाग-दौड़ अधिक रहे। चिन्ताओं में वृद्धि तथा फिजूलखर्ची बढ़ेगी। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, परिवार में उथल-पुथल एवं अस्थिर हालात का सामना रहेगा। सुख-साधनों पर खर्च परन्तु निकटस्थ सम्बन्धी से मन-मुटाव के योग हैं।

सिंह—नवीन योजनाओं को कार्यरूप देने से सफल होंगे। शुभ मांगलिक कार्यों पर खर्च होंगे। आर्थिक हालात आगे से बेहतर होंगे। विदेशों से सम्बन्धित कार्यों में कुछ सफलता प्राप्त होगी।

कन्या—शनि साढ़ेसति के बावजूद किसी श्रेष्ठ व्यक्ति के प्रयासों द्वारा व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। स्त्री व संतान सुख कम मिलेगा। अकस्मात् यात्रा में व्यर्थ की परेशानी और व्यस्तताएं बढ़ेंगी।

तुला—शनि-साढ़ेसति का प्रभाव, मंगल व गुरु की दृष्टियों के फलस्वरूप मिश्रित प्रभाव रहेंगे। निर्वाह योग्य धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे।

वृश्चिक—शनि की दृष्टि के प्रभावस्वरूप व्यर्थ की दौड़-धूप, आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। नौकरी एवं व्यवसाय में विघ्न उत्पन्न होंगे। मासान्त में भी शरीर कष्ट, मानसिक तनाव और खर्च की अधिकता रहेगी। ऋणमोचन मंगल स्तोत्र का पाठ शुभ रहेगा।

धनु—मंगल अष्टमस्थ नीच राशिगत होने से भाई-बन्धु से तकरार, आय कम, खर्च अधिक रहेगा। आँखों में कष्ट और पेट-विकार रहेगा। आकस्मिक व्यय भी अधिक रहें। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें। श्री सूर्य कवच का पाठ करना शुभ रहेगा।

मकर—मासारम्भ में सूर्य का संचार होने से क्रोध अधिक व खर्च भी अधिक रहेगा। स्वास्थ्य भी कुछ नर्म रहेगा। कार्य-व्यवसाय में नवीन कार्य-प्रणाली अपनाने की योजना बनेगी। शनि वक्री होने से अकस्मात् धन का अपव्यय व शरीर कष्ट रहे।

कुम्भ—शनि की ढैय्या व संघर्षमय परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति हो। मंगल की दृष्टि होने से गृह में मन-मुटाव का वातावरण रहेगा। स्वभाव में क्रोध एवं चिड़चिड़ापन रहेगा। संयमपूर्ण व्यवहार करें।

मीन—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन की प्राप्ति होगी। विलासादि कार्यों पर धन खर्च होगा। घर-परिवार की तरफ से चिन्ताएँ उत्पन्न होंगी। कारोबार में कार्य-योजना को कार्यरूप देने में विलम्ब रहेगा।

राशिफल—मार्च—सन् 2010 ई.

मेष—धन लाभ एवं उन्नति के पर्याप्त अवसर मिलेंगे परन्तु वक्री व नीच मंगल के कारण समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। 10 मार्च से मंगल मार्गी होने

वृष राशि (Taurus)

(इ, उ, ए, ओ, व, वि, वृ, वे, वो)

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ में राशि स्वामी शुक्र अस्त होकर अष्टम में होने से कार्यों में विलम्ब व हानि रहें। (2) मार्च से 26 मार्च तक शुक्र उच्चस्थ होने से सुख-सुविधाओं पर खर्च अधिक होंगे। 5 सितं. से 30 नवं. तक मंगल की दृष्टि पड़ने से तनाव एवं उलझनें अधिक रहेंगी। (1) सितं. से वर्षान्त तक राशिस्वामी शुक्र का छटे संचार करना भी अशुभ है।

मिथुन राशि (Gemini)

(क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

ग्रहगोचर : वर्षभर

से परिस्थितियों में कुछ सुधार होगा। गत मास में किए गए किसी विशेष कार्य के लिए परिश्रम एवं प्रयास फलीभूत होंगे।

वृष—2 मार्च से 26 मार्च तक राशि स्वामी शुक्र उच्चस्थ संचार करने से आय के साधनों में वृद्धि होगी। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे, कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। वाहन, मनोरंजनादि सुख-सुविधाओं पर खर्च अधिक होंगे।

मिथुन—शनि की ढैय्या के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। अकस्मात् किसी कार्य में विलम्ब से क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगी। मंगल द्वितीय होने से अकारण क्रोध, व्यर्थ की भाग-दौड़ रहेगी। वृथा यात्रा, शत्रु भय, मानसिक तनाव, अवांछित स्थान परिवर्तन से परिवार में कलह-क्लेश और तनाव रहे।

कर्क—10 मार्च से मंगल इस राशि में मार्गी होने से कुछ कार्यों में लाभ के अवसर बढ़ेंगे। व्यवसाय के क्षेत्र में उतार-चढ़ाव के पश्चात् धन लाभ और सन्तान के कार्यों में उलझनें व विलम्ब हो। गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने की चेष्टाएँ करेंगे।

सिंह—मासारम्भ में सिंह राशि पर सूर्य, गुरु आदि ग्रहों की शुभ दृष्टि पड़ने से अच्छे व शुभ समाचार मिलेंगे। किसी प्रतिष्ठाजनक कार्य के बन जाने से मान-सम्मान में वृद्धि व हर्ष की प्राप्ति होगी।

कन्या—अत्यधिक संघर्ष के बावजूद धन लाभ अल्प रहे। अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। ता. 14 से बुध नीच राशि में जाने से घरेलू उलझनें व तनाव बढ़ेगा। भाई-बन्धुओं का सहयोग कम होगा।

तुला—राशिस्वामी शुक्र उच्चस्थ होने से, शनि साढ़ेसति व मंगल की अशुभ दृष्टि के बावजूद किसी कार्य के बन जाने से मान-सम्मान में वृद्धि व हर्ष की प्राप्ति होगी। घर में सुख-साधनों में वृद्धि होगी।

वृश्चिक—अति महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए भाग-दौड़ होगी। व्यर्थ की चिन्ता और बनते कार्यों में विलम्ब होने के योग हैं। अकस्मात् स्वास्थ्य में विकार और बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न हों।

धनु—राशि स्वामी गुरु तृतीयस्थ होने से निकट-बन्धुओं के साथ मन-मुटाव एवं तनाव की स्थिति रहेगी, परन्तु स्त्री/पति का सहयोग मिलेगा। राहु के प्रभाव से घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण गुप्त चिन्ताएं रहेंगी।

मकर—राशि स्वामी शनि वक्री होने से शरीर कष्ट, कुछ घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण मन परेशान रहे। द्वादशस्थ राहु के कारण बनते कामों में विघ्न और स्वास्थ्य परेशानी रहेगी। श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत रखना शुभ होगा।

कुम्भ—उलझनों एवं अड़चनों के बावजूद आय के साधनों में वृद्धि होगी। मंगल की अशुभ दृष्टि होने से क्रोध एवं उत्तेजना के कारण हानि होगी। किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने के भी संकेत हैं।

मीन—शनि की वक्र दृष्टि तथा गुरु द्वादशस्थ होने से कार्य-व्यवसाय में दौड़-धूप अधिक रहेगी। धन लाभ अल्प परन्तु खर्च अधिक होंगे। धार्मिक कार्यों में भी खर्च होगा।

राशिफल—अप्रैल—सन् 2010 ई.

मेष—मासारम्भ से 20 अप्रै. तक शुक्र के संचार के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च बढ़ेंगे। ता. 14 से इस राशि पर सूर्य-बुध योग होने से मान-

सम्मान में वृद्धि, आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। किसी नए काम में धन नियोजन करने की योजना बनेगी।

वृष—राशि स्वामी शुक्र द्वादशस्थ संचार करने से व्यर्थ की भाग-दौड़ और खर्च अधिक होगा। स्वास्थ्य में खराबी और गुस्सा अधिक आएगा। कार्य-व्यवसाय में संघर्ष और परिश्रम करने पर ही निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा।

मिथुन—धन लाभ के अवसर मिलेंगे। परन्तु निजी कारणों से उचित लाभ प्राप्त नहीं होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। आर्थिक उलझनों के कारण तनाव व चिन्ताएं रहेगी। श्री आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना शुभ रहेगा।

कर्क—आय की स्थिति में कुछ सुधार होगा। विलासादि कार्यों पर धन का खर्च होगा। घर-परिवार की तरफ से चिन्ता उत्पन्न होगी। मंगल के कारण स्वास्थ्य परेशानी और खर्चों में वृद्धि होगी। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे।

सिंह—13 अप्रै. तक सूर्य अष्टमस्थ तथा शनि साढ़ेसति के कारण स्वास्थ्य परेशानी और उत्तरदायित्वों में वृद्धि होगी। मानसिक तनाव, शत्रु भय और अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। ता. 14 से सूर्य भाग्यस्थ होने से गत किए प्रयासों में सफलता मिलेगी। धन लाभ के अवसर बढ़ेंगे।

कन्या—विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुज़ारे योग्य धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी उच्चाधिकारी से सम्पर्क स्थापित होगा। स्त्री सुख एवं घर-परिवार की ओर से खुशी का समाचार मिलेगा। धन का खर्च सोच-समझकर करें।

तुला—मासारम्भ में शुक्र की स्वगृही दृष्टि पड़ने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। परन्तु भाई-बन्धुओं का सहयोग कम होगा। खर्चों में वृद्धि होगी।

वृश्चिक—शनि की तृतीय दृष्टि होने से पारिवारिक एवं आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहे। ता. 14 से कठिन हालात के बावजूद धन प्राप्ति के कुछ साधन बनते रहेंगे। परिवार में मनमुटाव होगा। मासान्त में व्यवसायिक कार्यों में अड़चनों का सामना होगा।

धनु—राहु के कारण शारीरिक कष्ट, उदर विकार, सिर पीड़ा आदि परेशानियां होंगी। व्यर्थ के विवादों से बचें, अन्यथा हानि होगी। राशि स्वामी गुरु कुम्भस्थ होने से सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। सरकारी कार्यों में कुछ प्रगति होगी।

मकर—यह मास व्यवसाय की दृष्टि से शुभ होगा। नई योजना को कार्य रूप देने में अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। सरकारी कार्यों में कुछ विघ्नों के उपरान्त सफलता मिलेगी। मासान्त में घरेलू एवं आर्थिक उलझनें और परेशानियां बढ़ेंगी।

कुम्भ—गुरु के कारण बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म में रूचि एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। किसी निकट सम्बन्धी से धोखा मिलने के संकेत हैं। सतर्क रहें।

मीन—पूर्वार्द्ध भाग में सूर्य संचार करने से मिश्रित फल प्राप्त होंगे। बनते ढैय्या का प्रभाव तथा केतु का संचार रहने से स्वास्थ्य में खराबी, घरेलू उलझनें तथा बनते कार्यों में अड़चनें व खर्च अधिक रहेगा। वर्षारम्भ से 1 मई तक तथा फिर पुनः 1 नवं. से 6 दिसं. तक गुरु की पंचम दृष्टि रहने से शुभ एवं धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति, धीरे-धीरे निर्वाह योग्य आय बनती रहेगी।

कर्क राशि (Cancer)

(हि, हु, हे, हो, डा, डी, ड, डे, डो)

बहगोचर : वर्षारम्भ से 26 मई तक मंगल इस राशि पर नीचस्थ वक्री होकर संचार करेगा जिससे इस अवधि में घरेलू, व्यवसाय एवं धन सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। ता. 10 मार्च से मंगल मार्गी होने से परिस्थितियों में कुछ सुधार होगा। ता. 2 मई से 31 अक्तू. तक गुरु की शुभ पंचम उच्च दृष्टि रहने से बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। उत्तरार्द्ध भाग में निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे। कार्य-व्यवसाय में परिवर्तन व विस्तार सम्बन्धी योजना बनेगी।

राशिफल–मई–सन् 2010 ई.

मेष—राशि स्वामी मंगल नीच राशिगत होने से दौड़-धूप अधिक, व्यवसाय में अत्यधिक परिश्रम के पश्चात् निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। घरेलू उलझनें भी रहेंगी। ता. 26 के बाद हालात में सुधार के योग हैं।

वृष—मासारम्भ से 15 मई तक राशि स्वामी शुक्र स्वराशिगत होने से पराक्रम एवं उत्साह से किए गए कार्यों में सफलता मिलेगी। धनागमन के साधनों में वृद्धि होगी। ता. 15 के बाद शुक्र द्वितीयस्थ केतु के साथ संचार करने से आर्थिक झंझट रहेंगे। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे।

मिथुन—राशिस्वामी बुध लाभ स्थान में होने के कारण विपरीत परिस्थितियों के बावजूद विशिष्ट व्यक्तियों और समृद्ध मित्रों के सहयोग से अप्रत्याशित लाभ प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध में धर्म-कर्म में रूचि, शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होंगे।

कर्क—इस मास में परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। कारोबार में कई उतार-चढ़ाव व आर्थिक परेशानियाँ रहेंगी। स्थान परिवर्तन के भी योग हैं। मासान्त में आर्थिक क्षेत्र में उन्नति के योग हैं। किसी उच्चाधिकारी के साथ सम्पर्क बनेंगे।

सिंह—मासारम्भ में खर्च अधिक होंगे, कार्य-व्यस्तताएँ भी रहेंगी परन्तु संघर्ष के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। कार्य-व्यवसाय में लाभ व पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु शनि साढ़ेसति के कारण मानसिक तनाव व घरेलू उलझनें भी रहेंगी।

कन्या—शनि साढ़ेसति के प्रभाव के कारण अत्यधिक संघर्ष व भाग-दौड़ रहेगी। परन्तु 2 मई से गुरु की दृष्टि के कारण निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। किसी मंगल कार्य को सम्पन्न करने की योजना भी बनेगी।

तुला—शनि साढ़ेसति तथा 26 मई तक मंगल की दृष्टि रहने से धन लाभ साधारण ही रहेगा। खर्चों की अधिकता से मानसिक तनाव व क्रोध की भावना अधिक रहेगी। भाई-बन्धु से मन-मुटाव रहेगा। परन्तु धर्म-कर्म के कार्यों में रूचि बढ़ेगी। शुभ कार्यों पर भी खर्च होगा।

वृश्चिक—मासारम्भ में मंगल भाग्य भाव में नीचस्थ होने से पुरुषार्थ से उन्नति और धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। भाग-दौड़ अधिक रहेगी। मासान्त ता. 26 से मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से पराक्रम और उत्साह में वृद्धि होगी। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी।

धनु—मासारम्भ में सूर्य पंचमस्थ संचार करने से कुछ सोची हुई योजनाओं में कामयाबी प्राप्त होगी। पदोन्नति एवं धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। विदेश यात्रा के भी योग बन सकते हैं। यद्यपि राहु संचार के कारण कुछ लोगों के मुख्य कार्यों में विघ्न-बाधाएं रहेंगी।

मकर—प्रयास करने पर लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। अनेक समस्याओं के

समाधान होने के अवसर बढ़ेंगे। परिवार में निकट बन्धुओं से मन-मुटाव होगा। किसी से धोखा मिलने के योग हैं। धन हानि होने का भय रहेगा।

कुम्भ—मंगल की दृष्टि होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। स्वास्थ्य ढीला, दाम्पत्य जीवन में परेशानी परन्तु सुख-साधनों पर अधिक खर्च होगा। मासान्त से कुछ रुके हुए कार्यों में प्रगति होगी। व्यवसायिक क्षेत्रों में उन्नति और धन लाभ के अवसर मिलेंगे। श्रीसत्यनारायण का व्रत रखना शुभ होगा।

मीन—2 मई से गुरु इस राशि पर संचार करने से परिश्रम करने पर आशाऽनुकूल धन प्राप्ति के साधन उपलब्ध होंगे। विद्यार्थी वर्ग को उच्च विद्या में सफलता के योग हैं। भाग्य से धन प्राप्ति और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

राशिफल–जून–सन् 2010 ई.

मेष—राशि स्वामी मंगल पंचम भाव में संचार करने से स्वास्थ्य परेशानी व चोटादि का भय रहेगा। गुज़ारे योग्य धन प्राप्ति व उन्नति के योग हैं। व्यर्थ की दौड़-धूप अधिक रहेगी। ता. 21 से कुछ परिवर्तनों के साथ नए-नए आयाम बनेंगे। परन्तु परिवार में कुछ मतान्तर और खर्च बढ़ेंगे।

वृष—मासारम्भ से शुक्र केतु के साथ होने से आर्थिक परेशानियां रहेंगी। 14 जून तक सूर्य का संचार होने से क्रोध एवं उत्तेजना अधिक रहेगी। ता. 9 के बाद शुक्र तृतीयस्थ होने से नए कार्यक्षेत्र में धन लगाने की योजना बनेगी। श्रीआदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना शुभ रहेगा।

मिथुन—परिश्रम से कोई विशेष रुका हुआ कार्य बनेगा। स्त्री व संतान की ओर से शुभ सूचना मिलेगी। नवीन कार्य की योजना को कार्यरूप देने के अवसर प्राप्त होंगे। ज़मीन, वाहनादि के क्रय-विक्रय की संभावना होगी। अकस्मात् यात्रा का भी प्रोग्राम बनेगा।

कर्क—गुरु की शुभ दृष्टि रहने से कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी। विद्यार्थियों को विद्या में सफलता मिलेगी। मित्रों एवं सम्बन्धियों के सहयोग से नए कार्य की योजना बनेगी।

सिंह—मंगल सिंह राशिगत संचार करने से यद्यपि उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, परन्तु व्यर्थ की भाग-दौड़, उत्तेजना, क्रोध अधिक रहे। उत्साहपूर्ण कार्य करने से कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। मासान्त में स्वास्थ्य में खराबी, आँखों में कष्ट व चोटादि का भय रहे।

कन्या—बनते कामों में अड़चनें, परिवार सम्बन्धी चिन्ता और मानसिक तनाव रहेगा। गुज़ारे लायक धन की प्राप्ति होगी। शनि साढ़ेसति के कारण शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व स्वास्थ्य हानि के योग हैं। विभिन्न उलझनों का सामना रहेगा।

तुला—शनि साढ़ेसति के कारण पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त कठिन समस्याओं का सामना रहे, व्यर्थ की भाग-दौड़ अधिक रहे। चिन्ताओं में वृद्धि तथा फिज़ूलखर्ची बढ़ेगी। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। ता. 27 के बाद अकस्मात् धन लाभ के योग हैं।

सिंह राशि (Leo)

(म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे)

ग्रहगोचर : शनि-साढ़ेसति का प्रभाव इस राशि पर वर्षभर रहेगा। ता. 26 मई से 19 जुला. तक मंगल सिंह राशिस्थ होने से यद्यपि उत्साह में वृद्धि होगी, परन्तु व्यर्थ की भागदौड़, उत्तेजना, क्रोध अधिक रहे। ता. 17 अक्तू. से 15 नवं. के मध्य सूर्य नीचस्थ होकर संचार होने स्वास्थ्य हानि व खर्च हों।

कन्या राशि (Virgo)

(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

ग्रहगोचर : शनि साढ़ेसति का प्रभाव वर्षभर रहेगा। ता. 2 मई से 31 अक्तू. तक तथा पुनः 6 दिसं.

वृश्चिक—मंगल की इस राशि पर स्वगृही दृष्टि रहने से व्यवसायिक क्षेत्रों में विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। भाई-बन्धु से मन-मुटाव और धन का अपव्यय होगा। वृथा भाग-दौड़ और मन अशान्त रहेगा।

धनु—धन एवं सुख की प्राप्ति, स्त्री व संतान सुख, विद्या में सफलता और आमोद-प्रमोद आदि साधनों में वृद्धि होगी। किसी नवीन कार्य की योजना बने, व्यवसाय में उन्नति व धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। स्त्री व संतान की ओर से प्रसन्नता मिले।

मकर—राशि स्वामी शनि मार्गी होने से मान-सम्मान में वृद्धि, धार्मिक कार्यों की ओर अभिरूचि बढ़ेगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे, भूमि, सवारी आदि सुख-साधनों में वृद्धि होगी। महिलाओं को मानसिक तनाव और धन की चिन्ता रहेगी।

कुम्भ—मंगल की दृष्टि होने से अत्यधिक क्रोध, व्यर्थ के वाद-विवाद में समय नष्ट हो। पदोन्नति में विघ्न उत्पन्न होंगे। निकट सहयोगी से कपटपूर्ण धोखा मिले। मानसिक तनाव व आर्थिक परेशानी रहेगी।

मीन—अचानक धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे और नौकरी में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे, परन्तु व्यक्तिगत कारणों से उचित लाभ नहीं होगा। मंगल और शनि दोनों की दृष्टि रहने से निकट बन्धुओं के साथ कलह-क्लेश एवं विवाद का भय।

राशिफल–जुलाई–सन् 2010 ई.

मेष—मासारम्भ में राशि स्वामी मंगल पंचम भाव में होने से अनिश्चितता के बावजूद कार्य व्यवसाय में कुछ नए मुद्दों पर विचार विमर्श होगा। कुछ असमंजस के कारण लाभ मार्ग में व्यवधान और विलम्ब होगा। ता. 20 से इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। परन्तु खर्च अधिक रहेंगे।

वृष—मासारम्भ में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 11 से मान-सम्मान में वृद्धि और यशस्वी कार्य करने का अवसर होगा। परन्तु ता. 20 के पश्चात् मानसिक तनाव, शत्रु भय, सांझेदारी के कार्यों में विशेष लाभ नहीं होगा।

मिथुन—ता. 5 तक बुध स्वराशिगत संचार करने से कुछ कार्यों में सफलता, लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। ता. 16 के पश्चात् उलझनों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि एवं विदेश सम्बन्धी कार्यों में सफलता मिलने के योग हैं। स्त्रियों को अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

कर्क—मासारम्भ से इस राशि पर गुरू की उच्चदृष्टि होने से किसी प्रतिष्ठित मित्र की सहायता से बिगड़े हुए कार्य बनेंगे। नए कार्य की योजना बनेगी। परन्तु ता. 16 से सूर्य का संचार होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, पेट विकार तथा निकट भाई-बन्धुओं से मन-मुटाव एवं विरोध बढ़ेंगे।

सिंह—ता. 19 तक मंगल सिंह राशिगत होने से यद्यपि उत्साह में वृद्धि परन्तु व्यर्थ की भाग-दौड़, उत्तेजना एवं क्रोध अधिक रहेगा। ता. 16 से सूर्य (राशिस्वामी)

कर्क राशि में होने से यात्राएँ अधिक, धन का खर्च व्यर्थ के कामों में होगा। आँखों में कष्ट एवं सिर-दर्द रहेगा।

कन्या—मासारम्भ में संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 20 से इस राशि पर मंगल-शनि का योग होने से मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक परिश्रम करने पर ही धन लाभ के योग हैं। गुस्सा ज्यादा आएगा।

तुला—राशि स्वामी शुक्र नीच राशिगत एवं शनि की साढ़ेसति होने से स्वास्थ्य में विकार, घरेलू उलझनें, आकस्मिक खर्च में वृद्धि होगी। वृथा भाग-दौड़, मानसिक तनाव, यात्रादि में परेशानी और सुख साधनों एवं वाहनादि पर खर्च होगा।

वृश्चिक—ता. 20 तक इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से व्यवसायिक क्षेत्रों में विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। भाई बन्धु से मन-मुटाव एवं धन का खर्च अधिक होगा। मासान्त में धैर्य और साहस से करने पर लाभ के अवसर मिलेंगे।

धनु—मासारम्भ में मंगल की चतुर्थ दृष्टि एवं राशिस्वामी गुरू वक्री होने से स्वास्थ्य में विकार, मानसिक चिन्ताएं, गुस्सा ज्यादा एवं बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। परन्तु भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों से लाभ भी होने के योग हैं। खर्च अधिक रहेंगे।

मकर—मासारम्भ से ही परिश्रम और संघर्ष करने पर लाभ प्राप्त होगा। किन्तु किसी अति-आवश्यक कार्य पर धन का खर्च अधिक रहे। ता. 16 से सूर्य की सप्तम दृष्टि पड़ने से उलझनों के बावजूद पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। परन्तु मानसिक तनाव व उत्तेजना अधिक रहे।

कुम्भ—मासारम्भ में हालात में सुधार व कुछ बिगड़े काम बनेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल होगा। परन्तु संतान सम्बन्धी चिन्ता रहे। ता. 20 के पश्चात् परिवार में शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। परन्तु भूमि-जायदाद के मतभेद दूर होने में विलम्ब होगा।

मीन—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की दृष्टि रहने से क्रोध एवं उत्तेजना अधिक रहे। किसी प्रतिष्ठित मित्र की सहायता से बिगड़े हुए कार्य बनेंगे। परन्तु ता. 20 से मंगल-शनि की दृष्टि रहने से स्वास्थ्य में विकार, मानसिक तनाव एवं चोटादि का भय रहेगा।

राशिफल–अगस्त–सन् 2010 ई.

मेष—इस मास में मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम और संघर्ष का सामना रहेगा। परन्तु ता. 16 के पश्चात् कुछ रूके हुए कार्यों में प्रगति होगी। किन्तु स्वास्थ्य परेशानी और वाहनादि के क्रय-विक्रय में धन हानि होने के योग हैं।

वृष—इस मास में मिलाजुला प्रभाव ही होगा। संतान सम्बन्धी चिन्ता, परिवार में कुछ मतान्तर भी रहेगा। ता. 20 के पश्चात् परिवार में शुभ मंगल कार्यों पर खर्च अधिक होगा। परन्तु धन सम्बन्धी कुछ समस्याएं भी उभरेंगी।

मिथुन—मासारम्भ में व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ अनिश्चितता बनी रहेगी। आय कम व व्यय अधिक रहेगा। परन्तु ता. 20 से बुध वक्री होने से आकस्मिक घटना घटेगी। धन का खर्च भी अकस्मात् बढ़ेगा। स्वास्थ्य नर्म रहेगा।

कर्क—ता. 16 तक सूर्य का संचार होने से स्वास्थ्य परेशानी और परिवार में निकट बन्धुओं से तनाव की स्थिति रहेगी। परन्तु ता. 17 से पुरूषार्थ में वृद्धि, परिवारिक सहयोग से कुछ कार्यों में सिद्धि प्राप्त हो। व्यर्थ का खर्च अधिक होगा।

सिंह—मासारम्भ में किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति और धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे। परन्तु ता. 17 से सूर्य सिंह राशिगत संचार करने से विघ्नों के बावजूद कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि परन्तु गुस्सा ज्यादा आयेगा।

कन्या—इस राशि पर शुक्र-मंगल-शनि का संचार एवं शनि की साढ़ेसति के कारण आय कम व खर्च अधिक होगा। स्वभाव में तेजी एवं उत्तेजना से बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। दुर्घटना में चोटादि का भय रहेगा। सावधानी बरतें।

तुला—राशि स्वामी शुक्र नीचराशिगत व शनि की साढ़ेसति के कारण स्वास्थ्य परेशानी रहे। व्यर्थ की भाग-दौड़, खर्च अधिक, संघर्ष और परिश्रम करने पर ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 19 के पश्चात् विदेशी सम्बन्धों से लाभ के अवसर मिलेंगे।

वृश्चिक—राशि स्वामी मंगल-शुक्र-शनि के साथ कन्या राशि में संचार कर रहा है जिससे आर्थिक हालात कुछ चिन्ताजनक रहेंगे। वृथा भाग-दौड़, घरेलू उलझनें, मानसिक तनाव रहेगा। परन्तु गुरू की दृष्टि इस राशि पर रहने से सुख के साधनों में वृद्धि एवं मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

धनु—मंगल की दृष्टि इस राशि पर रहने से मानसिक तनाव, घरेलू उलझनें, खर्च ज्यादा और अत्यधिक संघर्ष के बाद भी धन लाभ अल्प रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में कुछ रूके हुए कार्यों में प्रगति एवं सुधार होगा। आय के साधन भी बनते रहेंगे।

मकर—ता. 15 तक सूर्य की सप्तम दृष्टि पड़ने से उलझनों के बावजूद पराक्रम एवं पुरूषार्थ में वृद्धि, धन का खर्च विलास-मनोरंजन आदि कार्यों पर अधिक होगा। परन्तु शनि के कारण ता. 18 से आर्थिक एवं व्यवसायिक परेशानियां बढ़ेंगी। सावधानी बरतें।

कुम्भ—मासारम्भ से उलझनों के बावजूद धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. 16 से सूर्य की दृष्टि रहने से क्रोध एवं उत्तेजना अधिक रहे। परिवारिक सदस्यों के साथ मतान्तर पैदा होने के संकेत हैं। श्री सुंदरकांड का पाठ करना शुभ रहेगा।

मीन—मास के आरम्भ से राशि स्वामी गुरू वक्री होने से विघ्न बाधाओं के बावजूद निर्वाह धन की प्राप्ति होगी। इस राशि पर मंगल-शनि की दृष्टि होने से मानसिक तनाव बढ़ेगा। गुप्त शत्रुओं से परेशानी एवं वाहनादि से चोटादि का भय रहे। सावधानी बरतें।

से वर्षान्त गुरु की विशेष सप्तम दृष्टि कुछ शुभ रहेंगी। ता. 20 जुला. से 5 सितं. तक इस राशि में मंगल-शनि योग अशुभ होगा। 1 अग. से 1 सितं. तक शुक्र नीचस्थ होने से सवारी, टी.वी. आदि अन्य मनोरंजन विषयों पर खर्च अधिक रहेंगे।

तुला राशि (Libra)

(रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते)

ग्रहगोचर : शनि साढ़ेसती का प्रभाव वर्षभर रहेगा। परन्तु वर्षारम्भ से 1 मई तक तथा फिर 1 नवं. से 5 दिसं. तक गुरु की दृष्टि पड़ने से मिश्रित फल प्राप्त होंगे। वर्षारम्भ से 26 मई तक मंगल की भी विशेष दृष्टि रहने से क्रोध एवं उत्तेजना अधिक रहेगी।

वृश्चिक राशि (Scorpio)

(तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

राशिफल—सितम्बर—सन् 2010 ई.

मेष—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक रहेगा। ता. 5 से मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से वर्तमान परिस्थितियों में अचानक परिवर्तन आ सकता है। भूमि-वाहनादि का क्रयविक्रय होगा परन्तु अकारण क्रोध, उत्तेजना एवं व्यर्थ की भागदौड़ लगी रहेगी।

वृष—ता. 1 से राशि स्वामी शुक्र षष्ठं संचार करने से बनते कामों में विघ्न एवं विलम्ब, खर्च अधिक होंगे। स्वास्थ्य भी कुछ ढीला रहेगा। ता. 5 से मंगल की दृष्टि के कारण मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें रहेंगी। यात्रादि पर खर्च हो।

मिथुन—ता. 12 तक बुध वक्री होने से अकस्मात् कुछ कार्यों में विघ्न, धन का खर्च अधिक और व्यर्थ की चिन्ता रहेगी। परन्तु उत्तरार्द्ध भाग में किसी नये कार्य की योजना बनेगी। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे।

कर्क—इस राशि पर गुरू की उच्च दृष्टि होने से उत्साह व पराक्रम शक्ति बनी रहेगी। कार्य क्षेत्र में विभिन्न योजनाओं पर विचार होगा। धन लाभ के अवसर मिलेंगे। परन्तु संतान के कार्यों एवं सुख साधनों पर खर्च अधिक होगा।

सिंह—ता. 16 तक सूर्य स्वराशिगत संचार करेगा। जिससे दैनिक कार्यों एवं सरकारी क्षेत्रों में कुछ रूके कार्यों में प्रगति होगी। यद्यपि आय के साधन सीमित रहेंगे। ता. 17 से राशि स्वामी सूर्य द्वितीयस्थ संचार करने से वृथा भ्रमण, व्यर्थ का खर्च एवं मुश्किल हालात में धन लाभ मध्यम रहेगा।

कन्या—शनि की साढ़ेसति एवं राशि स्वामी बुध द्वादश होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण हालात का सामना रहेगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ एवं मानसिक तनाव रहेगा। परन्तु ता. 17 के पश्चात् निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी।

तुला—ता. 1 से राशि स्वामी शुक्र स्वराशिगत संचार करने से अपने पुरूषार्थ द्वारा धन लाभ के अवसर मिलेंगे। अधिकतर समय मनोरंजन के कार्यों में व्यतीत होगा। सुख-साधनों पर धन का खर्च हो। परन्तु शनि-साढ़ेसति के कारण मानसिक तनाव एवं स्वास्थ्य ढीला रहेगा।

वृश्चिक—ता. 5 से राशि स्वामी मंगल बाहरवें (द्वादश) संचार कर रहा है जिससे बनते कामों में विघ्न और विलम्ब होगा। आर्थिक उलझनों के कारण मानसिक तनाव रहे। नौकरी में किसी से धोखा मिलने के योग हैं। चोटादि का भय रहे। सावधानी बरतें।

धनु—इस मास में मिश्रित प्रभाव होगा। गत किए गए प्रयासों से किसी विशेष कार्य में सफलता मिले। विदेश सम्बन्धी कार्यों में विघ्नों का सामना रहेगा। ता. 17 के पश्चात् किसी नए कार्य में विनियोग का लाभ होने के योग हैं। परन्तु स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

मकर—ता. 5 से मंगल की उच्चदृष्टि रहने से पराक्रम एवं पुरूषार्थ में वृद्धि होगी। आय एवं खर्च दोनों में वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध भाग में शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। संघर्ष के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। मंगल स्तोत्र का पाठ करना शुभ रहेगा।

कुम्भ—ता. 15 तक सूर्य की दृष्टि रहने से गुस्सा ज्यादा, मानसिक तनाव एवं परिवारिक सदस्यों के साथ मतान्तर पैदा होने के संकेत हैं। आय कम और खर्च अधिक रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। कोई बिगड़ा हुआ कार्य बनेगा।

मीन—पूर्वार्द्ध भाग में राशि स्वामी गुरू वक्री होने से भाई-बन्धुओं से मेल-जोल परन्तु सर्विस आदि में अनेक उतार-चढ़ाव का सामना रहे। उत्तरार्द्ध में शनि की दृष्टि के कारण स्वास्थ्य परेशानी, उदर विकार और वृथा वाद-विवाद में परेशानी रहे।

ग्रहगोचर : इस राशि पर वर्षभर शनि की तृतीय शत्रु दृष्टि रहेगी। राशि स्वामी मंगल वर्षारम्भ से 26 मई तक नीच राशिगत (कर्क) में संचार करने से आय कम व खर्च अधिक रहेगा। ता. 20 अक्तू. से 30 नवं. तक मंगल स्वराशिगत (वृश्चिक) संचार तथा सूर्य का 16 नवं. से 14 दिसं. तक इस राशि पर संचार करना शुभ रहेगा।

धनु राशि (Sagittarius)

(ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से राशि स्वामी गुरु तृतीयस्थ कुम्भ राशिगत संचार करेगा। ता. 2 मई से गुरु मीन राशि में संचार करना शुभ रहेगा। ता. 23 जुला. से 17 नवं. तक गुरु वक्री रहेगा। ता. 1 नवं. से 5 दिसं. तक गुरु पुनः कुम्भ राशि में संचार करेगा।

राशिफल—अक्तूबर—सन् 2010 ई.

मेष—ता. 19 तक मंगल की सप्तम स्वगृही दृष्टि होने से अत्यधिक परिश्रम के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। कुछ योजनाओं को क्रियान्वित करने के संकेत मिलते हैं। परन्तु ता. 17 से सूर्य की भी दृष्टि रहने से क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगी। आय से खर्च अधिक होंगे।

वृष—इस मास में मंगल की दृष्टि पड़ने से परिवारिक परेशानी, कलह एवं वृथा तनाव की स्थिति रहे। क्रोध व अशान्ति, दौड़-धूप करने पर भी आय की अपेक्षा व्यय अधिक रहेगा। राशि स्वामी शुक्र भी छटे संचार करने से बनते कामों में विघ्न परन्तु यात्रादि पर खर्च अधिक हो।

मिथुन—मासारम्भ में मानसम्मान में वृद्धि किन्तु कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में संघर्ष अधिक रहेगा। चोटादि का भय रहेगा। ता. 19 से मंगल की दृष्टि पड़ने से किसी नज़दीकी बन्धु से कलह, मानसिक तनाव, गुस्सा ज्यादा आएगा। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कर्क—इस मास में गुरू की पंचम उच्च दृष्टि रहने से किसी रूके हुए कार्य में सुधार एवं धन लाभ के योग हैं। धर्म-कर्म में रूचि रहेगी। परन्तु ता. 17 के पश्चात् व्यवसायिक क्षेत्रों में उतार-चढ़ाव एवं दूरस्थ यात्राएँ होने के संकेत हैं। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

सिंह—पूर्वार्द्ध भाग में शनि की साढ़ेसति के कारण व्यर्थ की भाग-दौड़, आकस्मिक खर्च और क्रोध के कारण हानि होने की आशंका रहेगी। ता. 17 से सूर्य नीचराशिगत होने से उत्तरार्द्ध में बनते कामों में विघ्न, सुख-साधनों पर खर्च होगा। आँखों में कष्ट के योग हैं।

कन्या—मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य-शनि-बुध ग्रहों का संचार तथा गुरू की दृष्टि होने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुज़ारे योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। परिवार में खुशी के अवसर भी मिलेंगे। ता. 17 से किसी बने हुए कार्य में स्थिति बिगड़ सकती है। स्वास्थ्य भी ढीला रहे। सावधनी बरतें।

तुला—राशि स्वामी शुक्र स्वराशिगत संचार करने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। ता. 17 से सूर्य भी तुला में आने से

परिवारिक उलझनें बढ़ेंगी। शनि साढ़ेसति के कारण खर्च में वृद्धि, शरीर कष्ट, चोटादि का भय और मानसिक परेशानी रहे।

वृश्चिक—राशि स्वामी मंगल ता. 19 तक द्वादश संचार करने से व्यवसाय में अड़चनें, खर्च अधिक एवं घरेलू परेशानियों के कारण मन अशान्त रहे। ता. 20 से मंगल स्वराशिगत संचार करने से कुछ सोची योजनाओं में सफलता, परिवारिक सुखों में वृद्धि एवं धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे।

धनु—पूर्वार्द्ध भाग में धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे परन्तु खर्च अधिक, मानसिक तनाव और स्वभाव में क्रोध की भावना अधिक रहे। उत्तरार्द्ध में परिवार में विलासादि कार्यों पर खर्च परन्तु स्त्री एवं संतान सम्बन्धी कुछ परेशानी रहे।

मकर—ता. 19 तक इस राशि पर मंगल की उच्च दृष्टि रहने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद व्यवसाय में धन लाभ एवं पदोन्नति के योग हैं। राशि स्वामी शनि भाग्य स्थान पर होने से यद्यपि आय के साधन बनते रहेंगे परन्तु धन का लेन-देन करते समय धोखे की संभावना रहेगी। सावधानी बरतें।

कुम्भ—राशि स्वामी शनि अष्टम भाव में है। जिससे बनते कामों में विघ्न, स्वास्थ्य ढीला और वृथा यात्रा में परेशानी रहेगी। ता. 20 से मंगल की विशेष दृष्टि रहने से कुछ मानसिक तनाव, घरेलू एवं व्यवसायिक कारणों से मन परेशान रहेगा। श्री सुन्दरकांड का पाठ करना शुभ रहेगा।

मीन—पूर्वार्द्ध भाग में ता. 16 तक सूर्य की दृष्टि पड़ने से बनते कामों में विघ्न, परिवारिक उलझनें और खर्च अधिक रहेंगे। परन्तु उत्तरार्द्ध में संतान सम्बन्धी किसी कार्य के बन जाने से खुशी एवं मानसम्मान में वृद्धि होगी। सुख साधनों पर खर्च अधिक होगा।

राशिफल—नवम्बर—सन् 2010 ई.

मेष—ता. 16 तक सूर्य की दृष्टि रहने से आय के साधन कुछ ठीक रहेंगे परन्तु क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगी। आकस्मिक खर्च भी अधिक होंगे। ता. 19 के पश्चात् भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों में कुछ लाभ एवं आय के साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु गुस्सा ज्यादा आएगा।

वृष—राशिस्वामी शुक्र छटे संचार करने से बनते कामों में विघ्न, वृथा यात्रा एवं पेटविकार आदि से परेशानी रहे। उत्तरार्द्ध में विलासादि कार्यों पर खर्च, स्त्री एवं संतान सुख, व्यवसाय में धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी।

मिथुन—इस मास में मंगल की दृष्टि पड़ने से आर्थिक कार्यों में व्यवधान होने पर भी गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु ता. 17 से संतान सम्बन्धी चिन्ता एवं व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। विदेशी सम्बन्धियों से लाभ के अवसर मिलेंगे।

कर्क—पूर्वार्द्ध भाग में कुछ सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। शुभ मंगल कार्यों में खर्च होगा। उत्तरार्द्ध में आय व सुख साधनों में वृद्धि

मकर राशि (Capricorn)

(भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी)

बहगोचर : राशि स्वामी शनि वर्षभर कन्या राशि (नवमस्थ) में होने से भाग्योन्नति व धन लाभ के मार्ग में अड़चनें पैदा हों। ता. 13 जन. से 30 मई तक शनि वक्री रहने से घरेलू तनाव व कारोबारी उलझनें बढ़ेंगी।

कुम्भ राशि (Aquarius)

(गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द)

बहगोचर : वर्षारम्भ से 30 अप्रै. तक गुरु का संचार इस राशि पर होने से शुभ फल प्राप्त होंगे। ता. 19 जुला. तक मंगल की दृष्टि तथा वर्षभर शनि की ढैय्या का प्रभाव रहेगा। ता. 16 अग. से 15 सितं. तक सूर्य की दृष्टि तथा 19 अक्तू. से 30 नवं. तक मंगल की दृष्टि रहेगी।

के साथ-साथ विदेशी कार्यों में प्रगति होगी। परन्तु स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं वृथा मानसिक तनाव रहेगा।

सिंह—ता. 15 तक राशिस्वामी सूर्य नीच राशिस्थस्थ होने से स्वास्थ्य में गड़बड़, धन हानि, घरेलू व कारोबारी उलझनें पैदा होगी। परन्तु इस मास में गुरू की दृष्टि पड़ने से अकस्मात् धन लाभ तथा कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धर्म-कर्म में प्रवृत्ति रहेंगी।

कन्या—मासारम्भ में बनते कामों में विघ्न, परिश्रम व दौड़धूप अधिक रहेगी। दाम्पत्य जीवन में सुखद माहौल के बावजूद आर्थिक समस्या के कारण परेशानी हो। उत्तरार्द्ध में भूमि-सवारी आदि का क्रय-विक्रय और ता. 20 के पश्चात् अप्रत्याशित लाभ एवं नौकरी में उन्नति के योग हैं।

तुला—राशिस्वामी शुक्र तुला में संचार करने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार, परिवार में अकस्मात् खुशी एवं नए मित्रों से मेल-जोल बढ़ेगा। परन्तु धन का खर्च अधिक, स्थानपरिवर्तन, यात्रा में चोटादि का भय रहेगा। सावधानी बरतें।

वृश्चिक—इस मास में मंगल स्वराशिगत संचार एवं ता. 16 से सूर्य भी इसी राशि में संचार करने से साहसिक कार्यों में रूझान, परिश्रम एवं पराक्रम से धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। स्वभाव में तेजी और गुस्सा ज्यादा आएगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें।

धनु—राशि स्वामी गुरू ता. 1 से वक्री अवस्था में कुम्भ राशिगत संचार करने से परिस्थितियों में काफी उथल-पुथल होगी। प्रिय बन्धु से मेल-जोल, धन-लाभ एवं विदेश यात्रा के योग बनेंगे। ता. 18 से गुरू मार्गी होने से किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। सांझेदारी में लाभ के अवसर मिलेंगे।

मकर—राशि स्वामी शनि भाग्य स्थान पर होने से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। किसी विशेष कार्य में परिवारिक सहयोग से सफलता मिलेगी। परन्तु मासान्त में मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। आय से खर्च अधिक और वृथा वाद-विवाद में हानि होगी।

कुम्भ—ता. 1 से वक्री गुरु का संचार इसी राशि में होने से विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। गत हालात् में सुधार, आय के साधनों में वृद्धि और धर्म-कर्म में रूझान बढ़ेगा। परन्तु मंगल की विशेष दृष्टि रहने से स्वास्थ्य ढीला, स्वभाव में तेजी एवं व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहेगी।

मीन—ता. 1 से गुरू बाहरवें होने से धन का खर्च अधिक, उलझनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय एवं विदेशी कार्यों में कुछ प्रगति होगी। परन्तु ता. 18 से गुरू मार्गी होने से परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार होगा। उत्साह से किए कार्यों में सफलता के आसार बढ़ेंगे। किन्तु स्वास्थ्य परेशानी रहेगी।

राशिफल—दिसम्बर—सन् 2010 ई.

मेष—गत किए गए प्रयास फलीभूत होंगे। व्यवसाय व नौकरी में परिवर्तन के योग हैं। आय कम और खर्च अधिक होंगे। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। मन में अशान्ति व क्रोध की मात्रा अधिक होगी। अधिकांश समय मनोरंजन एवं वृथा कार्यों में व्यतीत होगा।

वृष—शुक्र षष्ठस्थ स्वराशिगत संचार करने से बनते हुए कार्यों में विघ्न एवं देरी, खर्च अधिक होंगे, परन्तु शुभ यात्रा भी होगी। मासान्त में आय सीमित व आकस्मिक व्यय एवं उलझनें बढ़ेंगी। आय की अपेक्षा धन का खर्च अधिक होगा।

मिथुन—मंगल की दृष्टि रहने से किसी नज़दीकी बन्धु से कलह पैदा होने का भय होगा। मन में तनाव व उत्तेजना भी अधिक रहेगी। यद्यपि उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। किसी नए कार्य की योजना भी बनेगी। अकस्मात् कार्य-व्यवसाय में व्यस्तताएँ बढ़ेंगी।

कर्क—विभिन्न प्रयास, भरपूर परिश्रम और हितचिन्तक का सहयोग लेकर ही वांछित सफलता सम्भव होगी। दाम्पत्य जीवन अनुकूल और आनन्दवर्द्धक रहेगा। ता. 6 से गुरू की उच्च-दृष्टि होने से संतान सुख में वृद्धि और धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी।

सिंह—मासारम्भ में गुरू की दृष्टि रहने से अकस्मात् धन लाभ तथा कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। परन्तु ता. 6 से विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति, आर्थिक हालात में सुधार एवं खुशी के अवसर मिलेंगे। मासान्त में शनि साढ़ेसति के कारण चोटादि का भय और शरीर कष्ट के योग हैं।

कन्या—मासारम्भ में स्वास्थ्य ढीला एवं शत्रुभय बना रहेगा। ता. 6 से इस राशि पर गुरू की दृष्टि रहने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। घर-परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे। परन्तु ता. 25 के पश्चात् संतान सम्बन्धी चिन्ता एवं धन का खर्च अधिक होगा।

तुला—राशि स्वामी शुक्र स्वराशिगत संचार करने से कार्यक्षेत्र में धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। कार्य व्यवस्था में व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। परन्तु शनि साढ़ेसति के कारण शरीर कष्ट, दाम्पत्य सुख में विघ्न और मानसिक तनाव रहे। मासान्त में धन लाभ और शुभ कार्य पर खर्च होगा।

मीन राशि (Pisces)

(दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 1 मई तक राशि स्वामी गुरु कुम्भ राशि (द्वादशस्थ) संचार करने से धन लाभ अल्प रहे। ता. 2 मई से राशि स्वामी गुरु का इसी राशि में संचार करना शुभ रहेगा। ता. 26 मई से 4 सितं. तक मंगल की दृष्टि रहेगी। ता. 23 जुला. से 18 नवं. तक गुरु वक्री भी रहेगा।

वृश्चिक—ता. 6 से गुरू की विशेष दृष्टि रहने से कुछ बिगड़े कामों में सफलता मिलेगी। पदोन्नति व मानसम्मान में वृद्धि होगी। गृह में कोई शुभ कार्य सम्पन्न होगा। परन्तु ता. 22 से स्वास्थ्य में विकार एवं उत्तेजना से किसी विशेष कार्य के बिगड़ने के योग हैं। सावधानी बरतें।

धनु—इस राशि पर मंगल का संचार होने से कुछ सोची हुई योजनाओं में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी। ता. 16 से परिवार में संघर्ष के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। शुभ कार्यों पर खर्च होगा। भूमि-वाहनादि का क्रयविक्रय करने की योजना भी बनेगी। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

मकर—इस मास में विभिन्न आर्थिक योजनाओं को क्रियान्वित करने के संकेत मिलते हैं परन्तु आप दूसरों पर विश्वास करके चलेंगे तो काम बिगड़ सकते हैं। ता. 24 के पश्चात् परिवार में शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। धन लाभ के अवसर भी मिलेंगे।

कुम्भ—पूर्वार्द्ध भाग में आय कम और खर्च अधिक रहेगा। व्यर्थ के कार्यों में भागदौड़ और मन में अशान्ति रहे। उत्तरार्ध भाग में पराक्रम में वृद्धि, विदेशी सम्बन्धियों से लाभ एवं परिवार में शुभ मंगल कार्यों पर खर्च होगा। आँखों में कष्ट व सिर में पीड़ा रहे।

मीन—ता. 6 से गुरू इसी राशि में संचार करेगा। जिससे गत हालात में परिवर्तन एवं संघर्ष शक्ति प्रबल होगी। अकस्मात् किसी बिगड़े हुए कार्य के बन जाने से खुशी का माहौल रहेगा। मासान्त में अकस्मात् धन लाभ एवं खर्च की अधिकता रहेगी। परन्तु स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

वि. संवत् २०६७ में सम्वत्सर, राजा-मन्त्री आदि का फल

ॐ स्वस्ति नः श्रीगणेशाय नमः। अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्-चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवी दयालु ज्यो. स्व प्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुख सम्पत्ति हेतवे। शोभन नामक नवविक्रमी सम्वत्सरे शुभे पञ्चत्रिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१३५) वर्ष प्रवेशे पं. पन्नालाल अहं प्रपौत्र पण्डित देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी, स्व-पुत्राभ्यां सहिताहं कूर्वे पंचांग दिवाकरम्॥

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,१११ के अन्तर्गते, श्रीविक्रमी संवत् २०६७, कलि (कल्कि) संवत् ५१११, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२४६, सप्तर्षि संवत् ५०८६, श्रीबुद्ध संवत् २६३३/३४, श्रीमहावीर निर्वाण संवत् २५३५/३६, शक संवत् १९३१-३२-३३, हिजरी सन् १४३१-३२, इंग्लिश सन् २०१०-११ ई., खालसा संवत् ३११-३१२, नानकशाही सम्वत् ५४१-४२, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३२००० वर्षों का होता है।

—"शोभन् नामक सम्वत्सर का फल"—

बार्हस्पत्यमान से ३७वाँ एवं विष्णुविंशती का १७वाँ शोभन नामक नया २०६७ विक्रमी सम्वत्सर, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, तदनुसार 16 मार्च (प्रविष्टे ३ चैत्र), मंगलवार, सन् 2010 ई. से प्रारम्भ होगा। यहाँ से शुभ संकल्प एवं धार्मिक अनुष्ठान आदि कर्मों के शुभारम्भ में 'शोभन' नामक सम्वत्सर का ही प्रयोग होगा। शास्त्रों में इस संवत् का फल इस प्रकार वर्णित है-

शोभनेवत्सरे धात्री प्रजानां रोगशोकदा। तथापि सुखिनो लोकाबहुसस्यार्घवृष्टयः॥

अर्थात् 'शोभन' नामक सम्वत्सर का आगमन होने से पृथ्वी पर लोगों में क्लिष्ट रोग, शोक एवं दुखों में वृद्धि हो। यद्यपि वर्षा अधिक होने से अनाजादि की पैदावार अच्छी हो तथा लोगों में सुख के साधनों में वृद्धि होगी, परन्तु कहीं राजनेताओं में परस्पर द्वेष, विग्रह एवं तालमेल की कमी रहेगी तथा वे एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगेंगे।

'नारदसंहिता' अनुसार भी 'शोभन' सम्वत्सर होने से राजनेताओं में परस्पर द्वेष भाव होने से अलग-अलग फैसले एवं नियम बनाने में प्रवृत्त होंगे और पृथ्वी पर धान्य के लहलहाने से उपज में वृद्धि होगी, परन्तु कृषि के अन्य उत्पादनों में कमी रहेगी।

शोभनाख्येहायनेतु शोभनं भूरिवर्तते। नृपाश्चैवात्र निर्वैराः सर्वसम्पद्युता धरा॥

● **रोहिणी का वास**—संवत् २०६७ में रोहिणी का वास 'पर्वत' में है,

फल—रोहिणी नामनक्षत्र पर्वतस्थं यदा भवेत्। वृष्टि हानिः तदा ज्ञेया सर्वसस्य विनाशनम्॥

अर्थात् जिस वर्ष रोहिणी का वास पर्वत पर होता है, उस वर्ष देश में उपयोगी वर्षा की कमी रहती है। अतिवृष्टि या अनावृष्टि के कारण फसलों को हानि पहुँचे। प्राकृतिक प्रकोपों से जन-धनादि की क्षति होने की सम्भावना रहे।

● **सम्वत् का वास**—रोहिणी का वास पर्वत में होने से सम्वत् का वास 'कुम्हार' के घर होगा।

फल—संवत् (समय) का वास रजक (कुम्हार) के गृह में होने से कुछ प्रान्तों में वर्षा की भारी कमी रहेगी, कहीं पेयजल की कमी, घास, तृण, वृक्षादि हरियाली, फल, अनाज, धान्यादि अनाज का उत्पादन कम होगा। हस्तशिल्प, खादी, लघु-उद्योग आदि क्षेत्रों में तथा दूरसंचार व यातायात के संसाधनों में विस्तार होगा।

● **सम्वत् का वाहन**—नव सम्वत् का राजा मंगल होने से संवत् का वाहन 'वृषभ' होगा। फलस्वरूप वर्षा अधिक हो, विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में वर्षा की बहुलता रहे, नदियों में पानी का वेग (बहाव) तेज हो, बाढ़ादि का भी भय रहे। वृक्षों पर फल तथा घास, पुष्प, तृणादि की पैदावार अच्छी हो। कुछ राज्यों में राजनैतिक अस्थिरता बनी रहे।

(१) वर्ष के राजा मंगल का फल—

भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिव विग्रहश्च।
दुखं प्रजा व्याधि-वियोग पीडा स्वल्पं पयो मुञ्चति वारिवाहः॥

अर्थात् वर्ष का राजा मंगल होने देश में चोरी, ठगी, बेईमानी एवं हिंसा की घटनाएं तथा विशेष रूप से अग्निकाण्ड से विशेष जन-धन हानि की घटनाएँ घटित हों। राजनेताओं में परस्पर विरोध एवं टकराव रहे, प्रजा में क्रोध, उपद्रव, कलह-क्लेश, रोग, अपहरणादि के कारण दुःख अधिक हों। कहीं उपयोगी वर्षा की कमी रहे। देश में चोरी, आगजनी, अतिवृष्टि या अनावृष्टि होने से कहीं सूखा एवं दुर्भिक्ष जैसी स्थिति बने। लोगों में धर्म-कर्म की ओर रूचि कम रहे।

(२) वर्ष के मन्त्री बुध का फल—

शशिसुते शुभ मन्त्रिपदं गते स्वपतिना रमते मदनक्रियाम्।
बहुधनं बहुवादि-समन्वितं यव-मसूर-चणान्न महर्घताम्॥

अर्थात् वर्ष का मन्त्री बुध हो तो अधिकांश लोग विशेषतया स्त्रियाँ अपने पतियों के साथ रमन, भोग-विलासादि विषयों में अधिक आसक्त रहेंगी। धन का प्रसार अधिक होने से अमीर लोग और अधिक धनाढ्य होंगे। वर्षा प्रचुर मात्रा में हो, जौं, चने, मसूर, तेल, गेहूँ, धान्यादि तथा गैस आदि के भाव तेज होंगे। शिल्प-कला सम्बन्धी, खाद्यान्न एवं भोग्य वस्तुओं से सम्बन्धित व्यापारी तथा बुद्धिजीवी लोग व्यवसाय द्वारा विशेष लाभान्वित होंगे। गर्मी-खुश्की एवं त्वचा सम्बन्धी रोग अधिक होंगे।

(३) सस्येश शुक्र का फल—

शुक्रो यदा धान्यपतिर्धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनं प्रियम्।
गोधूम-शालीक्षुधनं प्रियंगु-वृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि॥

अर्थात् कृषि (फसलों का स्वामी) शुक्र हो, तो उस वर्ष कुछ स्थानों पर वर्षा पर्याप्त, उपयोगी एवं समयानुसार होती है। गेहूँ, जौं, चावल, ईख (गन्ना) एवं फलदार वृक्षों पर फल व फूल बहुत लगें। मौसमी मेवों की पैदावार अच्छी हो। अनाज, सोना, चाँदी एवं घी, तैल, मजीठ, चावल, हल्दी, जौं, हरड़, मेंहदी का व्यापार करने वाले विशेष लाभान्वित होंगे।

(४) धान्येश गुरु का फल—

गुरौ धान्यपतौ याते यव–गोधूम–शालयः। पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्राह्मणादयः॥

यदि बृहस्पति धान्येश हो, तो ग्रीष्मकालीन फसलें-गेहूँ, जौं, बाजरा, चावल आदि धान्य की पैदावार अच्छी होगी। उत्तम विचारों वाले ब्राह्मण आदि विद्वान् एवं धर्मपरायण लोग यजन–याजन आदि धार्मिक व शुभ कृत्यों में प्रवृत्त होंगे।

(५) मेघेश मंगल का फल—

'अवनिजे' जलदस्य–पतौ भुविश्रुति विचार विहीन धरामराः।
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमं बहुतापदम्॥

अर्थात् मेघेश (वर्षा का स्वामी) मंगल हो, तो ब्राह्मणादि उच्च वर्ण के लोग वेदविचार से हीन, अपने धर्म–कर्म से च्युत अर्थात् शास्त्र मर्यादित कर्त्तव्यों से च्युत होंगे। असामयिक वर्षा, अर्थात् कहीं वर्षा बहुत कम और कहीं बहुत अधिक होगी। कहीं भूस्खलन एवं बाढ़ादि तथा कहीं वर्षा न होने से पेयजल की कमी, दुर्भिक्ष आदि का भय तथा तापमान में वृद्धि होगी।

(६) रसेश सूर्य का फल—

रसपतौ तरणी धरणो तदा विरस भागरताल्प पयोधरा।
वसन–तैल–घृत प्रियमानवाः सुखे रसंनभुनक्ति महीपतिः॥

अर्थात् रसाधिपति सूर्य होने से उपयोगी वर्षा की कमी रहे। दूध, रसादि वाले फलों का उत्पादन कम हो। घी, मक्खन, तेल, खाद्य–तेल, वस्त्रादि में भी न्यूनता हो अर्थात् महंगे होंगे। प्रजा एवं प्रशासक वर्ग में सुख की कमी रहे। सामान्य लोगों को विविध प्रकार की उलझनों, परेशानियों एवं गंभीर आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

(७) नीरसेश शुक्र का दान—

कर्पूरागर गन्धानां हेम मौक्तिक वाससाम्। अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदि॥

संवत् में नीरसेश (धातुओं का स्वामी) शुक्र हो, तो कपूर, अगर–तगर आदि तथा अन्य सुगन्धित इत्र (वस्तुएँ), सोना, चाँदी, मोती और सर्व प्रकार के वस्त्रों के भावों में विशेष तेजी हो।

(८) फलेश सूर्य का फल—

द्रुमवतीवर पुष्पवती धरा प्रमुदिता फलभोग विशेषता।
बहुजलं जलदोभुवि मुञ्चति क्वचिदपिप्रमितं फलपो रविः॥

–फलों का स्वामी सूर्य होने से पृथ्वी पर वर्षा कहीं बहुत अधिक और कहीं पर कम हो। पृथ्वी विभिन्न प्रकार के वृक्षों, फूलों (पुष्पों) एवं फलों से शोभायमान होगी अर्थात् फल, फूल एवं वृक्षों की पैदावार कुछ स्थलों पर अच्छी होगी और कहीं कम होगी। विशेष सम्पन्न लोगों में सुख के साधन बढ़ेंगे।

(९) धनेश गुरु का फल—

सुमनसां च गुरुर्दविणाधिपो वणिज–वृत्तिपराः सुखभाजनाः।
फलित–पुष्पित भूमिरुहाः सदाविविध द्रव्ययुता भुविमानवाः॥

अर्थात् धन–दौलत (कोष) का स्वामी बृहस्पति होने से व्यापारी वर्ग एवं वणिक् वृत्ति से व्यापार करने वाले लोग विशेष लाभान्वित होकर सुखी एवं प्रसन्नचित्त रहें। वृक्षों पर फलों, फूलों आदि का उत्पादन अच्छा रहे। लोग विभिन्न प्रकार की धन–सम्पदाओं से सम्पन्न होंगे।

(१०) दुर्गेश चन्द्र का फल—

गढपतिः शशलांछनको यदा नृपसुराज्य विलासित पौरजाः।
बहु धनेक्षुज गोरसभोगिनो नखरा वरवर्णित विग्रहाः॥

दुर्गेश (सेना का स्वामी) चन्द्रमा हो, तो उस वर्ष राजनेता (प्रशासक) लोगों में सुचारुरूप से राज्य व्यवस्था करने और जनता को सुख–सुविधाएँ प्रदान करने की चेष्टा करते हैं। गुड़, चीनी, गन्ना, दूध आदि वस्तुओं का व्यवसाय (क्रय–विक्रय) करने वाले विशेष तौर पर लाभान्वित रहें। विश्व के अनेक राष्ट्र परस्पर युद्धोन्मुख होंगे। अर्थात् परस्पर तनाव एवं टकराव की स्थिति में होंगे।

➤➤ नवमेघों में 'पुष्कर' नामक मेघ का फल—

नैव कंदफलमूलविवृद्धिर्जायते विविधपातकवृद्धिः।
रोगतोजन कृशत्वमनल्पं पुष्करे जलधरे जलमल्पम्॥

अर्थात् जिस वर्ष पुष्कर नामक मेघ हो, तो वृक्षों पर कंद, मूल, फल आदि कम होंगे अर्थात् इनके मूल्यों में ओर वृद्धि होगी। पाप कर्मों की वृद्धि होगी, लोग विचित्र प्रकार के रोगों से ग्रस्त रहेंगे। कहीं बाढ़ तथा कहीं सूखा रहे।

➤➤ द्वादश नागों में 'नन्दसारी' नाम के नाग का फल—

तस्मिन् वर्षे महावृष्टिं कुरुते नन्दतेजनः॥

अर्थात् नन्दसारी नामक नाग राजा होने से कुछ स्थानों पर महावृष्टि अर्थात् अति वर्षा होगी। लोग अपनी स्वार्थपरता में मगन रहेंगे।

● शनि की दृष्टि—आगामी वि. संवत् २०६७ में शनि सम्पूर्ण संवत् कन्या राशि में संचारवश मिथुन, वृश्चिक एवं मीन राशियों पर दृष्टि तथा सिंह, कन्या एवं तुला राशि वाले जातकों, देशों एवं भारत के राज्यों पर साढ़ेसति का प्रभाव करेगा, अतएव इन राशियों से प्रभावित राज्यों, नगरों तथा देशों (पूर्व पंजाब, राजस्थान, जयपुर, महाराष्ट्र, मिस्र, लन्दन, बेल्जियम, इंगलैण्ड, हरियाणा, दिल्ली, मुम्बई, उड़ीसा, हि.प्र., पंजाब, पानीपत, गुजरात, कश्मीर) में प्राकृतिक प्रकोपों, अग्निकाण्ड, आतंकवादी घटनाएँ एवं विस्फोट, भूकम्प, भूखमरी, राजनैतिक क्षेत्रों में उथल–पुथल होने की व्यापक सम्भावनाएँ होंगी।

* जल आदि चार स्तम्भों का फल-संवत् २०६७ *

(१) जल स्तम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का अभाव है। फलस्वरूप आगामी वर्ष देश में कम वर्षा के योग हैं। कहीं खण्ड वर्षा एवं कहीं समयानुसार उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। बहुजलसिञ्चित धान्य (चावल) की फसल को हानि पहुँचेगी। कहीं पेयजल की समस्याएँ उत्पन्न होंगी, भूमिगत जलस्तर में भी गिरावट बनेगी। दुर्भिक्ष, अकाल की परिस्थितियां बनेंगी। रोहिणी का वास पर्वत पर होने से भी कम वर्षा के ही संकेत हैं।

(२) तृण स्तम्भ—वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का अभाव है। फलस्वरूप तिनके, बाँस, घास, पुष्पों, फलों, वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों तथा वन्य औषधियों के उत्पादन में कमी रहेगी। पशुचारे का भी अभाव रहे। फलस्वरूप गाँ, भैंस आदि चौपाय पशुओं द्वारा दुग्ध उत्पादन में भी कमी रहे। आयुर्वेदिक औषधियां, दुग्ध, डेयरी उत्पाद महंगे होंगे।

(३) वायु स्तम्भ—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर का सम्पर्क 72.28 प्रतिशत है। फलतः कुछ प्रदेशों में वायु वेग एवं अनुकूल मेघ संचार से वर्षा का क्रम अच्छा रहेगा। कहीं भीषण वायु वेग, चक्रावात एवं तेज्र आँधियों से खड़ी फसलों, धनादि सम्पदा को हानि पहुँचेगी। कुछ क्षेत्रों में वायु का दबाव बढ़ेगा।

(४) अन्न स्तम्भ—आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क 62 प्रतिशत है। फलस्वरूप जल व तृण स्तम्भ के अभाव एवं विपरीत जलवायु के बावजूद कुछ प्रदेशों में गेहूँ, चने, चावल, मक्का, ईख, धान्यादि की पैदावार गुजारेलायक होगी। सर्व प्रकार के अनाज, दालें आदि तेज भाव होंगे। सरकार को अन्न-भण्डारण एवं अनाज-वितरण सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। सरकार को इस सम्बन्ध में विशेष पग उठाने एवं निर्णय लेने पड़ेंगे।

≈ आर्षमान द्वारा रक्षा फल विचार ≈

आर्षमान को वर्ष में राष्ट्र की रक्षा के चार दुर्गों (किले) एवं समृद्धि का प्रतीक माना जाता है—

(१) प्रथम आर्ष—गतवर्ष की पौष अमावस्या को मूल नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूल नक्षत्र का स्पर्श केवल 5% प्रतिशत है।

(२) द्वितीय आर्ष—वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र का अभाव है।

(३) तृतीय आर्ष—श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का अभाव है।

(४) चतुर्थ आर्ष—कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र लगभग 66 प्रतिशत है।

फल—इस वर्ष दो दुर्गों का अभाव, एक अत्यन्त अल्पबली तथा चतुर्थ दुर्ग मध्यमबली है। चारों दुर्गों का विचार चिन्ताजनक स्थिति का संकेत कर रहा है। सुरक्षा, समृद्धि एवं राजनैतिक दृष्टि से यह वर्ष विशेष उलझन एवं असमंजसपूर्ण रहेगा। कहीं आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाओं के कारण आन्तरिक सुरक्षा को खतरा रहेगा। सामान्य प्रजा में युद्धादि का भय बनेगा। प्राकृतिक आपदाओं से भी देश की आर्थिक-सामाजिक एवं सुरक्षा स्थिति चिन्तनीय हो सकती है। वर्षा-पानी की कमी एवं कहीं अकाल की स्थिति नबेगी। परन्तु चतुर्थ आर्ष (दुर्ग) के कारण अनेक अवरोधों के होने पर भी राष्ट्र आर्थिक एवं रक्षा की दृष्टि से प्रगतिपथ पर रहेगा। देश के सुरक्षा प्रबन्धों को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता होगी।

≈ वर्षादि के विश्वामान ≈

वर्षादि विश्वा का कुल मान २० विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा १ से २० अंकों के मध्य जितने अधिक (२० अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। जैसे आगे सं. २०६७ में धान्य के विश्वे १७ लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का उत्पादन अच्छा होगा।

वर्षा ५, धान्य १७, तृण १५, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ३, तृषा १५, निद्रा ३, आलस्य १३, उद्यम ५, शान्ति १५, क्रोध १३, दंभ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ९, उग्रता ७, पाप ५, पुण्य ९, व्याधि ७, व्याधिनाश ३, आचार १, अनाचार ५, मृत्यु १, जन्म ५, देश उपद्रव १५, देश-स्वास्थ्य ३, चोरभय ९, चोरनाश १, अग्नि १५, अग्निशान्त १, उद्भिज ३, जरायुज ३, अंडज ३, स्वेदज ३, टिड्डी १५, तोता ७, मूषक ११, सोना ७, तांबा ५, स्वचक्र ३, परचक्र ५, वृष्टि ७, अनावृष्टि १५॥

≈ गुर्रा फल विचार (सन् 2010-11 ई.) ≈

ईस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है।

वि. संवत् २०६६ में पौष शुक्ल तृतीया तदनुसार 19 दिसंबर, सन् 2009 ई. शनिवार को 1 मुहर्रम (यकम) हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से हिजरी सन् का बादशाह शनि ही होगा।

इस्लामी नववर्ष कुण्डली (सन् 2009-10 ई.)

गुरु-शनि के मध्य नवपंचम तथा मंगल-गुरु के मध्य समसप्तक योग बना हुआ है। ग्रहस्थिति अनुसार पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईराक, ईराक, ईरान, सूडान आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में अत्यन्त गम्भीर, राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा पाक, ईराक, अफगानिस्तान आदि कुछ मुस्लिम बाहुल्य देशों में अनेक स्थलों पर विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी। अमरीकी दबाव एवं आक्रामक रुख के चलते पाकिस्तान की गठबन्धन सरकार को विशेष सुधारात्मक पग उठाने पड़ेंगे। किसी मुस्लिम राष्ट्र के प्रधान नेता के लिए विशेष संकट भरी स्थिति बन सकती है।

संवत् २०६७ वि. में मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया तद्नुसार 8 दिसम्बर, सन् 2010 ई., बुधवार को 1 मुहर्रम (यकम) को हिजरी सन् 1932 प्रारम्भ होगा। बुधवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से हिजरी वर्ष का बादशाह बुध ही होगा। मंगल-गुरु के मध्य समसप्तक योग तथा सूर्य पर शनि की शत्रु दृष्टि पड़ रही है।

फल—ग्रहस्थिति अनुसार पाकिस्तान, साऊदी अरब, मिस्त्र, बांगलादेश आदि मुस्लिम देशों के कट्टरवादी ग्रुप इस्लाम के नाम पर नया ध्रुवीकरण बनाने की कोशिश करेंगे। हुनरमन्द व व्यापारिक क्षेत्रों में व्यापारियों के लिए अच्छे मुनाफे के आसार बनेंगे। मुस्लिम राष्ट्र अत्याधुनिक हथियारों का संग्रह करने से भी पीछे नहीं हटेंगे। खाद्यपदार्थ, अनाज, गुड़, चीनी, कपास महंगे हों। वर्षा समयानुसार नहीं होगी। अग्निकाण्ड, विस्फोट अधिक होंगे।

इस्लामी नववर्ष कुण्डली
(सन् 2010-11 ई.)

हिजरी सन् 1432

★ वि. संवत् 2067 में लाभ-हानि चक्र ★
(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम पर शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खचे हो, आर्थिक समस्याएं उत्पन्न हों। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
हानि	१४	५	५	१४	११	५	५	१४	२	५	५	२

≈सूर्य आर्द्रा प्रवेश फल-संवत् २०६७≈

वि. संवत् २०६७ में सूर्यदेव ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, मंगलवार तद्नुसार 22 जून, सन् 2010 ई. को स्वाती नक्षत्र, शिव योग एवं तुला राशिस्थ चन्द्रमा कालीन प्रातः 9 बजकर 57 मिंट पर सिंह लग्न कालीन आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली
22-06-2010 ई.
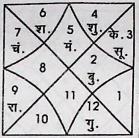
सूर्यदेव का आर्द्रा प्रवेश अग्नि तत्त्व प्रधान सिंह लग्न तथा वायु तत्त्व प्रधान तुला राशि में हुआ है। अधिकतर ग्रह वायु, अग्नि व पृथ्वी तत्त्व प्रधान राशियों में हैं। गुरु-शुक्र जल तत्त्व प्रधान राशियों में है। लग्नेश सूर्य एकादश भाव में केतु युक्त तथा उस पर शनि की दृष्टि भी है। जलस्तम्भ भी बिल्कुल नगण्य है। फलस्वरूप आगामी वर्ष अनुकूल एवं उचित समय पर वर्षा की कमी रहेगी। सामयिक (उपयुक्त) वर्षा की कमी के कारण खड़ी फसलों को हानि हो। कहीं अतिवर्षा से बाढ़ादि का भय तो कहीं अल्प वर्षा से फसलों को क्षति पहुँचने के संकेत हैं। गुरु, शुक्र जल-तत्त्व राशियों में होने के बावजूद अष्टम, द्वादश भावों में जाने से अनुकूल, उपयोगी एवं समयानुसार वर्षा की कमी रहेगी। मेघेश मंगल भी लग्न भाव में होने से दुर्भिक्ष, खाद्यान्न संकट तथा तापमान में वृद्धि होगी। मौसम प्रायः अनिश्चित एवं अनियमित होंगे। अग्निकाण्ड, भूस्खलन, तेज आँधियां (वायु प्रकोप) अधिक रहे। लोगों में शारीरिक व मानसिक दौर्बल्य अधिक रहे तथा प्रशासकों में परस्पर विरोध उत्पन्न हो व किसी राजनेता की शस्त्रघात से मृत्यु हो।

भानोर्वेशः पृथ्वीसूनोर्वारे रौद्रेधिष्ण्येचेत्स्यात्।
शस्त्राघातात्पृथ्वीशानां निःसंदेहं मृत्युस्तर्हि॥

परन्तु स्वाती नक्षत्र में आर्द्रा प्रवेश होने से धनधान्य की तथा धर्म-कर्म आदि आयोजनों की वृद्धि होगी।

यथा—धनधान्यसमृद्धिः स्याद्धर्मवृद्धिर्दिनेदिने॥

सूर्य देव द्वारा आर्द्रा प्रवेश दो घड़ी दिन चढ़े होने के बाद हुआ है, अतएव इसके फलस्वरूप प्रजा में रोग, शोक एवं विग्रह अधिक रहें।

''सूर्योदये रोगकरी स्मृतार्द्राघटी द्वये विग्रह रोग योगः॥''

'लघु पंचांगदिवाकर'

ग्रहों के आधार पर आगामी वर्ष की प्रमुख भविष्यवाणियाँ संवत् २०६७ (सन् 2010-11 ई.)

- नया 'शोभन' नामक सम्वत् होने से पृथ्वी पर लोगों में क्लिष्ट प्रकार के रोग, शोक एवं दुःखों में वृद्धि, सुख-साधनों में वृद्धि के साथ-साथ लोगों में अशान्ति भी अधिक रहेगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध एवं तालमेल की कमी रहेगी।
- राजा मंगल एवं मंत्री बुध होने से राष्ट्रीय नेताओं में परस्पर वैर-विरोध, द्वेष एवं टकराव रहे। देश में लड़ाई-झगड़े, जातीय दंगे-फसाद, चोरी-ठगी, बेईमानी, हिंसा, अग्निकाण्ड व उपद्रवी घटनाएं अधिक होंगी। दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यो में अत्यधिक तेजी से लोगों में आक्रोश, आवेश एवं उग्रता की भावना अधिक हो। भारत की सीमाओं पर चीन, पाकिस्तान व अन्य आतंकी हमलों के खतरे बढ़ेंगे, भारत सरकार के लिए अग्निपरीक्षा का समय।
- चीन पाकिस्तान आदि कुछ राष्ट्र कुटिल नीतियों का प्रयोग करते हुए बाह्य तौर पर शान्ति समझौतों के बावजूद आन्तरिक रूप में विश्व के अनेक राष्ट्रों को मध्य अत्याधुनिक प्रक्षेपास्त्र एवं परमाणु हथियारों की होड़ बढ़ेगी। भारत सरकार को अपने सुरक्षात्मक प्रबन्धों को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता होगी।
- वैशाख अधिक मास (15 अप्रै. से 14 मई तक) रहने से किसी प्रधाननेता की आकस्मिक मृत्यु, छत्रभंग (राज्य-परिवर्तन), दुर्भिक्ष के स्पष्ट संकेत हैं।
- 14 मई से 27 मई तक तेरह दिन का पक्ष (विश्वघस्र पक्ष) होने से भारत एवं विश्व में कहीं रेल या हवाई दुर्घटना अथवा भूकम्प, भूस्खलन, भारत के मुख्य प्रान्तों में गर्मी, क्लिष्ट रोगों, अग्निकाण्ड, असामयिक वर्षा आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन एवं कृषि हानि का भय है।
- वर्ष के उत्तरार्द्ध में केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में विशेष परिवर्तन तथा राजनीतिक पटल पर श्रीराहुल गांधी तथा अन्य युवा नेताओं का आगमन होगा।
- कई राज्यों में सम्भावित विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी को गत चुनावों की अपेक्षा अच्छी सफलता प्राप्त होगी। कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व कई राज्यों में बढ़ेगा। कहीं हार का भी सामना होगा। भाजपा को भीतरी अन्तर्कलह के कारण अपेक्षाकृत कम सफलता प्राप्त होगी।
- वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में भारत की पूर्वी पश्चिमी एवं उत्तरी सीमाओं के पार्श्ववर्ती देशों-चीन, पाकिस्तान, बंगलादेश आदि देशों के प्रशिक्षित आतंकवादी तथा नक्सली एवं माओवादी आतंकी देश के लिए गम्भीर व कठिन चुनौतियाँ बनेंगे। इस बीच सैन्य हस्तक्षेप एवं अतिक्रमण बढ़ेंगे। सैनिक मुठभेड़ों के भी योग हैं।

एव सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते तु अग्रयया बुद्धयासूक्ष्म्या सूक्ष्म दर्शिभिः ॥ कठोपनिषद् ॥

ज्योतिष अध्यात्म विद्या का ही महत्त्वपूर्ण अंग है। परन्तु ज्योतिष जैसे सूक्ष्म ज्ञान की अभिव्यक्ति सभी प्राणियों में समान रूप से नहीं होती, बल्कि आत्मोन्नत एवं सूक्ष्म तथा दिव्य दृष्टि प्राप्त तत्त्वदर्शी मनीषियों ने ही अपने तपोबल के द्वारा मानव कल्याण की भावना से प्रेरित होकर ज्योतिष विद्या का प्रणयन किया था। आज से सहस्त्रों वर्ष पूर्व, जब आधुनिक वैज्ञानिक संयन्त्रों का आविष्कार भी नहीं हुआ था, तभी हमारे ऋषियों ने **'या ब्रह्माण्डे सा पिण्डे, या पिण्डे सा ब्रह्माण्डे'** के सूत्र के आधार पर अपनी अन्तःदृष्टि द्वारा विश्व एवं सौरमण्डल की संरचना ग्रहों की मार्गी, वक्रातिचार आदि गति तथा समस्त प्राणियों पर ग्रह रश्मियों के शुभाशुभ प्रभाव का अनुशीलन कर लिया था। उनके अनुसार सभी ग्रह अपनी प्रकृति के अनुरूप ही शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं—सत्त्वगुणी ग्रहों के प्रभाव से जातक उदार, दयालु, सत्यनिष्ठ एवं धर्मपरायण होता है, रजोगुणी ग्रहों के प्रभाव से जातक विषयासक्त, कामी, उच्चाकांक्षी, भोग-लोलुप तथा शनि, मंगल आदि तामसिक ग्रहों के प्रभाव से जातक क्रोधी, नास्तिक, व्यसनी एवं दुराचारी प्रकृति का होता है।

गुरु रवि शशिनः सत्त्वं रज्जास्सितज्ञौ तमोऽर्कसुत भौमो।
एते ही आत्म समानाः प्रकृतिस्तेभ्यः फलानि प्रयच्छन्ति॥

ज्योतिष विज्ञान हमें ग्रह-नक्षत्रों सम्बन्धी कुछ शास्त्रीय सिद्धान्त प्रदान करता है, जिनके द्वारा हमें पूर्व कर्मों के प्रतिफल को जानकर भविष्य में अपने जीवन को उच्चतर दिशा की ओर ले जाना है। ज्योतिष ज्ञान पर आधारित बनी एक जन्मपत्री अथवा जन्म कुण्डली अपने गर्भ में अनेक रहस्य संजोए रहती है। एक कुशल एवं अनुभवी ज्योतिषी की सहायता से

मनुष्य अपने जीवन सम्बन्धी अज्ञात रहस्यों को जानकर निश्चय ही भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त कर सकता है। जातक की जन्मकुण्डली मनुष्य के पूर्वजन्मों के संचित एवं प्रारब्ध कर्मों की प्रतिमूर्ति होती है। अनेक जन्मों के पाप-पुण्य, शुभाशुभ कर्मों का फल कब प्रकट होगा ? और भविष्य में जातक को कैसी परिस्थितियों की सम्भावना है ? ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर ज्योतिष शास्त्र अन्धेरे में दीप की भान्ति देता है—

"यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाशुभं तस्य कर्मण: पक्तिम्।
व्यंजति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव॥"

ईश्वर की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन "पंचांगदिवाकर", 'मुफ़ीद आलम जन्त्री' (उर्दू-हिन्दी-पंजाबी) एवं तिथ पत्रिका (पंजाबी भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०६७ (2010-11 ई.) में गौरवशाली 135 वर्ष हो जाएंगे। इस पंचांग समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे पूज्य पितामह विश्व विख्यात मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु जी (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी स्तर पर ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हुई— वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष के क्षेत्र में हमारी पंचांग, जन्त्री एवं अन्य प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे प्रकाशनों की निरन्तर अग्रसर ख्याति को देखकर कुछ दुष्ट प्रकृति के धन लोलुप एवं लालची प्रकाशक हमारे टाईटल से मिलता जुलता टाईटल—नाम रखकर विषय-सामग्री को तोड़-मरोड़ कर छापते हैं। इस प्रकार लोगों को गुमराह व धोखा देने की कुचेष्टा करते रहे हैं। सुविज्ञ पाठकों को सूचित किया जाता है कि वह असली व प्रामाणिक पंचांगदिवाकर, तिथ पत्रिका, मुफ़ीद आलम जन्त्री तथा हमारी नव प्रकाशित 'अर्द्धशताब्दि पंचांग' (संवत् २००१ से २०६० तक) खरीदते समय प्रथम पृष्ठ पर गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए., पं. विवेक शर्मा व पंकज शर्मा, जालन्धर के नाम अवश्य पढ़ लिया करें।

गतवर्षीय दिवाकर पंचांगों की चामत्कारिक भविष्यवाणियां

ईश्वर की कृपा से हमारी गत वर्षों की पंचांगों एवं जन्त्रियों से उल्लिखित अनेकश: भविष्यवाणियां ठीक निकलती आ रही हैं। उदाहरणस्वरूप जैसे-भारत का स्वतन्त्र होना (सं. 1947 ई.), बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का विभाजन, कांग्रेस (ई) की पराजय, पुन: सत्ता में आना, ईरान-ईराक युद्ध (2039), पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् 2041), पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् 2048), सन् 1998 में मोर्चा सरकार (गुजराल सरकार) का पतन (2055) तथा लोकसभा चुनावों में भाजपा का सफल होकर सत्तारूढ़ होना आदि। आगे संवत् २०५७ से २०६६ तक की कुछ प्रमुख भविष्यवाणियां ही उद्धृत हैं, जो ईश्वर कृपावश चामत्कारिक रूप से सत्य निकली हैं। उदाहरणार्थ—

संवत् २०५७ के पंचांगदिवाकर-पाकिस्तान में शरीफ सरकार का तख्ता पलट तथा आपात् स्थिति का लगना एवं शासन परिवर्तन, छत्रभंग, राजनीतिक टकराव व हिंसक घटनाएं होना (पृष्ठ 51-कालम I व II)

सं. २०५८ के पंचागदिवाकर पृष्ठ 56 (कालम II) पर जगत लग्न में कालसर्प योग के कारण मिथुन व धनु राशि वाले देशों में विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। जैसा कि अमरीका में दुखद त्रासदी घटी। सं. २०५९ (2002-03) में पृष्ठ 56 (कालम I) में पढ़ें—तालिबान अमरीकी युद्ध शक्ति के सामने अधिक देर तक टिक नहीं पाएंगे।" पृष्ठ 60 (का. I) पर पंजाब के शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें—"आगामी विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ बादल सरकार को काफ़ी कम सीटें तथा कांग्रेस पार्टी का मुख्य पार्टी के रूप में उभकर आना।"

संवत् २०६० में ईराक में सत्ता परिवर्तन के योग के बारे में स्पष्टत: पढ़ें पृष्ठ 63.।

संवत् २०६१ की पंचांग में स्पष्टत: पढ़ें—आगामी लोकसभा चुनावों में श्रीमती सोनिया गांधी तथा कांग्रेस पार्टी भाजपा की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब होकर निकलेगी। पृष्ठ 67 कालम I.

संवत् २०६२ (2005-06) "पाकिस्तान और भारत के मध्य दोस्ती और शान्तिवार्ताओं के नए आयाम जुड़ना (पृष्ठ 56 का II, पृष्ठ 60-I)—

संवत् २०६३ (2006-07) की पंचांग में डीज़ल-पैट्रोल के मूल्यों में अत्यधिक तेज़ी के कारण मुद्रा-स्फीति दर में वृद्धि होगी (पृष्ठ 55), पंजाब, बिहार में नेतृत्व परिवर्तन की प्रबल सम्भावना (पृष्ठ 55) 7 फरवरी, 2007 ई० तक यू.पी.ए. सरकार के वर्चस्व को कोई खतरा नहीं (पृष्ठ 55) 24 मई से 12 जुलाई के मध्य मंगल-शनि योग के कारण काश्मीर, महाराष्ट्र, आदि प्रदेशों में उपद्रव, हिंसा एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं (जैसा कि मुम्बई में 11 जुलाई को बम विस्फोट हुए) पृ. 59 का. II)

संवत् २०६४ (2007-08) में पृष्ठ 56 पर मुख्य बाक्स पर स्पष्टत: पढ़ें—"उ.प्र., उत्तराखण्ड, पंजाब प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन के योग होंगे।" नतीजे आपके सामने थे।

संवत् २०६५ (2008-09) के पृष्ठ 59 पर मुख्य बाक्स में आप स्पष्टत: पढ़ें—"यू.पी.ए. के घटक दलों में आपसी समन्वय का अभाव रहेगा तथा परमाणु करार मुद्दे पर लेफ्ट व कांग्रेस के सम्बन्ध विच्छेद किसी भी समय सम्भव जैसा कि 20 जुलाई, 2008 ई० को लेफ्ट सरकार से अलग हो गई। इसी 59 पृष्ठ पर स्पष्ट पढ़ें—'गुजरात में अनेक आन्तरिक एवं कांग्रेसी विरोध के बावजूद भाजपा विजयी होगी' दिसम्बर, 07 में ही मोदी सरकार का बनना इस तत्य को सत्य प्रामाणिक किया। पृष्ठ 59 पर ही 'हि.प्र., कर्नाटक आदि कुछ प्रदेशों सत्ता परिवर्तन की प्रबल सम्भावनाएं'।

पृष्ठ 64 पर कालम I पर पढ़ें—'21 जून से 9 अग. तक शनि-मंग. योग तथा 29 अग. से 12 सितं. मध्य कालसर्प योग बनने से उ.प्र., म.प्र., बिहार, उड़ीसा, बंगाल आदि पूर्वी प्रदेशों में अनाज की कमी अथवा उपद्रव, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोप घटित होंगे।' संयोगवश यह दुखद भविष्यवाणी सत्य साबित हुई। कोसी नदी में आई बाढ़ के कारण व्यापक जन-धन की हानि हुई। पृष्ठ 64 कालम II पर हिमाचल प्रदेश शीर्षक के नीचे स्पष्ट पढ़ें—'भाजपा का प्रभाव क्षेत्र बढ़ेगा तथा भाजपा शक्तिशाली पार्टी के रूप में उभरकर सामने आएगी।' वामदलों का गठबन्धन तोड़ना तथा डॉ० मनमोहन सिंह का अस्थिरता के बाद पुनः सशक्त रूप में उभरना तथा अपना कार्यकाल पूरा करना (देखें पृष्ठ 66-67)

गतवर्ष संवत् २०६६ (2009-10 ई०) के पृष्ठ 67 पर मुख्य बाक्स में स्पष्टतः पढ़ें—"अत्यधिक महंगाई, भ्रष्टाचार, पेयजल एवं विद्युत् संकट और राज्यों में खाद्यान्न व आवश्यक वस्तुओं में कमी होने की ज्वलन्त समस्याओं का सामना रहेगा एवं सामान्य जनपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में जबरदस्त तेज़ी होने से लोगों में गहरा आक्रोश एवं असन्तोष व्याप्त होगा। —जैसा कि देश में व्याप्त महंगाई, सूखे द्वारा उत्पन्न खाद्यान्न संकट सर्वविदित है। पृष्ठ 69 पर प्रथम कालम में पढ़ें—"धान्येश मंगल होने से गेहूं, धान्य, चावल, तैलादि की पैदावार में कमी एवं मूल्यों में अत्यधिक तेज़ी होगी एवं रसाधिपति शनि होने से अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी होगी।" पृष्ठ 70 कालम I पर .... परन्तु बाह्य तौर पर विश्व के प्रमुख देशों के सामने आतंकवाद प्रमुख मुद्दा बनकर उभरेगा।" पृष्ठ 70, कालम II पर भी पढ़ें—"30 जुला. से 16 नवं. के मध्य गुरु-राहु (मकरस्थ) योग होने से अनुपयोगी वर्षा के योग बनते हैं। कहीं बाढ़, भूस्खलन आदि प्राकृतिक आपदाओं से जन व धन हानि के संकेत हैं। पृष्ठ 71 पर कालम-I में अमेरिका शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्टतः पढ़ें—"डेमोक्रेट प्रत्याशी बराक ओबामा को संघर्षपूर्ण हालात के बाद सफलता प्राप्ति की सम्भावना बनती है। पृष्ठ 72, कालम I पर देखें—"बेमौसमी एवं अत्याधिक वर्षा से आई प्रलयंकारी बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से अनेक प्रदेशों में करोड़ों की फसलों, धन-सम्पदा एवं लोगों की क्षति का होना", पृष्ठ 75 पर जम्मू-कश्मीर शीर्षक के अन्तर्गत "आगामी विधानसभा व लोकसभा चुनावों में श्री फारुख अब्दुल्ला के नैशनल कांफ्रेंस गठबन्धन का प्रभाव क्षेत्र बढ़ेगा"—जैसा कि नैकां एवं कांग्रेस गठबन्धन होकर सत्तारूढ़ हुए। यही नहीं राजस्थान शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ें—"प्रभावराशि पर केतु का संचार प्रधाननेता श्रीमती सिंधिया जी के लिए समय शुभ नहीं है। भाजपा को चुनावों में कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। कांग्रेस के प्रभाव में वृद्धि होगी।

सं. २०६७ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

वि. संवत २०६७ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह परिषद्) के दश अधिकारों में से केवल चार अधिकार क्रूर ग्रहों को और छः अधिकार सौम्य ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। राजा का मुख्य अधिकार क्रूर, युद्ध-प्रिय एवं हिंसक ग्रह मंगल को प्राप्त हुआ है, जबकि मन्त्री का अधिकार सौम्य एवं नीतिज्ञ ग्रह बुध को मिला है। वर्षा का पद भी मंगल को ही मिला है। कृषि एवं धन के अधिकार देव-गुरु ग्रह बृहस्पति को प्राप्त हुआ है। राजा का पद युद्धप्रिय ग्रह मंगल को मिलने से विश्व के अनेक राष्ट्र प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से विद्विहिंसक एवं विनाशक परमाणु हथियारों की दौड़ में शामिल होंगे। मंत्री बुध के कारण विश्व के कुछ राष्ट्र कुटिल नीतियों का प्रयोग करते हुए बाह्य तौर पर शान्ति वार्ताओं का ढिंढोरा करते हुए भी आन्तरिक तौर पर संहारक ऐटमिक हथियारों में वृद्धि करने में संलग्न रहेंगे। दक्षिणी एशिया के बहुत से देशों के प्रमुख राजनेताओं में परस्पर विरोध एवं टकराव रहे। लोगों में क्रोध, आवेश एवं उग्रता की भावनाएं अधिक हों। लड़ाई, झगड़े, जातीय दंगे-फसाद, चोरी-ठगी, बेईमानी, हिंसा व अग्निकाण्ड की वारदातें अधिक हों। नया शोभन नामक सम्वत्सर होने से पृथ्वी पर लोगों में क्लिष्ट प्रकार के रोग, शोक एवं दुखों में वृद्धि होगी। सुख-साधनों में वृद्धि के साथ-साथ लोगों में अशान्ति भी अधिक रहेगी।

स्त्रीग्रह बुध मन्त्री होने से राजनेताओं एवं लोगों में भी सरलता व सादगी की अपेक्षा कुटिलता एवं चालाकी के व्यवहार अधिक रहेंगे। धन का प्रसार अधिक होने से धनाढ्य लोग और अधिक अमीर होंगे। अधिकांश लोग शृंगार-प्रिय और भोगों में अधिक आसक्त रहेंगे। बुद्धिजीवी लोग, हस्त कला व शिल्प कला सम्बन्धी विज्ञान तथा खाद्यान्न एवं माल पंसारी की वस्तुओं से सम्बन्धित व्यापारी-वर्ग व्यवसाय द्वारा विशेष लाभान्वित रहेंगे। गर्मी-खुश्की, त्वचा एवं विचित्र प्रकार के रोगों की बहुलता रहेगी।

रसों का एवं फलादि उत्पत्ति का स्वामी उग्र ग्रह सूर्य देव को मिला है, जिससे वैश्विक ऊष्णता के कारण देश में कहीं बहुत न्यून वर्षा तथा कहीं बहुत अधिक वर्षा के कारण बाढ़ आदि प्रकोप हो। कहीं दुर्भिक्ष या सूखे आदि के कारण खड़ी फसलों को हानि पहुँचे। कहीं असामयिक वर्षा के कारण कृषि में कमी एवं पेयजल व दूध, मक्खन, घी, तेल, सेब आदि फल, सब्जियों, गुड़, चीनी एवं सर्वप्रकार की दालों के उत्पादन में कमी एवं मूल्यों में जबरदस्त तेज़ी हो। उच्चवर्ग के अधिकांश लोग वेद-शास्त्रादि निर्दिष्ट मर्यादाओं एवं कर्त्तव्यों से च्युत होंगे। गरीब और अमीर के बीच अन्तर और अधिक बढ़ेगा। नीरसेश शुक्र के कारण कपूर, अगर-तगर, इत्र, लौंग-इलाचयी (छोटी-बड़ी) आदि सुगन्धित वस्तुएं तथा लोहा, ताम्बा, पीतल, सोना, चांदी, मोती, पुखराज आदि सर्वप्रकार रत्न और अधिक महंगे होंगे। दुर्गेश चन्द्र के कारण विश्व के अनेक राष्ट्र स्वायत्तता एवं सुरक्षा की दृष्टि से परमाणु हथियारों में वृद्धि करने में प्रयासशील होंगे। लोगों में पापकर्मों की वृद्धि होगी तथा विचित्र एवं क्लिष्ट प्रकार के रोगों की भी वृद्धि होगी।

नव वर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल-सं० २०६७.

नववर्ष प्रवेश कुं. ४९/३५

जगत् लग्न कुण्डली २/०८
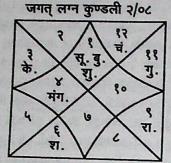
शोभन नामक नए सम्वत् २०६७ का प्रवेश 15 मार्च (प्रविष्टे २ चैत्र) सोमवार को चैत्र अमावस की समाप्ति पर अर्द्ध-रात्रि के बाद रात्रि 2 बजकर 31 मिनट पर पूर्वाभाद्रपद नक्षकालीन धनु लग्न में प्रविष्ट होगा। वर्ष लग्न भाव में राहु नीच राशि का होकर पड़ा है, जबकि लग्न का स्वामी, गुरु तृतीय भाव में है, तथा उस पर वर्ष के राजा उग्र एवं नीचस्थ मंगल की विशेष अष्टम दृष्टि पड़ रही है। भारत की प्रभावराशि (मकर) पर भी मंगल की सप्तम उच्च दृष्टि है जबकि राशिस्वामी शनि की सूर्य व चन्द्र पर सातवीं तथा सप्तम भाव (वैदेशिक सम्बन्धों का भाव) में स्थित केतु पर शनि की विशेष दशम दृष्टि पड़ रही है। ग्रहस्थिति के अनुसार आगामी वर्ष विश्व की राजनीति के मंच विशेष घटनाप्रद होगा। विश्व के अनेक विकसित एवं विकासशील देश अपनी सामरिक शक्ति बढ़ाने के लिए अत्याधुनिक हथियार बनाने में प्रयत्नशील होंगे। राजनैतिक एवं व्यापारिक दृष्टि से विश्व के प्रमुख देशों, जैसे भारत, अमरीका, ब्रिटेन, जापान, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, जर्मनी आदि देशों के मध्य नए समीकरण बनेंगे। सूर्य व शनि के मध्य सम-सप्तक दृष्टियां होने से पाकिस्तान अमरीका से प्राप्त आर्थिक सहायता का दुरुपयोग भारत के विरुद्ध करेगा। आतंकवाद का दानव स्वयं पाकिस्तान के लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति की सुरक्षा के लिए एवं चुनौती बनकर उभरेगा। आतंकवादी हिंसक एवं विस्फोटों के कारण दक्षिणी एशिया के कुछ देश विशेष रूप से प्रभावित होंगे। इनमें से कुछ देश जैसे—भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बंगलादेश आदि देश विशेष रूप से प्रभावित होंगे। इसके अतिरिक्त भारत में उत्तर-प्रदेश, उत्तरांचल, हिमाचल, आसाम, जम्मू-कमीर, अरुणाचल, बिहार, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, महाराष्ट्र आदि प्रदेश विशेष रूप से आर्थिक एवं आतंकी गतिविधियों से आक्रान्त रहेंगे। शास्त्र में धनु लग्न में वर्ष प्रवेश का फल इस प्रकार से कहा गया है—

धनुर्लग्ने तु उत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम्। दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिः मध्य देशे सरोगता॥

अर्थात् धनु लग्न का वर्ष लग्न होने से उत्तर पूर्व के प्रदेशों में सुख के साधनों में वृद्धि हो। मध्यगंत प्रदेशों में प्रबल वर्षा से दुर्भिक्ष, फसलों की हानि तथा लोगों में क्लिष्ट रोगों की उत्पत्ति और चौपायों में विशेष रोग होने से चौपाय व दुग्धादि वस्तुओं में तेज़ी होगी।

जगत् लग्न—की कुण्डली के अनुसार 14 अप्रैल बुधवार को प्रातः 6 बजकर 57 मिनट पर मेष लग्न में जगत् लग्न का प्रवेश होगा। लग्न का स्वामी मंगल (जो इस वर्ष का राजा भी है) चतुर्थ भाव में कर्क राशि का होने से नीच अवस्था में है। कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा (जो देश की सामान्य प्रजा एवं स्त्री वर्ग का भी कारक होता है) द्वादश भाव में शत्रुग्रह शनि द्वारा वीक्षित है। ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के अधिकांश देशों के आन्तरिक, सामाजिक व राजनीतिक हालात विक्षुब्ध एवं परेशानीकारक होंगे। विशेषकर अमेरिका, चीन, अफगानिस्तान, भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बंगलादेश आदि देशों में आन्तरिक परिस्थितियां अस्थिर एवं अशान्तिपूर्ण होंगी। भारत, ब्रिटेन एवं अमरीका सहित कुछ देश शान्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

विश्व राजनीतिक मंच का केन्द्रीय ध्रुवीकरण—चीन व पाकिस्तान की बढ़ती सामरिक एवं परमाणु शक्ति तथा विस्तारवाद की प्रवृत्ति के कारण विश्व के गुट निरपेक्ष देशों को विश्व शान्ति हेतु नए सिरे से विचार करना पड़ेगा। परमाणु-हथियारों के निर्माण एवं प्रयोगों के सम्बन्ध में एवं गुप्त समझौता विश्व राजनीति के लिए केन्द्रीय ध्रुवीकरण के लिए चिन्ता का विषय बनेगा।

मुस्लिम देशों की नववर्ष कुं.

सन् 2010 ईसवी में हिजरी सन् 1431 का प्रचलन रहेगा। इस्लामी देशों की वर्ष प्रवेश जोकि 1 मुहर्रम शनिवार, को शुरू हुआ था, तदनुसार सन् 2010 में (इस्लामी मतानुसार) बादशाह शनिश्चर होगा। इस्लामी वर्ष कुण्डली में मिथुन लग्न उदित हुआ है। लग्न भाव में केतु और सप्तम भाव में सूर्य, चन्द्र, बुध व राहु ग्रह होने से पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में राजनीतिक हालात अस्थिर एवं डांवाडोल रहेंगे। प्रमुख नेतृत्व को तालिबान आतंकवाद गुटों से गम्भीर चुनौतियों का सामना रहेगा। पाकिस्तान मुल्क के भीतर तथा भारतवर्ती क्षेत्रों में तालिबान और कट्टर आतंकवादी ग्रुपों द्वारा **हिंसक व विस्फोटक** वारदातें करते हुए मानवता के विरुद्ध आचरण करते रहेंगे। द्वितीय भाव में मंगल नीच राशिस्थ होने से पाकिस्तान की मौजूदा सत्तारूढ़ हकूमत के लिए गम्भीर स्यासी (राजनीतिक) एवं आर्थिक चुनौतियां रहेंगी। प्राकृतिक आपदाओं तथा आतंकवादी विस्फोटों के कारण निरीह बेकसूर सामान्य जनता जुल्म का शिकार होगी।
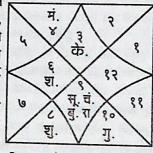
2010 ई. में ग्रहगोचर और विश्व के हालात

वर्ष के आरम्भ में माघ मास (जनवरी) में पाँच शुक्र और पाँच शनिवार पड़ने से मिश्रित प्रभाव होंगे। जनसँख्या में वृद्धि तथा विश्व में धन-सम्पदा का प्रसार व नियोजन

बढ़ेगा। पाँच शनिवार होने से कहीं जातीय हिंसा एवं साम्प्रदायिक दंगे फिसाद बढ़ेंगे। जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वैश्विक स्तर (सम्पूर्ण विश्व में) पर तेजी होगी। पूर्वोत्तर दिशा में कहीं राज्य भंग व अग्निकाण्ड, युद्धादि का भय हो।

शनिवारा यदा पंचपाताले कम्पते फणीः। ईशान देश भंगश्च वह्णि दाहो महर्घता॥

सामान्य प्रजा में रोगों, दुखों की वृद्धि होगी फाल्गुण मास (31 जन. से 28 फर.) के मध्य **पाँच रविवार** होने से बंगलादेश, पाकिस्तान सहित कुछ देशों में अनाज की कमी, सूखा व कहीं दुर्भिक्ष का भय हो, उपद्रव, जातीय हिंसा एवं आकस्मिक विस्फोटों के कारण अग्निकाण्ड व हिंसक घटनाएँ घटित होने के योग हैं, कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) होने के भी संकेत हैं।

आगे **चैत्र मास** (1 मार्च से 30 मार्च) तक पांच मंगलवार होने से कहीं हिंसक घटनाएं, **उपद्रव व पूर्वीय देशों के मध्य युद्ध** भय होगा। किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु या अपदस्थ होने के भी योग हैं—

यत्र मासे महीसूने जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥

खप्पर योग—1 जनवरी से 30 मार्च 2010 ई. के मध्य क्रमानुसार पांच शनि, पांच रवि और पांच मंगलवार होने से **खप्पर योग** बना है, जिसका फल शास्त्रकारों ने अशुभ एवं कष्टकारी बताया है। आगे 14 अप्रैल को **वैशाख** संक्रान्ति के दिन भी अमावस का योग होने को भी शास्त्रकारों ने **खप्पर योग** माना है।

15 अप्रैल से 14 मई तक **वैशाख अधिक मास** तथा **14 मई से 27 मई** तक तेरह दिन का पक्ष होने से **विश्वघस्र** पक्ष बना है। शास्त्रों में तेरह दिन के पक्ष का फल अत्यन्त अशुभ कहा गया है—

अनेक युग साहस्रयां दैवयोगात् प्रजायते। त्रयोदश दिनैः पक्षः तदा संहरते जगत्॥

अर्थात् दैवयोग से यदि तेरह दिन का पक्ष आ जाए, तो वह लोगों में क्लिष्ट रोगकारक कहीं महंगाई, सूखा, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक उपद्रव कारक, कहीं हिंसा, अग्निकाण्ड एवं विस्फोटक घटनाएं होने के संकेत हैं। अन्यत्र भी लिखा गया है—

यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश दिनात्मकः।
भवेत् लोक क्षयो घोरो खण्डमुण्डमाला युतामही॥

इस अवधि में किन्हीं देशों के मध्य युद्ध, सत्ता परिवर्तन (छत्रभंग), आतंकवादी एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं।

ज्येष्ठ मास (28 मई से 26 जून) के मध्य पांच शनिवार होने से दैनिक उपयोग की वस्तुओं के मूल्यों में तेज़ी तथा विश्व में क्लिष्ट प्रकार के रोगों की व्याप्ति होगी।

आगे आषाढ़ (27 जून से 26 जुला.) के मध्य मूल्यों में वृद्धि, कहीं सत्ता परिवर्तन व पाक आदि मुस्लिम राष्ट्र में राजनैतिक संकट पैदा होंगे। वहां गृह-युद्ध जैसे हालात बनेंगे।

31 जुलाई को **कन्या राशि पर मंगल-शनि** का योग मुस्लिम राष्ट्रों विशेषकर पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि के लिए अनिष्टकारी होगा।

10 अग. को भौमवासरी अमावस का होना तथा **21 अग.** को मंगल-शुक्र का योग तदनन्तर 1 अक्तूबर को कन्या राशि पर **सूर्य-शनि** का योग होने से पाक आदि मुस्लिम देशों के लिए अनिष्टकारी होगा। कहीं सत्ता परिवर्तन एवं कहीं अग्निकाण्ड विस्फोट या कुदरती आपदाओं के कारण हानि पहुंचने के संकेत हैं।

1 नवं से 5 दिसं. के मध्य शनि-गुरु के बीच षडाष्टक योग पाक आदि मुस्लि. राष्ट्रों के लिए अशुभफलकारी होगा।

विश्व के कुछ अन्य देश

अमेरिका (America)—इसकी प्रभावराशि मिथुन है। जगत् लग्न कुण्डली में मिथुन राशि पर केतु का अशुभ संचार है, उस पर गुरु व शनि दोनों ग्रहों की शुभाशुभ दृष्टियां पड़ रही हैं। फलस्वरूप पाकिस्तान, इराक, ईरान, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम बहुल्य देशों के सम्बन्ध में अपनी विदेश नीतियों का पुनरावलोकन करने की आवश्यकता होगी। (**ध्यान रहे, वर्तमान राष्ट्रपति बराक ओबामा के सम्बन्ध में गतवर्ष इस कॉलम में पृष्ठ 71 पर की गई हमारी भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुई है।**) चूंकि राष्ट्रपति बराक ओबामा की तुला लग्न की कुण्डली में मिथुन राशि नवम (भाग्य) स्थान में शुक्र युक्त होकर पड़ी है, अतएव राष्ट्रपति ओबामा भारत एवं पाकिस्तान के सम्बन्धों के विषय में यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाएंगे। पाक को दी जाने वाली आर्थिक एवं सैन्य सहायता का दुरुपयोग भारत के विरुद्ध किया जा रहा है—इस तथ्य की जानकारी होने पर भी यद्यपि पाक पर दबाव बनाएगा परन्तु भारत के हितों की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से अनदेखी करते हुए पाक को सहायता जारी रखेगा।

पाकिस्तान (Pakistan)—जगत्-लग्न कुण्डली में इसकी प्रभावराशि कन्या छठे भाव में है, तथा उस पर शनि-साढ़साती का प्रभाव भी है। नववर्ष प्रवेश कुण्डली में स्वामी ग्रह बुध चौथे भाव में नीच राशि का होकर सूर्य, चंद्र आदि ग्रहों के साथ चतुर्ग्रही योग बना रहा है। ग्रहों के प्रभावस्वरूप पाकिस्तान के वर्तमान राष्ट्रपति जिरदारी साहब की सत्तारूढ़ सरकार को जबरदस्त चुनौतियों का सामना रहेगा। सुरक्षा की दृष्टि से पाकिस्तान के अन्दरूनी हालात बड़े नाज़ुक एवं कशमकशपूर्ण रहेंगे। पाकिस्तानी सरकार द्वारा संरक्षित जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तोयबा जैसै कट्टरवादी गुट तथा विभिन्न तालिबान-आतंकवादी ग्रुप अब स्वयं पाकिस्तानी हकूमत के लिए नासूर बन जाएंगे। पाक के भीतरी भागों में अनेक स्थलों पर अग्निकाण्ड, बम-विस्फोट एवं हिंसक वारदातें करते हुए हकूमत के वजूद को गम्भीर चुनौतियां देंगे। भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रशिक्षित आतंकवादियों द्वारा विस्फोट एवं **घुसपैठ कराने का क्रम जारी रखेगा।** आतंकवाद की समाप्ति के नाम पर अमरीका से आर्थिक एवं सैन्य सहायता प्राप्त करता रहेगा।

सम्वत् २०६७ में ग्रह स्थिति और भारत का भविष्यफल

कुं. स्वतंत्र भारत
15 अग. 1947

कुं. स्व. भारत 63वाँ वर्ष
14-08-2009 (21 घं. 27 मिं.)
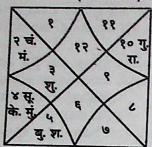
कुं. स्व. भारत 64वाँ वर्ष
15-08-2010 (3 घं. 36 मिं.)

कुं. गणतंत्रदिवस
26 जन., 1950 ई.

कुं. गणतंत्र दिन 61वाँ वर्ष
26-01-2010 ई. (19 घं. 29 मिं.)

गणतन्त्र दिवस के 61वें साल की वर्ष कुण्डली में भारतवर्ष 26 जनवरी, सन् 2010 ई०, मंगलवार को, एकादशी तिथि, रोहिणी नक्षत्र कालीन सिंह लग्न में प्रवेश करेगा। लग्न का स्वामी सूर्य छटे मकर राशि (भारत की प्रभाव राशि) पर शुक्र युक्त होकर बैठा है, उनपर नीच राशिस्थ मंगल की विशेष दृष्टि पड़ रही है। अष्टम भाव में मुंथा का होना एक व्यक्ति और देश दोनों के लिए अनिष्टकारी होती है। पंचमेश मुंथा पर शनि की अशुभ दृष्टि पड़ रही है, फलस्वरूप भारत की विभिन्न विकास योजनाओं पर आशातीत खर्चों के बावजूद वांछित लाभ नहीं हो पाएंगे। लघु एवं वृहद् विकास योजनाओं में आकस्मिक अड़चनों एवं अनावश्यक खर्चों में वृद्धि के कारण विकास की गति धीमी रहेगी। सत्तारूढ़ नेताओं में संकल्प एवं पराक्रम की कमी रहेगी। सरकार की ढिलमुल नीतियों के कारण ही पाकिस्तान, चीन आदि विदेशी शक्तियां भारत की सीमाओं पर भारी सैनिक जमाव कर रहे हैं तथा भारत सरकार द्वारा प्रोटैस्ट करने के बावजूद सीमाओं का अतिक्रमण करते रहेंगे। चतुर्थ भाव का स्वामी, मंगल द्वादश भाव में नीच राशिस्थ होकर पड़ा है, फलस्वरूप दैनिक उपयोग की वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत वृद्धि के कारण बढ़ी हुई महंगाई एवं भ्रष्टाचार से सामान्य लोग अत्यन्त परेशान व दुखी होंगे। साईंस व टैक्नोलाजी, सूचना व संचार (Information & Technology), सड़क व परिवहन क्षेत्रों, शिक्षा, परमाणु क्षेत्र, जहाजरानी, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर्ज आदि क्षेत्रों, उच्च-तकनीकि शिक्षा आदि क्षेत्रों में भारत यद्यपि विशेष उन्नति करेगा, परन्तु पाकिस्तान, चीन, बंगलादेश आदि सीमावर्ती शत्रुओं के बढ़ते अतिक्रमणों की चुनौतियों के कारण भारत में विकास की दर को ठेस पहुंचेगा।

भारत सरकार एवं भारतीयों के लिए अग्नि परीक्षा व चुनौतियों से भरा वर्ष—स्वतन्त्र भारत के 63वें वर्ष की वर्ष कुण्डली में भारत वर्ष 15 अग., 2009 ई. शनिवार को मीन लग्न में प्रविष्ट हो चुका है। संवत् के नववर्ष की प्रवेश कुण्डली में यह राशि चतुर्थ भाव में आई है, जिस पर सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र-ग्रहों का चतुर्ग्रही योग बना हुआ है। इस योग पर शनि की विशेष सप्तम दृष्टि भी है। दोनों कुण्डलियों में स्थित ग्रहों के अनुशीलन से पता चलता है कि आगामी वर्ष भारत सरकार एवं भारतीयों दोनों के लिए चुनौतियों से भरा वर्ष होगा। देश के चहुँ ओर विशेषकर पूर्वी, उत्तरी एवं पश्चिमी सीमाओं पर पूर्वी व उत्तरी सीमाओं से नक्सलवादी गुटों सहित चीनी सेना का अतिक्रमण तथा पश्चिमी सीमाओं पर तालिबानी संगठनों व पाक-प्रशिक्षित आंतकवादी गुटों द्वारा सीमाओं पर घुसपैठ एवं गोलाबारी करके भारत की अस्मिता को हानि पहुँचाने के लिए प्रयासरत रहेंगे। इसके अतिरिक्त देश के भीतर परिव्याप्त भ्रष्टाचार, बेईमानी, बेरोजगारी, नेताओं में नैतिक व चारित्रिक मूल्यों की कमी, देशभक्ति के प्रति प्रतिबद्धता की कमी, तीव्रगति से बढ़ती जनसंख्या, सामान्य एवं उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि होने से सामान्य लोगों को दैनिक जीवन यापन करना दूभर होगा। वर्तमान सत्तारूढ़ डॉ. मनमोहन व सोनिया सरकार से आम लोगों का विश्वास भंग होता दिखाई देगा।

सन् 2010 ई. में गोचर ग्रह और भारत का भविष्यफल

वर्ष 2010 के प्रारम्भ में माघ मास (1 से 30 जन.) में पाँच शुक्रवार तथा पाँच शनिवार पड़ने से क्रमशः धन-सम्पदा का प्रसार व अपव्यय बढ़ेगा—प्रजा वृद्धिस्तु भार्गवे। तथा पाँच शनिवार होने से देश के कुछ भागों में उपद्रव, हिंसक घटनाएं एवं जातीय दंगे फिसाद हों। उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में विशेष तेजी हो। आगे चान्द्र फाल्गुन मास (31 जन. से 28 फर.) के मध्य 5 रविवार होने से कहीं अनाज, दालें, चावल आदि में कमी, अत्यधिक महँगाई। देश में अस्थिरता, कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) के योग हों—

शनिवाराः यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोग शोक, छत्रभंगश्च॥

फरवरी के प्रारम्भ से 28 मार्च तक शनि कन्या राशि में तथा मंगल कर्क में वक्री चल रहा है तथा गुरु इस अवधि में अतिचार गति से संचरणशील है, इसके प्रभावस्वरूप लोगों में

किसी क्लिष्ट रोग की व्याप्ति, अनाज में कमी, दुर्भिक्ष, कीमतों में आशातीत वृद्धि तथा सीमाओं पर युद्ध की सम्भावनाएँ बढ़ें—

यदा क्रूर ग्रहो वक्री हि अतिचारी तु सौम्यकः।
पीडा–व्याधि–भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्॥

आगे चान्द्र चैत्र मास (1 से 30 मार्च) की मध्यावधि में पाँच सोमवार एवं पाँच मंगलवार होने से देश में कही छत्रभंग, उपद्रव, हिंसक घटनाएँ होने के योग हैं अकस्मात् युद्ध की भी सम्भावना है। किसी प्रमुख नेता की अकस्मात् मृत्यु या अपदस्थ होने के भी संकेत हैं—

यत्र मासे महीसूने जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभङ्गस्तदा भवेत्॥

उपरोक्त विवरणानुसार माघ, फागुन व चैत्र मासों में क्रमानुसार पाँच शनि, पाँच रविवार एवं फिर पाँच मंगलवार होने से खप्पर योग बना है। इसका फल शास्त्र में अशुभ एवं भयकारक लिखा है व अति कष्टकारी घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं—

शनिः स्यादाद्यसंक्रान्तौ द्वितीयायां प्रभाकरः।
तृतीयायां कुजो योगः खर्पराखयोति कष्ट कृत॥

30 मार्च से 28 अप्रैल मध्ये—चांद्र वैशाख मास में पुनः पाँच मंगलवार होने से किसी मूर्धन्य नेता के लिए अशुभ एवं अनिष्टकारी होगा। सीमावर्ती इलाकों में सैनिक टकराव होने के योग हैं।

वैशाख अधिकमास (15 अप्रैल से 14 मई के मध्य)

इस अवधि में सूर्य व शनि के मध्य षडाष्टक योग होना अशुभकारक होगा। पड़ोसी देश चीन, पाकिस्तान आदि भारत की सीमाओं पर टकराव होने के संकेत हैं। अत्यधिक महँगाई व भ्रष्टाचार के मुद्दों को लेकर सरकार का विपक्षी दलों के साथ भी टकराव होगा। गेहूँ, धान्य व अन्य खाद्यान्न के उत्पादन में कमी रहेगी।

त्रयोदश दिनात्मक पक्ष (14 मई से 27 मई तक) द्वि. वैशाख शुक्ल पक्ष तेरह दिनात्मक होने से इसका फल शास्त्रों में अत्यन्त अशुभ कहा गया है—

अनेक युग साहस्रयां दैवयोगात् प्रजायते।
त्रयोदश दिने पक्षस्तदा संहरते जगत्॥
यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश दिनात्मकः।
भवेत् लोक क्षयो घोरो रूण्ड मुण्ड माला युतामही॥

फलस्वरूप उपरोक्त अवधियों में सीमावर्ती प्रदेशों में सैनिक टकराव, हिंसा व विस्फोट की घटनाएँ, कहीं अत्यधिक गर्मी के कारण लोगों में रोग, कष्ट व अपघात होने के संकेत हैं। दैनिक उपयोग की वस्तुओं ने अत्यधिक तेजी होने से सामान्य लोगों में बेचैनी, विक्षोभ, उपद्रव व जनांदोलन बढ़ेंगे।

आगे ज्येष्ठ, आषाढ़ व भाद्रपद मास (28 मई से 24 अगस्त के मध्य) पुनः पाँच शनि, रवि एवं मंगलवारों की पुनरावृत्ति होने से पुनः खप्पर योग का अशुभ एवं अनिष्टकारी प्रभाव रहेगा। कहीं छत्रभंग या किसी मूर्धन्य नेता के अपदस्थ होने के संकेत हैं।

15 जून को मंगलवार की संक्रान्ति होना तथा आषाढ़ को रविवार की अमावस होने से देश में कहीं राजनीतिक संकट, महंगाई, आन्तरिक उपद्रव, छत्रभंग एवं युद्धादि का भय हो—

''भौमस्यवारे यदि संक्रमश्च करोति पृथव्यां असुखं महर्घता वा।''

पाक व चीनी अतिक्रमणों से सावधान !

23 जुलाई से गुरू (वृहस्पति) मीन राशि में वक्री हो रहा है। मंगल व शनि दोनों क्रूर ग्रहों की उस पर पहले से दृष्टियाँ पड़ रही हैं। जिससे अधिकांश नेता तथा भ्रष्ट प्रवृत्ति के लोग प्रजा के धन का नाश करेंगे। ग्रह, भूत-पिशाच आदि प्राकृतिक एवं आकस्मिक प्रकोपों से लोगों को अत्यधिक कष्ट, पीड़ा व दुःख हों। गुड़, चीनी, रूई, कपास व सर्व प्रकार के धान्यादि के व्यापारी अच्छा लाभ प्राप्त कर सकेंगे—

मीन राशिगतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत्। धन क्षयः तदालोके चौरात् राजाऽपि रोषितः॥
निराधारा प्रजा पीडाग्रहभूतादि दोषतः (तुलाभांड गुडः खंडअर्घं—ददाति वांछितम्॥
लवणंघृत तैलादि सर्वधान्य महर्घता॥

श्रावणमास (27 जुला. से 24 अग.) में पुनः मंगलवारी अमावस होना तथा इस मास में पाँच मंगलवारों का होना तथा 20 जुलाई से 5 सितम्बर के बीच शनि-मंगल का योग, और 1 अग. से 31 अग. के मध्य गुरू-शुक्र ग्रहों में सम-सप्तक योग का अशुभ प्रभाव रहेगा। भौमवारी अमावस तथा पाँच मंगलवारों का फल इस प्रकार से लिखा गया है—

राज्य भ्रंशों राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्।
उपघातोऽल्प वृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे॥

अपरंच— यत्रमासे महीसूने जायन्ते पंचवासरा।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगरस्तदाभवेत्॥

सीमावर्ती प्रदेशों में सैनिक टकराव, हिंसक व विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं। कहीं अति वर्षा से बाढ़ एवं कहीं अल्प वर्षा के कारण खड़ी फसलों को नुक्सान व सूखा दुर्भिक्ष का भय हो। आवश्यक वस्तुओं में अत्यधिक महँगाई होने से सामान्य जन त्राहि त्राहि कर उठेगा।

पुनः खप्पर योग—24 सितंबर से 21 दिसंबर के मध्य चान्द्र आश्विन, कार्तिक व मार्गशीर्ष मासों में क्रमानुसार 5 शनिवार, 5 रविवार और 5 मंगलवारों का समावेश होने से वर्ष में तीसरी बार खप्पर योग बना है। इसी बीच 16 सितं. से 16 अक्तू. तक सूर्य शनि का योग होना। तथा 16 दिसं. से 22 दिसंबर तक सू. मं. बु. व राहु सहित चारग्रही योग बनेगा। ऊपरलिखित काल अवधियों में चीन व पाकिस्तान अपने प्रशिक्षित आतंकवादियों को भारत की सीमाओं में घुसपैठ कराने तथा भारत में कोई बड़ी वारदात करवाने के कुटिल प्रयास करते रहेंगे। सत्तारूढ़ केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों तथा भारत के देशवासियों को पूरी तरह चौकसी बरतनी होगी।

कांग्रेस गठित यू. पी. ए. सरकार की दूसरी पारी

कुं. वर्तमान प्रधानमन्त्री
डॉ. मनमोहन सिंह
26 सितं. 1932, 2-00 PM Pak.
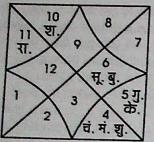
नवगठित यू. पी. ए. सरकार
द्वारा शपथ कालीन कुण्डली
22 मई, 2009 ई. 6.30 P.M.
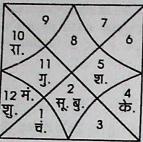
वर्तमान यू.पी.ए (U.P.A.) गठबन्धन कांग्रेस सरकार ने डा० मनमोहन सिंह के नेतृत्व में दूसरी बार 22 मई को ही सन् 2009 ई० शुक्रवार को सायं 6 बजकर 00 मिनट पर, अश्विनी नक्षत्र एवं सौभाग्य योगकालीन वृश्चिक लग्न में उन्नीस कैबिनेट मन्त्रियों सहित शपथ ग्रहण की थी। लग्नेश मंगल यद्यपि पंचम भाव में शुक्र युक्त है, परन्तु अन्तिम अंशों पर होने से स्वराशि गामी है। शपथकालीन स्थिर लग्न था, तथा सू, बु, गुरू, शनि आदि महत्त्वपूर्ण ग्रह स्थिर राशियों में है जबकि राशिस्वामी मंगल द्वि-स्वभाव परन्तु मित्र राशि में शुक्र के साथ है। भाग्येश चन्द्र षष्ठ भाव में होने से नव-गठित यू.पी.ए. सरकार देश की आन्तरिक व बाहरी समस्याओं के सम्बन्ध में गम्भीर चुनौतियों का सामना रहेगा। अतिशीघ्र गति से बढ़ती महंगाई, बेमौसमी बारिश, भ्रष्टाचार, पेयजल-बिजली व अन्य उपभोग्य, खाद्यान्न आदि वस्तुओं की कमी के कारण यू.पी.ए. सरकार की लोकप्रियता में कमी आने के योग हैं।

प्रधानमन्त्री डा. मनमोहन सिंह जी की जन्म कुण्डली में धनु लग्न उदित है। लग्नेश गुरु त्रिकोण भाव में बैठ कर लग्न भाव को स्वराशि दृष्टि से देख रहा है। डा. मनमोहन जी की नवांश कुण्डली में अधिकांश ग्रहों की स्थिति बहुत अच्छी है। जन्म कुण्डली का भाग्येश ग्रह सूर्य नवांश कुण्डली के नवम (भाग्य) स्थान में उच्च राशिस्थ है तथा शनि सप्तम भाव में स्वराशि होकर मित्र ग्रह शुक्र के साथ है। ग्रहस्थिति अनुसार डा. मनमोहन सिंह जी प्रधानमन्त्री का पद अभी सफलतापूर्वक निर्वाह करेंगे। वर्तमान काल में उनको राहु की महादशा के मध्य शुक्र की अन्तरदशा चल रही है, जो कि 25 फरवरी, 2011 ई. तक रहेगी। जन्म कुण्डली में शुक्र उच्च राशि का होकर पंचम भावस्थ है। परन्तु आगामी वर्षारम्भ से 1 मई, 2010 ई. तक लग्नपति गुरू कुम्भ राशि में संचरण काल में डा० मनमोहन सिंह जी को अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होगी। देश की क्लिष्ट आन्तरिक समस्याओं तथा विकट बाहरी समस्याओं के कारण इनका स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा।

सम्वत् २०६७ में भारतीय जनता पार्टी

भारतीय जनता पार्टी की कुं.

भाजपा की स्थापना कुण्डली में मिथुन लग्न उदित है। लग्नाधिपति भाग्य स्थान में केतु युक्त है, उस पर शनि, मंगल, राहु, गुरु—सभी ग्रहों की दृष्टि है। फलस्वरूप भाजपा पार्टी के लिए आगामी वर्ष कठिन चुनौतियों एवं विषम परिस्थितियों से भरा होगा। भाजपा का आपसी अन्तर्कलह के कारण कुछ मुख्य भाजपा नेता पार्टी का प्रमुख पद छोड़ने को बाध्य हो जाएंगे तथा ऐसा प्रतीत होगा कि देश की मुख्य विपक्षी पाटी बिखराव की ओर जा रही है, परन्तु नए युवा कार्यकर्त्ताओं के शामिल होने से 2 मई, 2010 से 31 अक्तू. तक गुरू मीन राशि में संचार करने पर भाजपा के संगठन में मज़बूती का संचार होगा। कुछ प्रान्तों में भाजपा की गिरती साख में वृद्धि होगी तथा ईश्वर की कृपा से पुनर्गठित होकर सशक्त विपक्षी पार्टी के रूप में उभरेगी।

कांग्रेस पार्टी के महासचिव—श्री राहुल गाँधी

यथोपलब्ध सूचना के अनुसार राहुल गाँधी का जन्म वृष लग्न में हुआ है। पंचमेश बुध लग्न राशि में वर्गोत्तम होकर बैठा है। जिसके कारण यह जातक स्वाभिमानी, साहसी, स्फूर्तिवान एवं तेजस्वी और तीव्र बुद्धिमान नेता के रूप में उभर कर आए हैं। 1 मई, 2010 ई. तक जब गुरू कुम्भ राशि में संचार कर रहा होगा तथा श्रीराहुल गाँधी को चन्द्र मध्ये राहु की अन्तर्दशा होगी। इस कालावधि तक श्री गाँधी को अत्यन्त कठिन एवं संघषपूर्ण परिस्थितियों में से गुज़रना पड़ेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में राहु भी अष्टम भाव में नीचराशि का होगा। सुरक्षा की दृष्टि से उपरोक्त कालावधि अशुभफल कारक लक्षित होती है। इसलिए आगामी वर्ष इनको अपनी सुरक्षा कवच का विशेष ध्यान रखना होगा। वर्ष के उत्तरार्ध भाग में श्री राहुल गांधी भारतीय राजनीति के क्षेत्र में उदीयमान, सशक्त एवं सक्रिय नेता के रूप में उभरेंगे, परन्तु सन् 2011 में ही केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में भागीदारी की सम्भावना बनेगी।

श्रीराहुल गाँधी 19-06-1970

भारत के कुछ मुख्य प्रान्त

हिमाचल प्रदेश--प्रभावराशि मीन तथा नामराशि कर्क है। 61वें वर्ष के गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी, 2010 ई.) की कुण्डली में राशिस्वामी गुरू कुम्भ राशिगत है। कर्क राशि पर मंगल नीचावस्था में संचार कर रहा है। मुख्यमन्त्री प्रो. श्री प्रेमकुमार धूमल के नेतृत्व में प्रदेश सरकार अनेक विकासोन्मुखी एवं उपयोगी योजनाओं को पूरा करने में शीघ्रता दिखाएगी तथा औद्योगिक, पर्यटन, बिजली-क्षेत्र, कृषि, जल एवं पेयजल, अनाज-कृषि मण्डी बनाना, आयुर्वेद से सम्बन्धित जड़ी-बूटियों के विकासार्थ पौधों सम्बन्धी अनुसन्धानात्मक कार्य, सड़क निर्माण क्षेत्र सम्बन्धी विकास के लिए विशेष प्रयास किए जाएंगे, परन्तु विपरीत ग्रहस्थिति के कारण प्राकृतिक आपदाओं, भू-स्खलन, अतिवृष्टि, वायु एवं विद्युत् विस्फोट, असामयिक वर्षा के कारण कृषि, धन व जन हानि होने के योग हैं। सेब आदि मुख्य फसलों की हानि, जलवायु में प्रदूषण के कारण आरम्भिक छः महीने विशेष रूप से गर्म रहेंगे। यान-वाहनादि सड़क दुर्घटनाओं की भी संभावनाएं हैं। प्रभावराशि मीन गणतन्त्र कुं. अष्टम भाव में होने से विभिन्न विकास योजनाओं का लाभ साधारण लोगों तक पहुँचाने के लिए विशेष प्रयास आपेक्षित होंगे। परन्तु 25 मई तक कई तरह के घटनाक्रमों से धूमल सरकार की यश-प्रतिष्ठा पर आक्षेप लगेंगे। तथा परेशानी बन सकती है। परन्तु गुरू 1 मई से मीन राशि में रहने से प्रदेश भाजपा सरकार की प्रतिष्ठा व यश में वृद्धि होगी।

पंजाब—इसकी प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि कन्या है। नववर्ष प्रवेश कुं. में मीन राशि पर चतुर्ग्रही योग बना हुआ है तथा कन्या राशि पर शनि का संचार है। यद्यपि प्रदेश बादल सरकार द्वारा बिजली, सड़क-निर्माण, निर्माणाधीन पुलों, कृषि विकास के लिए यथासम्भव प्रयास करेगी, परन्तु टैक्सों में वृद्धि, बिजली तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि आदि समस्याओं के कारण वर्तमान बादल सरकार की प्रतिष्ठा एवं साख को गहरी ठेस पहुँचेगी। भ्रष्टाचार, सड़क व परिवहन की दुर्दशा, व्यापार एवं अनेक उद्योगों की बिगड़ती परिस्थितियां राज्य सरकार के लिए गम्भीर चुनौतियां प्रस्तुत करेंगी।

जम्मू-काश्मीर—प्रभावराशि तुला तथा नामराशि मकर है। वर्षभर प्रभावराशि पर शनि-साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। राज्य के युवा मुख्यमन्त्री उमर उब्दुल्ला राज्य के प्रत्येक क्षेत्र में विकास योजनाओं को पहुँचाने का प्रयास करेंगे परन्तु क्षेत्रीय असन्तुलन के कारण कुछ क्षेत्रों में असन्तोष उत्पन्न होगा। विपक्षी दल क्षेत्रवाद एवं जातिवाद को बढ़ावा देकर तथा स्थानीय मुद्दों को राजनीतिक रंग देकर राज्य सरकार के समक्ष गम्भीर कानून अव्यवस्था का वातावरण उत्पन्न करने का प्रयास करेंगे। गतवर्ष इसी कॉलम में नैशनल कांफ्रेस के प्रभावक्षेत्र बढ़ने की बात स्पष्ट लिख दी गई थी। सरकार काश्मीर में पर्यटन, सेब, कृषि उद्योगों, विद्युत्, यातायात, शिक्षा व रोजगार के क्षेत्रों को विशेष बढ़ावा व प्रगति करने में प्रयासरत रहेगी, परन्तु छिटपुट आतंकवादी घटनाओं के कारण विकास पथ में व्यवधान रहेगा। प्रान्तीय सरकार को आर्थिक व सामाजिक अवरोधों का सामना करना पड़ेगा। केन्द्र द्वारा आर्थिक पैकेज मिलने के कारण विभिन्न विकासोन्मुखी योजनाओं की घोषणा भी की जाएगी।

राजस्थान—प्रभावराशि कर्क तथा नामराशि तुला है। 61वें गणतन्त्र कुं. (26-01-2010 ई.) में कर्क राशि द्वादशस्थ मंगल द्वारा अधिष्ठित तथा तुला राशि पर साढ़ेसति का प्रभाव है। प्रदेश कांग्रेस सरकार को विपरीत जलवायु (ग्रीष्म), कम वर्षा तथा कम कृषि उत्पादन के कारण कठिन एवं विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। लोगों में महँगाई एवं सरकारी नीतियों के विरुद्ध असन्तोष एवं विक्षोभ की भावना रहेगी। भाजपा अन्तर्कलह के कारण कुछ क्षेत्रों में कमज़ोर होगी।

हरियाणा—प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि मिथुन है। मिथुन राशि पर केतु का संचार वर्षभर रहेगा। विपरीत हालात तथा महंगाई के विरुद्ध जनता के आक्रोश के बावजूद कांग्रेस इनैलो तथा भाजपा-भजनलाल (प्रस्तावित) गठबन्धन को पछाड़कर पुनः सत्ता में आएगी। मुख्यमन्त्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा पुनः एक ओर जीत हासिल करेंगे। परन्तु कांग्रेस को सत्ता के आधिपत्य की भावना से ग्रस्त होने से बचकर साधारण जनता तक विकास योजनाओं को पहुँचाने का प्रयास करना होगा। राज्य सरकार को बिजली, पेयजल आपूर्ति एवं बेरोज़गारी आदि समस्याओं की ओर विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा परिस्थितियाँ विकट होंगी। असमय वर्षा, खण्ड वर्षा तथा कहीं-कहीं वर्षा के अभाव से दुर्भिक्ष, अकाल जैसी स्थिति रहेगी। आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत वृद्धि से जनता में आक्रोश रहेगा।

दिल्ली—नव-गणतन्त्र दिवस कुं. (26-01-2010 ई.) में इसकी प्रभाव राशि मकर सू.-बु. का शुभ योग तथा मंगल की उच्च दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप प्रदेश कांग्रेस सरकार आगामी वर्ष परिवहन, सड़क, फ्लाई-ओवर, शिक्षा तथा खेल के क्षेत्रों में विकास हेतु अनेक सुधारात्मक पग उठाएगी तथा कुछ क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मापतण्ड इस्तेमाल होंगे। परन्तु अव्यवस्थित वितरण प्रणाली एवं बढ़ती मंहगाई के कारण शीला सरकार की साख एवं प्रतिष्ठा के लिए अत्यधिक क्षतिकारक सिद्ध होगी।

उत्तर प्रदेश—प्रभावराशि धुन तथा नाम राशि वृष है। गणतन्त्र दिवस कुं. में (26-01-2010 ई.) तथा सारा वर्ष धनु राशि पर राहु का संचार है। ग्रहस्थिति अनुसार प्रदेश में बिगड़ती कानून व्यवस्था, भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, महंगाई, राजनीतिक पार्टियों के मध्य टकराव आदि के कारण आन्तरिक अशान्ति होगी, सामान्य प्रजा में आक्रोश व असन्तोष रहे। सत्तारूप बसपा एवं केन्द्र सरकार के मध्य टकराव की स्थिति रहे। कांग्रेस पार्टी का आधार इस प्रदेश में सुदृढ़ होगा।

उपरोक्त भविष्यवाणियां गोचर ग्रहों के संचार संकेतों के आधार पर अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेत्ता एवं सर्वज्ञ स्वयं विधाता ही है।

फलानि ग्रहसंचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना॥

लेख लिपिबद्धम्
आश्विन कृष्ण अष्टमी, तदनुसार
12 सितम्बर, सन् 2009 ई., शनिवार

शुभचिन्तकः
पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एवं
पं. विवेक शर्मा, जालन्धर।

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2010-11 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश (वर्षारम्भ में धनु में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	12/38	16 सितं.	कन्या	29/29
12 फर.	कुम्भ	25/38	17 अक्तू.	तुला	17/27
14 मार्च	मीन	22/30	16 नवं.	वृश्चिक	17/18
14 अप्रै.	मेष	6/57	16 दिसं.	धनु	7/59
14 मई	वृष	27/47	14 जन.(2011)	मकर	18/44
15 जून	मिथुन	10/21	13 फर.	कुम्भ	7/43
16 जुला.	कर्क	21/11	14 मार्च	मीन	28/33
16 अग.	सिंह	29/34			

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कर्क में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
26 मई	सिंह	15/53	30 नवं.	धनु	6/25
20 जुला.	कन्या	6/33	8 जन.(2011)	मकर	12/01
5 सितं.	तुला	27/03	15 फर.	कुम्भ	16/46
19 अक्तू.	वृश्चिक	26/20	25 मार्च	मीन	18/37

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
29 मार्च	मेष	28/38	5 नवं.	वृश्चिक	6/16
18 अप्रै.	वक्री	9/35	25 नवं.	धनु	28/00
11 मई	मार्गी	27/57	10 दिसं.	वक्री	17/33
6 जून	वृष	16/58	23 दिसं.	व. वृश्चिक	8/10
22 जून	मिथुन	21/28	30 दिसं.	मार्गी	12/51
6 जुला.	कर्क	21/29	7 जन.(2011)	धनु	24/23
23 जुला.	सिंह	22/09	30 जन.	मकर	29/54
20 अग.	वक्री	25/28	18 फर.	कुम्भ	17/32
12 सितं.	मार्गी	28/39	6 मार्च	मीन	20/18
30 सितं.	कन्या	10/52	28 मार्च	मेष	19/39
17 अक्तू.	तुला	12/58	30 मार्च	वक्री	26/18
			2 अप्रैल	व. मीन	10/53

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कुम्भ में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
2 मई	मीन	8/07	18 नवं.	मार्गी	22/23
23 जुला.	वक्री	17/33	6 दिसं.	मीन	9/09
1 नवं.	व. कुम्भ	12/54	संवतान्त तक मीन में रहेगा।		

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
26 मार्च	मेष	26/27	9 जून	कर्क	11/46
20 अप्रै.	वृष	12/34	5 जुला.	सिंह	9/45
15 मई	मिथुन	6/44	1 अग.	कन्या	15/48

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
1 सितं.	तुला	12/02
8 अक्तू.	वक्री	12/35
18 नवं.	मार्गी	26/48
(सन् 2011 ई.)		
1 जन.	वृश्चिक	16/45
29 जन.	धनु	28/00
25 फर.	मकर	6/13
22 मार्च	कुम्भ	12/40

—शनि—

सम्पूर्ण संवत् कन्या राशि में संचार करेगा।

—राहु—

सम्पूर्ण संवत् धनु राशि में संचार करेगा।

—केतु—

सम्पूर्ण संवत् मिथुन राशि में संचार करेगा।

—यूरेनस—

सारा संवत् मीन राशि में ही संचार करेगा।

—नैपच्यून—

सम्पूर्ण संवत् कुम्भ राशि में ही संचार करेगा।

—प्लूटो—

सारा संवत् धनु राशि में ही संचार करेगा।

ग्रहों का वक्री-मार्गी

—मंगल—

सारा संवत् मार्गी रहेगा।

बुध

18 अप्रै.	वक्री	9/35
11 मई	मार्गी	27/57
20 अग.	वक्री	25/28
12 सितं.	मार्गी	28/39
10 दिसं.	वक्री	17/33
30 दिसं.	मार्गी	12/51
(सन् 2011 ई.)		
30 मार्च	वक्री	26/18

गुरु

23 जुला.	वक्री	17/33
18 नवं.	मार्गी	22/23

शुक्र

8 अक्तू.	वक्री	12/35
18 नवं.	मार्गी	26/48

शनि
(संवतारम्भ में वक्री)

30 मई	मार्गी	23/38
26 जन.(2011)	वक्री	11/40

—यूरेनस—

5 जुला.	वक्री	22/18
6 दिसं.	मार्गी	7/24

—नैपच्यून—

31 मई	वक्री	24/21
7 नवं.	मार्गी	11/32

—प्लूटो—

7 अप्रै.	वक्री	8/01
14 सितं.	मार्गी	10/02

ग्रहों का उदय-अस्त-2010-11

मंगल

27 नवं. पश्चिमाऽस्त 13/27
संवतान्त तक अस्त रहेगा।

बुध

27 मार्च	पश्चिमोदय	26/17
20 अप्रै.	व. पश्चिमास्त	21/10
6 मई	व. पूर्वोदय	16/08
17 जून	पूर्वऽस्त	14/56
10 जुला.	पश्चिमोदय	8/17
27 अग.	व. पश्चिमास्त	29/16
10 सितं.	व. पूर्वोदय	27/19
30 सितं.	पूर्वऽस्त	9/47
7 नवं.	पश्चिमोदय	27/31
14 दिसं.	व. पश्चिमास्त	15/52
25 दिसं.	व. पूर्वोदय	19/47

बुध
(सन् 2011 ई.)

7 फर.	पूर्वेऽस्त	7/23
11 मार्च	पश्चिमोदय	25/29
2 अप्रै.	व. पश्चिमाऽस्त	7/11

गुरु

20 मार्च	पूर्वोदय	17/26
(सन् 2011 ई.)		
25 मार्च	पश्चिम. अस्त	16/49

शुक्र

20 अक्तू.	पश्चिमास्त	6/50
2 नवं.	पूर्वोदय	14/29

शनि

13 सितं.	पश्चि. अस्त	17/23
18 अक्तू.	पूर्वोदय	15/24

समसप्तक योग (सं. २०६७)

सूर्य-शनि ➡14 मार्च से 13 अप्रै.
शुक्र-शनि ➡2 मार्च से 26 मार्च
गुरु-शनि ➡2 मई से 31 अक्तू.
मंगल-गुरु ➡20 जुला. से 5 सितं.
शुक्र-गुरु ➡1 अग. से 31 अग.
सूर्य-गुरु ➡16 सितं. से 16 अक्तू.
गुरु-शनि ➡6 दिसं. से संवतान्त
सूर्य-शनि ➡14 मार्च से 13 अप्रै. (2011)
मंगल-शनि ➡25 मार्च से संवतान्त

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश-संवत् २०६७ वि. (सं. 2010-11 ई.)

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2010 ई.	नक्षत्र	चरण
18 मार्च	उ.भा.(1)	6/46
21 मार्च	उ.भा.(2)	15/14
24 मार्च	उ.भा.(3)	23/52
28 मार्च	उ.भा.(4)	8/40
31 मार्च	रेव. (1)	17/39
3 अप्रै.	रेव. (2)	26/47
7 अप्रै.	रेव. (3)	12/00
10 अप्रै.	रेव. (4)	21/24
14 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	6/57
17 अप्रै.	अश्वि (2)	
20 अप्रै.	अश्वि (3)	
24 अप्रै.	अश्वि (4)	
27 अप्रै.	भर. (1)	22/45
1 मई	भर. (2)	
4 मई	भर. (3)	
8 मई	भर. (4)	
11 मई	कृति (1)	16/56
14 मई	कृति (2) वृष	27/47
18 मई	कृति (3)	
21 मई	कृति (4)	
25 मई	रोहि (1)	13/06
28 मई	रोहि. (2)	
1 जून	रोहि (3)	
4 जून	रोहि (4)	
8 जून	मृग (1)	11/01
11 जून	मृग (2)	
15 जून	मृग 3 मिथुन	10/21
18 जून	मृग (4)	
22 जून	आर्द्रा (1)	9/57
25 जून	आर्द्रा (2)	
29 जून	आर्द्रा (3)	
2 जुला.	आर्द्रा (4)	
6 जुला.	पुर्न (1)	9/35
9 जुला.	पुर्न (2)	

2010 ई.	नक्षत्र	चरण
13 जुला.	पुर्न (3)	
16 जुला.	पुर्न 4 कर्क	21/11
20 जुला.	पुष्य (1)	9/02
23 जुला.	पुष्य (2)	
27 जुला.	पुष्य (3)	
30 जुला.	पुष्य (4)	
3 अग.	आश्ले. (1)	8/00
6 अग.	आश्ले. (2)	
10 अग.	आश्ले. (3)	
13 अग.	आश्ले. (4)	
16 अग.	मघा 1 सिंह	29/34
20 अग.	मघा (2)	
23 अग.	मघा (3)	
27 अग.	मघा (4)	
30 अग.	पू.फा. (1)	25/37
3 सितं.	पू.फा. (2)	
6 सितं.	पू.फा. (3)	
10 सितं.	पू.फा. (4)	
13 सितं.	उ.फा. (1)	19/23
16 सितं.	उफा 2 कन्या	29/29
20 सितं.	उ.फा. (3)	
23 सितं.	उ.फा. (4)	
27 सितं.	हस्त (1)	10/57
30 सितं.	हस्त (2)	
4 अक्टू.	हस्त (3)	
7 अक्टू.	हस्त (4)	
10 अक्टू.	चित्रा (1)	23/54
14 अक्टू.	चित्रा (2)	
17 अक्टू.	चित्रा 3 तुला	17/27
20 अक्टू.	चित्रा (4)	
24 अक्टू.	स्वा. (1)	10/27
27 अक्टू.	स्वा. (2)	
30 अक्टू.	स्वा. (3)	

2010-11 ई.	नक्षत्र	चरण
3 नवं.	स्वा. (4)	
6 नवं.	विशा. (1)	18/36
9 नवं.	विशा. (2)	
13 नवं.	विशा. (3)	
16 नवं.	विशा 4 वृश्चिक	17/18
19 नवं.	अनु. (1)	24/39
23 नवं.	अनु. (2)	
26 नवं.	अनु. (3)	
29 नवं.	अनु. (4)	
2 दिसं.	ज्ये. (1)	29/01
6 दिसं.	ज्ये. (2)	
9 दिसं.	ज्ये. (3)	
12 दिसं.	ज्ये. (4)	
16 दिसं.	मूल 1 धनु	7/59
19 दिसं.	मूल (2)	
22 दिसं.	मूल (3)	
25 दिसं.	मूल (4)	
29 दिसं.	पू.षा. (1)	10/18
(सन 2011 ई.)		
1 जन.	पू.षा.(2)	
4 जन.	पू.षा. (3)	
8 जन.	पू.षा. (4)	
11 जन.	उ.षा. (1)	12/13
14 जन.	उ.षा. 2 मक.	18/44
17 जन.	उषा. (3)	
21 जन.	उषा. (4)	
24 जन.	श्रव. (1)	14/35
27 जन.	श्रव. (2)	
30 जन.	श्रव. (3)	
3 फर.	श्रव. (4)	
6 फर.	धनि. (1)	17/40
9 फर.	धनि. (2)	
13 फर.	धनि.(3) कुंभे	7/43
16 फर.	धनि. (4)	
19 फर.	शत. (1)	22/13

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2010-11 ई.	नक्षत्र	चरण
23 फर.	शत. (2)	
26 फर.	शत. (3)	
1 मार्च	शत. (4)	
4 मार्च	पू.भा. (1)	28/29
8 मार्च	पू.भा. (2)	
11 मार्च	पू.भा. (3)	
14 मार्च	पू.भा. 4 मीन	28/33
18 मार्च	उ.भा. (1)	12/54
21 मार्च	उ.भा. (2)	
25 मार्च	उ.भा. (3)	
28 मार्च	उ.भा. (4)	
31 मार्च	रेव. (1)	23/44
4 अप्रै.	रेव. (2)	

मंगल नक्षत्र प्रवेश

(संवत् के आरंभ में पुष्य (1) में)

तिथि	नक्षत्र	चरण
18 मार्च	पुष्य (2)	
5 अप्रै.	पुष्य (3)	
17 अप्रै.	पुष्य (4)	
26 अप्रै.	आश्ले. (1)	14/07
4 मई	आश्ले. (2)	
12 मई	आश्ले. (3)	
19 मई	आश्ले. (4)	
26 मई	मघा (1) सिंह	15/53
2 जून	मघा (2)	
8 जून	मघा (3)	
14 जून	मघा (4)	
20 जून	पू.फा. (1)	28/40
27 जून	पू.फा. (2)	
2 जुला.	पू.फा. (3)	
8 जुला.	पू.फा. (4)	
14 जुला.	उ.फा. (1)	15/21
20 जुला.	उ.फा. 2 कन्या	6/33
25 जुला.	उ.फा. (3)	
31 जुला.	उ.फा. (4)	

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2010-11 ई.	नक्षत्र	चरण
5 अग.	हस्त (1)	18/06
10 अग.	हस्त (2)	
16 अग.	हस्त (3)	
21 अग.	हस्त (4)	
26 अग.	चित्रा (1)	21/02
31 अग.	चित्रा (2)	
5 सितं.	चित्रा 3 तुला	27/03
10 सितं.	चित्रा (4)	
15 सितं.	स्वा. (1)	28/27
20 सितं.	स्वा. (2)	
25 सितं.	स्वा. (3)	
30 सितं.	स्वा. (4)	
5 अक्टू.	विशा. (1)	19/08
10 अक्टू.	विशा. (2)	
15 अक्टू.	विशा. (3)	
19 अक्टू.	विशा.4वृश्चिक	26/20
24 अक्टू.	अनु. (1)	19/06
29 अक्टू.	अनु. (2)	
2 नवं.	अनु. (3)	
7 नवं.	अनु. (4)	
12 नवं.	ज्ये. (1)	6/13
16 नवं.	ज्ये. (2)	
21 नवं.	ज्ये. (3)	
25 नवं.	ज्ये. (4)	
29 नवं.	मूल 1 धनु.	30/25
4 दिसं.	मूल (2)	
8 दिसं.	मूल (3)	
13 दिसं.	मूल (4)	
17 दिसं.	पू.षा. (1)	21/21
22 दिसं.	पू.षा. (2)	
26 दिसं.	पू.षा. (3)	
30 दिसं.	पू.षा. (4)	
(सन 2011 ई.)		
3 जन.	उ.षा. (1)	29/02
8 जन.	उ.षा. 2 मकर	12/01
12 जन.	उ.षा. (3)	

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2011 ई.	नक्षत्र	चरण
16 जन.	उ.षा. (4)	
21 जन.	श्रव. (1)	7/19
25 जन.	श्रव. (2)	
29 जन.	श्रव. (3)	
2 फर.	श्रव. (4)	
7 फर.	धनि. (1)	6/05
11 फर.	धनि. (2)	
15 फर.	धनि. 3 कुंभ	16/46
19 फर.	धनि. (4)	
23 फर.	शत. (1)	27/21
28 फर.	शत. (2)	
4 मार्च	शत. (3)	
8 मार्च	शत. (4)	
12 मार्च	पू.भा. (1)	24/56
17 मार्च	पू.भा. (2)	
21 मार्च	पू.भा. (3)	
25 मार्च	पू.भा. 4 मीन	18/37
29 मार्च	उ.भा. (1)	24/54
3 अप्रै.	उ.भा. (2)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.भा. (4) में)

तिथि	नक्षत्र	चरण
16 मार्च	उ.भा. (1)	13/26
18 मार्च	उ.भा. (2)	
19 मार्च	उ.भा. (3)	
21 मार्च	उ.भा. (4)	
23 मार्च	रेव. (1)	5/39
24 मार्च	रेव. (2)	
26 मार्च	रेव. (3)	
28 मार्च	रेव. (4)	
29 मार्च	अश्वि 1 मेष	28/38
31 मार्च	अश्वि (2)	
3 अप्रै.	अश्वि (3)	
5 अप्रै.	अश्वि (4)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

2010 ई.	नक्षत्र	चरण
8 अप्रै.	भर. (1)	8/59
12 अप्रै.	भर. (2)	
18 अप्रै.	वक्री	9/35
24 अप्रै.	व. भर. (1)	24/46
30 अप्रै.	व. अश्वि (4)	8/43
5 मई	व. अश्वि (3)	
11 मई	मार्गी	27/57
17 मई	अश्वि (4)	
23 मई	भर. (1)	10/44
26 मई	भर. (2)	
30 मई	भर. (3)	
1 जून	भर. (4)	
4 जून	कृति (1)	10/11
6 जून	कृति 2 वृष	16/58
8 जून	कृति (3)	
10 जून	कृति (4)	
12 जून	रोहि (1)	18/42
14 जून	रोहि (2)	
16 जून	रोहि (3)	
17 जून	रोहि (4)	
19 जून	मृग (1)	17/11
21 जून	मृग (2)	
22 जून	मृग 3 मिथुन	21/28
24 जून	मृग (4)	
25 जून	आर्द्रा (1)	23/26
27 जून	आर्द्रा (2)	
28 जून	आर्द्रा (3)	
30 जून	आर्द्रा (4)	
1 जुला.	पुर्न (1)	26/33
3 जुला.	पुर्न (2)	
5 जुला.	पुर्न (3)	
6 जुला.	पुर्न 4 कर्क	21/29
8 जुला.	पुष्य (1)	13/25
10 जुला.	पुष्य (2)	
11 जुला.	पुष्य (3)	
13 जुला.	पुष्य (4)	

2010 ई.	नक्षत्र	चरण
15 जुला.	आश्ले. (1)	16/53
17 जुला.	आश्ले. (2)	
19 जुला.	आश्ले. (3)	
21 जुला.	आश्ले. (4)	
23 जुला.	मघा 1 सिंह	22/09
25 जुला.	मघा (2)	
28 जुला.	मघा (3)	
31 जुला.	मघा (4)	
2 अग.	पू.फा. (1)	24/44
5 अग.	पू.फा. (2)	
9 अग.	पू.फा. (3)	
14 अग.	पू.फा. (4)	
20 अग.	वक्री	25/28
26 अग.	व. पू.फा. (3)	
31 अग.	व. पू.फा. (2)	
3 सितं.	व. पू.फा. (1)	
7 सितं.	व. मघा (4)	22/22
12 सितं.	मार्गी	28/39
18 सितं.	पू.फा. (1)	6/34
21 सितं.	पू.फा. (2)	
24 सितं.	पू.फा. (3)	
26 सितं.	पू.फा. (4)	
28 सितं.	उ.फा. (1)	11/49
30 सितं.	उफा 2 कन्या	10/52
2 अक्तू.	उ.फा. (3)	
4 अक्तू.	उ.फा. (4)	
5 अक्तू.	हस्त (1)	26/29
7 अक्तू.	हस्त (2)	
9 अक्तू.	हस्त (3)	
11 अक्तू.	हस्त (4)	
13 अक्तू.	चित्रा (1)	15/36
15 अक्तू.	चित्रा (2)	
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	12/58
19 अक्तू.	चित्रा (4)	

2010-11 ई.	नक्षत्र	चरण
21 अक्तू.	स्वा. (1)	12/41
23 अक्तू.	स्वा. (2)	
25 अक्तू.	स्वा. (3)	
27 अक्तू.	स्वा. (4)	
29 अक्तू.	विशा (1)	19/23
31 अक्तू.	विशा (2)	
2 नवं.	विशा (3)	
5 नवं.	विशा 4 वृश्चिक	6/16
7 नवं.	अनु. (1)	10/56
9 नवं.	अनु. (2)	
11 नवं.	अनु. (3)	
13 नवं.	अनु. (4)	
16 नवं.	ज्ये. (1)	11/15
18 नवं.	ज्ये. (2)	
20 नवं.	ज्ये. (3)	
23 नवं.	ज्ये. (4)	
25 नवं.	मूल 1 धनु	28/00
28 नवं.	मूल (2)	
1 दिसं.	मूल (3)	
5 दिसं.	मूल (4)	
10 दिसं.	वक्री	17/33
15 दिसं.	व. मूल (3)	
18 दिसं.	व. मूल (2)	
20 दिसं.	व. मूल (1)	
23 दिसं.	व. ज्ये. 4 वृश्चि.	8/10
26 दिसं.	व. ज्ये. (3)	
30 दिसं.	मार्गी	12/51
(सन 2011 ई.)		
3 जन.	ज्ये. (4)	
7 जन.	मूल 1 धनु	24/23
11 जन.	मूल (2)	
14 जन.	मूल (3)	
16 जन.	मूल (4)	
19 जन.	पू.षा. (1)	13/00
21 जन.	पू.षा. (2)	

2011 ई.	नक्षत्र	चरण
24 जन.	पू.षा. (3)	
26 जन.	पू.षा. (4)	
28 जन.	उ.षा. (1)	24/12
30 जन.	उषा 2 मकर	29/54
2 फर.	उ.षा. (3)	
4 फर.	उ.षा. (4)	
6 फर.	श्रव. (1)	17/14
8 फर.	श्रव. (2)	
10 फर.	श्रव. (3)	
12 फर.	श्रव. (4)	
14 फर.	धनि. (1)	20/36
16 फर.	धनि. (2)	
18 फर.	धनि. 3 कुंभ	17/32
20 फर.	धनि. (4)	
22 फर.	शत. (1)	11/27
24 फर.	शत. (2)	7/23
25 फर.	शत. (3)	
27 फर.	शत. (4)	
1 मार्च	पू.भा. (1)	15/30
3 मार्च	पू.भा. (2)	
4 मार्च	पू.भा. (3)	
6 मार्च	पूभा 4 मीन	20/18
8 मार्च	उ.भा. (1)	13/54
10 मार्च	उ.भा. (2)	
11 मार्च	उ.भा. (3)	
13 मार्च	उ.भा. (4)	
15 मार्च	रेव. (1)	22/25
17 मार्च	रेव. (2)	
20 मार्च	रेव. (3)	
23 मार्च	रेव. (4)	10/47
28 मार्च	अश्वि 1 मेष	19/39
30 मार्च	वक्री	26/18
2 अप्रै.	व. रेव 4 मीन	10/53

गुरु नक्षत्र प्रवेश

(संवत् के आरम्भ में शत. (4) में)

2010 ई.	नक्षत्र	चरण
18 मार्च	पू.भा. (1)	10/11
1 अप्रै.	पू.भा. (2)	14/42
16 अप्रै.	पू.भा. (3)	10/17
2 मई	पू.भा. 4 मीन	8/07
20 मई	उ.भा. (1)	5/52
11 जून	उ.भा. (2)	16/36
23 जुला.	वक्री	17/33
3 सितं.	व. उ.भा. (1)	21/30
29 सितं.	व. पू.भा. (4)	14/03
1 नवं.	व. पू.भा.3 कुंभ	12/54
18 नवं.	मार्गी	22/23
6 दिसं.	पूभा 4 मीन	9/09
(सन 2011 ई.)		
6 जन.	उ.भा. (1)	21/11
26 जन.	उ.भा. (2)	15/46
12 फर.	उ.भा. (3)	7/11
27 फर.	उ.भा. (4)	11/10
13 मार्च	रेव. (1)	19/32
27 मार्च	रेव. (2)	18/10

शुक्र नक्षत्र चरण प्रवेश

(संवत् के आरम्भ में उ.भा. (4) में)

तिथि	नक्षत्र	चरण
16 मार्च	रेव. (1)	8/03
18 मार्च	रेव. (2)	
21 मार्च	रेव. (3)	
24 मार्च	रेव. (4)	
26 मार्च	अश्वि 1 मेष	26/27
29 मार्च	अश्वि. (2)	
1 अप्रै.	अश्वि. (3)	
3 अप्रै.	अश्वि. (4)	
6 अप्रै.	भर. (1)	22/08
9 अप्रै.	भर. (2)	
12 अप्रै.	भर. (3)	
14 अप्रै.	भर. (4)	
17 अप्रै.	कृति. (1)	19/05

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2011 ई.	नक्षत्र	चरण
20 अप्रै.	कृति 2 वृष	12/34
23 अप्रै.	कृति (3)	
25 अप्रै.	कृति (4)	
28 अप्रै.	रोहि. (1)	17/37
1 मई	रोहि. (2)	
4 मई	रोहि. (3)	
6 मई	रोहि. (4)	
9 मई	मृग. (1)	17/53
12 मई	मृग. (2)	
15 मई	मृग 3 मिथुन	6/44
17 मई	मृग (4)	
20 मई	आर्द्रा (1)	20/04
23 मई	आर्द्रा (2)	
26 मई	आर्द्रा (3)	
29 मई	आर्द्रा (4)	
31 मई	पुर्न (1)	24/34
3 जून	पुर्न (2)	
6 जून	पुर्न (3)	
9 जून	पुर्न 4 कर्क	11/46
12 जून	पुष्य (1)	7/51
14 जून	पुष्य (2)	
17 जून	पुष्य (3)	
20 जून	पुष्य (4)	
23 जून	आश्ले (1)	18/30
26 जून	आश्ले (2)	
29 जून	आश्ले (3)	
2 जुला.	आश्ले (4)	
5 जुला.	मघा 1 सिंह	9/45
8 जुला.	मघा (2)	
11 जुला.	मघा (3)	
14 जुला.	मघा (4)	
17 जुला.	पू.फा. (1)	6/52
20 जुला.	पू.फा. (2)	
23 जुला.	पू.फा. (3)	
26 जुला.	पू.फा. (4)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2010-11 ई.	नक्षत्र	चरण
29 जुला.	उ.फा. (1)	12/34
1 अग.	उ.फा. 2 कन्या	15/48
4 अग.	उ.फा. (3)	
7 अग.	उ.फा. (4)	
11 अग.	हस्त (1)	7/17
14 अग.	हस्त (2)	
17 अग.	हस्त (3)	
21 अग.	हस्त (4)	
24 अग.	चित्रा (1)	24/19
28 अग.	चित्रा (2)	
1 सितं.	चित्रा 3 तुला	12/02
5 सितं.	चित्रा (4)	
9 सितं.	स्वा. (1)	18/46
14 सितं.	स्वा. (2)	
19 सितं.	स्वा. (3)	
26 सितं.	स्वा. (4)	
8 अक्तू.	वक्री	12/35
19 अक्तू.	व. स्वा. (3)	
26 अक्तू.	व. स्वा. (2)	5/32
31 अक्तू.	व. स्वा. (1)	
6 नवं.	व. चित्रा (4)	20/21
18 नवं.	मार्गी	26/48
1 दिसं.	स्वा. (1)	20/19
7 दिसं.	स्वा. (2)	
12 दिसं.	स्वा. (3)	
17 दिसं.	स्वा. (4)	
21 दिसं.	विशा. (1)	16/41
25 दिसं.	विशा. (2)	
28 दिसं.	विशा. (3)	
(सन 2011 ई.)		
1 जन.	विशा. 4 वृश्चि.	16/45
4 जन.	अनु. (1)	26/27
8 जन.	अनु. (2)	
11 जन.	अनु. (3)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2011 ई.	नक्षत्र	चरण
14 जन.	अनु. (4)	
17 जन.	ज्ये. (1)	23/59
20 जन.	ज्ये. (2)	
23 जन.	ज्ये. (3)	
26 जन.	ज्ये. (4)	
29 जन.	मूल (1) धनु	28/00
1 फर.	मूल (2)	
4 फर.	मूल (3)	
7 फर.	मूल (4)	
10 फर.	पू.षा. (1)	22/00
13 फर.	पू.षा. (2)	
16 फर.	पू.षा. (3)	
19 फर.	पू.षा. (4)	
22 फर.	उ.षा. (1)	9/56
25 फर.	उषा 2 मकर	6/13
27 फर.	उ.षा. (3)	
2 मार्च	उ.षा. (4)	
5 मार्च	श्रव. (1)	17/42
8 मार्च	श्रव. (2)	
11 मार्च	श्रव. (3)	
13 मार्च	श्रव. (4)	
16 मार्च	धनि. (1)	22/50
19 मार्च	धनि. (2)	
22 मार्च	धनि 3 कुम्भ	12/40
25 मार्च	धनि. (4)	
27 मार्च	शत. (1)	26/04
30 मार्च	शत. (2)	
2 अप्रै.	शत. (3)	
5 अप्रै.	शत. (4)	

शनि नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ से व. उ.फा. (4) में)

2010 ई.	नक्षत्र	चरण
29 मार्च	व. उफा (3)	25/39
30 मई	मार्गी	23/38
29 जुला.	उ.फा. (4)	22/07

शनि नक्षत्र प्रवेश

2010-11 ई.	नक्षत्र	चरण
31 अग.	हस्त (1)	6/54
27 सितं.	हस्त (2)	24/24
25 अक्तू.	हस्त (3)	9/13
25 नवं.	हस्त (4)	5/32
(सन 2011 ई.)		
26 जन.	वक्री	11/40
2 अप्रै.	व. हस्त (3)	10/23

राहु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.षा. (4) में)

दिनांक	नक्षत्र	समय
23 मार्च	पू.षा. (3)	7/50
24 मई	पू.षा. (2)	29/25
26 जुला.	पू.षा. (1)	27/01
27 सितं.	मूल (4)	24/29
29 नवं.	मूल (3)	22/08
(सन 2011 ई.)		
31 जन.	मूल (2)	20/02
4 अप्रै.	मूल (1)	18/16

केतु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पुर्न (2) में)

दिनांक	नक्षत्र	समय
23 मार्च	पुर्न (1)	7/50
24 मई	आर्द्रा (4)	29/25
26 जुला.	आर्द्रा (3)	27/01
27 सितं.	आर्द्रा (2)	24/29
29 नवं.	आर्द्रा (1)	22/08
(सन 2011 ई.)		
31 जन.	मृग (4)	20/02
4 अप्रै.	मृग. (3)	18/16

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.भा. (4) में)

दिनांक	नक्षत्र	समय
30 मार्च	उ.भा.(1)	23/59
5 जुला.	वक्री	22/18
25 अक्तू.	व पूभा (4)	26/50
6 दिसं.	मार्गी	07/24

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

2010-11 ई.	नक्षत्र	चरण
15 जन.	उ.भा.(1)	11/07
24 मार्च	उ.भा. (2)	12/19

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में धनि. 3 में)

दिनांक	नक्षत्र	समय
19 मार्च	धनि. (4)	12/00
31 मई	वक्री	24/21
18 अग.	व. धनि. (3)	22/17
7 नवं.	मार्गी	11/32
(सन 2011 ई.)		
20 जन.	धनि. (4)	12/10

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में मूल (4) में)

दिनांक	नक्षत्र	समय
7 अप्रै.	वक्री	8/01
28 जून	व. मूल (3)	25/17
14 सितं.	मार्गी	10/02
23 नवं.	मूल (4)	9/50
(सन 2011 ई.)		
15 मार्च	पू.षा.(1)	7/42

ग्रहों की अंशात्मक युतियां

(सन् 2010-11 ई.)

- 28 अप्रै. ➽ सूर्य-बुध (मेष)
- 28 जून ➽ सूर्य-बुध (मिथुन)
- 31 जुला. ➽ मंगल-शनि (कन्या)
- 8 अग. ➽ शुक्र-शनि (कन्या)
- 21 अग. ➽ मंग.-शुक्र (कन्या)
- 3 सितं. ➽ सूर्य-बुध (सिंह)
- 1 अक्तू. ➽ सूर्य-शनि (कन्या)
- 4 अक्तू. ➽ मंग.-शुक्र (तुला)
- 8 अक्तू. ➽ बुध-शनि (कन्या)
- 29 अक्तू. ➽ सूर्य-शुक्र (तुला)
- 21 नवं. ➽ मंग.-बुध (वृश्चिक)
- 12 दिसं. ➽ मंग.-राहु (धनु)
- 14 दिसं. ➽ मंग.-बुध (धनु)
- 24 दिसं. ➽ सूर्य-राहु (धनु)

(सन 2011 ई.)

- 14 जन. ➽ बुध-राहु (धनु)
- 4 फर. ➽ सूर्य-मंग. (मकर)
- 4 फर. ➽ शुक्र-राहु (धनु)

ग्रहों की अंशात्मक युतियां

- 21 फर. ➽ मंग.-बुध (कुम्भ)
- 25 फर. ➽ सूर्य-बुध (कुम्भ)
- 16 मार्च ➽ बुध-गुरु (मीन)

—षडाष्टक योग—

- गुरु-शनि ➽16 मार्च से 1 मई
- शुक्र-शनि ➽26 मार्च से 20 अप्रै.
- सूर्य-शनि ➽14 अप्रै. से 13 मई
- मंग.-गुरु ➽26 मई से 20 जुला.
- गुरु-शुक्र ➽5 जुला. से 31 जुला.
- सूर्य-गुरु ➽17 अग. से 15 सितं.
- शुक्र-गुरु ➽1 सितं. से 31 अक्तू.
- मंग.-गुरु ➽5 सितं. से 18 अक्तू.
- सूर्य-गुरु ➽17 अक्तू से 31 अक्तू.
- शनि-गुरु ➽1 नवं. से 5 दिसं.
- शुक्र-गुरु ➽6 दिसं. से 31 दिसं.

(सन 2011 ई.)

- सूर्य-शनि ➽13 फर. से 13 मार्च
- मंग.-शनि ➽15 फर. से 25 मार्च
- शुक्र-शनि ➽22 मार्च से संवतान्त

चतुर्ग्रही योग—सन् 2010-11

- 16 दिसं. से 22 दिसं. ➽ सू. + मं. + बु. + रा. (धनु)
- 25 मार्च से 28 मार्च ➽ सू. + मं. + बु. + गु. (मीन)

मुख्य द्विग्रही योग (2010-11 ई.)

- सूर्य + बुध ➽ 16 मार्च से 29 मार्च (मीन)
- सूर्य + शुक्र ➽ 16 मार्च से 26 मार्च (मीन)
- बुध + शुक्र ➽ 29 मार्च से 20 अप्रैल (मेष)
- सूर्य + बुध ➽ 14 अप्रैल से 13 मई (मेष)
- शुक्र + केतु ➽ 15 मई से 8 जून (मिथुन)
- सूर्य + केतु ➽ 15 जून से 15 जुलाई (मिथुन)
- मंग. + शुक्र ➽ 5 जुलाई से 19 जुला. (सिंह)
- बुध + शुक्र ➽ 23 जुला. से 31 जुलाई (सिंह)
- मंग. + शनि ➽ 20 जुलाई से 5 सितं. (कन्या)
- शुक्र + शनि ➽ 1 अगस्त से 31 अगस्त (कन्या)

मुख्य द्विग्रही योग (2010-11 ई.)

- मंग. + शुक्र ➽ 5 सितम्बर से 19 अक्तू. (तुला)
- सूर्य + शनि ➽ 16 सितं. से 16 अक्तू. (कन्या)
- सूर्य + शुक्र ➽ 17 अक्तू. से 15 नवम्बर (तुला)
- मंग. + बुध ➽ 4 नवं. से 25 नवं. (वृश्चिक)
- बुध + राहु ➽ 25 नवं. से 23 दिसं. (धनु)
- मंग. + राहु ➽ 29 नवं. से 7 जन. (धनु)
- मंग. + बुध ➽ 29 नवं. से 23 दिसं. (धनु)
- सूर्य + राहु ➽ 16 दिसं. से 13 जन. (धनु)
- सूर्य + मंग. ➽ 16 दिसं. से 7 जन. (धनु)
- सूर्य + मंग. ➽ 14 जन. से 13 फर. (मकर) 2011 ई.
- शुक्र + राहु ➽ 29 जन. से 23 फर. (धनु) 2011 ई.
- सूर्य + मंग. ➽ 13 फर. से 13 मार्च (कुम्भ)
- सूर्य + गुरु ➽ 14 मार्च से 13 अप्रै. (कुम्भ)

≈सम्वत्सर का फल और माहात्म्य≈

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को नवीन सम्वत्सर का प्रारम्भ होता है। इस दिन धर्मपरायण लोगों द्वारा श्रीगणेश जी के मंगल चिन्ह से अंकित ध्वज को अपने-अपने घरों पर लगाना चाहिए। तोरणादि से अपने घरों को सजावें। उस दिन मंगल स्नान कर अपने इष्टदेवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। पुरुष, स्त्रियाँ, शिशु आदि वस्त्राभूषणादि परिधान धारण कर उत्सव मनावें तथा ज्योतिषी जी अथवा विद्वान ब्राह्मण का सत्कार करके उनसे पंचांगदिवाकर में से सम्वत् का नाम, सम्वत् का वास, सवारी, राजा, मन्त्री आदि का फल श्रवण करना चाहिए। चैत्र प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान् विष्णु, शिव एवं श्रीदुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ करने का विधान है। नए संवत्सर का फल श्रवण करें। पंचागस्थ श्री गणेश जी और ब्राह्मण, ज्योतिषी आदि की पूजा कर उन्हें मिष्टान्न युक्त भोजन करवाकर उन्हें नववर्ष का पंचांग, वस्त्र, फल मिठाई आदि दक्षिण सहित यथाशक्ति देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करके सारा दिन भजन-कीर्तन, कथा श्रवणादि सत्कर्मों एवं मंगल कार्यों में व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष सुखपूर्वक एवं आनन्दमय बीतता है।

इसी दिन प्रातः कालीन कटु नीम की कोमल पत्तियाँ और पुष्प लेकर, उनमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, अजवायन, जीरा और शक्करया चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनावें कुछ इमली भी मिलाकर भक्षण करने से वर्ष पर्यन्त अनेक रक्त विकारादि गुप्त रोगों का भय नहीं रहता है।

≈सृष्टिक्रम और चतुर्युगों का वर्णन≈

श्रीमद्भागवत के अनुसार सृष्टि (समस्त जगत) की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कारण ब्रह्मा ही हैं। एक सृष्टि की समयावधि को कल्प कहते हैं। ब्रह्मा के एक दिन के बराबर एक कल्प तथा ३६० कल्पों में ब्रह्मा का एक वर्ष होता है। ऐसे ही ३६००० कल्पों में ब्रह्मा की आयु का प्रमाण होता है। भारतीय परम्परानुसार सतयुग आदि चार युगों का १महायुग और एक हज़ार महायुगों का एक कल्प होता है। तथा ७१ महायुगों का एक मन्वन्तर कहलाता है। ब्रह्मा के एक दिन में १४ मन्वंतर होते हैं। उन में से १ स्वयांभुव, २ स्वरोचिष, ३ उत्तम, ४ तामसे, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, ये छः मन्वंतर बीत चुके हैं। अब सातवां वैवस्वत नामक मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ महायुग गत होकर २८वें महायुग के तीन युग सतयुग, त्रेता, द्वापर व्यतीत हो गए हैं और अब यह कलियुग प्रारम्भ हो चुका है।

ज्यतिष सिद्धान्तानुसार ४३, २०,०००००० सौर वर्षों का १ कल्प ४३, २०,००० सौर वर्षों का एक महायुग होता है। तथा प्रत्येक महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग-इन चारों युगों का अनुक्रम चलता है। अधिक विस्तृत जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से 'ज्योतिष तत्त्व' पुस्तक मंगवाकर अध्ययन करें।

≈चतुर्युगों की व्यवस्था का वर्णन≈

सतयुग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार को हुई। इसकी आयु १७२८००० वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह—ये चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, वाराह जी ने जलोद्धार किया, कूर्म जी ने पृथ्वी की रक्षा की और उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे, शाप और वरदान देने में समर्थ थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा थी, फसलें अच्छी होती थी। स्त्रियां पद्मिनी थीं, गौवें दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायु : १००००० वर्ष, बाल्यावस्था १०००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०००० चन्द्र ग्रहण २००० थे।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया, सोमवार को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष थी। इस युग से तीन अवतार वामन, परशुराम, श्री रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप कर राजा बली को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायु : १०,००० वर्ष, बाल्यावस्था १००० थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किचिन्नयून तपोनिष्ट त्यागी थे। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रणी पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का था। सूर्य ग्रहण २०००० और चन्द्र ग्रहण ३०००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ७६,४००० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १००० वर्ष थी, बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्य ग्रहण २४०००, चन्द्र ग्रहण ३६००० थे। स्त्रियां शांखिनी एवं शीलयुक्ता होती थी।

कलियुग—भाद्र कृष्ण १३, रविवार आधी रात को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४३२००० वर्ष है, इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं, उनका काम धर्मका उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष, बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान ३११ हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे हैं, गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख, तप, यज्ञादि धर्म कर्म से विमुख, शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६००० होंगे। सं. २०६७ में कलियुग के ५१११ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४२६८८९ वर्ष रहे हैं। कलियुग के अन्त में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारिणी स्त्रियां अपने को सति कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ ब्राह्मण की हत्या से भी भय नहीं करेंगे। सन्तान का माता-पिता के साथ स्वार्थ के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। श्रीगंगा मुख्य तीर्थ होगी। शासन प्रबन्ध में धर्म का स्थान नगण्य होगा। स्त्रियाँ शांखिनी होंगी।

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय—वि.सं. २०६७

(1) गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा (25 जुलाई, रविवार)

गुरु पूर्णिमा एवं व्यास पूजादि पर्व आषाढ़ पूर्णिमा को सम्पादित किए जाते हैं। परन्तु शास्त्र नियमानुसार सूर्योदय के पश्चात् आषाढ़ पूर्णिमा कम-से-कम तीन मुहूर्त्त (६ घड़ी) अवश्य व्याप्त रहनी चाहिए। यदि आषाढ़ पूर्णिमा तीन मुहूर्त्त से कम हो, तो गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा आदि पर्व पहले दिन अर्थात् पूर्णिमा में मनाएं जाने चाहिएं, यथा—

व्यास पूजा निर्णय—"अत्रैव व्यास पूजोक्ता।
तत्रा त्रिमुहूर्त्ता चेत्परैवेति सन्यास पद्धतौ। त्रिमुहूर्त्ताधिकं ग्राह्यं पर्वक्षौर-प्रणामयोः॥"
--निर्णयसिन्धुः

अर्थात्—व्यास पूजा निर्णय के सम्बन्ध में सन्यास पद्धति में कहा गया है कि पूर्णिमा तीन मुहूर्त्त होय, तो अगली लेनी चाहिए। कारण यह है कि पर्व, क्षौर और प्रणाम (अर्थात् पूजार्चना) में तीन मुहूर्त्त से अधिक तिथि ग्रहण करनी चाहिए।

कोकिला व्रत एवं शिवशयनोत्सव पर्व तो पहले ही आषाढ़ पूर्णिमा की संध्या एवं सायंकाल में करने का निर्देश है—

"अस्यामेव पौर्णमास्यां प्रदोष व्यापिन्यां श्री शिवस्य शयनोत्सवः॥"—धर्मसिन्धु

उपरोक्त शास्त्र वचनानुसार, व्यास पूजा, गुरु पूर्णिमा, कोकिला व्रत (गौरी पूजन), शिव शयनोत्सव आदि पर्वोत्सव 25 जुलाई, रविवार को मनाने ही शास्त्र सम्मत एवं उचित होंगे। ता. 26 जुलाई, सोमवार को पूर्णिमा प्रातः ३ घड़ी ०३ पल अर्थात् 7 बजकर 07 मिंट तक व्याप्त रहेगी। उसके पश्चात् श्रावण कृष्ण प्रतिपदा का आरम्भ हो जाएगा। जबकि 25 जुलाई, रविवार को पूरा दिन और पूरी रात तक व्याप्त रहेगी। ता. 25 जुलाई को ही गुरु पूर्णिमा उत्सवादित मनाना शास्त्र सम्मत एवं उचित होगा।

(2) रक्षा-बन्धन (24 अगस्त, मंगलवार)

रक्षा बन्धन का पवित्र कार्य भद्रा रहित अपराह्ण काल में करने का शास्त्र विधान है—
भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं हन्ति च फाल्गुनीति॥

प्रस्तुत वर्ष 24 अगस्त, 2010 ई., मंगलवार को श्रावण पूर्णिमा के दिन रक्षा-बन्धन का पवित्र कार्य होगा, परन्तु इस दिन प्रातः 9 घं. 22 मिं. तक भद्रा व्याप्ति (भूलोक पर) रहेगी। अतएव प्रातः 9 घं. 22 मिं. तक के समय का बिल्कुल त्याग कर ही यह पर्व अपराह्ण काल में मनाना चाहिए। यद्यपि यह पर्व अपराह्ण काल में मनाने का शास्त्र-विधान है। (अपराह्ण काल के लिए देखें गतवर्षीय पंचांग) परन्तु आजकल ही व्यवस्थाओं के दृष्टिगत यदि सम्भव न हो तो भी भद्रा का त्याग तो आवश्यक ही है। 24 अग. को अपराह्ण काल लगभग 13 घं. 48 मिं. से 16 घं. 24 मिं. के मध्य रहेगा।

(3) श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत

1 सितम्बर—बुधवार-अर्द्धरात्रि व्यापिनी, रोहिणी योग
2 सितम्बर—गुरुवार-उदय व्यापिनी

श्रीमद्भागवत्, भविष्यपुराण, अग्नि आदि पुराणों के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष के चन्द्रमा कालीन अर्द्धरात्रि के समय हुआ था—

"सिंहराशिगते सूर्ये गगने जलदाकुले।
मासि भाद्रपदे-अष्टम्यां कृष्ण पक्षेऽर्ध रात्रके।
वृष राशि-स्थिते चन्द्रे नक्षत्रे रोहिणी युते।" —भविष्यपुराण, उत्तरपर्व॥

सिद्धान्त ग्रन्थ धर्मसिन्धु में भी पूर्व विद्धा (सप्तमी युता) अर्द्धरात्रि कालीन भाद्र अष्टमी को ग्रहण करने की आज्ञा दी है—

"कृष्ण जन्माष्टमीऽयं निशीथ व्यापिनी ग्राह्या।"
पूर्व दिन एव निशीथ योगे पूर्वा॥ (धर्मसिन्धु)

पंजाव, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, राज. आदि के स्मार्त धर्मावलम्बी गृहस्थी लोग गत सहस्रों वर्षों से इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए सप्तमी युक्ता अर्द्धरात्रिकालीन वाली अष्टमी को व्रत, जयोपासना आदि कृत्य करते आ रहे हैं, यथा-धर्मसिन्धु अनुसार—

"स्मार्तानां गृहिणी पूर्वा पोष्या, यतिर्भि निष्काम वनस्थे विधवाभिः वैष्णवैश्च परै वो पोष्या।"

ऋषि व्यास, नारद आदि ऋषियों के मतानुसार सप्तमी युक्त अष्टमी ही व्रत, पूजन आदि हेतु ग्रहण करनी चाहिए—

कार्या विद्धाऽपि सप्तम्यां रोहिणी सहिताष्टमी। तत्रोपवासं कुर्वीत तिथिमान्ते पारणम्॥
(नारद)

जबकि मथुरा, वृन्दावन सहित उ.प्र., बिहार, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में उदयकालिक अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाते आ रहे हैं। श्रीकृष्ण जन्म-स्थली मथुरा को आधार मानकर मनाई जाने वाली श्रीकृष्ण अष्टमी के दिन ही अधिकांशतः केन्द्रीय सरकार छुट्टी की घोषणा करती है। साधारण गृहस्थी लोग भी छुट्टी एवं उत्सव के दिन ही व्रत रख लेते हैं जोकि शास्त्रविरुद्ध हो जाता है। वैष्णव सम्प्रदाय के अधिकांश लोग उदयकालिक नवमी युता श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को ग्रहण करते हैं—

वैष्णवास्तु अर्धरात्रि व्यापिनीमपि रोहिणी युतामपि सप्तमी विद्धां परित्यज्य नवमी युतैव ग्राह्या।
(तिथिनिर्णय)

प्रस्तुत वर्ष 1 सितम्बर, 2010 ई., बुधवार को प्रातः 10 घं. 50 मिं. से लेकर अगले दिन 2 सितम्बर, गुरुवार की प्रातः 10 घं. 42 मिं. तक अष्टमी तिथि व्याप्त रहेगी तथा 1 सितं. को

दोपहर 13 घं. 19 मिं. के बाद रोहिणी नक्षत्र का भी संयोग हो जाएगा जोकि अगले दिन दोपहर तक रहेगा। इस प्रकार 1 सितंबर, बुधवार की अर्द्धरात्रि के समय अष्टमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र, वृष का चन्द्रमा तथा चन्द्रोदय काल (23/12 घं. मिं.) इसी दिन होने से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत, पूजा, चन्द्रमा को अर्घ्य दान, झूला-झुलाना, श्रीकृष्ण कीर्तन आदि करने विशेष प्रशस्त होंगे। रोहिणी नक्षत्र एवं बुधवार को होने से इस दिन जयन्ती योग भी रहेगा।

2 सितं. को अष्टमी एवं रोहिणी नक्षत्र का संयोग केवल प्रातः सूर्योदय से 10 घं. 42 मिं. तक रहेगा। इसके बाद अर्द्धरात्रि में नवमी तिथि तथा मृगशिर नक्षत्र व्याप्त होने से जन्माष्टमी के व्रत, पूजन, अर्घ्यदान का विशेष अधिक पुण्य लाभ नहीं होगा।

सिद्धान्त ग्रन्थों में अधिकांशतः व्रत, पर्व, त्यौहारों को कर्मकाल विद्यमान तिथि के दिन ही करने के निर्देश दिए गए हैं। यथा—

तत्र सर्वातिथिः यदहः कर्मकाल व्यापिनी सैव ग्राह्या॥ (निर्णयसिन्धु)

अर्थात् जो तिथि कर्म के समय तक जिस दिन रहे, वही ग्रहण करनी चाहिए।

'गौतमी तन्त्र' में तो अर्ध रात्रिकालीन अष्टमी, यदि रोहिणी नक्षत्र युक्त हो, तो उस तिथि में किया गया व्रतोपवास, जप करोड़ों यज्ञों का फल देने वाला होता है। भाद्र. कृष्णाष्टमी रोहिणी नक्षत्र काल में यदि बुधवार का संयोग हो जाए तो वह जयन्ती नाम से विख्यात होती है। जन्म-जन्मान्तरों के पुण्यों से ऐसा योग प्राप्त होता है, जिसको जयन्ती उपवास का सौभाग्य मिलता है, उसके कोटि जन्मकृत पाप नष्ट हो जाते हैं।

''अष्टमी रोहिणी युक्ता चार्धरात्रे यदा भवेत्।
उपोष्य तां तिथिं विद्वान् कोटियज्ञ फलं लभेत्॥
सोमाह्नि बुधवासरे वा अष्टमी रोहिणी युता।
जयन्ती सा समाख्यता सा लभ्या पुण्य सञ्चयैः।
तस्यामुपोष्य यत्पापं लोकः कोटिभवोद् भवम्।
विमुच्य निवसेद् विप्र वैकुण्ठे विरजे पुरे॥'' (गौतमी तन्त्र)

इस प्रकार 1 सितम्बर, बुधवार को ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कर्मकाल, अर्द्धरात्रि अष्टमी, वृषस्थ चन्द्र, चन्द्रोदय काल, रोहिणी नक्षत्र एवं च बुधवार का संयोग है, क्योंकि उसी समय से पूर्व श्रीकृष्ण के निमित्त व्रत, जन्म कालान्तर बालरूप पूजा, झूला-झुलाना, चन्द्र को अर्घ्यदान, जागरण-कीर्तन का विधान होगा।

अगले दिन 2 सितम्बर, गुरुवार की अर्द्धरात्रि के समय अष्टमी तिथि का अभाव है, अतः 1 सितम्बर को छोड़कर इस दिन व्रत, उत्सव करना किसी भी प्रकार न्याय संगत नहीं लगता। हमारे मतानुसार 2 सितं. को भी श्रीकृष्ण स्तोत्र पाठ, ध्यान, कीर्तनादि करके इन पुण्य सुअवसरों का लाभ उठाना चाहिए। व्रत एवं उत्सव तो 1 सितम्बर, बुधवार को ही श्रेष्ठ एवं उत्तम रहेगा।

(4) दूर्वाष्टमी (2 सितम्बर, गुरुवार)

भविष्य-पुराणानुसार यह व्रत भाद्र. शुक्लाष्टमी को धन-सम्पत्ति, सौभाग्य, दाम्पत्य एवं पुत्र सन्तान सुख की कामना से किया जाता है। शास्त्र-वचनानुसार भा. शु. अष्टमी के समय यदि अगस्त्य तारा उदय हो चुका हो अथवा कन्या का सूर्य हो, तो शास्त्रानुसार दूर्वाष्टमी पूर्ववर्ती किसी अन्य मास की अष्टमी (भाद्र. कृष्ण या श्रावण शुक्लाष्टमी) में यह व्रत करना चाहिए, जबकि अगस्त्य तारा अदृश्य (अस्तंगत) हो—

सिंहार्के एव कर्त्तव्या न कन्याऽर्के कदाचन।
सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनिसत्तम्॥ —स्कंद पुराण
''इदं दूर्वा पूजनं व्रतं कन्याऽर्केऽगस्त्योदये च वर्ज्यम्॥'' (धर्मसिन्धु)

संवत् २०६७ में ता. 4 सितम्बर को भाद्र. शुक्लाष्टमी से पूर्व ही अगस्त्य तारा उदित हो चुका है। इस स्थिति में भाद्रपद कृष्णाष्टमी अर्थात् 2 सितं., गुरुवार, 2010 ई० को दूर्वाष्टमी का व्रतादि करें। भाद्रपद मास (सिंह के सूर्य) में करना प्रशस्त होता है।

(5) आश्विन कृष्ण एकादशी/द्वादशी के श्राद्ध

आश्विन कृष्ण पक्ष (पितृ-पक्ष) में मृत व्यक्ति की जो तिथि आए, उस तिथि में पार्वण श्राद्ध करने का विधान है। पार्वण श्राद्ध में पिता, पितामह, प्रपितामह, सपत्नीक अर्थात् माता, दादी और परदादी सहित छः जनों का श्राद्ध होता है। इन्हें अपराह्ण व्यापिनी मृत्युतिथि के दिन करने का निर्देश है।

यथा—पूर्वाह्ने मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्।
एकोदिदिष्टं तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धि निमित्तकम्॥

इस वर्ष एकादशी एवं द्वादशी का श्राद्ध-दोनों तिथियां 4 अक्तूबर को ही अपराह्ण—व्यापिनी है। द्वादशी तिथि 4 अक्तू. को 14 घं. 10 मिं. से प्रारम्भ होगी। जबकि अपराह्ण काल 13 घं. 26 मिं. से 15 घं. 45 मिं. तक रहेगा। ता. 5 अक्तू. को द्वादशी तिथि अपराह्ण व्यापिनी नहीं रहेगी। अतएव इस वर्ष एकादशी एवं द्वादशी-दोनों का महालय श्राद्ध 4 अक्तूवर को ही होगा।

(6) प्रदोष व्रत (कार्तिक कृष्ण पक्ष)

कार्तिक कृष्ण पक्ष में प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी वाले दिन प्रदोषव्रत किया जाता है। जिस दिन प्रदोष काल को व्याप्त करे, उस दिन यह व्रत ग्रहण करना चाहिए—

वैषम्येण एकदेश स्पर्शे तदाधिक्यवती पूर्वाऽपि ग्राह्या॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी 3 नवं. को 19 घं. 00 मिं. से 4 नवं. को 15 घं. 58 मिं. तक व्याप्त है। ता. 3 नवं. को प्रदोष काल सूर्यास्त (17 घं. 35 मिं.) से 20 घं. 14 मिं. तक रहेगा। अतएव स्पष्ट है कि 19 घं. 00 मिं. से 20 घं. 14 मिं. तक त्रयोदशी प्रदोष, काल से युक्त रहेगी। अतः इसी दिन (3 नवंबर) को ही प्रदोष व्रत होगा।

(7) धन त्रयोदशी (3 नवंबर, बुधवार)

धन त्रयोदश (धनतेरस) कार्तिक कृष्ण त्र्योदशी को मनाई जाती है। इस दिन चाँदी, पीतल आदि का बर्तन खरीदना शुभ माना गया है। इस दिन सायंकाल के समय घर के मुख्य दरवाज़े पर यमराज के निमित्त दक्षिणाभिमुख करके एक दीपक तेल से भरकर प्रज्वलित करे और गन्धाक्षतादि से पूजन करके एक पात्र में अनाज रखकर उस पर प्रज्वलित दीप रख देवे।

कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे।
यम दीपं वह्णिर्दद्यात् अपमृत्यु विनश्यति॥

यह पर्व सूर्यास्त मान के पीछे तीन मुहूर्त्त (छः घड़ी) प्रदोष व्यापिनी त्र्योदशी ग्रहण करनी चाहिए—

तत्र सूर्यस्तमानोत्तर त्रिमुहूर्त्तात्मक प्रदोष-व्यापिनी त्रयोदशी ग्राह्या॥ (धर्मसिन्धु)

3 नवंबर को सायं 7 बजे के बाद प्रदोष काल व्याप्त है। अतएव सायं 7 बजे के बाद यमायदीप दानादि कृत्य करने शुभ होंगे।

दूसरे 4 नवंबर, गुरूवार को त्रयोदशी यद्यपि दुपैहर 3 बजकर 58 मिनट तक विद्यमान है, परन्तु इस दिन प्रदोषकाल का अभाव है। तथापि इस दिन दुपैहर (3/58) से पहले 2 चांदी, पीतल आदि बर्तनों का क्रय कर सकते हैं।

(8) श्रीहुनमान जयन्ती (उ. भारत)

व्रत रत्नाकर अनुसार आश्विन (कार्तिक) कृष्ण चतुर्दशी, भौमवार की महानिशा (अर्धरात्रि) में अञ्जना देवी के उदर से श्रीहनुमान जी का जन्म हुआ था।

आश्विनस्यासिते पक्षे भूतायां च महानिशि।
भौमवारेऽज्जनादेवी हनूमन्तमजीजनत्॥

प्रस्तुत वर्ष 4 नवंबर, 2010 ई. को कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी निशीथव्यापिनी है, अतएव हनुमान जयन्ती पर्व इसी दिन मनाना शुभ होगा। यह हनुमान जयन्ती अधिकांश उपासक उत्तर भारत में परम्परा अनुसार मनाते हैं और व्रत करते हैं, परन्तु शास्त्रान्तर में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को हनुमज्जन्म का उल्लेख किया है, जोकि दक्षिण भारत में मनाई जाती है।

(9) बली पूजा, गोवर्धन—अन्नकूट पूजा (6 नवम्बर)

सामान्यतः कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को ही मनाने का विधान है।
अस्यां प्रतिपदि बलि पूजा दीपोत्सवो ग्रोक्रीडनं गोवर्धन पूजा॥— धर्मसिन्धु

परन्तु शास्त्र वचनानुसार जिस प्रतिपदा तिथि में चन्द्रदर्शन हो अथवा चन्द्रदर्शन होने की सम्भावना हो, तो उस द्वितीया युक्त प्रतिपदा में गोक्रीडन, गोवर्धन पूजा एवं बली पूजा आदि कृत्य नहीं करने चाहिएं। ऐसा करने से सभी पुत्रादि का क्षय, धन हानि एवं राजा का क्षय होने का भय होता है। उस स्थिति में पूर्व विद्धा अर्थात् अमा. युक्ता प्रतिपदा को ही बली पूजा, गोपूजा, गोवर्धन पूजा आदि कृत्य करने होंगे।

अपरंच—गवां क्रीड़ादिने यत्र रात्रौ दृश्येत् चन्द्रमाः।
सोमो राजा पशून् हन्ति सुरभिः पूजा कांस्तथा॥ —पुराण समुच्चय।

उपरोक्त शास्त्र वचनानुसार गोवर्धन पूजा, बली पूजा, अन्नकूटादि कृत्य ता. 6 नवम्बर, शनिवार को ही प्रशस्त होंगे। ता. 7 नवं. रविवार को चन्द्रदर्शन होने के कारण उपरोक्त कृत्यों का निषेध रहेगा। परन्तु ता. 6 नवं. को प्रातः 10 बजकर 22 मिंट अमावस के उपरान्त शुरु होने वाली प्रतिपदा को ही अन्नकूट, गोवर्धन पूजा का पर्व होगा। आवश्यक परिस्थितिवश,श्री मद्भागवत के अनुसार, सूर्योदय कालिक कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा. 7 नवं. रविवार के दिन विविध पकवान बनाने एवं वितरण का उत्सव मना सकते हैं, परन्तु पूजनादि कृत्य 6 नवं. को ही प्रशस्त होंगे।

(10) यम द्वितीया/भ्रातृदूज (7 नवम्बर, रविवार)

मध्याह्न व्यापिनी कार्तिक द्वितीया तिथि को भाई-दूज (यम द्वितीया) का पर्व मनाया जाता है।

कार्तिक शुक्ल द्वितीया यमद्वितीया/भ्रातृ द्वितीया सा पूर्वविद्धा अपराह्न व्यापिनी ग्राह्या॥
—(व्रतराज)

द्वितीया तिथि का क्षय हुआ है। अतः 7 नवं. रविवार को ही 8 बजकर 07 मिंट के बाद (प्रतिपदा के बाद) अभिजित् अथवा मकर लग्न में (बहिन द्वारा भाई को तिलक करना शुभप्रद) पर्व मनाना प्रशस्त होगा।

(11) तुलसी विवाह

यह पर्व कार्तिक शुक्ल एकादशी या द्वादशी तिथि में विवाह नक्षत्र काल में करने का विधान है—

एकादश्यादि पूर्णिमान्ते यत्र क्वापि दिने कार्तिक शुक्लान्तर्गतविवाह
नक्षत्रेपु वा विधानादनेक कालत्वं तथापि पारणाहे
प्रबोधोत्सव कर्मणा सह...............॥ (धर्म सिन्धु)

तुलसी विवाह एका. व्रत के पारणा वाले दिन रात्रि के प्रथम भाग में करने का निर्देश है, (रात्रि प्रथम भागे प्रशस्तः)

तदनुसार 18 नवं. गुरुवार को विवाह नक्षत्र रेवती में तुलसी विवाह करना प्रशस्त होगा। इसी दिन श्री हरि का प्रबोध उत्सव भी मनाने की परम्परा है।

नोट—इन दिन गए त्यौहारों-पर्वों के निर्णय के अतिरिक्त यदि किसी को किसी पर्व सम्बन्धी शंका हो, तो पत्र भेजकर हमसे निर्णय ले सकते हैं

—पं. विवेक शर्मा, जालन्धर (पं.)

करवाचौथ के दिन मुख्य नगरों का चन्द्र-उदय

(26 अक्तूबर, 2010 ई., मंगलवार)

पंचांगदिवाकर के पाठक सम्पूर्ण भारत में है। ग्रह-स्पष्ट तथा पक्ष वाले पृष्ठों पर केवल जालन्धर के चन्द्रोदयास्त दिए रहते हैं। 'पंचांगदिवाकर' के पाठकों लाभार्थ भारत के प्रमुख नगरों के करवा-चौथ (26 अक्तू.) वाले दिन का चन्द्रोदय दे रहे हैं। —पं. पंकज शर्मा (एम.कॉम)

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	नगर	चंद्रोदय घं. मिं.
अमृतसर	19-59	जीन्द (हरि.)	20-02	बिलासपुर (हि.प्र.)	19-54
अम्बाला	19-56	जोधपुर	20-24	भठिण्डा	20-04
अर्की (हि.प्र.)	19-52	जगाधरी (हरि.)	19-55	भुवनेश्वर	19-47
अहमदाबाद (गु.)	20-33	टोहाना (हरि.)	20-00	भिवानी (हरि.)	20-03
अगरतला	19-16	डोडा (का.)	19-53	मण्डी (हि.प्र.)	19-50
आगरा	20-00	डलहौजी (हि.प्र.)	19-52	मलेरकोटला	19-58
अबोहर (पं.)	20-07	दार्जिलिंग (बं.)	19-20	मुम्बई	20-42
इलाहाबाद	19-51	दिल्ली	19-58	मुगलसराय (उ.प्र.)	19-51
इटावा (उ.प्र.)	19-57	देहरादून	19-52	मेरठ	19-56
इन्दौर (म.प्र.)	20-20	दुर्ग (छत्ती.)	20-04	मोगा (पं.)	20-00
अखनूर (का.)	19-55	दीनानगर (पं.)	19-56	मुक्तसर	20-06
उज्जैन	20-20	धर्मशाला (हि.प्र.)	19-52	मोहाली	19-53
उधमपुर (का.)	19-54	धूरी (पं.)	19-59	रामपुरबुशैहर	19-49
ऊना (हि.प्र.)	19-54	नागपुर (महा.)	20-12	रायपुर (छत्ती.)	20-02
कठुआ (का.)	19-56	नाभा (पं.)	19-59	रिवाड़ी (हरि.)	20-03
कपूरथला	19-58	नाहन (हि.प्र.)	19-53	रोपड़ (पं.)	19-55
करतारपुर	19-58	नारनौल (हरि.)	20-05	रोहतक	20-00
कलकत्ता	19-26	नालागढ़ (हि.प्र.)	19-56	लखनऊ	19-49
कांगड़ा	19-53	नैनीताल (उत्तरा.)	19-49	लुधियाना	19-57
कालका (हरि.)	19-53	नवांशहर (पं.)	19-56	लाडवा (हरि.)	19-56
किश्तवाड़ का.)	19-52	नंगल (पं.)	19-55	वाराणसी	19-47
कुराली	19-55	पठानकोट	19-55	शिमला	19-52
कुरुक्षेत्र (हरि.)	19-57	पटियाला	19-58	श्रीनगर	19-53
कुल्लू (हि.प्र.)	19-49	पंचकूला (हरि.)	19-53	संगरूर	20-00
कैथल (हरि.)	19-58	पानीपत	19-59	सहारनपुर	19-54
कोटखाई (हि.प्र.)	19-50	पिहोवा (हरि.)	19-58	सोलन (हि.प्र.)	19-52
खन्ना (पं.)	19-55	पटना	19-35	सुनाम (पं.)	20-01
गाजियाबाद	19-56	पालमपुर (हि.प्र.)	19-52	सोनीपत	19-59
गुड़गांव (हरि.)	20-00	पुँछ (का.)	19-55	सरकाघाट (हि.प्र.)	19-53
गुरदासपुर	19-55	फगवाड़ा	19-58	सुन्दरनगर	19-51
गुवाहाटी	19-08	फरीदकोट	20-02	हमीरपुर (हि.प्र.)	19-52
चण्डीगढ़	19-54	फिरोजपुर	20-02	हरिद्वार	19-51
चम्बा (हि.प्र.)	19-51	फाजिल्का	20-08	हैदराबाद	20-29
चमौली (उत्तरां.)	19-47	फरीदाबाद	20-10	होशियारपुर	19-55
चेन्नई	20-21	बटाला	19-57	हिसार	20-04
जम्मू	19-55	बरेली (उ.प्र.)	19-51	हाथरस	19-58
जयपुर	20-10	बैंगलोर	20-42	हनुमानगढ	20-08
				हांसी (हरि.)	20-03

दीपावली (श्रीमहालक्ष्मी पूजन)

(5 नवम्बर, शुक्रवार)

श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक कृष्ण अमावस में प्रदोष काल एवं अर्द्धरात्रि व्यापिनी हो, तो विशेष रूप से शुभ होती है।

कार्तिकस्यासिते पक्षे लक्ष्मीर्निदां विमुञ्चति।
स च दीपावली प्रोक्ताः सर्वकल्याणरूपिणी॥ ज्योतिर्निबन्ध

लक्ष्मी पूजन, दीपदानादि के लिए प्रदोषकाल ही विशेषतया प्रशस्त माना गया है—

कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निशावर्धके।
तस्यां सम्पूज्येत् देवीं भोगमोक्षं प्रदायिनीम्॥

प्रस्तुत वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस का संयोग दो दिन हो रहा है। ता. 5 नवं., शुक्रवार को चतुर्दशी दुपैहर 13 घं. 02 मिं. तक है, तत्पश्चात् अमावस उपराह्न, सायं एवं प्रदोष व्यापिनी होगी। अर्द्धरात्रि व्यापिनी अमावस भी इसी दिन होने से दीपावली पर्व 5 नवं., शुक्रवार को होगा। 6 नवं., शनिवार को अमावस प्रातः 10 घं. 22 मिं. तक रहेगी। उसके पश्चात् प्रतिपदा (रात्रि पर्यन्त) होने से अन्नकूट व गोवर्धन पूजा का पर्व 6 नवं. को प्रशस्त होगा।

दीपावली की शाम (प्रदोषकाल) में स्नानादि के उपरान्त, स्वच्छ वस्त्राभूषण धारण करके धर्मस्थल पर मन्त्रपूर्वक दीपदान करके अपने निवास स्थान पर श्रीगणेश सहित महालक्ष्मी, कुबेर, महाकाली पूजन आदि करके अल्पाहार करना चाहिए। तदुपरान्त यथा उपलब्ध निशीथ आदि शुभ मुहूर्तों में मन्त्र-जप, यन्त्र सिद्धि आदि अनुष्ठान सम्पादित करने चाहिएं। दीपावली पूजन के पश्चात् गृह में चौमुखा दीपक रात्रिभर प्रज्वलित रहना सौभाग्य एवं लक्ष्मी वृद्धि का द्योतक माना जाता है।

प्रस्तुत वर्ष दीपावली का पर्व 5 नवम्बर, शुक्रवार की अमावस, स्वाती नक्षत्र, प्रीति योग व रात्रि को आयुष्मान योग कालीन घटित होगी। दीपावली पूजन में अमावस तिथि, प्रदोष, निशीथ एवं महानिशीथ काल तथा तुला का सूर्य व तुला राशि का चन्द्रमा विशेष महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। यह सब काल महालक्ष्मी, श्रीगणेश, कुबेर, महाकाली पूजन एवं जपादि अनुष्ठान की दृष्टि से विशेष प्रशस्त एवं शुभ माने जाते हैं। दीपावली को रात्रि-जागरण करते हुए श्रीविष्णुसहस्रनाम, श्री लक्ष्मीसूक्त, श्रीसूक्त, पुरुषसूक्त आदि एवं श्रीरामरक्षास्तोत्र का पाठ करना प्रशस्त होता है।

● ***प्रदोष काल***—5 नवम्बर को जालन्धर में सूर्यास्त से लेकर 2 घण्टे 39 मिनट पर्यन्त प्रदोषकाल रहेगा। (प्रत्येक नगर के रात्रिमान के अनुसार इसका समय निर्धारण करें—देखें गतवर्षीय पंचांगदिवाकर २०६५ या २०६६) जालन्धर में प्रदोषकाल सायं 17 घं. 33 मिं. से रात्रि 20 घं. 12 मिं. तक रहेगा।

सायं 18 घं. 07 मिं. तक मेष लग्न, तदुपरान्त 18 घं. 07 मिं. से 20 घं. 01 मिं. तक वृष लग्न विशेषतः प्रशस्त होगा।

प्रदोष काल में वृष लग्न, स्वाती नक्षत्र, आयुष्मान योग, तुला के सूर्य-चन्द्र होने से अत्यन्त शुभ काल रहेगा।

अतएव रात्रि 18 घं. 07 मिं. से 20 घं. 01 मिं. के मध्य

अतएव रात्रि 18 घं. 07 मिं. से 20 घं. 01 मिं. के मध्य मन्दिर में दीप प्रज्वलित करना तथा श्रीमहालक्ष्मी पूजन प्रारम्भ करना शुभ रहेगा। क्योंकि आगे रात्रि 20 घं. 51 मिं. से रात्रि 22 घं. 32 मिं. के मध्य लाभ की चौघड़ियां भी रहेंगी। इसलिए इस योग में दीपदान, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, कुबेर पूजन, बही-खाता पूजन, धर्म एवं गृह स्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा अपने आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बांटना शुभ होगा।

✤ निशीथ काल—5 नवं., शुक्रवार को जालन्धर में निशीथ काल रात्रि 20 घं. 12 मिं. से 22 घं. 51 मिं. तक रहेगा।

इस दौरान 20 घं. 01 से 20 घं. 12 मिं. तक वृष लग्न, तदुपरान्त 22 घं. 15 मिं. तक मिथुन तथा फिर 22 घं. 15 मिं. से कर्क लग्न रहेगा। ध्यान रखें, 20 घं. 51 से 22 घं. 32 मिं. तक लाभ की चौघड़ियां रहने से निशीथ काल ओर अधिक प्रशस्त हो जाएगा।

अतएव जिन्होंने प्रदोष एवं वृष लग्न में पूजन प्रारम्भ न किया हो, उनके लिए लाभ-चौघड़ियां तथा निषीथ काल का संयोग भी अत्यन्त शुभ रहेगा। (20 घं. 51 मिं. से 22 घं. 32 मिं. तक)। इस अवधि में श्रीमहालक्ष्मी पूजन, महाकाली पूजन, लेखनी, कुबेरादि पूजन, श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त, पुरुषसूक्त तथा अन्य मन्त्रों का जपानुष्ठान करना चाहिए।

✤ महानिशीथकाल—रात्रि 22 घं. 51 मिं. से 25 घं. 30 मिं. तक महानिशीथकाल रहेगा। इस समयावधि में कर्क लग्न 24 घं. 38 मिं. तक रहेगा, जोकि विशेष रूप से प्रशस्त रहेगा। सिंह लग्न भी महानिशीथ काल व्याप्त होने से ग्राह्य रहेगा। महानिशीथ काल में 24 घं. 11 मिं. से 25 घं. 52 मिं. तक शुभ-चौघड़ियां भी रहेंगी। महानिशीथ काल में श्रीलक्ष्मी, महाशक्ति काली उपासना, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि क्रियाएं, विशेष काम्य प्रयोग, तन्त्र अनुष्ठान व यज्ञादि किए जाते हैं।

नोट—अपने स्थानीय नगर में चौघड़ियां मुहूर्त्त (समय) जानने के लिए पृष्ठ 235 देखें तथा महालक्ष्मी पूजन एवं साधना के लिए प्रशस्त वृष एवं कर्क लग्न के लिए पृष्ठ 249, 250, का अवलोकन कर निकालें।

ज्वालामुखी योग

ज्वालामुखी योग अत्यन्त अनिष्ट-कारी योगों में से एक माना गया है। इसमें आरम्भ किए कार्य में बार-बार विघ्न पड़ते है। इसके सम्बन्ध में निम्नलिखित लोकोक्ति का प्रचलन है—

जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो उजड़े गांव, नारी पहने चूड़ियाँ, पुरुष विहीनी होय।
बोवे तो काटे नहीं, कूएँ उपजे न नीर॥

यद्यपि यह लोकोक्ति अतिशयाक्तपूर्ण हो सकती है परन्तु इसके अशुभ प्रभाव के सम्बन्ध का उल्लेख कई ग्रन्थों में मिलता है। ज्वालामुखी योगानुसार यदि बालक इस योग में पैदा हो तो उसे अरिष्ट योग होता है। यदि इस योग में विवाह किया जाए तो वैधव्य का भय होता है। यदि बीजवपन किया जाए तो फसल अच्छी नहीं होती तथा जल आदि हेतु कुआँ खोदा जावे तो जलाशय (कूआँ) शीघ्र सूख जाए- यदि कोई रोग ग्रस्त हो जल्दी ठीक न हो—इत्यादि अशुभ फल घटित होते हैं।

20 मार्च	५	भर.	प्रातः 6/32 से 12/47
23 अप्रै.	१०	अश्ले.	प्रातः 8/37 से 13/52 तक
1 सितं.	८	कृति	प्रातः 10/51 से 13/19 तक
2 सितं.	९	रोहि.	प्रातः 10/43 से 13/47 तक
6 दिसं.	१	मूला	सायं 17/56 से 22/20 तक
11 फर. 2011	८	कृति.	प्रातः 9/50 से रात्रि 25/26 तक
12 फर.	९	रोहि.	प्रातः 11/30 से 26/07 तक
9 मार्च	५	भर.	दोप. 14/09 से 10 मार्च 14/13 तक

होमादि में अग्निवास जानना

किसी भी प्रकार के हवन या यज्ञारम्भ करने से पूर्व अथवा नव-वधू द्वारा पहली बार भोजन बनाने के समय अग्नि का वास अवश्य देखा जाता है।

शुक्ल प्रतिपदा से गिनकर वर्तमान तिथि में 1 जोड़ें, इसमें वर्तमान वार की संख्या (रविवार से प्रारम्भ करके) को जोड़े और फिर उस संख्या को 4 द्वारा भाग देवें—

यदि शेष 3 या 0 बचे, तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होता है, उस दिन होम करना शुभ होता है, उससे सुख, लाभ मिलता है। यदि शेष 2 बचें तो अग्नि का वास पाताल में होता है, इस दिन होम करने से धन का अपव्यय होता है। यदि भाग देने के बाद 1 शेष बचे तो अग्नि का वास आकाश में होता है। इसमें होम करना अशुभ होता है।

अग्निवास का परिहार—

विवाहयात्रा व्रत गोचरेषु चूड़ोपनीति ग्रहणे युगादौ।
दुर्गा विधाने सुत प्रसूते नैवाग्नि चक्रं परिचिन्तनीयम्॥

अर्थात् नित्य नैमित्तिक कार्य, जन्म व मृत्यु के समय, विवाह मेंऽ, यात्रा आरम्भ या यात्राकाल में, व्रतोद्यापन में ग्रहों की अनिष्ट गोचर स्थिति में मुण्डन, उपनयादि संस्कार में, ग्रहण शान्ति, रोग-पीड़ा की शान्ति, नवरात्र-दुर्गा-पूजा, पुत्रादि सन्तान जन्म काल में अग्निवास का विचार नहीं किया जाता।

—वार अनुसार शुभ कार्य—

✦ गर्गाचार्य अनुसार

सोने के आभूषणों के कार्यों में रविवार एवं मंगलवार शुभ फलकारी होते हैं। तथा शनिवार के दिन लोहे का कार्य करने पर शुभफल की प्राप्ति होती है—

काञ्चनाभूषणे प्रशस्तौ भौम मार्तण्डौ, रविजो लोह कर्माणि॥ १५॥ गंगाचार्य

✦ क्षीणचन्द्र का दिन और शनि व मंगल के वक्री होने के दिन शुभ नहीं होते हैं।

तारा अस्त और विकार से युक्त वार के दिन भी अभीष्ट (अच्छे) नहीं होते अर्थात् अशुभ होते हैं—

क्षीणेन्दु सौरि कुज वक्रि दिने न शस्तं शस्तं च कर्म यदि चोपचयस्थिताः स्युः।
✦ अस्तङ्गतस्य विकृतस्य च नेष्टमह्नि
सर्वं प्रशस्तमिह शेषदिनेशवराणाम् ॥ १७॥

तथा अस्त व विकार युक्त वार के दिन अभीष्ट नहीं होते—अर्थात् अशुभ होते हैं, शेष शुभ होते हैं।

✦ मंगलवार को कर्ज लेने से बचना चाहिए। तथा बुधवार के दिन कर्जा देना नहीं चाहिए। मंगलवार के दिन ऋण वापिस करना और बुधवार के दिन संग्रह करना चाहिए यथा—

ऋणं भौमे न गृह्णीयात् न देयं बुधवासरे।
ऋणच्छेदं कुजे कुर्यात् सञ्चयं सोमनन्दने॥ (ज्योतिः सार)

वि. संवत् २०६७ में वैशाख अधिक मास का फल (15 अप्रैल से 14 मई, 2010 ई. तक)

विक्रमी सम्वत् २०६७ (सन् २०१०-११ ई.) में एक चान्द्र मास की वृद्धि हो रही है, जिससे प्रस्तुत सम्वत् १२ मास की अपेक्षा १३ मास का होगा। 'सिद्धान्ताशिरोमणि' नामक ग्रंथ के रचयिता श्री भास्कराचार्य के अनुसार जिस चान्द्र मास में सूर्य की संक्रान्ति नहीं होती, उसी मास को अधिक मास कहा जाता है। सिद्धान्त शिरोमणि के अनुसार—

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटः स्यात्, द्विसंक्रान्ति मासः क्षयाख्यः कदाचित्॥

संक्रान्ति रहित मास को अधिक मास के अतिरिक्त मलमास या पुरुषोत्तम मास भी कहा जाता है। **सम्वत् २०६७ में चान्द्र वैशाख मास के दोनों पक्षों (कृष्ण एवं शुक्ल) में सूर्य संक्रान्ति का अभाव होने से वैशाख को ही अधिक या मलमास के नाम से जाना जाएगा। वैशाख अधि. मास की विद्यमानता 15 अप्रैल से 14 मई सन् 2010 ई. तक रहेगी।**

मलमास का मतलब निन्दित एवं वर्जनीय मास नहीं, बल्कि मनुष्य के निन्दनीय पाप कर्मों को प्रवाहित गंगाधारा में धो ढालने वाला मास ही 'मलमास' कहलाता है, क्योंकि इस मास को भगवान् विष्णु ने स्वयं अपना नाम 'पुरुषोत्तम' देकर कहा है कि अब मैं इस मास का स्वामी हो गया हूँ, और इसके नाम समस्त जगत् पवित्र होगा तथा मेरी सादृश्यता को प्राप्त करके यह मास अन्य सब मासों का अधिपति होगा। यह जगत्पूज्य और जगत् में वन्दनीय होगा। पुरुषोत्तम मास में प्रतिदिन स्नान, दान, जपादि करने से लोगों के दुःख-शोक, पाप और दारिद्रय का निवारण हो जाता है तथा नियमपूर्वक संयमित रहकर भगवान् की विधिपूर्वक पूजार्चन करने से आलौकिक आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है, तथा मृत्यु के बाद किसी प्रकार की अधोगति का भय नहीं रहता।

श्री पुरूषोत्तम मास में भगवान् के तैंतीस स्वरूपों (श्रीविष्णु, नारायण, पुरूषोत्तम, श्रीकान्त, श्रीपति, वासुदेव, गिविक्रम आदि) की प्रसन्नता के लिए कांसे के पात्र में घृत, गुड़, सुवर्ण, ताम्राादि बर्तन, वस्त्र, दक्षिणा के साथ तैंतीस मालपूओं का दान धर्मस्थान पर स्थित ब्राह्मण को देने चाहिएँ। इसके अतिरिक्त श्रीपुरुषोत्तम माहात्म्य का कथा-श्रवण, श्री रामायण, श्रीमद्भगवत् गीता, या रूद्राभिषेक का पाठ या भगवान् श्री विष्णु स्तोत्र पाठ करना शुभ होता है। महर्षि वाल्मीकि ने अधिक पुरुषोत्तम मास के व्रत-नियमों के सम्बन्ध में कहा है कि इस मास में बथुआ, ककड़ी, केला, कटहल, जीरा, सोंठ, इमली, सुपारी, आँवला, सेंधा नमक आदि हविष्यान्न का भोजन करना चाहिए। सब प्रकार के अभक्ष्य वस्तुओं एवं तामसिक अन्न का त्याग करना चाहिए। परान्न एवं परस्त्री का सेवन भूलकर भी नहीं करना चाहिए। ताम्बे के बर्तन में गाय का दूध, चमड़े में रखा हुआ पानी और केवल अपने लिए पकाया हुआ अन्न दूषित माना गया है। अतएव इनका त्याग करना चाहिए। सम्पूर्ण मास भूमि पर शयन और एक ही समय (एकभुक्त) सादा एवं सात्विक भोजन करना चाहिए। इस मास में नित्यकर्म के पश्चात् भगवान् पुरुषोत्तम (श्रीविष्णु) का श्रद्धापूर्वक पूजन व मंत्र जाप, कीर्तन व स्तोत्र पाठ करना चाहिए। इस मास में गीता, पुराण एवं प्रामाणिक ग्रंथों का दान, वस्त्रदान, अन्नदान, भूमिदान आदि का विशेष महत्त्व होता है।

ज्योतिष शास्त्राचार्यों द्वारा वैशाख आदि अधिमास में चूड़ाकर्म, गृहप्रवेश, विवाह आदि शुभ कार्यों का निषेध कहा गया है। गर्गाचार्य के मत अनुसार—

अग्न्याधेयं प्रतिष्ठां च यज्ञो दानव्रतानि च। वेदव्रतवृषोत्सर्गं चूडाकरण मेखलाः।
गमनं देवतीर्थानां विवाहमभिषेचनम्। यानं च गृहकर्माणि मलमासे विवर्जयेत्॥

धर्मसिन्धु अनुसार भी अधिक मास (मलमास) में विवाह आदि कार्यों के सम्पादन का निषेध कहा गया है—

गृहप्रवेशाद्‌चूडामौंजीबन्ध विवाहस्तीर्थादि यात्रा वास्तु कर्म तन्याधिवर्ज्यानि॥

उपरोक्त शास्त्र वचनों को ध्यान में रखते हुए हमने पंचाँग दिवाकर २०६७ में वैशाख अधि मास 15 अप्रैल से 14 मई, 2010 के मध्य तथा तदनन्तर 14 मई से 27 मई तक द्वितीय वैशाख शुक्ल पक्ष त्रयोदश दिनात्मक (अर्थात् 13 दिन का) पक्ष होने से विवाह आदि शुभ मुहूर्त्त नहीं लगाए गए हैं।

संवत् २०६७ में त्रयोदश (१३) दिनात्मक पक्ष का फल

विक्रमी सम्वत् २०६७ में तिथियों की प्रत्यक्षगणित की गणना के कारण **द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल पक्ष** (15 मई से 27 मई, 2010 ई.) के मध्य तेरह दिन का पक्ष आ रहा है। इसका फल अशुभ माना गया है।

सामान्यतः सूर्य और चन्द्रमा की स्पष्ट गणित प्रक्रिया के कारण भारतीय पंचांगों में कृष्ण अथवा शुक्ल पक्षों के अन्तर्गत प्रतिवर्ष पक्ष के दिन १४, १५ अथवा १६ दिन आ जाते हैं—अर्थात् पक्ष में कोई तिथि क्षय हो जाने की स्थिति में १४ दिन, तिथि वृद्धि होने पर १६ दिन तथा तिथि क्षय या वृद्धि न होने की स्थिति में १५ दिन ही होते हैं। कई बार चन्द्र और सूर्य **की स्पष्ट गणित प्रक्रिया के कारण** किसी पक्ष में दो बार तिथि का क्षय हो जाने से १३ दिन का पक्ष भी आ जाता है। इसको **विश्वघस्र** पक्ष भी कहते हैं। **महाभारत में भी तेरह दिन के** पक्ष के अशुभत्व के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है। अन्य शास्त्रकारों ने भी त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के अशुभत्व के विषय में अनेकत्र प्रमाण मिलते हैं, यथा—

अनेक युग साहस्रयां दैवयोगात् प्रजायते। त्रयोदश दिने पक्षः तदा संहरते जगत्॥

अर्थात् कई एक युगों में प्रजा का नाश करने के निमित्त तेरह दिन का पक्ष आता है, अर्थात् जिस पक्ष में तेरह दिन हों, वह पक्ष लोगों में क्लिष्ट रोग उत्पादक, महँगाई, विग्रह, उपद्रव एवं हिंसा आदि अशुभ फलकारक होता है। समाज में सर्वत्र अशान्ति का वातावरण फैलता है। अन्यत्र भी इसके सम्बन्ध में अशुभ फल कहे गए हैं—

यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश दिनात्मकः। भवेल्लोक क्षयो-घोरो रूण्डमुण्डमाला युतामही।
त्रयोदश दिनः पक्षस्तदा संहरते जगत्। अपि वर्ष सहस्त्रेण कालयोगः प्रकीर्तितः॥

इस त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के प्रभावस्वरूप भारत की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ अस्थिर होंगी। राजनीतिक पार्टियों के मध्य विग्रह, टकराव एवं बिखराव पैदा होंगे। कहीं तोड़-फोड़, हिंसा, विस्फोटक घटनाएँ एवं छत्रभंग की आशंका होगी। कहीं भूस्खलन, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप घटित होंगे। दैनिक उपभोग्य की वस्तुओं में जबरदस्त तेज़ी होने के योग बनेंगे। तेरह दिन के पक्ष में शास्त्र में विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश, उपनयन आदि शुभ कार्यों का निषेध माना गया है। ज्योतिर्निबन्धानुसार—

उपनयनं परिणयनं तुवेशमारम्भादि कर्माणि। यात्रा द्विक्षयपक्षे कुर्यात् न जिजीविषु पुरुषः॥

इसी कारण शास्त्र वचनानुसार संवत् २०६७ के अन्तर्गत शु. वैशाख शुक्ल पक्ष तेरह दिन का होने से विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश, विपणि आदि शुभ मुहूर्त्त नहीं लगाए गए हैं।—पं. पन्ना लाल

परन्तु मुहूर्त्त चिन्तामणि अनुसार अत्यन्त आवश्यक परिस्थिति में विवाह लग्न में यदि शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में होने पर विवाह कार्य किया जा सकता है। यद्यपि इसे विशेष स्थिति में ही ग्रहण करना चाहिए।

वि. संवत् २०६७, चैत्र शुक्ल पक्ष | शाकः १९३१-३२ | तारीखें | सन् 2010 ई. (ता. 16 मार्च से 30 मार्च तक) | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोलार्ध, वसन्त ऋतुः

ग्रह दर्शन—इस पक्ष में 20 मार्च को गुरू पूर्व से उदय एवं बुध 27 मार्च को पश्चिम से उदय, शनि प्रातः पश्चिम में, मंगल पूर्व और शुक्र सायं पश्चिम में दिखाई देगा। शनि वक्री है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	फा. रा.	रबि उ. मु.	मार्च	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२९:४०	१	मंग	५३	४०	पू.भा.	०	२०	शुभ	९	२३	किं	२१	३८	२५	२९	16	३	मीन	नव संवत्सर २०६७ वि. प्रारंभ, चैत्र (वासन्त) नवरात्रे प्रारम्भ (A)	११	०१	२०	१३	६	४०	१८	३२
२९:४५	२	बुध	५६	४३	उ.भा.	५	३३	शुक्ल	९	३८	बा	२५	१२	२६	३०	17	४	मीन	चंद्रदर्शन, मु. ३०, गण्डमूलादि (8/52 से)	११	०२	१९	५६	६	३९	१८	३३
२९:४८	३	गुरु	५८	४८	रेव	९	५०	ब्रह्म	९	८	तै	२७	४६	२७	रबि	18	५	मे. ९/५०	गणगौरी तृतीया, पंचक समा. ९/५० (10/34 घं.मिं.), मत्स्य जयं. B	११	०३	१९	३६	६	३८	१८	३३
२९:५३	४	शुक्र	५९	५०	अश्वि	१३	८	ऐंद्र	७	५३	व	२९	१९	२८	२	19	६	मेष	भ. २९/२० से ५९/५० तक, गंडमूलादि (11/52 तक)	११	०४	१९	१६	६	३७	१८	३४
२९:५५	५	शनि	५९	५०	भर	१५	२८	वैधृ	५	५०	बव	२९	५०	२९	३	20	७	वृ. ३०/५३	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, सूर्य सायन मेष में ४१/०५, उत्तर गोल प्रारंभ C	११	०५	१८	५१	६	३६	१८	३४
३०:००	६	रवि	५८	४५	कृति	१६	४५	विष्क/प्रीति	२/५९	५८/१०	कौ	२९	१८	३०	४	21	८	वृष	स्कन्द षष्ठी व्रत	११	०६	१८	२८	६	३५	१८	३५
३०:०५	७	चंद्र	५६	२८	रोहि	१६	५८	आयु	५४	३३	गर	२७	३७	चैत्र	५	22	९	मि. ४६/३५	भ. ५६/२८ से, बुध रेव. में ५७/४३, शक चैत्र (१९३२) प्रा., स.सि.यो.	११	०७	१८	०२	६	३४	१८	३६
३०:१०	८	मंग	५३	००	मृग	१६	००	सौभा	४८	५८	वि	२४	४८	२	६	23	१०	मिथुन	भ. २४/५० तक, श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी, राहु D	११	०८	१७	३०	६	३२	१८	३७
३०:१७	९	बुध	४८	१५	आर्द्रा	१३	५०	शोभ	४२	२०	बा	२०	३८	३	७	24	११	क. ५६/२३	श्रीरामनवमी, नवरात्रे समाप्त	११	०९	१६	५८	६	३१	१८	३८
३०:२५	१०	गुरु	४२	२५	पुर्न	१०	३०	अति	३४	५०	तै	१५	२०	४	८	25	१२	कर्क	सर्वार्थ सिद्ध योगः	११	१०	१६	२३	६	२९	१८	३९
३०:२७	११	शुक्र	३५	३३	पुष्य	६	३	सुक	२६	२८	व	८	५९	५	९	26	१३	कर्क	भ. ९/०० से ३५/३३ तक, कामदा एकादशी व्रत, शुक्र अश्वि (1) E	११	११	१५	४८	६	२८	१८	३९
३०:३२	१२	शनि	२७	५५	श्ले./मघा	०/५४	४०/४०	धृति	१७	२५	बव	१	४४	६	१०	27	१४	सिं. ०/४०	शनि प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम से उदय ४९/३५, गंडमूलादि विचार	११	१२	१५	०९	६	२७	१८	४०
३०:३५	१३	रवि	१९	५०	पू.फा.	४८	२५	शूल/गंड	८/५६	००/३०	तै	१९	५०	७	११	28	१५	सिंह	अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),	११	१३	१४	२८	६	२६	१८	४०
३०:४१	१४	चंद्र	११	४३	उ.फा.	४२	२०	वृद्धि	४८	५८	व	११	४३	८	१२	29	१६	कं. १/५५	भ. ११/४३ से ३७/४५ तक, बुध अश्वि (1) मेष में ५५/३५, F	११	१४	१३	४२	६	२४	१८	४१
३०:४५	१५	मंग	३	५०	हस्त	३६	५०	ध्रुव	४०	५	बव	३	५०	९	१३	30	१७	कन्या	चैत्र पूर्णिमा (स्नानदानादि),वैशाखस्नान प्रारंभ, हनुमान जयं.(द.भारत)	११	१५	१२	५७	६	२३	१८	४१

गुरु उदय 20 मार्च

(A) घटस्थापन, वर्षफल श्रवण, बुध उ.भा. में १६/५५, शुक्र रेव. में ३/२८ ध्वजारोहण, स.सि.यो. B सूर्य उ.भा. में ०/२०, गुरु पू.भा. (1) में ८/५३, रबि-उल्सानी (मु.) मास प्रा. गण्डमूलादि C महाविषुव दिवस, गुरु पूर्व से उदय 17/26 (D) पू.षा. (३) केतु पुर्न (1) में ३/१५ E मेष में ४९/५८, गंडमूलादि (8.53 से) F श्रीसत्यनारायण व्रत, वक्री शनि उ.फा. (3) में ४८/०८

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	३	११	१०	११	५	८	२
८	२	७	१६	२१	२५	७	२३	२३
१४	२६	१०	३९	८	१२	१२	२०	२०
५८	७	१५	१३	२५	३६	२०	१८	१८
59 31	825 36	8 38	119 28	14 10	74 15	4 44	3 11	3 11
उभा २	मृग ३	पुष्य २	उभा ४	पूभा १	रेव ३	उफा ४	पूषा ४	पुर्न २
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ | १२ गुरू ११ | सू. बु. शु. | २ | १० | ३ केतु चंद्र | ९ राहु | ४ मं. | ६ शनि | ८ | ५ | ७

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	३	०	१०	०	५	८	२
१५	१३	८	०	२२	३	६	२२	२२
१०	४७	२२	३	४६	५१	३९	५८	५८
४७	३५	३८	५३	५०	३४	२८	१	१
59 16	876 45	12 31	105 15	13 56	74 00	4 38	3 10	3 10
उभा ४	हस्त २	पुष्य २	अश्वि १	पूभा १	अश्वि २	उफा ३	पूषा ३	पुर्न १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

बु. १ शु. | गुरू ११ | १२ सूर्य | २ | १० | ३ केतु | ९ राहु | ४ मं. | ६ चं. श. | ८ | ५ | ७

चैत्र शुक्ल पक्षफल—

चैत्र प्रतिपदा (16 मार्च) मंगलवार से **शोभन नामक** नया संवत्सर प्रारम्भ होगा। प्रस्तुत वर्ष-संवत् में व्रत, अनुष्ठान एवं संकल्पादि शुभ कार्यों में इसी का प्रयोग होगा। नए सम्वत् का राजा मंगल और मन्त्री बुध होगा। प्रतिपदा को नए सम्वत् का पूजन, नाम आदि के फल का श्रवण किसी प्रतिष्ठित ब्राह्मण या किसी श्रेष्ठ/पूज्य व्यक्ति के मुख द्वारा श्रवण करना शुभ होता है। चैत्र शु. प्रतिपदा से नवमी तक प्रतिदिन श्रीदुर्गा माता की प्रतिमा के सम्मुख नारियल सहित घटस्थापन करके ज्योत जगाना, श्री दुर्गा पूजन व श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठ करना शुभ होता है। इसी दिन ताम्र या मिट्टी के पात्र में रेत डालकर जौं या गेहूँ के बीज बोकर ॐकार सहित श्री गणेश, विष्णु, शिव-पार्वती एवं सूर्यादि देवों की पूजार्चना करना शुभ होता है। पूजन के पश्चात् ब्राह्मण भोजन, धर्म-ग्रंथ, पंचाँग, फल-वस्त्र, मिष्ठान्नादि का दान (दक्षिणा सहित) करना कल्याणकारी होता है। **शोभन** नामक संवत्सर होने से कुछ स्थलों पर वर्षा अच्छी होगी तथा कृषि की पैदावार भी अच्छी हो परन्तु सामान्य लोगों में रोगों एवं शोक में वृद्धि हो तथा सुख के साधनों में विस्तार हो। **राजा मंगल** के प्रभावस्वरूप नेताओं में द्वेष एवं टकराव रहे तथा परस्पर तालमेल की कमी रहे। लोगों में कलह-क्लेश, बेईमानी, चोरी-ठगी व लूटमार की वारदातें अधिक हों। **चैत्रमास में पाँच मंगलवार** होने से देश में कहीं हिंसक-घटनाएँ अथवा युद्धभय होता है। कहीं साम्प्रदायिक दंगे व उपद्रव का भय या छत्रभङ्ग (सत्ता परिवर्तन) के योग बनते हैं। चैत्र पूर्णिमा (30 मार्च) से वैशाख स्नानादि प्रारम्भ होगा।

आकाश लक्षण—मंगलवार को अष्टमी तिथि के दिन मृगशिर नक्षत्र होने से हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, पंजाब व हरियाणा के उत्तरी क्षेत्रों में अल्प एवं खण्ड वर्षा के योग हैं।

भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

वि. संवत् २०६७, प्रथम (शुद्ध) वैशाख कृष्ण पक्ष शाके: १९३२, हिजरी 1431

सन् 2010 ई. (ता. 30 मार्च से 14 अप्रैल तक)

सूर्य उत्तरायण में, उत्तर गोलार्ध, वसन्त ऋतु:

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु पूर्व में तथा शनि पश्चिम क्षितिज में डूबने को होगा। सायं बुध, शुक्र पश्चिम में तथा मंगल पूर्व कपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें शक	तारीखें हि.मु.	तारीखें मार्च	तारीखें चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै.रा.	सू.अ.	स्प.क.	प्ट.वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
अवम्	१	मंग	५६	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	30	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३०:५०	२	बुध	५०	५३	चित्रा	३२	२३	व्या	३२	५	तै	२३	४९	१०	१४	31	१८	तु. ४/२८	सूर्य रेव. में २८/१३,	११	१६	१२	११	६	२२	१८	४२
३०:५७	३	गुरु	४६	३८	स्वा	२९	२५	हर्ष	२५	२०	व	१८	४६	११	१५	अप्रै	१९	तुला	भ. १८/४८, से ४६/३८ तक, गुरु पू.भा. (2) में २०/५५, अप्रैल मास प्रारम्भ	११	१७	११	२२	६	२०	१८	४३
३१:०३	४	शुक्र	४४	१५	विशा	२८	१३	वज्र	२०	००	बव	१५	२७	१२	१६	2	२०	वृ. १३/१८	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय 22/36 (जालं.), अनुसूया जयन्ती	११	१८	१०	२९	६	१९	१८	४३
३१:०५	५	शनि	४४	००	अनु	२९	००	सिद्धि	१६	१५	कौ	१४	८	१३	१७	3	२१	वृश्चिक	गण्डमूल 17/54 घं.मिं. से,	११	१९	०९	३५	६	१८	१८	४४
३१:१०	६	रवि	४५	५०	ज्ये.	३१	५५	व्य.	१४	१३	गर	१४	५५	१४	१८	4	२२	ध. ३१/५५	भ. ४५/५० से, **गण्डमूल विचार**	११	२०	०८	४०	६	१७	१८	४५
३१:१३	७	चंद्र	४१	३८	मूल	३६	४५	वरी	१३	४५	वि	१७	४४	१५	१९	5	२३	धनु	भ. १७/४५ तक, **गण्डमूल** (20/58 घं.मिं. तक),	११	२१	०७	४३	६	१६	१८	४५
३१:१८	८	मंग	५४	५८	पू.षा.	४३	१०	परि	१४	४३	बा	२२	१८	१६	२०	6	२४	म. ५९/५५	शुक्र भर. में ३९/४३,	११	२२	०६	४४	६	१५	१८	४६
३१:२३	९	बुध	६०	००	उ.षा.	५०	३८	शिव	१६	३८	तै	२८	९	१७	२१	7	२५	मकर	प्लूटो वक्री ४/२८	११	२३	०५	४३	६	१४	१८	४७
३१:२८	९	गुरु	१	२०	श्रव	५८	२८	सिद्ध	१९	१०	गर	१	२०	१८	२२	8	२६	मकर	भ. ३४/३८ से, बुध भर. में ६/५५,	११	२४	०४	४१	६	१३	१८	४८
३१:३०	१०	शुक्र	७	५८	धनि	६०	००	साध्य	२१	४८	वि	७	५८	१९	२३	9	२७	कुं. ३२/२३	भ. ७/५८ तक, **पंचक प्रारम्भ** ३२/२३ (19/09 घं.मिं.)	११	२५	०३	३७	६	१२	१८	४८
३१:३७	११	शनि	१४	२०	धनि	६	१३	शुभ	२४	१०	बा	१४	२०	२०	२४	10	२८	कुम्भ	**वरूथिनी एकादशी व्रत**	११	२६	०२	३१	६	१०	१८	४९
३१:४३	१२	रवि	१९	५५	शत	१३	१३	शुक्ल	२५	५५	तै	१९	५५	२१	२५	11	२९	कुम्भ	प्रदोष व्रत	११	२७	०१	२५	६	९	१८	५०
३१:४५	१३	चंद्र	२४	२५	पू.भा.	११	१०	ब्रह्म	२६	४८	व	२४	२५	२२	२६	12	३०	मी. २/४८	भ. २४/२५ से ५६/०३ तक, मास शिवरात्रि व्रत	११	२८	००	१६	६	८	१८	५०
३१:५०	१४	मंग	२७	४३	उ.भा.	२४	००	ऐंद्र	२६	४५	श	२७	४३	२३	२७	13	३१	मीन	सर्वार्थ सिद्ध योग (15/43 तक), गण्डमूल (15/43 बाद)	११	२८	५९	०५	६	७	१८	५१
३१:५३	३०	बुध	२९	४३	रेव	२७	३५	वैधृ	२५	४५	ना	२९	४३	२४	२८	14	वैशा	मे. २७/३५	**वैशाख अमावस, कुम्भ महापर्व (हरिद्वार), सूर्य अश्वि (1) A**	११	२९	५७	५३	६	६	१८	५१

कुम्भ महापर्व हरिद्वार 14 अप्रैल

A मेष में २/०८, वैशाख संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल सं. दोपहर 13/21 तक, पंचक समाप्त २७/३५, डॉ. अम्बेदकर जयन्ती, अमावस-स्नानदानादि, मुख्य शाही स्नान (हरिद्वार) देखें पृष्ठ 9-11

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	३	०	१०	०	५	८	२
२२	१७	१०	१०	२४	१२	६	२२	२२
४	३९	०	५१	२३	२८	७	३५	३५
५६	१०	३१	३९	२६	५२	३५	४७	४७
59 3	719 31	15 51	72 38	13 38	73 46	4 26	3 11	3 31
रेव २	पूषा २	पुष्य ३	अश्वि ४	पूभा २	अश्वि ४	उफा ३	पूषा ३	पुन १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

बु. शु. १ | १२ सूर्य | गु. ११ | २ | १० | ३ के. | ९ चं. रा. | ४ मं. | ६ शनि | ८ | ५ | ७

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	३	०	१०	०	५	८	२
२९	२३	१२	१७	२६	२२	५	२२	२२
५६	५२	१९	४३	११	१८	३३	१०	१०
२७	१८	११	२४	३	३	२४	२१	२१
58 48	762 21	19 8	23 4	13 13	73 29	4 3	3 11	3 11
रेव ४	रेव ३	पुष्य ३	भर २	पूभा २	भर ३	उफा ३	पूषा ३	पुन १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

बु. शु. १ | १२ सू. चं. | गु. ११ | २ | १० | ३ केतु | ९ राहु | ४ मं. | ६ श. | ८ | ५ | ७

प्रथम (शुद्ध) वैशाख कृष्ण पक्षफल—

वैशाख मास में (चैत्र पूर्णिमा से द्वि. शुद्ध वैशाख पूर्णिमा तक) प्रातः गंगा आदि तीर्थ स्थान पर अथवा अपने ही निवास स्थान पर गंगाजल मिश्रित जल में स्नान करके तुलसी दल सहित भगवान् विष्णु की नित्य पूजार्चना करके विष्णु सहस्रनाम एवं वैशाख माहात्म्य का नियमपूर्वक पाठ करना तथा ''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'' मन्त्र का जप करना शुभ होता है। पाठोपरान्त उद्यापन में ब्राह्मणों को भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, मिष्ठान्न, फल, दक्षिणा सहित दान करने से सुख-शान्ति एवं आरोग्य की प्राप्ति होती ह। ता. **14 अप्रैल, बुधवार** को वैशाख संक्रान्ति 30 मुहूर्त्ति है। वै. संक्रान्ति अमावस तिथि को होगी, तथा इसी दिन कुम्भ महापर्व श्री हरिद्वार के गङ्गातट पर घटित होगा। स्नान, दान, जप-पाठ, देव-ऋषि तर्पण आदि का माहात्म्य सूर्योदय से हो जाएगा। पितृ-तर्पण का समय मध्याह्न काल होगा। **संक्रान्ति कुण्डली** के समय अमावस तिथि है, तथा सू., बु. व शुक्र ग्रहों का सम्बन्ध लग्न में हुआ है। लग्नेश मंगल चतुर्थ भाव में मंगल पापाक्रान्त होने से भारत का पड़ोसी देशों तथा पाक एवं चीन आदि के साथ सीमा-विवाद एवं टकराव होने के संकेत हैं। महँगाई, आरक्षण एवं साम्प्रदायिक विवादों को लेकर सत्तारूढ़ एवं विपक्षी दलों के बीच टकराव पैदा होंगे।

संक्रान्ति राशिफल—मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु व कुम्भ राशि वाले जातकों को इस संक्रान्ति का फल लाभदायक रहेगा। शेष राशि वालों को मिश्रित फली है।

आकाश लक्षण—इस पक्ष की 1, 3, 7, 8, 12, 13, 14 अप्रै. को भारत के उत्तरी क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ तीव्र बौंछारें पड़ने के योग हैं।

वि. संवत् २०६७, प्रथम (अधि.) वैशाख शुक्ल पक्ष | शाक: १९३३ | तारीखें | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल

सन् 2010 ई. (ता. 15 अप्रैल से 28 अप्रैल तक) सूर्य उत्तरायण में, उत्तर गोलार्ध, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रहदर्शन–प्रातः गुरु पूर्वी क्षितिज में होगा। सायं मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न, सायं बुध-शुक्र पश्चिम में तथा शनि पश्चिम क्षितिजासन्न दीखेगा। 20 अप्रै. से बु. पश्चि में लुप्त होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	सौर गते	मुस्लि.	अंग्रेजी	वैशाख	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३१:५७	१	गुरु	३०	३३	अश्वि	३०	३	विष्क	२३	५०	किं	०	८	२५	२९	15	२	मेष	वैशाख पुरुषोत्तम (अधिक) मास प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. १५, (A)	०	००	५६	३८	६	५	१८	५२
३२:०३	२	शुक्र	३०	२३	भर	३१	३०	प्रीति	२१	८	बा	०	२८	२६	जम	16	३	वृ. ४६/४३	जमादिउल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ, गुरु पू.भा. (3) में १०/३३	०	०१	५५	२३	६	४	१८	५३
३२:१०	३	शनि	२९	१८	कृति	३२	५	आयु	१७	४०	गर	२९	१८	२७	२	17	४	वृष	भ. ५८/२८ से, शुक्र कृति. में ३२/३८	०	०२	५४	०१	६	२	१८	५४
३२:१३	४	रवि	२७	२०	रोहि	३१	५०	सौभा	१३	३३	वि	२७	२०	२८	३	18	५	वृष	भ. २७/२० तक, **बुध वक्री ८/५५**	०	०३	५२	३९	६	१	१८	५४
३२:१७	५	चंद्र	२४	३८	मृग	३०	५०	शोभ	८	४८	बा	२४	३८	२९	४	19	६	मि. १/२८	सर्वार्थ सिद्ध योग:	०	०४	५१	१७	६	०	१८	५५
३२:२३	६	मंग	२१	१०	आर्द्रा	२९	८	अति. सुक.	३ ५७	२६ ३३	तै	२१	१०	३०	५	20	७	मिथुन	शुक्र वृष में १६/२८, सूर्य सायन वृष में १०/०३, वक्री बुध पश्चिम B	०	०५	४९	५२	५	५९	१८	५६
३२:२५	७	बुध	१७	३	पुन	२६	४०	धृति	५१	३	व	१७	३	वैश.	६	21	८	क. १२/२३	भ. १७/०३ से ४४/३५ तक, शक वैशाख प्रारम्भ	०	०६	४८	२६	५	५८	१८	५६
३२:३०	८	गुरु	१२	१०	पुष्य	२३	३५	शूल	४४	३	बव	१२	१०	२	७	22	९	कर्क	सर्वार्थ सिद्ध योग:, गुरु पुष्य योग:	०	०७	४६	५६	५	५७	१८	५७
३२:३३	९	शुक्र	६	४०	श्ले.	१९	५०	गंड	३६	३०	कौ	६	४०	३	८	23	१०	सिं. १९/५०	गण्डमूल विचार	०	०८	४५	२३	५	५६	१८	५७
३२:३७	१०	शनि	०	३८	मघा	१५	३५	वृद्धि	२८	३८	गर	०	३८	४	९	24	११	सिंह	भ. २७/२३ से ५४/०८ तक, **पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत स्मार्त**	०	०९	४३	५०	५	५५	१८	५८
००:००	११	शनि	५४	८	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३२:४३	१२	रवि	४७	३३	पू.फा.	११	००	ध्रुव	२०	३३	बव	२०	५१	५	१०	25	१२	कं. २४/५०	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत वैष्णव., स. सि. योग (10/18 बाद)	०	१०	४२	१४	५	५४	१८	५८
३२:४७	१३	चंद्र	४१	५	उ.फा.	६	२३	व्या.	१२	२५	कौ	१४	१९	६	११	26	१३	कन्या	सोम प्रदोष व्रत, मंगल आश्ले. में २०/३५	०	११	४०	३६	५	५३	१९	०
३२:५०	१४	मंग	३५	५	हस्त चित्रा	१ ५६	५८ ६	हर्ष वज्र	४ ५७	३१ ६	गर	८	५	७	१२	27	१४	तु. २९/५८	भ. ३५/०५ से, सूर्य भरणी में ४२/१३, श्रीसत्यनारायण व्रत	०	१२	३८	५५	५	५२	१९	०
३२:५५	१५	बुध	२९	५५	स्वा.	५५	१८	सिद्धि	५०	३०	वि	२	३०	८	१३	28	१५	तुला	भ. २/३३ तक, अधि. वैशाख पूर्णिमा, शुक्र रोहि. में २९/२५,	०	१३	३७	१२	५	५१	१९	१

(A) स. सि. यो. B में अस्त ३७/५८, ग्रीष्म ऋतु आरम्भ, अगस्त्य अस्त

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 22 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	३	०	१०	१	५	८	२
७	१०	१५	१७	२७	२	५	२१	२१
४५	५१	२	५५	५५	४	२	४४	४४
५३	२९	१८	५४	००	५२	४४	५४	५४
58 30	849 7	21 54	23 15	12 42	73 10	3 31	3 10	3 10
अश्वि 3	पुष्य ३	पुष्य 4	भर २	पू.भा ३	कृति २	उ.फा 3	पू.षा ३	पुन १
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

२ शु. | १ सू. बु. | १२ | ११ गु. | १० | ९ रा. | ८ | ७ | ६ श. | ५ | ४ चं. मं. | ३ के.

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 28 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	३	०	१०	१	५	८	२
१३	६	१७	१४	२९	९	४	२१	२१
३६	५३	१८	४४	१०	२३	४२	२५	२५
२४	४३	११	२६	८	१०	४०	५०	५०
58 19	839 21	23 39	39 27	12 15	72 54	3 4	3 11	3 11
भर. 1	स्वा. 1	श्ले. 1	भर. 1	पू.भा ३	कृति ४	उ.फा ३	पू.षा ३	पुन १
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

२ शु. | १ सू. बु. | १२ | ११ गुरू | १० | ९ रा. | ८ | ७ चन्द्र | ६ शनि | ५ | ४ मंगल | ३ के.

प्रथम (अधि.) वैशानव शुक्ल पक्षफल—

ता. 15 अप्रैल से 14 मई तक की अवधि में वैशाख अधिक मास रहेगा। इस कालावधि में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, नवीन गृह-प्रवेश, यज्ञोपवीत, काम्य व्रतानुष्ठान, नवीन आभूषण बनवाना, नई गाड़ी खरीदना आदि कृत्यों का निषेध माना गया है। इस अवधि में ऋण, रोग आदि निवृत्ति के लिए जपादि, प्रतिष्ठा, गर्भाधान, सीमन्त, वर्षफल एवं जन्मदिन सम्बन्धी जप, पाठ, पूजन आदि कृत्य किए जा सकते हैं। **वैशाख अधिक** मास में गुरुवार वैशाख प्रतिपदा (15 अप्रैल) से प्रारम्भ करके द्वितीय वैशाख अमावस्या (14 मई) पर्यन्त लगभग एक मास की अवधि में भगवान् श्री विष्णु की प्रसन्नता के लिए जो व्रत-स्नान-दान एवं पूजनादि नियम किए जाते हैं, उनका अक्षय फल होता है और अनिष्ट फल दूर हो जाते हैं। अधिक मास (पुरूषोत्तम मास) में व्रत-नियमों की पालना करते हुए भगवान् विष्णु की विधिपूर्वक पूजार्चना करने से भगवान् अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। महर्षि वाल्मीकि ने अधिक-मास के व्रत-नियमों के सम्बन्ध में कहा है कि इस मास में गेहूँ, चावल, धान, मूँग, जौं, तिल, मटर, ककड़ी, केला, घी, आम, सोंठ, इमली, आँवला आदि हविष्यान्न का भोजन करना चाहिए। सब प्रकार के अभक्ष्य जैसे, शहद, उड़द, प्याज, लहसुन, मूली, अण्डा-मांसादि शराब आदि तामसिक एवं निन्दित वस्तुओं का त्याग करना चाहिए। पर स्त्री सेवन से भी परहेज़ करना चाहिए। अधिक (पुरुषोत्तम) मास के दौरान भूमि पर शयन, व्रत, नियम का पालन करना अथवा एक ही समय भोजन करना चाहिए तथा प्रतिदिन **पुरूषोत्तम मास माहात्म्य** का पाठ करना चाहिए। साथ ही श्री विष्णु सहस्रनाम, पुरूषसूक्त, श्री सूक्त आदि स्तोत्रों का पाठ करना कल्याणप्रद होता है। पाठोपरान्त किसी ब्राह्मण को अन्न, वस्त्र, फल एवं गीता, रामायण, पुराण आदि धर्म ग्रंथ का दान करना चाहिए। यदि पूरे अधिमास तक व्रत-नियम न किए जा सकें तो कम-से-कम पुरूषोत्तमा एकादशी या पूर्णिमा को अवश्य व्रत, पाठादि करना चाहिए। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में ता. 18, 22, 25, 26 एवं 28 अप्रै. को तेज़ हवाओं के साथ तीव्र बौछारें पड़ने के योग हैं।

वि. संवत् २०६७, द्वितीय (अधि.) वैशाख कृष्ण पक्ष शाक: १९३३ — सन् 2010 ई. (ता. 29 अप्रैल से 14 मई तक)

सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोलार्ध, –ग्रीष्म ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु पूर्व में होगा। सायं मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न, शुक्र पश्चिम तथा शनि पश्चिम क्षितिज में होगा। 6 मई से प्रातः बुध भी पूर्व में गुरु के पास दीखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	वैशा. कृ.	जमा. मु.	अप्रैल	वैशा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३३:००	१	गुरु	२५	५५	विशा	५३	४८	व्य.	४५	००	कौ	२५	५५	९	१४	29	१६	वृ. ३९/०३	अधिक वैशाख कृष्ण पक्षारम्भ	०	१४	३५	२९	५	५०	१९	२
३३:०३	२	शुक्र	२३	२५	अनु	५३	५५	वरी	४०	४५	गर	२३	२५	१०	१५	30	१७	वृश्चिक	भ. ५३/०३ से, वक्री बुध अश्वि (४) में ७/१३	०	१५	३३	४३	५	४९	१९	२
३३:०८	३	शनि	२२	४०	ज्ये.	५५	५०	परि	३७	५८	वि	२२	४०	११	१६	मई	१८	ध. ५५/५०	भ. २२/४० तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/17 (जालं.),(A)	०	१६	३१	५६	५	४८	१९	३
३३:१३	४	रवि	२३	४५	मूल	५९	३५	शिव	३६	३८	बा	२३	४५	१२	१७	2	१९	धनु	गुरु पू.भा. (4) मीन में ५/५०, स. सि. योगः, गंडमूलादि	०	१७	३०	०७	५	४७	१९	४
३३:१७	५	चंद्र	२६	४३	पू.षा.	६०	००	सिद्ध	३६	४३	तै	२६	४३	१३	१८	3	२०	धनु		०	१८	२८	१६	५	४६	१९	५
३३:२२	६	मंग	३१	१५	पू.षा.	५	००	साध्य	३७	५५	व	३१	१५	१४	१९	4	२१	म. २१/३५	भ. ३१/१५ से,	०	१९	२६	२४	५	४५	१९	६
३३:२८	७	बुध	३६	५८	उ.षा.	११	४३	शुभ	४०	३	वि	४	७	१५	२०	5	२२	मकर	भ. ४/०८ तक,	०	२०	२४	३०	५	४४	१९	७
३३:३५	८	गुरु	४३	१८	श्रव	१९	१३	शुक्ल	४२	३५	बा	१०	८	१६	२१	6	२३	कुं. ५३/०३	पंचक प्रारम्भ ५३/०३, वक्री बुध पूर्व से उदय २६/०५	०	२१	२२	३७	५	४२	१९	८
३३:३८	९	शुक्र	४९	२८	धनि	२६	५३	ब्रह्म	४५	३	तै	१६	२३	१७	२२	7	२४	कुम्भ	श्री टैगोर जयन्ती	०	२२	२०	३९	५	४१	१९	८
३३:४०	१०	शनि	५४	५८	शत	३४	००	ऐंद्र	४७	००	व	२२	१३	१८	२३	8	२५	कुम्भ	भ. २२/१३ से ५४/५८ तक,	०	२३	१८	४४	५	४१	१९	९
३३:४३	११	रवि	५९	२०	पू.भा.	४०	१३	वैधृ	४८	८	बव	२७	९	१९	२४	9	२६	मी. २३/४५	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत स्मार्त, शुक्र मृग. में ३०/३०	०	२४	१६	४४	५	४१	१९	१०
३३:४८	१२	चंद्र	६०	००	उ.भा.	४५	८	विष्क	४८	१३	कौ	३०	५२	२०	२५	10	२७	मीन	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (वैष्णव)	०	२५	१४	४४	५	४०	१९	११
३३:५०	१२	मंग	२	२३	रेव	४८	३५	प्रीति	४७	१०	तै	२	२३	२१	२६	11	२८	मे. ४८/३५	भौम प्रदोष व्रत, पंचक समाप्त ४८/३५, सूर्य कृति. में २८/१३, (B)	०	२६	१२	४२	५	३९	१९	११
३३:५३	१३	बुध	३	४८	अश्वि	५०	३३	आयु	४४	५३	व	३	४८	२२	२७	12	२९	मेष	भ. ३/४८ से ३३/४५ तक, गण्डमूलादि	०	२७	१०	४१	५	३९	१९	१२
३३:५८	१४	गुरु	३	४५	भर	५१	१३	सौभा	४१	३३	श	३	४५	२३	२८	13	३०	मेष	अमावस (पितृतर्पणादि कार्येषु)	०	२८	०८	३७	५	३८	१९	१३
३४:००	३०	शुक्र	२	२५	कृति	५०	४३	शोभ	३७	१५	ना	२	२५	२४	२९	14	ज्ये.	वृ. ६/१३	अमावस, वैशाख अधिक मास समाप्त, सूर्य वृष में ५५/२५, C	०	२९	०६	२९	५	३७	१९	१३

(A) मई मास प्रारम्भ, गंडमूल (B) बुध मार्गी ५५/४५, गंडमूल (C) ज्येष्ठ संक्रान्ति, मु. ४५, पुण्यकाल सं. अगले दिन 10/11 तक

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	३	०	११	१	५	८	२
२१	१९	२०	९	०	१९	४	२१	२१
२२	२६	३४	५८	४६	५	२०	०	०
८	५०	३३	५०	००	५	२४	२४	२४
58 4	709 50	25 39	24 1	11 37	72 32	2 24	3 11	3 11
भर ३	श्रव ३	श्ले २	अश्वि ३	पू.भा. ४	रोहि ३	उफा ३	पूषा ३	पुन १
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ सू. बु. — २ शु. — ३ के. — ४ मं. — ५ — ६ शनि — ७ — ८ — ९ रा. — १० चं. — ११ — १२ गु.

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	३	०	११	१	५	८	२
२९	२८	२४	८	२	२८	४	२०	२०
६	३३	६	४९	१६	४४	३	३४	३४
१५	४	३	७	१८	९	५०	५८	५८
57 55	809 26	27 24	11 52	10 51	72 10	1 39	3 11	3 11
कृति १	कृति १	श्ले. ३	अश्वि ३	पू.भा. ४	मृग २	उफा ३	पूषा ३	पुन १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

१ सू. चं. बु. — २ शुक्र — ३ के. — ४ मंगल — ५ — ६ शनि — ७ — ८ — ९ रा. — १० — ११ — १२ गुरू

द्वितीय (अधि.) वैशाख कृष्ण पक्षफल—

प्र. वैशाख अधि. शुक्ल पक्ष की भान्ति इस पक्ष में भी वैशा-अधिमास के व्रत नियमों का विधान रहेगा। इस पक्ष में भी विवाह, मुण्डन, नवीन गृह प्रवेश आदि शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध रहेगा। इस पक्ष में भी पुरूषोत्तम मास सम्बन्धी कृत्यों का सम्पादन तथा भगवान् विष्णु की पूजार्चन करके विष्णु सहस्रणाम का पाठ, पुरूषोत्तमा एकादशी का व्रत पालन तथा अनाज, वस्त्र, फल, मिष्ठान्न एवं धर्म-ग्रंथ का दान दक्षिणा सहित ब्राह्मण को देना शुभ एवं कल्याणकारी होता है।

लोक भविष्य–वैशाख अधिमास में सूर्य व शनि—दोनों क्रूर ग्रहों के मध्य षडाष्टक योग होने के कारण राजनेताओं में परस्पर द्वेष एवं टकराव पैदा होंगे, उनमें परस्पर तालमेल की कमी रहेगी। सीमावर्ती देशों (जैसे—चीन, पाकिस्तान, बंगलादेश आदि) से गम्भीर चुनौतियों का सामना रहेगा। भारत के भीतर अनेक राज्यों में कहीं आवश्यक वस्तुओं में कमी जैसे खाद्यान्न की कमी, बिजली व पेयजल की कमी तथा अन्य सभी आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक तेज़ी होने से सामान्य लोगों में वर्तमान सरकार के प्रति आक्रोश व बेचैनी हो। राज्यों में कहीं गेहूँ, चने, चावल एवं धान्य आदि पैदावार पिछले वर्षों की अपेक्षा कम होगी। **"वैशाख युग्मे धान्यानां निष्पत्तिरशुभः क्वचित्॥"** वैशाख अधिमास की समाप्ति (14 मई शुक्रवार की प्रातः 6.35) के उपरान्त, 14 मई की अर्द्ध रात्रि पश्चात् रात्रि 3 बजकर 47 मिनट से **ज्येष्ठ संक्रान्ति** प्रारम्भ होगी। इसका पुण्यकाल अगले दिन, अर्थात् 15 मई शनिवार की प्रातः सूर्योदय से लेकर प्रातः 10/11 बजे तक रहेगा। 14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा, जिससे सोना, चाँदी, ताँबा, गुड़, चीनी, शक्कर, रूई, कपास, तिल-तैल, सरसों आदि में तेज़ी होगी। गेहूँ, चना आदि में घटा/बढ़ी रहेगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में गर्मी का प्रभाव बढ़ने लगेगा पूर्वार्द्ध में उत्तरी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६७, द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल पक्ष शाक: १९३२

सन् 2010 ई. (ता. 15 मई से 27 मई तक)

सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः बुध पूर्व में, गुरु पूर्व कपाल में दिखाई देगा। सायं शुक्र पूर्व क्षितिज के पास, मंगल पश्चिम कपाल तथा शनि पूर्व कपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें वैशा.	जमा.	मई	प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
अवम्	१	शुक्र	५९	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	14	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय — त्रयोदश दिनात्मक पक्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
३४:०५	२	शनि	५६	२८	रोहि	४९	१५	अति	३२	८	बा	२८	९	२५	३०	15	२	वृष	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, शुक्र मिथुन में २/५० (6/44 घं. मिं.), शिवाजी A	१	००	०४	२४	५	३६	१९	१४
३४:०८	३	रवि	५२	२०	मृग	४७	५	सुक	२६	२३	तै	२४	२४	२६	जमा	16	३	मि. १८/१८	अक्षय तृतीया, श्रीपरशुराम जयन्ती, जमादिउल्सानी (मुस्लि.) प्रा.	१	०१	०२	१५	५	३५	१९	१४
३४:१३	४	चंद्र	४७	४०	आर्द्रा	४४	२३	धृति	२०	१०	व	२०	००	२७	२	17	४	मिथुन	भ. २०/०३ से ४७/४० तक,	१	०२	००	०४	५	३४	१९	१५
३४:१५	५	मंग	४२	३८	पुर्न	४१	१८	शूल	१३	३३	बव	१५	९	२८	३	18	५	क. २७/०५	आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती	१	०२	५७	५१	५	३४	१९	१६
३४:२०	६	बुध	३७	२३	पुष्य	३७	५८	गंड वृद्धि	६ ५९	४३ ४०	कौ	१०	१	२९	४	19	६	कर्क	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती	१	०३	५५	३९	५	३३	१९	१७
३४:२२	७	गुरु	३१	५५	श्ले.	३४	२८	ध्रुव	५२	३०	गर	४	३१	३०	५	20	७	सिं. ३४/२८	भ. ३१/५५ से ५९/१० तक, श्रीगङ्गा जयन्ती, शुक्र आर्द्रा में ३६/१८	१	०४	५३	२४	५	३३	१९	१८
३४:२५	८	शुक्र	२६	२८	मघा	३०	५५	व्या.	४५	२३	बव	२६	२८	३१	६	21	८	सिंह	सूर्य सायन मिथुन में ८/५०, श्रीदुर्गाष्टमी	१	०५	५१	०५	५	३२	१९	१८
३४:२८	९	शनि	२०	५८	पूफा.	२७	२३	हर्ष	३८	१८	कौ	२०	५८	ज्ये	७	22	९	कं. ४१/३३	श्री सीता नवमी, बगुलामुखी जयन्ती, जानकी जयं., शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	१	०६	४८	४८	५	३२	१९	१९
३४:३०	१०	रवि	१५	४०	उफा.	२४	५	वज्र	३१	२५	गर	१५	४०	२	८	23	१०	कन्या	भ. ४३/१० से प्रारम्भ, बुध भर. में १३/०३, स. सि. योग	१	०७	४६	२६	५	३१	१९	१९
३४:३३	११	चंद्र	१०	४०	हस्त	२१	५	सिद्धि	२४	४८	वि	१०	४०	३	९	24	११	तु. ४९/४५	भ. १०/४० तक, मोहिनी एकादशी व्रत, राहु पू.षा. 2, केतु आर्द्रा 4 B	१	०८	४४	०८	५	३१	१९	२०
३४:३५	१२	मंग	६	१३	चित्रा	१८	३८	व्य.	१८	४०	बा	६	१३	४	१०	25	१२	तुला	भौम प्रदोष व्रत, सूर्य रोहि. में १९/००	१	०९	४१	४६	५	३०	१९	२०
३४:३८	१३	बुध	२	२३	स्वा.	१६	५५	वरी	१३	५	तै	२	२३	५	११	26	१३	तुला	भ. ५९/३० से, मंगल मघा 1 सिंह में २५/५७, श्रीनृसिंह जयंती, C	१	१०	३९	२१	५	३०	१९	२१
००:००	१४	बुध	५९	३०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४:४३	१५	गुरु	५७	५०	विशा	१६	१३	परि	८	२३	वि	२८	४०	६	१२	27	१४	वृ. १/१८	भ. २८/४३ तक, वैशाख पूर्णिमा स्नानदानादि, बुद्धपूर्णिमा, (D)	१	११	३६	५७	५	२९	१९	२२

(A) जयंती, स.सि.यो. (B) में ५९/४५ C छिन्नमस्ता जयंती (D) श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, वैशाख स्नान समाप्त, श्रीबुद्ध जयन्ती, स. सि. यो. 17.58 बाद

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	३	०	११	२	५	८	२
५	६	२७	११	३	७	३	२०	२०
५१	०	२१	४३	३०	८	५४	१२	१२
३	४२	५५	१९	४	१५	२५	४२	४२
57 43	850 30	28 43	41 12	10 6	71 48	0 57	3 10	3 10
कृति ३	मघ. २	श्ले. ४	अश्वि ४	उभा १	आर्द्रा १	उफा ३	पूषा ३	पुन १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 27 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	४	०	११	२	५	८	२
११	२९	०	१६	४	१४	३	१९	१९
३६	४३	१६	४४	२८	१८	५०	५३	५३
५९	१६	४५	४	५८	६	१७	३८	३८
57 34	798 14	29 42	61 54	9 24	71 25	0 20	3 11	3 11
रोहि १	विशा ३	मघा १	भर. २	उभा १	आर्द्रा ३	उफा ३	पूषा २	आर्द्रा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष में 16 मई रविवार को अक्षय तृतीया एवं भगवान् परशुराम की पुण्य जन्म तिथि मनाई जाएगी। अक्षय तिथि बड़ी पवित्र, पुण्यप्रदा एवं महासुख व सौभाग्य प्रदायक तिथि मानी जाती है। इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में की जाती है, क्योंकि त्रेतायुग (कल्पभेद से सतयुग) का शुभारम्भ इसी तिथि से हुआ था। इसी कारण इस तिथि में किए गए स्नान, दान, जप-तप, होम, देव-पितृ, तर्पण आदि शुभ कर्मों का फल अनन्त गुणा होता है। इस तिथि को स्वयं-सिद्ध मुहूर्त भी माना जाता है। श्रीगङ्गा जयन्ती (20 मई), श्री गङ्गा जी का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। इस दिन हरिद्वार में स्नान, श्री गङ्गा जी पूजन पुष्पाक्षत एवं दीपादि सहित करना तथा जप-पाठ, वस्त्रों, अन्न, फलों आदि का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। वै.शु. नवमी को शक्तिस्वरूपा बगुलामुखी माता का पूजनार्चन करने से व्यक्ति को ऋण, रोग एवं शत्रुओं का भय नहीं रहता। नृसिंह जयन्ती (26 मई) पर नृसिंह भगवान् की श्रीलक्ष्मी सहित पंचोपचार सहित पूजन करना चाहिए। प्रतिवर्ष पूजन एवं व्रतादि करने से नृसिंह भगवान् उसकी सब प्रकार से रक्षा करते हैं, और धन-धान्य देते हैं। वैशाख पूर्णिमा (27 मई) को तीर्थ पर गंगाजल सहित स्नान करके भगवान् विष्णु का ध्यान, पूजन एवं श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए। वैशाख शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा तथा चतुर्दशी—दो तिथियों का क्षय होने से तेरह दिन (त्रयोदश दिनात्मक) पक्ष बना है, शास्त्रमतानुसार तेरह दिन के पक्ष में विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश, उपनयन आदि शुभ कर्मों के सम्पादन का निषेध माना गया है—तेरह दिन के पक्ष का फल भी अशुभ कहा गया है। इसके प्रभावस्वरूप प्रजा में रोग, भ्रष्टाचार, बेईमानी, उपद्रव, अतिशय महँगाई व हिंसक घटनाएं बढ़ती हैं। अधिक विवरण के लिए देखें पृष्ठ संख्या नं. 86

आकाश लक्षण—इस पक्ष में उ. भारत में गर्मी का प्रकोप बढ़ जाएगा॥

वि. संवत् २०६७, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाकः १९३२ तारीखें — सन् 2010 ई. (ता. 28 मई से 12 जून तक)

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	[illegible]	जमा. मु.	मई	ज्येष्ठ	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रहसंचार—प्रातः बुध पूर्व में तथा गुरु पूर्व कपाल में दिखाई देगा। सायं शुक्र पश्चिमी कपाल में, मंगल याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर हटा तथा शनि याम्योत्तरवृत्त से पूर्व की ओर होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३४:४५	१	शुक्र	५७	३०	अनु	१६	४३	शिव	४	३५	बा	२७	४०	७	१३	28	१५	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्ण पक्षारम्भः, गण्डमूलादि (12/10 स्टैं. टा.) से	१	१२	३४	३१	५	२९	१९	२३
३४:४५	२	शनि	५८	४०	ज्ये.	१८	३५	सिद्ध	१	५५	तै	२८	५	८	१४	29	१६	ध. १८/३५	श्रीनारद जयन्ती, वीणादान, गण्डमूलादि विचार	१	१३	३२	०४	५	२९	१९	२३
३४:४८	३	रवि	६०	००	मूल	२१	५८	साध्य	०	२५	व	३०	२	९	१५	30	१७	धनु	भ. ३०/०० से, **शनि मार्गी ४५/२३**, स.सि.योगः, गंडमूल 14/16 घं.मिं. तक	१	१४	२९	३३	५	२९	१९	२४
३४:५०	३	चंद्र	१	२३	पूषा.	२६	४८	शुभ	०	८	वि	१	२३	१०	१६	31	१८	म. ४३/१३	भ. १/२३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय 22/27, (जालंधर),A	१	१५	२७	०५	५	२८	१९	२४
३४:५०	४	मंग	५	२८	उषा.	३२	५३	शुक्ल	०	५५	बा	५	२८	११	१७	जून	१९	मकर	**जून मास प्रारम्भ**	१	१६	२४	३५	५	२८	१९	२४
३४:५३	५	बुध	१०	४३	श्रव	३९	५५	ब्रह्म	२	३५	तै	१०	४३	१२	१८	2	२०	मकर		१	१७	२२	०२	५	२८	१९	२५
३४:५५	६	गुरु	१६	४०	धनि	४७	२८	ऐंद्र	४	५३	व	१६	४०	१३	१९	3	२१	कुं. १३/४०	भ. १६/४० से ४९/४३ तक, **पंचक प्रारम्भ** १३/४० (10/55 घं. मिं.)	१	१८	१९	३१	५	२७	१९	२५
३४:५८	७	शुक्र	२२	४५	शत	५४	५०	वैधृ	७	२३	बवं	२२	४५	१४	२०	4	२२	कुम्भ	बुध कृति. में ११/५०	१	१९	१६	५८	५	२७	१९	२६
३५:००	८	शनि	२८	२५	पूभा.	६०	००	विष्क	९	३५	कौ	२८	२५	१५	२१	5	२३	मी. ४४/५५		१	२०	१४	२६	५	२७	१९	२७
३५:००	९	रवि	३३	८	पूभा.	१	३०	प्रीति	११	१३	तै	०	४७	१६	२२	6	२४	मीन	बुध वृष में २८/४८, स. सि. योगः (प्रातः 6/03 से)	१	२१	११	५२	५	२७	१९	२७
३५:००	१०	चंद्र	३६	२५	उभा.	७	३	आयु	११	५३	व	४	४७	१७	२३	7	२५	मीन	भ. ४/४८ से ३६/२५ तक	१	२२	०९	१८	५	२७	१९	२७
३५:०३	११	मंग	३८	३	रेव	११	५	सौभा	११	१८	बव	७	१४	१८	२४	8	२६	मे. ११/०५	पंचक समाप्त ११/०५ (9/53 घं. मिं.), **अपरा एकादशी व्रत (B)**	१	२३	०६	४०	५	२७	१९	२८
३५:०४	१२	बुध	३७	५५	अश्वि	१३	२८	शोभ	९	२३	कौ	७	५९	१९	२५	9	२७	मेष	**शुक्र कर्क में** १५/४८ (11/46 घं.मिं.), गंडमूलादि (10/50 घं.मिं. तक)	१	२४	०४	०४	५	२७	१९	२८
४५:०५	१३	गुरु	३६	१०	भर	१४	८	अति	६	५	गर	७	३	२०	२६	10	२८	वृ. २९/०३	भ. ३६/१० से, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत	१	२५	०१	२८	५	२६	१९	२८
३५:०८	१४	शुक्र	३२	५३	कृति	१३	१३	सुक. धृति	१ ५५	३० ४५	वि	४	३२	२१	२७	11	२९	वृष	भ. ४/३३ तक, गुरु उ.भा. (2) में २७/५५	१	२५	५८	५१	५	२६	१९	२९
३५:०८	३०	शनि	२८	१८	रोहि	१०	५८	शूल	४९	५	चतु	०	३६	२२	२८	12	३०	मि. ३९/२५	**भावुका शनिवारी अमावस**, वट सावित्री व्रत (राज.), बुध रोहि. C	१	२६	५६	१४	५	२६	१९	२९

(A) शुक्र पुर्न. में ४७/४५, नैपच्यून वक्री ४७/१३ B सूर्य मृग में १३/५५, भद्रकाली एकादशी (पं.) स. सि. योगः C में ३३/१०, शुक्र पुष्य में ६/३, शनैश्चर जयंती, स. सि. योगः

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 5 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	४	०	११	२	५	८	२
२०	२१	४	२७	५	२४	३	१९	१९
१४	३	४९	४८	४९	५८	५०	२५	२५
३३	३२	२४	३७	८	३७	५५	१	१
57 26	719 52	31 1	88 2	8 16	70 51	0 35	3 11	3 11
रोहि ४	पूभा १	मघा २	कृति १	उभा १	पुन २	उफा ३	पूषा २	आर्द्रा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

२ सूर्य; ३ शुक्र के.; १ बुध; १२ गु.; ११ चं.; १० ; ९ रा.; ८ ; ७ ; ६ श.; ५ मं.; ४

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	४	१	११	३	५	८	२
२६	२०	८	९	६	३	३	१९	१९
५६	४९	२९	१	४४	१३	५७	२	२
२४	२८	१८	२०	००	६	८	४६	४६
57 21	844 57	31 57	106 42	7 15	70 21	1 18	3 11	3 11
मृग २	रोहि ४	मघा ३	कृति ४	उभा २	पुन ४	उफा ३	पूषा २	आर्द्रा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

२ सू. चं. बु.; ३ के.; १ ; १२ गु.; ११ ; १० ; ९ रा.; ८ ; ७ ; ६ श.; ५ मंगल; ४ शु.

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल—

ज्येष्ठ मास में संक्रान्ति, एकादशी, अमावस तथा शुक्ल पक्ष में श्री दुर्गाष्टमी, गंगा दशमी, निर्जला एकादशी एवं पूर्णिमा के दिन संकल्पपूर्वक जलापूरित पात्र का घड़ा (गड़वी), गेहूँ, चावल, सत्तू आदि अनाज, दूध, चीनी, वस्त्र, छाता, पँखा, आम-खरबूज़े आदि फल एवं अन्य ग्रीष्मोपयोगी वस्तुओं को दान करने का विशेष पुण्य होता है। **व्यापारिक रूख**—पक्षारम्भ (30 मई) से शनि कन्या राशि में मार्गी हो रहा है। जिससे सोना, चाँदी, ताँबा, तिल, तैल, सरसों, हींग, काली मिर्च, लाल मिर्च, खल-बिनौले आदि तथा शेयर बाज़ार में तेज़ी का रूझान रहेगा। 6 जून को बुध वृष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। शेयरों में मन्दी किंवा घटाबढ़ी रहेगी। गेहूँ, जौं, चना, चावल, रूई-कपास, तिल, तैल, घी आदि में तेज़ी होगी। 9 जून को **शुक्र कर्क** में आने से गुड़, चीनी, चना, अरहर, गेहूँ, धान्यादि में तेज़ी हो। सोना, चाँदी में भी तेज़ी होगी। 12 जून को **शनिवारी अमावस** होने से माल पंसारी जैसे—मैदा, सूजी, गर्म मसाले, उड़द, चावल, सोना, चाँदी में तेजी बने। **लोक भविष्य—भावुका अमावस** (12 जून) शनिवार को होने से कई स्थानों पर पेयजल, अनाज आदि की कमी होने से दुर्भिक्ष जैसी स्थिति बनेगी। आम लोगों में महँगाई, रोग, शोक एवं कष्टों की वृद्धि होगी। बहुत नजदीकी रिश्तेदार भी परस्पर बेरूखी एवं परायों जैसा व्यवहार करेंगे—**''दुर्भिक्षं रौरवं घोरं महादुखं महद् भयम्। पराङ्मुखाः पितुः पुत्रा व्यवसनं शनिवासरे॥''** ज्येष्ठ मास में पाँच शनिवार होने के कारण देश के कुछ प्रान्तों में उपद्रव, साम्प्रदायिक दंगे व हिंसक घटनाओं एवं युद्ध का भय होगा। आवश्यक वस्तुओं में अत्यधिक महँगाई के कारण लोग परेशान व दुखी होंगे। **शनिवारा यदा पँचजायते सततम्। महार्घं जायते धान्यं रोगशोकाकुला पृथिवी।**

वि. संवत् २०६७, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष — शाकः १९३२ — सन् 2010 ई. (ता. 13 जून से 26 जून तक)

सूर्य उत्तर-दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः मंगल-शुक्र पश्चिम कपाल में तथा शनि याम्योत्तरवृत्त में होगा। प्रातः गुरु याम्योत्तरवृत्त से पूर्व की ओर दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें रा. शा. ति.	मु. ति.	जून	प्रवि. ति.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५:१०	१	रवि	२२	४३	मृग	७	३८	गंड	४१	४०	बव	२२	४३	२३	२९	13	३१	मिथुन	चन्द्रदर्शन, मु. १५,	१	२७	५३	३५	५	२६	१९	३०
३५:१०	२	चंद्र	१६	२८	आर्द्रा पुन.	३ ५८	३० ५५	वृद्धि	३३	४८	कौ	१६	२८	२४	रज	14	३२	क. ४५/०५	रम्भा तृतीया व्रत, रज्जब (मुस्लिम) मास प्रारम्भ	१	२८	५०	५७	५	२६	१९	३०
३५:१०	३	मंग	९	४८	पुष्य	५४	८	ध्रुव	२५	३८	गर	९	४८	२५	२	15	आ	कर्क	भ. ३६/१३ से, सूर्य मिथुन में १२/१८, आषाढ़ संक्रान्ति, मु. ३०, A	१	२९	४८	१७	५	२६	१९	३०
३५:१०	४	बुध	३	००	श्ले.	४९	२५	व्या.	१७	२८	वि	३	००	२६	३	16	२	सिं. ४९/२५	भ. ३/०० तक, गण्डमूल विचार	२	००	४५	३६	५	२६	१९	३०
००:००	५	बुध	५६	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	पंचमी तिथि का क्षय oo oo	०	०	०	०	०	०	०	०
३५:१३	६	गुरु	४९	५८	मघा	४५	३	हर्ष	९	२५	कौ	२३	९	२७	४	17	३	सिंह	बुध पूर्व में अस्त २३/४५, गण्डमूल 23/27 घं.मिं. तक	२	०१	४२	५५	५	२६	१९	३१
३५:१३	७	शुक्र	४४	३	पूफा.	४१	८	वज्र सिद्धि	२ ५४	५ २३	गर	१७	१	२८	५	18	४	कं. ५५/१३	भ. ४४/०३ से प्रारम्भ	२	०२	४०	१३	५	२६	१९	३१
३५:१३	८	शनि	३८	५०	उफा.	३७	४८	व्य.	४७	३५	वि	११	२७	२९	६	19	५	कन्या	भ. ११/२८ तक, श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, बुध मृग में (B)	२	०३	३७	३७	५	२७	१९	३१
३५:१३	९	रवि	३४	२५	हस्त	३५	१८	वरी	४१	३०	बा	६	३८	३०	७	20	६	कन्या	मंगल पू.फा. में ५८/०३, स. सि. योग:	२	०४	३४	४९	५	२७	१९	३२
३५:१३	१०	चंद्र	३०	५०	चित्रा	३३	४०	परि	३६	८	तै	२	३८	३१	८	21	७	तु. ४/२३	भ. ५९/३३ से, श्रीगंगा दशहरा (हरिद्वार), सूर्य सायन कर्क में (C)	२	०५	३२	०४	५	२७	१९	३२
३५:१३	११	मंग	२८	१५	स्वा.	३३	००	शिव	३१	३३	वि	२८	१५	आ		22	८	तुला	भ. २८/१५ तक, निर्जला एकादशी व्रत, सूर्य आर्द्रा में ११/१५, (D)	२	०६	२९	१८	५	२७	१९	३२
३५:१२	१२	बुध	२६	३८	विशा	३३	२०	सिद्ध	२७	४८	बा	२६	३८	२	१०	23	९	वृ. १८/०८	प्रदोष व्रत, शुक्र आश्ले. में ३२/३५, चम्पक द्वादशी,	२	०७	२६	३२	५	२८	१९	३२
३५:११	१३	गुरु	२६	१३	अनु	३४	५०	साध्य	२४	५५	तै	२६	१३	३	११	24	१०	वृश्चिक	वट सावित्री व्रतारम्भ	२	०८	२३	४८	५	२८	१९	३२
३५:१०	१४	शुक्र	२६	५३	ज्ये.	३७	२५	शुभ	२३	००	व	२६	५३	४	१२	25	११	ध. ३७/२५	भ. २६/५३ से ५७/५३ तक, बुध आर्द्रा में ४४/५३ श्रीसत्यनारायण E	२	०९	२१	०१	५	२९	१९	३२
३५:१०	१५	शनि	२८	५०	मूल	४१	१३	शुक्ल	२२	००	बव	२८	५०	५	१३	26	१२	धनु	ज्येष्ठ पूर्णिमा, संत कबीर जयन्ती, खण्ड चन्द्रग्रहण (देखें पृष्ठ 13)(F)	२	१०	१८	१६	५	२९	१९	३३

खण्ड चंद्रग्रहण 26 जून

(A) पुण्यकाल सं. मध्याह्न तक, प्रताप जयन्ती (राज.) (B) २९/२०, मेला क्षीर भवानी (कश्मीर) (C) २८/४८, सायन दक्षिणायन व वर्षा ऋतु प्रारम्भ
(D) (9.57 घं. मिं.) बुध मिथुन में ४०/०३, शक आषाढ़ प्रारम्भ E व्रत, गंडमूलादि (F) वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 19 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	४	१	११	३	५	८	२
३	१	१२	२२	७	११	४	१८	१८
३७	१०	१५	२०	३१	२३	८	४०	४०
४०	००	२७	२	३६	५३	१७	३१	३१
57 16	842 10	32 47	123 8	6 11	69 46	1 59	3 11	3 11
मृग ४	उफा २	मघा ४	रोहि ४	उभा २	पुष्य ३	उफा ३	पूषा २	आर्द्रा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	४	२	११	३	५	८	२
१०	४	१६	७	८	१९	४	१८	१८
१८	४५	७	१३	११	३०	२४	१८	१८
१८	४५	९	००	२८	१३	११	१५	१५
57 12	747 55	33 31	131 9	5 2	69 4	2 40	3 10	3 10
आर्द्रा २	मूल २	पूफा १	आर्द्रा १	उभा २	श्ले १	उफा ३	पूषा २	आर्द्रा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष में विवाह, सन्तान व सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति के लिए रम्भा तृतीया (14 जून) का व्रत व गौरी पूजा की जाती है। आषाढ़ संक्रांति (15 जून) मंगलवार को 30 मुहूर्त्ति होगी। क्रूर वासरी होने के कारण महोदरी नामक यह संक्रान्ति चोरों एवं भ्रष्ट लोगों को लाभकारी तथा पुष्य नक्षत्र में प्रवेश होने से ध्वांक्षी नाम्नी यह संक्रांति वैश्यों को शुभ व लाभकारी होगी। ता. 21 जून को गङ्गा दशमी के दिन गङ्गा जी का पूजन चन्दन, पुष्प, अक्षत, धूप-दीप, नारियल, शक्कर आदि द्रव्यों सहित करके स्नान, दान व गङ्गायै नमः एवं गङ्गा स्तोत्र का पाठ करने से अनेक ज्ञात-अज्ञात पापों की शान्ति होती है। निर्जला एकादशी (22 जून) निराहार एवं निर्जल होकर व्रत रखकर भगवान् विष्णु पूजन करके जप/पाठ के बाद द्वादशी को यथाशक्ति अन्न, वस्त्रऽ फलों, जल-पात्र, पंखा आदि का दान करना कल्याप्रद होता है। जम्मू-कश्मीर में 19 जून अष्टमी को (अक्षत) भगवती की पूजा करके एवं खीर-पूरी का भोग लगाकर वन्दना की जाती है। अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति के लिए स्त्रियों की त्रयोदशी से प्रारम्भ करके प्रदोष व्यापिनी पूर्णिमा पर्यन्त (तीन दिन) वट वृक्ष एवं शिव पार्वती का पूजन व अर्चना करना शुभ होता है। व्यापारिक रूख—ज्येष्ठ पूर्णिमा के समय शनिवार एवं मूल नक्षत्र होने से रूई व कपास के भावों में घटा-बढ़ी रहेगी। सोना, चाँदी, ताँबा, चने, धान्य, चीनी, शक्कर, उड़द, छोटी इलायची, बारदाना, खल-बिनौले तेज भाव होंगे। शेयरों में भी तेजी का रूख बनेगा। आषाढ़ संक्रान्ति मंगलवार को होने से तिल, तैल, घी, वनस्पती घी, रसादि की वस्तुएँ तथा सर्व प्रकार के माल पंसारी तेज भाव होंगे—भौमस्यवारे यदि संक्रमश्चक रोति पृथ्व्यामसुखं महर्घता॥ सामान्य लोगों में परेशानियाँ व कष्ट की वृद्धि होगी। सं. राशिफल—मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर, कुम्भ व मीन राशि जातकों को इस राशि का फल लाभदायक रहेगा। शेष राशि-जातकों को अशुभ फली होगा।

आकाश लक्षण—इस पक्ष सूर्य आर्द्रा में प्रवेश के समय मंगलवार होने से उपयोगी वर्षा की कमी होगी तथा किसी लीडर की अपघात से आकस्मिक मृत्यु होने के योग हैं।

वि. संवत् २०६७, आषाढ़ कृष्ण पक्ष | शाक: १९३२ | तारीखें

सन् 2010 ई. (ता. 27 जून से 11 जुलाई तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु को याम्योत्तरवृत्त में देखें। सायं शनि याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर, मंगल-शुक्र पश्चिम कपाल में दिखाई देगा। 10 जुला. से बुध भी पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	आषा. कृ.	रज्जब मु.	जून	आषाढ़ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५:१०	१	रवि	३१	५५	पू.षा.	४६	१०	ब्रह्म	२१	५८	बा	०	२३	६	१४	27	१३	धनु	आषाढ़ कृष्ण पक्षारम्भ:	२	११	१५	२८	५	२९	१९	३३
३५:१०	२	चंद्र	३६	१०	उ.षा.	५२	१०	ऐंद्र	२२	४८	तै	४	३	७	१५	28	१४	म. २/३५		२	१२	१२	४०	५	२९	१९	३३
३५:१०	३	मंग	४१	१८	श्रव	५९	००	वैधृ	२४	२३	व	८	४४	८	१६	29	१५	मकर	भ. ८/४५ से ४१/१८ तक,	२	१३	०९	५१	५	२९	१९	३३
३५:०९	४	बुध	४७	५	धनि	६०	००	विष्क	२६	३०	बव	१४	१२	९	१७	30	१६	कुं. ३२/३५	पंचक प्रारम्भ ३२/३५, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/06 (जालं.)	२	१४	०७	०५	५	३०	१९	३३
३५:०८	५	गुरु	५३	१०	धनि	६	२०	प्रीति	२८	५८	कौ	२०	८	१०	१८	जुला	१७	कुम्भ	बुध पूर्न. में ५२/३८, जुलाई मास प्रारम्भ	२	१५	०४	१७	५	३०	१९	३३
३५:०७	६	शुक्र	५९	५	शत	१३	५०	आयु	३१	२५	गर	२६	८	११	१९	2	१८	कुम्भ	भ. ५९/०५ से प्रारम्भ:	२	१६	०१	३०	५	३०	१९	३३
३५:०५	७	शनि	६०	००	पू.भा.	२१	००	सौभा	३३	२८	वि	३१	३९	१२	२०	3	१९	मी. ४/३८	भ. ३१/४० तक,	२	१६	५८	४२	५	३१	१९	३३
३५:०४	७	रवि	४	१३	उ.भा.	२७	१८	शोभ	३४	४८	बव	४	१३	१३	२१	4	२०	मीन	सर्वार्थ सिद्ध योग:	२	१७	५५	५४	५	३२	१९	३३
३५:०३	८	चंद्र	८	१५	रेव	३२	२३	अति	३५	५	कौ	८	१५	१४	२२	5	२१	मे. ३२/२३	पंचक समाप्त ३२/२३, शुक्र मघा 1 सिंह में १०/३३, (A)	२	१८	५३	०९	५	३२	१९	३३
३५:०२	९	मंग	१०	४३	अश्वि	३५	५०	सुक	३४	३	गर	१०	४३	१५	२३	6	२२	मेष	भ. ४१/०३ से, सूर्य पुर्न. में १०/०५, बुध कर्क में ३९/५०, (B)	२	१९	५०	२४	५	३३	१९	३३
३५:००	१०	बुध	११	२३	भर	३७	३०	धृति	३१	३५	वि	११	२३	१६	२४	7	२३	वृ. ५२/३५	भ. ११/२३ तक,	२	२०	४७	३८	५	३३	१९	३३
३४:५६	११	गुरु	१०	८	कृति	३७	१५	शूल	२७	३३	बा	१०	८	१७	२५	8	२४	वृष	योगिनी एकादशी व्रत, बुध पुष्य में १९/३८	२	२१	४४	५१	५	३४	१९	३२
३४:५५	१२	शुक्र	७	५	रोहि	३५	१५	गंड	२२	८	तै	७	५	१८	२६	9	२५	वृष	प्रदोष व्रत	२	२२	४२	०५	५	३४	१९	३२
३४:५३	१३	शनि	२	२०	मृग	३१	४३	वृद्धि	१५	२०	व	२	२०	१९	२७	10	२६	मि. ३/४०	भ. २/२० से २९/१८ तक, बुध पश्चिम से उदय ६/४५, मास शिवरात्रि व्रत	२	२३	३९	१८	५	३५	१९	३२
००:००	१४	शनि	५६	१३	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४:५२	३०	रवि	४९	००	आर्द्रा	२६	५८	ध्रुव व्या	७ ५८	२८ ४५	चतु	२२	३७	२०	२८	11	२७	मिथुन	आषाढ़ी अमावस (स्नानदान, देव, पितृ कार्येषु)	२	२४	३६	३५	५	३५	१९	३२

(A) यूरेनस वक्री ४१/५५, गण्डमूल विचार (B) स. सि. योग:, गण्डमूलादि

चंद्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 5 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	४	२	११	३	५	८	२
१८	२३	२१	२६	८	२९	४	१७	१७
५३	१८	१२	३५	५०	४७	५१	४९	४९
४	४८	२५	१७	२२	५८	१८	३९	३९
57 13	745 37	34 24	123 32	3 27	68 4	3 27	3 11	3 11
आर्द्रा ४	रेव २	पूफा ३	पुन २	उभा २	श्ले. ४	उफा ३	पूषा २	आर्द्रा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

४ शु. | २ | ३ सू. बु. के. | ५ मं. | १ | ६ शनि | १२ चं. गु. | ७ | ९ रा. | ११ | ८ | १०

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	४	३	११	४	५	८	२
२४	१३	२४	८	९	६	५	१७	१७
३६	२४	४०	३०	८	३४	१३	३०	३०
२३	५७	१९	२६	२३	३२	१८	३४	३४
57 15	877 42	34 59	112 46	2 20	67 19	3 58	3 11	3 11
पुन २	आर्द्रा ३	पूफा ४	पुष्य २	उभा २	मघा २	उफा ३	पूषा २	आर्द्रा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

बुध ४ | २ | ३ सू. चं. के. | ५ मं. शु. | १ | ६ शनि | १२ गुरू | ७ | ९ रा. | ११ | ८ | १०

आषाढ़ कृष्ण पक्षफल—

आषाढ़ मास में भगवान् श्रीविष्णु जी की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुये स्नानोपरान्त नित्यप्रति श्री लक्ष्मी जी सहित विष्णु जी की पूजा एवं श्रीविष्णु सहस्रनाम के पाठोपरान्त ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति छाता, खड़ाऊँ, आँवला, आम, खरबूजे, घड़ा (पात्र), वस्त्र, मिष्ठान्न आदि का दान करना तथा स्वयं भी एक समय भोजन करने से विशेष पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। **स्वास्थ्य**—आषाढ़ मास में स्वयं को (विशेषकर सिर को) धूप व गर्मी से बचाना चाहिए। इस मास में सादा भोजन, मौसमी फलों एवं शीतल जल का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होता है। **व्यापारिक रूख**—अष्टमी (5 जुला.) को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रविष्ट होकर मंगल के साथ मेल करेगा, जिससे गेहूँ, चने, धान्य, लाल चन्दन, मजीठ, घृत, लाल, मिर्चें, खल-बिनौले, गुड़, सरसों व तोरिया। सोना, ताँबा एवं अन्य लाल वर्ण की वस्तुएँ तेज भाव होंगी। गाय, भैंस आदि चौपाय तथा पशुचारा में भी विशेष तेजी होगी। 11 जुलाई को रविवासरी अमावस्या होने से राजनेताओं के कारण सामान्य लोगों में दुःख-पीड़ा एवं परेशानियाँ बढ़ेगी। बेईमानी एवं अतिशय भ्रष्टाचार के कारण लोगों में भी कलरह-क्लेश, महँगाई व अशान्ति बढ़े। आषाढ़ मास में पाँच रविवार होने से देश में कहीं बिजली, पेयजल, खाद्यान्न की कमी, अनाज के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि, कहीं सत्ता परिवर्तन (छत्रभंग), राजनीतिक संकट एवं युद्ध आदि का भय हो—"यत्रमासे रविवारा जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभङ्गस्यात् दास्ते च महद्भयम्॥"

अकाश लक्षण—भारत के पूर्वोत्तरी क्षेत्रों में महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, असम, उ. प्रदेश आदि में व्यापक वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६७, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाक : १९३२ — सन् 2010 ई. (ता. 12 जुलाई से 26 जुलाई तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में दिखेगा। सायं बुध पश्चिम क्षितिज के पास, शुक्र उससे ऊपर होगा। मंगल-शनि पास-पास पश्चिम कपाल में होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	आषा. श.	रज्जब मु.	जुलाई	आषाढ़ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
३४:४८	१	चंद्र	४०	५८	पुन	२१	१३	हर्ष	४९	२८	किं	१४	५९	२१	२९	12	२८	क. ७/४३	आषाढ़ शुक्ल पक्षारम्भः, स. सि. योगः (14.05 बाद)	२	२५	३३	५०	५	३६	१९	३१
३४:४५	२	मंग	३२	३५	पुष्य	१५	००	वज्र	३१	५३	बा	६	४७	२२	३०	13	२९	कर्क	चन्द्रदर्शन, मु. १५, रथयात्रा उत्सव (श्रीजगन्नाथपुरी), स. सि. यो. A	२	२६	३१	०६	५	३७	१९	३१
३४:४५	३	बुध	२४	१३	श्ले.	८	४०	सिद्धि	३०	२३	गर	२४	१३	२३	श.	14	३०	सिं. ८/४०	भ. ५०/१३ से, मंगल उ.फा. में २४/२०, शव्वान (मुस्लिम) मास प्रारम्भ	२	२७	२८	२३	५	३७	१९	३१
३४:४०	४	गुरु	१६	१०	मघा पू.फा.	२ ५७	३३ ३	व्य.	२१	८	वि	१६	१०	२४	२	15	३१	सिंह	भ. १६/१० तक, बुध आश्ले. में २८/०८	२	२८	२५	३८	५	३८	१९	३०
३४:४०	५	शुक्र	८	५०	उ.फा.	५२	२८	वरी	१२	३३	बा	८	५०	२५	३	16	श्रा.	कं. १०/४८	सूर्य कर्क में ३८/५३, श्रावण संक्रान्ति, मु. ४५, पुण्यकाल सं. B	२	२९	२२	५३	५	३८	१९	३०
३४:३५	६	शनि	२	२३	हस्त	४८	५८	परि शिव	४ ५७	४३ ५३	तै	२	२३	२६	४	17	२	कन्या	भ. ५७/१० से, विवस्वत सप्तमी, शुक्र पू.फा. में ३/०३	३	००	२०	१०	५	३९	१९	२९
००:००	७	शनि	५७	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४:३५	८	रवि	५३	२०	चित्रा	४६	५०	सिद्ध	५२	१०	वि	२५	१५	२७	५	18	३	तु. १७/४३	भ. २५/१५ तक, श्रीदुर्गाष्टमी	३	०१	१७	२५	५	३९	१९	२९
३४:३३	९	चंद्र	५०	५०	स्वा.	४६	५	साध्य	४७	३५	बा	२२	५	२८	६	19	४	तुला	भढली नवमी, मेला शरीक भवानी (काश्मीर)	३	०२	१४	४२	५	४०	१९	२९
३४:३०	१०	मंग	४९	५३	विशा	४६	५०	शुभ	४४	१३	तै	२०	२२	२९	७	20	५	वृ. ३१/३०	सूर्य पुष्य में ८/२५, मंगल कन्या में २/१३	३	०३	११	५९	५	४०	१९	२८
३४:२८	११	बुध	५०	१५	अनु	४८	५५	शुक्ल	४१	५५	व	२०	४	३०	८	21	६	वृश्चिक	भ. २०/०३ से ५०/१५ तक, देवशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य C	३	०४	०९	१५	५	४१	१९	२८
३४:२७	१२	गुरु	५२	००	ज्ये.	५२	१८	ब्रह्म	४०	४३	बव	२१	८	३१	९	22	७	ध. ५२/१८	सूर्य सायन सिंह में ५५/२५	३	०५	०६	३३	५	४१	१९	२८
३४:२३	१३	शुक्र	५४	५०	मूल	५६	४८	ऐंद्र	४०	२३	कौ	२३	२५	श्रा	१०	23	८	धनु	प्रदोष व्रत, बुध मघा 1 सिंह में ४१/०८, गुरु वक्री २९/३८, D	३	०६	०३	५१	५	४२	१९	२७
३४:२०	१४	शनि	५८	४५	पू.षा.	६०	००	वैधृ	४०	५३	गर	२६	४८	२	११	24	९	धनु	भ. ५८/४५ से प्रारम्भ,	३	०७	०१	०८	५	४२	१९	२६
३४:१५	१५	रवि	६०	००	पू.षा.	२	१५	विष्क	४२	५	वि	३१	८	३	१२	25	१०	म. १८/४५	भ. ३१/०८ तक, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, E	३	०७	५८	२७	५	४३	१९	२५
३४:१३	१५	चंद्र	३	३०	उ.षा.	८	३५	प्रीति	४३	५०	बव	३	३०	४	१३	26	११	मकर	आषाढ़ पूर्णिमा, स्नानदानादि, राहु पू.षा. (1) केतु आर्द्रा (3) में F	३	०८	५५	४५	५	४३	१९	२४

A 11/37 बाद B मध्याह्न बाद, स्कन्द षष्ठी, कुमार षष्ठी C व्रतादि नियम प्रारम्भ, D शक श्रावण प्रारम्भ (E) श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, वायु परीक्षा F ५३/१५,

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	४	३	११	४	५	८	२
१	२५	२८	२०	९	१४	५	१७	१७
१७	४९	४७	५९	२०	२२	४२	८	८
६	३	७	४६	३७	३८	४३	१८	१८
57 15	825 20	35 36	99 24	0 58	66 15	4 31	3 11	3 11
पुन. ४	चित्रा १	उ.फा. १	श्ले. २	उ.भा. २	पू.फा. १	उ.फा. ३	पू.षा. २	आर्द्रा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

४ सू. बु. | ५ मं. शु. | ३ के. | २ | १ | १२ गु. | ११ | १० | ९ रा. | ८ | ७ | ६ श. चं.

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	५	४	११	४	५	८	२
८	८	३	३	९	२३	६	१६	१६
५५	१०	३४	२१	२२	७	२०	४२	४२
१४	५४	१७	११	५५	३२	५१	५१	५१
57 18	718 6	36 15	83 56	0 35	64 44	5 5	3 10	3 10
पुष्य २	उ.षा. ४	उ.फा. ३	मघा २	उ.भा. २	पू.फा. ३	उ.फा. ३	पू.षा. २	आर्द्रा ४
०	मा	मा	मा	न	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

४ सूर्य | ५ बु. शु. | ३ के. | २ | १ | १२ गु. | ११ | १० चन्द्र | ९ रा. | ८ | ७ | ६ मं. श.

आषाढ़ शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की द्वितीया तिथि (13 जुलाई) मंगलवार को भगवान् श्रीजगन्नाथ की रथ यात्रा का भव्य उत्सव पुरी (उड़ीसा) तथा देश के अन्य नगरों में बड़े उत्साह एवं श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। देवशयनी एकादशी (21 जुलाई) से लेकर कार्तिक शुक्ल एकादशी पर्यन्त धर्मपरायण तपस्वी लोग चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करेंगे। गुरु पूर्णिमा (25 जुलाई) को भगवान् विष्णु एवं ऋषि वेदव्यास की पूजार्चना करके अपने इष्ट गुरु के प्रति आस्था रखते हुए यथाशक्ति धन, मन, तनादि द्वारा सेवा करनी चाहिए। ध्यान रहे, 26 जुलाई को पूर्णिमा मात्र 3 घड़ी, 30 पल अर्थात् 6 घड़ी या 3 मुहूर्त से कम होने से गुरू पूर्णिमा व व्यास पूजा का पर्व 25 जुला. रविवार को मान्य एवं प्रशस्त होगा। (देखें पृष्ठ 81 पर व्रत-पर्व का शास्त्रीय निर्णय) **श्रावण संक्रान्ति**—श्रा. शु. पंचमी तिथि 16 जुलाई शुक्रवार 45 मुहूर्त्ति प्रदोष व्यापिनी उत्तरा फाल्गुनी ध्रुव संज्ञक नक्षत्र होने से द्विजों (ब्राह्मणों) की लाभ एवं सुख देने वाली होगी। **सं. राशिफल**—यह संक्रान्ति मेष, वृष, सिंह, कन्या, वृश्चिक व मीन राशि वालों को शुभ एवं लाभ देने वाली होगी। पुण्यकाल मध्याह्न काल से प्रारम्भ होगा। **व्यापारिक रूख**—ता. 20 जुलाई को मंगल कन्या राशि में जाने से गेहूँ, गुड़, शक्कर, रूई-कपास, अलसी, पटसन, लाल मिर्च, सोना, ताँबा आदि लाल वर्ण की वस्तुएँ तेज भाव होंगी। चाँदी में साधारण तेजी आएगी। **लोक भविष्य**—ता. 23 को गुरू मीन में वक्री होने से नेता लोग तथा भ्रष्ट एवं चोर प्रवृत्ति के लोगों द्वारा जनता के धन का दुरुपयोग होगा। लवण, घी, तैल, चीनी, रूई-गुड़ आदि उपभोग्य वस्तुओं में भविष्य में विशेष तेजी होवे। इनका पहले से स्टाक करने वाला कपास, व्यापारी विशेष रूप से लाभान्वित होंगे। "मीन राशि गतो जीवो वक्रतामुपयातिचेत्। धनक्षयस्तदालोकेचौरात् राजाऽपिरोषितः ॥" **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, हरियाणा आदि में रुक-रुक कर व्यापक वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६७, श्रावण कृष्ण पक्ष, शाक: १९३२ — सन् 2010 ई. (ता. 27 जुलाई से 10 अगस्त तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु: — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रात: गुरु पश्चिम कपाल में दिखाई देगा। सायं बुध पश्चिम क्षितिज के पास तथा मंगल-शुक्र-शनि पश्चिमी क्षितिज के ऊपर आस-पास दिखाई देंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	श्राव. रा.	शाबा. मु.	जुलाई	श्रावण प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४:१०	१	मंग	८	५३	श्रव	१५	२८	आयु	४६	००	कौ	८	५३	५	१४	27	१२	कुं. ४९/०८	पंचक प्रारम्भ ४९/०८, अशून्यशयन व्रत	३	०९	५३	०५	५	४४	१९	२४
३४:०५	२	बुध	१४	४५	धनि	२२	४८	सौभा	४८	२३	गर	१४	४५	६	१५	28	१३	कुम्भ	भ. ४७/४८ से प्रारम्भ,	३	१०	५०	२७	५	४५	१९	२३
३४:०३	३	गुरु	२०	४८	शत	३०	१८	शोभ	५०	५०	वि	२०	४८	७	१६	29	१४	कुम्भ	भ. २०/४८ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21/06 (जालं.)(A)	३	११	४७	४८	५	४६	१९	२३
३४:००	४	शुक्र	२६	५०	पू.भा.	३७	४०	अति	५३	८	बा	२६	५०	८	१७	30	१५	मी. २०/५३		३	१२	४५	०९	५	४६	१९	२२
३३:५५	५	शनि	३२	२०	उ.भा.	४४	३३	सुक	५४	५५	तै	३२	२०	९	१८	31	१६	मीन	नाग पंचमी (राज. व बंगाल)	३	१३	४२	३२	५	४७	१९	२१
३३:५३	६	रवि	३७	५	रेव	५०	३५	धृति	५६	००	गर	४	४३	१०	१९	अग	१७	मे. ५०/३५	भ. ३७/०५ से, शुक्र कन्या में २५/०३, पंचक समाप्त ५०/३५, B	३	१४	३९	५५	५	४७	१९	२०
३३:५०	७	चंद्र	४०	३३	अश्वि	५५	१८	शूल	५६	००	वि	८	४९	११	२०	2	१८	मेष	भ. ८/४८ तक, बुध पू.फा. में ४७/२०	३	१५	३७	२१	५	४८	१९	१९
३३:४५	८	मंग	४२	२५	भर	५८	२३	गंड	५४	४३	बा	११	२९	१२	२१	3	१९	मेष	सूर्य आश्ले. में ५/२८, श्रीदुर्गाष्टमी	३	१६	३४	४८	५	४९	१९	१९
३३:४३	९	बुध	४२	३०	कृत्ति	५९	४३	वृद्धि	५२	००	तै	१२	२८	१३	२२	4	२०	वृ. १३/५३	सर्वार्थ सिद्ध योग: प्रात: 5.10 बाद	३	१७	३२	१४	५	४९	१९	१८
३३:४०	१०	गुरु	४०	३८	रोहि	५९	५	ध्रुव	४७	४३	व	११	३४	१४	२३	5	२१	वृष	भ. ११/३३ से ४०/३८ तक, मंगल हस्त में ३०/४०	३	१८	२९	४४	५	५०	१९	१८
३३:३८	११	शुक्र	३६	५३	मृग	५६	३८	व्या.	४१	५३	बव	८	४६	१५	२४	6	२२	मि. २८/०५	कामिका एकादशी व्रत सर्वेषाम्	३	१९	२७	१३	५	५०	१९	१७
३३:३३	१२	शनि	३१	१८	आर्द्रा	५२	२५	हर्ष	३४	३५	कौ	४	६	१६	२५	7	२३	मिथुन	शनि प्रदोष व्रत	३	२०	२४	४६	५	५१	१९	१६
३३:२८	१३	रवि	२४	१३	पुर्न	४६	५०	वज्र	२६	५	व	२४	१३	१७	२६	8	२४	क. ३३/२०	भ. २४/१३ से ५०/०५ तक, मास शिवरात्रि व्रत	३	२१	२२	१९	५	५२	१९	१५
३३:२५	१४	चंद्र	१५	५८	पुष्य	४०	१३	सिद्धि	१६	३५	श	१५	५८	१८	२७	9	२५	कर्क	अमावस (पितृकार्येषु), सोमवती अमावस 12/15 बाद	३	२२	१९	५१	५	५२	१९	१४
३३:२०	३०	मंग	६	५३	श्ले.	३२	५८	व्य. / वरी	६ / ५५	२३ / ५३	ना	६	५३	१९	२८	10	२६	सिं. ३२/५८	हरियाली अमावस, स्नानदानादि, स. सि. योग:	३	२३	१७	२७	५	५३	१९	१३

A शुक्र उ.फा. में १७/००, शनि उ.फा. (४) में ४०/५३ B तिलक पुण्यतिथि, अगस्त मास प्रारम्भ

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 3 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	५	४	११	५	५	८	२
१६	१४	८	१३	९	१	७	१६	१६
३४	९	२६	३३	१२	३९	३	१७	१७
३	५७	३६	३७	४२	२४	२२	२५	२५
57 26	760 49	36 34	66 21	2 10	62 56	5 36	3 10	3 10
पुष्य ४	भर १	उफा ४	पूफा १	उभा २	उफा २	उफा ४	पूषा १	आर्द्रा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

स्थान	ग्रह
४	सूर्य
५	बु.
३	के.
२	
१	चंद्र
१२	गु.
११	
१०	
९	रा.
८	
७	
६	मं. श. शु.

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 10 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	५	४	११	५	५	८	२
२३	२१	१२	२०	८	८	७	१५	१५
१६	२५	४६	२१	५३	५४	४३	५५	५५
३१	१४	३६	३	३४	२९	४७	१०	१०
57 35	911 47	37 28	46 8	3 30	61 2	6 0	3 11	3 11
श्ले २	श्ले २	हस्त १	पूफा ३	उभा २	उफा ४	उफा ४	पूषा १	आर्द्रा २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रात: 5.30

स्थान	ग्रह
४	सू. चं.
५	बुध
३	के.
२	
१	
१२	गु.
११	
१०	
९	रा.
८	
७	
६	मं. शु. श.

श्रावण कृष्ण पक्षफल—

श्रावण मास में प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार का व्रतादि धारण करके भगवान् श्री शिव का पूजन एवं पार्थिव शिवपूजा करने का विशेष माहात्म्य होता है। प्रतिदिन अथवा प्रत्येक सोमवार को बिल्व, दूध, गंगाजल, पंचामृत सहित शिवलिङ्ग की षोडशोपचार पूजन, व्रत, "ॐ नमः शिवाय:" मंत्र का जप, श्रावण माहात्म्य और श्रीशिवमहापुराण का श्रवण एवं पठन करने से पुण्यफलों की प्राप्ति होती है। श्रावण के प्रत्येक मंगलवार को श्रीमङ्गलागौरी का व्रत, पूजनादि विधिपूर्वक करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान, सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति होती है। कामिका एकादशी (6 अग.) को उपवास रखकर भगवान् श्री कृष्ण का तुलसीदल व मंजरी सहित पूजन करके घी का दीपक जलाना चाहिए। ता. 9 अग. को दुपै. 12/15 के बाद श्रीगङ्गा आदि तीर्थों पर स्नान-दान, जप एवं पितृ-तर्पण का विशेष महत्त्व रहेगा। ता. 10 अग. को हरियालो अमावस मंगलवार को होने से इस दिन भी गङ्गा आदि तीर्थ पर स्नान जप, दान आदि करने से (शास्त्रमतानुसार) एक हज़ार गोदान का फल मिलता है। परन्तु राजनीतिक पक्ष से मंगलवारी अमावस का फल शुभ नहीं माना गया। "राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्। उपघातोऽल्प वृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे॥" अर्थात् देश के किन्हीं राजनेताओं में विग्रह एवं टकराव हों, अपदस्थ कहीं छत्रभङ्ग (सत्ता परिवर्तन), उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ घटित हों। अल्पवृष्टि एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में तेजी हो। श्रावण मास में ही पाँच मंगलवारों का समावेश होना भी सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के लिए शुभ नहीं। देश में कहीं युद्ध भय, हिंसक घटनाओं की संभावना, राज्य परिवर्तन व साम्प्रदायिक घटनाओं का भय। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं—**यत्रमासे महीसूने जायन्ते पंचवासरा:। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥** **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्रों यथा पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा आदि में खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६७, श्रावण शुक्ल पक्ष, शाक : १९३२ — सन् 2010 ई. (ता. अगस्त से 24 अगस्त तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा–शरद् ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—सायं बुध पश्चिम क्षितिज के पास, उससे ऊपर शनि तथा इनसे कुछ ऊपर मंगल–शुक्र पास–पास दिखाई देंगे। प्रातः गुरु पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	शाके श्राव.	सौर	अगस्त	श्रावण प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
००:००	१	मंग	५७	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	10	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३३:१५	२	बुध	४८	००	मघा	२५	३०	परि	४५	२३	बा	२२	४२	२०	२९	11	२७	सिंह	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र हस्त में ३/२८, मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रा.	३	२४	१५	०४	५	५४	१९	१२
३३:१२	३	गुरु	३९	३	पू.फा.	१८	२३	शिव	३५	१८	तै	१३	३२	२१	रम	12	२८	कं. ३१/४३	मधुस्रवा, हरियाली—**सिंघारा तीज**, रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	३	२५	१२	३९	५	५४	१९	११
३३:०७	४	शुक्र	३१	००	उ.फा.	११	५८	सिद्ध	२५	५३	व	५	२	२२	२	13	२९	कन्या	भ. ५/०३ से ३१/०० तक, **दूर्वा गणपति व्रत**, वरद् चतुर्थी	३	२६	१०	१६	५	५५	१९	१०
३३:०२	५	शनि	२४	१३	हस्त	६	४३	साध्य	१७	३०	बा	२४	१३	२३	३	14	३०	तु. ३४/३८	**नाग-पंचमी**, श्रीकल्कि जयन्ती	३	२७	०७	५४	५	५५	१९	८
३२:५७	६	रवि	१८	५८	चित्रा	२	५५	शुभ	१०	२३	तै	१८	५८	२४	४	15	३१	तुला	**भारत स्वतन्त्रता दिवस** (६४ वाँ)	३	२८	०५	३५	५	५६	१९	७
३२:५२	७	चंद्र	१५	२८	स्वा.	०	५०	शुक्ल	४	४०	व	१५	२८	२५	५	16	भा.	वृ. ४५/३३	भ. १५/२८ से ४४/४३ तक, **सूर्य मघा 1 सिंह में ५९/०३, भाद्रपद A**	३	२९	०३	१७	५	५७	१९	६
३२:५०	८	मंग	१३	५५	विशा	०	४०	वृद्धि ध्रुव	० ५७	३३ ५३	बव	१३	५५	२६	६	17	२	वृश्चिक	**श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी**–चामुण्डादेवी–कांगड़ा, नैना देवी, मनसा देवी	४	००	००	५७	५	५७	१९	५
३२:४५	९	बुध	१४	१३	अनु	२	१५	वैधृ	५६	३३	कौ	१४	१३	२७	७	18	३	वृश्चिक	गण्डमूल 6/52 घं. मिं. से, स. सि. योगः	४	००	५८	४२	५	५८	१९	४
३२:४३	१०	गुरु	१६	१३	ज्ये.	५	३५	विष्क	५६	२८	गर	१६	१३	२८	८	19	४	ध. ५/३५	भ. ४७/५५ से, गण्डमूल विचार	४	०१	५६	२४	५	५८	१९	३
३२:३७	११	शुक्र	१९	३५	मूल	१०	२०	प्रीति	५७	१८	वि	१९	३५	२९	९	20	५	धनु	भ. १९/३५ तक, **पवित्रा एकादशी व्रत, बुध वक्री ४८/४३**	४	०२	५४	०९	५	५९	१९	२
३२:३५	१२	शनि	२४	१०	पू.षा.	१६	१५	आयु	५८	५०	बा	२४	१०	३०	१०	21	६	म. ३२/५३	**शनि प्रदोष व्रत,**	४	०३	५१	५४	५	५९	१९	१
३२:३३	१३	रवि	२९	३०	उ.षा.	२२	५८	सौभा	६०	००	तै	२९	३०	३१	११	22	७	मकर	सर्वार्थ सिद्ध योगः	४	०४	४९	४१	६	००	१९	१
३२:२८	१४	चंद्र	३५	१८	श्रव	३०	८	सौभा	०	५०	गर	२	२४	भा.	१२	23	८	मकर	भ. ३५/१८ से, ऋग्वेदि उपाकर्म, सूर्य सायन कन्या में १२/२०, **(B)**	४	०५	४७	३१	६	१	१९	००
३२:२३	१५	मंग	४१	२३	धनि	३७	३३	शोभ	३	५	वि	८	२१	२	१३	24	९	कुं. ३/४८	भ. ८/२० तक, **श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबन्धन** (भद्रा बाद) **C**	४	०६	४५	२१	६	२	१८	५९

A संक्रान्ति मु. ४५, पुण्यकाल सं. अगले दिन मध्याह्न तक, गो. तुलसीदास जयन्ती **B** शक भाद्रपद प्रारम्भ, शरद् ऋतुः प्रारम्भ, स. सि. यो.
C (देखें पृष्ठ 81), पंचक शुरू ३/४८, शुक्र चित्रा में ४६/५८, श्रावणी उपाकर्म, गायत्री जयन्ती, श्री अमरनाथ गुफा दर्शन

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 17 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	७	५	४	११	५	५	८	२
२९	२	१७	२४	८	१५	८	१५	१५
५९	५६	१०	२३	२५	५४	२६	३२	३२
५२	४९	२७	५३	२१	५२	५३	५५	५५
57 42	779 31	38 00	17 26	4 43	58 38	6 21	3 11	3 11
श्ले. ४	विशा ४	हस्त ३	पूफा ४	उभा २	हस्त २	उफा ४	पूषा 1	आर्द्रा 3
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 — ४ सू.; ५ बुध; ३ के.; २; ६ मं. शु. श.; ७; १; ८ चं.; १०; १२ गु.; ९ रा.; ११

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	५	४	११	५	५	८	२
६	२८	२१	२४	७	२२	९	१५	१५
४४	५९	३७	३४	४८	३६	१२	१०	१०
४	२२	५४	११	५४	२९	१६	३९	३९
57 50	711 9	38 30	21 15	5 49	55 34	6 39	3 10	3 10
मघा ३	धनि २	हस्त ४	पूफा ४	उभा २	हस्त ४	उफा ४	पूषा 1	आर्द्रा 3
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 — ५ सू. बु.; ६ मं. शु. श.; ४; ३ के.; ७; ८; २; ९ रा.; ११; १; १० चंद्र; १२ गुरु

श्रावण शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष के प्रारंभ में प्रतिपदा का क्षय एवं अमा. युक्त होने से द्वितीया तिथि (11 अग.) से ही माता छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) का पावन मेला प्रारम्भ होगा। 12 अग. को सिंघारा तीज के दिन सुहागिन स्त्रियाँ झूले झूलती हुई श्रावण के मल्हार गीत गाती हैं। 14 अग. नाग पंचमी के दिन अपनी गृह द्वार की दहलीज के दोनों ओर गोबर से सर्पाकृति बनाकर सर्पराज की दूध, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्पाक्षत, लड्डूओं सहित पूजा करके नागस्तोत्र या "ॐ कुरूकुल्ये हुँ फट् स्वाहा" मन्त्र की 3 माला पाठ करने से गृह में विषधारी सर्पों का भय नहीं होता। ता. 16 अग. सोमवार को विशाखा नक्षत्र में भाद्रपद संक्रान्ति प्रवेश होने से 45 मुहूर्त्ति ध्वांक्षी नामक यह संक्रांति वैश्यों को लाभ एवं सुख देने वाली होगी। ता. 17 अग. को माता चिन्तपूर्णी (छिन्नमस्तिका) के दरबार में भव्य मेले एवं उत्सव का आयोजन होता है। ता. 24 अग. श्रावण पूर्णिमा मंगलवार को भाई-बहिन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक रक्षाबन्धन सर्वत्र भारत में मनाया जाता है। इसी दिन श्री अमरनाथ तीर्थ पर पवित्र गुफा में भगवान् शिवलिङ्ग के दिव्य दर्शन करके शिवभक्त कृतार्थ होते हैं। रक्षा बन्धन (विशेष) 24 अग. मंगलवार को भद्रा प्रातः 9/22 तक ही विद्यमान है, अतएव प्रातः 9/22 के पश्चात् रक्षाबन्धन कार्य सम्पादन करना शुभ रहेगा। ध्यान रहे। रक्षाबन्धन में पंचकों के शुभाशुभ विचार नहीं किया जाता।

आकाश लक्षण—भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं।

शकुन—भाद्र. संक्रान्ति को बुन्दा-बांदी हो खाण्ड व गेहूँ-धान्यादि का स्टाक करने से दो मास बाद विशेष लाभ हो।

वि. संवत् २०६७, भाद्रपद कृष्ण पक्ष | शाक: १९३२ | सन् 2010 ई. (ता. 25 अगस्त से 8 सितम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु: — भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—सायं बुध पश्चिम क्षितिज में होगा। 28 अग. से पश्चि. में ही लुप्त हो जाएगा। शनि पश्चिम कपाल में होगा। इससे काफी ऊपर मंगल तथा उससे ऊपर शुक्र होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	भाद्र. शक	रमज़ान मु.	अगस्त	भाद्रपद प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३२:१८	१	बुध	४७	२८	शत	४५	३	अति	५	३३	बा	१४	२६	३	१४	25	१०	कुम्भ	गायत्री जपम्	४	०७	४३	११	६	२	१८	५७
३२:१३	२	गुरु	५३	२३	पू.भा.	५२	१८	सुक	७	५३	तै	२०	२६	४	१५	26	११	मी. ३५/३०	मंगल चित्रा में ३७/२८,	४	०८	४१	०५	६	३	१८	५६
३२:०८	३	शुक्र	५८	५०	उ.भा.	५९	१३	धृति	१०	००	व	२६	७	५	१६	27	१२	मीन	भ. २६/०५ से ५८/५० तक, कज्जली तीज, वक्री बुध पश्चिम A	४	०९	३९	००	६	४	१८	५५
३२:०५	४	शनि	६०	००	रेव	६०	००	शूल	११	५०	बव	३१	१७	६	१७	28	१३	मीन	श्रीगणेश संकष्ट (बहुला) चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20/34 (जालंधर)	४	१०	३६	५५	६	४	१८	५४
३२:००	४	रवि	३	४३	रेव	५	३०	गंड	१३	८	बा	३	४३	७	१८	29	१४	मे. ५/३०	पंचक समाप्त ५/३० (8/17 घं.मिं.), वक्री गुरु पू.भा. (4) में १९/५५	४	११	३४	५३	६	५	१८	५३
३१:५५	५	चंद्र	७	४३	अश्वि	१०	५८	वृद्धि	१३	४३	तै	७	४३	८	१९	30	१५	मेष	सूर्य पू.फा. में ४८/५०, चन्दन षष्ठी, चन्द्रोदय 21/43, हल षष्ठी	४	१२	३२	५१	६	५	१८	५१
३१:५०	६	मंग	१०	३०	भर	१५	१३	ध्रुव	१३	१८	व	१०	३०	९	२०	31	१६	वृ. ३१/३	भ. १०/३० से ४१/१० तक, शनि हस्त (१) में २/००, शीतला सप्तमी,	४	१३	३०	५३	६	६	१८	५०
३१:४३	७	बुध	११	४८	कृति	१८	००	व्या.	११	४५	बव	११	४८	१०	२१	सितं	१७	वृष	श्रीकृष्णा जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त) चन्द्रोदय 23/12, शुक्र तुला में B	४	१४	२८	५७	६	७	१८	४८
३१:३८	८	गुरु	११	२५	रोहि	११	८	हर्ष	८	५३	कौ	११	२५	११	२२	2	१८	मि. ४९/०३	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव), चन्द्रोदय 24/08 (जालं.), गोकुलाष्टमी, दूर्वाष्टमी व्रत	४	१५	२७	०२	६	८	१८	४७
३१:३३	९	शुक्र	९	१५	मृग	१८	२८	वज्र सिद्धि	४ / ५८	३३ / ४५	गर	९	१५	१२	२३	3	१९	मिथुन	भ. ३७/१५ से, गुग्गा नवमी	४	१६	२५	११	६	९	१८	४६
३१:२८	१०	शनि	५	१३	आर्द्रा	१६	००	व्य.	५१	३३	वि	५	१३	१३	२४	4	२०	क. ५८/००	भ. ५/१३ तक, अजा एकादशी व्रत स्मा., वक्री गुरु उ.भा. (1) में C	४	१७	२३	१८	६	९	१८	४४
००:००	११	शनि	५९	२८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३१:२५	१२	रवि	५२	८	पुन	११	४८	वरी	४३	००	कौ	२५	४८	१४	२५	5	२१	कर्क	अजा एकादशी व्रत वैष्णव, मंगल तुला में ५२/१३, वत्स द्वादशी D	४	१८	२१	३०	६	१०	१८	४४
३१:२३	१३	चंद्र	४३	३८	पुष्य श्ले.	६ / ५९	८ / २३	परि	३३	२५	गर	१७	५३	१५	२६	6	२२	सिं. ५९/२३	भ. ४३/३८ से, प्रदोष व्रत, गण्डमूल 8/37 बाद कैलाश यात्रा प्रारम्भ, E	४	१९	१९	४४	६	१०	१८	४३
३१:१५	१४	मंग	३४	१५	मघा	५१	५३	शिव	२३	००	वि	८	५७	१६	२७	7	२३	सिंह	भ. ८/५५ तक, वक्री बुध मघा (4) में ४०/२८, गण्डमूल विचार	४	२०	१७	५७	६	११	१८	४१
३१:१५	३०	बुध	२४	३०	पू.फा.	४४	८	सिद्ध	१२	१३	ना	२४	३०	१७	२८	8	२४	कं. ५७/१३	कुशाग्रहणी पिठौरी अमावस, 'ॐ हूँ फट् स्वाहा' इह मंत्रेण F	४	२१	१६	१४	६	१२	१८	४०

A में अस्त 29/16 B १४/४८, (देखें पृष्ठ 81-82) शीतला सप्तमी, स. सि. योग: C ३८/१३, अगत्य उदय D रवि पुष्य योग-10/53 बाद E अघोरा चतुर्दशी F कुशोत्पाटनम्, शक्ति पूजा

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 2 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	५	४	११	६	५	८	२
१५	१८	२७	१८	६	०	१०	१४	१४
२५	४६	२६	२१	५१	३७	१३	४२	४२
३१	४२	५८	२३	४१	११	२६	३	३
58 6	800 5	39 9	57 21	6 59	50 26	6 58	3 11	3 11
पूफा १	रोहि ३	चित्रा २	पूफा २	उभा २	चित्रा ३	हस्त १	पूषा १	आर्द्रा ३
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

मं. श. ६ | ५ सू. बु. | ४ | ३ के. | ७ शु. | ८ | २ चंद्र | ९ रा. | ११ | १ | १० | १२ गुरू

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 8 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	६	४	११	६	५	८	२
२१	१४	१	१३	६	५	१०	१४	१४
१४	५८	२२	७	८	२९	५५	२२	२२
३३	२७	५९	१३	२२	७	४०	५८	५८
58 17	917 45	39 36	36 58	7 32	45 58	7 8	3 11	3 11
पूफा ३	पूफा १	चित्रा ३	मघा ४	उभा १	चित्रा ४	हस्त १	पूषा १	आर्द्रा ३
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5.30

शनि ६ | ५ सू. बु. चं. | ४ | ३ के. | ७ मं. शु. | ८ | २ | ९ रा. | ११ | १ | १० | १२ गुरू

भाद्रपद कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष में श्रीगणेश बहुला चतुर्थी (28 अग.) तथा चन्दन षष्ठी (30 अग.) का व्रत विधिपूर्वक रखकर रात्रि में उदित चन्द्रमा को अर्घ्य देने से कष्टों की निवृत्ति तथा गृहस्थ सुख, सौभाग्य-सन्तति, धन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। **श्री कृष्ण जन्माष्टमी** का व्रत सप्तमी विद्धा अष्टमी स्मार्त्तानुसार अर्द्धरात्रि, रोहिणी नक्षत्र युक्त एवं वृष के चन्द्रमा का योग (1 सितम्बर बुधवार) के दिन प्रशस्त होगा। जबकि 2 सितम्बर, गुरुवार को अष्टमी व रोहिणी का योग प्रात: 10/42 तक रहेगा। वैष्णव मतानुसार श्री कृष्ण जन्माष्टमी इसी दिन ग्राह्य होगी। (देखें पृष्ठ 81-82) **गोकुलाष्टमी** पर्व भी इसी दिन होगा। **गुग्गा नवमी** (3 सितं.) को शिवपूजन एवं नाग पूजा करने की परम्परा है। **पिठौरी अमावस** (8 सितं.) के दिन देव, ऋषि एवं पितृ तर्पणादि कार्यों हेतु सायंकाल को मंत्रपूर्वक कुशोत्पाटन कार्य करना चाहिए तथा शुभ कार्यों के लिए कुशा संग्रह कर लेना चाहिए। **व्यापारिक रूख**—पक्षारम्भ में तृतीया को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से रूई, कपास व पटसन में घटा-बढ़ी रहे, परन्तु सोना व चान्दी में तेजी होगी। षष्ठी तिथि (31 अग.) को शनि हस्त नक्षत्र में आने से गेहूँ, धान्य, चावल, चने आदि सर्व प्रकार के अनाज तेज भाव होंगे। उड़द, तैल, सरसों, तोरिया, पशुचारा एवं चौपायों मूल्यों में भी खास तेजी होगी। ता. 1 सितं. को शुक्र तुला में आने से गुड़, खाण्ड, अलसी, मैदा, सूजी, सर्व प्रकार की दालें, घी, तैलादि तेज भाव होंगे। ता. 5 की रात्रि को मंगल तुला राशि में जाने से रूई, कपास, सूत, पटसन, बारदाना, मूंगफली, गुड़, गेहूँ, खाण्ड, उड़द मूँग आदि महँगे होंगे—"भूमि-पुत्रस्तुलेयात: सर्वधान्य महर्घता। मापामुद्गस्तथा सूत्रं कार्पासादि विशेषत: ॥"

आकाश लक्षण—उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कहीं [illegible] रुक-रुक कर वर्षा होगी। **शकुन**—अष्टमी के दिन वर्षा होना आगामी सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६७, भाद्रपद शुक्ल पक्ष | शाक: १९३२

सन् 2010 ई. (ता. 9 सितम्बर से 23 सितम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतु:

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—10 सितं. से सायं बुध पूर्वी में दृश्य हो जाएगा। इस समय गुरु पश्चिमी क्षितिज में डूबने को होगा। सायं शनि पश्चिम क्षितिज में, इससे कुछ ऊपर मंगल-शुक्र होंगे। 13 सितं. से श. पश्चिम में लुप्त होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	भाद्र. शक	रमज़ान मु.	सितम्बर	भाद्र. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	घ्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
३१:०८	१	गुरु	१४	५०	उ.फा.	३६	४०	साध्य शुभ	१ ५०	२५ ५८	बव	१४	५०	१८	२९	9	२५	कन्या	शुक्र स्वा. में ३१/२५,	४	२२	१४	३१	६	१२	१८	३९
३१:०३	२	शुक्र	५	४०	हस्त	२९	५३	शुक्ल	४१	१०	कौ	५	४०	१९	३०	10	२६	तु. ५६/५८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, वक्री बुध पूर्व से उदय ५२/४५, हरितालिका A	४	२३	१२	५२	६	१३	१८	३८
००:००	३	शुक्र	५७	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	तृतीया तिथि क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३०:५८	४	शनि	५०	५३	चित्रा	२४	२५	ब्रह्म	३२	३०	व	२४	३	२०	श.	11	२७	तुला	भ. २४/१३ से ५०/५३ तक, सिद्धि विनायक व्रत, कलंक चतुर्थी B	४	२४	११	१३	६	१३	१८	३६
३०:५३	५	रवि	४५	५५	स्वा	२०	२८	ऐंद्र	२५	१३	बव	१८	२४	२१	२	12	२८	तुला	ऋषि पंचमी, सम्वत्सरी महापर्व (पंचमी पक्ष) (जैन), बुध मार्गी ५६/०३	४	२५	०९	३५	६	१४	१८	३५
३०:४८	६	चंद्र	४३	३	विशा	१८	३३	वैधृ	१९	३०	कौ	१४	२९	२२	३	13	२९	वृ. ३/५०	सूर्य उ.फा. में ३२/५३, शनि पश्चिम में अस्त २७/५३, सूर्य षष्ठी व्रत, C	४	२६	०८	००	६	१४	१८	३३
३०:४३	७	मंग	४२	१८	अनु	१८	३८	विष्क	१५	२५	गर	१२	४१	२३	४	14	३०	वृश्चिक	भ. ४२/१८ से, मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी व्रत, प्लूटो मार्गी ९/२८	४	२७	०६	२९	६	१५	१८	३२
३०:३८	८	बुध	४३	३५	ज्ये.	२०	४५	प्रीति	१३	५	वि	१२	५७	२४	५	15	३१	ध. २०/४५	भ. १२/५५ तक, मंगल स्वा. में ५५/२८, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, D	४	२८	०४	५६	६	१६	१८	३१
३०:३५	९	गुरु	४६	४५	मूल	२४	५०	आयु	१२	१५	बा	१५	१०	२५	६	16	आ.	धनु	सूर्य कन्या में ५८/०३, आश्विन संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल E	४	२९	०३	२६	६	१६	१८	३०
३०:२८	१०	शुक्र	५१	२०	पू.षा.	३०	२५	सौभा	१२	४३	तै	१९	३	२६	७	17	२	म. ^८७/००		५	००	०१	५५	६	१७	१८	२८
३०:२८	११	शनि	५७	००	उ.षा.	३७	१०	शोभ	१४	१०	व	२४	१०	२७	८	18	३	मकर	भ. २४/१० से ५७/०० तक, पद्मा एकादशी व्रत स्मार्त., बुध पू.फा. में ०/४३	५	०१	००	३०	६	१७	१८	२८
३०:२०	१२	रवि	६०	००	श्रव.	४४	२८	अति	१६	१३	बव	३०	३	२८	९	19	४	मकर	पद्मा एकादशी व्रत वैष्णव, श्री वामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी	५	०१	५९	०३	६	१८	१८	२६
३०:१५	१२	चंद्र	३	५	धनि	५२	००	सुक	१८	३५	बा	३	५	२९	१०	20	५	कुं. १८/१३	पंचक प्रारम्भ १८/१३, सोम प्रदोष व्रत	५	०२	५७	४०	६	१९	१८	२५
३०—०८	१३	मंग	९	२३	शत	५९	३०	धृति	२१	००	तै	९	२३	३०	११	21	६	कुम्भ		५	०३	५६	१९	६	१९	१८	२२
३०:०३	१४	बुध	१५	२५	पू.भा.	६०	००	शूल	२३	१३	व	१५	२५	३१	१२	22	७	मी. ४९/५०	भ. १५/२५ से ४८/१८ तक, अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला सोढल F	५	०४	५५	००	६	२०	१८	२१
३०:००	१५	गुरु	२१	८	पू.भा.	६	३५	गंड	२५	५	बव	२१	८	आ.	१३	23	८	मीन	भाद्रपद पूर्णिमा स्नानदान, प्रौष्ठपदी, महालय श्राद्धारम्भ, सूर्य सायन G	५	०५	५३	४१	६	२०	१८	२०

A तृतीया, गौरी तीज, सामवेदि उपाकर्म **B** (पत्थर चौथ), चन्द्रदर्शन निषेध (चन्द्रास्त 20/21 जालंधर), शव्वाल (मुस्लिम) मास प्रारम्भ **C** ललिता षष्ठी व्रत **D** श्रीराधाष्टमी, दधीची जयन्ती **E** सं. अगले दिन मध्याह्न तक, श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय), श्रीभागवत् सप्ताह प्रारम्भ **F** (जालन्धर), श्रीसत्यनारायण व्रत, कदली व्रत **G** तुला में ५/४८, दक्षिण गोल प्रारम्भ

बुधो अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 15 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	६	४	११	६	५	८	२
२८	२५	६	११	५	१०	११	१४	१४
३	११	१	४०	१४	३१	४६	०	०
६	३२	३९	३०	२०	४५	३	४३	४३
58 28	757 17	40 5	23 30	7 55	39 12	7 16	3 11	3 11
उ.फा. १	ज्ये. ३	चित्रा ४	मघा ४	उ.भा. १	स्वा २	हस्त १	पूषा १	आर्द्रा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

- ५: सू. बु.
- ६: शनि
- ४
- ३: के.
- ७: मं. शु.
- ८: चंद्र
- २
- ९: रा.
- ११
- १
- १०
- १२: गुरू

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	६	४	११	६	५	८	२
५	१	११	१८	४	१५	१२	१३	१३
५१	३६	२४	३८	१०	१०	४४	३५	३५
३८	४४	१५	८	२७	५२	३७	१७	१७
58 43	719 26	40 38	82 47	8 00	28 44	7 23	3 11	3 11
उ.फा. ३	पू.भा. ४	स्वा २	पू.फा. २	उ.भा. १	स्वा ३	हस्त १	पूषा १	आर्द्रा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

- ६: सू. श.
- ७: मं. शु.
- ५: बु.
- ८
- ४
- ९: रा.
- ३: के.
- १२: चं. गु.
- १०
- २
- ११
- १

भाद्रपद शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की तृतीया को सौभाग्यवती स्त्रियों को अखण्ड सुहाग की कामना से हरितालिका तीज (10 सितं.) का व्रत विधिपूर्वक करना चाहिए। श्रीगणेश चतुर्थी (पत्थर चौथ) (11 सितं.) का व्रत रखकर श्रीगणेश जी को मीठे पूओं व लड्डुओं का भोग लगाना चाहिए। इस दिन सायं को चन्द्रदर्शन करना निषेध माना जाता है। ता. 14 को सन्तान सप्तमी का व्रत सन्तान प्राप्ति की कामना से पति-पत्नी दोनों के द्वारा व्रत रखकर भगवान् शिव पार्वती एवं सूर्य देव की पूजा की जाती है। ता. 15 को श्रीमहालक्ष्मी का व्रत एवं पूजन सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने सुहाग व परिवार के सौभाग्य एवं सुख समृद्धि के लिए करती हैं। ता. 16 को आश्विन संक्रान्ति 30 मुहूर्त्ति गुरुवार को होने से द्विजों को लाभ एवं सुख देने वाली नक्षत्र (पूषा) अनुसार घोरा नामक शूद्रों को लाभ एवं सुख देने वाली होगी। (नन्दा नामक) राश्यनुसार यह संक्रान्ति मेष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धन व मीन राशि वालों को शुभ व लाभ देने वाली होगी। ता. 19 सितं. को भगवान् विष्णु के अवतार वामन की पुण्य तिथि है, यह श्रवण नक्षत्र होने से और भी अधिक पुण्यप्रदा होगी। ता. 22 को श्री अनन्त चतुर्दशी को भगवान् विष्णु के अनन्त स्वरूप का "ॐ अनन्ताय नमः" मन्त्रपूर्वक पूजन करना चाहिए। इसी दिन जालन्धर (पंजाब) में भगवान् शेषनाग के अंशावतार बाबा सोढल का भव्य मेला मनाया जाता है। ता. 23 सितं. को मध्याह्न काल में प्रौष्ठपदी पूर्णिमा का श्राद्ध होगा। लोक भविष्य—पक्ष के उत्तरार्द्ध में सूर्य-शनि का योग होने से राजनीतिक क्षेत्रों में उथल-पुथल एवं अशान्ति का माहौल रहेगा। महँगाई एवं विदेशी सम्बन्धों के मुद्दों को लेकर विपक्ष के साथ टकराव की स्थिति बनेगी। आकाश लक्षण—पक्ष में भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६७, आश्विन कृष्ण पक्ष									शाकः १९३२					तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	सन् 2010 ई. (ता. 24 सितम्बर से 7 अक्तूबर तक) सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	आश्वि. प्र.	शाका. मु.	सितंबर	आश्वि. प्र.		ग्रह दर्शन—सायं मंगल-शुक्र पश्चिम में पास-पास दीखेंगे। इसी समय गुरु पूर्व क्षितिज में होगा। प्रातः बुध पूर्व क्षितिज में होगा। 30 सितं. से बुध पूर्व में ही लुप्त हो जाएगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	प्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२९:५५	१	शुक्र	२६	१५	उ.भा.	१३	१०	वृद्धि	२६	३३	कौ	२६	१५	२	१४	24	९	मीन	पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध	५	०६	५२	२६	६	२१	१८	१९
२९:५३	२	शनि	३०	४५	रेव	११	१०	ध्रुव	२७	३०	गर	३०	४५	३	१५	25	१०	मे. १९/१०	पंचक समाप्त १९/१०, द्वितीया का श्राद्ध	५	०७	५१	१०	६	२१	१८	१८
२९:५०	३	रवि	३४	२८	अश्वि	२४	२५	व्या.	२७	५५	व	२	३७	४	१६	26	११	मेष	भ. २/३८ से ३४/२८ तक, तृतीया का श्राद्ध	५	०८	४९	५६	६	२१	१८	१७
२९:४५	४	चंद्र	३७	१३	भर	२८	५०	हर्ष	२७	३५	बव	५	५१	५	१७	27	१२	वृ. ४४/४८	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21/10 (जालं.), सूर्य हस्त में (A)	५	०९	४८	४७	६	२२	१८	१६
२९:४३	५	मंग	३८	५८	कृति	३२	१५	वज्र	२६	२८	कौ	८	६	६	१८	28	१३	वृष	पंचमी का श्राद्ध, बुध उ.फा. में १३/३८	५	१०	४७	३८	६	२२	१८	१५
२९:३५	६	बुध	३९	२५	रोहि	३४	२५	सिद्धि	२४	२३	गर	९	१२	७	१९	29	१४	वृष	भ. ३९/२५ से, वक्री गुरु पू.भा. (4) में १९/१०, षष्ठी का श्राद्ध	५	११	४६	३३	६	२३	१८	१३
२९:३०	७	गुरु	३८	२८	मृग	३५	१३	व्य.	२१	१०	वि	८	५७	८	२०	30	१५	मि. ४/५८	भ. ८/५५ तक, बुध कन्या में ११/१०, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त B	५	१२	४५	३१	६	२४	१८	१२
२९:२५	८	शुक्र	३५	५८	आर्द्रा	३४	३०	वरी	१६	४८	बा	७	१३	९	२१	अक्तू	१६	मिथुन	जीवित्पुत्रिका व्रत, अशोकाष्टमी, अष्टमी का श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत C	५	१३	४४	३०	६	२५	१८	१०
२९:२०	९	शनि	३१	५३	पुर्न	३२	१५	परि	११	१०	तै	३	५६	१०	२२	2	१७	क. १७/५८	भ. ५९/०५ से, गांधी जयन्ती, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, मातृ नवमी, D	५	१४	४३	३०	६	२५	१८	९
२९:१५	१०	रवि	२६	१५	पुष्य	२८	२८	शिव सिद्ध	४ ५६	१५ १३	वि	२६	१५	११	२३	3	१८	कर्क	भ. २६/१५ तक, दशमी का श्राद्ध	५	१५	४२	३५	६	२६	१८	८
२९:१३	११	चंद्र	१९	२०	श्ले.	२३	२३	साध्य	४७	१०	बा	१९	२०	१२	२४	4	१९	सिं. २३/२३	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी व द्वादशी का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 82), E	५	१६	४१	३९	६	२६	१८	७
२९:०८	१२	मंग	११	१८	मघा	१७	१०	शुभ	३७	२०	तै	११	१८	१३	२५	5	२०	सिंह	भौम प्रदोष व्रत, मंगल विशा. में ३१/४३, बुध हस्त में ५०/०५, F	५	१७	४०	४८	६	२७	१८	६
२९:०३	१३	बुध	२	३३	पूफा.	१०	१८	शुक्ल	२७	३	व	२	३३	१४	२६	6	२१	कं. २३/३३	भ. २/३३ से २८/०० तक, शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध	५	१८	३९	५६	६	२७	१८	४
००:००	१४	बुध	५३	२८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२८:५९	३०	गुरु	४४	२८	उ.फा. हस्त	३ ५६	८ १५	ब्रह्म	१६	४०	चतु	१८	५८	१५	२७	7	२२	कन्या	महालय आश्विन अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, चतुर्दशी/अमावस G	५	१९	३९	१०	६	२८	१८	३

A ११/२८, शनि हस्त (2) में ४५/०५, राहु मूल 4 केतु आर्द्रा 2 में ४५/१८ **B** (चं. उ. योग), बुध पूर्व में अस्त ८/२८, श्राद्ध सप्तमी **C** (अष्टमी योगे) **D** नवमी का श्राद्ध
E संन्यासीनां श्राद्ध **F** गजच्छाया योग 10/58 से 13/19 तक, श्राद्ध त्रयोदशी, मघा त्रयोदशी **G** का श्राद्ध, पितृ विसर्जन, गजच्छाया योग 7/43 से सूर्यास्त तक

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 1 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	६	५	११	६	५	८	२
१३	११	१६	१	३	१८	१३	१३	१३
४२	४१	५१	२०	७	१४	४३	९	९
१५	३५	१५	५०	१३	१२	४४	५१	५१
59 00	817 25	41 11	105 20	7 43	14 45	7 25	3 11	3 11
हस्त २	आर्द्रा २	स्वा ४	उफा २	पूभा ४	स्वा ४	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

मं. शु. ७ | ६ सू. बु. श. | ५ | ४ | ३ चं. के. | २ | १ | १२ गुरू | ११ | १० | ९ रा. | ८

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	६	५	११	६	५	८	२
१९	८	२०	१२	२	१९	१४	१२	१२
३६	३६	५९	०	२२	११	२८	५०	५०
४७	३	२६	३५	००	१९	८	४७	४७
59 13	904 25	41 37	106 58	7 14	1 50	7 23	3 11	3 11
हस्त ३	उफा ४	विशा १	हस्त १	पूभा ४	स्वा ४	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

मं. शु. ७ | ६ सू. चं. बु. श. | ५ | ४ | ३ के. | २ | १ | १२ गुरू | ११ | १० | ९ रा. | ८

आश्विन कृष्ण पक्षफल—(पितृ पक्ष)

आश्विन कृष्ण पक्ष, पितृ पक्ष कहलाता है। इस पक्ष में जो व्यक्ति अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु तिथि अनुसार तिल, कुशा, पुष्पाक्षत, शुद्ध जल या गंगाजल सहित उन्हें पिण्डदान व तर्पणादि करने के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, फल-वस्त्र, दक्षिणादि सहित संकल्पपूर्वक दान करता है, उसके पितर संतृप्त होकर जातक को स्वास्थ्य, आरोग्य, दीर्घायु, धन-सुख सम्पदा का आशीर्वाद प्रदान करते हैं—"आयु पुत्रान् यशः स्वर्ग-कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम्। पशून सौख्यं धन-धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्॥" जो व्यक्ति जान-बूझ कर पितृ श्राद्धकर्म नहीं करता, वह पितरों द्वारा शापित होकर अनेक प्रकार के मानसिक व शारीरिक कष्टों से पीड़ित रहता है। इस पक्ष की अष्टमी तिथि (1 अक्तू.) को श्रीमहालक्ष्मी व्रत एवं जीवित्पुत्रिका व्रत पूजन सौभाग्यवती स्त्रियाँ पति एवं सन्तान सुख व उनकी दीर्घायु की कामना करती हैं। सभी ज्ञात-अज्ञात तिथि-आधारित पितरों का श्राद्ध **आश्विन अमावस (7 अक्तू.)** तिथि को किया जाएगा। **गजच्छाया योग**—इस योग में स्नान, दान, जप एवं ब्राह्मणों को भोजन, अन्न, वस्त्रादि का दान व श्राद्ध करने का विशेष महत्त्व माना गया है। आश्विन कृष्ण पक्ष में दो बार गजच्छाया योग बने हैं। (1) 5 अक्तूबर को 10/58 से 13/19 तक (2) 7 अक्तूबर को 7/43 से 24/15 तक। **लोक भविष्य**—आश्विन मास में **पाँच शनिवार** होने से कुछ स्थानों में जातीय एवं साम्प्रदायिक उपद्रव तथा हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। सीमावर्ती स्थानों पर युद्ध भय तथा सामान्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी बढ़ जाने से साधारण लोगों के दुखों व रोगों व परेशानियों में वृद्धि होगी। **शनिवार यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोगशोकाकुला पृथिवी॥ आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध में खण्ड वर्षा के योग हैं। उत्तरार्ध में मौसम प्रायः खुश्क रहेगा॥

वि. संवत् २०६७, आश्विन शुक्ल पक्ष — शाक: १९३२ — सन् 2010 ई. (ता. 8 अक्तूबर से 23 अक्तूबर तक)

सूर्य दक्षिणयन, दक्षिण गोल, शरद्–हेमन्त ऋतु: — भा.स्टै.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—18 अक्तू. से प्रातः शनि पूर्व क्षितिज में दृश्य होगा। सायं मंगल–शुक्र पश्चिम में, 20 अक्तू. से शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। गुरु पूर्व में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	आश्वि. प्र.	शव्वा. मु.	अक्तूबर	आश्वि. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२८:५३	१	शुक्र	३६	३	चित्रा	४९	५८	ऐन्द्र वैधृ	६ ५७	३३ ८	किं	१०	१६	१६	२८	8	२३	तु. २२/५८	शरद् नवरात्रे प्रारम्भ, घटस्थापन, दुर्गा पूजा, मातामह (नाना) का A	५	२०	३८	२५	६	२९	१८	२
२८:५०	२	शनि	२८	४३	स्वा	४४	५५	विष्क	४८	४३	बा	२	२३	१७	२९	9	२४	तुला	चन्द्रदर्शन, मु. १५,	५	२१	३७	४०	६	२९	१८	१
२८:४३	३	रवि	२२	४८	विशा	४१	२५	प्रीति	४१	३३	गर	२२	४८	१८	जि	10	२५	वृ. २७/०५	भ. ५०/४८ से, सूर्य चित्रा में ४३/३०, जिल्काद (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	५	२२	३७	००	६	३०	१७	५९
२८:३८	४	चंद्र	१८	४३	अनु	३९	४८	आयु	३५	५५	वि	१८	४३	१९	२	11	२६	वृश्चिक	भ. १८/४३ तक, उपाङ्ग ललिता व्रत	५	२३	३६	१९	६	३१	१७	५८
२८:३३	५	मंग	१६	४५	ज्ये	४०	१५	सौभा	३२	००	बा	१६	४५	२०	३	12	२७	ध. ४०/१५	गण्डमूल विचार	५	२४	३५	४४	६	३२	१७	५७
२८:२८	६	बुध	१६	५५	मूल	४२	५०	शोभ	२९	४८	तै	१६	५५	२१	४	13	२८	धनु	बुध चित्रा में २२/३८, सरस्वती आवाहन, गण्डमूल 23/41 घं. मिं. तक	५	२५	३५	०९	६	३३	१७	५६
२८:२३	७	गुरु	१९	१०	पूषा.	४७	२०	अति	२९	१०	व	१९	१०	२२	५	14	२९	धनु	भ. १९/१० से ५१/१३ तक, सरस्वती पूजन	५	२६	३४	३३	६	३३	१७	५४
२८:१८	८	शुक्र	२३	१३	उषा.	५३	२०	सुक	२९	४८	बव	२३	१३	२३	६	15	३०	म. ३/४०	महाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी, सरस्वती बलिदान, भद्रकाली जयंती	५	२७	३४	०३	६	३४	१७	५३
२८:१३	९	शनि	२८	३३	श्रव	६०	००	धृति	३१	२३	कौ	२८	३३	२४	७	16	३१	मकर	महानवमी, नवरात्रे समाप्त, शस्त्रादि पूजा, सरस्वती विसर्जन	५	२८	३३	३३	६	३५	१७	५२
२८:१०	१०	रवि	३४	४३	श्रव	०	२०	शूल	३३	३३	तै	१	३८	२५	८	17	का	कुं. ३४/०५	विजयादशमी (दशहरा), सूर्य तुला में २७/१०, कार्तिक B	५	२९	३३	०२	६	३५	१७	५१
२८:०५	११	चंद्र	४१	५	धनि	७	५०	गंड	३५	५३	व	७	५४	२६	९	18	२	कुम्भ	भ. ७/५३ से ४१/०५ तक, पापांकुशा एकादशी व्रत, शनि पूर्व C	६	००	३२	३७	६	३६	१७	५०
२८:००	१२	मंग	४७	१०	शत	१५	१८	वृद्धि	३८	००	बव	१४	८	२७	१०	19	३	कुम्भ	मंगल वृश्चिक में ४९/१८	६	०१	३२	१२	६	३७	१७	४९
२७:५८	१३	बुध	५२	४३	पूभा	२२	२३	ध्रुव	३९	४८	कौ	१९	५७	२८	११	20	४	मीं. ५/४०	प्रदोष व्रत, शुक्र पश्चिम में अस्त ०/३३ (शुक्र अस्त 20 अक्तू.)	६	०२	३१	४७	६	३७	१७	४८
२७:५३	१४	गुरु	५७	२३	उभा	२८	४३	व्या.	४०	५५	गर	२५	३	२९	१२	21	५	मीन	भ. ५७/२३ से, बुध स्वा. में १५/०८	६	०३	३१	२७	६	३८	१७	४७
२७:४८	१५	शुक्र	६०	००	रेव	३४	१३	हर्ष	४१	२०	वि	२९	१६	३०	१३	22	६	मे. ३४/१३	भ. २९/१५ तक, आश्विन पूर्णिमा पुण्य, व्रतादि, शरद् पूर्णिमा व्रत, D	६	०४	३१	१०	६	३९	१७	४६
२७:४३	१५	शनि	१	८	अश्वि	३८	४८	वज्र	४१	५	बव	१	८	का	१४	23	७	मेष	आश्विन पूर्णिमा स्नानादि, सूर्य सायन वृश्चिक में २८/३३, (E)	६	०५	३०	५३	६	४०	१७	४५

A श्राद्ध, शुक्र वक्री १५/१५, महाराजा अग्रसेन जयन्ती (B) संक्रान्ति, मु. ३० पुण्यकाल सं. मध्याह्न 11/03 बाद, बुध तुला में १५/५८, पंचक प्रारम्भ ३४/०५, अपराजिता पूजन (C) से उदय २२/००, भरत मिलाप, पुत्र प्राप्ति व्रत (D) कोजागर व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयंती, श्रीसत्यनारायण व्रत (E) कार्तिक स्नान प्रारम्भ, हेमन्त ऋतु: प्रारम्भ, शक कार्तिक प्रारम्भ

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 15 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	६	५	११	६	५	८	२
२७	२८	२६	२६	१	१८	१५	१२	१२
३१	४२	३४	३	२७	१९	२६	२५	२५
२५	५६	१३	३७	७	३१	५५	२०	२०
59 28	725 21	42 9	102 46	6 19	17 15	7 18	3 11	3 11
चित्रा २	उषा १	विशा २	चित्रा १	पूभा ४	स्वा ४	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

मं. शु. ७ | ६ सू. बु. श. | ५ | ४ | ३ के. | २ | १ | १२ गुरु | ११ | १० | ९ चं. रा. | ८

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	७	६	११	६	५	८	२
५	४	२	९	०	१५	१६	११	११
२७	४२	१३	२७	४०	१	२४	५९	५९
५८	२६	११	३४	४३	५३	४२	५४	५४
59 44	745 58	42 39	97 41	5 6	32 47	7 7	3 11	3 11
चित्रा ४	अश्वि २	विशा ४	स्वा १	पूभा ४	स्वा ३	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

मंग. ८ | ७ सू. बु. शु. | ६ श. | ५ | ४ | ३ के. | २ | १ चं. | १२ गुरू | ११ | १० | ९ रा.

आश्विन शुक्ल पक्षफल—

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा (8 अक्तू.) से शारदीय नवरात्रों का शुभारम्भ होगा। इस दिन घटस्थापन, दीप प्रज्वलन एवं षोडशोपचार सहित श्रीदुर्गापूजन करके श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ प्रारम्भ किया जाता है। नवरात्रों में श्री दुर्गा-पूजा, कुमारी कन्या पूजन, दानादि का विशेष महत्त्व होता है। 17 अक्तू. को सायंकाल (प्रदोष) में श्रीराम की पूजोपरान्त बुराई के प्रतीक रावण के पुतले का दहन करके विजयादशमी का पर्व मनाया जाता है। इसी दिन (17 अक्तू.) कार्तिक संक्रान्ति 30 मुहूर्ति है। रविवार की संक्रान्ति होने से घोरा नामक शूद्रों को लाभप्रद तथा धनिष्ठा नक्षत्र कालीन प्रातः 17–27 पर प्रवेश होने से महोदरी नामक संक्रान्ति चौरों व बेईमान लोगों को लाभप्रद होगी। रविवार की संक्रान्ति होने से देश में राजनेताओं में परस्पर टकराव, साम्प्रदायिक दंगे-फिसाद, सीमाओं पर शत्रुओं की घुसपैठ, देश में युद्ध जैसे हालात बनें। अत्यधिक महँगाई के कारण सामान्य लोगों में भय, परेशानियाँ व अनिश्चितताओं के बादल मंडराने लगेंगे। संक्रान्तिरादित्य दिने न शस्ता करोति युद्धं नृपतेरतीव। धान्यं महर्घं प्रति-रौद्र वार्ता प्रजा भवेद् दुखित हीन दीन॥ ता. 22 को शरद् पूर्णिमा की रात्रि को छिटकती चाँदनी में मेवा युक्त खीर सुरक्षित रखकर दूसरे दिन भगवान् को भोग लगाकर स्वयं ग्रहण करने से अनेक गुप्त रोगों की शान्ति होती है। ता. 18 को शनि कन्या राशि में उदय होने से गेहूँ, मक्का, चावल आदि सर्व प्रकार के अनाज, उड़द, तिलहन, रसादि पदार्थ एवं शेयर्ज में तेजी होगी। ता. 19 को मंगल वृश्चिक राशि में आने से गेहूँ, चने, धान्य, दालें, सरसों, गुड़, सूरजमुखी, सोना, तांबा, चाँदी, मूंगफली, खल-बिनौले आदि तेज भाव होंगे। यदा वृश्चिक राशिस्थोजायते च महीसुतः। महर्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्॥ ता. 20 को शुक्र पश्चिम में अस्त होने से पशुचारा, खल-बिनौले, सरसों एवं गौ आदि चौपायों के भाव तेज होंगे। आकाश लक्षण—भारत के उ. पश्चिमी भागों में तेज हवाओं के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६७, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाकः १९३२ तारीखें

सन् 2010 ई. (ता. 24 अक्तूबर से 6 नवम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः शनि पूर्व में दृश्य होगा। 2 नवं. से शुक्र भी पूर्व से दृश्य होगा। सायं मंगल-बुध पश्चिम में तथा गुरु पूर्व में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	कार्ति. प्र.	विक्र. मु.	अक्टूबर	कार्ति. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२७:४०	१	रवि	३	५८	भर	४२	३३	सिद्धि	४०	८	कौ	३	५८	२	१५	24	८	वृ. ५८/२०	सूर्य स्वा. में ९/२८, मंगल अनु. में ३१/०५	६	०६	३०	३७	६	४०	१७	४४
२७:३५	२	चंद्र	५	५३	कृति	४५	२०	व्य.	३८	२५	गर	५	५३	३	१६	25	९	वृष	भ. ३६/२३ से,	६	०७	३०	२३	६	४१	१७	४३
२७:३०	३	मंग	६	५०	रोहि	४७	१३	वरी	३६	००	वि	६	५०	४	१७	26	१०	वृष	भ. ६/५० तक, **करक चतुर्थी, व्रत करवा चौथ,** चं. उ. 19/59 **(A)**	६	०८	३०	१२	६	४२	१७	४२
२७:२५	४	बुध	६	५०	मृग	४८	८	परि	३२	४८	बा	६	५०	५	१८	27	११	मि. १७/४८		६	०९	३०	०३	६	४३	१७	४१
२७:२३	५	गुरु	५	५५	आर्द्रा	४८	५	शिव	२८	५०	तै	५	५५	६	१९	28	१२	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत	६	१०	२९	५४	६	४३	१७	४०
२७:१८	६	शुक्र	३	५३	पुर्न	४६	५८	सिद्ध	२३	५८	व	३	५३	७	२०	29	१३	क. ३२/२०	भ. ३/५३ से ३२/२० तक, बुध विशा. में ३१/३८	६	११	२९	५१	६	४४	१७	३९
२७:१३	७	शनि	०	४५	पुष्य	४४	४०	साध्य	१८	१५	बव	०	४५	८	२१	30	१४	कर्क	**अहोई अष्टमी व्रत,** गण्डमूल 24/37 घं. मिं. में	६	१२	२९	४८	६	४५	१७	३८
००:००	८	शनि	५६	३३	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	अष्टमी तिथि का-क्षय ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२७:०९	९	रवि	५१	१३	श्ले.	४१	२०	शुभ	११	३५	तै	२३	५३	९	२२	31	१५	सिं. ४१/२०	गण्डमूल विचार	६	१३	२९	४९	६	४६	१७	३७
२७:०३	१०	चंद्र	४४	५८	मघा	३७	३	शुक्ल ब्रह्म	४ ५५	८ ५५	व	१८	६	१०	२३	नवं	१६	सिंह	भ. १८/०५ से ४४/५८ तक, **वक्री गुरु कुम्भ में १५/१८, B**	६	१४	२९	५०	६	४७	१७	३६
२७:००	११	मंग	३७	५८	पूफा	३१	५८	ऐंद्र	४७	१०	बव	११	२८	११	२४	2	१७	कं. ४५/३८	**रमा एकादशी व्रत, शुक्र पूर्व में उदय १९/१५**	६	१५	२९	५२	६	४७	१७	३५
२६:५८	१२	बुध	३०	३०	उफा	२६	२३	वैधृ	३८	३	कौ	४	१४	१२	२५	3	१८	कन्या	गोवत्स द्वादशी, प्रदोष व्रत (देखें पृष्ठ 83), धन त्रयोदशी, यमाय दीपदान	६	१६	३०	००	६	४८	१७	३५
२६:५३	१३	गुरु	२२	५३	हस्त	२०	३८	विष्क	२८	५०	व	२२	५३	१३	२६	4	१९	तु. ४७/५०	भ. २२/५३ से ४९/१३ तक, **श्रीहनुमान जयन्ती,** (देखें पृष्ठ 83), बुध **C**	६	१७	३०	०८	६	४९	१७	३४
२६:४८	१४	शुक्र	१५	३०	चित्रा	१५	८	प्रीति	१९	५३	श	१५	३०	१४	२७	5	२०	तुला	का. अमावस (पितृकार्येषु), **दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन,** नरक**D**	६	१८	३०	१९	६	५०	१७	३३
२६:४५	३०	शनि	८	५०	स्वा.	१०	१५	आयु	११	३०	ना	८	५०	१५	२८	6	२१	वृ. ५२/१८	कार्तिक अमा. स्नानदानादि, **अन्नकूट-गोवर्धन पूजा** (देखें पृष्ठ 83), **E**	६	१९	३०	२९	६	५०	१७	३२

शुक्र उदय 2 नवं.

A (जालन्धर) देखें पृष्ठ 84, दशरथ चतुर्थी, अङ्गारकी चतुर्थी **B** नवम्बर मास प्रारम्भ **C** वृश्चिक में ५८/३८, धनवन्तरी जयन्ती, यमाय तर्पण,
D चौदश, काली पूजा, कुबेर पूजा (देखें पृष्ठ 84, 85) **E** सूर्य विशा. में २९/२५, बली पूजा, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन)

शनौ सप्तम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	७	६	११	६	५	८	२
१२	५	७	२०	०	१०	१७	११	११
२६	३७	१३	३९	८	५४	१४	३७	३७
४१	१६	९	४९	३८	४८	००	३७	३७
59 58	833 49	43 7	94 00	3 52	36 25	6 55	3 10	3 10
स्वा २	पुष्य १	अनु २	विशा १	पूभा ४	स्वा २	हस्त 3	मूल ४	आर्द्रा २
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

मं. ८ | शनि ६ | ७ सू. बु. शु. | ५ | ९ रा. | १० | ४ चंद्र | ११ | १ | ३ के. | १२ गुरू | २

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	७	७	१०	६	५	८	२
१९	१६	१२	१	२९	६	१८	११	११
२७	४४	१६	२८	४५	५७	१	१५	१५
९	९	२१	३२	३४	४३	४३	२२	२२
60 12	857 51	43 34	90 59	2 31	28 32	6 39	3 10	3 10
स्वा ४	स्वा ४	अनु ३	विशा ४	पूभा ३	स्वा १	हस्त ३	मूल ४	आर्द्रा २
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

मं. बु. ८ | शनि ६ | ७ सू. चं. शु. | ५ | ९ रा. | १० | ४ | ११ गु. | १ | ३ के. | १२ | २

कार्तिक कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष में करवा चौथ (26 अक्तू.) का व्रत सुहागिन स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती है। सायं श्रीगणेश पूजन करके चन्द्रमा को अर्घ्य देने के पश्चात् भोजन करती हैं। (अपने स्थानीय नगर के चन्द्रोदय के लिए देखें पृष्ठ 84) अहोई अष्टमी (30 अक्तू.) को व्रत, पूजन भी सन्तान व पति के कल्याण हेतु किया जाता है। धन त्र्योदशी (3 नवं.) को औषधदान तथा नवीन बर्तन का क्रय करना शुभ होता है। ता. 5 नवं. को श्री महालक्ष्मी का पूजन व दीपमाला का शुभ पर्व है। इस रात्रि को किए गए जप, तप, मन्त्र, अनुष्ठानादि करने का विशेष महत्त्व होता है। (देखें पृष्ठ 84) 6 नवं. शनिवार को अमावस्या प्रातः 10/22 तक है, तदुपरान्त प्रतिपदा विद्यमान हैं, गोवर्धन पूजा एवं अन्नकूट आदि पर्व अमा. विद्धा प्रतिपदा को ही प्रातः 10/22 उपरांत मनाए जाएँगे। व्यापारिक रूख—प्रतिपदा को सूर्य स्वाती में तथा मंगल अनु. नक्षत्र में प्रवेश करने से रूई, कपास, गेहूँ, गुड़, खल-बिनौला, चने, दालचना, लाल चन्दन, रक्तचन्दन, लालमिर्च आदि लालवर्ण की वस्तुओं में तेज़ी हो। सोना, चाँदी व ताँबा आदि में भी तेजी का रूझान बने। ता. 1 नवं. को वक्री गुरु कुम्भ राशि में आने से रूई, सोना, ताँबा, पीतल, लोहा आदि में पहले मन्दी, फिर तेज़ी का रुख बनेगा। 2 नवं. को शुक्र पू.फा. नक्षत्र में उदय होने से मूंग, चावल, उड़द, दूध, मावा, चीनी, चाँदी आदि के भावों में तेजी आएगी। मनुष्य गण के नक्षत्र में शुक्रोदय होने से जालन्धर, व्यास आदि नगरों में दुर्भिक्ष जैसी स्थिति बने। कहीं विग्रह व सम्प्रादायिक तनाव पैदा हों। कार्तिक मास में पांच रविवार होने से देश में कहीं अनाज की कमी, कहीं दुर्भिक्ष का भय एवं सत्ता परिवर्तन, उपद्रव, जातीय एवं साम्प्रदायिक हिंसा, अग्निकांड आदि घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। यत्र मासे रविवाराः जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्र भङ्गश्च वह्णि-दाहोमहर्घता।। आकाश लक्षण—पक्ष के उत्तरार्ध भाग में पश्चिमोत्तर कुछ क्षेत्रों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग होंगे।

वि. संवत् २०६७, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाक: १९३२

सन् 2010 ई. (ता. 7 नवम्बर से 21 नवम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु: — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्र व शनि पूर्व में दिखाई देंगे। सायं 7 नवं. से बुध-मंगल पास-पास पश्चिम क्षितिज में तथा गुरु पूर्व कपाल में दिखाई देंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	कार्ति. प्र.	जिल्हे. मु.	नवंबर	कार्ति. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२६:४३	१	रवि	३	१०	विशा	६	२५	सौभा शोभ	३ ५७	५८ ३५	बव	३	१०	१६	२९	7	२२	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, भ्रातृ दूज (प्रात: 8/07 बाद), यम द्वितीया, बुध (देखें पृष्ठ 83)(A)	६	२०	३०	४६	६	५१	१७	३२
००:००	२	रवि	५८	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२६:३८	३	चंद्र	५६	२५	अनु	४	००	अति	५२	३३	तै	२७	४२	१७	जि	8	२३	वृश्चिक	जिल्हेज (मुस्लिम) मास प्रारम्भ	६	२१	३१	००	६	५२	१७	३१
२६:३५	४	मंग	५५	५०	ज्ये.	३	२३	सुक	४९	३	व	२६	८	१८	२	9	२४	ध. ३/२३	भ. २६/०८ से ५५/५० तक, दूर्वा गणपति व्रत	६	२२	३१	१५	६	५२	१७	३०
२६:३०	५	बुध	५७	१३	मूल	४	३३	धृति	४७	३	बव	२६	३२	१९	३	10	२५	धनु	ज्ञान पंचमी, जया पंचमी	६	२३	३१	३२	६	५३	१७	२९
२६:३०	६	गुरु	६०	००	पू.षा.	७	४०	शूल	४६	३३	कौ	२८	५१	२०	४	11	२६	म. २३/४५	मंगल ज्ये. में ५८/२०, **सूर्य षष्ठी व्रत**	६	२४	३१	५३	६	५३	१७	२९
२६:२५	६	शुक्र	०	२८	उषा.	१२	३०	गंड	४७	१३	तै	०	२८	२१	५	12	२७	मकर		६	२५	३२	१६	६	५४	१७	२८
२६:२३	७	शनि	५	१५	श्रव	१८	४५	वृद्धि	४८	४५	व	५	१५	२२	६	13	२८	कुं. ५२/१५	भ. ५/१५ से ३८/१० तक, पंचक प्रारम्भ ५२/१५,	६	२६	३२	३७	६	५५	१७	२८
२६:१८	८	रवि	११	३	धनि	२५	५३	ध्रुव	५०	४८	बव	११	३	२३	७	14	२९	कुम्भ	गोपाष्टमी, नेहरू जयन्ती (बाल दिवस)	६	२७	३३	०५	६	५६	१७	२७
२६:१३	९	चंद्र	१७	१८	शत	३३	१५	व्या.	५२	५३	कौ	१७	१८	२४	८	15	३०	कुम्भ	अक्षया नवमी, कूष्माण्ड नवमी, आरोग्य व्रत, जगद्धातृ पूजा	६	२८	३३	३४	६	५८	१७	२७
२६:०८	१०	मंग	२३	३०	पूभा.	४०	२५	हर्ष	५४	४३	गर	२३	३०	२५	९	16	मा	मी. २३/४०	भ. ५६/१८ से, सूर्य वृश्चिक में २५/४८, मार्गशीर्ष संक्रान्ति, (B)	६	२९	३४	०१	६	५९	१७	२६
२६:०३	११	बुध	२९	३	उभा.	४६	५५	वज्र	५५	५५	वि	२९	३	२६	१०	17	२	मीन	भ. २९/०३ तक, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत, भीष्मपंचक प्रारम्भ, C	७	००	३४	३१	७	०	१७	२५
२६:००	१२	गुरु	३३	३३	रेव	५२	२३	सिद्धि	५६	१८	बव	१	१८	२७	११	18	३	मे. ५२/२३	पंचक समाप्त ५२/२३, गुरु मार्गी ३८/२५, शुक्र मार्गी ४९/२८, D	७	०१	३५	०१	७	१	१७	२५
२५:५५	१३	शुक्र	३६	५३	अश्वि	५६	३८	व्य.	५५	४३	कौ	५	१८	२८	१२	19	४	मेष	प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी, सूर्य अनु. में ४४/०३	७	०२	३५	३५	७	२	१७	२४
२५:५३	१४	शनि	३८	५५	भर	५९	४०	वरी	५४	८	गर	७	५४	२९	१३	20	५	मेष	भ. ३८/५५ से प्रारम्भ:,	७	०३	३६	०८	७	३	१७	२४
२५:५१	१५	रवि	३९	४५	कृति	६०	००	परि	५१	४०	वि	९	३०	३०	१४	21	६	वृ. १५/१५	भ. ९/२० तक, कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक जयन्ती, भीष्मपंचकE	७	०४	३६	४१	७	३	१७	२४

A बुध अनु. में १०/१३, बुध पश्चिम में उदय ५१/४०, यमुना स्नान, विश्वकर्मा दिवस व पूजा, नैपच्यून मार्गी ११/४३, **B** मु. ३०, पुण्यकाल सं. प्रात: 10/54 बाद, बुध ज्ये. में १०/४० **(C)** चातुर्मास्य व्रतादि नियम समाप्त **D** तुलसी विवाह, हरि प्रबोधोत्सव **E** समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, दीपदान, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मे. पुष्कर, श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	१०	७	७	१०	६	५	८	२
२७	०	१८	१३	२९	४	१८	१०	१०
२९	५०	६	२४	३१	७	५३	४९	४९
३०	२०	३७	५१	११	५९	४६	५६	५६
60 24	712 15	44 3	87 31	0 53	10 47	6 18	3 11	3 11
विशा ३	धनि ३	ज्ये. १	अनु ४	पूभा ३	चित्रा ४	हस्त ३	मूल ४	आर्द्रा २
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

मं. बु. ८ — शनि ६ — ७ सू. शु. — ९ रा. — ५ — १० — ४ — चं. ११ गु. — १ — ३ के. — १२ — २

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	७	७	१०	६	५	८	२
४	२५	२३	२३	२९	३	१९	१०	१०
३२	५५	१६	२४	२९	४४	३६	२७	२७
४७	००	११	२६	२५	००	४२	४०	४०
60 34	774 33	44 27	82 32	0 35	6 14	5 55	3 11	3 11
अनु १	भ ४	ज्ये. २	ज्ये. ३	पूभा ३	चित्रा ४	हस्त ३	मूल ४	आर्द्रा २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

रा. ९ — ८ सू. मं. बु. — शुक्र ७ — १० — श. ६ — ११ गुरू — ५ — १२ — २ — ४ — १ चंद्र — ३ के.

कार्तिक शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष में द्वितीया तिथि का क्षय हुआ है। अत: 7 नवं. रविवार को ही प्रात: 8 बजकर 7 मिनट के बाद अभिजित एवं मकर (मध्याह्न) लग्न के मुहूर्त में भाई को तिलक करना शुभप्रद होगा। मार्गशीर्ष संक्रान्ति मंगलवार को 30 मुहूर्त्ति सायं 5/18 पर प्रविष्ट होगी। वारानुसार महोदरी नामक यह संक्रान्ति चौर व तस्कर प्रवृत्ति के लोगों को तथा नक्षत्रानुसार घोरा नाम की शूद्र एवं नीच जनों को लाभ एवं सुख देने वाली होगी। राशिफल—मेष, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर व कुम्भ राशि वालों को इस संक्रान्ति का फल शुभ एवं लाभप्रदायक रहेगा। ता. 17 नवं. को देव प्रबोधिनी एकादशी से तपस्वी जनों के व्रत-नियमों आदि से निवृत्ति होगी। इसी दिन से भीष्मपंचक प्रारम्भ होकर 21 नवं. तक रहेंगे। कुछ लोग परम्परा अनुसार भीष्मपंचकों में विवाह, मुण्डन आदि शुभ कार्य नहीं करते जबकि आधुनिक कुछ विद्वान् इस मान्यता को शास्त्र-प्रतिपादित न मानते हुए भीष्मपंचकों में शुभ कृत्यों की सहमति प्रदान करते हैं। ता. 18 नवं. विवाह नक्षत्र (रेवती) में तुलसी विवाह शुभ रहेगा। इसी दिन श्रीहरि का प्रबोध उत्सव भी मनाने की परम्परा हैं। ता. 19 नवं. को वैकुण्ठ चौदश की रात्रि को भगवान् विष्णु व शिवजी का पूजन संयुक्त रूप से किया जाता है। पूजनोपरान्त विष्णु स्तोत्र व शिव स्तोत्रों का पाठ किया जाता है। कार्तिक पूर्णिमा (21 नवं.) को श्रीगुरु नानक देव जी का जन्मोत्सव सर्वत्र भारत में तथा मेला पुष्कर राज. एवं रामतीर्थ मेला (अमृतसर में) मनाया जाता है। मार्गशीर्ष संक्रान्ति मंगलवार को होने से देश के राजनीतिक व सामाजिक हालात अस्थिर होंगे। शेयरों में भी गिरावट होगी। सभी प्रकार के अनाज, दालें, सब्जियां व करियाना की वस्तुएँ, चीनी, खल-बिनौले आदि तेज भाव होंगे—**भौमस्य वारे यदि संक्रमश्च करोति पृथव्यामसुख महर्घता॥**

वि. संवत् २०६७, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाकः १९३२

सन् 2010 ई. (ता. 22 नवम्बर से 5 दिसम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः पूर्व में शुक्र तथा उससे ऊपर शनि दृश्य होगा। सायं मंगल–बुध पश्चिम क्षितिज में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न दिखाई देगा। 27 नवं. से मंगल पश्चिम में अस्त हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें: मार्ग. शक	ज़िल्हिज मु.	नवंबर	मार्ग. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	स्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५:४८	१	चंद्र	३१	२५	कृति	१	३०	शिव	४८	१८	बा	९	३५	१	१५	22	७	वृष	सूर्य सायन धनु में २१/४३, शक मार्गशीर्ष प्रा., मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ	७	०५	३७	१७	७	४	१७	२३
२५:४५	२	मंग	३८	३	रोहि	२	१८	सिद्ध	४४	८	तै	८	४४	२	१६	23	८	मि. ३२/२०	सत्य साईं बाबा जयन्ती	७	०६	३७	५५	७	५	१७	२३
२५:४३	३	बुध	३५	४८	मृग	२	८	साध्य	३९	१५	व	६	५६	३	१७	24	९	मिथुन	भ. ६/५५ से ३५/४८ तक, शनि हस्त (4) में ५६/०५, सौभाग्यसुन्दरी व्रत	७	०७	३८	३४	७	६	१७	२३
२५:४०	४	गुरु	३२	४५	आर्द्रा पुन	१ ५९	८ ३०	शुभ	३३	४८	बव	४	१७	४	१८	25	१०	क. ४४/५८	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20/53 (जालंधर), बुध मूल 1 धनु में ५२/१३	७	०८	३९	१५	७	७	१७	२३
२५:३८	५	शुक्र	२९	३	पुष्य	५७	१०	शुक्ल	२७	४८	कौ	०	५४	५	१९	26	११	कर्क		७	०९	३९	५९	७	८	१७	२३
२५:३३	६	शनि	२४	४५	श्ले.	५४	१८	ब्रह्म	२१	१८	व	२४	४५	६	२०	27	१२	सिं. ५४/१८	भ. २४/४५ से ५२/२३ तक, मंगल पश्चिम में अस्त १५/४५	७	१०	४०	४४	७	९	१७	२२
२५:३०	७	रवि	१९	५५	मघा	५०	५५	ऐंद्र	१४	२५	बव	१९	५५	७	२१	28	१३	सिंह	कालभैरवाष्टमी	७	११	४१	३०	७	१०	१७	२२
२५:२९	८	चंद्र	१४	४३	पूफा.	४७	१५	वैधृ विष्क	७ ५९	१३ ४३	कौ	१४	४३	८	२२	29	१४	सिंह	मंगल मूल 1 धनु में ५८/०८, राहु मूल 3 केतु आर्द्रा 1 में ३७/२५	७	१२	४२	१६	७	१०	१७	२२
२५:२८	९	मंग	९	८	उफा.	४३	१८	प्रीति	५२	००	गर	९	८	९	२३	30	१५	कं. १/१५	भ. ३६/१८ से,	७	१३	४३	०४	७	११	१७	२२
२५:२५	१०	बुध	३	२३	हस्त	३९	१८	आयु	४४	१८	वि	३	२३	१०	२४	दिसं	१६	कन्या	भ. ३/२३ तक, उत्पन्ना एकादशी व्रत स्मार्त, शुक्र स्वा. में ३२/४८	७	१४	४३	५४	७	१२	१७	२२
००:००	११	बुध	५७	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५:२३	१२	गुरु	५२	१०	चित्रा	३५	२५	सौभा	३६	४०	कौ	२४	५५	११	२५	2	१७	तु. ७/१८	उत्पन्ना एकादशी व्रत वैष्णव, सूर्य ज्ये. में ५४/३०	७	१५	४४	४५	७	१३	१७	२२
२५:२२	१३	शुक्र	४७	८	स्वा.	३१	५५	शोभ	२९	२५	गर	१९	३९	१२	२६	3	१८	तुला	भ. ४७/०८ से प्रारम्भ, प्रदोष व्रत	७	१६	४५	३६	७	१४	१७	२२
२५:२२	१४	शनि	४२	५३	विशा	२९	१०	अति	२२	४३	वि	१५	१	१३	२७	4	१९	वृ. १४/४५	भ. १५/०० तक, मास शिवरात्रि, मेला पुरमण्डल (जम्मू), देविका A	७	१७	४६	३१	७	१४	१७	२२
२५:१८	३०	रवि	३१	३८	अनु	२७	१८	सुक	१६	४३	चतु	११	१६	१४	२८	5	२०	वृश्चिक	अमावस-तर्पण, स्नानदानादि तीर्थेषु	७	१८	४७	२४	७	१५	१७	२२

A स्नान, श्रीबाला जी जयन्ती

चंद्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	७	८	१०	६	५	८	२
१२	१४	२९	३	२९	५	२०	१०	१०
३८	२९	१३	४४	३९	३५	२२	२	२
२	४१	२३	५६	४७	३०	१६	१४	१४
60 46	852 41	44 54	68 27	2 13	23 7	5 24	3 11	3 11
अनु ३	पूफा. १	ज्ये. ४	मूल २	पूभा ३	चित्रा ४	हस्त ४	मूल ४	आर्द्रा २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

बु. रा. ९ | ८ सू. मं. | शु. ७ | श. ६ | ५ चंद्र | ४ | ३ के. | २ | १ | १२ | ११ गुरू | १०

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 5 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	८	८	१०	६	५	८	२
१८	९	३	९	२९	८	२०	९	९
४३	२६	४३	३९	५६	२०	५३	४३	४३
००	४६	३९	३४	४	१८	४०	१०	१०
60 55	817 30	45 15	42 1	3 25	33 6	4 58	3 11	3 11
ज्ये. १	अनु २	मूल २	मूल ३	पूभा ३	स्वा १	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

मं. बु. रा. ९ | ८ सू. चं. | शु. ७ | श. ६ | ५ | ४ | ३ के. | २ | १ | १२ | ११ गुरू | १०

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष की अष्टमी तिथि (28 नवं.) को भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारी स्वरूप महाकाल भैरव की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। उत्पन्ना एकादशी (2 दिसं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्व प्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। त्रयोदशी से अमावस्या तक जम्मू के निकट मेला पुरमण्डल तथा देविका स्नान कुरुक्षेत्र में पुण्य पर्व मनाया जाता है। रविवार को मार्गशीर्ष अमावस होने से हरिद्वार आदि तीर्थों पर विशेष मेला होगा। **लोक भविष्य—** मार्गशीर्ष मास में (22 नवं. से 21 दिसं. तक) पाँच सोम तथा पाँच मंगलवार होने से शुभाशुभ (मिश्रित) फल प्राप्त होंगे। पाँच सोमवारों के प्रभावस्वरूप देश में धान्य आदि शीतकालीन फसलें अच्छी होने के संकेत हैं। परन्तु पाँच मंगलवार होने से देश के किसी प्रमुख नेता के लिए अनिष्टकर प्रमाणित होंगे। पाक, चीन आदि विरोधी देश के साथ सैनिक टकराव की सम्भावना होगी। केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल में अथवा किसी प्रान्त में सत्ता परिवर्तन के भी संकेत हैं। कई स्थानों पर हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ भी घटित होंगी—''यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥'' आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि से प्रजा में आक्रोश एवं गहन असन्तोष व्याप्त रहे। **व्यापारिक रुख—**25 नवं. को बुध धनु राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। रूई, कपास, सूत, चाँदी, घी, हल्दी में मन्दी की जगह तेजी का रुख बनेगा। 27 नवं. को मंगल पश्चिम में अस्त होने से रूई में मन्दी, गेहूँ, अलसी में विशेष तेजी। जौं, चना, गुड़ में भी तेजी रहे। 29 नवं. को मंगल धनु में आकर बुध एवं राहु के साथ मेल करेगा। चाँदी आदि धातु, सूत, सन, बिनौला, सरसों, घी तथा अनाजों में तेजी बने। **आकाश लक्षण—**ता. 22, 23 को मामूली वर्षा के योग हैं। साधारणतया उत्तरी भारत में मौसम शुष्क रहेगा। शकुन—चतुर्दशी या अमावस्या को सूर्य बादलों से ढक जावे तो आगामी दुर्भिक्ष के संकेत हैं। रूई, गुड़ सस्ते होने के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६७, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष — शाक: १९३२

सन् 2010 ई. (ता. 6 दिसम्बर से 21 दिसम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में तथा शनि पूर्व कपाल में दीखेगा। सायं बुध पश्चिम में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। 14 दिसं. को बुध पश्चिम में अस्त हो जाएगा। मंगल भी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें: मार्ग. शाके	हिजरी मु.	दिसम्बर	मार्गशीर्ष	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै.रा.	सू.अ.	स्प.क.	ष्ट.वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५:१५	१	चंद्र	३७	४०	ज्ये.	२६	३८	धृति	११	३८	किं	८	३९	१५	२९	6	२१	ध. २६/३८	गुरु पू.भा. (४) मीन में ४/३८ (9/07 घं. मिं.), यूरेनस मार्गी ०/२०	७	१९	४८	२१	७	१६	१७	२२
२५:१३	२	मंग	३७	१३	मूल	२७	२५	शूल	७	४३	बा	७	२७	१६	३०	7	२२	धनु	चन्द्रदर्शन, मु. ३०	७	२०	४९	१९	७	१७	१७	२२
२५:११	३	बुध	३८	२३	पूषा.	२९	४५	गंड	४	५८	तै	७	४८	१७	मु.	8	२३	म. ४५/३५	मुहर्रम (मु.) हिजरी सं. 1432 शुरु	७	२१	५०	१८	७	१८	१७	२२
२५:१०	४	गुरु	४१	१५	उषा.	३३	४३	वृद्धि	१	३	व	९	४९	१८	२	9	२४	मकर	भ. ९/४८ से ४१/१५ तक,	७	२२	५१	१८	७	१८	१७	२२
२५:०९	५	शुक्र	४५	३३	श्रव.	३९	३	ध्रुव	३	१५	बव	१३	२४	१९	३	10	२५	मकर	बुध वक्री २५/३५, श्रीरामविवाहोत्सव, श्रीपञ्चमी, नागपंचमी	७	२३	५२	१९	७	१९	१७	२२
२५:०८	६	शनि	५१	००	धनि	४५	३३	व्या.	४	३	कौ	१८	१७	२०	४	11	२६	कुं. १२/०८	पंचक प्रारम्भ १२/०८, स्कन्द (गुह) षष्ठी, चम्पा षष्ठी	७	२४	५३	२०	७	२०	१७	२२
२५:०६	७	रवि	५७	८	शत	५२	४३	हर्ष	५	३८	गर	२४	४	२१	५	12	२७	कुम्भ	भ. ५७/०८ से प्रा., मित्र सप्तमी	७	२५	५४	२२	७	२१	१७	२३
२५:०४	८	चंद्र	६०	००	पूभा.	६०	००	वज्र	७	३८	वि	३०	१७	२२	६	13	२८	मी. ४३/१८	भ. ३०/१८ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**	७	२६	५५	२२	७	२१	१७	२३
२५:०३	८	मंग	३	२५	पूभा.	०	५	सिद्धि	९	३८	बव	३	२५	२३	७	14	२९	मीन	**वक्री बुध पश्चिम में अस्त २१/१५**	७	२७	५६	२४	७	२२	१७	२३
२५:०३	९	बुध	९	१८	उभा.	७	३	व्य.	११	१८	कौ	९	१८	२४	८	15	३०	मीन	गण्डमूल 10/11 बाद, श्रीनन्दा नवमी	७	२८	५७	२८	७	२२	१७	२४
२५:०३	१०	गुरु	१४	८	रेव	१३	५	वरी	१२	१०	गर	१४	८	२५	९	16	पौष	मे. १३/०५	भ. ४५/५३ से, सूर्य मूल 1 धनु में १/३०, पौष संक्रान्ति, मु. ३०, A	७	२९	५८	३०	७	२३	१७	२४
२५:०२	११	शुक्र	१७	३८	अश्वि	१७	५०	परि	१२	५	वि	१७	३८	२६	१०	17	२	मेष	भ. १७/३८ तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत**, मंगल पू.षा. में ३४/५५, B	८	००	५९	३४	७	२३	१७	२४
२५:०२	१२	शनि	१९	३३	भर	२१	३	शिव	१०	४५	बा	१९	३३	२७	११	18	३	वृ. ३६/३८	शनि प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	८	०२	००	३६	७	२४	१७	२५
२५:०२	१३	रवि	१९	४८	कृति	२२	४३	सिद्ध	८	१३	तै	१९	४८	२८	१२	19	४	वृष		८	०३	०१	४२	७	२४	१७	२६
२५:०१	१४	चंद्र	१८	२८	रोहि	२२	५०	साध्य/शुभ	४/५३	३१/२८	व	१८	२८	२९	१३	20	५	मि. ५२/२३	भ. १८/२८ से ४७/०८ तक, **श्रीदत्तात्रेय जयन्ती**, पिशाचमोचन श्राद्ध, C	८	०४	०२	४८	७	२५	१७	२६
२५:००	१५	मंग	१५	४५	मृग	२१	३५	शुक्ल	५३	३३	बव	१५	४५	३०	१४	21	६	मिथुन	**मार्गशीर्ष पूर्णिमा स्नानदानादि**, शुक्र विशा. में २३/००, सूर्य सायन D	८	०५	०३	५२	७	२६	१७	२६

A पुण्यकाल सं. दोपहर 14/23 घं. मिं. तक, पंचक समाप्त १३/०५ **B** गीता जयन्ती **C** श्रीसत्यनारायण व्रत **D** मकर में ५४/१५, त्रिपुरभैरव जयन्ती

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	११	८	८	११	६	५	८	२
२७	२	१०	१०	००	१४	२१	९	९
५१	२३	३२	४७	३३	६	३५	१४	१४
४०	५४	३५	२९	४२	००	४०	३३	३३
61 1	715 46	45 40	45 1	5 8	44 19	4 15	3 11	3 11
ज्ये. ४	पूभा ४	मूल ४	मूल ४	पूभा ४	स्वा ३	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

मं. बु. रा. ९ — शुक्र ७ — ८ सूर्य — १० — शनि ६ — ११ — ५ — १२ चं. गु. — २ — ४ — १ — ३ के.

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	८	८	११	६	५	८	२
४	०	१५	२	१	१९	२२	८	८
५८	३८	५३	४३	१३	३६	३	५२	५२
५८	५२	१५	२५	१८	२२	४०	१७	१७
61 4	825 43	45 59	80 20	6 22	50 43	3 39	3 10	3 10
मूल २	मृ ३	मूल १	मूल १	पूभा ४	स्वा ४	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१० — ९ सू. मं. बु. रा. — ८ — ११ — ७ शुक्र — १२ गुरू — ६ शनि — १ — ३ के. चं. — ५ — २ — ४

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की पंचमी को श्रीराम विवाहोत्सव मनाया जाता है। इसी दिन श्रीपंचमी को कमलासन पर विराजित एवं कमलपुष्प लिए श्रीलक्ष्मी की सुवर्णमयी मूर्ति (जिसको दो गजेन्द्र दोनों ओर से स्नानार्थ दूध या जल अर्पण करा रहे हों) को सुवर्णादि के कलश पर स्थापित कर गणपति पूजन, मातृका पूजन एवं पंचादि उपचारों से लक्ष्मी का पूजन एवं श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त का पाठ करें, तदुपरान्त ब्राह्मण भोजन, दानादि करने से सौभाग्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। ता. 17 को मोक्षदा एकादशी का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजा, यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसी दिन गीता जयन्ती के उपलक्ष्य में भगवान् कृष्ण की पूजा-स्तुति करके श्रीमदभगवद्गीता का पाठ एवं अध्ययन करना चाहिए। इसी दिन भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। ता. 20 दिसं. को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंशावतार श्रीदत्तात्रेय की बालरूप में पूजा की जाती है। चन्द्रोदय व्याप्त पूर्णिमा (श्रीसत्यनारायण) का व्रत भी इसी दिन रखना प्रशस्त होगा। **लोक भविष्य**—मार्गशीर्ष पक्ष में पौष संक्रान्ति का प्रवेश होने से राजनैतिक क्षेत्रों में अस्थिरता एवं अशान्ति होने के संकेत हैं। कहीं अनाज की कमी के कारण दुर्भिक्ष एवं अराजकता व्याप्त हो। **मार्गशीर्षे धनुषि हि यदाऽयाति दिवाकरः। तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयः विपरीत सुखं भवेत्॥** अत्यधिक महंगाई के कारण सामान्य लोगों में सुख की कमी रहेगी। **पौष संक्रान्ति 16 दिसं.**, गुरुवार को ३० मुहूर्त्ति, दशमी तिथि एवं रेवती नक्षत्र कालीन प्रातः 7 बजकर 59 मिनट से प्रारम्भ होगी। स्नान-दान, जपादि का पुण्यकाल दोपहर 2 बजकर 23 मिं. तक रहेगा। **व्यापारिक रुख—10 दिसं.** को बुध वक्री होने से घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर बैंकिंग शेयर्ज तथा शेयर बाज़ार में तेजी बने। ता. 16 दिसं. को सूर्य धनु राशि में आकर मंगल, बुध एवं राहु के साथ मेल करेगा। रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चाँदी, कॉपर में तेजी बने। **संक्रान्ति राशिफल**—यह संक्रान्ति मकर, कुम्भ, मीन, मेष, सिंह, तुला राशि वालों के लिए लाभदायक व शुभ रहेगा। **शकुन—मार्ग. शु. २ (7 दिसं.)** को दक्षिण की वायु चले तो लोगों को कष्ट रहेंगे। **'मार्गशीर्ष सितेपक्षेद्वितीयाशनिवासरा। दक्षिण वहते वातोलोकानां कष्टदोभवेत्।'**

भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०६७, पौष कृष्ण पक्ष शाक : १९३२

(ता. 22 दिसम्बर 2010 ई. से 4 जन. 2011 ई. तक)

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः — जालन्धर

ग्रह दर्शन–25 दिसं. से बुध पूर्व में दृश्य हो जाएगा। उससे ऊपर (प्रातः) शुक्र होगा। प्रातः ही शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। सायं गुरु याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	पौष शक	मुहर्रम	दिसम्बर	पौष प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५:००	१	बुध	११	५३	आर्द्रा	१९	१५	ब्रह्म	४६	५०	कौ	११	५३	१	१५	22	७	मिथुन	शक पौष प्रारम्भ, सायन उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतुः प्रारम्भ,	८	०६	०४	५९	७	२६	१७	२७
२५:०१	२	गुरु	७	३	पुर्न	१६	००	ऐंद्र	३९	३३	गर	७	३	२	१६	23	८	क. १/५३	भ. ३४/२३ से, **वक्री बुध वृश्चिक में १/४८**	८	०७	०६	०३	७	२७	१७	२७
२५:०२	३	शुक्र	१	४०	पुष्य	१२	१५	वैधृ	३१	५३	वि	१	४०	३	१७	24	९	कर्क	भ. १/४० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय 20/56 (जालन्धर)	८	०८	०७	०९	७	२७	१७	२८
००:००	४	शुक्र	५५	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५:०२	५	शनि	४९	५८	श्ले.	८	१०	विष्क	२४	००	कौ	२२	५६	४	१८	25	१०	सिं. ८/१०	**क्रिसमिस डे (बड़ा दिन) क्रिश्चयन, वक्री बुध पूर्व से उदय ३०/५०**	८	०९	०८	१५	७	२७	१७	२८
२५:०३	६	रवि	४४	८	मघा पूफा.	४ ५१	०० ५५	प्रीति	१६	१०	गर	१७	३	५	१९	26	११	सिंह	भ. ४४/०८ से प्रारम्भ	८	१०	०९	२३	७	२७	१७	२९
२५:०३	७	चंद्र	३८	३०	उफा.	५६	८	आयु	८	२३	वि	११	१९	६	२०	27	१२	कं. १३/५५	भ. ११/१८ तक,	८	११	१०	३१	७	२८	१७	२९
२५:०३	८	मंग	३३	१८	हस्त	५२	४८	सौभा शोभ	० ५३	५३ ४५	बा	५	५४	७	२१	28	१३	कन्या	रुक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध	८	१२	११	४१	७	२९	१७	३०
२५:०५	९	बुध	२८	४०	चित्रा	५०	३	अति	४७	८	तै	०	५९	८	२२	29	१४	तु. २१/२०	भ. ५६/४० से, सूर्य पू.षा. में ७/०३	८	१३	१२	५१	७	२९	१७	३१
२५:०५	१०	गुरु	२४	४०	स्वा.	४७	५८	सुक	४१	००	वि	२४	४०	९	२३	30	१५	तुला	भ. २४/४० तक, **बुध मार्गी १३/२५**, पार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)	८	१४	१४	००	७	२९	१७	३१
२५:०६	११	शुक्र	२१	२०	विशा	४६	३८	धृति	३५	२८	बा	२१	२०	१०	२४	31	१६	वृ. ३१/५३	सफला एकादशी व्रत	८	१५	१५	१२	७	३०	१७	३२
२५:०८	१२	शनि	१८	५५	अनु.	४६	१०	शूल	३०	३८	तै	१८	५५	११	२५	जन.	१७	वृश्चिक	**शुक्र वृश्चिक में २३/०८, प्रदोष व्रत, जनवरी सन् 2011 ई. प्रा.,A**	८	१६	१६	२२	७	३०	१७	३३
२५:१०	१३	रवि	१७	२५	ज्ये.	४६	३८	गंड	२६	३३	व	१७	२५	१२	२६	2	१८	ध. ४६/३८	भ. १७/२५ से ४७/१३ तक, मास शिवरात्रि व्रत	८	१७	१७	३५	७	३०	१७	३४
२५:११	१४	चंद्र	१६	५८	मूल	४८	१०	वृद्धि	२३	१५	श	१६	५८	१३	२७	3	१९	धनु	मंगल उ.षा. में ५३/५०	८	१८	१८	४६	७	३०	१७	३४
२५:१३	३०	मंग	१७	३८	पूषा.	५०	५०	ध्रुव	२०	५०	ना	१७	३८	१४	२८	4	२०	धनु	भौमवती पौष अमावस, सूर्यग्रहण (देखें पृष्ठ 15), शुक्र अनु. में ४७/२३,	८	१९	१९	५६	७	३०	१७	३५

A बोधनाचार्य जयन्ती, सुरूप द्वादशी

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 28 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	८	७	११	६	५	८	२
१२	९	२१	२६	२	२५	२२	८	८
६	४५	१६	२	१	४६	२७	३०	३०
४०	१२	३	३७	१६	५५	१८	२	२
61 9	846 34	46 17	17 53	7 30	55 38	2 59	3 11	3 11
मूल ४	उफा ४	पूषा ३	ज्ये. ३	पूभा ४	विशा २	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१० / ९ सू. मं. रा. / ८ बुध / ७ शु. / ११ / १२ गुरू / ६ चं. श. / १ / ३ के. / ५ / २ / ४

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	७	११	७	५	८	२
१९	१४	२६	२७	२	२	२२	८	८
१४	४८	४०	६	५६	२८	४६	७	७
४८	१४	५२	५१	५८	७	१२	४७	४७
61 11	764 44	46 34	38 39	8 34	59 21	2 18	3 11	3 11
पूषा २	पूषा १	उषा १	ज्ये. ४	पूभा ४	विशा ४	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

१० / ९ सू. चं. मं. रा. / ८ बु. शु. / ७ / ११ / १२ गुरू / ६ शनि / १ / ३ के. / ५ / २ / ४

पौष कृष्ण पक्षफल—

पौष मास में धान्य, गेहूँ, चावल, चने आदि अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल, मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **सफला एकादशी** (31 दिसं.) का व्रत विधिपूर्वक करने से सर्वप्रकार के पापों का क्षय होता है। इस दिन भगवान् विष्णु की पूजा करने के उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन, दक्षिणा आदि का दान करने का विशेष फल होता है। **भौमवती अमावस** (4 जन.) को सूर्यग्रहण भी होने के कारण हरिद्वार, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर स्नानदानादि करने का विशेष माहात्म्य होगा। मन्त्र-तन्त्र आदि सिद्धि के लिए भी भौमवती अमावस विशेष रूप से प्रशस्त मानी गई ह। **व्यापारिक रुख**—23 दिसं. को वक्री बुध वृश्चिक राशि में आकर शनि की दृष्टि में आएगा। पौष मास में पाँच बुधवार भी हैं। व्यापारिक जिन्सों में विशेष घटाबढ़ी होगी। घी, तेल, सरसों, रुई, चाँदी, सोना, काली मिर्च, क्रूड-आयल में तेजी बनेगी। 30 दिसं. को बुध मार्गी होने से एरण्ड, बिनौला, जौं, चाँदी, सोने में तेजी बनेगी। ता. 1 जन. को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। साफ्टवेयर शेयर्ज, चांदी, रुई, खाण्ड, चनें, क्रूड-आयल में अच्छी तेजी बनेगी। 4 जन. को भौमवती अमावस भी सर्व प्रकार के अनाज जैसें धान्य, गेहूँ, उड़द, मूँग, चने, खल, गुड़, खाद्य-तेल भाव होंगे। राहु-मंगल का योग भी चल रहा है। जोकि केन्द्रीय मंत्रिमंडल के प्रधान पद के लिए अशुभफली होगा। वर्ष कम हों—**राहुरंगारकश्च राशि ऋक्षगतौ तदा। भयाभयं सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते॥**

आकाश लक्षण—उत्तर-पश्चिमी भारत में कुछ क्षेत्रों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा होने के योग हैं। पक्ष के उत्तरार्द्ध भाग में कहीं शीत लहर के साथ वर्षा एवं ओलावृष्टी होगी।

वि. संवत् २०६७, पौष शुक्ल पक्ष | शाक: १९३२ | तारीखें | सन् 2011 ई. (ता. 5 जनवरी से 19 जनवरी तक) | भा.स्टें.टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः

ग्रह दर्शन—प्रातः बुध-शुक्र पूर्व कपाल में तथा शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर होगा। सायं गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	पौष शक	मुहर्रम मु.	जनवरी	माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५:१५	१	बुध	१९	३०	उ.षा.	५४	४०	व्या.	१९	२३	बव	१९	३०	१५	२९	5	२१	म. ५६/४०	चन्द्रदर्शन, मु. ४५,	८	२०	२१	०७	७	३०	१७	३६
२५:१७	२	गुरु	२२	३५	श्रव	५९	४३	हर्ष	१८	५०	कौ	२२	३५	१६	सफ	6	२२	मकर	गुरु उ.भा. (1) में ३४/१३, सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, आरोग्य व्रत	८	२१	२२	१७	७	३०	१७	३७
२५:१८	३	शुक्र	२६	५३	धनि	६०	००	वज्र	१९	८	गर	२६	५३	१७	२	7	२३	कुं. ३२/३५	भ. ५९/३३ से, पंचक प्रारम्भ ३२/३५, बुध मूल 1 धनु में ४२/१०	८	२२	२३	२७	७	३१	१७	३८
२५:२०	४	शनि	३२	१३	धनि	५	४५	सिद्धि	२०	१८	वि	३२	१३	१८	३	8	२४	कुम्भ	भ. ३२/१३ तक, मंगल मकर में ११/१५	८	२३	२४	३७	७	३१	१७	३९
२५:२१	५	रवि	३८	१८	शत	१२	४०	व्य.	२२	३	बव	५	१६	१९	४	9	२५	कुम्भ		८	२४	२५	४७	७	३१	१७	३९
२५:२३	६	चंद्र	४४	४३	पूभा	२०	३	वरी	२४	८	कौ	११	३१	२०	५	10	२६	मी. ३/१०		८	२५	२६	५६	७	३१	१७	४०
२५:२५	७	मंग	५०	५५	उभा.	२७	२५	परि	२६	१३	गर	१७	४९	२१	६	11	२७	मीन	भ. ५०/५५ से, सूर्य उ.षा. में ११/४५, मार्तण्ड सप्तमी	८	२६	२८	०५	७	३१	१७	४१
२५:२८	८	बुध	५६	२३	रेव	३४	१८	शिव	२७	५०	वि	२३	३९	२२	७	12	२८	मे. ३४/१८	भ. २३/४० तक, पंचक समाप्त ३४/१८	८	२७	२९	१३	७	३१	१७	४२
२५:३२	९	गुरु	६०	००	अश्वि	४०	८	सिद्ध	२८	४५	बा	२८	३१	२३	८	13	२९	मेष	लोहड़ी पर्व	८	२८	३०	१८	७	३१	१७	४३
२५:३३	९	शुक्र	०	३८	भर	४४	३३	साध्य	२८	३३	कौ	०	३८	२४	९	14	मा	मेष	सूर्य मकर में २८/०५, माघ संक्रान्ति, मु. १५, पुण्यकाल सं. मध्याह्न A	८	२९	३१	२५	७	३०	१७	४३
२५:३५	१०	शनि	३	१०	कृति	४७	८	शुभ	२६	५८	गर	३	१०	२५	१०	15	२	वृ. ०/२०	भ. ३३/३० से, प्रारम्भ	९	००	३२	३२	७	३०	१७	४४
२५:३८	११	रवि	३	४८	रोहि	४७	५०	शुक्ल	२३	५५	वि	३	४८	२६	११	16	३	वृष	भ. ३/४८ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत	९	०१	३३	३७	७	३०	१७	४५
२५:४०	१२	चंद्र	२	३०	मृग	४६	४०	ब्रह्म	१९	२०	बा	२	३०	२७	१२	17	४	मि. १७/२८	सोम प्रदोष व्रत, शुक्र ज्ये. में ४१/१३	९	०२	३४	४३	७	३०	१७	४६
००:००	१३	चंद्र	५९	२०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५:४३	१४	मंग	५४	३३	आर्द्रा	४३	५३	ऐंद्र	१३	२३	गर	२६	५७	२८	१३	18	५	मिथुन	भ. ५४/३३ से,	९	०३	३५	४४	७	३०	१७	४७
२५:४५	१५	बुध	४८	२५	पुर्न	३९	४३	वैधृ विष्क	६ ५७	८ ५५	वि	२१	२९	२९	१४	19	६	क. २५/५०	भ. २१/३० तक, पौष पूर्णिमा, बुध पू.षा. में १३/४५, माघस्नान B	९	०४	३६	४८	७	३०	१७	४८

A बाद, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ

B प्रारम्भ श्रीसत्यनारायण व्रत

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	९	८	११	७	५	८	२
२७	२२	२	४	४	१०	२३	७	७
२४	८	५४	१७	९	३४	१	४२	४२
५	३२	१४	२७	२०	३९	४३	२१	२१
61 8	721 12	46 49	68 20	9 39	62 32	1 28	3 11	3 11
उषा १	श्रव २	उषा २	मूल २	उभा १	अनु ३	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

भाव	ग्रह
१०	मं.
९	सू. बु. रा.
८	शु.
११	
७	
१२	चं. गु.
६	श.
१	
३	के.
५	
२	
४	

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 19 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	२	९	८	११	७	५	८	२
४	२२	८	१२	५	१७	२३	७	७
३१	३८	२२	५४	१९	५९	९	२०	२०
४६	११	२७	५९	२८	५	४६	५	५
61 3	864 00	46 59	79 57	10 29	64 42	0 44	3 10	3 10
उषा ३	पूर्न १	उषा ४	मूल ४	उभा १	अनु. १	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

भाव	ग्रह
११	
९	बु. रा.
१०	सू. मं.
१२	गु.
८	शु.
१	
७	
२	
४	
६	शनि
३	चं. के.
५	

पौष शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की द्वितीया को गायों के सींगों को धोकर लिए जल सहित स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण करके बालेन्दु (द्वितीया) के चन्द्रमा का गन्धादि से पूजन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित विविध भोजन करवाकर सन्तुष्ट करें। स्वयं भूमि पर शयन करें। इससे रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्राप्ति होती है। माघ संक्रान्ति से एक दिन पूर्व लोहड़ी पर्व (13 जन.) सारे पंजाब व अन्य प्रदेशों में लकड़ियां, समिधा, रेवड़ियां, तिल सहित अग्नि प्रदीप्त करके अग्नि पूजा के रूप में मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति (14 जन.) को स्नानादि उपरान्त तिलों से हवन, तिलयुक्त वस्तुओं का दान तथा भगवान् विष्णु व सूर्यदेव की उपासना का विधान है। इस दिन हरिद्वार, काशी आदि तीर्थों पर स्नानदानादि का भी विशेष माहात्म्य होता है। वहाँ न जा सके तो गृह में ही श्रद्धापूर्वक स्नान करें, वहीं उनका स्मरण करें अथवा 'गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधं कुरू॥' का उच्चारण करें। पुत्रदा एकादशी (16 जन.) का व्रत विधिपूर्वक रखने से दम्पत्ति को मनोवांछित पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। पौष पूर्णिमा (19 जन.) को हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग आदि तीर्थों पर माघ स्नानादि का विशेष माहात्म्य प्रारम्भ होगा। **व्यापारिक रुख—**माघ संक्रान्ति १५ मुहूर्त्ति, शुक्रवार को होने से लाल मिर्च, लाल चन्दन, गेहूं, जौं, चना, चावल, गुड़, शक्कर में मन्दी, तेल, सरसों, सोना, चाँदी तेज होंगे। **संक्रान्ति राशिफल—**माघ संक्रान्ति मकर, मीन, मेष, वृष, कन्या, तुला, वृश्चिक राशि वालों के लिए शुभ एवं कल्याणकारक रहेगी।

शकुन—पौष शु. ९ या ११ को बादल चाल हो तो सब धान्य महंगे होंगे।

वि. संवत् २०६७, माघ कृष्ण पक्ष	शाक: १९३२	तारीखें	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	सन् 2011 ई. (ता. 20 जनवरी से 3 फरवरी तक) सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:	भा.रा.टा. जालन्धर

दिनमान घटी-पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	पौष शक	मकर सू.	जनवरी	माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन—प्रातः बुध-शुक्र पूर्व कपाल में तथा शनि पश्चिम कपाल के प्रारम्भ में होगा। सायं गुरु पश्चिमी कपाल में दृश्य होगा। मंगल अस्त ही चल रहा है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५:५३	१	गुरु	४१	२०	पुष्य	३४	३३	प्रीति	४९	००	बा	१४	५३	३०	१५	20	७	कर्क	सूर्य सायन कुम्भ में १६/५०, गुरु पुष्य योग:	९	०५	३७	५१	७	२९	१७	५०
२५:५५	२	शुक्र	३३	४०	श्ले.	२८	४५	आयु	३९	३८	तै	७	३०	मा	१६	21	८	सिं. २८/४५	भ. ५९/४५से, मंगल श्रवण में 7/19 घं. मिं., शक माघ प्रारम्भ	९	०६	३८	५४	७	२९	१७	५१
२६:०३	३	शनि	२५	५३	मघा	२२	४५	सौभा	३०	१०	वि	२५	५३	२	१७	22	९	सिंह	भ. २५/५३ तक, **श्रीगणेश संकट चौथ व्रत**, चन्द्रोदय 20 घं. 55 मिं. **A**	९	०७	३९	५३	७	२८	१७	५३
२६:०३	४	रवि	१८	१५	पूफा.	१६	५५	शोभ	२०	५०	बा	१८	१५	३	१८	23	१०	कं. ३०/३०	नेताजी सुभाषचन्द्र जयन्ती	९	०८	४०	५४	७	२८	१७	५३
२६:०५	५	चंद्र	११	८	उफा.	११	३५	अति	१२	००	तै	११	८	४	१९	24	११	कन्या	सूर्य श्रव. में १७/४८,	९	०९	४१	५५	७	२८	१७	५४
२६:०८	६	मंग	४	५३	हस्त	७	८	सुक. / धृति	३ / ५६	५३ / ३३	व	४	५३	५	२०	25	१२	तु. ३५/१५	भ. ४/५३ से ३२/१८ तक, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	९	१०	४२	५४	७	२७	१७	५४
००:००	७	मंग	५९	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२६:१०	८	बुध	५५	४०	चित्रा	३	४३	शूल	५०	१३	बा	२७	४०	६	२१	26	१३	तुला	भारत गणतन्त्र दिवस, गुरु उ.भा. (2) में २१/०५, शनि वक्री १०/३३	९	११	४३	५४	७	२७	१७	५५
२६:१०	९	गुरु	५३	००	स्वा.	१	३०	गंड	४४	५३	तै	२४	२०	७	२२	27	१४	वृ. ४५/४०		९	१२	४४	५३	७	२७	१७	५५
२६:१५	१०	शुक्र	५१	३८	विशा	०	३५	वृद्धि	४०	३८	व	२२	१९	८	२३	28	१५	वृश्चिक	भ. २२/२० से ५१/३८ तक, बुध उ.षा. में ४१/५५	९	१३	४५	५९	७	२६	१७	५६
२६:१८	११	शनि	५१	२८	अनु	०	५३	ध्रुव	३७	१८	बव	२१	३३	९	२४	29	१६	वृश्चिक	षट्तिला एकादशी व्रत, शुक्र मूल 1 धनु में ५१/२५	९	१४	४६	४९	७	२६	१७	५७
२६:२३	१२	रवि	५२	३०	ज्ये.	२	२५	व्या.	३४	५५	कौ	२१	५९	१०	२५	30	१७	ध. २/२५	बुध मकर में ५६/१३ (29/54 घं. मिं.), तिल द्वादशी	९	१५	४७	४४	७	२५	१७	५८
२६:२८	१३	चंद्र	५४	३५	मूल	५	३	हर्ष	३३	२३	गर	२३	३३	११	२६	31	१८	धनु	भ. ५४/३५ से, सोम प्रदोष व्रत, राहु मूल (2) केतु मृग (4) में ३१/३५, **B**	९	१६	४८	४२	७	२४	१७	५९
२६:३०	१४	मंग	५७	३८	पूषा.	८	४०	वज्र	३२	३३	वि	२६	७	१२	२७	फर	१९	म. २४/४३	भ. २६/०८ तक, फरवरी सं. 2011 ई. प्रारम्भ, मास शिवरात्रि व्रत	९	१७	४९	३५	७	२४	१८	००
२६:३३	३०	बुध	६०	००	उषा.	१३	१०	सिद्धि	३२	२५	चतु	२९	३७	१३	२८	2	२०	मकर	माघ (मौनी) अमावस, मेला कुरुक्षेत्र, हरिद्वार आदि तीर्थस्नान 2 दिन	९	१८	५०	३०	७	२४	१८	०१
२६:३६	३०	गुरु	१	३५	श्रव	१८	३५	व्य.	३३	००	ना	१	३५	१४	२९	3	२१	कुं. ५१/३३	माघ अमावस-स्नानदानादि, पंचक प्रारम्भ ५१/३३, महोदय योग 8/00 तक	९	१९	५१	२२	७	२३	१८	०१

A (जालन्धर), गौरी चतुर्थी, सौभाग्य सुन्दरी व्रत B मेरु त्रयोदशी (जैन)

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	९	८	११	७	५	८	२
११	४	१३	२२	६	२५	२३	६	६
३८	३९	५१	३६	३५	३७	१२	५७	५७
५७	५८	५१	४२	१४	१९	३५	५१	५१
60 59	833 6	47 9	86 47	11 14	66 25	0 2	3 11	3 11
श्रव ९	चित्रा ४	श्रव २	पूषा ३	उभा ९	ज्ये. ३	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा ९
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१० सू. मं.; ११; ९ बु. रा.; ८ शु.; ७ चंद्र; ६ श.; ५; ४; ३ के.; २; १; १२ गु.

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	९	११	८	५	८	२
१९	१८	२०	४	८	४	२३	६	६
४६	३६	९	३२	७	३४	९	३२	३२
३५	३१	३५	४१	५९	११	२१	२५	२५
60 54	729 6	47 18	92 52	11 1	67 55	0 53	3 11	3 11
श्रव ३	श्रव ३	श्रव ४	उषा ३	उभा २	मूल २	हस्त ४	मूल २	मृग ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

१० सू. चं. मं. बु.; ११; ९ शु. रा.; ८; ७; ६ श.; ५; ४; ३ के.; २; १; १२ गु.

माघ कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष की चतुर्थी (22 जन.) को श्रीगणेश संकट चौथ के व्रत का संकल्प **"गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये"** मन्त्र द्वारा प्रातः स्नानादि के उपरान्त व्रत करके रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र की लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय होने पर **'ॐ सोम् सोमाय नमः'** द्वारा अर्घ्य देने से भगवान् गणेश जी की कृपा से अनेक मानसिक एवं कायिक कष्टों का निवारण हो जाता है। षट्तिला एकादशी (29 जन.) को तिल मिश्रित जल से स्नान करके तिलों द्वारा श्रीविष्णु पूजा एवं हवन करें। फिर तिलों से निर्मित मोदन, बर्फी आदि का दान करें तथा स्वयं उनका सेवन करें तो अनेक पापों का नाश होता है। माघ मौनी अमावस (2 फर.) को हरिद्वार, प्रयाग आदि तीर्थों पर स्नान, तर्पण, दान, जपादि का विशेष माहात्म्य रहेगा। 3 फर. को भी यद्यपि अमावस्या प्रातः 8 बजकर 1 मिं. तक है, परन्तु श्रवण नक्षत्र, व्यतिपात योग के संयोग से इस दिन भी माघ अमावस का माहात्म्य रहेगा। **लोक भविष्य**—माघ मास में **पाँच बृहस्पतिवार** होने से देश में कहीं उपद्रव, बाढ़, हिंसा आदि की घटनाएँ होंगी। कुछ प्रदेशों में दुर्भिक्ष का भी भय रहेगा—**यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते॥** दैनिक जन-उपयोगी वस्तुओं, धान्यादि की कीमतों में वृद्धि के कारण सामान्य वर्ग में गहन असन्तोष रहेगा। परन्तु पाँच शुक्रवार भी होने से कुछ क्षेत्रों में अनाज आदि की फसल अच्छी होगी। कुछ विशेष वर्ग के लोगों में सुख-सुविधाओं के साधनों में वृद्धि होगी। अधिकांश लोग भोग-विलासादि कार्यों में प्रवृत्त रहेंगे। जनसंख्या में वृद्धि होगी। **व्यापारिक रुख**—29 जन. को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। **यथा-यदा च धनु राशिस्थो दैत्याचार्यः प्रवर्तते। महर्घ च विज्ञानीयात्सर्वं विनश्यति॥** धान्य, अनाज, माल-पंसारी एवं शेयरों के भाव तेज होंगे। **आकाश लक्षण**—हि.प्र., पंजाब, जम्मू-कश्मीर में शीत लहर एवं खण्ड वृष्टि के योग हैं।

वि. संवत् २०६७, माघ शुक्ल पक्ष — शाक: १९३२ — सन् 2011 ई. (ता. 4 फरवरी से 18 फरवरी तक)

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर–वसन्त ऋतु: — भा.स्टैं.टा. — **जालन्धर**

ग्रह दर्शन—ता. 7 फर. से बुध पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रातः शुक्र पूर्व कपाल में तथा शनि पश्चिमी कपाल में दिखाई देगा। सायं गुरु पश्चिम क्षितिज में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	माघ शक	सफर मु.	फरवरी	माघ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२६:३८	१	शुक्र	६	२०	धनि	२४	४३	वरी	३४	८	बव	६	२०	१५	३०	4	२२	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, मु. १५	९	२०	५२	१६	७	२३	१८	२
२६:४३	२	शनि	११	५३	शत	३१	३३	परि	३५	४८	कौ	११	५३	१६	रबि	5	२३	कुम्भ	रबि-उल्लावल (मुस्लि.) प्रा., बाबा लाल जयन्ती	९	२१	५३	०५	७	२२	१८	३
२६:४८	३	रवि	१७	५८	पूभा.	३८	५३	शिव	३७	५०	गर	१७	५८	१७	२	6	२४	मीं. २२/००	भ. ५१/१० से, **श्रीगणेश तिल चतुर्थी, सूर्य धनि. में २५/४८, (A)**	९	२२	५३	५४	७	२१	१८	४
२६:५३	४	चंद्र	२४	२५	उभा.	४६	२५	सिद्ध	४०	५	वि	२४	२५	१८	३	7	२५	मीन	भ. २४/२५ तक, बुध पूर्व में अस्त ०/०८,	९	२३	५५	२८	७	२०	१८	५
२६:५८	५	मंग	३०	५३	रेव	५३	५०	साध्य	४२	१५	बा	३०	५३	१९	४	8	२६	मे. ५३/५०	**वसन्त पंचमी, पंचक समाप्त ५३/५०, सरस्वती जयन्ती**	९	२४	५५	२५	७	१९	१८	६
२७:०३	६	बुध	३६	५०	अश्वि	६०	००	शुभ	४४	००	कौ	३	५२	२०	५	9	२७	मेष		९	२५	५६	०८	७	१८	१८	७
२७:०५	७	गुरु	४१	४८	अश्वि	०	४०	शुक्ल	४४	५८	गर	९	१९	२१	६	10	२८	मेष	भ. ४१/४८ से प्रा., शुक्र पू.षा. में ३६/४५, **रथ-आरोग्य सप्तमी, (B)**	९	२६	५६	५३	७	१८	१८	८
२७:०७	८	शुक्र	४५	२३	भर	६	२३	ब्रह्म	४४	५३	वि	१३	३६	२२	७	11	२९	वृ. २२/३५	भ. १३/३८ तक, भीष्माष्टमी, गुरु उभा (3) में ५९/४५	९	२७	५७	३४	७	१७	१८	८
२७:१३	९	शनि	४७	८	कृति	१०	३५	ऐंद्र	४३	२३	बा	१६	१६	२३	८	12	३०	वृष		९	२८	५८	१३	७	१६	१८	९
२७:१८	१०	रवि	४६	४८	रोहि	१२	५५	वैधृ	४०	२०	तै	१६	५८	२४	९	13	फा.	मि. ४३/२०	सूर्य कुम्भ में १/१०, **फाल्गुन संक्रान्ति**, 45 मु., पुण्यकाल सं. मध्याह्न तक,	९	२९	५८	५१	७	१५	१८	१०
२७:२३	११	चंद्र	४४	५	मृग	१३	१५	विष्क	३५	३८	व	१५	२७	२५	१०	14	२	मिथुन	भ. १५/२८ से ४४/०५ तक, **जया एकादशी व्रत**, बुध धनि. में ३३/२५	१०	००	५९	२८	७	१४	१८	११
२७:२८	१२	मंग	३९	५३	आर्द्रा	११	३०	प्रीति	२९	१८	बव	११	५९	२६	११	15	३	क. ५३/५३	भीष्मद्वादशी, **मंगल कुम्भ में २३/५३**	१०	०२	००	०२	७	१३	१८	१२
२७:३३	१३	बुध	३३	४०	पुर्न	७	५०	आयु	२१	३०	कौ	६	४७	२७	१२	16	४	कर्क	प्रदोष व्रत, मेला जैसलमेर (राजस्थान) प्रारम्भ	१०	०३	००	३६	७	१२	१८	१३
२७:३८	१४	गुरु	२६	००	पुष्य / श्ले.	२ / ५६	३८ / १०	सौभा	१२	३०	व	२६	००	२८	१३	17	५	सिं. ५६/१०	भ. २६/०० से ५१/४० तक, श्रीसत्यनारायण व्रत	१०	०४	०१	०६	७	११	१८	१४
२७:४३	१५	शुक्र	१७	२०	मघा	४९	००	शोभ / अति	२ / ५२	३५ / ३	बव	१७	२०	२९	१४	18	६	सिंह	माघ पूर्णिमा स्नानदानादि, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, बुध कुम्भ में (C)	१०	०५	०१	३७	७	१०	१८	१५

(A) मंगल धनि. में ५६/५०, बुध श्रवण में २४/४३, वरद् चौथ, कुन्द चतुर्थी गौरी तृतीया व्रत **(B)** पुत्र सप्तमी व्रत, अचला-भानु सप्तमी, श्री माधवाचार्य जयन्ती
(C) २५/५५ माघ स्नान समाप्त, सूर्य सायन मीन में ५६/५३, वसन्त ऋतु: प्रारम्भ

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	९	९	११	८	५	८	२
२७	२४	२६	१७	९	१३	२२	६	६
५३	२७	२८	१६	४६	४१	५९	६	६
५	५	१३	३६	२६	३३	२०	५९	५९
60 42	744 5	47 22	99 00	12 40	69 2	1 42	3 11	3 11
धनि २	भर ४	धनि १	श्रव ३	उभा २	पूषा १	हस्त ४	मूल २	मृग ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१० सू. मं. बु.; ११; ९ शु. रा.; १२ गु.; ८; १ चन्द्र; ७; २; ४; ६ श.; ३ के.; ५

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	१०	९	११	८	५	८	२
४	२९	१	२९	११	२१	२२	५	५
५७	५४	५९	७	१६	४७	४५	४४	४४
२५	३२	५१	१९	३२	११	२०	४३	४३
60 30	909 34	47 23	105 2	13 8	69 49	2 22	3 10	3 10
धनि ४	श्ले ४	धनि ३	धनि २	उभा 3	पूषा ३	हस्त ४	मूल २	मृग ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

११ सू. मं.; गुरू १२; बु. १०; १; ९ शु. रा.; २; ८; ३ के.; ५; ७; चं. ४; ६ शनि

माघ शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष में तिल चतुर्थी (6 फर.) के दिन श्रीगणेश जी की कृपा प्राप्त करने के लिए व्रत एवं गणेश पूजन करके गर्म वस्त्र, फल, गुड़ व तिल के लड्डुओं आदि का भोग लगाकर प्रसाद बांटे तथा इस दिन लाल वस्त्र पहिने, उत्तराभिमुख होकर 'ॐ गणेशाय नमः' मंत्र का जप करें। ता. 8 फर. को **वसन्त पंचमी** के दिन भगवान् श्रीविष्णु, श्रीकृष्ण-राधा व सरस्वती की पूजा पीले पुष्पों, गुलाल, अर्घ्य, धूप, दीप, नैवेद्य आदि द्वारा करके फिर पीले एवं मीठे चावलों एवं पीले हलुवा का श्रद्धा से भोग लगाकर स्वयं सेवन करने की परम्परा है। रथ सप्तमी (10 फर.) को भगवान् सूर्यनारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसी दिन जगत् को अपने प्रकाश से आलोकित किया था। अतः यह सूर्य जयन्ती भी है। इस सप्तमी का विधि अनुसार व्रत रखने से पुत्र सन्तति, आरोग्य, धनादि की प्राप्ति होती है। जया एकादशी (14 फर.) का विधिवत् व्रत, पाठादि करने से पिशाचादि योनियो से छुटकारा मिलता है। माघी पूर्णिमा (18 फर.) को तीर्थ जल से स्नान करके देवताओं, पितरों आदि का तर्पण करने के बाद तिल, गुड़, अनाज, घी, फल, वस्त्रों आदि का दान करने का विशेष फल प्राप्त होता है। फाल्गुन संक्रान्ति 13 फर., रविवार को घोरा नामक शूद्रों व नीचों को लाभ व सुख देने वाली होगी तथा रोहिणी नक्षत्रानुसार नन्दा नामक द्विजों को लाभप्रद एवं उन्हें सुखकारक होगी। ता. 15 को मंगल कुम्भ राशि में जाकर सूर्य के साथ मेल करेगा। जिससे गेहूँ, चने, धान्य चावल आदि अनाज एवं सोना, गुड़, खाण्ड, खलादि में तेजीकारक होंगे। रूई व चाँदी में घटा-बढ़ी होगी। **भूसुते कुंभ राशिस्थे सर्वधान्य महर्घता। एवं प्रजायते हिअर्घ लोक मध्ये तु निर्भयम्॥** कुंभ राशि में ही मंगल का अस्त होना समाज में चोर लूटमार, भ्रष्टाचार एवं अग्नि आदि घटनाओं में वृद्धि कारक होगा। राजनेताओं में परस्पर विग्रह हो—**चौरवह्णि भयं देशे कुम्भेऽस्त राज विग्रहः॥ आकाश लक्षण**—पक्ष के उत्तरार्ध भाग में उत्तरी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा एवं कहीं बूंदा-बांदी होगी। **शकुन**—माघ शु. पंचमी को बादल चाल या वृष्टि होना आगामी सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६७, फाल्गुन कृष्ण पक्ष | शाकः १९३२ | तारीखें

सन् 2011 ई. (ता. 19 फरवरी से 4 मार्च तक) सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतुः | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	फा. शक	रवि मु.	फरवरी	फाल्गु. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में तथा शनि पश्चिम में दिखेंगे। सायं गुरु पश्चिम में दृश्य होगा। मंगल-बुध अभी अस्त हैं।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२७:४८	१	शनि	८	८	पू.फा.	४१	३५	सुक	४१	२०	कौ	८	८	३०	१५	19	७	कं. ५४/४५	सूर्य शत. में ३७/४०	१०	०६	०२	०४	७	९	१८	१६
अवम्	२	शनि	५८	४८	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२७:५३	३	रवि	४९	५३	उफा.	३४	२५	धृति	३०	५३	व	२४	२१	फा	१६	20	८	कन्या	भ. २४/२३ से ४९/५३ तक, शक फाल्गुन प्रारम्भ, स. सि. योगः	१०	०७	०२	३६	७	८	१८	१७
२७:५५	४	चंद्र	४१	४८	हस्त	२७	५५	शूल	२०	५५	बव	१५	५१	२	१७	21	९	तु. ५५/०३	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/00 (जालन्धर)	१०	०८	०२	५६	७	७	१८	१७
२८:००	५	मंग	३४	५५	चित्रा	२२	३३	गंड	११	५०	कौ	८	२२	३	१८	22	१०	तुला	बुध शत. में १०/५३, शुक्र उ.षा. में ७/०५	१०	०९	०३	२०	७	६	१८	१८
२८:०५	६	बुध	२९	३३	स्वा	१८	३५	वृद्धि ध्रुव	३ ५७	५५ १५	गर	२	१४	४	१९	23	११	तुला	भ. २९/३३ से ५७/४३ तक, मंगल शत. में ५०/४०	१०	१०	०३	४२	७	५	१८	१९
२८:०८	७	गुरु	२५	५३	विशा	१६	२०	व्या.	५२	३	बव	२५	५३	५	२०	24	१२	वृ. १/४५	शुक्र मकर में ५७/५३, स. सि. यो. (13/36 घं. मिं. से)	१०	११	०४	०३	७	४	१८	१९
२८:१३	८	शुक्र	२४	००	अनु	१५	४८	हर्ष	४८	१५	कौ	२४	००	६	२१	25	१३	वृश्चिक	जानकी व्रत, स. सि. यो. (13/22 तक)	१०	१२	०४	२३	७	३	१८	२०
२८:१८	९	शनि	२३	५५	ज्ये.	१७	३	वज्र	४५	४८	गर	२३	५५	७	२२	26	१४	ध. १७/०३	भ. ५४/४० से प्रारंभ	१०	१३	०४	४२	७	२	१८	२१
२८:२३	१०	रवि	२५	२५	मूल	१९	४८	सिद्धि	४४	३३	वि	२५	२५	८	२३	27	१५	धनु	भ. २५/२५ तक, गुरु उ.भा. (४) में १०/४३, स्वा. दयानन्द सरस्वतीA	१०	१४	०४	५८	७	१	१८	२२
२८:२७	११	चंद्र	२८	१५	पूषा.	२३	५५	व्य.	४४	१३	बा	२८	१५	९	२४	28	१६	म. ४०/०८	विजया एकादशी व्रत	१०	१५	०५	१४	७	०	१८	२३
२८:३३	१२	मंग	३२	१५	उषा.	२९	१०	वरी	४४	४५	कौ	०	१५	१०	२५	मा.	१७	मकर	मार्च, सं. 2011 ई. प्रारम्भ, बुध पू.भा. में २१/२०	१०	१६	०५	२५	६	५८	१८	२३
२८:३८	१३	बुध	३७	५	श्रव	३५	१०	परि	४५	५०	गर	४	४०	११	२६	2	१८	मकर	भ. ३७/०५ से, प्रदोष व्रत, श्री महाशिवरात्रि व्रत	१०	१७	०५	३७	६	५७	१८	२४
२८:४३	१४	गुरु	४२	३०	धनि	४१	४८	शिव	४७	२३	वि	९	४८	१२	२७	3	१९	कुं. ८/२८	भ. ९/५० तक, पंचक प्रारम्भ ८/२८ (10/19 घं. मिं.)	१०	१८	०५	४८	६	५६	१८	२५
२८:४५	३०	शुक्र	४८	२३	शत	४८	५०	सिद्ध	४९	१५	चतु	१५	२७	१३	२८	4	२०	कुम्भ	फाल्गुन अमावस, सूर्य पू.भा. में ५३/५५	१०	१९	०५	५७	६	५५	१८	२५

A जयन्ती, स. सि. योगः

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 25 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१०	१०	११	८	५	८	२
१२	१२	७	११	१२	२९	२२	५	५
०	१८	३१	४१	४९	५७	२६	२२	२२
३०	००	३६	५१	४२	५७	४७	२८	२८
60 21	792 1	47 24	111 24	13 33	70 29	2 59	3 11	3 11
शत २	अनु ३	शत १	शत २	उभा ३	उषा १	हस्त ४	मूल २	मूल ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

भाव	ग्रह
१२	गु.
११	सू. मं. बु.
१०	
९	शु. रा.
८	चं.
७	
६	श.
५	
४	
३	के.
२	
१	

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१०	१०	११	९	५	८	२
१९	९	१३	२४	१४	८	२२	५	५
२	३५	३	५७	२५	१२	४	०	०
२५	१६	१३	८	२९	५५	८	१२	१२
60 10	715 44	47 21	115 42	13 53	70 59	3 32	3 10	3 10
शत ४	शत १	शत २	पूभा २	उभा ४	उषा ४	हस्त ४	मूल २	मूल ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

भाव	ग्रह
१२	गु.
११	सू. चं. मं. बु.
१०	शु.
९	रा.
८	
७	
६	श.
५	
४	
३	के.
२	
१	

फाल्गुन कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष की चतुर्थी को श्रीगणेश चतुर्थी (21 फर.) का व्रत रखकर, सायंकाल को पुनः स्नान करके लाल वस्त्र धारण कर गन्ध-पुष्पादि से गणेश जी का पूजन कर, लड्डुओं का भोग लगाके उसके बाद चन्द्रोदय होने पर मंत्रपूर्वक अर्घ्य देकर नमस्कार करें, फिर भोग लगाकर स्वयं परिवार सहित भोजन करे से सुख-सौभाग्य एवं सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। विजया एकादशी (28 फर.) को विधिवत् व्रत रखने से हर प्रकार के वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होती है। 'श्री महाशिवरात्रि' का विधिपूर्वक व्रत रखकर शिव पूजन, शिव कथा, शिव स्तोत्रों का पाठ एवं 'ॐ नमः शिवाय' का पाठ करते हुए रात्रि जागरण करने से अश्वमेध तुल्य फलों की प्राप्ति होती है। 'शिवरात्रि व्रतं नाम सर्वपाप प्रणाशनम्। आचाण्डालमनुष्याणां भुक्तिमुक्ति प्रदायकम्॥' व्रत के दूसरे दिन ब्राह्मणों को यथाशक्ति वस्त्र-क्षीर सहित भोजन, दक्षिणादि प्रदान करके सन्तुष्ट करना चाहिए। शिवरात्रि व्रत का प्रारम्भ संकल्पपूर्वक सम्वत् नाम, मास, पक्ष, तिथि-नक्षत्र, अपने नाम एवं गोत्रादि का उच्चारण करते हुए करना चाहिए—'शिवरात्रि व्रतं एतत् करिष्येऽहं महाफलम्। निर्विघ्नमस्तु मे चात्र त्वत् प्रसादात् जगत्पते॥' चान्द्र फाल्गुन मास में पाँच शनिवार होने से सीमावर्ती प्रदेशों में फौजी झड़पें एवं युद्ध के समाचार मिलेंगे। कुछ प्रदेशों में जातीय एवं साम्प्रदायिक उपद्रव, दंगे-फिसाद, अग्निकाण्ड आदि हिंसक घटनाएँ होने के संकेत हैं। कहीं विशेष प्रकार के रोगों की उत्पत्ति व निरीह लोगों की अकालमृत्यु के भी योग हैं। आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में विशेष तेजी के संकेत हैं—शनिवारा यदा पंचजायन्ते सततम्। महार्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला पृथिवी॥

वि. संवत् २०६७, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाक: १९३२

सन् 2011 ई. (ता. 5 मार्च से 19 मार्च तक)

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु:

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः पूर्व में शुक्र तथा पश्चिम में शनि दिखेगा। सायं गुरु पश्चिम में तथा ता. 11 से बुध भी गुरु के साथ दिखाई देगा। मंगल अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	फा. शक	रवि मा.	मार्च	फागु. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	घ्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२८:५०	१	शनि	५४	३३	पूभा.	५६	१०	साध्य	५१	२०	किं	२१	२८	१४	२९	5	२१	मी. ३९/२०	शुक्र श्रवण में २७/००	१०	२०	०६	०५	६	५४	१८	२६
२८:५८	२	रवि	६०	००	उभा.	६०	००	शुभ	५३	३५	बा	२७	४६	१५	३०	6	२२	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध मीन में ३३/३३, श्रीरामकृष्ण परमहंस A	१०	२१	०६	०८	६	५३	१८	२७
२९:००	२	चंद्र	०	५८	उभा.	३	४३	शुक्ल	५५	४८	कौ	०	५८	१६	रवि	7	२३	मीन	रबिउल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	१०	२२	०६	११	६	५२	१८	२७
२९:०५	३	मंग	७	१८	रेव	११	१३	ब्रह्म	५७	५०	गर	७	१८	१७	२	8	२४	मे. ११/१३	भ. ४०/१५ से, पंचक समाप्त ११/१३, बुध उ.भा. में १७/४०, B	१०	२३	०६	१४	६	५०	१८	२७
२९:१०	४	बुध	१३	१५	अश्वि	१८	१८	ऐंद्र	५९	२८	वि	१३	१५	१८	३	9	२५	मेष	भ. १३/१५ तक,	१०	२४	०६	१३	६	४९	१८	२८
२९:१३	५	गुरु	१८	३३	भर	२४	४५	वैधृ	६०	००	बा	१८	३३	१९	४	10	२६	वृ. ४१/१३	याज्ञवल्क्य जयन्ती	१०	२५	०६	११	६	४८	१८	२९
२९:१८	६	शुक्र	२२	४५	कृति	३०	१०	वैधृ	०	२३	तै	२२	४५	२०	५	11	२७	वृष	बुध पश्चिम से उदय ४६/४५	१०	२६	०५	०६	६	४७	१८	३०
२९:२३	७	शनि	२५	३५	रोहि	३४	८	विष्क प्रीति	० ५८	१८ ५०	व	२५	३५	२१	६	12	२८	वृष	भ. २५/३५ से ५६/०३ तक, मंगल पू.भा. में ४५/२८, स. सि. योग:	१०	२७	०५	५७	६	४५	१८	३०
२९:२८	८	रवि	२६	३०	मृग	३६	१८	आयु	५५	५८	बव	२६	३०	२२	७	13	२९	मि. ५/२८	गुरु रेव. (1) में ३२/००, होलाष्टक प्रारम्भ, अन्नपूर्णाष्टमी	१०	२८	०५	४९	६	४४	१८	३१
२९:३०	९	चंद्र	२५	२५	आर्द्रा	३६	२८	सौभा	५१	२५	कौ	२५	२५	२३	८	14	चैत्र	मिथुन	सूर्य मीन में ५४/३५, चैत्र संक्रान्ति, मु. ४५, पुण्यकाल सं. अगले C	१०	२९	०५	३७	६	४३	१८	३१
२९:३५	१०	मंग	२२	१५	पुनं	३४	३८	शोभ	४५	१५	गर	२२	१५	२४	९	15	२	क. २०/१८	भ. ४९/४० से, बुध रेव. में ३९/२०	११	००	०५	२१	६	४१	१८	३१
२९:४०	११	बुध	१७	५	पुष्य	३०	४८	अति	३७	३३	वि	१७	५	२५	१०	16	३	कर्क	भ. १७/०५ तक, आमलकी एकादशी व्रत, शुक्र धनि. में ४०/२५, D	११	०१	०५	०५	६	४०	१८	३२
२९:४५	१२	गुरु	१०	१०	श्ले.	२२	५०	सुक	२८	३०	बा	१०	१०	२६	११	17	४	सिं. २२/५०	प्रदोष व्रत	११	०२	०४	४७	६	३९	१८	३३
२९:४८	१३	शुक्र	१	५०	मघा	१८	३५	धृति	१८	२५	तै	१	५०	२७	१२	18	५	सिंह	भ. ५२/२८ से, सूर्य उ.भा. में १५/४०, महेश्वर व्रत	११	०३	०४	२५	६	३८	१८	३३
००:००	१४	शुक्र	५२	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२९:५३	१५	शनि	४२	३८	पूफा.	११	००	शूल गंड	७ ५६	३८ ३०	वि	१७	३५	२८	१३	19	६	कं. २४/००	भ. १७/३५ तक, फाल्गुन पूर्णिमा, होली पर्व, होलाष्टक समाप्त, E	११	०४	०४	०२	६	३७	१८	३४

A जयंती, स. सि. योग: **B** स. सि. यो (11/19 से) **C** दिन प्रातः 10/57 तक, **D** गोविन्द द्वादशी **E** होलिका दहन (भद्रा बाद), श्रीसत्यनारायण व्रत, चैतन्य महाप्रभु जयन्ती

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 13 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	१०	११	११	९	५	८	२
२८	२८	२०	१२	१६	१८	२१	४	४
२	१०	८	०	३१	५३	२९	३१	३१
४४	१७	५६	२४	४१	५०	५६	३५	३५
59 51	781 19	47 14	106 11	14 11	71 28	4 6	3 11	3 11
पूभा ३	मृग २	पूभा १	उभा ३	उभा ४	श्रव ३	हस्त ४	मूल २	मृग ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१२ बु. गु.; ११ सू. मं.; १० शु.; ९ रा.; ८; ७; ६ श.; ५; ४; ३ के.; २ चं.; १

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 19 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	४	१०	११	११	९	५	८	२
४	२३	२४	२१	१७	२६	२१	४	४
१	८	५१	४२	५७	३	४	१२	१२
१८	४९	५९	४	११	१७	३९	३१	३१
59 39	921 59	47 6	80 39	14 20	72 43	4 22	3 11	3 11
उभा १	पूफा ३	पूभा २	रेव २	रेव १	धनि १	हस्त ४	मूल २	मृग ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१२ सू. बु. गु.; ११ मं.; १० शु.; ९ रा.; ८; ७; ६ श.; ५ चं.; ४; ३ के.; २; १

फाल्गुन शुक्ल पक्षफल—

फाल्गुन शुक्लाष्टमी (13 मार्च) से होलाष्टक प्रारम्भ होंगे। इन दिनों गृहप्रवेश, मुण्डनादि शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध माना जाता है। आमलकी एकादशी (16 मार्च) के दिन आँवलें के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए तथा आंवले की टहनी को कलश में स्थापन करके पूजन करना चाहिए। पूजनोपरान्त इस दिन आँवलों सहित भोजन का दान एवं सेवन करना उत्तमोत्तम होता है। रात्रि जागरण कर दूसरे दिन पारण करें। इससे पापों का क्षय तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है। फाल्गुन पूर्णिमा (19 मार्च), शनिवार को होली का त्यौहार समस्त भारत (विशेषकर मथुरा नगरी) में बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाई जाती है। परम्परावश लोग सायंकाल भद्रा रहित काल (प्रदोष काल) में होलिका दहन करके अग्निदेव की पूजा करके उत्सव मनाते हैं। भद्रा दोपहर 1 बजकर 39 मिनट तक रहेगी। इसी दिन परमभक्त चैतन्य महाप्रभु की जयन्ती भी मनाई जाती है। चैत्र संक्रान्ति—14 मार्च, सोमवार को 45 मुहूर्त्ति है। स्नान, दानादि का पुण्यकाल आगामी दिन प्रातः 10 बजकर 57 मिनट तक रहेगा। ज्वार, बाजरा, तिल, अलसी, सरसों, राई, मूँग, अरहर, मसूर, उड़द, रुई, सोना, चाँदी, गुड़, तेल, शक्कर में मन्दी बने। ता. 14 मार्च से सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग होने से राजनैतिक वातावरण अशान्त तथा असमंजसपूर्ण रहेगा। लोगों में रोग-शोक आदि दुःखों की बहुलता होगी। मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक योग चल रहा है। गुरु भी पहले से मीन राशि में अतिचारी गति से संचरणशील है। इसके फलस्वरूप गेहूँ, चने, धान्य, चावल, खाद्य-तेल, मूँगफली, घृत, खल-बिनौले, चीनी, गुड़-शक्कर तेज भाव होंगे। लोगों में क्लिष्ट रोग भय, असन्तोष व्याकुलता, पीड़ा एवं कहीं दुर्भिक्ष, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) होने का भय रहे—**यदा क्रूर ग्रहो वक्री हि, अतिचारी सौम्यकः। पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्॥ संक्रान्ति राशिफल**—चैत्र संक्रान्ति मीन, मेष, वृष, तुला, वृश्चिक, मकर राशि वालों के लिए शुभ एवं लाभदायक रहेगी। **आकाश लक्षण**—उत्तर-पश्चिम भारत में कहीं धूल भरी आँधी एवं कहीं खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०६७, चैत्र कृष्ण पक्ष शाकः १९३२-३३

सन् 2011 ई. (ता. 20 मार्च से 3 अप्रैल तक)
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः

भा.स्टै.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में तथा शनि पश्चिम में दृश्य होगा। सायं बुध व गुरु पश्चिम में दिखेंगे। परन्तु 25 मार्च को गुरु तथा 2 अप्रै. को बुध पश्चिम में लुप्त हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	फा. शक	रवि प्र.	मार्च	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२९:५७	१	रवि	३२	४८	उफा. / हस्त	३ / ५५	५ / १८	वृद्धि	४५	३३	बा	०७	४३	२९	१४	20	७	कन्या	वसन्तोत्सव, होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पाओंटा साहिब), (A)	११	०५	०३	३६	६	३६	१८	३४
३०:००	२	चंद्र	२३	२५	चित्रा	४८	१५	ध्रुव	३५	३	ग	२३	२५	३०	१५	21	८	तु. २१/४०	भ. ४९/१० से, सन्त तुकाराम जयन्ती	११	०६	०३	१२	६	३५	१८	३५
३०:०५	३	मंग	१४	५८	स्वा.	४२	२०	व्या.	२५	२८	वि	१४	५८	चैत्र	१६	22	९	तुला	भ. १४/५८ तक, अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21/57 B	११	०७	०२	४४	६	३४	१८	३६
३०:१०	४	बुध	७	५८	विशा	३८	३	हर्ष	१७	३	बा	७	५८	२	१७	23	१०	वृ. २४/००		११	०८	०२	१२	६	३२	१८	३७
३०:१७	५	गुरु	२	३५	अनु	३५	३३	वज्र	१०	३	तै	२	३५	३	१८	24	११	वृश्चिक	भ. ५९/०८ से, श्रीरंग पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ), एकनाथ षष्ठी	११	०९	०१	४०	६	३१	१८	३८
००:००	६	गुरु	५९	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	षष्ठी तिथि क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३०:२५	७	शुक्र	५७	४८	ज्ये.	३५	५	सिद्धि	४	४३	वि	२८	२८	४	१९	25	१२	ध. ३५/०५	भ. २८/३० तक, शीतला सप्तमी, मंगल मीन में ३०/२०, गुरु (C)	११	१०	०१	०५	६	२९	१८	३९
३०:२७	८	शनि	५८	२८	मूल	३६	३८	व्य. / वती	० / ५८	५५ / ४०	बा	२८	०८	५	२०	26	१३	धनु	शीतलाष्टमी व्रत	११	११	००	३०	६	२८	१८	३९
३०:३२	९	रवि	६०	००	पूषा.	३९	५८	परि	५७	५३	तै	२९	४२	६	२१	27	१४	म. ५६/०३	गुरु रेव (2) में २९/०८, शुक्र शत. में ४९/०३	११	११	५९	५३	६	२७	१८	४०
३०:३५	९	चंद्र	०	५५	उषा.	४४	५०	शिव	५८	१५	ग	०	५५	७	२२	28	१५	मकर	भ. ३२/५५ से, बुध अश्वि. 1 मेष में ३३/०३	११	१२	५९	१५	६	२६	१८	४०
३०:४१	१०	मंग	४	५५	श्रव	५०	५८	सिद्ध	५९	३०	वि	४	५५	८	२३	29	१६	मकर	भ. ४/५५ तक, मंगल उ.भा. में ४६/१५	११	१३	५८	३२	६	२४	१८	४१
३०:४५	११	बुध	९	५८	धनि	५७	५०	साध्य	६०	००	बा	९	५८	९	२४	30	१७	कुं. २४/२०	पंचक प्रारम्भ २४/२०, पापमोचनी एकादशी व्रत, बुध वक्री ४९/४८	११	१४	५७	४८	६	२३	१८	४१
३०:५०	१२	गुरु	१५	४३	शत	६०	००	साध्य	१	२३	तै	१५	४३	१०	२५	31	१८	कुम्भ	प्रदोष व्रत, सूर्य रेव. में ४३/२५, वारुणी योग 12/39 घं. मिं. से सू.उ. तक	११	१५	५७	०६	६	२२	१८	४२
३०:५७	१३	शुक्र	२१	५८	शत	५	१८	शुभ	३	३८	व	२१	५८	११	२६	अप्रै.	१९	मी. ५५/५०	भ. २१/५८ से ५५/०३ तक, वारुणी योग सू.उ. से 8/26 तक, अप्रैल D	११	१६	५६	२०	६	२०	१८	४३
३१:०३	१४	शनि	२८	१०	पूभा.	१२	४३	शुक्ल	५	५३	श	२८	१०	१२	२७	2	२०	मीन	वक्री बुध मीन में ११/२५, वक्री बुध पश्चिम में अस्त २/१०, E	११	१७	५५	३०	६	१९	१८	४३
३१:०५	३०	रवि	३४	२०	उभा.	२०	१०	ब्रह्म	८	१०	च	१	१५	१३	२८	3	२१	मीन	चैत्र अमावस, विक्रमी संवत् २०६७ पूर्ति, स. सि. यो. (14/22 तक)	११	१८	५४	३९	६	१८	१८	४४

गुरु अस्त 25 मार्च

(A) धुलैण्डी, सूर्य सायन मेष में ५५/३८, उत्तर गोलार्द्ध प्रारम्भ, स. सि. यो. B (जालन्धर), शुक्र कुम्भ में १५/१५, शक चैत्र, १९३३ प्रारम्भ (C) पश्चिम में अस्त २५/५० (D) सं. 2011 ई. प्रारम्भ, मास शिवरात्रि व्रत E मेला पिहोवातीर्थ (हरियाणा), मे. पृथुदक, वक्री शनि हस्त (3) में १०/१०

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	११	११	११	१०	५	८	२
१०	४	०	२८	१९	४	२०	३	३
५८	५५	२१	५१	३७	२६	३३	५०	५०
७	२०	१८	१८	५५	१६	२४	१५	१५
59 26	772 27	46 58	32 58	14 27	72 00	4 35	3 11	3 11
उभा ३	मूल २	पूभा ४	रेव ४	रेव १	धनि ४	हस्त ४	मूल २	मृग ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१२ सू. मं. बु. गु. | १ | २ | ३ के. | ४ | ५ | ६ श. | ७ | ८ | ९ चं. रा. | १० | ११ शु.

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	११	११	११	१०	५	८	२
१८	१२	६	२९	२१	१४	१९	३	३
५२	१६	३६	४५	३३	३	५६	२४	२४
४२	५६	१४	५९	४८	१४	२०	४९	४९
59 11	713 13	46 44	24 11	14 32	72 15	4 40	3 11	3 11
रेव १	उभा ३	उभा १	रेव ४	रेव २	शत ३	हस्त ३	मूल २	मृग ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

१२ सू. चं. मं. बु. गु. | १ | २ | ३ के. | ४ | ५ | ६ श. | ७ | ८ | ९ रा. | १० | ११ शु.

चैत्र कृष्ण पक्षफल—

प्रतिपदा (20 मार्च) को होला मेला, धुलैण्डी व वसन्त-उत्सव पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। इसी दिन कई मन्दिरों या ठाकुरद्वारों में ध्वजारोहण भी किया जाता है। 22 मार्च का चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी तिथि मंगलवार को होने से अङ्गारकी गणेश चतुर्थी कहलाएगी। अङ्गारक चतुर्थी का व्रत रखकर श्रीगणेश पूजन, मन्त्र, जप (ॐ गम् गणपतये नमः) करने से विघ्न दूर होते हैं, मनोकामनाओं की पूर्ति तथा पुत्र-पौत्रादि की समृद्धि होती है। पापमोचनी एकादशी (30 मार्च) का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञाताज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। 1 अप्रै. को वारुणी पर्व पर तीर्थादि स्थल पर स्नान, दानादि का विशेष महत्त्व होता है। चतुर्दशी को पिहोवा (कुरुक्षेत्र) पर मेला पृथद्क बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। **लोक भविष्य**—पक्ष में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु का शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध होने से उ.प्र., मध्यप्रदेश, बिहार, असम तथा जम्मू-कश्मीर के पश्चिमोत्तर भाग में हिंसा, राजनीतिक टकराव, उपद्रव, साम्प्रदायिक तनाव एवं विस्फोटक व हिंसक घटनाएँ घटित होने के योग हैं—**यदा सौरि भौमे सुरराजमन्त्री-भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा। अयोध्या मध्यदेशे लंकापुरे पूर्वस्यां च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति॥** चतुर्ग्रही योग भी होने से देश में कहीं प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन एवं कृषि की हानि तथा उपद्रव, आतंकवादी घटनाएं, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) आदि आकस्मिक घटनाएँ घटित हों—**एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचशेखरः। प्लावयन्ति महीं सर्वरुधिरेण जलेन वा॥** 22 मार्च को शुक्र कुम्भ राशि में आने से सर्व प्रकार के अनाज तेज भाव होंगे। पृथ्वी पर सुख-साधनों में विस्तार होगा। **आकाश लक्षण**—चैत्र कृष्ण १ या अमावस को वर्षा या बूंदाबांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत होंगे।

वि. संवत् 2066-67, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] (सूर्योत्तरायण; वसन्त ऋतुः)
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	१	चंद्र	18	32	पू.फा.	15	5	धृति	20	2	कं. 20/24	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध शत. में 28/16, वसन्तोत्सव, धुलैण्डी A
	2	२	मंग	15	14	उ.फा.	12	29	शूल	16	10	कन्या	भद्रा 25/50 से, शुक्र मीन में 22/30, सन्त तुकाराम जयन्ती
	3	३	बुध	12	25	हस्त	10	21	गंड	12	42	तु. 21/30	भ. 12/25 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21/42 (जालं.), स. सि.योग
	4	४	गुरु	10	15	चित्रा	8	50	वृद्धि	9	45	तुला	सूर्य पू.भा. में 22/22, गुरु शत. 4 में 13/14,
	5	५	शुक्र	8	52	स्वा.	8	5	ध्रुव व्या.	7 29	25 47	वृ. 26/5	शुक्र उ.भा. में 14/43, श्रीरंग पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ)
	6	६	शनि	8	20	विशा.	8	11	हर्ष	28	50	वृश्चिक	भ. 8/20 से 20/31 तक, एकनाथ षष्टी
	7	७	रवि	8	42	अनु	9	9	वज्र	28	32	वृश्चिक	शीतला सप्तमी, गण्डमूल 9/9 उपरान्त
	8	८	चंद्र	9	54	ज्ये.	10	54	सिद्धि	28	48	ध. 10/54	शीतलाष्टमी व्रत, गण्डमूल विचार
	9	९	मंग	11	47	मूल	13	20	व्य.	29	30	धनु	भ. 24/59 से. बुध पू.भा. में 14/44, गण्डमूल 13/20 तक
	10	१०	बुध	14	11	पू.षा.	16	14	वरी	30	27	म. 23/00	भ. 14/11 तक, मंगल मार्गी 22/40
	11	११	गुरु	16	52	उ.षा.	19	22	परि	पूरा	दिन	मकर	पापमोचनी एकादशी व्रत
	12	१२	शुक्र	19	36	श्रव.	22	33	परि	7	30	मकर	स. सि. योग
	13	१३	शनि	22	12	धनि.	25	35	शिव	8	32	कुं. 12/05	भ. 22/12 से, पंचक प्रारम्भ 12/05, शनि प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत B
	14	१४	रवि	24	32	शत.	28	21	सिद्ध	9	24	कुम्भ	भ. 11/22 तक, सूर्य मीन में 22/30, चैत्र संक्रान्ति, मु. 15, पुण्यकालC
	15	३०	चंद्र	26	31	पू.भा.	पूरा	दिन	साध्य	10	3	मी. 24/13	सोमवती (चैत्र) अमावस, द्वितीय शाही स्नान-कुम्भ महापर्व-हरिद्वार D
चैत्र शुक्ल पक्ष	16	१	मंग	28	8	पू.भा.	6	48	शुभ	10	25	मीन	नव संवत्सर २०६७ वि. प्रारम्भ, चैत्र (वासन्त) नवरात्रे प्रारम्भ, E
	17	२	बुध	29	20	उ.भा.	8	52	शुक्ल	10	30	मीन	चंद्रदर्शन, मु. ३०,
	18	३	गुरु	30	9	रेव	10	34	ब्रह्म	10	17	मे. 10/34	गणगौरी तृतीया, सूर्य उ.भा. में 6/46, पंचक समाप्त 10/34, गुरु पू.भा.(1)F
	19	४	शुक्र	30	33	अश्वि	11	52	ऐंद्र	9	46	मेष	भ. 18/21 से 30/33 तक,
	20	५	शनि	30	32	भर	12	47	वैधृ	8	56	वृ. 18/57	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, सूर्य सायन मेष में 23/02, उत्तर गोल प्रारम्भ G
	21	६	रवि	30	5	कृति	13	17	विष्कु प्रीति	7 30	46 15	वृष	स्कन्द षष्ठी व्रत,
	22	७	चंद्र	29	9	रोहि	13	21	आयु	28	23	मि. 25/12	भ. 29/09 से, बुध रेवती में 29/39, शक चैत्र, सं. 1932 प्रारम्भ (गुरु उदय 20 मार्च)
	23	८	मंग	27	44	मृग	12	56	सौभा	26	7	मिथुन	भ. 16/27 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी, राहु पू.षा. H
	24	९	बुध	25	49	आर्द्रा	12	3	शोभ	23	27	क. 29/04	श्रीरामनवमी
	25	१०	गुरु	23	27	पुर्न	10	41	अति	20	25	कर्क	
	26	११	शुक्र	20	41	पुष्य	8	53	सुक	17	3	कर्क	भ. 10/04 से 20/41 तक, कामदा एकादशी व्रत, शुक्र अश्वि (1) (I)
	27	१२	शनि	17	37	श्ले मघा	6 28	43 19	धृति	13	25	सिं. 6/43	शनि प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम में उदय 26/17,
	28	१३	रवि	14	22	पू.फा.	25	48	शूल गंड	9 29	38 46	सिंह	अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)
	29	१४	चंद्र	11	5	उ.फा.	23	20	वृद्धि	25	59	कं. 7/10	भ. 11/5 से 21/30 तक, बुध अश्वि. (1) मेष में 28/38, J
	30	१५	मंग	7	55	हस्त	21	7	ध्रुव	22	25	कन्या	चैत्र पूर्णिमा (स्नानदानादि), वैशाखस्नान प्रारम्भ, श्रीहनुमान जयन्ती (द. भारत)
वै.कृ.	0	१	मंग	29	5	०	0	0	००	0	0	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय
	31	२	बुध	26	43	चित्रा	19	19	व्या.	19	12	तु. 8/09	सूर्य रेव. में 17/39,

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	7/03	18/22	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40
2	7/02	18/23	6/49	18/18	6/52	18/17	7/01	18/40
3	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
4	7/00	18/25	6/47	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
5	6/58	18/26	6/46	18/19	6/49	18/20	7/00	18/42
6	6/57	18/27	6/45	18/20	6/48	18/20	6/59	18/42
7	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42
8	6/54	18/29	6/43	18/21	6/45	18/22	6/57	18/43
9	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43
10	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44
11	6/50	18/32	6/40	18/23	6/42	18/24	6/54	18/44
12	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44
13	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44
14	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/26	6/52	18/44
15	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
16	6/44	18/34	6/34	18/26	6/36	18/26	6/51	18/44
17	6/43	18/34	6/33	18/26	6/35	18/27	6/50	18/44
18	6/42	18/35	6/32	18/27	6/34	18/27	6/49	18/45
19	6/41	18/36	6/31	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
20	6/40	18/36	6/29	18/28	6/31	18/29	6/47	18/45
21	6/39	18/37	6/28	18/29	6/30	18/30	6/46	18/45
22	6/38	18/38	6/27	18/29	6/29	18/30	6/45	18/46
23	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46
24	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46
25	6/34	18/40	6/24	18/31	6/25	18/32	6/44	18/47
26	6/33	18/41	6/22	18/31	6/24	18/33	6/43	18/47
27	6/32	18/41	6/22	18/32	6/22	18/34	6/42	18/47
28	6/30	18/42	6/20	18/32	6/20	18/35	6/41	18/48
29	6/28	18/42	6/19	18/33	6/19	18/35	6/40	18/48
30	6/26	18/43	6/18	18/33	6/18	18/36	6/39	18/48
0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0
31	6/25	18/44	6/17	18/34	6/16	18/36	6/38	18/49

A होला मेला (श्री आनन्दपुर व पांओटा साहिब), B वारुणी पर्व C मध्याह्न बाद, बुध मीन में 20/39, मेला पिहोवातीर्थ (हरियाणा), मे. पृथूदक D विक्रमी संवत् २०६६ पूर्ति
E घटस्थापन, वर्षफलश्रवण, बुध उ.भा. में 13/26, शुक्र रेव. में 8/03, ध्वजारोहण F 10/11, श्रीमत्स्य जयन्ती, रवि-उल्सानी (मु.) प्रारम्भ G महाविषुव दिवस, गुरु पूर्व से उदय 17/26
H (3), केतु पुर्न 1 में 7/50 (I) मेष में 26/27, J श्रीसत्यनारायण व्रत, वक्री शनि उ.फा. (3) में 25/39

वि. संवत् 2067, अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण, वसन्त-ग्रीष्म ऋतुः
प्रथम (शुद्ध) वैशाख कृष्ण पक्ष	1	३	गुरु	24	59	स्वा.	18	6	हर्ष	16	28	तुला	भ. 13/51 से 24/59 तक, गुरु पू.भा. (2) में 14/42, अप्रैल मास प्रारम्भ
	2	४	शुक्र	24	01	विशा.	17	36	वज्र	14	19	वृ. 11/38	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/36 (जालन्धर), अनुसूया जयन्ती
	3	५	शनि	23	54	अनु.	17	54	सिद्धि	12	48	वृश्चिक	
	4	६	रवि	24	37	ज्ये.	19	3	व्य.	11	58	ध. 19/3	भ. 24/37 से, गण्डमूलादि
	5	७	चंद्र	26	7	मूल	20	58	वरी	11	46	धनु	भ. 13/22 तक, गंडमूलादि 20/58 तक
	6	८	मंग	28	14	पू.षा.	23	31	परि	12	8	म. 30/13	शुक्र भरणी में 22/08,
	7	९	बुध	पूरा	दिन	उ.षा.	26	29	शिव	12	53	मकर	प्लूटो वक्री 8/01
	8	९	गुरु	6	45	श्रव.	29	36	सिद्ध	13	53	मकर	भ. 20/04 से, बुध भरणी में 8/59,
	9	१०	शुक्र	9	23	धनि.	पूरा	दिन	साध्य	14	55	कुं. 19/09	भ. 9/23 तक, पंचक प्रारम्भ 19/09
	10	११	शनि	11	54	धनि.	8	39	शुभ	15	50	कुम्भ	वरूथिनी एकादशी व्रत
	11	१२	रवि	14	7	शत.	11	26	शुक्ल	16	31	कुम्भ	प्रदोष व्रत
	12	१३	चंद्र	15	54	पू.भा.	13	48	ब्रह्म	16	51	मी. 7/15	भ. 15/54 से 28/33 तक, मास शिवरात्रि व्रत
	13	१४	मंग	17	12	उ.भा.	15	43	ऐंद्र	16	49	मीन	
	14	३०	बुध	17	59	रेव.	17	8	वैधृ	16	24	मे. 17/8	वैशाख अमावस, **कुंभ-महापर्व (हरिद्वार)**, सूर्य अश्वि (1) मेष में A
प्रथम (अधि.) वैशाख शुक्ल पक्ष	15	१	गुरु	18	18	अश्वि	18	6	विष्क	15	37	मेष	**वैशाख पुरुषोत्तम (अधिक) मास प्रारम्भ**, चन्द्रदर्शनम्, मु. 15,
	16	२	शुक्र	18	13	भर	18	40	प्रीति	14	31	वृ. 24/45	जमादिउल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ, गुरु पू.भा. (3) में 10/17,
	17	३	शनि	17	45	कृति	18	52	आयु	13	6	वृष	भ. 29/21 से, शुक्र कृति. में 19/05,
	18	४	रवि	16	57	रोहि	18	45	सौभा	11	26	वृष	भ. 16/57 तक, **बुध वक्री 9/35**,
	19	५	चंद्र	15	51	मृग	18	20	शोभ	9	31	मि. 6/35	
	20	६	मंग	14	27	आर्द्रा	17	38	अति / सुक	7 / 29	22 / 00	मिथुन	शुक्र वृष में 12/34, सूर्य सायन वृष में 10/00, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, B
	21	७	बुध	12	47	पुर्न	16	38	धृति	26	23	क. 10/55	भ. 12/47 से 23/48 तक, शक वैशाख प्रारम्भ
	22	८	गुरु	10	49	पुष्य	15	23	शूल	23	34	कर्क	
	23	९	शुक्र	8	36	आश्ले	13	52	गंड	20	32	सिं. 13/52	
	24	१०	शनि	6	10	मघा	12	09	वृद्धि	17	22	सिंह	भ. 16/52 से 27/34 तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स्मार्त)
	०	११	शनि	27	34	००	००	००	००	00	00	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००
	25	१२	रवि	24	55	पू.फा.	10	18	ध्रुव	14	7	कं. 15/50	**पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत वैष्ण.**
	26	१३	चंद्र	22	19	उ.फा.	8	26	व्या.	10	51	कन्या	सोम प्रदोष व्रत, मंगल आश्ले. में 14/07,
	27	१४	मंग	19	54	हस्त / चित्रा	6 / 29	39 / 7	हर्ष / वज्र	7 / 28	41 / 43	तु. 17/51	भ. 19/54 से, सूर्य भरणी में 22/45, श्रीसत्यनारायण व्रत
	28	१५	बुध	17	49	स्वा.	27	58	सिद्धि	26	3	तुला	भ. 6/52 तक, अधि. वैशाख पूर्णिमा, शुक्र रोहि. में 17/37
द्वि.वै.कृ.	29	१	गुरु	16	12	विशा	27	21	व्य.	23	50	वृ. 21/27	द्वितीय वैशाख कृष्ण पक्षारम्भः
	30	२	शुक्र	15	11	अनु.	27	23	वरी	22	7	वृश्चिक	भ. 27/02 से, वक्री बुध अश्वि. (4) में 8/43,

कुम्भ महापर्व –हरिद्वार 14 अप्रैल

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
1	6/24	18/45	6/15	18/35	6/16	18/37	6/36	18/49
2	6/23	18/45	6/14	18/36	6/15	18/37	6/35	18/49
3	6/21	18/46	6/13	18/36	6/14	18/38	6/34	18/49
4	6/19	18/47	6/12	18/37	6/12	18/39	6/34	18/49
5	6/18	18/48	6/11	18/38	6/11	18/40	6/33	18/49
6	6/17	18/49	6/10	18/38	6/10	18/40	6/32	18/49
7	6/16	18/50	6/09	18/39	6/09	18/41	6/31	18/49
8	6/15	18/51	6/08	18/39	6/08	18/42	6/30	18/50
9	6/14	18/52	6/07	18/40	6/06	18/42	6/30	18/50
10	6/12	18/52	6/06	18/40	6/05	18/43	6/29	18/50
11	6/11	18/53	6/04	18/41	6/04	18/44	6/29	18/51
12	6/10	18/54	6/03	18/41	6/03	18/45	6/28	18/51
13	6/08	18/54	6/02	18/42	6/02	18/45	6/27	18/51
14	6/07	18/55	6/01	18/43	6/01	18/46	6/26	18/51
15	6/06	18/56	6/00	18/43	5/59	18/46	6/25	18/52
16	6/04	18/56	5/59	18/44	5/58	18/47	6/24	18/52
17	6/03	18/57	5/58	18/44	5/57	18/47	6/23	18/52
18	6/02	18/58	5/57	18/45	5/56	18/48	6/23	18/53
19	6/01	18/58	5/56	18/45	5/55	18/49	6/22	18/53
20	6/00	18/59	5/55	18/46	5/54	18/49	6/21	18/53
21	5/59	19/00	5/54	18/46	5/53	18/50	6/21	18/53
22	5/58	19/00	5/53	18/47	5/52	18/51	6/20	18/54
23	5/57	19/01	5/52	18/48	5/51	18/52	6/19	18/54
24	5/55	19/02	5/51	18/48	5/50	18/52	6/19	18/54
0	00	00	00	00	00	00	00	00
25	5/54	19/02	5/50	18/49	5/49	18/53	6/18	18/54
26	5/53	19/03	5/49	18/49	5/48	18/54	6/17	18/55
27	5/52	19/04	5/48	18/50	5/47	18/54	6/17	18/55
28	5/51	19/05	5/47	18/50	5/46	18/55	6/16	18/56
29	5/50	19/06	5/47	18/51	5/45	18/55	6/16	18/56
30	5/49	19/07	5/46	18/52	5/44	18/56	6/15	18/56

A 6/57, वैशाख संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल संक्रां. दोपहर 13/21 तक, पंचक समाप्त 17/08, डॉ. अम्बेदकर जयन्ती, अमावस-स्नानदानादि, मुख्य शाही स्नान-हरिद्वार (देखें पृष्ठ 9 से 11)

B वक्री बुध पश्चिम में अस्त 21/10.

वि. संवत् 2067, मई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — ग्रीष्म ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
द्वितीय (अधि.) वैशा. कृष्ण पक्ष	1	३	शनि	14	52	ज्ये.	28	8	परि	20	59	ध. 28/8	भ. 14/52 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/17 (जालं.), मई मास प्रा.	1	5/48	19/08	5/45	18/52	5/43	18/57	6/15	18/56
	2	४	रवि	15	17	मूल	29	37	शिव	20	26	धनु	गुरु पू.भा. (4) मीन में 8/07, स. सि. योग	2	5/47	19/08	5/44	18/53	5/42	18/58	6/14	18/56
	3	५	चंद्र	16	27	पू.षा.	पूरा	दिन	सिद्ध	20	27	धनु		3	5/46	19/09	5/43	18/54	5/41	18/58	6/14	18/57
	4	६	मंग	18	15	पू.षा.	7	45	साध्य	20	55	म. 14/23	भ. 18/15 से,	4	5/45	19/09	5/42	18/54	5/40	18/59	6/13	18/57
	5	७	बुध	20	31	उ.षा.	10	25	शुभ	21	45	मकर	भ. 7/23 तक,	5	5/44	19/10	5/41	18/55	5/40	18/59	6/13	18/58
	6	८	गुरु	23	1	श्रव.	13	23	शुक्ल	22	44	कुं. 26/55	पंचक प्रारम्भ 26/55, वक्री बुध पूर्व से उदय 16/08	6	5/43	19/11	5/40	18/55	5/39	19/00	6/12	18/58
	7	९	शुक्र	25	28	धनि.	16	26	ब्रह्म	23	42	कुम्भ	श्री टैगोर जयन्ती	7	5/43	19/11	5/40	18/56	5/38	19/01	6/12	18/58
	8	१०	शनि	27	40	शत.	19	17	ऐंद्र	24	29	कुम्भ	भ. 14/34 से 27/40 तक,	8	5/42	19/12	5/39	18/56	5/37	19/01	6/12	18/59
	9	११	रवि	29	25	पू.भा.	21	46	वैधृ	24	56	मी. 15/11	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत स्मार्त, शुक्र मृग. में 17/53,	9	5/41	19/13	5/38	18/57	5/36	19/02	6/11	18/59
	10	१२	चंद्र	पूरा	दिन	उ.भा.	23	43	विष्क	24	57	मीन	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (वैष्णव)	10	5/41	19/14	5/38	18/57	5/36	19/03	6/11	18/59
	11	१२	मंग	06	36	रेव	25	5	प्रीति	24	31	मे. 25/5	भौम प्रदोष व्रत, सूर्य कृति. में 16/56, पंचक समाप्त 25/05, बुध मार्गी 27/57,	11	5/40	19/15	5/37	18/58	5/35	19/03	6/10	19/01
	12	१३	बुध	7	10	अश्वि	25	52	आयु	23	36	मेष	भ. 7/10 से 19/09 तक, मास शिवरात्रि व्रत	12	5/39	19/16	5/36	18/59	5/34	19/04	6/10	19/01
	13	१४	गुरु	7	8	भर.	26	7	सौभा	22	15	मेष	अमावस (पितृ तर्पण आदि कार्येषु)	13	5/39	19/17	5/36	18/59	5/34	19/05	6/09	19/01
	14	३०	शुक्र	6	35	कृति	25	54	शोभ	20	31	वृ. 8/6	वैशा. (अधिक) मास समाप्त, अमावस-स्नानादि, सूर्य वृष में 27/47 A	14	5/38	19/17	5/35	19/00	5/33	19/05	6/09	19/02
द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल पक्ष	०	१	शुक्र	29	33	००	00	00	00	00	00	00	प्रतिपदा तिथि का क्षय — त्रयोदश दिनात्मक पक्ष	0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0
	15	२	शनि	28	11	रोहि	25	18	अति	18	27	वृष	शुक्र मिथुन में 6/44, शिवाजी जयंती, चन्द्रदर्शन, 45 मुहू.,	15	5/37	19/18	5/34	19/00	5/32	19/06	6/09	19/02
	16	३	रवि	26	31	मृग	24	25	सुक	16	8	मि. 12/54	अक्षय तृतीया, श्रीपरशुराम जयन्ती, जमादिउल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारंभ	16	5/36	19/18	5/34	19/01	5/32	19/07	6/09	19/02
	17	४	चंद्र	24	38	आर्द्रा	23	19	धृति	13	38	मथुन	भ. 13/35 से 24/38 तक,	17	5/36	19/11	5/33	19/02	5/31	19/07	6/09	19/03
	18	५	मंग	22	37	पुर्न	22	5	शूल	10	59	क. 16/24	आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती	18	5/35	19/20	5/33	19/02	5/30	19/08	6/08	19/03
	19	६	बुध	20	30	पुष्य	20	44	गंड / वृद्धि	8 / 29	14 / 25	कर्क	श्रीरामनुजाचार्य जयन्ती	19	5/35	19/21	5/32	19/03	5/30	19/08	6/08	19/03
	20	७	गुरु	18	19	आश्ले	19	20	ध्रुव	26	33	सिं. 19/20	भ. 18/19 से 29/13 तक, श्रीगङ्गा जयन्ती, शुक्र आर्द्रा में 20/04	20	5/34	19/21	5/32	19/03	5/29	19/09	6/07	19/04
	21	८	शुक्र	16	7	मघा	17	54	व्या.	23	41	सिंह	सूर्य सायन मिथुन में 9/04,	21	5/33	19/22	5/31	19/04	5/29	19/10	6/07	19/04
	22	९	शनि	13	55	पू.फा.	16	29	हर्ष	20	51	कं. 22/9	श्रीसीता नवमी, श्रीबगुलामुखी जयन्ती, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	22	5/33	19/23	5/31	19/05	5/28	19/11	6/07	19/04
	23	१०	रवि	11	47	उ.फा.	15	9	वज्र	18	5	कन्या	भ. 22/47 से, बुध भर में 10/44, स. सि. योग	23	5/32	19/24	5/30	19/05	5/28	19/11	6/06	19/05
	24	११	चंद्र	9	47	हस्त	13	57	सिद्धि	15	26	तु. 25/25	भ. 9/47 तक, मोहिनी एकादशी व्रत, राहु पू.षा. (2), केतु आर्द्रा B	24	5/31	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	25	१२	मंग	7	59	चित्रा	12	57	व्य.	12	58	तुला	भौम प्रदोष व्रत, सूर्य रोहि. में 13/06	25	5/30	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	26	१३	बुध	6	27	स्वा.	12	16	वरी	10	44	तुला	भ. 29/18 से, मंगल मघा (1) सिंह में 15/53, श्रीनृसिंह जयन्ती	26	5/30	19/25	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
	०	१४	बुध	29	18	०	00	00	00	00	00	00	चतुर्दशी तिथि का क्षय	0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0
	27	१५	गुरु	28	37	विशा	11	58	परि	8	50	वृ. 6/00	भ. 16/58 तक, वैशाख पूर्णिमा स्नानदानादि, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, C	27	5/30	19/26	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
ज्येष्ठ कृ.	28	१	शुक्र	28	29	अनु	12	10	शिव	7	19	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	28	5/29	19/26	5/29	19/08	5/26	19/14	6/05	19/07
	29	२	शनि	28	57	ज्ये.	12	55	सिद्ध	6	15	ध. 12/55	श्रीनारद जयन्ती, वीणादान	29	5/29	19/27	5/28	19/08	5/25	19/15	6/05	19/07
	30	३	रवि	पूरा	दिन	मूल	14	16	साध्य	5	39	धनु	भ. 17/29 से, शनि मार्गी 23/38	30	5/29	19/28	5/28	19/09	5/25	19/15	6/05	19/08
	31	३	चंद्र	6	1	पू.षा.	16	11	शुभ	5	31	म. 22/45	भ. 6/01 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/27 (जालंधर), D	31	5/29	19/28	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08

A ज्येष्ठ संक्रान्ति, मु. 45, पुण्यकाल सं. अगले दिन 10/11 तक, B (4) में 29/25 C श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, वैशाख स्नान समाप्त, बुद्ध जयन्ती D शुक्र पुर्न. में 24/34, नैपच्यून वक्री 24/21

वि. संवत् 2067, जून महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य उत्तर-दक्षिणायन, घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.], ग्रीष्म-वर्षा ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	1	४	मंग	7	39	उ.षा.	18	37	शुक्ल	5	50	मकर	जून मास प्रारम्भ	1	5/28	19/29	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08
	2	५	बुध	9	45	श्रव	21	26	ब्रह्म	6	30	मकर		2	5/28	19/29	5/28	19/10	5/24	19/16	6/05	19/09
	3	६	गुरु	12	7	धनि	24	26	ऐंद्र	7	24	कुं. 10/55	भ. 12/07 से 25/20 तक, पंचक प्रारम्भ 10/55,	3	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	4	७	शुक्र	14	33	शत	27	23	वैधृ	8	24	कुम्भ	बुध कृति. में 10/11,	4	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	5	८	शनि	16	49	पू.भा.	पूरा	दिन	विष्क	9	17	मी. 23/25		5	5/28	19/31	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
	6	९	रवि	18	42	पू.भा.	6	3	प्रीति	9	56	मीन	**बुध वृष में 16/58,**	6	5/28	19/32	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
	7	१०	चंद्र	20	1	उ.भा.	8	16	आयु	10	12	मीन	भ. 7/22 से 20/01 तक,	7	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/10
	8	११	मंग	20	40	रेव	9	53	सौभा	9	58	मे. 9/53	पंचक समाप्त 9/53, सूर्य मृग में 11/01, **अपरा एकादशी व्रत, A**	8	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/11
	9	१२	बुध	20	37	अश्वि	10	50	शोभ	9	12	मेष	**शुक्र कर्क में 11/46,**	9	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	10	१३	गुरु	19	54	भर	11	5	अति	7	52	वृ. 17/03	भ. 19/54 से, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत,	10	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	11	१४	शुक्र	18	35	कृति	10	43	सुक / धृति	6 / 27	2 / 44	वृष	भ. 7/15 तक, गुरु उ.भा. (2) में 16/36,	11	5/26	19/34	5/27	19/14	5/23	19/21	6/05	19/11
	12	३०	शनि	16	45	रोहि	9	49	शूल	25	4	मि. 21/12	**भावुका शनिवारी अमावस,** वट सावित्री व्रत (राज.), शनैश्चर जयंती, **B**	12	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	13	१	रवि	14	31	मृग	8	29	गंड	22	6	मिथुन	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,	13	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
	14	२	चंद्र	12	1	आर्द्रा / पुनं	6 / 29	50 / 00	वृद्धि	18	57	क. 23/28	रम्भा तृतीया व्रत, रज्जब (मुस्लिम) मास प्रारम्भ	14	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	15	३	मंग	9	21	पुष्य	27	5	ध्रुव	15	41	कर्क	भ. 19/55 से, सूर्य मिथुन में 10/21, **आषाढ़ संक्रान्ति,** मु. 30, **(C)**	15	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	16	४	बुध	6	38	आश्ले	25	12	व्या.	12	25	सिं. 25/12	भ. 6/38 तक, गण्डमूलादि	16	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/13
	०	५	बुध	27	58	००	00	00	00	00	00	00	पंचमी तिथि का क्षय ०० ००	0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0
	17	६	गुरु	25	25	मघा	23	27	हर्ष	9	12	सिंह	गण्डमूलादि विचार, बुध पूर्व में अस्त 14/56	17	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	18	७	शुक्र	23	4	पू.फा.	21	53	वज्र / सिद्धि	6 / 27	6 / 11	कं. 27/31	भ. 23/04 से प्रा.	18	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	19	८	शनि	20	59	उ.फा.	20	34	व्य.	24	29	कन्या	भ. 10/02 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, बुध मृग. में 17/11, धूमावती जयन्ती, **D**	19	5/27	19/36	5/28	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	20	९	रवि	19	13	हस्त	19	34	वरी	22	3	कन्या	मंगल पू.फा. में 28/40,	20	5/27	19/37	5/28	19/17	5/24	19/24	6/06	19/14
	21	१०	चंद्र	17	47	चित्रा	18	55	परि	19	54	तु. 7/12	भ. 29/16 से, **श्रीगंगा दशहरा पर्व (हरिद्वार),** सूर्य सायन कर्क में **E**	21	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/06	19/14
	22	११	मंग	16	45	स्वा.	18	39	शिव	18	4	तुला	भ. 16/45 तक, **निर्जला एकादशी व्रत,** सूर्य आर्द्रा में 9/57, **बुध मिथुनF**	22	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/07	19/14
	23	१२	बुध	16	7	विशा	18	48	सिद्ध	16	35	वृ. 12/43	प्रदोष व्रत, शुक्र आश्ले. में 18/30, चम्पक द्वादशी,	23	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	24	१३	गुरु	15	57	अनु	19	24	साध्य	15	26	वृश्चिक	वट सावित्री व्रतारम्भ	24	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	25	१४	शुक्र	16	14	ज्ये.	20	27	शुभ	14	41	ध. 20/27	भ. 16/14 से 28/38 तक, बुध आर्द्रा में 23/26, **G**	25	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
	26	१५	शनि	17	01	मूल	21	58	शुक्ल	14	17	धनु	**ज्येष्ठ पूर्णिमा** स्नानदानादि, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष), खण्ड चन्द्रग्रहण **(H)**	26	5/29	19/38	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
आषाढ़ कृ.	27	१	रवि	18	15	पू.षा.	23	57	ब्रह्म	14	16	धनु	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	27	5/30	19/38	5/29	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	28	२	चंद्र	19	57	उ.षा.	26	21	ऐंद्र	14	36	म. 6/31	**खण्ड चंद्रग्रहण 26 जून**	28	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	29	३	मंग	22	0	श्रव	29	5	वैधृ	15	14	मकर	भ. 8/59 से 22/00 तक,	29	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/08	19/16
	30	४	बुध	24	20	धनि	पूरा	दिन	विष्क	16	6	कुं. 18/32	पंचक प्रारम्भ 18/32, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/06 (जालन्धर)	30	5/31	19/38	5/30	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16

A भद्रकाली एका. (पं.) **B** बुध रोहि. में 18/42, शुक्र पुष्य में 7/51, **(C)** पुण्यकाल संक्रान्ति मध्याह्न तक, प्रताप जयन्ती (राज.) **D** मेला क्षीर भवानी (कश्मीर)
E 16/58, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रारम्भ **F** 21/28, शक आषाढ़ प्रारम्भ **G** श्रीसत्यनारायण व्रत **(H)** (देखें पृष्ठ 13,14), सन्त कबीर जयन्ती

वि. संवत् 2067, जुलाई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010 ई.

सूर्य दक्षिणायन | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] | वर्षा ऋतुः

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	1	५	गुरु	26	46	धनि	8	2	प्रीति	17	5	कुम्भ	जुलाई मास प्रारम्भ, बुध पुर्न. में 26/33,
	2	६	शुक्र	29	8	शत	11	2	आयु	18	4	कुम्भ	भ. 29/08 से, प्रा.
	3	७	शनि	पूरा	दिन	पू.भा.	13	55	सौभा	18	54	मी. 7/12	भ. 18/11 तक,
	4	७	रवि	7	13	उ.भा.	16	27	शोभ	19	27	मीन	
	5	८	चंद्र	8	50	रेव	18	29	अति	19	34	मे. 18/29	पंचक समाप्त 18/29, शुक्र मघा 1 सिंह में 9/45, यूरेनस वक्री 22/18,
	6	९	मंग	9	50	अश्वि	19	53	सुक	19	10	मेष	भ. 21/58 से, सूर्य पुर्न. में 9/35, बुध कर्क में 21/29
	7	१०	बुध	10	6	भर	20	33	धृति	18	11	वृ. 26/35	भ. 10/06 तक,
	8	११	गुरु	9	37	कृति	20	28	शूल	16	35	वृष	योगिनी एकादशी व्रत, बुध पुष्य में 13/25,
	9	१२	शुक्र	8	24	रोहि	19	40	गंड	14	25	वृष	प्रदोष व्रत,
	10	१३	शनि	6	31	मृग	18	16	वृद्धि	11	43	मि. 7/3	भ. 6/31 से 17/18 तक, मास शिवरात्रि व्रत, बुध पश्चिम से उदय 8/17
	०	१४	शनि	28	4	००	00	00	00	00	00	00	चतुर्दशी तिथि का क्षय °° °°
	11	३०	रवि	25	11	आर्द्रा	16	22	ध्रुव / व्या.	8 / 29	34 / 5	मिथुन	आषाढ़ी अमावस (स्नानदान, देव, पितृकार्येषु)
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	12	१	चंद्र	21	59	पुर्न	14	5	हर्ष	25	23	क. 8/41	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ
	13	२	मंग	18	39	पुष्य	11	37	वज्र	21	34	कर्क	चन्द्रदर्शन (मु. 15), रथयात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी)
	14	३	बुध	15	18	आश्ले	9	5	सिद्धि	17	46	सिं. 9/5	भ. 25/42 से, मंगल उ.फा. में 15/21, शब्बान (मुस्लिम) मास प्रारम्भ,
	15	४	गुरु	12	6	मघा / पू.फा.	6 / 28	39 / 27	व्य.	14	5	सिंह	भ. 12/06 तक, बुध आश्ले. में 16/53,
	16	५	शुक्र	9	10	उ.फा.	26	37	वरी	10	39	कं. 9/57	सूर्य कर्क में 21/11, श्रावण संक्रान्ति, मु. 45, पुण्यकाल सं. मध्याह्न A
	17	६	शनि	6	36	हस्त	25	14	परि / शिव	7 / 28	32 / 48	कन्या	भ. 28/31 से, विवस्वत सप्तमी, शुक्र पू.फा. में 6/52, साईं टेकँराम जयन्ती
	०	७	शनि	28	31	००	00	00	00	00	00	00	सप्तमी तिथि का क्षय °° °°
	18	८	रवि	26	59	चित्रा	24	23	सिद्ध	26	31	तु. 12/44	भ. 15/45 तक, श्रीदुर्गाष्टमी
	19	९	चंद्र	26	00	स्वा.	24	6	साध्य	24	42	तुला	भढली नवमी, मेला शरीक भवानी (काश्मीर)
	20	१०	मंग	25	37	विशा	24	24	शुभ	23	21	वृ. 18/16	सूर्य पुष्य में 9/02, मंगल कन्या में 6/33,
	21	११	बुध	25	47	अनु	25	15	शुक्ल	22	27	वृश्चिक	भ. 13/42 से 25/47 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य B
	22	१२	गुरु	26	29	ज्ये.	26	36	ब्रह्म	21	58	ध. 26/36	सूर्य सायन सिंह में 27/51,
	23	१३	शुक्र	27	38	मूल	28	25	ऐंद्र	21	51	धनु	प्रदोष व्रत, बुध मघा (1) सिंह में 22/09, गुरु वक्री 17/33, C
	24	१४	शनि	29	12	पू.षा.	पूरा	दिन	वैधृ	22	3	धनु	भ. 29/12 से,
	25	१५	रवि	पूरा	दिन	पू.षा.	6	37	विष्क	22	33	म. 13/13	भ. 18/10 तक, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, (देखें पृष्ठ 81) D
	26	१५	चंद्र	7	7	उ.षा.	9	9	प्रीति	23	15	मकर	आषाढ़ पूर्णिमा स्नानदानादि, राहु पू.षा. (1) केतु, आर्द्रा (3) में 27/01
श्रावण कृ.	27	१	मंग	9	17	श्रव	11	55	आयु	24	8	कुं. 25/23	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 25/23, अशून्यशयन व्रत
	28	२	बुध	11	39	धनि.	14	52	सौभा	25	6	कुम्भ	भ. 24/52 से प्रारम्भ
	29	३	गुरु	14	5	शत.	17	53	शोभ	26	6	कुम्भ	भ. 14/05 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21/06 (जालंधर), E
	30	४	शुक्र	16	30	पू.भा.	20	50	अति	27	1	मी. 14/7	
	31	५	शनि	18	43	उ.भा.	23	36	सुक	27	45	मीन	नागपंचमी (राज. व बंगाल)

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	5/31	19/38	5/31	19/19	5/27	19/25	6/09	19/16
2	5/31	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/09	19/16
3	5/32	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
4	5/32	19/38	5/32	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
5	5/32	19/38	5/32	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
6	5/33	19/38	5/33	19/18	5/29	19/25	6/11	19/16
7	5/33	19/38	5/33	19/18	5/30	19/24	6/11	19/16
8	5/34	19/38	5/34	19/18	5/30	19/24	6/12	19/16
9	5/34	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
10	5/35	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
0	00	00	00	00	00	00	00	00
11	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
12	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
13	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/13	19/16
14	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/14	19/16
15	5/38	19/36	5/37	19/17	5/34	19/22	6/14	19/16
16	5/38	19/36	5/37	19/16	5/34	19/22	6/14	19/16
17	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
0	00	00	00	00	00	00	00	00
18	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/21	6/15	19/15
19	5/40	19/35	5/39	19/15	5/36	19/21	6/15	19/15
20	5/40	19/35	5/40	19/15	5/37	19/21	6/15	19/14
21	5/41	19/34	5/40	19/14	5/37	19/20	6/16	19/14
22	5/42	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
23	5/42	19/33	5/41	19/13	5/38	19/19	6/16	19/13
24	5/43	19/32	5/42	19/13	5/39	19/19	6/17	19/13
25	5/44	19/32	5/42	19/12	5/40	19/18	6/17	19/13
26	5/45	19/31	5/43	19/12	5/40	19/17	6/17	19/12
27	5/45	19/30	5/43	19/11	5/41	19/17	6/18	19/12
28	5/46	19/30	5/44	19/11	5/41	19/16	6/18	19/12
29	5/47	19/29	5/44	19/10	5/42	19/15	6/18	19/11
30	5/47	19/27	5/45	19/10	5/43	19/15	6/19	19/11
31	5/48	19/27	5/46	19/09	5/43	19/14	6/19	19/10

A बाद, स्कन्द षष्ठी, कुमार षष्ठी **B** व्रतादि नियम प्रारम्भ, **C** शक श्रावण प्रारम्भ **D**, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर), अम्बिका व्रत

E शुक्र उ.फा. में 12/34, शनि उ.फा. (4) में 22/07,

वि. संवत् 2067, अगस्त महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.)ऽ सन् 2010 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन, घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.], वर्षा-शरद् ऋतुः
श्रावण कृष्ण पक्ष	1	६	रवि	20	37	रेव	26	1	धृति	28	11	मे. 26/1	भ. 20/37 से, शुक्र कन्या में 15/48, पंचक समाप्त 26/01, तिलक (A)
	2	७	चंद्र	22	1	अश्वि	27	55	शूल	28	12	मेष	भ. 9/19 तक, बुध पू.फा. में 24/44,
	3	८	मंग	22	47	भर	29	10	गंड	27	42	मेष	सूर्य आश्ले. में 8/00,
	4	९	बुध	22	49	कृति	29	42	वृद्धि	26	37	वृ. 11/22	
	5	१०	गुरु	22	5	रोहि	29	28	ध्रुव	24	55	वृष	भ. 10/27 से 22/05 तक, मंगल हस्त में 18/06,
	6	११	शुक्र	20	35	मृग	28	29	व्या.	22	35	मि. 17/4	कामिका एकादशी व्रत,
	7	१२	शनि	18	22	आर्द्रा	26	49	हर्ष	19	41	मिथुन	शनि प्रदोष व्रत
	8	१३	रवि	15	33	पुर्न	24	36	वज्र	16	18	क. 19/12	भ. 15/33 से 25/54 तक, मास शिवरात्रि व्रत
	9	१४	चंद्र	12	15	पुष्य	21	57	सिद्धि	12	30	कर्क	अमावस (पितृकार्येषु), सोमवती अमावस 12/15 बाद
	10	३०	मंग	8	38	आश्ले	19	4	व्य. वरी	8 28	26 14	सिं. 19/4	हरियाली अमावस, स्नानदानादि,
श्रावण शुक्ल पक्ष	०	१	मंग	28	51	००	00	00	00	00	00	00	श्रावण शुक्ल प्रतिपदा का क्षय ०० ००
	11	२	बुध	25	6	मघा	16	6	परि	24	3	सिंह	चन्द्रदर्शन, शुक्र हस्त में 7/17, मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ
	12	३	गुरु	21	32	पू.फा.	13	15	शिव	20	1	कं. 18/35	मधुस्रवा, हरियाली-सिंघारा तीज, रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ
	13	४	शुक्र	18	19	उ.फा.	10	42	सिद्ध	16	16	कन्या	भ. 7/56 से 18/19 तक, दूर्वा गणपति व्रत, वरद् चतुर्थी
	14	५	शनि	15	36	हस्त	8	36	साध्य	12	55	तु. 19/46	नाग-पंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती,
	15	६	रवि	13	31	चित्रा	7	6	शुभ	10	5	तुला	भारत स्वतन्त्रता दिवस,
	16	७	चंद्र	12	8	स्वा.	6	17	शुक्ल	7	49	वृ. 24/10	भ. 12/08 से 23/50 तक, सूर्य मघा (1) सिंह में 29/34, भाद्रपद (B)
	17	८	मंग	11	31	विशा	6	13	ब्रह्म ऐंद्र	6 29	10 6	वृश्चिक	श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी-कांगड़ा,
	18	९	बुध	11	39	अनु	6	52	वैधृ	28	35	वृश्चिक	गण्डमूल 6/52 से प्रारम्भ
	19	१०	गुरु	12	27	ज्ये.	8	12	विष्क	28	33	ध. 8/12	भ. 25/08 से, गण्डमूलादि
	20	११	शुक्र	13	49	मूल	10	7	प्रीति	28	54	धनु	भ. 13/49 तक, पवित्रा एकादशी व्रत, बुध वक्री 25/28
	21	१२	शनि	15	39	पू.षा.	12	29	आयु	29	31	म. 19/8	शनि प्रदोष व्रत
	22	१३	रवि	17	48	उ.षा.	15	11	सौभा	पूरा	दिन	मकर	
	23	१४	चंद्र	20	8	श्रव	18	4	सौभा	6	21	मकर	भ. 20/08 से, ऋग्वेदि उपाकर्म, सूर्य सायन कन्या में 10/57, शक (C)
	24	१५	मंग	22	35	धनि	21	3	शोभ	7	16	कुं. 7/33	भ. 9/22 तक, श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (भद्रा बाद) (देखें पृष्ठ—)D
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	25	१	बुध	25	1	शत	24	3	अति	8	15	कुम्भ	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ
	26	२	गुरु	27	24	पू.भा.	26	58	सुक	9	12	मी. 20/15	मंगल चित्रा में 21/02,
	27	३	शुक्र	29	36	उ.भा.	29	45	धृति	10	4	मीन	भ. 16/30 से 29/36 तक, कज्जली तीज, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 29/16,
	28	४	शनि	पूरा	दिन	रेव	पूरा	दिन	शूल	10	48	मीन	श्रीगणेश संकष्ट (बहुला) चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय 20/34 (जालन्धर),
	29	४	रवि	7	34	रेव	8	17	गंड	11	20	मे. 8/17	पंचक समाप्त 8/17, वक्री गुरु पू.भा. (4) में 14/03
	30	५	चंद्र	9	10	अश्वि	10	28	वृद्धि	11	34	मेष	चन्दन षष्ठी, चन्द्रोदय 21/43 (जालं.), हल षष्ठी, सूर्य पू.फा. में 25/37
	31	६	मंग	10	18	भर	12	11	ध्रुव	11	25	वृ. 18/31	भ. 10/18 से 22/34 तक, शनि हस्त (1) में 6/54, शीतला सप्तमी

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	5/48	19/25	5/46	19/08	5/44	19/13	6/20	19/10
2	5/49	19/25	5/47	19/08	5/44	19/12	6/20	19/09
3	5/49	19/24	5/47	19/07	5/45	19/11	6/20	19/09
4	5/50	19/23	5/48	19/06	5/46	19/11	6/21	19/08
5	5/51	19/23	5/48	19/05	5/46	19/10	6/21	19/08
6	5/52	19/22	5/49	19/05	5/47	19/09	6/21	19/07
7	5/52	19/21	5/49	19/04	5/47	19/08	6/22	19/07
8	5/53	19/20	5/50	19/03	5/48	19/07	6/22	19/06
9	5/53	19/19	5/51	19/02	5/49	19/06	6/22	19/05
10	5/54	19/18	5/51	19/01	5/49	19/05	6/22	19/05
0	00	00	00	00	00	00	00	00
11	5/55	19/17	5/52	19/01	5/50	19/04	6/22	19/04
12	5/56	19/16	5/52	19/00	5/51	19/03	6/23	19/03
13	5/57	19/15	5/53	18/59	5/51	19/02	6/23	19/03
14	5/57	19/13	5/53	18/58	5/52	19/02	6/23	19/02
15	5/58	19/12	5/54	18/57	5/52	19/01	6/23	19/02
16	5/59	19/11	5/54	18/56	5/53	19/00	6/24	19/01
17	5/59	19/10	5/55	18/55	5/54	18/59	6/24	19/01
18	6/00	19/09	5/55	18/54	5/54	18/58	6/24	19/00
19	6/00	19/08	5/56	18/53	5/55	18/56	6/24	19/00
20	6/01	19/06	5/56	18/52	5/55	18/55	6/24	19/00
21	6/01	19/05	5/57	18/51	5/56	18/54	6/25	18/59
22	6/02	19/04	5/58	18/50	5/56	18/53	6/25	18/58
23	6/02	19/03	5/58	18/49	5/57	18/52	6/25	18/57
24	6/03	19/02	5/59	18/48	5/58	18/51	6/25	18/56
25	6/04	19/01	5/59	18/47	5/58	18/50	6/26	18/55
26	6/04	19/00	6/00	18/46	5/59	18/49	6/26	18/54
27	6/05	18/59	6/00	18/45	5/59	18/47	6/26	18/53
28	6/06	18/57	6/01	18/44	6/00	18/46	6/27	18/52
29	6/07	18/54	6/02	18/42	6/01	18/44	6/28	18/50
30	6/07	18/54	6/02	18/42	6/01	18/44	6/28	18/50
31	6/08	18/53	6/02	18/41	6/02	18/43	6/28	18/49

(A) पुण्यतिथि, अगस्त प्रारम्भ (B) संक्रान्ति, मु. 45, पुण्यकाल सं. अगले दिन मध्याह्न तक, गो. तुलसीदास जयन्ती (C) भाद्रपद प्रारम्भ, शरद् ऋतु प्रारम्भ

D शुक्र चित्रा में 24/19, श्रावणी उपाकर्म, गायत्री जयन्ती, पंचक प्रारम्भ 7/33, श्रीसत्यनारायण व्रत

वि. संवत् 2067, सितम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010 ई.

मास पक्ष	सितंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शरद् ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	1	७	बुध	10 50	कृति	13 19	व्या.	10 49	वृष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त), चन्द्रोदय 23/12, (देखें पृष्ठ 81, 82) शुक्र तुला में A	1	6/08	18/52	6/03	18/39	6/02	18/42	6/29	18/48
	2	८	गुरु	10 42	रोहि	13 47	हर्ष	9 [illegible]	मि. 25/45	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव, गोकुलाष्टमी, चन्द्रोदय 24/08 (जालन्धर)(R)	2	6/09	18/51	6/03	18/38	6/03	18/41	6/29	18/47
	3	९	शुक्र	9 51	मृग	13 32	वज्र / सिद्धि	7 58 / 29 39	मिथुन	भ. 21/03 से, गुग्गा नवमी	3	6/10	18/50	6/04	18/36	6/03	18/40	6/29	18/46
	4	१०	शनि	8 14	आर्द्रा	12 33	व्य.	26 46	क. 29/21	भ. 8/14 तक, अजा एकादशी व्रत स्मा., वक्री गुरु उ.भा. (1) में 21/26,	4	6/11	18/49	6/04	18/35	6/04	18/38	6/29	18/45
	०	११	शनि	29 56	००	00 00	00	00 00	00	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0
	5	१२	रवि	27 1	पुनं	10 53	वरी	23 22	कर्क	अजा एकादशी व्रत वैष्णव, मंगल तुला में 27/03, वत्स द्वादशी (पूजा)	5	6/11	18/48	6/05	18/34	6/05	18/37	6/29	18/44
	6	१३	चंद्र	23 37	पुष्य / आश्ले	8 37 / 29 55	परि	19 32	सिं. 29/55	भ. 23/37 से, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, गण्डमूल 8/37 के बाद,	6	6/12	18/47	6/05	18/33	6/05	18/35	6/29	18/44
	7	१४	मंग	19 53	मघा	26 56	शिव	15 23	सिंह	भ. 9/45 तक, वक्री बुध मघा (4) में 22/22, गंडमूल विचार	7	6/12	18/45	6/06	18/32	6/06	18/34	6/30	18/43
	8	३०	बुध	16 00	पू.फा.	23 51	सिद्ध	11 5	कं. 29/05	कुशाग्रहणी अमावस, 'ॐ हूँ फट् स्वाहा' इह मंत्रेण कुशोत्पाटनम्, पिठोरीB	8	6/13	18/43	6/06	18/31	6/06	18/33	6/30	18/43
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	9	१	गुरु	12 8	उ.फा.	20 52	साध्य / शुभ	6 46 / 26 35	कन्या	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र स्वा. में 18/46,	9	6/14	18/42	6/07	18/29	6/07	18/32	6/30	18/42
	10	२	शुक्र	8 29	हस्त	18 10	शुक्ल	22 41	तु. 29/00	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, हरितालिका तृतीया, गौरी तीज, सामवेदि उपाकर्म, C	10	6/14	18/40	6/07	18/28	6/07	18/30	6/30	18/41
	०	३	शुक्र	29 14	००	00 00	00	00 00	00	तृतीया तिथि का क्षय ०० ००	0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0
	11	४	शनि	26 34	चित्रा	15 59	ब्रह्म	19 13	तुला	भ. 15/54 से 26/34 तक, सिद्धि विनायक व्रत, कलंक चतुर्थी D	11	6/15	18/38	6/07	18/27	6/08	18/29	6/30	18/40
	12	५	रवि	24 36	स्वा.	14 25	ऐंद्र	16 19	तुला	ऋषि पंचमी, सम्वत्सरी महापर्व (पंचमी पक्ष) (जैन), बुध मार्गी 28/39	12	6/16	18/37	6/08	18/26	6/08	18/28	6/30	18/40
	13	६	चंद्र	23 27	विशा	13 39	वैधृ	14 2	वृ. 7/46	सूर्य षष्ठी व्रत, ललिता षष्ठी व्रत, सूर्य उ.फा. में 19/23, शनि पश्चिम E	13	6/16	18/37	6/08	18/25	6/09	18/27	6/30	18/39
	14	७	मंग	23 10	अनु.	13 42	विष्क	12 25	वृश्चिक	भ. 23/10 से, मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी व्रत, प्लूटो मार्गी 10/02	14	6/17	18/36	6/09	18/23	6/10	18/25	6/30	18/38
	15	८	बुध	23 42	ज्ये.	14 34	प्रीति	11 30	ध. 14/34	भ. 11/26 तक, मंगल स्वा. में 28/27, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, F	15	6/17	18/35	6/09	18/22	6/10	18/24	6/30	18/37
	16	९	गुरु	24 58	मूल	16 12	आयु	11 10	धनु	सूर्य कन्या में 29/29, आश्विन संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं. अगले G	16	6/18	18/33	6/10	18/21	6/11	18/23	6/31	18/36
	17	१०	शुक्र	26 49	पू.षा.	18 27	सौभा	11 22	म. 25/05		17	6/18	18/31	6/10	18/20	6/11	18/22	6/31	18/35
	18	११	शनि	29 5	उ.षा.	21 9	शोभ	11 57	मकर	भ. 15/57 से 29/05 तक, पद्मा एकादशी व्रत स्मार्त, बुध पू.फा. में 6/34,	18	6/19	18/30	6/11	18/19	6/12	18/20	6/31	18/34
	19	१२	रवि	पूरा दिन	श्रव	24 5	अति	12 47	मकर	श्री वामन जयन्ती, पदमा एकादशी व्रत (वैष्णव)	19	6/20	18/28	6/11	18/17	6/12	18/19	6/31	18/34
	20	१२	चंद्र	7 33	धनि	27 7	सुक	13 45	कुं. 13/36	पंचक प्रारम्भ 13/36, प्रदोष व्रत	20	6/21	18/27	6/12	18/16	6/13	18/18	6/31	18/33
	21	१३	मंग	10 4	शत	30 7	धृति	14 43	कुम्भ		21	6/22	18/26	6/12	18/15	6/14	18/16	6/32	18/32
	22	१४	बुध	12 30	पू.भा.	पूरा दिन	शूल	15 37	मी. 26/16	भ. 12/30 से 25/39 तक, अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला सोढल (जालंधर)H	22	6/22	18/25	6/13	18/14	6/14	18/15	6/32	18/31
	23	१५	गुरु	14 47	पू.भा.	8 58	गंड	16 22	मीन	भाद्रपद पूर्णिमा स्नानदान, प्रौष्ठपदी, महालय श्राद्धारम्भ, सूर्य सायन (I)	23	6/23	18/24	6/13	18/13	6/15	18/14	6/32	18/30
आश्विन कृष्ण पक्ष	24	१	शुक्र	16 51	उ.भा.	11 37	वृद्धि	16 58	मीन	आश्विन कृष्ण पक्षारम्भ, पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध	24	6/24	18/23	6/14	18/12	6/15	18/13	6/32	18/29
	25	२	शनि	18 39	रेव	14 1	ध्रुव	17 21	मे. 14/1	पंचक समाप्त 14/01, द्वितीया का श्राद्ध	25	6/24	18/21	6/14	18/10	6/16	18/11	6/33	18/28
	26	३	रवि	20 8	अश्वि	16 7	व्या.	17 31	मेष	भ. 7/24 से 20/08 तक, तृतीया का श्राद्ध	26	6/25	18/20	6/15	18/09	6/16	18/10	6/33	18/27
	27	४	चंद्र	21 15	भर	17 54	हर्ष	17 24	वृ. 24/17	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21/10 (जालंधर), सूर्य हस्त में 10/57, J	27	6/25	18/18	6/15	18/08	6/17	18/09	6/33	18/26
	28	५	मंग	21 57	कृति	19 16	वज्र	16 57	वृष	पंचमी का श्राद्ध, बुध उ.फा. में 11/49,	28	6/26	18/16	6/16	18/07	6/18	18/08	6/33	18/25
	29	६	बुध	22 9	रोहि	20 9	सिद्धि	16 8	वृष	भ. 22/09 से, वक्री गुरु पू.भा. (4) में 14/03, षष्ठी का श्राद्ध	29	6/26	18/15	6/16	18/06	6/18	18/06	6/33	18/24
	30	७	गुरु	21 47	मृग	20 29	व्य.	14 52	मि. 8/23	भ. 9/58 तक, बुध कन्या में 10/52, श्रीमहालक्ष्मी व्रत (K)	30	6/27	18/14	6/17	18/04	6/19	18/05	6/33	18/23

A 12/02, शीतला सप्तमी **(R)** दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृष्ठ 82) **B** अमावस, शक्ति पूजा, **C** वक्री बुध पूर्व से उदय 27/19 **D** (पत्थर चौथ), चन्द्रदर्शन निषेध [चन्द्रास्त 20/21 (जालंधर)], शव्वाल (मुस्लिम) मास प्रारम्भ **E** में अस्त 17/23, **F** श्रीराधाष्टमी, दधीची जयन्ती **G** दिन मध्याह्न तक, श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय), श्रीभागवत् सप्ताह प्रारम्भ **H** कदली व्रत, सत्यनारायण व्रत **(I)** तुला में 8/39, शक आश्विन प्रारम्भ **J** शनि हस्त (2) में 24/24, राहु मूल 4 केतु आर्द्रा (2) में 24/29 **(K)** (चं. उ. योग), श्राद्ध सप्तमी, बुध पूर्व में अस्त 9/47

वि. संवत् 2067, अक्तूबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010 ई.

मास पक्ष	अंग्रेजी तारीख	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] — शरद् ऋतुः
आश्विन कृष्ण	1	८	शुक्र	20	48	आर्द्रा	20	13	वरी	13	8	मिथुन	जीवित्पुत्रिका व्रत, अशोकाष्टमी, अष्टमी का श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत A
	2	९	शनि	19	10	पुर्न	19	19	परि	10	53	क. 13/36	भ. 30/03 से, गांधी जयंती, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, मातृ नवमी, नवमी श्राद्ध
	3	१०	रवि	16	56	पुष्य	17	49	शिव सिद्ध	8 28	8 55	कर्क	भ. 16/56 तक, दशमी का श्राद्ध
	4	११	चंद्र	14	10	आश्ले	15	47	साध्य	25	18	सिं. 15/47	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी एवं द्वादशी का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 82) B
	5	१२	मंग	10	58	मघा	13	19	शुभ	21	23	सिंह	भौम प्रदोष व्रत, मंगल विशा. में 19/08, बुध हस्त में 26/29, गजच्छाया C
	6	१३	बुध	7	28	पू.फा.	10	34	शुक्ल	17	16	कं. 15/52	भ. 7/28 से 17/39 तक, शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध
	०	१४	बुध	27	50	००	00	00	00	00	00	00	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००
	7	३०	गुरु	24	15	उ.फा. हस्त	7 28	43 58	ब्रह्म	13	8	कन्या	आश्विन, महालय अमावस स्नानदानादि, सर्वपितृ श्राद्ध, चतुर्दशी/अमावस का श्राद्ध D
आश्विन शुक्ल पक्ष	8	१	शुक्र	20	54	चित्रा	26	28	ऐन्द्र वैधृ	9 29	6 20	तु. 15/40	आश्विन-शरद् नवरात्रे प्रारम्भ, घटस्थापन दूर्गा पूजा, मातामह (नाना) E
	9	२	शनि	17	58	स्वा.	24	27	विष्क	25	58	तुला	चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	10	३	रवि	15	37	विशा	23	4	प्रीति	23	7	वृ. 17/20	भ. 26/49 से, सूर्य चित्रा में 23/54, जिल्काद (मुस्लिम) मास प्रारम्भ
	11	४	चंद्र	14	00	अनु.	22	26	आयु	20	53	वृश्चिक	भ. 14/00 तक, उपाङ्ग ललिता व्रत,
	12	५	मंग	13	14	ज्ये.	22	38	सौभा	19	20	ध. 22/38	गण्डमूल विचार
	13	६	बुध	13	19	मूल	23	41	शोभ	18	28	धनु	बुध चित्रा में 15/36, सरस्वती आवाहन, गण्डमूलादि
	14	७	गुरु	14	13	पू.षा.	25	29	अति	18	13	धनु	भ. 14/13 से 27/02 तक, सरस्वती पूजन
	15	८	शुक्र	15	51	उ.षा.	27	54	सुक	18	29	म. 8/02	महाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी, सरस्वती बलिदान, भद्रकाली जयन्ती
	16	९	शनि	18	00	श्रव.	पूरा	दिन	धृति	19	8	मकर	महानवमी, नवरात्रे समाप्त, आयुध पूजा, सरस्वती विसर्जन,
	17	१०	रवि	20	28	श्रव.	6	43	शूल	20	00	कुं. 20/13	विजयादशमी (दशहरा), सूर्य तुला में 17/27, कार्तिक संक्रान्ति, F
	18	११	चंद्र	23	2	धनि.	9	44	गंड	20	57	कुम्भ	भ. 9/45 से 23/02 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत, शनि पूर्व से उदय 15/24,
	19	१२	मंग	25	29	शत.	12	44	वृद्धि	21	49	कुम्भ	मंगल वृश्चिक में 26/20,
	20	१३	बुध	27	42	पू.भा.	15	34	ध्रुव	22	32	मी. 8/53	प्रदोष व्रत, शुक्र पश्चिम में अस्त 6/50 (शुक्र अस्त 20 अक्तू.)
	21	१४	गुरु	29	35	उ.भा.	18	7	व्या.	23	00	मीन	भ. 29/35 से, बुध स्वा. में 12/41
	22	१५	शुक्र	पूरा	दिन	रेव	20	20	हर्ष	23	11	मे. 20/20	भ. 18/21 तक, आश्विन पूर्णिमा पुण्य, व्रतादि, शरद् पूर्णिमा व्रत, G
	23	१५	शनि	7	7	अश्वि	22	11	वज्र	23	6	मेष	आश्विन पूर्णिमा स्नानादि, सूर्य सायन वृश्चिक में 18/05, शक कार्तिक H
कार्तिक कृष्ण पक्ष	24	१	रवि	8	15	भर.	23	41	सिद्धि	22	43	वृ. 30/00	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य स्वा. में 10/27, मंगल अनु. में 19/06,
	25	२	चंद्र	9	2	कृति	24	49	व्य.	22	3	वृष	भ. 21/14 से प्रारम्भ
	26	३	मंग	9	26	रोहि	25	35	वरी	21	6	वृष	भ. 9/26 तक, करक चतुर्थी, व्रत करवा चौथ, चं. उ. 19/59 (I)
	27	४	बुध	9	27	मृग	25	58	परि	19	50	मि. 13/50	
	28	५	गुरु	9	5	आर्द्रा	25	57	शिव	18	15	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत
	29	६	शुक्र	8	17	पुर्न	25	31	सिद्ध	16	19	क. 19/40	भ. 8/17 से 19/40 तक, बुध विशा. में 19/23
	30	७	शनि	7	3	पुष्य	24	37	साध्य	14	3	कर्क	अहोई अष्टमी व्रत, श्रीराधाष्टमी
	०	८	शनि	29	22	००	00	00	00	00	00	00	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ००
	31	९	रवि	27	15	आश्ले	23	18	शुभ	11	24	सिं. 23/18	गण्डमूल विचार

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	6/28	18/12	6/18	18/03	6/20	18/04	6/34	18/23
2	6/28	18/10	6/18	18/02	6/20	18/03	6/34	18/22
3	6/29	18/09	6/19	18/00	6/21	18/01	6/34	18/21
4	6/30	18/08	6/19	17/59	6/22	18/00	6/34	18/21
5	6/30	18/07	6/20	17/58	6/22	17/59	6/34	18/20
6	6/31	18/06	6/20	17/57	6/23	17/58	6/35	18/19
0	00	00	00	00	00	00	00	00
7	6/31	18/05	6/21	17/56	6/23	17/56	6/35	18/19
8	6/32	18/04	6/22	17/55	6/24	17/55	6/35	18/18
9	6/33	18/03	6/22	17/54	6/25	17/54	6/35	18/17
10	6/33	18/01	6/23	17/52	6/25	17/53	6/35	18/16
11	6/34	18/00	6/23	17/51	6/26	17/52	6/36	18/15
12	6/35	17/59	6/24	17/50	6/27	17/51	6/36	18/14
13	6/36	17/57	6/24	17/49	6/27	17/49	6/36	18/14
14	6/37	17/55	6/25	17/48	6/28	17/48	6/37	18/13
15	6/38	17/54	6/26	17/47	6/29	17/47	6/37	18/12
16	6/38	17/53	6/26	17/46	6/29	17/46	6/37	18/11
17	6/39	17/52	6/27	17/45	6/30	17/45	6/38	18/10
18	6/40	17/51	6/27	17/44	6/31	17/44	6/38	18/09
19	6/41	17/50	6/28	17/43	6/31	17/43	6/38	18/08
20	6/41	17/49	6/29	17/42	6/32	17/42	6/39	18/07
21	6/42	17/48	6/29	17/41	6/33	17/41	6/39	18/06
22	6/43	17/47	6/30	17/40	6/34	17/40	6/39	18/06
23	6/43	17/46	6/31	17/39	6/34	17/39	6/40	18/05
24	6/44	17/45	6/31	17/38	6/35	17/38	6/40	18/05
25	6/45	17/44	6/32	17/37	6/36	17/37	6/40	18/04
26	6/46	17/43	6/33	17/37	6/37	17/36	6/41	18/04
27	6/47	17/42	6/33	17/36	6/37	17/35	6/41	18/04
28	6/48	17/41	6/34	17/35	6/38	17/34	6/41	18/03
29	6/49	17/39	6/35	17/34	6/39	17/33	6/42	18/03
30	6/50	17/38	6/36	17/34	6/40	17/32	6/42	18/03
0	00	00	00	00	00	00	00	00
31	6/51	17/38	6/36	17/33	6/40	17/31	6/43	18/02

A अष्टमी यांगे B संन्यासीनां श्राद्ध C योग 10/58 से 13/19 तक, श्राद्ध त्रयोदशी, मघा त्रयोदशी D पितृ विसर्जन, गजच्छाया योग 7/43 से E का श्राद्ध, शुक्र वक्री 12/35, महाराजा अग्रसेन जयन्ती F मु. 30, पुण्काल सं. मध्याह्न 11/03 बाद, बुध तुला में 12/58, अपराजिता पूजन, पंचक प्रारम्भ 20/13, G कोजागर व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत H कार्तिक स्नान प्रारम्भ, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ (I) (जालंधर) देखें पृष्ठ 84

वि. संवत् 2067, नवंबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिन्टों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010 ई.

मास पक्ष	नवंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — हेमन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
कार्तिक कृष्ण	1	१०	चंद्र	24 46	मघा	21 36	शुक्ल ब्रह्म	8 26 29 9	सिंह	नवंबर मास प्रारम्भ, भ. 14/01 से 24/46 तक, **वक्री गुरु कुम्भ में 12/54,**	1	6/51	17/35	6/37	17/32	6/41	17/30	6/43	18/02
	2	११	मंग	21 58	पू.फा.	19 34	ऐंद्र	25 39	कं. 25/2	रमा एकादशी व्रत, शुक्र पूर्व में उदय 14/29	2	6/52	17/34	6/37	17/34	6/41	17/30	6/44	18/01
	3	१२	बुध	19 00	उ.फा.	17 21	वैधृ	22 1	कन्या	गोवत्स द्वादशी, धन त्रयोदशी, प्रदोष व्रत (देखें पृष्ठ 83) यमाय दीपदानं	3	6/53	17/33	6/38	17/33	6/42	17/29	6/44	18/01
	4	१३	गुरु	15 58	हस्त	15 4	विष्क	18 21	तु. 25/57	भ. 15/58 से 26/30 तक, श्रीहनुमान जयन्ती, (देखें पृष्ठ 83), यमाय तर्पण, **(A)**	4	6/54	17/32	6/39	17/32	6/43	17/28	6/45	18/00
	5	१४	शुक्र	13 2	चित्रा	12 53	प्रीति	14 47	तुला	अमावस (पितृकार्येपु), **दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन,** नरक चौदश **B**	5	6/54	17/31	6/39	17/31	6/44	17/27	6/45	18/00
	6	३०	शनि	10 22	स्वा.	10 56	आयु	11 26	वृ. 27/45	कार्तिक अमावस स्नानदानादि, अन्नकूट-गोवर्धन पूजा, सूर्य विशा. में **C**	6	6/55	17/30	6/40	17/30	6/45	17/26	6/45	17/59
कार्तिक शुक्ल पक्ष	7	१	रवि	8 7	विशा	9 25	सौभा शोभ	8 26 29 53	वृश्चिक	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, **भ्रातृ दूज** (प्रातः 8/07 बाद), **D**	7	6/56	17/30	6/41	17/30	6/46	17/26	6/46	17/59
	०	२	रवि	30 26	००	00 00	00	00 00	00	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	8	३	चंद्र	29 26	अनु.	8 28	अति	27 53	वृश्चिक	जिल्हेज (मुस्लिम) मास प्रारम्भ,	8	6/57	17/29	6/42	17/29	6/46	17/25	6/46	17/58
	9	४	मंग	29 12	ज्ये.	8 13	सुक	26 29	ध. 8/13	भ. 17/19 से 29/12 तक, **दूर्वा गणपति व्रत,**	9	6/58	17/28	6/43	17/28	6/47	17/24	6/47	17/58
	10	५	बुध	29 46	मूल	8 42	धृति	25 42	धनु	ज्ञान पंचमी, जया पंचमी — **शुक्र उदय 2 नवं.**	10	6/59	17/28	6/43	17/28	6/48	17/24	6/47	17/58
	11	६	गुरु	पूरा दिन	पू.षा.	9 57	शूल	25 30	म. 16/23	मंगल ज्ये. में 30/13, **सूर्य षष्ठी व्रत**	11	7/00	17/27	6/44	17/27	6/49	17/23	6/48	17/57
	12	६	शुक्र	7 5	उ.षा.	11 54	गंड	25 47	मकर		12	7/01	17/26	6/45	17/26	6/50	17/22	6/49	17/57
	13	७	शनि	9 1	श्रव	14 25	वृद्धि	26 25	कुं. 27/49	भ. 9/01 से 22/11 तक, पंचक प्रारम्भ 27/49	13	7/02	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
	14	८	रवि	11 21	धनि	17 17	ध्रुव	27 15	कुम्भ	गोपाष्टमी, नेहरू जयन्ती (बाल दिवस),	14	7/03	17/26	6/46	17/25	6/51	17/21	6/50	17/56
	15	९	चंद्र	13 53	शत.	20 16	व्या.	28 7	कुम्भ	अक्षया नवमी, कूष्माण्ड नवमी, आरोग्य व्रत, जगद्धातृ पूजा	15	7/04	17/25	6/47	17/25	6/52	17/21	6/50	17/56
	16	१०	मंग	16 23	पू.भा.	23 9	हर्ष	28 52	मी. 16/27	भ. 29/30 से, **सूर्य वृश्चिक में 17/18, मार्गशीर्ष संक्रान्ति,** मु. 30 **E**	16	7/05	17/25	6/48	17/24	6/53	17/20	6/51	17/56
	17	११	बुध	18 37	उ.भा.	25 46	वज्र	29 22	मीन	भ. 18/37 तक, **देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत, भीष्मपंचक प्रारम्भ, F**	17	7/06	17/24	6/49	17/24	6/54	17/20	6/51	17/55
	18	१२	गुरु	20 26	रेव	27 58	सिद्धि	29 32	मे. 27/58	**पंचक समाप्त 27/58, गुरु मार्गी 22/23, शुक्र मार्गी 26/48, G**	18	7/07	17/23	6/50	17/23	6/55	17/19	6/52	17/55
	19	१३	शुक्र	21 47	अश्वि	29 41	व्य.	29 19	मेष	प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी, सूर्य अनु. में 24/39,	19	7/08	17/23	6/50	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
	20	१४	शनि	22 37	भर	30 55	वरी	28 42	मेष	भ. 22/37 से प्रारम्भ	20	7/09	17/23	6/51	17/22	6/57	17/19	6/53	17/55
	21	१५	रवि	22 57	कृति	पूरा दिन	परि	27 43	वृ. 13/9	भ. 10/47 तक, **कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक जयन्ती, भीष्मपंचक H**	21	7/10	17/22	6/52	17/22	6/57	17/18	6/54	17/55
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	22	१	चंद्र	22 50	कृति	7 40	शिव	26 23	वृष	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन धनु में 15/45, शक मार्गशीर्ष प्रा.।	22	7/11	17/22	6/53	17/22	6/58	17/18	6/54	17/55
	23	२	मंग	22 18	रोहि	8 00	सिद्ध	24 44	मि. 20/01		23	7/12	17/22	6/54	17/21	6/59	17/18	6/55	17/55
	24	३	बुध	21 25	मृग	7 57	साध्य	22 48	मिथुन	भ. 9/52 से 21/25 तक, सौभाग्य सुन्दरी व्रत, शनि हस्त (4) में 29/32,	24	7/13	17/21	6/54	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
	25	४	गुरु	20 13	आर्द्रा पुनर्	7 34 30 55	शुभ	20 38	क. 25/6	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20/53 (जालं.), बुध मूल 1 धनु में 28/00	25	7/14	17/21	6/55	17/21	7/01	17/17	6/56	17/55
	26	५	शुक्र	18 45	पुष्य	30 00	शुक्ल	18 15	कर्क		26	7/15	17/21	6/56	17/20	7/02	17/17	6/56	17/55
	27	६	शनि	17 3	आश्ले	28 52	ब्रह्म	15 40	सिं. 28/52	भ. 17/03 से 28/06 तक, **मंगल पश्चिम में अस्त 13/27**	27	7/16	17/20	6/57	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	28	७	रवि	15 8	मघा	27 32	ऐंद्र	12 56	सिंह	कालभैरवाष्टमी	28	7/16	17/20	6/58	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	29	८	चंद्र	13 3	पू.फा.	26 4	वैधृ विष्क	10 3 31 3	सिंह	**मंगल मूल 1 धनु में 30/25,** राहु मूल (3) केतु आर्द्रा (1) में 22/08,	29	7/17	17/20	6/58	17/20	7/04	17/17	6/58	17/55
	30	९	मंग	10 50	उ.फा.	24 30	प्रीति	27 59	कं. 7/41	भ. 21/42 से प्रारम्भ	30	7/18	17/20	6/59	17/20	7/05	17/17	6/59	17/55

(A) बुध वृश्चिक में 30/16, धनवन्तरी जयन्ती, मास शिवरात्रि व्रत **B** (देखें पृष्ठ 84, 85), काली पूजा, कुबेर पूजा, **C** 18/36, वक्री शुक्र चित्रा (4) में 20/21, बली पूजा, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन) **D** यम द्वितीया, बुध अनु. में 10/56, यमुना स्नान, विश्वकर्मा दिवस व पूजा, बुध पश्चिम में उदय 27/31, नैपच्यून मार्गी 11/32 **E** पुण्यकाल सं. प्रातः 10/54 बाद, बुध ज्ये. में 11/15, **F** चातुर्मास्य व्रतादि नियम समाप्त **G** तुलसी विवाह (देखें पृष्ठ 83), देवप्रबोधोत्सव **H** समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, दीपदान, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मेला पुष्कर, श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव । मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ

वि. संवत् 2067, दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010 ई.

मास पक्ष	दिनांक	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिण/उत्तरायणे — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — हेमन्त/शिशिर ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	1	१०	बुध	8	33	हस्त	22	55	आयु	24	55	कन्या	भ. 8/33 तक, उत्पन्ना एकादशी व्रत-स्मार्त, शुक्र स्वा. में 20/19, A	1	7/19	17/20	7/00	17/20	7/06	17/16	6/59	17/56
	०	११	बुध	30	16	००	00	00	00	00	00	00	एकादशी तिथि का क्षय °° °°	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	2	१२	गुरु	28	5	चित्रा	21	23	सौभा	21	53	तु. 10/08	उत्पन्ना एकादशी व्रत वैष्णव, सूर्य ज्ये. में 29/01,	2	7/19	17/20	7/01	17/20	7/07	17/16	7/00	17/56
	3	१३	शुक्र	26	5	स्वा.	20	00	शोभ	19	00	तुला	भ. 26/05 से, प्रदोष व्रत	3	7/20	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	4	१४	शनि	24	23	विशा	18	54	अति	16	19	वृ. 13/8	भ. 13/14 तक, मास शिवरात्रि व्रत, मेला पुरमण्डल (जम्मू), देविका B	4	7/21	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	5	३०	रवि	23	6	अनु	18	10	सुक	13	56	वृश्चिक	अमावस-तर्पण, स्नानदानादि	5	7/22	17/20	7/03	17/20	7/09	17/16	7/02	17/57
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	6	१	चंद	22	20	ज्ये.	17	55	धृति	11	55	ध. 17/55	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गुरु पूभा (4) मीन में 9/07, यूरेनस मार्गी 7/24	6	7/23	17/20	7/04	17/20	7/10	17/16	7/03	17/57
	7	२	मंग	22	10	मूल	18	15	शूल	10	22	धनु	चन्द्रदर्शन, मु. 30	7	7/23	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/03	17/57
	8	३	बुध	22	39	पू.षा.	19	12	गंड	9	17	म. 25/32	1 मुहर्रम (मु.) हिजरी सं. 1432 शुरु,	8	7/24	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/04	17/57
	9	४	गुरु	23	48	उ.षा.	20	47	वृद्धि	8	43	मकर	भ. 11/13 से 23/48 तक,	9	7/25	17/20	7/06	17/21	7/12	17/17	7/05	17/58
	10	५	शुक्र	25	32	श्रव.	22	56	ध्रुव	8	37	मकर	बुध वक्री 17/33, श्रीरामविवाहोत्सव, श्री पञ्चमी, नागपंचमी	10	7/26	17/21	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
	11	६	शनि	27	44	धनि	25	33	व्या.	8	57	कुं. 12/11	पंचक प्रारम्भ 12/11, स्कन्द षष्ठी (गुह षष्ठी), चम्पा षष्ठी	11	7/27	17/21	7/07	17/21	7/14	17/17	7/06	17/58
	12	७	रवि	30	12	शत.	28	26	हर्ष	9	36	कुम्भ	भ. 30/12 से प्रारम्भ	12	7/28	17/21	7/08	17/21	7/14	17/17	7/07	17/59
	13	८	चंद्र	पूरा	दिन	पू.भा.	पूरा	दिन	वज्र	10	24	मी. 24/40	भ. 19/28 तक,	13	7/28	17/21	7/09	17/21	7/15	17/18	7/07	17/59
	14	८	मंग	8	44	पू.भा.	7	24	सिद्धि	11	13	मीन	वक्री बुध पश्चिम में अस्त 15/52	14	7/29	17/22	7/09	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	15	९	बुध	11	5	उ.भा.	10	11	व्य.	11	53	मीन	गण्डमूल 10/11 बाद	15	7/30	17/22	7/10	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	16	१०	गुरु	13	2	रेव	12	37	वरी	12	15	मे. 12/37	भ. 25/44 से, सूर्य मूल 1 धनु में 7/59, **पौष संक्रान्ति**, मु. 30, C	16	7/30	17/22	7/11	17/22	7/17	17/19	7/09	18/00
	17	११	शुक्र	14	26	अश्वि	14	31	परि	12	13	मेष	भ. 14/26 तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत**, मंगल पू.षा. में 21/21, गीता जयन्ती	17	7/31	17/23	7/11	17/23	7/18	17/19	7/09	18/00
	18	१२	शनि	15	13	भर	15	49	शिव	11	42	वृ. 22/3	**शनि प्रदोष व्रत**, अखण्ड द्वादशी, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	18	7/31	17/23	7/12	17/23	7/18	17/20	7/10	18/01
	19	१३	रवि	15	19	कृति	16	29	सिद्ध	10	41	वृष		19	7/32	17/23	7/12	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
	20	१४	चंद्र	14	48	रोहि	16	33	साध्य शुभ	9 31	10 12	मि. 28/22	भ. 14/48 से 26/16 तक, श्रीदत्तात्रेय जयन्ती, पिशाचमोचन श्राद्ध D	20	7/32	17/23	7/13	17/24	7/19	17/20	7/11	18/02
	21	१५	मंग	13	44	मृग	16	4	शुक्ल	28	51	मिथुन	मार्गशीर्ष पूर्णिमा स्नानदानादि, शुक्र विशा. में 16/38, सूर्य सायन मकर में 29/08	21	7/33	17/24	7/14	17/24	7/20	17/21	7/11	18/02
पौष कृष्ण पक्ष	22	१	बुध	12	11	आर्द्रा	15	8	ब्रह्म	26	10	मिथुन	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शक पौष प्रा., सा. उत्तरायण प्रा., शिशिर ऋतु प्रा.	22	7/33	17/24	7/14	17/25	7/20	17/21	7/12	18/03
	23	२	गुरु	10	16	पुर्न	13	51	ऐंद्र	23	16	क. 8/12	भ. 21/12 से, **वक्री बुध वृश्चिक में 8/10**,	23	7/34	17/25	7/15	17/26	7/21	17/22	7/12	18/03
	24	३	शुक्र	8	7	पुष्य	12	21	वैधृ	20	12	कर्क	भ. 8/07 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20/56 (जालन्धर)	24	7/34	17/26	7/15	17/26	7/21	17/23	7/13	18/04
	०	४	शुक्र	29	48	००	00	00	00	00	00	00	चतुर्थी तिथि का क्षय °° °°	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	25	५	शनि	27	26	आश्ले	10	43	विष्क	17	3	सिं. 10/43	**क्रिसमिस डे** (बड़ा दिन) क्रिश्चयन, वक्री बुध पूर्व से उदय 19/47	25	7/35	17/26	7/15	17/27	7/22	17/23	7/13	18/04
	26	६	रवि	25	6	मघा पू.फा.	9 31	3 25	प्रीति	13	55	सिंह	भ. 25/06 से प्रारम्भ	26	7/35	17/27	7/16	17/27	7/22	17/24	7/14	18/05
	27	७	चंद्र	22	52	उ.फा.	29	55	आयु	10	49	कं. 13/2	भ. 11/59 तक,	27	7/36	17/27	7/16	17/28	7/23	17/24	7/14	18/05
	28	८	मंग	20	48	हस्त	28	36	सौभा शोभ	7 28	50 59	कन्या	रूक्मणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध	28	7/36	17/28	7/17	17/29	7/23	17/25	7/14	18/06
	29	९	बुध	18	57	चित्रा	27	30	अति	26	20	तु. 16/1	भ. 30/09 से, सूर्य पू.षा. में 10/18,	29	7/36	17/29	7/17	17/29	7/23	17/26	7/15	18/06
	30	१०	गुरु	17	21	स्वा.	26	40	सुक	23	53	तुला	भ. 17/21 तक, **बुध मार्गी 12/51**, पार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)	30	7/37	17/30	7/17	17/30	7/24	17/26	7/15	18/07
	31	११	शुक्र	16	2	विशा.	26	9	धृति	21	41	वृ. 20/15	सफला एकादशी व्रत, इंगलिश वर्ष 2010 ई. समाप्त	31	7/37	17/31	7/18	17/31	7/24	17/27	7/15	18/07

A दिसम्बर मास प्रारम्भ **B** स्नान, श्रीबालाजी जयन्ती, **C** पुण्यकाल सं. दोप. 14/23 तक, पंचक समाप्त 12/37, **D** श्रीसत्यनारायण व्रत

वि. संवत् 2067, जनवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.)S सन् 2011 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य उत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शिशिर ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
पौष कृष्ण	1	१२	शनि	15	4	अनु	25	58	शूल	19	45	वृश्चिक	जनवरी, सन् 2011 ई. प्रारम्भ, शुक्र वृश्चिक में 16/45, प्रदोष व्रत, A	1	7/37	17/29	7/18	17/31	7/24	17/28	7/16	18/08
	2	१३	रवि	14	28	ज्ये.	26	9	गंड	18	7	ध. 26/9	भ. 14/28 से 26/23 तक, मास शिवरात्रि व्रत — सूर्यग्रहण 4 जनवरी	2	7/37	17/30	7/18	17/32	7/25	17/28	7/16	18/09
	3	१४	चंद्र	14	17	मूल	26	46	वृद्धि	16	48	धनु	मंगल उ.षा. में 29/02,	3	7/37	17/31	7/19	17/32	7/25	17/29	7/16	18/10
	4	३०	मंग	14	33	पू.षा.	27	50	ध्रुव	15	50	धनु	पौष अमावस, खण्ड-सूर्यग्रहण (देखें पृष्ठ 15), शुक्र अनु. में 26/27,	4	7/38	17/32	7/19	17/33	7/25	17/30	7/17	18/10
पौष शुक्ल पक्ष	5	१	बुध	15	18	उ.षा.	29	22	व्या.	15	15	म. 10/10	चन्द्रदर्शन, मु. 45,	5	7/38	17/32	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
	6	२	गुरु	16	32	श्रव.	31	23	हर्ष	15	2	मकर	गुरु उ.भा. (1) में 21/11, सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	6	7/38	17/33	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
	7	३	शुक्र	18	16	धनि.	पूरा	दिन	वज्र	15	10	कुं. 20/33	भ. 31/20 से, बुध मूल 1 धनु में 24/23, पंचक प्रारम्भ 20/33,	7	7/38	17/34	7/19	17/35	7/25	17/32	7/17	18/12
	8	४	शनि	20	24	धनि.	9	49	सिद्धि	15	38	कुम्भ	भ. 20/24 तक, मंगल मकर में 12/01,	8	7/38	17/36	7/19	17/36	7/25	17/33	7/17	18/12
	9	५	रवि	22	50	शत.	12	35	व्य.	16	20	कुम्भ		9	7/39	17/37	7/19	17/37	7/25	17/34	7/17	18/13
	10	६	चंद्र	25	24	पू.भा.	15	32	वरी	17	10	मी. 8/47		10	7/39	17/38	7/19	17/38	7/25	17/35	7/18	18/14
	11	७	मंग	27	53	उ.भा.	18	29	परि	18	00	मीन	भ. 27/53 से, सूर्य उ.षा. (1) में 12/13, मार्तण्ड सप्तमी	11	7/39	17/38	7/20	17/38	7/25	17/36	7/18	18/14
	12	८	बुध	30	4	रेव	21	14	शिव	18	39	मे. 21/14	भ. 16/59 तक, पंचक समाप्त 21/14,	12	7/38	17/39	7/20	17/39	7/25	17/36	7/18	18/15
	13	९	गुरु	पूरा	दिन	अश्वि	23	34	सिद्ध	19	1	मेष	लोहड़ी पर्व	13	7/38	17/39	7/19	17/40	7/25	17/37	7/19	18/16
	14	९	शुक्र	7	45	भर	25	19	साध्य	18	55	मेष	सूर्य मकर में 18/44, माघ संक्रान्ति, मु. 15, पुण्यकाल सं. मध्याह्न B	14	7/38	17/40	7/19	17/41	7/25	17/38	7/19	18/17
	15	१०	शनि	8	46	कृति	26	21	शुभ	18	17	वृ. 7/38	भ. 20/54 से,	15	7/38	17/42	7/19	17/42	7/25	17/39	7/19	18/17
	16	११	रवि	9	1	रोहि	26	38	शुक्ल	17	4	वृष	भ. 9/01 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत	16	7/37	17/43	7/19	17/42	7/25	17/40	7/19	18/18
	17	१२	चंद्र	8	30	मृग.	26	10	ब्रह्म	15	14	म. 14/29	सोम प्रदोष व्रत, शुक्र ज्ये. में 23/59,	17	7/37	17/43	7/19	17/43	7/24	17/41	7/19	18/18
	०	१३	चंद्र	31	14	००	00	00	00	00	00	00	त्रयोदशी तिथि क्षय °° °°	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	18	१४	मंग	29	19	आर्द्रा	25	3	ऐंद्र	12	51	मिथुन	भ. 29/19 से,	18	7/37	17/44	7/19	17/44	7/24	17/42	7/19	18/19
	1	१५	बुध	26	52	पुर्न	23	23	वैधृ / विष्क	9 / 30	57 / 40	क. 17/50	भ. 16/06 तक, पौष पूर्णिमा, बुध पू.षा. में 13/00, माघस्नान प्रारम्भ, C	19	7/36	17/45	7/18	17/45	7/24	17/43	7/19	18/20
माघ कृष्ण पक्ष	20	१	गुरु	24	1	पुष्य	21	18	प्रीति	27	5	कर्क	माघ कृष्ण पक्ष प्रा., सूर्य सायन कुम्भ में 15/49, गुरु पुष्य योग	20	7/36	17/46	7/18	17/46	7/24	17/43	7/19	18/20
	21	२	शुक्र	20	57	आश्ले	18	59	आयु	23	20	सिं. 18/59	मंगल श्रवण में 7/19, शक माघ प्रारम्भ	21	7/36	17/47	7/18	17/47	7/24	17/44	7/19	18/21
	22	३	शनि	17	49	मघा	16	34	सौभा	19	32	सिंह	भ. 7/23 से 17/49 तक, श्रीगणेश संकट चौथ व्रत, चन्द्रोदय D	22	7/35	17/48	7/18	17/47	7/23	17/45	7/19	18/22
	23	४	रवि	14	46	पू.फा.	14	14	शोभ	15	48	कं. 19/40	नेताजी सुभाषचन्द्र जयन्ती	23	7/35	17/49	7/17	17/48	7/23	17/46	7/19	18/22
	24	५	चंद्र	11	55	उ.फा.	12	6	अति	12	16	कन्या	सूर्य श्रवण में 14/35,	24	7/35	17/50	7/17	17/49	7/23	17/47	7/19	18/23
	25	६	मंग	9	24	हस्त	10	18	सुक / धृति	9 / 30	00 / 4	तु. 21/34	भ. 9/24 से 20/22 तक, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	25	7/35	17/51	7/17	17/50	7/22	17/48	7/19	18/23
	०	७	मंग	31	19	००	00	00	00	00	00	00	सप्तमी तिथि का क्षय °° °°	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	26	८	बुध	29	43	चित्रा	8	56	शूल	27	32	तुला	भारत गणतन्त्र दिवस, गुरु उ.भा. (2) में 15/53, शनि वक्री 11/40	26	7/34	17/52	7/16	17/51	7/22	17/49	7/18	18/24
	27	९	गुरु	28	39	स्वा.	8	3	गंड	25	24	वृ. 25/43		27	7/33	17/53	7/16	17/52	7/21	17/50	7/18	18/24
	28	१०	शुक्र	28	5	विशा.	7	40	वृद्धि	23	41	वृश्चिक	भ. 16/22 से 28/05 तक, बुध उ.षा. में 24/12	28	7/32	17/54	7/16	17/52	7/21	17/51	7/18	18/25
	29	११	शनि	28	1	अनु.	7	47	ध्रुव	22	21	वृश्चिक	षट्तिला एकादशी व्रत, शुक्र मूल 1 धनु में 28/00,	29	7/32	17/55	7/15	17/53	7/20	17/52	7/18	18/25
	30	१२	रवि	28	25	ज्ये.	8	23	व्या.	21	23	ध. 8/23	बुध मकर में 29/54, तिल द्वादशी	30	7/31	17/56	7/15	17/54	7/20	17/53	7/18	18/26
	31	१३	चंद्र	29	14	मूल	9	25	हर्ष	20	45	धनु	भ. 29/14 से, प्रदोष व्रत, राहु मूल (2) केतु मृग (4) में 20/02, E	31	7/31	17/57	7/14	17/55	7/19	17/54	7/18	18/27

A बोधनाचार्य जयन्ती **B** बाद, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ **C** श्रीसत्यनारायण व्रत **D** 20 घं. 55 मिं. (जालन्धर), गौरी चतुर्थी, सौभाग्य सुन्दरी व्रत **E** मेरू त्रयोदशी (जैन).

वि. संवत् 2067, फरवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2011 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] — शिशिर-वसन्त ऋतुः
माघ कृ.	1	१४	मंग	30	27	पू.षा.	10	52	वज्र	20	25	म. 17/17	भ. 17/51 तक, फरवरी मास प्रारम्भ, मास शिवरात्रि व्रत
	2	३०	बुध	पूरा	दिन	उ.षा.	12	40	सिद्धि	20	22	मकर	माघ (मौनी) अमावस, मेला कुरुक्षेत्र, हरिद्वार आदि तीर्थस्नान-2 दिन
	3	३०	गुरु	8	1	श्रव.	14	49	व्य.	20	35	कुं. 28/00	माघ अमावस-स्नानदानादि, पंचक प्रारम्भ 28/00, महोदय योग 8/00 तक
माघ शुक्ल पक्ष	4	१	शुक्र	9	55	धनि.	17	16	वरी	21	2	कुम्भ	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	5	२	शनि	12	7	शत.	19	59	परि	21	41	कुम्भ	रबि-उल्लावल (मुस्लिम) मास प्रारम्भ, बाबा लाल जयन्ती
	6	३	रवि	14	32	पू.भा.	22	54	शिव	22	29	मी. 16/9	भ. 27/49 से प्रा., श्रीगणेश तिल चतुर्थी, सूर्य धनि. में 17/40, मंगल A
	7	४	चंद्र	17	6	उ.भा.	25	54	सिद्ध	23	22	मीन	भ. 17/06 तक, बुध पूर्व में अस्त 7/23,
	8	५	मंग	19	40	रेव.	28	51	साध्य	24	13	मे. 28/51	वसन्त पंचमी, श्री ५, पंचक समाप्त 28/51, सरस्वती जयन्ती
	9	६	बुध	22	2	अश्वि	पूरा	दिन	शुभ	24	54	मेष	
	10	७	गुरु	24	1	अश्वि	7	34	शुक्ल	25	17	मेष	भ. 24/01 से, शुक्र पू.षा. में 22/00, रथ-आरोग्य सप्तमी, पुत्र सप्तमी B
	11	८	शुक्र	25	26	भर.	9	50	ब्रह्म	25	14	वृ. 16/19	भ. 12/44 तक, भीष्माष्टमी,
	12	९	शनि	26	7	कृति	11	30	ऐंद्र	24	37	वृष	गुरु उ.भा. (3) में 7/11,
	13	१०	रवि	25	58	रोहि	12	25	वैधृ	23	23	मि. 24/35	सूर्य कुम्भ में 7/43, फाल्गुन संक्रान्ति, 45 मु., पुण्यकाल सं. मध्याह तक,
	14	११	चंद्र	24	52	मृग.	12	32	विष्क	21	29	मिथुन	भ. 13/25 से 24/52 तक, जया एकादशी व्रत, बुध धनि. में 20/36,
	15	१२	मंग	23	10	आर्द्रा	11	49	प्रीति	18	56	क. 28/46	भीष्मद्वादशी, मंगल कुम्भ में 16/46,
	16	१३	बुध	20	40	पुर्न	10	20	आयु	15	48	कर्क	प्रदोष व्रत,
	17	१४	गुरु	17	35	पुष्य आश्ले	8 29	14 39	सौभा	12	11	सिं. 29/39	भ. 17/35 से 27/51 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत
	18	१५	शुक्र	14	6	मघा	26	46	शोभ अति	8 27	12 59	सिंह	माघ पूर्णिमा स्नानदानादि, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, बुध कुम्भ में 17/32 C
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	19	१	शनि	10	24	पू.फा.	23	47	सुक	23	41	कं. 29/3	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य शत. में 22/13,
	०	२	शनि	30	40	°°	00	00	00	00	00	00	द्वितीया तिथि क्षय °° °°
	20	३	रवि	27	5	उ.फा.	20	54	धृति	19	29	कन्या	भ. 16/53 से 27/05 तक, शक फाल्गुन प्रारम्भ
	21	४	चंद्र	23	50	हस्त	18	17	शूल	15	29	तु. 29/8	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/00 (जालन्धर)
	22	५	मंग	21	4	चित्रा	16	7	गंड	11	50	तुला	बुध शत. में 11/27, शुक्र उ.षा. में 9/56,
	23	६	बुध	18	54	स्वा.	14	31	वृद्धि ध्रुव	8 29	39 59	तुला	भ. 18/54 से 30/10 तक, मंगल शत. में 27/21
	24	७	गुरु	17	25	विशा	13	36	व्या.	27	53	वृ. 7/46	शुक्र मकर में 30/13,
	25	८	शुक्र	16	39	अनु	13	22	हर्ष	26	21	वृश्चिक	
	26	९	शनि	16	36	ज्ये.	13	51	वज्र	25	21	ध. 13/51	भ. 28/54 से,
	27	१०	रवि	17	11	मूल	14	56	सिद्धि	24	50	धनु	भ. 17/11 तक, गुरु उ.भा. (4) में 11/18, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती
	28	११	चंद्र	18	18	पू.षा.	16	34	व्य.	24	41	म. 23/3	विजया एकादशी व्रत,

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	7/30	17/57	7/14	17/56	7/19	17/54	7/17	18/28
2	7/29	17/58	7/13	17/57	7/18	17/55	7/17	18/28
3	7/29	17/58	7/12	17/57	7/17	17/56	7/17	18/29
4	7/28	17/59	7/12	17/58	7/17	17/57	7/16	18/29
5	7/28	18/00	7/11	17/59	7/16	17/58	7/16	18/30
6	7/27	18/02	7/11	18/00	7/15	17/59	7/16	18/30
7	7/26	18/03	7/10	18/01	7/15	17/59	7/15	18/31
8	7/25	18/04	7/09	18/01	7/14	18/00	7/15	18/31
9	7/24	18/05	7/09	18/02	7/13	18/01	7/14	18/32
10	7/23	18/06	7/08	18/03	7/12	18/02	7/14	18/32
11	7/23	18/07	7/07	18/04	7/11	18/03	7/13	18/33
12	7/22	18/07	7/06	18/05	7/11	18/04	7/13	18/33
13	7/21	18/08	7/05	18/05	7/10	18/04	7/12	18/34
14	7/20	18/09	7/05	18/06	7/09	18/05	7/12	18/34
15	7/19	18/09	7/04	18/07	7/08	18/06	7/11	18/35
16	7/18	18/10	7/03	18/08	7/07	18/07	7/11	18/35
17	7/17	18/11	7/02	18/08	7/06	18/08	7/10	18/36
18	7/16	18/12	7/01	18/09	7/05	18/09	7/09	18/36
19	7/15	18/13	7/00	18/10	7/04	18/09	7/09	18/37
0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0
20	7/14	18/14	6/59	18/11	7/03	18/10	7/08	18/37
21	7/13	18/15	6/59	18/11	7/02	18/11	7/08	18/37
22	7/12	18/16	6/58	18/12	7/01	18/12	7/07	18/38
23	7/11	18/17	6/57	18/13	7/00	18/13	7/06	18/38
24	7/10	18/17	6/56	18/13	6/59	18/14	7/06	18/38
25	7/09	18/18	6/55	18/14	6/58	18/15	7/05	18/39
26	7/07	18/19	6/54	18/15	6/57	18/15	7/04	18/39
27	7/06	18/20	6/53	18/15	6/56	18/16	7/03	18/39
28	7/05	18/20	6/52	18/16	6/55	18/16	7/03	18/39

A धनि. में 30/05, बुध श्रवण में 17/14, चन्द्र चौथ, [illegible] B व्रत, अचला-भानु सप्तमी, श्रीमध्वाचार्य जयन्ती C सूर्य [illegible] में 29/55, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, माघ स्नान समाप्त

वि. संवत् 2067, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.)S सन् 2011 ई.

पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वसन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
फाल्गुन कृ.	1	१२	मंग	19	52	उ.षा.	18	38	वरी	24	52	मकर	मार्च, सन् 2011 ई. प्रारम्भ, बुध पू.भा. में 15/30	1	7/03	18/22	6/50	18/17	6/54	18/17	7/02	18/40
	2	१३	बुध	21	47	श्रव	21	1	परि	25	17	मकर	भ. 21/47 से, प्रदोष व्रत, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,**	2	7/02	18/23	6/49	18/18	6/53	18/17	7/01	18/40
	3	१४	गुरु	23	56	धनि	23	39	शिव	25	53	कुं. 10/19	भ. 10/52 तक, पंचक प्रारम्भ 10/19,	3	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
	4	३०	शुक्र	26	16	शत	26	27	सिद्ध	26	37	कुम्भ	**फाल्गुन अमावस,** सूर्य पू.भा. में 28/29,	4	7/00	18/25	6/47	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	5	१	शनि	28	43	पू.भा.	29	22	साध्य	27	26	मी. 22/38	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र श्रवण में 17/42	5	6/58	18/26	6/46	18/19	6/49	18/20	7/00	18/42
	6	२	रवि	पूरा	दिन	उ.भा.	पूरा	दिन	शुभ	28	19	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. 45, **बुध मीन में 20/18,** श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती	6	6/57	18/27	6/45	18/20	6/48	18/20	6/59	18/42
	7	२	चंद्र	7	15	उ.भा.	8	21	शुक्ल	29	11	मीन	रबिउल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारम्भ,	7	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42
	8	३	मंग	9	45	रेव	11	19	ब्रह्म	29	58	मे. 11/19	भ. 22/56 से प्रा., **पंचक समाप्त** 11/19, बुध उ.भा. में 13/54	8	6/54	18/29	6/43	18/21	6/45	18/22	6/57	18/43
	9	४	बुध	12	7	अश्वि	14	8	ऐंद्र	30	36	मेष	भ. 12/07 तक,	9	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43
	10	५	गुरु	14	13	भर.	16	42	वैधृ	पूरा	दिन	वृ. 23/17	याज्ञवल्क्य जयन्ती	10	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44
	11	६	शुक्र	15	53	कृत्ति	18	51	वैधृ	6	56	वृष	बुध पश्चिम से उदय 25/29	11	6/50	18/32	6/40	18/23	6/42	18/24	6/54	18/44
	12	७	शनि	16	59	रोहि	20	24	विष्क प्रीति	6 30	52 17	वृष	भ. 16/59 से 29/10 तक, मंगल पू.भा. में 24/56,	12	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44
	13	८	रवि	17	20	मृग	21	15	आयु	29	7	मि. 8/55	गुरु रेव. (1) में 19/32, **होलाष्टक प्रारम्भ,** अन्नपूर्णाष्टमी	13	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44
	14	९	चंद्र	16	53	आर्द्रा	21	18	सौभा	27	17	मिथुन	सूर्य मीन में 28/33, **चैत्र संक्रान्ति,** मु. 45, पुण्यकाल सं. अगले दिन A	14	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/26	6/52	18/44
	15	१०	मंग	15	35	पुर्न	20	32	शोभ	24	47	क. 14/48	भ. 26/33 से, बुध रेव में 22/25,	15	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
	16	११	बुध	13	30	पुष्य	18	59	अति	21	41	कर्क	भ. 13/30 तक, आमलकी एकादशी व्रत, शुक्र धनि. में 22/50, गोविन्द द्वादशी	16	6/44	18/34	6/34	18/26	6/36	18/26	6/51	18/44
	17	१२	गुरु	10	43	आश्ले	16	47	सुक	18	3	सिं. 16/47	प्रदोष व्रत,	17	6/43	18/34	6/33	18/26	6/35	18/27	6/50	18/44
	18	१३	शुक्र	7	22	मघा	14	4	धृति	14	00	सिंह	भ. 27/37 से, सूर्य उ.भा. में 12/54,	18	6/42	18/35	6/32	18/27	6/34	18/27	6/49	18/45
	०	१४	शुक्र	27	37	००	00	00	00	00	00	00	चतुर्दशी तिथि क्षय ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	19	१५	शनि	23	40	पू.फा.	11	1	शूल गंड	9 29	40 13	कं. 16/13	भ. 13/39 तक, फाल्गुन पूर्णिमा, **होली पर्व,** होलाष्टक समाप्त, B	19	6/41	18/36	6/31	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
चैत्र कृष्ण पक्ष	20	१	रवि	19	43	उ.फा. हस्त	7 28	50 43	वृद्धि	24	49	कन्या	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन मेष में 28/51, उत्तर गोलार्द्ध प्रारंभ, C	20	6/40	18/36	6/29	18/28	6/31	18/29	6/47	18/45
	21	२	चंद्र	15	57	चित्रा	25	53	ध्रुव	20	36	तु. 15/15	भ. 26/15 से, सन्त तुकाराम जयन्ती,	21	6/39	18/37	6/28	18/29	6/30	18/30	6/46	18/45
	22	३	मंग	12	33	स्वा.	23	30	व्या.	16	45	तुला	भ. 12/33 तक, **अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चन्द्रोदय 21/57 D	22	6/38	18/38	6/27	18/29	6/29	18/30	6/45	18/46
	23	४	बुध	9	43	विशा	21	45	हर्ष	13	21	वृ. 16/8		23	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46
	24	५	गुरु	7	33	अनु.	20	44	वज्र	10	32	वृश्चिक	भ. 30/10 से, श्रीरंग पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ), एकनाथ षष्ठी	24	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46
	०	६	गुरु	30	10	००	00	00	00	00	00	00	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	25	७	शुक्र	29	36	ज्ये.	20	31	सिद्धि	8	22	ध. 20/31	भ. 17/53 तक, शीतला सप्तमी, **गुरु पश्चिम में अस्त 16/49,** E	25	6/34	18/40	6/24	18/31	6/25	18/32	6/44	18/47
	26	८	शनि	29	51	मूल	21	7	व्य. वरी	6 29	50 56	धनु	शीतलाष्टमी व्रत	26	6/33	18/41	6/22	18/31	6/24	18/33	6/43	18/47
	27	९	रवि	पूरा	दिन	पू.षा.	22	26	परि	29	36	म. 28/52	गुरु रेव (2) में 18/06, शुक्र शत. में 26/04	27	6/32	18/41	6/22	18/32	6/22	18/34	6/42	18/47
	28	९	चंद्र	6	48	उ.षा.	24	22	शिव	29	44	मकर	भ. 19/35 से, **बुध अश्वि. (1) मेष में 19/39**	28	6/30	18/42	6/20	18/32	6/20	18/35	6/41	18/48
	29	१०	मंग	8	22	श्रव.	26	47	सिद्ध	30	12	मकर	भ. 8/22 तक, मंगल उ.भा. में 24/54	29	6/28	18/42	6/19	18/33	6/19	18/35	6/40	18/48
	30	११	बुध	10	22	धनि	29	31	साध्य	पूरा	दिन	कुं. 16/7	बुध वक्री 26/18, पंचक प्रारम्भ 16/07, **पापमोचिनी एकादशी व्रत**	30	6/26	18/43	6/18	18/33	6/18	18/36	6/39	18/48
	31	१२	गुरु	12	39	शत	पूरा	दिन	साध्य	6	55	कुम्भ	प्रदोष व्रत, सूर्य रेव. में 23/44, वारुणी योग 12/39 से सू.उ. तक	31	6/25	18/44	6/17	18/34	6/16	18/36	6/38	18/49

गुरु अस्त 25 मार्च

A प्रात: 10/57 तक B होलिका दहन (भद्रा बाद), महेश्वर व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत, चैतन्य महाप्रभु जयन्ती C वसन्तोत्सव, होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब), धुलैण्डी, ध्वजारोहण (D) (जालन्धर), शुक्र कुम्भ में 12/40, शक चैत्र, सन् 1933 प्रारम्भ E मंगल मीन में 18/37

वि. संवत् 2067, अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.)S सन् 2011 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] (सूर्योत्तरायण) (वसन्त ऋतुः)
चै.कृ.	1	१३	गुरु	15	6	शत	8	26	शुभ	7	46	मी. 28/40	भ. 15/06 से 28/21 तक, वारुणी योग सू.उ. से 8/26 तक, अप्रैल A
	2	१४	शुक्र	17	35	पू.भा.	11	24	शुक्ल	8	40	मीन	वक्री बुध रेव (4) मीन में 10/53, मेला पिहोवातीर्थ (हरियाणा), B
	3	३०	शनि	20	2	उ.भा.	14	22	ब्रह्म	9	34	मीन	चैत्र अमावस, विक्रमी संवत् २०६७ पूर्ति

A सं. 2011 ई. प्रारम्भS मासिक शिवरात्रि व्रत B मेला पृथूदक, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 7/11

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	6/24	18/45	6/15	18/35	6/16	18/37	6/36	18/49
2	6/23	18/45	6/14	18/36	6/14	18/37	6/35	18/49
3	6/21	18/46	6/13	18/36	6/13	18/38	6/34	18/49

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टे. टा.) वि. संवत् २०६७ (सन् 2010-11 ई.)

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मार्च 2010	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 मार्च	उ.फा.	15	05	20	24	1	45	7	07
2/3 मार्च	हस्त	12	29	17	54	23	21	4	50
3/4 मार्च	चित्रा	10	21	15	55	21	30	3	10
4/5 मार्च	स्वा.	8	50	14	34	20	21	2	11
5/6 मार्च	विशा.	8	05	14	06	20	06	2	05
6/7 मार्च	अनु.	8	11	14	25	20	40	2	54
7/8 मार्च	ज्ये.	8	09	15	35	22	00	4	28
8/9 मार्च	मूल	10	54	17	30	0	07	6	43
9/10 मार्च	पूषा	13	20	20	03	2	47	9	30
10/11मार्च	उषा	16	14	23	00	5	47	12	35
11/12मार्च	श्रव.	19	22	2	10	8	57	15	45
12/13मार्च	धनि.	22	33	5	18	12	05	18	49
14 मार्च	शत.	1	35	8	16	14	58	21	39
15/16मार्च	पू.भा.	4	21	11	00	17	36	0	13
16/17मार्च	उ.भा.	6	48	13	19	19	50	2	23
17/18मार्च	रेवती	8	52	15	17	21	43	4	09
18/19मार्च	अश्वि.	10	34	16	53	23	13	5	33
19/20मार्च	भरणी	11	52	18	06	0	22	6	35
20/21मार्च	कृति.	12	46	18	57	1	05	7	12
21/22मार्च	रोहि.	13	17	19	18	1	19	7	20
22/23मार्च	मृग.	13	20	19	16	1	12	7	03
23/24मार्च	आर्द्रा	12	56	18	43	0	30	6	16
24/25मार्च	पुर्न.	12	03	17	42	23	23	5	04
25/26मार्च	पुष्य	10	41	16	14	21	47	3	20
26/27मार्च	अश्ले.	8	53	14	21	19	48	1	16
27 मार्च	मघा	6	43	12	07	17	31	22	55
28 मार्च	पू.फा.	4	19	9	41	15	04	20	26
29 मार्च	उफा	1	48	7	10	12	33	17	57
29/30मार्च	हस्त	23	20	4	47	10	13	15	40
30/31मार्च	चित्रा	21	07	2	38	8	09	13	43

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अप्रै. 2010	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
31/1अप्रैल	स्वा.	19	19	1	01	6	42	12	24
1/2 अप्रैल	विशा.	18	06	23	58	5	49	11	38
2/3 अप्रैल	अनु.	17	36	23	40	5	45	11	49
3/4 अप्रैल	ज्ये.	17	54	0	11	6	29	12	46
4/5 अप्रैल	मूल	19	03	1	32	8	00	14	29
5/6 अप्रैल	पूषा	20	58	3	36	10	15	16	53
6/7 अप्रैल	उषा	23	31	6	13	12	58	19	44
8 अप्रैल	श्रवण	2	29	9	16	16	02	22	49
9/10अप्रैल	धनि.	5	36	12	22	19	09	1	55
10/11अप्रै.	शत.	8	39	15	21	22	02	4	44
11/12अप्रै.	पू.भा.	11	26	18	02	0	39	7	15
12/13अप्रै.	उ.भा.	13	48	20	17	2	45	9	14
13/14अप्रै.	रेवती	15	43	22	04	4	26	10	47
14/15अप्रै.	अश्वि.	17	08	23	22	5	37	11	51
15/16अप्रै.	भरणी	18	06	0	14	6	23	12	31
16/17अप्रै.	कृति.	18	40	0	45	6	47	12	51
17/18अप्रै.	रोहि.	18	52	0	50	6	49	12	47
18/19अप्रै.	मृग.	18	45	0	39	6	35	12	28
19/20अप्रै.	आर्द्रा	18	20	0	09	5	59	11	48
20/21अप्रै.	पुर्न	17	38	23	24	5	09	10	55
21/22अप्रै.	पुष्य	16	38	22	19	4	01	9	42
22/23अप्रै.	आश्ले.	15	23	21	00	2	38	8	15
23/24अप्रै.	मघा	13	52	19	26	1	01	6	35
24/25अप्रै.	पू.फा.	12	09	17	41	23	14	4	46
25/26अप्रै.	उ.फा.	10	18	15	50	21	22	2	54
26/27अप्रै.	हस्त	8	26	13	59	19	33	1	06
27 अप्रैल	चित्रा	6	39	12	16	17	51	23	31
28 अप्रैल	स्वा.	5	07	10	50	16	33	22	15
29 अप्रैल	विशा.	3	58	9	48	15	38	21	27
30 अप्रैल	अनु.	3	21	9	21	15	22	21	22

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मई 2010	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1 मई	ज्ये.	3	23	9	34	15	46	21	57
2 मई	मूल	4	08	10	30	16	53	23	15
3/4 मई	पू.षा.	5	37	12	09	18	41	1	13
4/5 मई	उ.षा.	7	45	14	23	21	04	3	45
5/6 मई	श्रव.	10	25	17	09	23	54	6	38
6/7 मई	धनि	13	23	20	09	2	55	9	40
7/8 मई	शत	16	26	23	09	5	51	12	34
8/9 मई	पू.भा.	19	17	1	55	8	33	15	11
9/10 मई	उ.भा.	21	46	4	15	10	45	17	14
10/11 मई	रेवती	23	43	6	03	12	24	18	44
12 मई	अश्वि.	1	05	7	17	13	28	19	40
13 मई	भरणी	1	52	7	56	14	00	20	03
14 मई	कृति.	2	07	8	06	14	02	19	58
15 मई	रोहि.	1	54	7	45	13	36	19	27
16 मई	मृग.	1	18	7	08	12	54	18	39
17 मई	आर्द्रा	0	25	6	09	11	52	17	36
17/18 मई	पुर्न	23	19	5	01	10	42	16	24
18/19 मई	पुष्य	22	05	3	45	9	24	15	04
19/20 मई	अश्ले.	20	44	2	23	8	02	13	41
20/21 मई	मघा	19	20	0	59	6	37	12	16
21/22 मई	पू.फा.	17	54	23	33	5	11	10	50
22/23 मई	उ.फा.	16	29	22	09	3	49	9	29
23/24 मई	हस्त	15	09	20	51	2	33	8	15
24/25 मई	चित्रा	13	57	19	41	1	25	7	11
25/26 मई	स्वा.	12	57	18	47	0	36	6	26
26/27 मई	विशा.	12	16	18	10	0	05	6	00
27/28 मई	अनु.	11	58	18	01	0	04	6	07
28/29 मई	ज्ये.	12	10	18	21	0	33	6	44
29/30 मई	मूल.	12	55	19	15	1	36	7	56
30/31 मई	पूषा.	14	16	20	45	3	13	9	42
31/1 जून	उ.षा.	16	11	22	45	3	13	9	42
1/2 जून	श्रवण	18	37	1	19	8	02	14	44
2/3 जून	धनि.	21	26	4	11	10	55	17	41

चन्द्रमा का नक्षत्र—चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
जून 2010	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
4 जून	शत.	0	26	7	10	13	55	20	39
5 जून	पू.भा.	3	23	10	03	16	44	23	25
6/7 जून	उ.भा.	6	03	12	36	19	10	1	43
7/8 जून	रेवती	8	16	14	40	21	05	3	29
8/9 जून	अश्वि.	9	53	16	07	22	22	4	36
9/10 जून	भर.	10	50	16	54	22	58	5	01
10/11 जून	कृति.	11	05	17	03	22	56	4	49
11/12 जून	रोहि.	10	43	16	29	22	16	4	02
12/13 जून	मृग.	9	49	15	30	21	12	2	50
13/14 जून	आर्द्रा	8	29	14	04	19	40	1	15
14/15 जून	पुर्न.	6	50	12	22	17	56	23	28
15 जून	पुष्य	5	00	10	31	16	03	21	34
16 जून	श्लेषा	3	05	8	37	14	08	19	40
17 जून	मघा	1	12	6	46	12	19	17	53
17/18 जून	पू.फा.	23	27	5	03	10	40	16	16
18/19 जून	उ.फा.	21	53	3	31	9	13	14	54
19/20 जून	हस्त	20	34	2	19	8	04	4	49
20/21 जून	चित्रा	19	34	1	22	7	12	13	05
21/22 जून	स्वा.	18	55	0	51	6	47	12	43
22/23 जून	विशा	18	39	0	41	6	43	12	45
23/24 जून	अनु.	18	48	0	57	7	06	13	15
24/25 जून	ज्ये.	19	24	1	40	7	56	14	11
25/26 जून	मूल	20	27	2	50	9	12	15	35
26/27 जून	पू.षा.	21	58	4	28	10	57	17	27
27/28 जून	उ.षा.	23	57	6	31	13	07	19	45
29 जून	श्रव.	2	21	9	02	15	43	22	24
30/1 जुला.	धनि.	5	05	11	47	18	32	1	18
1/2 जुला.	शत.	8	02	14	47	21	32	4	17
2/3 जुला.	पू.भा.	11	02	17	45	0	29	7	12
3/4 जुला.	उ.भा.	13	55	20	33	3	11	9	49
4/5 जुला.	रेवती	16	27	22	57	5	28	11	58
5/6 जुला.	अश्वि.	18	29	0	50	7	11	13	32
6/7 जुला.	भर.	19	53	2	03	8	13	14	23
7/8 जुला.	कृति.	20	33	2	35	8	31	14	30
8/9 जुला.	रोहि.	20	28	2	16	8	04	13	52
9/10 जुला.	मृग.	19	40	1	21	7	03	12	38
10/11जुला.	आर्द्रा	18	16	23	48	5	19	10	51

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
जुला. 2010	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
11/12जुला.	पुर्न.	16	22	21	48	3	15	8	41
12/13जुला.	पुष्य	14	05	19	28	0	51	6	14
13/14जुला.	अश्ले.	11	37	16	59	22	21	3	43
14/15जुला.	मघा	9	05	14	29	19	52	1	16
15 जुलाई	पू.फा.	6	39	12	06	17	33	23	00
16 जुलाई	उ.फा.	4	27	9	57	15	31	21	04
17 जुलाई	हस्त	2	37	8	16	13	56	19	35
18 जुलाई	चित्रा	1	14	7	00	12	44	18	35
19 जुलाई	स्वा.	0	23	6	19	12	14	18	10
20 जुलाई	विशा.	0	06	6	10	12	15	18	16
21 जुलाई	अनु.	0	24	6	37	12	49	19	02
22 जुलाई	ज्ये.	1	15	7	35	13	56	20	16
23 जुलाई	मूल	2	36	9	03	15	31	21	58
24/25जुला.	पूषा	4	25	10	58	17	31	0	04
25/26जुला.	उषा.	6	37	13	13	19	51	2	31
26/27जुला.	श्रव.	9	09	15	51	22	32	5	14
27/28जुला.	धनि.	11	55	18	39	1	23	8	08
28/29जुला.	शत.	14	52	21	37	4	23	11	08
29/30जुला.	पू.भा.	17	53	0	37	7	23	14	07
30/31जुला.	उ.भा.	20	50	3	32	10	13	16	55
31/1 अग.	रेवती	23	36	6	12	12	49	19	25
2 अगस्त	अश्वि.	2	01	8	30	14	58	21	27
3 अगस्त	भर.	3	55	10	14	16	32	22	51
4 अगस्त	कृति.	5	10	11	22	17	29	23	35
5 अगस्त	रोहि.	5	42	11	38	17	35	23	31
6 अगस्त	मृग.	5	28	11	16	17	04	22	48
7 अगस्त	आर्द्रा	4	29	10	04	15	39	21	14
8 अगस्त	पुर्न	2	49	8	17	13	44	19	12
9 अगस्त	पुष्य	0	36	5	56	11	17	16	37
9/10 अग.	अश्ले.	21	57	3	14	8	30	13	47
10/11अग.	मघा	19	04	0	19	5	35	10	50
11/12अग.	पू.फा.	16	06	21	23	2	41	7	58
12/13अग.	उ.फा.	13	15	18	35	23	57	5	20
13/14अग.	हस्त	10	42	16	10	21	39	3	07
14/15अग.	चित्रा	8	36	14	10	19	46	1	24
15/16अग.	स्वा.	7	06	12	54	18	41	0	29

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
अग. 2010	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
16/17अग.	विशा.	6	17	12	16	18	15	0	10
17/18अग.	अनु.	6	13	12	23	18	32	0	42
18/19अग.	ज्ये.	6	52	13	12	19	32	1	52
19/20अग.	मूल	8	12	14	41	21	09	3	38
20/21अग.	पू.षा.	10	07	16	42	23	18	5	53
21/22अग.	उ.षा.	12	29	19	08	1	50	8	30
22/23अग.	श्रव.	15	11	21	54	4	38	11	21
23/24अग.	धनि.	18	04	0	49	7	33	14	18
24/25अग.	शत.	21	03	3	48	10	33	17	18
26 अगस्त	पू.भा.	0	03	6	47	13	30	20	15
27 अगस्त	उ.भा.	2	58	9	40	16	21	23	03
28/29अग.	रेवती	5	45	12	23	19	01	1	39
29/30अग.	अश्वि.	8	17	14	50	21	22	3	55
30/31अग.	भर.	10	28	16	54	23	19	5	45
31/1 सितं.	कृति.	12	11	18	31	0	47	7	02
1/2 सितं.	रोहि.	13	19	19	26	1	33	7	40
2/3 सितं.	मृग	13	47	19	45	1	45	7	36
3/4 सितं.	आर्द्रा	13	32	19	17	1	03	6	48
4/5 सितं.	पुर्न	12	33	18	08	23	43	5	21
5/6 सितं.	पुष्य	10	53	16	19	21	45	3	11
6/7 सितं.	अश्ले.	8	37	13	56	19	16	0	35
7 सितंबर	मघा	5	55	11	10	16	26	21	41
8 सितंबर	पू.फा.	2	56	8	10	13	23	18	37
8/9 सितं.	उ.फा.	23	51	5	05	10	22	15	37
9/10 सितं.	हस्त	20	52	2	11	7	31	12	50
10/11सितं.	चित्रा	18	10	23	33	5	00	10	30
11/12सितं.	स्वा.	15	59	21	35	3	12	8	48
12/13सितं	विशा.	14	25	20	12	2	00	7	46
13/14सितं.	अनु.	13	39	19	40	1	41	7	41
14/15सितं.	ज्ये.	13	42	19	55	2	08	8	21
15/16सितं.	मूल	14	34	20	59	3	23	9	48
16/17सितं.	पूषा	16	12	22	46	5	19	11	53
17/18सितं.	उषा	18	27	1	05	7	46	14	28
18/19सितं.	श्रव.	21	09	3	53	10	37	17	21

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टें. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
सितं. 2010	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
20 सितंबर	धनि.	0	05	6	50	13	36	20	21
21 सितंबर	शत.	3	07	9	52	16	37	23	22
22/23सितं.	पू.भा.	6	07	12	50	19	32	2	16
23/24सितं.	उ.भा.	8	58	15	38	22	17	4	57
24/25सितं.	रेवती	11	37	18	13	0	49	7	25
25/26सितं.	अश्वि.	14	01	20	33	3	04	9	36
26/27सितं.	भरणी	16	07	22	34	5	00	11	27
27/28सितं.	कृति	17	54	0	17	6	37	12	55
28/29सितं.	रोहि.	19	16	1	29	7	43	13	56
29/30सितं.	मृग	20	09	2	14	8	23	14	27
30/1 अक्टू.	आर्द्रा	20	29	2	25	8	21	14	17
1/2 अक्टू.	पुर्न	20	13	1	59	7	45	13	36
2/3 अक्टू.	पुष्य	19	19	0	56	6	34	12	11
3/4 अक्टू.	अश्ले.	17	49	23	18	4	48	10	17
4/5 अक्टू.	मघा	15	47	21	10	2	33	7	56
5/6 अक्टू.	पू.फा.	13	19	18	38	23	56	5	15
6/7 अक्टू.	उ.फा.	10	34	15	52	21	10	2	26
7 अक्टूबर	हस्त	7	43	13	02	18	20	23	39
8 अक्टूबर	चित्रा	4	58	10	20	15	43	21	05
9 अक्टूबर	स्वा.	2	28	7	58	13	27	18	51
10 अक्टूबर	विशा.	0	27	6	06	11	42	17	20
10/11अक्टू.	अनु.	23	04	4	54	10	45	16	35
11/12अक्टू.	ज्ये.	22	26	4	29	10	32	16	35
12/13अक्टू.	मूल	22	38	4	54	11	09	17	25
13/14अक्टू.	पू.षा.	23	41	6	08	12	35	19	02
15 अक्टूबर	उ.षा.	1	29	8	02	14	40	21	17
16/17अक्टू.	श्रव.	3	54	10	36	17	19	0	01
17/18अक्टू.	धनि.	6	43	13	28	20	13	2	59
18/19अक्टू.	शत.	9	44	16	29	23	14	5	59
19/20अक्टू.	पूभा	12	44	19	26	2	10	8	53
20/21अक्टू.	उभा	15	34	22	12	4	51	11	29
21/22अक्टू.	रेवती	18	07	0	40	7	14	13	47
22/23अक्टू.	अश्वि.	20	20	2	48	9	15	15	43
23/24अक्टू.	भरणी	22	11	4	33	10	56	17	18

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
अक्टू. 2010	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
24/25अक्टू.	कृति	23	41	6	00	12	17	18	33
26 अक्तूबर	रोहि.	0	49	7	00	13	12	19	23
27 अक्टूबर	मृग.	1	35	7	42	13	50	19	54
28 अक्टूबर	आर्द्रा	1	58	7	58	13	57	19	57
29 अक्टूबर	पुर्न	1	57	7	51	13	44	19	40
30 अक्टूबर	पुष्य	1	31	7	18	13	04	18	51
31 अक्टूबर	अश्ले.	0	37	6	17	11	58	17	38
31/1 नवं.	मघा	23	18	4	52	10	27	16	01
1/2 नवं.	पू.फा.	21	36	3	05	8	35	14	04
2/3 नवं.	उ.फा.	19	34	1	02	6	27	11	54
3/4 नवं.	हस्त	17	21	22	47	4	12	9	38
4/5 नवं.	चित्रा	15	04	20	31	1	57	7	26
5/6 नवं.	स्वा.	12	53	18	24	23	54	5	25
6/7 नवं.	विशा	10	56	16	33	22	11	3	45
7/8 नवं.	अनु.	9	25	15	11	20	56	2	42
8/9 नवं.	ज्ये.	8	28	14	24	20	21	2	17
9/10 नवं.	मूल	8	13	14	20	20	28	2	35
10/11नवं.	पू.षा.	8	42	15	01	21	19	3	38
11/12नवं.	उ.षा.	9	57	16	23	22	56	5	25
12/13नवं.	श्रव.	11	54	18	32	1	09	7	47
13/14नवं.	धनि.	14	25	21	08	3	49	10	34
14/15नवं.	शत.	17	17	0	02	6	46	13	31
15/16नवं.	पूभा	20	16	2	59	9	43	16	27
16/17नवं.	उभा	23	09	5	48	12	28	19	07
18 नवंबर	रेवती	1	46	8	19	14	52	21	25
19 नवंबर	अश्वि.	3	58	10	24	16	49	23	15
20/21नवं.	भरणी	5	41	11	59	18	18	0	36
21/22नवं.	कृति.	6	55	13	09	19	21	1	29
22/23नवं.	रोहि.	7	40	13	45	19	50	1	55
23/24नवं.	मृग	8	00	14	00	19	58	1	58
24/25नवं.	आर्द्रा	7	57	13	51	19	46	1	40
25/26नवं.	पुर्न	7	34	13	24	19	15	1	06
26/27नवं.	पुष्य	6	55	12	41	18	28	0	14
27 नवंबर	अश्ले.	6	00	11	43	17	26	23	09

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
नवं. 2010	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
28 नवंबर	मघा	4	52	10	32	16	12	21	52
29 नवंबर	पूफा	3	32	9	10	14	48	20	26
30 नवंबर	उफा	2	04	7	41	13	17	18	53
1 दिसंबर	हस्त	0	30	6	06	11	43	17	19
1/2 दिसं.	चित्रा	22	55	4	32	10	08	15	46
2/3 दिसं.	स्वा.	21	23	3	02	8	42	14	21
3/4 दिसं.	विशा.	20	00	1	43	7	27	13	08
4/5 दिसं.	अनु.	18	54	0	43	6	32	12	21
5/6 दिसं.	ज्ये.	18	10	0	06	6	03	11	59
6/7 दिसं.	मूल	17	55	0	00	6	05	12	10
7/8 दिसं.	पूषा	18	15	0	29	6	44	12	58
8/9 दिसं.	उषा	19	12	1	32	7	59	14	23
9/10 दिसं.	श्रवण	20	47	3	19	9	52	16	24
10/11दिसं.	धनि.	22	56	5	35	12	11	18	54
12 दिसंबर	शत	1	33	8	16	15	00	21	43
13/14दिसं.	पूभा	4	26	11	10	17	55	0	40
14/15दिसं.	उभा	7	24	14	06	20	47	3	29
15/16दिसं.	रेवती	10	11	16	47	23	24	6	00
16/17दिसं.	अश्वि.	12	37	19	06	1	34	8	03
17/18दिसं.	भरणी	14	31	20	50	3	10	9	29
18/19दिसं.	कृति	15	49	22	03	4	09	10	19
19/20दिसं.	रोहि.	16	29	22	30	4	31	10	31
20/21दिसं.	मृग.	16	33	22	26	4	22	10	13
21/22दिसं.	आर्द्रा	16	04	21	50	3	36	9	22
22/23दिसं.	पुर्न	15	08	20	49	2	29	8	12
23/24दिसं.	पुष्य	13	51	19	28	1	06	6	43
24/25दिसं.	श्ले.	12	21	17	57	23	32	5	08
25/26दिसं.	मघा	10	43	16	18	21	53	3	28
26/27दिसं.	पूफा	9	03	14	39	20	14	1	50
27/28दिसं.	उफा	7	25	13	02	18	40	0	17
28 दिसंबर	हस्त	5	55	11	35	17	16	22	56
29 दिसंबर	चित्रा	4	36	10	20	16	01	21	47
30 दिसंबर	स्वा.	3	30	9	18	15	05	20	53
31 दिसंबर	विशा.	2	40	8	32	14	23	20	15

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जन. 2011	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1 जन.2011	अनु.	2	09	8	06	14	04	20	01
2 जनवरी	ज्ये.	1	58	8	01	14	03	20	06
3 जनवरी	मूल	2	09	8	18	14	28	20	37
4 जनवरी	पू.षा.	2	46	9	02	15	18	21	34
5 जनवरी	उ.षा.	3	50	10	10	16	34	22	58
6/7 जन.	श्रव.	5	22	11	52	18	23	0	53
7/8 जन.	धनि.	7	23	13	59	20	33	3	12
8/9 जन.	शत.	9	49	16	30	23	12	5	53
9/10 जन.	पू.भा.	12	35	19	19	2	04	8	47
10/11जन.	उ.भा.	15	32	22	16	5	01	11	45
11/12जन.	रेवती	18	29	1	10	7	52	14	33
12/13जन.	अश्वि.	21	14	3	49	10	24	16	59
13/14जन.	भरणी	23	34	6	00	12	27	18	53
15 जनवरी	कृति	1	19	7	38	13	54	20	03
16 जनवरी	रोहि	2	21	8	25	14	30	20	34
17 जनवरी	मृग.	2	38	8	34	14	29	20	19
18 जनवरी	आर्द्रा	2	10	7	53	13	37	19	20
19 जनवरी	पुर्न	1	03	6	38	12	13	17	50
19/20जन.	पुष्य	23	23	4	52	10	20	15	49
20/21जन.	अश्ले.	21	18	2	43	8	09	13	34
21/22जन.	मघा	18	59	0	23	5	46	11	10
22/23जन.	पू.फा.	16	34	21	59	3	24	8	49
23/24जन.	उ.फा.	14	14	19	40	1	09	6	38
24/25जन.	हस्त	12	06	17	39	23	12	4	45
25/26जन.	चित्रा	10	18	15	55	21	34	3	15
26/27जन.	स्वा.	8	56	14	43	20	29	2	16
27/28जन.	विशा.	8	03	13	57	19	50	1	43
28/29जन.	अनु.	7	40	13	42	19	43	1	45
29/30जन.	ज्ये.	7	47	13	56	20	05	2	14
30/31जन.	मूल	8	23	14	38	20	54	3	09
31 जन/1 फर.	पू.षा.	9	25	15	47	22	09	4	30
1/2 फर.	उ.षा.	10	52	17	17	23	45	6	13
2/3 फर.	श्रव.	12	40	19	12	1	45	8	17
3/4 फर.	धनि.	14	49	21	25	4	00	10	38

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
फर. 2011	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
4/5 फर.	शत.	17	16	23	57	6	37	13	18
5/6 फर.	पू.भा.	19	59	2	43	9	26	16	09
6/7 फर.	उ.भा.	22	54	5	39	12	24	19	09
8 फरवरी	रेवती	1	54	8	38	15	23	22	07
9/10 फर.	अश्वि.	4	51	11	32	18	12	0	53
10/11फर.	भरणी	7	34	14	08	20	42	3	16
11/12फर.	कृति	9	50	16	19	22	44	5	05
12/13फर.	रोहि.	11	30	17	44	23	57	6	11
13/14फर.	मृग.	12	25	18	29	0	35	6	32
14/15फर.	आर्द्रा	12	32	18	21	0	11	6	00
15/16फर.	पुर्न	11	49	17	27	23	04	4	46
16/17फर.	पुष्य	10	20	15	49	21	17	2	46
17/18फर.	अश्ले.	8	14	13	35	18	57	0	18
18 फरवरी	मघा	5	39	10	56	16	12	21	29
19 फरवरी	पू.फा.	2	46	8	01	13	17	18	32
19/20फर.	उ.फा.	23	47	5	03	10	20	15	37
20/21फर.	हस्त	20	54	2	15	7	35	12	56
21/22फर.	चित्रा	18	57	23	45	5	08	10	36
22/23फर.	स्वा.	16	07	21	43	3	19	8	55
23/24फर.	विशा.	14	31	20	17	2	04	7	46
24/25फर.	अनु.	13	36	19	33	1	29	7	26
25/26फर.	ज्ये.	13	22	19	29	1	37	7	44
26/27फर.	मूल	13	51	20	07	2	24	8	40
27/28फर.	पू.षा.	14	56	21	20	3	45	10	09
28 फर./1 मार्च	उ.षा.	16	34	23	03	5	36	12	07
1/2 मार्च	श्रव.	18	38	1	14	7	49	14	25
2/3 मार्च	धनि.	21	01	3	40	10	19	16	59
3/4 मार्च	शत.	23	39	6	21	13	03	19	45
5 मार्च	पूभा	2	27	9	11	15	54	22	38
6/7 मार्च	उभा	5	22	12	07	18	51	1	36
7/8 मार्च	रेवती	8	21	15	05	21	50	4	34
8/9 मार्च	अश्वि.	11	19	18	01	0	44	7	26
9/10मार्च	भरणी	14	08	20	47	3	25	10	04

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मार्च 2011	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
10/11मार्च	कृति	16	42	23	17	5	49	12	20
11/12मार्च	रोहि.	18	51	1	14	7	38	14	01
12/13मार्च	मृग.	20	24	2	37	8	55	15	02
13/14मार्च	आर्द्रा	21	15	3	16	9	16	15	17
14/15मार्च	पुर्न	21	18	3	07	8	55	14	48
15/16मार्च	पुष्य	20	32	2	09	7	45	13	22
16/17मार्च	अश्ले.	18	59	0	26	5	53	11	20
17/18मार्च	मघा	16	47	22	06	3	26	8	45
18/19मार्च	पू.फा.	14	04	19	18	0	33	5	47
19/20मार्च	उ.फा.	11	01	16	13	21	26	2	38
20 मार्च	हस्त	7	50	13	03	18	17	23	30
21 मार्च	चित्रा	4	43	10	00	15	15	20	35
22 मार्च	स्वा.	1	53	7	17	12	42	18	06
22/23मार्च	विशा	23	30	5	04	10	35	16	08
23/24मार्च	अनु.	21	45	3	45	9	08	14	55
24/25मार्च	ज्ये.	20	44	3	26	9	07	14	49
25/26मार्च	मूल	20	31	2	40	8	49	14	58
26/27मार्च	पू.षा.	21	07	3	27	9	46	16	06
27/28मार्च	उ.षा.	22	26	4	52	11	22	17	53
29 मार्च	श्रव.	0	22	6	58	13	31	20	11
30 मार्च	धनि.	2	47	9	26	16	07	22	48
31 मा./1 अप्रै.	शत.	5	31	12	15	18	58	1	42
1/2 अप्रै.	पू.भा.	8	26	15	10	21	55	4	40
2/3 अप्रै.	उ.भा.	11	24						

—शीघ्र प्रकाशित—

संवत् २०६१ से २०७५ तक का पंद्रह वर्षीय पंचांग अगले वष, जून 2010 तक आ जाएगा। कृपया पत्र भेजकर आर्डन सूची में अपना पता दर्ज करवाएँ। —पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रातः साढ़े पाँच बजे के ग्रह स्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं—मान लीजिए, आपको 5 अप्रैल, 2010 ई. की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में 5 अप्रैल के सामने सूर्य स्पष्ट 11.21.21′.23″ राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रातः साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 5 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (6) अप्रै. में से 5 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (59′/04″) प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17-12) कला तथा 30 मिनट की गति (1.14) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18′.26) हुई, इसको 5 अप्रैल प्रातः सूर्य स्पष्ट में जमा कर देने पर हमें 5 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्य स्पष्ट (11.21.24′.18″) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिषी तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3′	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5′	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7′	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9′	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11′	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13′	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15′	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17′	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19′	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21′	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23′	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25′	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27′	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29′	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31′	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33′	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35′	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37′	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39′	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41′	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43′	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45′	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47′	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49′	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51′	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53′	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55′	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57′	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58′	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59′	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60′	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै.गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
61′	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63′	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65′	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67′	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69′	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71′	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73′	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75′	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77′	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79′	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81′	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83′	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85′	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87′	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89′	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90′	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92′	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94′	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96′	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98′	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99′	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100′	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102′	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104′	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106′	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108′	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110′	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112′	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114′	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116′	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118′	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2067 (सन् 2010-11 ई.)

नोट-अपने अभीष्टकाल के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी देखें। *(15 मार्च से 20 अप्रैल तक)* 1 अप्रैल, 2010 ई. को अयनांश 24°/0′/17″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
15	11 0 17 29	10 20 34 32	3 6 24 6	11 0 43 5	10 19 14 12	11 15 17 31	5 7 50 0	8 23 45 44	-2 16	-2 14	6 00	18 16	15
16	11 1 17 18	11 2 40 39	3 6 27 32	11 2 40 50	10 19 28 33	11 16 32 00	5 7 45 20	8 23 42 33	-1 52	+2 58	6 28	19 10	16
17	11 2 17 4	11 14 56 8	3 6 31 39	11 4 39 23	10 19 42 54	11 17 46 28	5 7 40 39	8 23 39 22	-1 29	+8 6	6 57	20 6	17
18	11 3 16 49	11 27 21 38	3 6 36 27	11 6 38 36	10 19 57 13	11 19 00 54	5 7 35 57	8 23 36 12	-1 5	12 59	7 29	21 4	18
19	11 4 16 32	0 9 57 38	3 6 41 55	11 8 38 22	10 20 11 30	11 20 15 18	5 7 31 14	8 23 33 1	-0 41	17 23	8 3	22 4	19
20	11 5 16 12	0 22 44 54	3 6 48 2	11 10 38 31	10 20 25 46	11 21 29 40	5 7 26 30	8 23 29 50	-0 17	21 4	8 43	23 5	20
21	11 6 15 49	1 5 44 25	3 6 54 50	11 12 38 52	10 20 40 1	11 22 44 2	5 7 21 47	8 23 26 39	0 6	23 46	9 29	——	21
22	11 7 15 25	1 18 57 35	3 7 2 14	11 14 39 11	10 20 54 14	11 23 58 20	5 7 17 3	8 23 23 28	0 30	25 13	10 22	0 6	22
23	11 8 14 58	2 2 26 7	3 7 10 15	11 16 39 13	10 21 8 25	11 25 12 36	5 7 12 20	8 23 20 18	0 54	25 14	11 21	1 5	23
24	11 9 14 29	2 16 11 43	3 7 18 53	11 18 31 41	10 21 22 35	11 26 26 51	5 7 7 36	8 23 17 7	1 17	23 43	12 25	2 00	24
25	11 10 13 58	3 0 15 28	3 7 28 7	11 20 37 16	10 21 36 42	11 27 41 3	5 7 2 53	8 23 13 56	1 41	20 42	13 34	2 49	25
26	11 11 13 25	3 14 37 15	3 7 37 54	11 22 34 37	10 21 50 48	11 28 55 14	5 6 58 10	8 23 10 45	2 5	16 22	14 42	3 34	26
27	11 12 12 49	3 29 15 3	3 7 48 17	11 24 30 21	10 22 4 52	0 0 9 22	5 6 53 28	8 23 7 34	2 28	11 0	15 52	4 13	27
28	11 13 12 10	4 14 4 17	3 7 59 11	11 26 24 5	10 22 18 53	0 1 23 28	5 6 48 47	8 23 4 23	2 52	+4 56	17 1	4 50	28
29	11 14 11 29	4 28 57 59	3 8 10 39	11 28 15 24	10 22 32 53	0 2 37 32	5 6 44 7	8 23 1 12	3 15	-1 24	18 9	5 25	29
30	11 15 10 47	5 13 47 35	3 8 22 38	0 0 3 53	10 22 46 50	0 3 51 34	5 6 39 28	8 22 58 1	3 38	-7 38	19 17	6 1	30
31	11 16 10 3	5 28 24 20	3 8 35 9	0 1 49 8	10 23 0 46	0 5 5·34	5 6 34 50	8 22 54 51	4 2	-13 21	20 25	6 39	31
अप्रै.	11 17 9 17	6 12 40 50	3 8 48 10	0 3 30 45	10 23 14 38	0 6 19 32	5 6 30 13	8 22 51 40	4 25	-18 12	21 32	7 19	अप्रै.
2	11 18 8 28	6 26 31 56	3 9 1 41	0 5 8 19	10 23 28 29	0 7 33 28	5 6 25 38	8 22 48 29	4 48	-21 54	22 36	8 1	2
3	11 19 7 38	7 9 55 33	3 9 15 41	0 6 41 31	10 23 42 17	0 8 47 22	5 6 21 5	8 22 45 18	5 11	-24 17	23 35	8 50	3
4	11 20 6 46	7 22 52 26	3 9 30 10	0 8 10 0	10 23 56 3	0 10 1 14	5 6 16 33	8 22 42 8	5 34	-25 17	——	9 42	4
5	11 21 5 52	8 5 25 31	3 9 45 7	0 9 33 28	10 24 9 46	0 11 15 4	5 6 12 3	8 22 38 58	5 57	-24 56	0 29	10 38	5
6	11 22 4 56	8 17 39 10	3 10 0 31	0 10 51 39	10 24 23 26	0 12 28 52	5 6 7 35	8 22 35 47	6 20	-23 22	1 17	11 33	6
7	11 23 3 59	8 29 38 41	3 10 16 22	0 12 4 17	10 24 37 4	0 13 42 38	5 6 3 9	8 22 32 36	6 42	-20 45	1 58	12 30	7
8	11 24 3 00	9 11 29 35	3 10 32 39	0 13 11 9	10 24 50 38	0 14 56 22	5 5 58 46	8 22 29 25	7 5	-17 18	2 34	13 25	8
9	11 25 1 59	9 23 17 16	3 10 49 23	0 14 12 7	10 25 4 10	0 16 10 4	5 5 54 25	8 22 26 15	7 27	-13 12	3 7	14 21	9
10	11 26 0 56	10 5 6 39	3 11 6 32	0 15 6 59	10 25 17 39	0 17 23 44	5 5 50 7	8 22 23 4	7 50	-8 35	3 36	15 14	10
11	11 26 59 52	10 17 2 3	3 11 24 5	0 15 55 38	10 25 31 5	0 18 37 22	5 5 45 52	8 22 19 53	8 12	–3 38	4 5	16 8	11
12	11 27 58 45	10 29 6 46	3 11 42 3	0 16 37 57	10 25 44 28	0 19 50 58	5 5 41 40	8 22 16 42	8 34	+1 30	4 32	17 2	12
13	11 28 57 37	11 11 23 5	3 12 0 25	0 17 13 53	10 25 57 47	0 21 4 31	5 5 37 30	8 22 13 31	8 56	6 39	5 2	17 58	13
14	11 29 56 27	11 23 52 18	3 12 19 11	0 17 43 24	10 26 11 3	0 22 18 3	5 5 33 24	8 22 10 21	9 17	11 37	5 32	18 57	14
15	0 0 55 15	0 6 34 39	3 12 38 19	0 18 6 28	10 26 24 16	0 23 31 32	5 5 29 21	8 22 7 10	9 39	16 12	6 5	19 56	15
16	0 1 54 2	0 19 29 51	3 12 57 50	0 18 23 7	10 26 37 25	0 24 44 59	5 5 25 22	8 22 3 59	10 00	20 6	6 44	20 59	16
17	0 2 52 45	1 2 36 59	3 13 17 42	0 18 33 26	10 25 50 30	0 25 58 24	5 5 21 26	8 22 0 48	10 22	23 3	7 27	22 00	17
18	0 3 51 26	1 15 55 4	3 13 37 57	0 18 37 31	10 27 3 32	0 27 11 47	5 5 17 34	8 21 57 37	10 43	24 48	8 18	23 00	18
19	0 4 50 6	1 29 23 43	3 13 58 32	0 18 35 33	10 27 16 30	0 28 25 7	5 5 13 45	8 21 54 27	11 4	25 8	9 16	23 56	19
20	0 5 48 44	2 13 2 32	3 14 19 28	0 18 27 45	10 27 29 24	0 29 38 24	5 5 10 1	8 21 51 16	11 24	23 57	10 18	——	20

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(21 अप्रैल से 30 मई 2010 ई. तक) **1 मई, 2010 ई. को अयनांश 24°/0'/20"**

अप्रैल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	अप्रैल
आ.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
21	0 6 47 20	2 26 51 43	3 14 40 43	0 18 14 25	10 27 42 14	1 0 51 39	5 5 6 21	8 21 48 5	11 45	21 18	11 24	0 46	21
22	0 7 45 53	3 10 51 29	3 15 2 18	0 17 55 54	10 27 55 00	1 2 4 52	5 5 2 44	8 21 44 54	12 5	17 22	12 32	1 30	22
23	0 8 44 23	3 25 1 36	3 15 24 12	0 17 32 39	10 28 7 42	1 3 18 2	5 4 59 13	8 21 41 44	+12 25	+12 25	13 39	2 11	23
24	0 9 42 52	4 9 20 50	3 15 46 25	0 17 5 7	10 28 20 20	1 4 31 9	5 4 55 45	8 21 38 33	12 45	6 45	14 46	2 48	24
25	0 10 41 18	4 23 46 33	3 16 8 55	0 16 33 54	10 28 32 53	1 5 44 13	5 4 52 22	8 21 35 22	13 5	+0 41	15 51	3 22	25
26	0 11 39 43	5 8 14 26	3 16 31 43	0 15 59 35	10 28 45 22	1 6 57 15	5 4 49 4	8 21 32 11	13 25	-5 24	16 58	3 57	26
27	0 12 38 4	5 22 38 53	3 16 54 49	0 15 22 52	10 28 57 47	1 8 10 14	5 4 45 50	8 21 29 00	13 44	-11 11	18 05	4 33	27
28	0 13 36 24	6 6 53 43	3 17 18 11	0 14 44 26	10 29 10 8	1 9 23 10	5 4 42 40	8 21 25 50	14 3	-16 18	19 11	5 11	28
29	0 14 34 43	6 20 53 4	3 17 41 50	0 14 4 59	10 29 22 23	1 10 36 4	5 4 39 36	8 21 22 39	14 22	-20 27	20 17	5 53	29
30	0 15 33 00	7 4 32 31	3 18 5 44	0 13 25 18	10 29 34 35	1 11 48 55	5 4 36 36	8 21 19 28	14 40	-23 21	21 19	6 39	30
मई	0 16 31 15	7 17 49 33	3 18 29 55	0 12 46 3	10 29 46 41	1 13 1 43	5 4 33 41	8 21 16 17	14 59	-24 52	22 17	7 31	मई
2	0 17 29 28	8 0 43 46	3 18 54 21	0 12 7 57	10 29 58 43	1 14 14 30	5 4 30 51	8 21 13 7	15 17	-25 00	23 8	8 26	2
3	0 18 27 40	8 13 16 52	3 19 19 2	0 11 31 37	11 0 10 40	1 15 27 12	5 4 28 7	8 21 9 56	15 35	-23 49	23 53	9 23	3
4	0 19 25 50	8 25 32 4	3 19 43 58	0 10 57 39	11 0 22 32	1 16 39 52	5 4 25 27	8 21 6 45	15 52	-21 30	——	10 20	4
5	0 20 23 59	9 7 33 44	3 20 9 8	0 10 26 34	11 0 34 19	1 17 52 30	5 4 22 53	8 21 3 34	16 10	-18 17	0 32	11 18	5
6	0 21 22 8	9 19 26 50	3 20 34 33	0 9 58 50	11 0 46 00	1 19 5 5	5 4 20 24	8 21 0 24	16 27	-14 21	1 5	12 12	6
7	0 22 20 12	10 1 16 40	3 21 0 12	0 9 34 49	11 0 57 37	1 20 17 37	5 4 18 00	8 20 57 13	16 43	-9 54	1 36	13 6	7
8	0 23 18 17	10 13 8 34	3 21 26 6	0 9 14 50	11 1 9 8	1 21 30 7	5 4 15 42	8 20 54 2	17 00	-5 5	2 5	14 0	8
9	0 24 16 20	10 25 7 14	3 21 52 12	0 8 59 9	11 1 20 34	1 22 42 34	5 4 13 29	8 20 50 51	1716	-0 2	2 32	14 54	9
10	0 25 14 22	11 7 16 56	3 22 18 32	0 8 47 55	11 1 31 54	1 23 54 59	5 4 11 22	8 20 47 41	17 32	+5 5	3 1	15 49	10
11	0 26 12 23	11 19 40 54	3 22 45 6	0 8 41 15	11 1 43 9	1 25 7 21	5 4 9 20	8 20 44 30	17 48	10 5	3 31	16 46	11
12	0 27 10 22	0 2 21 15	3 23 11 52	0 8 39 13	11 1 54 18	1 26 19 40	5 4 7 24	8 20 41 19	18 3	14 48	4 3	17 45	12
13	0 28 8 20	0 15 18 48	3 23 38 51	0 8 41 51	11 2 5 21	1 27 31 56	5 4 5 34	8 20 38 8	18 18	18 56	4 40	18 48	13
14	0 29 6 15	0 28 33 4	3 24 6 3	0 8 49 7	11 2 16 18	1 28 44 9	5 4 3 50	8 20 34 58	18 33	22 13	5 23	19 51	14
15	1 0 4 10	1 12 2 30	3 24 33 27	0 9 0 59	11 2 27 9	1 29 56 19	5 4 2 11	8 20 31 47	18 47	24 20	6 12	20 52	15
16	1 1 2 3	1 25 44 43	3 25 1 3	0 9 17 21	11 2 37 54	2 1 8 27	5 4 0 39	8 29 28 36	19 2	25 3	7 8	21 51	16
17	1 1 59 54	2 9 37 1	3 25 28 51	0 9 38 9	11 2 48 33	2 2 20 31	5 3 59 12	8 29 25 25	19 15	24 12	8 11	22 44	17
18	1 2 57 44	2 23 36 50	3 25 56 50	0 10 3 16	11 2 59 5	2 3 32 32	5 3 57 51	8 20 22 15	19 29	21 51	9 17	23 30	18
19	1 3 55 32	3 7 41 56	3 26 25 1	0 10 32 34	11 3 9 31	2 4 44 30	5 3 56 36	8 20 19 4	19 42	18 9	10 25	——	19
20	1 4 53 19	3 21 50 23	3 26 53 23	0 11 5 58	11 3 19 51	2 5 56 24	5 3 55 28	8 20 15 53	19 55	13 24	11 32	0 12	20
21	1 5 51 3	4 6 0 42	3 27 21 55	0 11 43 19	11 3 30 4	2 7 8 15	5 3 54 25	8 20 12 42	20 7	7 55	12 37	0 49	21
22	1 6 48 46	4 20 11 12	3 27 50 38	0 12 24 31	11 3 40 10	2 8 20 3	5 3 53 28	8 20 9 32	20 19	+2 2	13 42	1 23	22
23	1 7 46 28	5 4 19 56	3 28 19 32	0 13 9 25	11 3 50 9	2 9 31 47	5 3 52 38	8 20 6 21	20 31	-3 55	14 47	1 57	23
24	1 8 44 8	5 18 24 32	3 28 48 35	0 13 57 57	11 4 0 2	2 10 43 27	5 3 51 53	8 20 3 10	20 42	-9 39	15 52	2 31	24
25	1 9 41 46	6 2 22 3	3 29 17 49	0 14 49 57	11 4 9 48	2 11 55 4	5 3 51 15	8 19 59 59	20 53	-14 51	16 57	3 7	25
26	1 10 39 23	6 16 9 19	3 29 47 12	0 15 45 22	11 4 19 26	2 13 6 37	5 3 50 43	8 19 56 49	21 4	-19 12	18 2	3 47	26
27	1 11 36 59	6 29 43 16	4 0 16 45	0 16 44 4	11 4 28 58	2 14 18 6	5 3 50 17	8 19 53 38	21 14	-22 28	19 5	4 31	27
28	1 12 34 33	7 13 1 30	4 0 46 27	0 17 45 58	11 4 38 22	2 15 29 31	5 3 49 57	8 19 50 27	21 24	-24 26	20 4	5 20	28
29	1 13 32 6	7 26 2 23	4 1 16 18	0 18 51 0	11 4 47 40	2 16 40 53	5 3 49 43	8 19 47 16	21 34	-25 1	20 58	6 14	29
30	1 14 29 38	8 8 45 43	4 1 46 18	0 19 59 6	11 4 56 49	2 17 52 11	5 3 49 35	8 19 44 6	21 43	-24 16	21 46	7 10	30

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(31 जून से 10 जुलाई 2010 ई. तक)

1 जून, 2010 ई. को अयनांश 24°/00'/25''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टै. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
31	1 15 27 10	8 21 12 31	4 2 16 27	0 21 10 11	11 5 5 52	2 19 3 25	5 3 49 33	8 19 40 55	21 52	-22 18	22 27	8 8	31
जून	1 16 24 40	9 3 24 49	4 2 46 45	0 22 24 12	11 5 14 47	2 20 14 35	5 3 49 37	8 19 37 44	22 1	-19 20	23 3	9 6	जून
2	1 17 22 9	9 15 25 52	4 3 17 12	0 23 41 5	11 5 23 34	2 21 25 42	5 3 49 48	8 19 34 33	22 9	-15 35	23 35	10 2	2
3	1 18 19 38	9 27 19 46	4 3 47 48	0 25 0 48	11 5 32 13	2 22 36 44	5 3 50 4	8 19 31 23	22 16	-11 16	——	10 57	3
4	1 19 17 5	10 9 10 34	4 4 18 31	0 26 23 20	11 5 40 45	2 23 47 43	5 3 50 27	8 19 28 12	22 24	- 6 33	0 5	11 50	4
5	1 20 14 33	10 21 3 32	4 4 49 24	0 27 48 37	11 5 49 8	2 24 58 37	5 3 50 55	8 19 25 1	22 31	- 1 36	0 32	12 44	5
6	1 21 11 59	11 3 3 24	4 5 20 25	0 29 16 39	11 5 57 24	2 26 9 28	5 3 51 30	8 19 21 50	22 37	+3 28	1 1	13 38	6
7	1 22 9 25	11 15 14 45	4 5 51 33	1 0 47 23	11 6 5 31	2 27 20 15	5 3 52 11	8 19 18 40	22 43	8 28	1 29	14 33	7
8	1 23 6 50	11 27 41 44	4 6 22 50	1 2 20 51	11 6 13 30	2 28 30 58	5 3 52 59	8 19 15 29	22 49	13 14	2 00	15 31	8
9	1 24 4 14	0 10 27 28	4 6 54 16	1 3 56 59	11 6 21 20	2 29 41 36	5 3 53 52	8 19 12 18	22 54	17 34	2 35	16 31	9
10	1 25 1 38	0 23 34 00	4 7 25 49	1 5 35 48	11 6 29 2	3 0 52 10	5 3 54 51	8 18 9 7	22 59	21 10	3 14	17 35	10
11	1 25 59 1	1 7 1 44	4 7 57 30	1 7 17 15	11 6 36 36	3 2 2 40	5 3 55 57	8 19 5 57	23 4	23 44	4 1	18 38	11
12	1 26 56 24	1 20 49 28	4 8 29 18	1 9 1 20	11 6 44 00	3 3 13 6	5 3 57 8	8 19 2 46	23 8	24 58	4 55	19 39	12
13	1 27 53 45	2 4 54 25	4 9 1 15	1 10 48 2	11 6 51 15	3 4 23 27	5 3 58 26	8 18 59 35	23 11	24 37	5 57	20 35	13
14	1 28 51 7	2 19 12 21	4 9 33 19	1 12 37 18	11 6 58 22	3 5 33 44	5 3 59 49	8 18 56 24	23 15	22 40	7 4	21 26	14
15	1 29 48 27	3 3 38 30	4 10 5 30	1 14 29 6	11 7 5 19	3 6 43 56	5 4 1 19	8 18 53 14	23 18	19 14	8 13	22 10	15
16	2 0 45 46	3 18 7 39	4 10 37 49	1 16 23 21	11 7 12 7	3 7 54 3	5 4 2 55	8 18 50 3	23 20	14 37	9 22	22 49	16
17	2 1 43 5	4 2 35 5	4 11 10 15	1 18 19 59	11 7 18 46	3 9 4 5	5 4 4 36	8 18 46 52	23 22	9 10	10 30	23 25	17
18	2 2 40 23	4 16 56 54	4 11 42 48	1 20 18 55	11 7 25 16	3 10 14 1	5 4 6 24	8 18 43 41	23 24	+3 17	11 36	23 59	18
19	2 3 37 40	5 1 10 00	4 12 15 27	1 22 20 2	11 7 31 36	3 11 23 53	5 4 8 17	8 18 40 31	23 25	- 2 43	12 40	——	19
20	2 4 34 56	5 15 12 10	4 12 48 14	1 24 23 10	11 7 37 47	3 12 33 39	5 4 10 16	8 18 37 20	23 26	- 8 29	13 44	0 33	20
21	2 5 32 11	5 29 2 00	4 13 21 7	1 26 28 8	11 7 43 48	3 13 43 19	5 4 12 21	8 18 34 9	23 26	-13 45	14 49	1 9	21
22	2 6 29 25	6 12 38 34	4 13 54 7	1 28 34 45	11 7 49 40	3 14 52 54	5 4 14 32	8 18 30 58	23 26	-18 15	15 52	1 46	22
23	2 7 26 39	6 26 1 22	4 14 27 13	2 0 42 48	11 7 55 22	3 16 2 23	5 4 16 48	8 18 27 48	23 26	-21 45	16 55	2 27	23
24	2 8 23 53	7 9 10 5	4 15 0 25	2 2 52 3	11 8 0 54	3 17 11 46	5 4 19 11	8 18 24 37	23 25	-24 2	17 55	3 14	24
25	2 9 21 6	7 22 4 47	4 15 33 44	2 5 2 12	11 8 6 16	3 18 21 2	5 4 21 38	8 18 21 26	23 24	-25 00	18 50	4 5	25
26	2 10 18 18	8 4 45 45	4 16 7 9	2 7 13 0	11 8 11 28	3 19 30 13	5 4 24 11	8 18 18 15	23 22	-24 38	19 40	5 00	26
27	2 11 15 30	8 17 13 40	4 16 40 40	2 9 24 9	11 8 16 30	3 20 39 17	5 4 26 51	8 18 15 5	23 20	-23 2	20 24	5 57	27
28	2 12 12 42	8 29 29 32	4 17 14 17	2 11 35 23	11 8 21 21	3 21 48 16	5 4 29 35	8 18 11 54	23 18	-20 21	21 1	6 56	28
29	2 13 9 53	9 11 35 12	4 17 48 1	2 13 46 25	11 8 26 3	3 22 57 7	5 4 32 25	8 18 8 43	+23 15	-16 49	21 35	7 52	29
30	2 14 7 5	9 23 32 51	4 18 21 50	2 15 57 00	11 8 30 44	3 24 5 52	5 4 35 21	8 18 5 32	+23 11	-12 38	22 6	8 48	30
जुला	2 15 4 17	10 5 25 21	4 18 55 45	2 18 6 52	11 8 34 54	3 25 14 31	5 4 38 21	8 18 2 22	23 8	- 8 1	22 34	9 42	जुला
2	2 16 1 28	10 17 16 7	4 19 29 46	2 20 15 49	11 8 39 4	3 26 23 3	5 4 41 27	8 17 59 11	23 4	- 3 8	23 02	10 35	2
3	2 16 58 40	10 29 9 6	4 20 3 53	2 22 23 39	11 8 43 4	3 27 31 28	5 4 44 39	8 17 56 00	22 59	+ 1 53	23 31	11 28	3
4	2 17 55 52	11 11 8 29	4 20 38 6	2 24 30 11	11 8 46 52	3 28 39 47	5 4 47 56	8 17 52 49	22 54	6 52	——	12 22	4
5	2 18 53 4	11 23 18 48	4 21 12 25	2 26 35 17	11 8 50 29	3 29 47 58	5 4 51 8	8 17 49 39	22 49	11 39	0 1	13 18	5
6	2 19 50 17	0 5 44 25	4 21 46 49	2 28 38 49	11 8 53 56	4 0 56 2	5 4 54 45	8 17 46 28	22 43	16 5	0 32	14 16	6
7	2 20 47 29	0 18 29 24	4 22 21 20	3 0 40 42	11 8 57 13	4 2 3 59	5 4 58 17	8 17 43 17	22 37	19 55	1 8	15 17	7
8	2 21 44 42	1 1 36 55	4 22 55 56	3 2 40 53	11 9 0 17	4 3 11 49	5 5 1 55	8 17 40 6	22 31	22 53	1 50	16 20	8
9	2 22 41 56	1 15 8 57	4 23 30 38	3 4 39 14	11 9 3 10	4 4 19 31	5 5 5 38	8 17 36 56	22 24	24 39	2 41	17 22	9
10	2 23 39 9	1 29 5 37	4 24 5 26	3 6 35 46	11 9 5 52	4 5 27 6	5 5 9 26	8 17 33 45	22 16	24 58	3 38	18 21	10

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (11 जुलाई से 20 अग. 2010 ई. तक) 1 जुलाई, 2010 ई. को अयनांश 24°/00'/31'' 1 अग.-अयनांश 24°/00'/36''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
जुलाई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	जुलाई
11	2 24 36 23	2 13 24 57	4 24 40 19	3 8 30 26	11 9 8 23	4 6 34 32	5 5 13 18	8 17 30 34	22 9	23 39	4 43	19 15	11
12	2 25 33 38	2 28 2 39	4 25 15 18	3 10 23 12	11 9 10 43	4 7 41 51	5 5 17 16	8 17 27 23	22 1	20 43	5 53	20 3	12
13	2 26 30 52	3 12 52 30	4 25 50 23	3 12 14 4	11 9 12 51	4 8 49 1	5 5 21 18	8 17 24 12	21 52	16 24	7 4	20 46	13
14	2 27 28 6	3 27 46 48	4 26 25 33	3 14 3 2	11 9 14 47	4 9 56 3	5 5 25 26	8 17 21 1	21 43	11 2	8 15	21 24	14
15	2 28 25 21	4 12 37 50	4 27 0 49	3 15 50 5	11 9 16 32	4 11 2 55	5 5 29 38	8 17 17 51	21 34	+5 4	9 24	21 59	15
16	2 29 22 36	4 27 18 27	4 27 36 10	3 17 35 13	11 9 18 5	4 12 9 39	5 5 33 55	8 17 14 40	21 25	-1 6	10 30	22 29	16
17	3 0 19 51	5 11 43 18	4 28 11 36	3 19 18 27	11 9 19 27	4 13 16 14	5 5 38 16	8 17 11 29	21 15	-7 5	11 36	23 10	17
18	3 1 17 6	5 25 49 3	4 28 47 7	3 20 59 46	11 9 20 37	4 14 22 38	5 5 42 43	8 17 8 18	21 5	-12 35	12 42	23 47	18
19	3 2 14 21	6 9 34 23	4 29 22 43	3 22 39 10	11 9 21 35	4 15 28 53	5 5 47 14	8 17 5 7	20 54	-17 19	13 45	——	19
20	3 3 11 36	6 22 59 30	4 29 58 25	3 24 16 40	11 9 22 22	4 16 34 57	5 5 51 49	8 17 1 56	20 43	-21 3	14 49	0 28	20
21	3 4 8 51	7 6 5 52	5 0 34 11	3 25 52 16	11 9 22 57	4 17 40 51	5 5 56 28	8 16 58 45	20 32	-23 37	15 49	1 12	21
22	3 5 6 7	7 18 55 33	5 1 10 3	3 27 25 57	11 9 23 20	4 18 46 34	5 6 1 12	8 16 55 35	20 20	-24 53	16 46	2 1	22
23	3 6 3 23	8 1 30 42	5 1 45 59	3 28 57 41	11 9 23 31	4 19 52 6	5 6 6 1	8 16 52 24	20 8	-24 51	17 37	2 54	23
24	3 7 0 40	8 13 53 40	5 2 22 0	4 0 27 31	11 9 23 31	4 20 57 26	5 6 10 53	8 16 49 13	19 56	-23 35	18 23	3 50	24
25	3 7 57 56	8 26 6 25	5 2 58 6	4 1 55 24	11 9 23 19	4 22 2 35	5 6 15 50	8 16 46 2	19 43	-21 12	19 2	4 48	25
26	3 8 55 14	9 8 10 54	5 3 34 17	4 3 21 19	11 9 22 55	4 23 7 32	5 6 20 51	8 16 42 51	19 30	-17 54	19 37	5 45	26
27	3 9 52 32	9 20 9 00	5 4 10 32	4 4 45 15	11 9 22 20	4 24 12 16	5 6 25 56	8 16 39 41	19 17	-13 54	20 8	6 40	27
28	3 10 49 51	10 2 2 33	5 4 46 53	4 6 7 9	11 9 21 32	4 25 16 49	5 6 31 5	8 16 36 30	19 3	-9 24	20 38	7 35	28
29	3 11 47 10	10 13 53 40	5 5 23 18	4 7 27 00	11 9 20 33	4 26 21 8	5 6 36 18	8 16 33 19	18 49	-4 35	21 6	8 29	29
30	3 12 44 31	10 25 44 35	5 5 59 48	4 8 44 45	11 9 19 22	4 27 25 14	5 6 41 35	8 16 30 8	18 35	+0 24	21 33	9 21	30
31	3 13 41 52	11 7 38 14	5 6 36 23	4 10 0 21	11 9 17 59	4 28 29 8	5 6 46 56	8 16 26 58	18 21	5 22	22 1	10 15	31
अग.	3 14 39 15	11 19 37 45	5 7 13 2	4 11 13 44	11 9 16 26	4 29 32 47	5 6 52 21	8 16 23 47	18 6	10 11	22 31	11 9	अग.
2	3 15 36 38	0 1 47 00	5 7 49 47	4 12 24 51	11 9 14 40	5 0 36 12	5 6 57 49	8 16 20 36	+17 51	14 40	23 4	12 5	2
3	3 16 34 3	0 14 9 57	5 8 26 36	4 13 33 37	11 9 12 42	5 1 39 24	5 7 3 22	8 16 17 25	+17 35	18 39	23 44	13 3	3
4	3 17 31 29	0 26 50 46	5 9 3 30	4 14 39 58	11 9 10 32	5 2 42 20	5 7 8 58	8 16 14 15	17 19	21 52	——	14 4	4
5	3 18 28 57	1 9 53 30	5 9 40 29	4 15 43 47	11 9 8 11	5 3 45 2	5 7 14 37	8 16 11 4	17 3	24 4	0 29	15 5	5
6	3 19 26 26	1 23 21 16	5 10 17 33	4 16 44 58	11 9 5 38	5 4 47 28	5 7 20 21	8 16 7 53	16 47	24 59	1 22	16 4	6
7	3 20 23 55	2 7 16 1	5 10 54 42	4 17 43 26	11 9 2 54	5 5 49 38	5 7 26 7	8 16 4 42	16 31	24 22	2 23	17 00	7
8	3 21 21 26	2 21 37 24	5 11 31 56	4 18 39 1	11 8 59 59	5 6 51 32	5 7 31 57	8 16 1 31	16 14	22 10	3 30	17 50	8
9	3 22 18 58	3 6 22 30	5 12 9 14	4 19 31 36	11 8 56 52	5 7 53 9	5 7 37 50	8 15 58 21	15 57	18 26	4 40	18 36	9
10	3 23 16 31	3 21 25 14	5 12 46 36	4 20 21 3	11 8 53 34	5 8 54 29	5 7 43 47	8 15 55 10	15 39	13 27	5 51	19 17	10
11	3 24 14 6	4 6 37 1	5 13 24 4	4 21 7 11	11 8 50 4	5 9 55 31	5 7 49 47	8 15 51 59	15 22	7 35	7 3	19 55	11
12	3 25 11 41	4 21 47 46	5 14 1 37	4 21 49 50	11 8 46 24	5 10 56 15	5 7 55 51	8 15 48 48	15 4	+1 18	8 13	20 32	12
13	3 26 9 17	5 6 47 27	5 14 39 14	4 22 28 49	11 8 42 33	5 11 56 40	5 8 1 57	8 15 45 38	14 46	-4 59	9 23	21 8	13
14	3 27 6 55	5 21 28 1	5 15 16 55	4 23 3 55	11 8 38 30	5 12 56 44	5 8 8 6	8 15 42 27	14 27	-10 50	10 30	21 45	14
15	3 28 4 33	6 5 44 6	5 15 54 41	4 23 34 57	11 8 34 18	5 13 56 29	5 8 14 19	8 15 39 16	14 9	-15 58	11 37	22 26	15
16	3 29 2 12	6 19 33 33	5 16 32 32	4 24 1 41	11 8 29 55	5 14 55 51	5 8 20 35	8 15 36 5	13 50	-20 4	12 41	23 10	16
17	3 29 59 52	7 2 56 49	5 17 10 27	4 24 23 53	11 8 25 21	5 15 54 52	5 8 26 53	8 15 32 55	13 31	-22 59	13 44	23 58	17
18	4 0 57 34	7 15 56 20	5 17 48 27	4 24 41 19	11 8 20 38	5 16 53 30	5 8 33 14	8 15 29 44	13 12	-24 36	14 42	——	18
19	4 1 55 16	7 28 35 38	5 18 26 30	4 24 53 46	11 8 15 44	5 17 51 43	5 8 39 38	8 15 26 33	12 53	-24 53	15 34	0 50	19
20	4 2 52 59	8 10 58 39	5 19 4 38	4 25 1 0	11 8 10 41	5 18 49 32	5 8 46 5	8 15 23 22	12 33	-23 54	16 21	1 45	20

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(21 अगस्त से 30 सितंबर, 2010 ई. तक)* 1 सितंबर, 2010 ई. को अयनांश 24°/00'/39"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (आ. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	तारीख
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
21	4 3 50 44	8 23 9 15	5 19 42 51	4 25 2 49	11 8 5 28	5 19 46 57	5 8 52 34	8 15 20 12	12 13	-21 48	17 2	2 42	21
22	4 4 48 29	9 5 10 59	5 20 21 8	4 24 59 3	11 8 0 6	5 20 43 55	5 8 59 5	8 15 17 1	11 53	-18 46	17 38	3 39	22
23	4 5 46 16	9 17 6 52	5 20 59 29	4 24 49 32	11 7 54 35	5 21 40 26	5 9 5 40	8 15 13 50	11 33	-14 58	18 10	4 34	23
24	4 6 44 4	9 28 59 22	5 21 37 54	4 24 34 11	11 7 48 54	5 22 36 29	5 9 12 16	8 15 10 39	11 13	-10 37	18 41	5 30	24
25	4 7 41 54	10 10 50 31	5 22 16 24	4 24 12 56	11 7 43 5	5 23 32 3	5 9 18 55	8 15 7 29	10 52	-5 53	19 8	6 23	25
26	4 8 39 45	10 22 42 00	5 22 54 58	4 23 45 51	11 7 37 7	5 24 27 7	5 9 25 36	8 15 4 18	10 31	-0 58	19 37	7 16	26
27	4 9 37 38	11 4 35 33	5 23 33 36	4 23 13 5	11 7 31 1	5 25 21 40	5 9 32 20	8 15 1 7	10 10	+4 00	20 4	8 9	27
28	4 10 35 33	11 16 32 48	5 24 12 19	4 22 34 53	11 7 24 47	5 26 15 42	5 9 39 6	8 14 57 56	9 49	8 51	20 34	9 3	28
29	4 11 33 29	11 28 35 58	5 24 51 6	4 21 51 39	11 7 18 25	5 27 9 10	5 9 45 54	8 14 54 46	9 28	13 24	21 6	9 59	29
30	4 12 31 27	0 10 47 40	5 25 29 57	4 21 3 55	11 7 11 54	5 28 2 4	5 9 52 44	8 14 51 35	9 7	17 28	21 43	10 55	30
31	4 13 29 26	0 23 10 53	5 26 8 53	4 20 12 23	11 7 5 17	5 28 54 24	5 9 59 36	8 14 48 24	8 45	20 52	22 24	11 54	31
सितं	4 14 27 28	1 5 49 17	5 26 47 53	4 19 17 52	11 6 58 32	5 29 46 6	5 10 6 30	8 14 45 13	8 24	23 20	23 12	12 53	सितं
2	4 15 25 31	1 18 46 42	5 27 26 58	4 18 21 23	11 6 51 41	6 0 37 11	5 10 13 26	8 14 42 3	8 2	24 39	— —	13 51	2
3	4 16 23 37	2 2 6 47	5 28 6 7	4 17 24 2	11 6 44 42	6 1 27 37	5 10 20 24	8 14 38 52	7 40	24 37	0 8	14 47	3
4	4 17 21 44	2 15 52 34	5 28 45 20	4 16 27 0	11 6 37 38	6 2 17 22	5 10 27 24	8 14 35 41	7 18	23 5	1 10	15 39	4
5	4 18 19 53	3 0 5 20	5 29 24 38	4 15 31 34	11 6 30 27	6 3 6 25	5 10 34 26	8 14 32 30	+6 56	20 4	2 17	16 25	5
6	4 19 18 5	3 14 44 00	6 0 4 1	4 14 38 59	11 6 23 11	6 3 54 45	5 10 41 29	8 14 29 20	+6 34	15 43	3 27	17 8	6
7	4 20 16 18	3 29 44 17	6 0 43 28	4 13 50 29	11 6 15 49	6 4 42 19	5 10 48 34	8 14 26 9	6 11	10 17	4 38	17 48	7
8	4 21 14 33	4 14 58 27	6 1 22 59	4 13 7 13	11 6 8 22	6 5 29 7	5 10 55 40	8 14 22 58	5 49	+4 11	5 49	18 25	8
9	4 22 12 50	5 0 16 12	6 2 2 35	4 12 30 15	11 6 0 50	6 6 15 5	5 11 2 48	8 14 19 47	5 26	-2 12	6 58	19 2	9
10	4 23 11 8	5 15 26 18	6 2 42 15	4 12 0 30	11 5 53 14	6 7 0 13	5 11 9 57	8 14 16 37	5 3	-8 22	8 8	19 40	10
11	4 24 9 29	6 0 18 27	6 3 21 59	4 11 38 45	11 5 45 34	6 7 44 27	5 11 17 8	8 14 13 26	4 41	-13 57	9 18	20 21	11
12	4 25 7 51	6 14 45 16	6 4 1 48	4 11 25 32	11 5 37 50	6 8 27 46	5 11 24 20	8 14 10 15	4 18	-18 34	10 26	21 5	12
13	4 26 6 14	6 28 42 53	6 4 41 40	4 11 21 17	11 5 30 3	6 9 10 7	5 11 31 33	8 14 7 4	3 55	-21 59	11 32	21 53	13
14	4 27 4 39	7 12 10 52	6 5 21 37	4 11 26 15	11 5 22 13	6 9 51 27	5 11 38 47	8 14 3 54	3 32	-24 3	12 33	22 45	14
15	4 28 3 6	7 25 11 32	6 6 1 39	4 11 40 30	11 5 14 20	6 10 31 45	5 11 46 3	8 14 0 43	3 9	-24 43	13 29	23 40	15
16	4 29 1 34	8 7 48 49	6 6 41 44	4 12 4 00	11 5 6 25	6 11 10 57	5 11 53 19	8 13 57 32	2 46	-24 4	14 18	— —	16
17	5 0 0 3	8 20 7 31	6 7 21 53	4 12 36 32	11 4 58 28	6 11 49 1	5 12 0 37	8 13 54 21	2 23	-22 14	15 1	0 36	17
18	5 0 58 35	9 2 12 39	6 8 2 7	4 13 17 47	11 4 50 30	6 12 25 54	5 12 7 55	8 13 51 11	2 00	-19 26	15 39	1 34	18
19	5 1 57 8	9 14 8 38	6 8 42 24	4 14 7 21	11 4 42 30	6 13 1 34	5 12 15 14	8 13 48 00	1 36	-15 51	16 13	2 29	19
20	5 2 55 43	9 26 0 26	6 9 22 46	4 15 4 45	11 4 34 30	6 13 35 56	5 12 22 34	8 13 44 49	1 13	-11 40	16 43	3 25	20
21	5 3 54 20	10 7 50 36	6 10 3 12	4 16 9 25	11 4 26 29	6 14 8 59	5 12 29 54	8 13 41 38	0 50	-7 04	17 12	4 18	21
22	5 4 52 58	10 19 42 1	6 10 43 41	4 17 20 45	11 4 18 28	6 14 40 39	5 12 37 15	8 13 38 28	0 26	-2 13	17 40	5 12	22
23	5 5 51 38	11 1 36 44	6 11 24 15	4 18 38 8	11 4 10 27	6 15 10 52	5 12 44 37	8 13 35 17	+0 3	+2 44	18 8	6 4	23
24	5 6 50 21	11 13 36 10	6 12 4 53	4 20 0 55	11 4 2 27	6 15 39 36	5 12 52 00	8 13 32 6	-0 20	+7 36	18 38	6 59	24
25	5 7 49 5	11 25 41 25	6 12 45 35	4 21 28 27	11 3 54 28	6 16 6 48	5 12 59 22	8 13 28 55	-0 44	12 13	19 8	7 54	25
26	5 8 47 51	0 7 53 34	6 13 26 21	4 23 0 6	11 3 46 30	6 16 32 23	5 13 6 45	8 13 25 45	-1 7	16 24	19 45	8 50	26
27	5 9 46 39	0 20 14 2	6 14 7 12	4 24 35 18	11 3 38 34	6 16 56 18	5 13 14 9	8 13 22 34	-1 30	19 56	20 24	9 47	27
28	5 10 45 30	1 2 44 30	6 14 48 6	4 26 13 29	11 3 30 40	6 17 18 31	5 13 21 32	8 13 19 23	-1 54	22 36	21 10	10 46	28
29	5 11 44 23	1 15 27 20	6 15 29 5	4 27 54 5	11 3 22 48	6 17 38 56	5 13 28 56	8 13 16 12	-2 17	24 11	22 2	11 44	29
30	5 12 43 18	1 28 25 21	6 16 10 8	4 29 36 41	11 3 14 59	6 17 57 31	5 13 36 21	8 13 13 2	-2 40	24 30	23 00	12 39	30

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (1 अक्तूबर से 10 नवंबर 2010 ई. तक)

1 अक्तू., 2010 ई. को अयनांश 24°/00'/43''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	अक्तूबर
अक्तू	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
अक्तू	5 13 42 15	2 11 41 35	6 16 51 15	5 1 20 50	11 3 7 13	6 18 14 12	5 13 43 44	8 13 9 51	-3 4	23 27	— —	13 31	अक्तू
2	5 14 41 15	2 25 19 00	6 17 32 26	5 3 6 10	11 2 59 30	6 18 28 57	5 13 51 9	8 13 6 40	-3 27	21 00	0 4	14 18	2
3	5 15 40 17	3 9 19 31	6 18 13 42	5 4 52 21	11 2 51 51	6 18 41 40	5 13 58 33	8 13 3 29	-3 50	17 15	1 8	15 1	3
4	5 16 39 21	3 23 43 21	6 18 55 2	5 6 39 7	11 2 44 17	6 18 52 20	5 14 5 57	8 13 0 19	-4 13	12 24	2 17	15 40	4
5	5 17 38 28	4 8 28 12	6 19 36 26	5 8 26 12	11 2 36 46	6 19 0 52	5 14 13 21	8 12 57 8	-4 36	6 44	3 25	16 17	5
6	5 18 37 36	4 23 28 33	6 20 17 54	5 10 13 25	11 2 29 21	6 19 7 13	5 14 20 45	8 12 53 58	-5 00	+0 36	4 35	16 55	6
7	5 19 36 47	5 8 36 3	6 20 59 26	5 12 0 35	11 2 22 0	6 19 11 19	5 14 28 8	8 12 50 47	-5 23	-5 37	5 43	17 32	7
8	5 20 36 00	5 23 40 28	6 21 41 3	5 13 47 33	11 2 14 46	6 19 13 9	5 14 35 31	8 12 47 36	-5 46	-11 28	6 53	18 11	8
9	5 21 35 15	6 8 31 40	6 22 22 44	5 15 34 13	11 2 7 37	6 19 12 40	5 14 42 54	8 12 44 25	-6 8	-16 34	8 04	18 55	9
10	5 22 34 32	6 23 1 8	6 23 4 29	5 17 20 27	11 2 0 35	6 19 9 50	5 14 50 16	8 12 41 14	-6 31	-20 34	9 12	19 42	10
11	5 23 33 50	7 7 3 30	6 23 46 18	5 19 6 15	11 1 53 39	6 19 4 35	5 14 57 37	8 12 38 3	-6 54	-23 12	10 18	20 34	11
12	5 24 33 11	7 20 36 49	6 24 28 11	5 20 51 29	11 1 46 50	6 18 56 56	5 15 4 58	8 12 34 53	-7 17	-24 23	11 18	21 30	12
13	5 25 32 34	8 3 42 7	6 25 10 8	5 22 36 9	11 1 40 8	6 18 46 53	5 15 12 18	8 12 31 42	-7 39	-24 9	12 11	22 27	13
14	5 26 31 58	8 16 22 40	6 25 52 9	5 24 20 12	11 1 33 33	6 18 34 24	5 15 19 37	8 12 28 31	-8 1	-22 39	12 57	23 26	14
15	5 27 31 25	8 28 42 56	6 26 34 13	5 26 3 37	11 1 27 7	6 18 19 31	5 15 26 55	8 12 25 20	-8 24	-20 5	13 37	— —	15
16	5 28 30 53	9 10 48 17	6 27 16 22	5 27 46 23	11 1 20 48	6 18 2 16	5 15 34 13	8 12 22 9	-8 46	-16 41	14 13	0 22	16
17	5 29 30 22	9 22 43 58	6 27 58 34	5 29 28 29	11 1 14 38	6 17 42 42	5 15 41 29	8 12 18 59	-9 8	-12 40	14 44	1 17	17
18	6 0 29 54	10 4 34 50	6 28 40 51	6 1 9 56	11 1 8 36	6 17 20 54	5 15 48 44	8 12 15 48	-9 30	-8 12	15 14	2 12	18
19	6 1 29 27	10 16 25 22	6 29 23 11	6 2 50 44	11 1 2 43	6 16 56 55	5 15 55 58	8 12 12 37	-9 52	-3 26	15 42	3 6	19
20	6 2 29 2	10 28 19 2	7 0 5 35	6 4 30 53	11 0 56 59	6 16 30 54	5 16 3 11	8 12 9 26	-10 13	+1 27	16 11	3 58	20
21	6 3 28 39	11 10 18 41	7 0 48 3	6 6 10 24	11 0 51 24	6 16 2 57	5 16 10 23	8 12 6 15	-10 35	6 20	16 39	4 52	21
22	6 4 28 18	11 22 26 25	7 1 30 35	6 7 49 17	11 0 45 59	6 15 33 13	5 16 17 33	8 12 3 4	-10 56	11 1	17 11	5 47	22
23	6 5 27 58	0 4 42 26	7 2 13 11	6 9 27 34	11 0 40 43	6 15 1 53	5 16 24 42	8 11 59 54	-11 17	15 19	17 45	6 43	23
24	6 6 27 42	0 17 8 24	7 2 55 50	6 11 5 15	11 0 35 37	6 14 29 6	5 16 31 49	8 11 56 43	-11 38	19 2	18 25	7 41	24
25	6 7 27 26	0 29 44 20	7 3 38 34	6 12 42 21	11 0 30 41	6 13 55 6	5 16 38 55	8 11 53 32	-11 59	21 55	19 8	8 40	25
26	6 8 27 12	1 12 30 33	7 4 21 21	6 14 18 54	11 0 25 56	6 13 20 6	5 16 46 00	8 11 50 21	-12 20	23 45	19 59	9 39	26
27	6 9 27 1	1 25 27 45	7 5 4 12	6 15 54 54	11 0 21 20	6 12 44 20	5 16 53 2	8 11 47 10	-12 40	24 20	20 54	10 35	27
28	6 10 26 52	2 8 37 00	7 5 47 7	6 17 30 23	11 0 16 56	6 12 8 1	5 17 0 3	8 11 43 59	-13 00	23 34	21 56	11 27	28
29	6 11 26 46	2 21 59 41	7 6 30 6	6 19 5 20	11 0 12 42	6 11 31 25	5 17 7 3	8 11 40 48	-13 20	21 28	23 1	12 15	29
30	6 12 26 41	3 5 37 16	7 7 13 9	6 20 39 49	11 0 8 38	6 10 54 48	5 17 14 00	8 11 37 37	-13 40	18 6	— —	12 58	30
31	6 13 26 39	3 19 31 5	7 7 56 16	6 22 13 49	11 0 4 46	6 10 18 23	5 17 20 55	8 11 34 27	-14 00	13 40	0 5	13 37	31
नवं.	6 14 26 38	4 3 41 23	7 8 39 27	6 23 47 21	11 0 1 5	6 9 42 27	5 17 27 48	8 11 31 16	-14 19	8 26	1 12	14 14	नवं.
2	6 15 26 40	4 18 6 50	7 9 22 42	6 25 20 26	10 29 57 36	6 9 7 12	5 17 34 40	8 11 28 5	-14 38	+2 39	2 18	14 50	2
3	6 16 26 45	5 2 44 6	7 10 6 1	6 26 53 5	10 29 54 18	6 8 32 54	5 17 41 29	8 11 24 55	-14 57	-3 20	3 24	15 26	3
4	6 17 26 51	5 17 27 40	7 10 49 23	6 28 25 19	10 29 51 11	6 7 59 45	5 17 48 16	8 11 21 44	-15 16	-9 11	4 32	16 4	4
5	6 18 26 59	6 2 10 17	7 11 32 50	6 29 57 8	10 29 48 17	6 7 27 58	5 17 55 00	8 11 18 33	-15 35	-14 30	5 41	16 44	5
6	6 19 27 9	6 16 44 9	7 12 16 21	7 1 28 32	10 29 45 34	6 6 57 43	5 18 1 43	8 11 15 22	-15 53	-18 55	6 49	17 30	6
7	6 20 27 21	7 1 2 00	7 12 59 55	7 2 59 31	10 29 43 3	6 6 29 11	5 18 8 22	8 11 12 12	-16 11	-22 8	7 57	18 20	7
8	6 21 27 35	7 14 58 20	7 13 43 33	7 4 30 7	10 29 40 44	6 6 2 31	5 18 15 00	8 11 9 1	-16 28	-23 55	9 00	19 15	8
9	6 22 27 50	7 28 30 12	7 14 27 14	7 6 0 18	10 29 38 38	6 5 37 50	5 18 21 34	8 11 5 50	-16 46	-24 13	9 58	20 13	9
10	6 23 28 7	8 11 37 6	7 15 11 00	7 7 30 5	10 29 36 44	6 5 15 17	5 18 28 6	8 11 2 39	-17 3	-23 8	10 48	21 12	10

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(11 नवंबर से 20 दिसंबर 2010 ई. तक)* 1 नवंबर, 2010 ई. अयनांश = 24°/00′/46″

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	तारीख
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
11	6 24 28 26	8 24 20 45	7 15 54 49	7 8 59 26	10 29 35 3	6 4 54 57	5 18 34 36	8 10 59 28	-17 20	-20 53	11 32	22 12	11
12	6 25 28 46	9 6 44 29	7 16 38 41	7 10 28 22	10 29 33 33	6 4 36 55	5 18 41 2	8 10 56 18	17 36	17 41	12 10	23 8	12
13	6 26 29 7	9 18 52 41	7 17 22 37	7 11 56 50	10 29 32 16	6 4 21 14	5 18 47 25	8 10 53 7	-17 52	-13 48	12 43	— —	13
14	6 27 29 30	10 0 50 20	7 18 6 37	7 13 24 51	10 29 31 11	6 4 7 59	5 18 53 46	8 10 49 56	-18 8	- 9 26	13 14	0 4	14
15	6 28 29 54	10 12 42 35	7 18 50 40	7 14 52 22	10 29 30 18	6 3 57 12	5 19 0 4	8 10 46 45	-18 24	- 4 46	13 43	0 57	15
16	6 29 30 19	10 24 34 20	7 19 34 47	7 16 19 21	10 29 29 38	6 3 48 52	5 19 6 18	8 10 43 34	-18 39	+0 5	14 11	1 50	16
17	7 0 30 46	11 6 30 2	7 20 18 57	7 17 45 45	10 29 29 11	6 3 42 59	5 19 12 29	8 10 40 23	-18 54	4 56	14 39	2 43	17
18	7 1 31 14	11 18 33 28	7 21 3 10	7 19 11 32	10 29 28 56	6 3 39 36	5 19 18 38	8 10 37 12	-19 9	9 39	15 10	3 37	18
19	7 2 31 44	0 0 47 36	7 21 47 27	7 20 36 37	10 29 28 53	6 3 38 39	5 19 24 42	8 10 34 2	-19 23	14 4	15 43	4 34	19
20	7 3 32 14	0 13 14 26	7 22 31 47	7 22 0 57	10 29 29 3	6 3 40 8	5 19 30 44	8 10 30 51	-19 37	17 59	16 21	5 31	20
21	7 4 32 47	0 25 55 00	7 23 16 11	7 23 24 26	10 29 29 25	6 3 44 00	5 19 36 42	8 10 27 40	-19 50	21 8	17 5	6 30	21
22	7 5 33 21	1 8 49 33	7 24 0 38	7 24 46 58	10 29 30 00	6 3 50 14	5 19 42 37	8 10 24 29	-20 3	23 17	17 53	7 30	22
23	7 6 33 56	1 21 57 28	7 24 45 8	7 26 8 25	10 29 30 47	6 3 58 47	5 19 48 27	8 10 21 19	-20 16	24 13	18 49	8 28	23
24	7 7 34 33	2 5 17 53	7 25 29 42	7 27 28 40	10 29 31 47	6 4 9 35	5 19 54 15	8 10 18 8	-20 29	23 46	19 49	9 23	24
25	7 8 35 11	2 18 49 39	7 26 14 19	7 28 47 32	10 29 32 58	6 4 22 37	5 19 59 59	8 10 14 57	-20 41	21 55	20 53	10 11	25
26	7 9 35 51	3 2 31 40	7 26 59 00	8 0 4 50	10 29 34 22	6 4 37 45	5 20 5 39	8 10 11 46	-20 52	18 47	21 59	10 57	26
27	7 10 36 33	3 16 22 58	7 27 43 44	8 1 20 21	10 29 35 58	6 4 55 1	5 20 11 15	8 10 8 36	-21 4	14 34	23 5	11 38	27
28	7 11 37 16	4 0 22 42	7 28 28 32	8 2 33 49	10 29 37 47	6 5 14 17	5 20 16 47	8 10 5 25	-21 15	9 32	— —	12 15	28
29	7 12 38 2	4 14 29 41	7 29 13 23	8 3 44 56	10 29 39 47	6 5 35 30	5 20 22 16	8 10 2 14	-21 25	+3 58	0 9	12 49	29
30	7 13 38 48	4 28 42 22	7 29 58 17	8 4 53 23	10 29 42 00	6 5 58 37	5 20 27 40	8 9 59 3	-21 35	- 1 50	1 14	13 25	30
दिसं.	7 14 39 35	5 12 58 37	8 0 43 15	8 5 58 45	10 29 44 25	6 6 23 34	5 20 33 1	8 9 55 53	-21 45	- 7 34	2 19	14 00	दिसं.
2	7 15 40 24	5 27 15 12	8 1 28 16	8 7 0 36	10 29 47 1	6 6 50 16	5 20 38 17	8 9 52 42	-21 54	-12 54	3 24	14 39	2
3	7 16 41 15	6 11 28 17	8 2 13 20	8 7 58 23	10 29 49 50	6 7 18 41	5 20 43 29	8 9 49 31	-22 3	-17 30	4 32	15 21	3
4	7 17 42 7	6 25 33 34	8 2 58 28	8 8 51 36	10 29 52 51	6 7 48 42	5 20 48 36	8 9 46 20	-22 11	-21 5	5 38	16 9	4
5	7 18 43 00	7 9 26 46	8 3 43 39	8 9 39 34	10 29 56 4	6 8 20 18	5 20 53 40	8 9 43 10	-22 19	-23 22	6 43	17 00	5
6	7 19 43 55	7 23 4 16	8 4 28 54	8 10 21 35	10 29 59 29	6 8 53 24	5 20 58 38	8 9 39 59	-22 27	-24 13	7 43	17 57	6
7	7 20 44 50	8 6 23 37	8 5 14 12	8 10 56 52	11 0 3 5	6 9 27 58	5 21 3 33	8 9 36 48	-22 34	-23 39	8 37	18 57	7
8	7 21 45 47	8 19 23 43	8 5 59 32	8 11 24 37	11 0 6 53	6 10 3 54	5 21 8 22	8 9 33 37	-22 41	-21 47	9 25	19 57	8
9	7 22 46 44	9 2 4 53	8 6 44 55	8 11 43 57	11 0 10 53	6 10 41 12	5 21 13 7	8 9 30 27	-22 47	-18 53	10 5	20 55	9
10	7 23 47 42	9 14 28 55	8 7 30 22	8 11 54 00	11 0 15 4	6 11 19 47	5 21 17 47	8 9 27 16	-22 53	-15 10	10 42	21 53	10
11	7 24 48 41	9 26 38 46	8 8 15 51	8 11 53 59	11 0 19 27	6 11 59 36	5 21 22 23	8 9 24 5	-22 58	-10 53	11 13	22 47	11
12	7 25 49 40	10 8 38 15	8 9 1 23	8 11 43 12	11 0 24 1	6 12 40 36	5 21 26 53	8 9 20 54	-23 3	- 6 16	11 43	23 41	12
13	7 26 50 40	10 20 31 43	8 9 46 57	8 11 21 7	11 0 28 46	6 13 22 45	5 21 31 19	8 9 17 44	-23 7	- 1 28	12 11	— —	13
14	7 27 51 40	11 2 23 54	8 10 32 35	8 10 47 29	11 0 33 42	6 14 6 0	5 21 35 40	8 9 14 33	-23 11	+3 23	12 40	0 33	14
15	7 28 52 41	11 14 19 40	8 11 18 15	8 10 2 28	11 0 38 50	6 14 50 19	5 21 39 55	8 9 11 22	-23 15	8 8	13 9	1 27	15
16	7 29 53 43	11 26 23 31	8 12 3 58	8 9 6 39	11 0 44 8	6 15 35 39	5 21 44 6	8 9 8 11	-23 18	12 37	13 40	2 21	16
17	8 0 54 45	0 8 39 38	8 12 49 45	8 8 1 8	11 0 49 37	6 16 21 58	5 21 48 12	8 9 5 0	-23 20	16 42	14 16	3 18	17
18	8 1 55 47	0 21 11 27	8 13 35 34	8 6 47 43	11 0 55 17	6 17 9 14	5 21 52 12	8 9 1 50	-23 23	20 7	14 57	4 15	18
19	8 2 56 50	1 4 1 22	8 14 21 25	8 5 28 32	11 1 1 7	6 17 57 24	5 21 56 7	8 8 58 39	-23 24	22 39	15 43	5 16	19
20	8 3 57 54	1 17 10 34	8 15 7 19	8 4 6 10	11 1 7 7	6 18 46 27	5 21 59 56	8 8 55 28	-23 25	24 3	16 36	6 15	20

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(21 दिसंबर(10) से 30 जनवरी, सं. 2011 ई. तक)* 1 दिसं. 2010 ई. को अयनांश

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (21 दिसंबर (10) से 30 जनवरी सन् 2011 ई. तक) 1 दिसं., 2010 ई. को अयनांश 24°/00'/51" 1 जन., 2011 ई. को अयनांश 24°/00'/56"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	दिसंबर
दिसं	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
21	8 4 58 58	2 0 38 52	8 15 53 15	8 2 43 25	11 1 13 18	6 19 36 22	5 22 3 40	8 8 52 17	-23 26	24 4	17 36	7 12	21
22	8 6 0 2	2 14 24 35	8 16 39 14	8 1 23 5	11 1 19 40	6 20 27 5	5 22 7 19	8 8 49 7	-23 26	22 39	18 41	8 6	22
23	8 7 1 6	2 28 24 52	8 17 25 16	8 0 7 40	11 1 26 11	6 21 18 35	5 22 10 53	8 8 45 56	-23 26	19 49	19 48	8 53	23
24	8 8 2 12	3 12 35 55	8 18 11 20	7 28 59 22	11 1 32 52	6 22 10 51	5 22 14 21	8 8 42 45	-23 25	15 46	20 56	9 37	24
25	8 9 3 18	3 26 53 28	8 18 57 27	7 27 59 49	11 1 39 43	6 23 3 50	5 22 17 44	8 8 39 34	-23 24	10 47	22 2	10 15	25
26	8 10 4 24	4 11 13 18	8 19 43 36	7 27 10 11	11 1 46 45	6 23 57 32	5 22 21 00	8 8 36 24	-23 22	+5 14	23 7	10 51	26
27	8 11 5 32	4 25 31 36	8 20 29 48	7 26 31 2	11 1 53 56	6 24 51 54	5 22 24 12	8 8 33 13	-23 20	-0 35	——	11 27	27
28	8 12 6 40	5 9 45 12	8 21 16 3	7 26 2 37	11 2 1 16	6 25 46 55	5 22 27 18	8 8 30 2	-23 18	-6 21	0 11	12 1	28
29	8 13 7 49	5 23 51 46	8 22 2 20	7 25 44 44	11 2 8 46	6 26 42 33	5 22 30 17	8 8 26 51	-23 15	-11 43	1 17	12 38	29
30	8 14 8 58	6 7 49 31	8 22 48 39	7 25 36 59	11 2 16 25	6 27 38 47	5 22 33 11	8 8 23 40	-23 11	-16 26	2 22	13 18	30
31	8 15 10 7	6 21 37 10	8 23 35 1	7 25 38 45	11 2 24 14	6 28 35 36	5 22 35 59	8 8 20 30	-23 7	-20 13	3 27	14 3	31
जन.	8 16 11 17	7 5 13 39	8 24 21 26	7 25 49 22	11 2 32 11	6 29 32 57	5 22 38 42	8 8 17 19	-23 3	-22 50	4 31	14 52	जन.
2	8 17 12 27	7 18 38 7	8 25 7 52	7 26 8 4	11 2 40 18	7 0 30 50	5 22 41 18	8 8 14 8	-22 58	-24 07	5 32	15 46	2
3	8 18 13 38	8 1 49 51	8 25 54 21	7 26 34 9	11 2 48 34	7 1 29 14	5 22 43 48	8 8 10 57	-22 52	-24 01	6 28	16 43	3
4	8 19 14 48	8 14 48 14	8 26 40 52	7 27 6 51	11 2 56 58	7 2 28 7	5 22 46 12	8 8 7 47	-22 46	-22 35	7 17	17 43	4
5	8 20 15 59	8 27 32 58	8 27 27 26	7 27 45 30	11 3 5 32	7 3 27 28	5 22 48 30	8 8 4 36	-22 40	-20 02	8 00	18 43	5
6	8 21 17 9	9 10 4 17	8 28 14 1	7 28 29 30	11 3 14 14	7 4 27 16	5 22 50 42	8 8 1 25	-22 33	-16 34	8 39	19 40	6
7	8 22 18 19	9 22 22 57	8 29 0 39	7 29 18 16	11 3 23 4	7 5 27 31	5 22 52 48	8 7 58 14	-22 26	-12 27	9 12	20 36	7
8	8 23 19 29	10 4 30 38	8 29 47 18	8 0 11 18	11 3 32 3	7 6 28 10	5 22 54 48	8 7 55 4	-22 19	-7 54	9 43	21 31	8
9	8 24 20 39	10 16 29 36	9 0 33 59	8 1 8 7	11 3 41 11	7 7 29 13	5 22 56 41	8 7 51 53	-22 10	-3 07	10 11	22 24	9
10	8 25 21 48	10 28 22 59	9 1 20 43	8 2 8 18	11 3 50 26	7 8 30 40	5 22 58 28	8 7 48 42	-22 2	+1 44	10 40	23 17	10
11	8 26 22 57	11 10 14 30	9 2 7 28	8 3 11 31	11 3 59 49	7 9 32 29	5 23 0 9	8 7 45 31	-21 53	6 30	11 8	——	11
12	8 27 24 5	11 22 8 32	9 2 54 14	8 4 17 27	11 4 9 20	7 10 34 39	5 23 1 43	8 7 42 21	-21 44	11 04	11 39	0 10	12
13	8 28 25 13	0 4 9 44	9 3 41 3	8 5 25 47	11 4 18 59	7 11 37 11	5 23 3 11	8 7 39 10	-21 34	15 15	12 11	1 5	13
14	8 29 26 20	0 16 22 50	9 4 27 53	8 6 36 18	11 4 28 46	7 12 40 3	5 23 4 33	8 7 35 59	-21 24	18 53	12 49	2 1	14
15	9 0 27 27	0 28 52 31	9 5 14 44	8 7 48 47	11 4 38 39	7 13 43 15	5 23 5 49	8 7 32 48	-21 13	21 45	13 31	2 59	15
16	9 1 28 32	1 11 42 46	9 6 1 38	8 9 3 2	11 4 48 41	7 14 46 45	5 23 6 58	8 7 29 38	-21 2	23 36	14 21	3 58	16
17	9 2 29 38	1 24 56 35	9 6 48 33	8 10 18 55	11 4 58 49	7 15 50 34	5 23 8 00	8 7 26 27	-20 51	24 13	15 18	4 56	17
18	9 3 30 42	2 8 35 16	9 7 35 29	8 11 36 16	11 5 9 5	7 16 54 41	5 23 8 56	8 7 23 16	-20 39	23 25	16 21	5 52	18
19	9 4 31 46	2 22 38 11	9 8 22 27	8 12 54 59	11 5 19 28	7 17 59 5	5 23 9 46	8 7 20 5	-20 27	21 09	17 27	6 42	19
20	9 5 32 49	3 7 2 11	9 9 9 26	8 14 14 56	11 5 29 57	7 19 3 47	5 23 10 30	8 7 16 55	-20 14	+17 30	18 37	7 29	20
21	9 6 33 52	3 21 41 48	9 9 56 26	8 15 36 3	11 5 40 34	7 20 8 44	5 23 11 6	8 7 13 44	-20 1	12 43	19 46	8 11	21
22	9 7 34 54	4 6 29 50	9 10 43 28	8 16 58 16	11 5 51 17	7 21 13 57	5 23 11 37	8 7 10 33	-19 48	7 09	20 55	8 50	22
23	9 8 35 55	4 21 18 22	9 11 30 32	8 18 21 29	11 6 2 6	7 22 19 26	5 23 12 1	8 7 7 22	-19 34	+1 12	22 2	9 26	23
24	9 9 36 56	5 5 59 51	9 12 17 37	8 19 45 40	11 6 13 3	7 23 25 9	5 23 12 19	8 7 4 12	-19 20	-4 46	23 9	10 3	24
25	9 10 37 57	5 20 28 20	9 13 4 43	8 21 10 45	11 6 24 5	7 24 31 7	5 23 12 30	8 7 1 2	-19 5	-10 24	——	10 40	25
26	9 11 38 57	6 4 39 58	9 13 51 51	8 22 36 42	11 6 35 14	7 25 37 19	5 23 12 35	8 6 57 51	-18 51	-15 21	0 15	11 19	26
27	9 12 39 56	6 18 33 4	9 14 39 00	8 24 3 29	11 6 46 28	7 26 43 44	5 23 12 33	8 6 54 40	-18 35	-19 23	1 20	12 2	27
28	9 13 40 55	7 2 7 47	9 15 26 10	8 25 31 5	11 6 57 50	7 27 50 22	5 23 12 25	8 6 51 29	-18 20	-22 16	2 25	12 49	28
29	9 14 41 55	7 15 25 12	9 16 13 22	8 26 59 28	11 7 9 17	7 28 57 13	5 23 12 11	8 6 48 19	-18 4	-23 52	3 26	13 41	29
30	9 15 42 52	7 28 27 14	9 17 0 35	8 28 28 37	11 7 20 50	8 0 4 15	5 23 11 50	8 6 45 8	-17 48	-24 07	4 22	14 36	30

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (31 जन. से 10 मार्च सन् 2011 ई. तक)

1 फरवरी, 2011 ई. को अयनांश 24°/1'/12"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टै. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	तारीख
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.	
31	9 16 43 50	8 11 15 48	9 17 47 49	8 29 58 31	11 7 32 29	8 1 11 27	5 23 11 23	8 6 41 57	-17 32	-17 32	5 13	15 34	31
फर.	9 17 44 46	8 23 52 40	9 18 35 4	9 1 29 10	11 7 44 13	8 2 18 52	5 23 10 48	8 6 38 46	-17 15	-20 52	5 58	16 33	फर.
2	9 18 45 41	9 6 19 10	9 19 22 18	9 3 0 33	11 7 56 3	8 3 26 26	5 23 10 8	8 6 35 36	-16 58	-17 42	6 37	17 31	2
3	9 19 46 35	9 18 36 31	9 20 9 35	9 4 32 41	11 8 7 59	8 4 34 11	5 23 9 21	8 6 32 25	-16 40	-13 49	7 12	18 28	3
4	9 20 47 29	10 0 45 37	9 20 56 53	9 6 5 33	11 8 19 00	8 5 42 6	5 23 8 28	8 6 29 14	-16 23	- 9 24	7 44	19 22	4
5	9 21 48 21	10 12 47 35	9 21 44 11	9 7 39 8	11 8 32 6	8 6 50 10	5 23 7 29	8 6 26 3	-16 5	- 4 42	8 13	20 16	5
6	9 22 49 12	10 24 43 45	9 22 31 30	9 9 13 29	11 8 44 18	8 7 58 23	5 23 6 23	8 6 22 53	-15 47	+0 08	8 42	21 8	6
7	9 23 50 49	11 6 36 2	9 23 18 50	9 10 48 34	11 8 56 34	8 9 6 45	5 23 5 11	8 6 19 42	-15 28	4 56	9 10	22 2	7
8	9 24 50 49	11 18 26 55	9 24 6 10	9 12 24 25	11 9 8 55	8 10 15 15	5 23 3 53	8 6 16 31	-15 9	9 33	9 40	22 56	8
9	9 25 51 36	0 0 19 40	9 24 53 31	9 14 1 2	11 9 21 21	8 11 23 54	5 23 2 28	8 6 13 20	-14 50	13 49	10 11	23 50	9
10	9 26 52 21	0 12 18 13	9 25 40 52	9 15 38 25	11 9 33 51	8 12 32 39	5 23 0 57	8 6 10 10	-14 31	17 35	10 46	——	10
11	9 27 53 5	0 24 27 5	9 26 28 13	9 17 16 36	11 9 46 26	8 13 41 33	5 22 59 20	8 6 6 59	-14 12	20 41	11 26	0 47	11
12	9 28 53 47	1 6 51 10	9 27 15 35	9 18 55 36	11 9 59 6	8 14 50 35	5 22 57 38	8 6 3 48	-13 52	22 53	12 10	1 44	12
13	9 29 54 27	1 19 35 22	9 28 2 57	9 20 35 25	11 10 11 50	8 15 59 44	5 22 55 50	8 6 0 37	-13 32	23 59	13 2	2 41	13
14	10 0 55 6	2 2 44 7	9 28 50 20	9 22 16 4	11 10 24 38	8 17 8 59	5 22 53 56	8 5 57 26	-13 12	23 49	14 00	3 36	14
15	10 1 55 43	2 16 20 40	9 29 37 43	9 23 57 34	11 10 37 30	8 18 18 22	5 22 51 56	8 5 54 16	-12 51	22 14	15 4	4 29	15
16	10 2 56 19	3 0 26 11	10 0 25 6	9 25 39 56	11 10 50 27	8 19 27 52	5 22 49 50	8 5 51 5	-12 31	19 15	16 12	5 17	16
17	10 3 56 52	3 14 59 10	10 1 12 29	9 27 23 11	11 11 3 27	8 20 37 28	5 22 47 37	8 5 47 54	-12 10	15 00	17 22	6 1	17
18	10 4 57 25	3 29 54 32	10 1 59 51	9 29 7 19	11 11 16 32	8 21 47 11	5 22 45 20	8 5 44 43	-11 49	9 44	18 32	6 42	18
19	10 5 57 55	4 15 4 6	10 2 47 14	10 0 52 21	11 11 29 40	8 22 57 00	5 22 42 58	8 5 41 33	-11 28	+3 48	19 42	7 20	19
20	10 6 58 24	5 0 17 26	10 3 34 38	10 2 38 18	11 11 42 51	8 24 6 55	5 22 40 29	8 5 38 22	-11 6	- 2 21	20 51	7 59	20
21	10 7 58 52	5 15 23 42	10 4 22 2	10 4 25 11	11 11 56 7	8 25 16 56	5 22 37 55	8 5 35 11	-10 45	- 8 20	22 00	8 36	21
22	10 8 59 19	6 0 13 39	10 5 9 25	10 6 12 59	11 12 9 25	8 26 27 3	5 22 35 16	8 5 32 00	-10 23	-13 43	23 9	9 16	22
23	10 9 59 44	6 14 40 51	10 5 56 49	10 8 1 42	11 12 22 48	8 27 37 16	5 22 32 32	8 5 28 49	-10 1	-18 10	——	10 00	23
24	10 11 0 7	6 28 42 20	10 6 44 12	10 9 51 20	11 12 36 14	8 28 47 35	5 22 29 43	8 5 25 39	- 9 39	-21 27	0 14	10 46	24
25	10 12 0 30	7 12 18 00	10 7 31 36	10 11 41 51	11 12 49 42	8 29 57 57	5 22 26 47	8 5 22 28	- 9 17	-23 24	1 19	11 38	25
26	10 13 0 51	7 25 30 1	10 8 19 00	10 13 33 15	11 13 3 15	9 1 8 26	5 22 23 48	8 5 19 17	- 8 55	-23 59	2 18	12 33	26
27	10 14 1 10	8 8 21 34	10 9 6 22	10 15 25 30	11 13 16 50	9 2 19 00	5 22 20 43	8 5 16 6	- 8 32	-23 15	3 10	13 30	27
28	10 15 1 28	8 20 56 35	10 9 53 45	10 17 18 32	11 13 30 28	9 3 29 39	5 22 17 34	8 5 12 55	- 8 10	-21 20	3 57	14 28	28
मार्च	10 16 1 45	9 3 18 36	10 10 41 8	10 19 12 19	11 13 44 10	9 4 40 22	5 22 14 20	8 5 9 45	- 7 47	-18 27	4 37	15 25	मार्च
2	10 17 2 0	9 15 30 47	10 11 28 31	10 21 6 44	11 13 57 54	9 5 51 9	5 22 11 1	8 5 6 34	- 7 24	-14 47	5 14	16 22	2
3	10 18 2 13	9 27 35 41	10 12 15 53	10 23 1 43	11 14 11 41	9 7 2 2	5 22 7 37	8 5 3 23	- 7 1	-10 35	5 46	17 16	3
4	10 19 2 25	10 9 35 16	10 13 3 13	10 24 57 8	11 14 25 29	9 8 12 55	5 22 4 8	8 5 0 12	- 6 38	- 6 00	6 16	18 10	4
5	10 20 2 35	10 21 31 00	10 13 50 34	10 26 52 50	11 14 39 22	9 9 23 54	5 22 0 36	8 4 57 2	- 6 15	- 1 14	6 45	19 3	5
6	10 21 2 43	11 3 24 2	10 14 37 55	10 28 48 37	11 14 53 16	9 10 34 57	5 21 56 59	8 4 53 51	- 5 52	+3 33	7 14	19 56	6
7	10 22 2 49	11 15 15 46	10 15 25 15	11 0 44 20	11 15 7 13	9 11 46 4	5 21 53 19	8 4 50 40	- 5 29	8 12	7 42	20 49	7
8	10 23 2 54	11 27 7 43	10 16 12 34	11 2 39 43	11 15 21 13	9 12 57 13	5 21 49 34	8 4 47 29	- 5 5	12 33	8 13	21 44	8
9	10 24 2 56	0 9 2 4	10 16 59 52	11 4 34 28	11 15 35 14	9 14 8 26	5 21 45 45	8 4 44 18	- 4 42	16 25	8 45	22 39	9
10	10 25 2 58	0 21 1 37	10 17 47 3	11 6 28 17	11 15 49 18	9 15 19 43	5 21 41 53	8 4 41 7	- 4 18	19 40	9 21	23 35	10

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (11 मार्च से 5 अप्रैल 2011 ई. तक) 1 अप्रै., 2011 ई. को अयनांश 24°/1'/8"

ता. मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	जालन्धर (भा. स्टै. टा.) चंद्रोदय घं. मिं.	चंद्रास्त घं. मिं.	मार्च
11	10 26 2 54	1 3 10 00	10 18 34 26	11 8 20 49	11 16 3 24	9 16 31 2	5 21 37 57	8 4 37 57	-3 55	22 05	10 6	— —	11
12	10 27 2 50	1 15 31 16	10 19 21 42	11 10 11 40	11 16 17 31	9 17 42 24	5 21 33 58	8 4 34 46	-3 31	22 31	10 54	0 31	12
13	10 28 2 44	1 28 10 17	10 20 8 56	11 12 0 24	11 16 31 41	9 18 53 50	5 21 29 56	8 4 31 35	-3 8	22 46	11 48	1 25	13
14	10 29 2 35	2 11 11 36	10 20 56 10	11 13 46 35	11 16 45 52	9 20 5 18	5 21 25 50	8 4 28 24	-2 44	22 45	12 47	2 17	14
15	11 0 2 24	2 24 39 26	10 21 43 21	11 15 29 42	11 17 0 5	9 21 16 47	5 21 21 41	8 4 25 14	-2 20	22 25	13 51	3 5	15
16	11 1 2 10	3 8 36 32	10 22 30 33	11 17 9 19	11 17 14 19	9 22 28 21	5 21 17 30	8 4 22 3	-1 57	16 50	14 57	3 51	16
17	11 2 1 55	3 23 3 10	10 23 17 43	11 18 44 54	11 17 28 35	9 23 39 57	5 21 13 15	8 4 18 52	-1 33	12 08	16 6	4 32	17
18	11 3 1 38	4 7 56 15	10 24 4 52	11 20 16 1	11 17 42 52	9 24 51 35	5 21 8 58	8 4 15 41	-1 9	6 35	17 16	5 12	18
19	11 4 1 18	4 23 8 49	10 24 51 59	11 21 42 4	11 17 57 11	9 26 3 17	5 21 4 39	8 4 12 31	-0 46	+0 33	18 25	5 49	19
20	11 5 0 57	5 8 30 48	10 25 39 5	11 23 2 43	11 18 11 31	9 27 16 00	5 21 0 17	8 4 9 20	-0 22	-5 34	19 36	6 28	20
21	11 6 0 33	5 23 50 11	10 26 26 11	11 24 17 30	11 18 25 52	9 28 26 47	5 20 55 53	8 4 6 9	+0 2	-11 20	20 48	7 8	21
22	11 7 0 7	6 8 55 39	10 27 13 14	11 25 26 2	11 18 40 14	9 29 38 36	5 20 51 27	8 4 2 58	0 26	-16 20	21 57	7 51	22
23	11 7 59 40	6 23 38 19	10 28 0 17	11 26 27 58	11 18 54 38	10 0 50 27	5 20 46 58	8 3 59 47	0 49	-20 11	23 5	8 39	23
24	11 8 59 11	7 7 53 1	10 28 47 19	11 27 22 59	11 19 9 2	10 2 2 21	5 20 42 29	8 3 56 37	1 13	-22 40	— —	9 30	24
25	11 9 58 40	7 21 38 12	10 29 34 19	11 28 10 51	11 19 23 28	10 3 14 18	5 20 37 57	8 3 53 26	1 37	-23 41	0 8	10 25	25
26	11 10 58 7	8 4 55 20	11 0 21 18	11 28 51 18	11 19 37 55	10 4 26 16	5 20 33 24	8 3 50 15	2 00	-23 18	1 4	11 23	26
27	11 11 57 33	8 17 47 47	11 1 8 16	11 29 24 16	11 19 52 22	10 5 38 16	5 20 28 49	8 3 47 4	2 24	-21 40	1 53	12 22	27
28	11 12 56 57	9 0 20 00	11 1 55 11	11 29 49 37	11 20 6 49	10 6 50 19	5 20 24 13	8 3 43 54	2 47	-19 00	2 36	13 20	28
29	11 13 56 19	9 12 36 34	11 2 42 5	0 0 7 22	11 20 21 18	10 8 2 24	5 20 19 37	8 3 40 43	3 11	-15 32	3 15	14 16	29
30	11 14 55 38	9 24 41 55	11 3 28 58	0 0 17 31	11 20 35 47	10 9 14 31	5 20 14 59	8 3 37 32	3 34	-11 29	3 48	15 12	30
31	11 15 54 58	10 6 39 50	11 4 15 50	0 0 20 12	11 20 50 17	10 10 26 39	5 20 10 20	8 3 34 21	3 57	-7 02	4 19	16 6	31
अप्रै.	11 16 54 15	10 18 33 26	11 5 2 40	0 0 15 40	11 21 4 47	10 11 38 49	5 20 5 41	8 3 31 10	4 21	-2 21	4 48	16 58	अप्रै.
2	11 17 53 29	11 0 25 10	11 5 49 27	0 0 4 6	11 21 19 18	10 12 51 1	5 20 1 1	8 3 27 59	4 44	+2 23	5 17	17 51	2
3	11 18 52 42	11 12 16 56	11 6 36 14	11 29 45 59	11 21 33 48	10 14 3 14	5 19 56 20	8 3 24 49	5 7	+7 02	5 45	18 44	3
4	11 19 51 53	11 24 10 9	11 7 22 58	11 29 21 48	11 21 48 20	10 15 15 29	5 19 51 40	8 3 21 38	5 30	11 25	6 16	19 39	4
5	11 20 51 1	0 6 6 7	11 8 9 41	11 28 52 7	11 22 2 51	10 16 27 45	5 19 47 00	8 3 18 27	5 53	+15 24	6 48	20 33	5

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रात: 5/30 बजे (भा. स्टै. टा.) वि. २०६७ (2010-11 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
13	11 02 19 22	10 03 07	8 11 16
16	11 02 29 35	10 03 14	8 11 18
19	11 02 39 52	10 03 20	8 11 20
22	11 02 50 12	10 03 26	8 11 21
25	11 03 00 25	10 03 31	8 11 23
28	11 03 10 36	10 03 37	8 11 24
31	11 03 20 42	10 03 43	8 11 24
अप्रै.	11 03 24 02	10 03 44	8 11 25
4	11 03 34 00	10 03 50	8 11 25
7	11 03 44 00	10 03 55	8 11 25
10	11 03 53 43	10 03 59	8 11 25
13	11 04 03 20	10 04 04	8 11 24
16	11 04 12 48	10 04 08	8 11 23
19	11 04 22 07	10 04 12	8 11 22
22	11 04 31 12	10 04 16	8 11 21
25	11 04 40 06	10 04 20	8 11 19
28	11 04 48 41	10 04 23	8 11 17
मई	11 04 57 07	10 04 26	8 11 15
4	11 05 05 12	10 04 29	8 11 13
7	11 05 13 05	10 04 32	8 11 10
10	11 05 20 41	10 04 34	8 11 08
13	11 05 28 02	10 04 36	8 11 05
16	11 05 35 00	10 04 38	8 11 01
19	11 05 41 36	10 04 39	8 10 58
22	11 05 47 48	10 04 40	8 10 54
25	11 05 53 47	10 04 41	8 10 51
28	11 05 59 18	10 04 41	8 10 47
31	11 06 04 32	10 04 42	8 10 43
जून	11 06 06 12	10 04 42	8 10 41
4	11 06 11 00	10 04 42	8 10 37
7	11 06 15 12	10 04 41	8 10 33
10	11 06 19 02	10 04 40	8 10 29
13	11 06 22 29	10 04 39	8 10 24
16	11 06 25 30	10 04 38	8 10 20

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
19	11 06 28 13	10 04 36	8 10 15
22	11 06 30 24	10 04 34	8 10 10
25	11 06 32 07	10 04 32	8 10 06
28	11 06 33 30	10 04 30	8 10 01
जुला.	11 06 34 25	10 04 27	8 09 57
4	11 06 34 48	10 04 24	8 09 52
7	11 06 34 47	10 04 21	8 09 47
10	11 06 34 24	10 04 18	8 09 43
13	11 06 33 35	10 04 15	8 09 39
16	11 06 32 17	10 04 11	8 09 34
19	11 06 30 36	10 04 07	8 09 30
22	11 06 28 31	10 04 03	8 09 26
25	11 06 26 00	10 03 59	8 09 22
28	11 06 23 06	10 03 54	8 09 18
31	11 06 19 47	10 03 50	8 09 15
अग.	11 06 18 36	10 03 48	8 09 14
4	11 06 14 47	10 03 44	8 09 10
7	11 06 10 36	10 03 39	8 09 07
10	11 06 06 05	10 03 34	8 09 04
13	11 06 01 12	10 03 29	8 09 01
16	11 05 56 06	10 03 25	8 08 59
19	11 05 50 36	10 03 20	8 08 56
22	11 05 45 00	10 03 15	8 08 54
25	11 05 39 00	10 03 10	8 08 52
28	11 05 32 42	10 03 05	8 08 51
31	11 05 26 18	10 03 00	8 08 49
सितं.	11 05 24 06	10 02 59	8 08 49
4	11 05 17 24	10 02 54	8 08 48
7	11 05 10 30	10 02 49	8 08 47
10	11 05 03 35	10 02 44	8 08 47
13	11 04 56 30	10 02 40	8 08 47
16	11 04 49 24	10 02 36	8 08 47
19	11 04 42 06	10 02 31	8 08 47
22	11 04 35 00	10 02 27	8 08 48

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
25	11 04 27 50	10 02 24	8 08 49
28	11 04 20 30	10 02 20	8 08 50
अक्तू.	11 04 13 24	10 02 16	8 08 51
4	11 04 06 18	10 02 13	8 08 53
7	11 03 59 25	10 02 10	8 08 55
10	11 03 52 36	10 02 07	8 08 58
13	11 03 46 00	10 02 05	8 09 00
16	11 03 39 30	10 02 02	8 09 03
19	11 03 33 20	10 02 00	8 09 06
22	11 03 27 18	10 01 59	8 09 10
25	11 03 21 30	10 01 57	8 09 13
28	11 03 16 05	10 01 56	8 09 17
31	11 03 11 00	10 01 55	8 09 21
नवं.	11 03 09 18	10 01 55	8 09 23
4	11 03 04 38	10 01 54	8 09 27
7	11 03 00 18	10 01 54	8 09 32
10	11 02 56 16	10 01 54	8 09 37
13	11 02 52 42	10 01 55	8 09 42
16	11 02 49 36	10 01 55	8 09 47
19	11 02 46 48	10 01 56	8 09 52
22	11 02 44 24	10 01 58	8 09 58
25	11 02 42 30	10 01 59	8 10 04
28	11 02 41 06	10 02 01	8 10 09
दिसं.	11 02 40 00	10 02 04	8 10 15
4	11 02 39 31	10 02 06	8 10 21
7	11 02 39 24	10 02 09	8 10 28
10	11 02 39 42	10 02 12	8 10 34
13	11 02 40 36	10 02 16	8 10 40
16	11 02 42 00	10 02 19	8 10 47
19	11 02 43 36	10 02 23	8 10 53
22	11 02 45 48	10 02 27	8 10 59
25	11 02 48 30	10 02 32	8 11 06
28	11 02 51 36	10 02 37	8 11 12
31	11 02 55 11	10 02 41	8 11 19

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
जन.	11 02 56 30	10 02 43	8 11 21
4	11 03 00 36	10 02 48	8 11 27
7	11 03 05 12	10 02 54	8 11 34
10	11 03 10 11	10 02 59	8 11 40
13	11 03 15 36	10 03 05	8 11 47
16	11 03 21 24	10 03 11	8 11 53
19	11 03 27 36	10 03 17	8 11 59
22	11 03 34 06	10 03 23	8 12 05
25	11 03 41 01	10 03 30	8 12 11
28	11 03 48 12	10 03 36	8 12 16
31	11 03 55 48	10 03 43	8 12 22
फर.	11 03 58 24	10 03 45	8 12 24
4	11 04 06 18	10 03 52	8 12 29
7	11 04 14 29	10 03 58	8 12 34
10	11 04 23 00	10 04 05	8 12 39
13	11 04 31 48	10 04 12	8 12 44
16	11 04 40 47	10 04 19	8 12 49
19	11 04 50 01	10 04 25	8 12 53
22	11 04 59 17	10 04 32	8 12 57
25	11 05 09 00	10 04 39	8 13 01
28	11 05 18 36	10 04 46	8 13 05
मार्च	11 05 22 00	10 04 48	8 13 06
4	11 05 31 48	10 04 55	8 13 10
7	11 05 41 46	10 05 01	8 13 13
10	11 05 52 00	10 05 08	8 13 16
13	11 06 02 06	10 05 14	8 13 18
16	11 06 12 18	10 05 21	7 13 21
19	11 06 22 36	10 05 27	8 13 23
22	11 06 32 48	10 05 33	8 13 24
25	11 06 43 06	10 05 39	8 13 26
28	11 06 53 24	10 05 45	8 13 27
31	11 07 03 36	10 05 51	8 13 28
अप्रै.	11 07 07 00	10 05 52	8 13 28
4	11 07 17 06	10 05 58	8 13 29
7	11 07 27 12	10 06 03	8 13 29

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त—सं. २०६७ वि. (सन् 2010–11 ई.)

समय शुद्धि विचार

गुरु अस्त–16 फर. 2010 ई. से 20 मार्च 2010 ई. तक गुरु अस्त रहेगा।

चैत्र–14 मार्च, 2010 ई. से 13 अप्रै., 2010 ई. तक चैत्र मास अर्थात् सूर्य मीनस्थ रहेगा जोकि मंगलकृत्यों के लिए वर्जित है।

वैशाख अधिक मास–15 अप्रै. से 14 मई (2010 ई.) तक वैशाख अधिक मास होने के कारण इस समयावधि में विवाहादि शुभकृत्य नहीं होंगे। (देखें पृष्ठ 86) अधिक मास में विवाहादि शुभ कार्य गुरु-शुक्रास्त की भांति शास्त्रकारों ने वर्जित कहें हैं—

गृह प्रवेश चूडामौंजी बंध विवाहास्तीर्थादि यात्रा वास्तु कर्म तान्यधिवर्ज्यानि॥ (धर्मसिन्धु)

त्रयोदश (तेरह) दिन का पक्ष–(14 मई से 27 मई)

तेरह दिन के पक्ष में शास्त्रकारों ने यद्यपि विवाह मुण्डन आदि मुहूर्त्तों का निषेध कहा गया है, तथापि कश्यप मुनि के मतानुसार यदि विवाह लग्न में गुरू, शुक्र या बुध इनमें एक भी केन्द्र या त्रिकोण स्थानों में हो, तो तिथ्यादि सब दोष उसी प्रकार समाप्त हो जाते है, जैसे कि भगवान् विष्णु का स्मरण करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं— काव्ये गुरौ का सौम्ये वा यदा केन्द्रत्रिकोणगे।
नाशं यान्त्याखिला दोषाः पापानीव हरिस्मृते:॥९०॥ मु. चिंतामणि (पीयूषधारा)

उपरोक्त शास्त्र-वचन को ही ध्यान रखते हुए हमने 15 मई, शनिवार को मुहूर्त्त दिया गया है। अन्यत्र मुहूर्त्तों में भी जहाँ-जहाँ विवाह ल. में केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह की स्थिति एवं परिहार मिला है, वहाँ पर अत्यावश्यक परिस्थिति में ही मुहूर्त ग्रहण करें। (देखें पृष्ठ 86 एवं 148) पं. पन्नालाल ज्यो.

श्राद्ध एवं पितृपक्ष–23 सितं. से 7 अक्तू. तक श्राद्ध रहेंगे।

शुक्र-अस्त–20 अक्तू. से 1 नवं. तक शुक्र पश्चिम में अस्त रहेगा। ता. 17 से 19 अक्तू. तक शुक्र वार्धक्य दोष तथा 3 से 5 नवं. तक शुक्र बाल्यत्व दोष रहेगा।

भीष्म-पंचक–17 नवं. से 21 नवं. तक भीष्मपंचक रहेंगे। परम्परागत इन दिनों में यद्यपि विवाहादि शुभ कृत्यों का निषेध माना जाता रहा है, विशेषकर हि.प्र., पंजाब, हरियाणा दिल्ली, जम्मू आदि में, परन्तु आजकल अधिकांश विद्वान् शास्त्र प्रमाण का अभाव होने से इन दिनों विवाहादि कृत्यों के सम्पादन का निषेध नहीं मानते।

गुरु अस्त–25 मार्च, 2011 ई. से संवत् के अन्त (3 अप्रैल, 2011 ई.) तक गुरु पश्चिम में अस्त रहेगा। परन्तु इसका विवाहादि मंगलकृत्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि गुरु का यह अस्तकाल मीनस्थ सूर्य (चैत्र मास) की समयावधि में पड़ रहा है, जोकि मंगलकृत्यों के लिए पहले से वर्जित है।

ऊपरलिखित समय शुद्धि काल को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त तारीखों में विवाहादि मुहूर्त नहीं लगाए गए।

स्पष्टीकरण–नीचे विवाह मुहूर्त्तों में लता (१), पात (२), युति (३), वेध (४), जामित्र (५), मृत्युबाण (६), एकार्गल (७), उपग्रह (८), क्रान्तिसाम्य (९), दग्धा तिथि (१०)—इस क्रमानुसार दस गुण दोषों की गणना की गई हैं। सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है जबकि आड़ी रेखा (S) दोष की सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है। मुहूर्त्तों में सूक्ष्म क्रान्ति-साम्य गणित प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।

विवाह मुहूर्त्तों में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण—विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को बृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ तथा १२ की संख्या को मीन लग्न जानें॥
दि. ल. = दिन का लग्न ; रा. ल. = रात्रि का लग्न—
चं. दा. = अर्थात् इस विवाह लग्न में चन्द्रमा से सम्बन्धित वस्तुओं का दान व पूजा करके विवाह कर सकते हैं। इसी प्रकार मं. दा., बु. दा. आदि अन्य ग्रहों को समझें।

★ ज्येष्ठ मासे ★ (मई–जून) सन् 2010 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंदराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)	पंडित जी के लिए ज़रूरी नोट
द्वि. वैशा. शु. ৭, शनि	15 मई	२ ज्येष्ठ	मृग	वृष	। । S शु. । । । । । । ।	ल. ৭ (मं., शु. दा.) (28/37 तक) शुक्र युति परिहार (28/37 बाद मृत्युबाण)	
ज्येष्ठ कृष्ण ৭, शुक्र	28 मई	৭५ ज्येष्ठ	अनु	वृश्चिक	। । । S बु । । । S । ।	दिवस लग्न कर्क–(शुक्र दान)	
ज्येष्ठ कृष्ण २, शनि	29 मई	৭६ ज्ये.	मूल	धनु	S श. S सा । । । । । । । ।	ल. गोधूलि, रात्रि ल. ৭-(मेषे शुक्र दान)	
ज्येष्ठ कृष्ण ३/४, चंद्र	31 मई	৭८ ज्ये.	उ.षा.	ध/मक	। । । । S शु । । S S S	गोधूलि, रा. ल. ৭ (शुक्र का दान)	
ज्येष्ठ कृ. ४/५, मंग	1 जून	৭९ ज्ये.	उ.षा.	मकर	। । । । S शु. S रो । S S ।	दि. ल. ४ (चंद्र, शुक्र व केतु का दान)	
ज्ये. कृष्ण ५/६, बुध	2 जून	२० ज्ये.	धनि.	मकर	S बु. । । । । । S । S ।	रात्रि लग्न मेष–(शुक्र, केतु दान)	
ज्ये. कृष्ण ६, गुरु	3 जून	२৭ ज्ये.	धनि.	म/कुम्भ	। S । । । S S । । ।	दि. ल. ४ (चं., शु. दान), गोधूलि, रात्रौ लग्नऽभावः (22/20 के बाद मृत्युबाण दोष)	
ज्येष्ठ कृ. ९/৭०, रवि	6 जून	२४ ज्ये.	उ.भा.	मीन	। । S गु । S श. S रा. । । । ।	दि. ल. ४ (शु. केतु दान), गोधू., रा. ल. ৭ (मेषे चं. शु. दान)	
ज्येष्ठ कृष्ण ৭৭, मंग	8 जून	२६ ज्ये.	अश्वि	मेष	S रा. । । । । S चौ S S । ।	दि. ल. ४ (शु. केतु दान, ल. 9/53 के बाद, ७ (चं. श. दा.), गोधूलि, रात्रौ लग्नाभाव	

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)	पंडित जी के लिए ज़रूरी नोट
ज्येष्ठ कृष्ण१२, बुध	9 जून	२७ ज्ये.	अश्वि	मेष	S रा. I I I I S चौ S S I I	दि. ल. ४ (शुक्र-केतु का दान) कर्क ल. 9-12 तक	

★ आषाढ़ मासे ★ (जून-जुलाई)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण	पंडित जी के लिए ज़रूरी नोट
ज्येष्ठ शु. ४/५, बुध	16 जून	२ आषा.	मघा	सिंह	I S S मं I I I I I I I	रा. ल. १, २ (शु. दा.) (मृत्युबाण रात्रि 24/02 तक) भौम युति परिहार (आवश्यके)	
ज्येष्ठ शुक्ल ६, गुरु	17 जून	३ आषा.	मघा	सिंह	I S ह S मं I I S अ I I I I	दि. ल. ४ (सू. केतु दान), ७ (बु. श. दान), भौम युति परिहार (आवश्यके)	
ज्येष्ठ शु. ८/९, शनि	19 जून	५ आषा.	हस्त	कन्या	I S I S गु S गु S नृ S I I I	रा. ल. २ (शु. दा.), रात्रि लग्ने व्यतिपात एवं गुरुपाद वेधाभाव	
ज्येष्ठ शुक्ल ९, रवि	20 जून	६ आषा.	हस्त	कन्या	S मं I I S गु S गु I S I I I	दि. ल. ४ (सू. के. दान), ७ (चं. बु. श. दा.)	
ज्येष्ठ शुक्ल १०, रवि	20 जून	६ आषा.	चित्रा	कन्या	I I I I I I I S I I	लं. गोधू. रा. ल. २ (वृष लग्ने शुक्र दान)	
ज्येष्ठ शुक्ल १०, चंद्र	21 जून	७ आषा.	चित्रा	तुला	I I I I I S चौ I S I I	दि. ल. ४ (सू. केतु दान) लग्न पर गुरु की शुभ दृष्टि	
ज्येष्ठ शुक्ल ११, चंद्र	21 जून	७ आषा.	स्वा.	तुला	I I I I I S चौ S I I I	गोधूलि ल., रा. ल. १ (चं. दा.)	
ज्येष्ठ शुक्ल ११, मंग	22 जून	८ आषा.	स्वा.	तुला	I I I I I I I S I I	दि. ल. ४ (सू. केतु दान), ८ (चं. मं. दान, वृश्चिक ल. 18/39 तक)	
ज्ये. शु. १२/१३, बुध	23 जून	९ आषा.	अनु.	वृश्चिक	S सू S सा I I I S रो I I S I	रा. ल. २ (चं. शु. दान)–वृष ल. रात्रि 27/32 के बाद, उससे पूर्व क्रांति साम्यदोष (27/32 बाद) आवश्यके	
ज्येष्ठ शुक्ल १३, गुरु	24 जून	१० आषा.	अनु.	वृश्चिक	S सू S सा I I I I I I I I	दि. ल. ४ (सू. चं. दान), ७ (श. दा.), गोधूलि च।	
आषा. कृ. १/२, रवि	27 जून	१३ आषा.	उ.षा.	धनु	I I I I I I I I I I	रा. ल. १ (मेषे राहु दान)	
आषा. कृष्ण २, चंद्र	28 जून	१४ आषा.	उ.षा.	मकर	I S वै I I I I I I I I	दि. ल. ४ (चं. दा.), ७ (श. दा., तुला लग्न 14/36 तक) तदुपरान्त वैधृति	
आषा. कृष्ण ३, मंग.	29 जून	१५ आषा.	श्रवण	मकर	I S I I I S रा. I I I I	दि. ल. ८ (सू. दा.–वृश्चिक लग्नोपरि गुरु दृष्टि शुभ, भद्रा परिहार रा ल. १ (राहु दान), २ (शु. दा.) गुरु त्रिकोण भावेन दुष्टयोग परि. भद्रापाताले शुभप्रदा	
आषा. कृष्ण ४, बुध	30 जून	१६ आषा.	धनि.	मक/कुं	I I I S शु S शु S चौ S I I I	दि. ल. ४ (चं. दा.), ७ (श. दा.), ८ (सू. दा.), गोधूलि च. रा. ल. १ (राहु दान), २ (शु. दा.) पादेन शुक्र वेध अभावः	
आषा. कृष्ण ७, शनि	3 जुला	१९ आषा.	उ.भा.	मीन	I I S गु I S श S रो I S I I	गोधूलि ल. (भद्रा 18/11 तक), रा. ल. १ (चं. दा.), २ (शु. दान)	
आषा कृ. ७/८, रवि	4 जुला	२० आषा.	उ.भा.	मीन	I I S गु I S श . I I S I S	दि. ल. ४ (सूर्य दान), ८ (सू. बु. का दा.) वृश्चिक ल. 16/27 तक द. तिथि दोष परि.	
आ. कृ. ११/१२, गुरु	8 जुला	२४ आषा.	रोहि	वृष	S गु S I I I S रा I S I I	रा. ल. १, २ (चं. शु. दान)–वृषे चंद्र केन्द्रे परिहार	
आषा. कृष्ण१२, शुक्र	9 जुला	२५ आषा.	रोहि	वृष	S गु S I I I I I S I I	दि. ल. ४ (सू. दा., कर्क लग्न 8/24 तक)–गंड दोष परिहार	
आषा. शुक्ल ३, बुध	14 जुला	३० आषा.	मघा	सिंह	I S S शु I I S I I I I	दि. ल. ७ (श. दा.), ८ (सू. मं. दा.), शुक्र युति परिहार 17/46 के बाद व्यतिपात तथा 18/52 के बाद मृत्युबाण दोष व्याप्त रहेगा।	

★ श्रावण मासे ★ (जुलाई-अगस्त)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण	पंडित जी के लिए ज़रूरी नोट
आषा. शुक्ल ६, शनि	17 जुला	२ श्राव.	हस्त	कन्या	I I I S गु S गु I I I I I	दि. ल. ७ (चं. श. दा.), ८, गोधूलि,–रात्रि 22/15 से मृत्युबाण दोष प्रारम्भ	
आषा. शुक्ल ८, रवि	18 जुला	३ श्राव.	चित्रा	तुला	S मं के I I I I S I S I I	मृ. बाण दो. प्रातः 10/55 तक तदुपरांत दि. ल. ८ (मं. दा.) भद्रा परि., गोधू., रा. ल. १ (चं. दा., मेष ल. 24/23 तक)	
आषा. शुक्ल ८, रवि	18 जुला	३ श्राव.	स्वा.	तुला	I S सा I I I S अ S I I I	रा. ल. १ (मेषे चन्द्र सप्तम दान)	
आषा. शुक्ल ९, चंद्र	19 जुला	४ श्राव.	स्वा.	तुला	I S सा I I I S अ S I I I	दि. ल. ८ (चं. मं. दा.), गोधूलि, रात्रि 23/25 से क्रान्तिसाम्य दोष प्रारंभ	
आ. शु. १०/११, मंग	20 जुला	५ श्राव.	अनु.	वृश्चिक	I I I I I S नृ I S I I	रा. ल. २ (वृष लग्ने चंद्र दान)	

| पक्ष तिथि वार | ता. अंग्रे. | प्रविष्टे | नक्षत्र | चंद्रराशि | लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ | शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में) | पंडित जी |

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लत्तादि द्वारा युग-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में [illegible] दानादि का विवरण (भा. स्टै. टा. घंटा मिंट में)	पंडित जी के लिए ज़रूरी नोट
आषा. शुक्ल११, बुध	21 जुला	६ श्राव.	अनु.	वृश्चिक	I I I I I S नृ I S I I	दि. ल. ७ (श. दा.), गोधूलि, रा. ल. २ (चं. दा.), भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा (रात्रि ल. 25/15 तक ग्राह्य	
आषा शुक्ल १३, शुक्र	23 जुला	८ श्राव.	मूल	धनु	S सू श S वै I I I S चौ I I I I	दि. ल. ७ (मं. श. दा.), (13/42 तक) ८ (चं. रा. दा.), गोधू. रा. ल. १ (मं. दा.) मेषे भौम स्वदृष्टि परि.	
आषा. पूर्णिमा, रवि	25 जुला	१० श्राव.	उ.षा.	ध/मक	I I I I I S रो I S I I	दि. ल. ७ (मं. श. दा.), ८ (श. दा.), गोधूलि, रा. ल. २ (भद्रा पाताले शुभप्रदा	
आषा. १५/१, चंद्र	26 जुला	११ श्राव.	श्रवण	मकर	I I I S बु S सू I I S I I	दि. ल. ७ (मं. श. दा.), ८ (श. दा.), गोधूलि, रा. ल. २, पादेन बुध वेधऽभावः (बु. दा.)	
श्रावण कृ. १/२, मंग	27 जुला	१२ श्राव.	धनि.	मक/कुं.	I I I I I S अ S I I I	रात्रि 21/25 तक मृ. बाण रा. ल. २ (वृष लग्ने मृत्युबाणाभावः)–आवश्यके	
श्रावण कृष्ण २, बुध	28 जुला	१३ श्राव.	धनि.	कुम्भ	I I I I I S अ I I I I	दि. ल. ७ (मं. श. दा.)	
श्रावण कृ. ४/५, शुक्र	30 जुला	१५ श्राव.	उ.भा.	मीन	I I Sगु. ISश.मं.Sरा. ISअति I I	रा. ल. २, पादेन गुरु युत्यभावः, वृष लग्ने अतिगंड अभावः (अति. दोष रात्रि 23/15 तक)	
श्रावण कृष्ण ५, शनि	31 जुला	१६ श्राव.	उ.भा.	मीन	I I S गु. ,I S मं. I I S I I	दि. ल. ८ (श. दा.), गोधूलि, पादेन गुरु युत्यभावः (दिवस लग्ने दग्धा तिथि दोष अभावः)	
श्रावण कृष्ण ६, रवि	1 अग.	१७ श्राव.	अश्विं	मेष	S रा S I I I S चौ I S I I	रा. ल. २ (चं. दा.) वृष लग्न रात्रि 26/01 उपरांत, भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा	
श्रावण कृ. ७, चंद्र	2 अग.	१८ श्राव.	अश्विं	मेष	S रा. S I S बु. I I I S I I	दि. ल. ८, भद्रा परि. रात्रौ लग्ने क्रांति साम्य दोष.	
श्रावण कृष्ण१०, गुरु	5 अग.	२१ श्राव.	रोहि.	वृष	S गु. I I I I S I S I I	दि. ल. ८ (श. चं. दा.)), भद्रा परिहार, रात्रि 18/28 के बाद मृत्युबाण दोष	
श्रावण कृष्ण११, शुक्र	6 अग.	२२ श्राव.	मृग	वृ./मि.	S बु I I I I S अ. S I I	प्रातः 7/20 तक मृ. बा., दि. ल. ८ (चं. दा.), लग्ने गुरु दृष्टि गोधूलि रा. ल. २ (के. चं. दा.)	
श्रावण शुक्ल २, बुध	11 अग.	२७ श्राव.	मघा	सिंह	I I I I I S चौ I S I I	दि. ल. ७ (मं. शु. श. गु. दा.), ८ (श. दा.)	
श्रावण शुक्ल ३, गुरु	12 अग.	२८ श्राव.	उ.फा.	सिं./कं.	I I S श I I I I I I I	दि. ल. ८ (श. दा.), गोधूलि, रा. ल. २ (केतु दा.) कन्या राशि होने से शनियुति परिहार	
श्रावण शु. ४/५, शुक्र	13 अग.	२९ श्राव.	हस्त	कन्या	I I Sमंशु.Sगु S गु Sरो. I S I I	दि. ल. ७ (चं. श. दा.), ८ (श. दा.), गोधूलि, भद्रा परि., रा. ल. २ (के. दा.), भौम, शुक्र युति परिहार	
श्रावण शु. ५/६, शनि	14 अग.	३० श्राव.	चित्रा	कं./तुला	S के S सा I I I I I I I S	दि. ल. ७ (शु. श. दान), ८ (श. दा.), सायं 18/00 से 22/54 तक क्रान्तिसाम्य दोष रा. ल. १, (चं. मं. दा.) 22/54 के बाद–आवश्यके। रात्रि 27/36 बाद मृत्युबाण दोष प्रारम्भ	

★ भाद्रपद मासे ★ (अगस्त–सितम्बर)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लत्तादि द्वारा युग-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में [illegible] दानादि का विवरण (भा. स्टै. टा. घंटा मिंट में)	पंडित जी के लिए ज़रूरी नोट
श्रावण शु. ८/९, मंग	17 अग.	२ भाद्र.	अनु	वृश्चिक	I I I I I S I S I I	दि. ल. ७ (चं., शु., श. दा.), १०, गोधूलि, रा. ल. २ (चं. दा.), ४ (चं. शु. दा.) कर्क ल. 29/06 तक	
श्रावण शुक्ल१०, गुरु	19 अग.	४ भाद्र.	मूल	धनु	S श. I I I I S अ I S I S	दि. ल. ७ (मं. शु. श. दा.), ८ (श. दा.), १० (बु. दा.) गोधूलि च, रा. ल. १ (मं. शु. दा., भद्रा परि.) वृश्चिक लग्नोपरि गुरु दृष्टि)-आवश्यके	
श्रावण शुक्ल१२, शनि	21 अग.	६ भाद्र.	उ.षा.	ध./मक	S सू I I I I S रा I I I I	दि. ल. ७ (12/29 बाद), ८ (श. दा.), १० (चं. बु. दा.), गोधूलि, रा. ल. २, ४ (चं. दा.)	
श्रावण शुक्ल१३, रवि	22 अग.	७ भाद्र.	उ.षा.	मकर	S सू. I I I I I I I I I	दि. ल. ७ (मं. शु. श. दा.), ८ (श. दा.)	
श्रा. शु. १४/१५, चंद्र	23 अग.	८ भाद्र.	धनि	मकर	I I I I I S चौ S S I I	ल. गोधूलि, रा. ल. २ (के. दा.), १०, (चं. शु. दा.) [मकर राशिस्थ भद्रा पाताले शुभप्रदा]	
श्रावण पूर्णिमा, मंग	24 अग.	९ भाद्र.	धनि	कुम्भ	I I I I I I S S I I	दि. ल. ७ (म. शु. श. दा.), ८ (श. दा.), १० (बु. दा.), गोधूलि च., रात्रौ लग्नाभावः	
भाद्रपद कृ.२/३, गुरु	26 अग.	११ भाद्र.	उ.भा.	मीन	I I S गु I S श I I I I I	रा. ल. ४ (मं. शु. दा.) पादेन गुरु युति-अभावः	
भाद्र. कृ.. ३, शुक्र	27 अग.	१२ भाद्र.	उ.भा.	मीन	I I S गु. I S श. I S I I	दि. ल. ८ (शु. दा.), वृश्चिक लग्ने गुरु दृष्टि शुभा (14/48 के बाद मृत्युबाण)	
भाद्रपद कृ.४/५, रवि	29 अग.	१४ भाद्र.	अश्वि.	मेष	SराSगं ISबु S मं I I S I I	दि. ल. ७ (चं., शु., श. दान), ८ (श. दा.), १० (बु. दा.), गोधूलि रा. ल. २ (चं. के. दान), ४ (मं. शु. दान), (पादेन बुध दान)	
भाद्रपद कृ. ५, चंद्र	30 अग.	१५ भाद्र.	अश्वि.	मेष	S रा I ISबुSमं I S S I I	दि. ल. ७ (चं. शु. श. दान)-तुला लग्न प्रातः 10/28 तक ग्राह्य	
भाद्र. कृ. ७/८, बुध	1 सितं.	१७ भाद्र.	रोहि	वृष	S गु S ह I I I S चौ S S I I	दि. ल. ८ (चं. शु. दान, लग्न 13/19 के बाद), १० (बु. दान), गोधूलि, रा. ल. ४ (केतु दान)	
भाद्र. कृ. ८, गुरु	2 सितं.	१८ भाद्र.	रोहि	वृष	S गु S ह I I I S चौ S S I I	दि. ल. ८ (चं. शु. दान) लग्नोपरि गुरु दृष्टि प्रशस्ता	

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंदराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)	पंडित जी के लिए ज़रूरी नोट
भाद्र. कृ. ८/९, गुरु	2 सितं.	१८ भाद्र.	मृग.	वृ./मि.	ऽ बु. ऽ ह. I I I ऽचौ ऽ I I	दि. ल. ८ (13/47 के बाद, चं. शु. दान), १०, गोधूलि, रा. ल. ४ (चं. के. दान)	
भाद्र. कृष्ण ९, शुक्र	3 सितं.	१९ भाद्र.	मृग	मिथुन	ऽबु I I I I ऽ रो ऽ ऽ I ऽ	दि. ल. ७ (मं. श. दान) प्रातः 9.51 के बाद, दग्धातिथि-परिहार	
भाद्र. शुक्ल १, गुरु	9 सितं.	२५ भाद्र.	उ.फा.	कन्या	I ऽ सा I I I ऽ रा I I ऽ I	दि. ल. ८ (मं. शु. दान), १० (बु. दा.), मकर ल. 15/22 तक ग्राह्य (15/23 से 19/00 तक क्रान्तिसाम्य दोष)	
भाद्र. शु. १/२, गुरु	9 सितं.	२५ भाद्र.	हस्त	कन्या	I I ऽ श ऽ गु ऽ गु I ऽ I I I	रा. ल. ४ (मंग.-चन्द्र दान व पूजा)-शनि युति परिहार, लग्नोपरि गुरू दृष्टि शुभा	
भाद्र. शुक्ल २, शुक्र	10 सितं.	२६ भाद्र.	हस्त	कन्या	I I ऽ श ऽ गु ऽ गु I ऽ I I	दि. ल. ८ (मं. शु. दान), १०, (बु. मं. दा.), शनि युति परिहार	
भाद्र. शुक्ल ३, शुक्र	10 सितं.	२६ भाद्र.	चित्रा	कन्या	ऽ के I ऽ मं I I ऽ चौ I I I I	रा. ल. ४ (चन्द्र कन्यास्थ होने से भौम युति परिहार) लग्नोपरि गुरू दृष्टि शुभा	
भाद्र. शुक्ल ४, शनि	11 सितं.	२७ भाद्र.	स्वा.	तुला	I I ऽ शु I I I ऽ ऽ I I	सायं ल. १० (सू. बु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ४ (चं. मं. दा.), भद्रा पाताले शुभप्रदा	
भाद्र. शुक्ल ५, रवि	12 सितं.	२८ भाद्र.	स्वा.	तुला	I I ऽ शु I I I ऽ ऽ I I	दि. ल. ८ (चं. मं. शु. दा.), (पादेन शुक्र युतिऽभावः	
भाद्र. शुक्ल ६, चंद्र	13 सित	२९ भाद्र.	अनु.	वृश्चिक	I ऽ I I I ऽ रो. I I I I	सायं ल. १० (सू. चं. बु. दान), गोधूलि, रा. ल. ४ (चं. दा.) कर्क लग्ने गुरू दृष्टि शुभा	

★ आश्विन मासे ★ (सितम्बर-अक्तूबर)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंदराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
भाद्र. शुक्ल १०, शुक्र	17 सितं.	२ आश्वि	उ.षा.	मकर	I I I I I I I ऽ I I	रा. ल. ४ (चं. दान व पूजा) लग्नोपरि गुरू दृष्टि शुभा
भाद्र. शुक्ल ११, शनि	18 सितं.	३ आश्वि	श्रवण	मकर	I I I I I I ऽ I I I	सायं 18/25 तक मृ. बाण, रा. ल. ४ (चं. दान) अतिगंड प्रथम 6 घटि त्याज्य, भद्रा पाताले शुभा
भाद्र. शुक्ल १२, रवि	19 सितं.	४ आश्वि	श्रवण	मकर	I I I I I I I I I I	दि. ल. ८ (मं. शु. दान), गोधूलि, रा. ल. ४ (चं. दा.), अतिगंड योग परि., गुरू दृष्टि शुभा
भाद्र. शुक्ल १२, रवि	19 सितं.	४ आश्वि	धनि.	मकर	ऽ सू. I I I I ऽ अ I I I I	रा. ल. ४ (चं. दा.) लग्नोपरि गुरू दृष्टि प्रशस्ता
भा. शु. १२/१३, चंद्र	20 सितं.	५ आश्वि	धनि.	मक/कुं.	ऽ सू. I I I I I ऽ I I I	दि. ल. ८ (मं. शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ५ (चं. शु. गु. दान)-रात्रि लग्न आवश्यके

(23 सितम्बर से 7 अक्तूबर तक श्राद्ध रहेंगे)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंदराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
आश्वि शुक्ल १, शुक्र	8 अक्तू.	२३ आश्वि	चित्रा	कं/तुला	ऽ के ऽ वै I ऽ गु I I I I I I	दि. ल. ८ (चं. मं. शु. दान), गोधूलि, रा. ल. ४ (मं. दा.), अति आवश्यके (गुरु केन्द्र-त्रिकोण भावेन दुष्ट योग परिहारः) शिव पूजा
आश्वि शुक्ल २, शनि	9 अक्तू.	२४ आश्वि	स्वा.	तुला	I ऽ ऽ शु I I ऽ रा ऽ I I	दि. ल. ८ (चं. मं. शु. दान), १०, गोधू. रा. ल. ४ (कर्क मात्र 28 मिनट रहेगा-आवश्यके)
आश्वि शु. ३/४, रवि	10 अक्तू.	२५ आश्वि	अनु.	वृश्चिक	I I I I I I I I I I	रा. ल. ४ (चं. दा.), गुरु दृष्टिशुभप्रदा,
आश्वि शुक्ल ४, चंद्र	11 अक्तू.	२६ आश्वि	अनु.	वृश्चिक	I I I I I ऽ चौ. I I I I	दि. ल. १० (चं. मं. दा., भद्रा परिहार), गोधूलि, भद्रा पाताले शुभदा
आश्वि शुक्ल ८, शुक्र	15 अक्तू.	३० आश्वि	उ.षा.	ध./मक	I I I I I ऽ I ऽ I ऽ	दि. ल. ८ (मं. शु. दा.) गुरु दृष्टि से दग्धा दोष परिहार, 16/59 बाद मृत्युबाण दोष

★ कार्तिक मासे ★ (नवम्बर) (केवल पर्वतीय प्रदेशों में)

(20 अक्तूबर से 1 नवम्बर तक शुक्र पश्चिम में अस्त) 2 नवं. से 5 नवं. तक शुक्र बाल्यत्व दोष

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंदराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
कार्ति. शु. ६/७, शुक्र	12 नवं.	२७ कार्ति.	श्रवण	मकर	I ऽ गंड I I I ऽ रो I ऽ I I	ल. गोधूलि, रा. ल. ४ (चं. गु. दान) गंड योग की प्रथम ६ घड़ियां विशेषतः त्याज्य-आवश्यके
कार्ति. शु. ७/८, शनि	13 नवं.	२८ कार्ति.	धनि.	मकर	I I I I I I ऽ ऽ I I	लग्न गोधूलि, रात्रि लग्न कर्क गुरू अष्टमे दोष-आवश्यके
कार्ति. शुक्ल ८, रवि	14 नवं.	२९ कार्ति.	धनि.	कुम्भ	I I I I I I ऽ ऽ I I	दि. ल. १० (रा. चं. दा.), गोधूलि च

★ मार्गशीर्ष मासे ★ (नवम्बर-दिसम्बर)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंदराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
कार्ति. शु. १२, गुरु	18 नवं.	३ मार्ग	रेव	मीन	ऽ सू. I I I ऽ श ऽ अ ऽ I I I	दि. ल. १० (रा. दान), गोधूलि, रा. ल. ४ (गु. दा.)-भीष्मपंचक विचार (आवश्यके)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंदराशि

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	[illegible]	लग्नादि दस गुण दोष रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)	पंडित जी के लिए ज़रूरी नोट
का. शु. १२/१३, गुरु	18 नवं.	३ मार्ग.	अश्वि	मेष	S सू I I I S श Sअग्नि S I I I	रा. ल. ७ (चं. श. दान) भीष्म पंचक विचार–आवश्यके	
मार्ग. कृष्ण १, चंद्र	22 नवं.	७ मार्ग.	रोहि	वृष	I I I I S सू S चौ I S I I	दि. ल. १० (रा. दान), गोधूलि, रा. ल. ४ (गु. दा.), ५ (गु. शु. दान गुरू दृष्टि शुभा)	
मार्ग. कृष्ण २, मंग	23 नवं.	८ मार्ग.	मृग	वृ./मिथु.	I I I I S मं बु I S I I I	दि. ल. १०, गोधूलि, रा. ल. ४ (गु. चं. दा.), ५ (गु. शु. दान), ७ (श. दा.)	
मार्ग. कृष्ण ७, शनि	27 नवं.	१२ मार्ग.	मघा	सिंह	S शु I I I I S अ I S I I	रा. ल. ७ (सू. श. दा.) (ल. 28 नवं. की प्रातः 4/52 बजे के बाद ग्राह्य)	
मार्ग. कृष्ण ७, रवि	28 नवं.	१३ मार्ग.	मघा	सिंह	S शु I I I I I I S I I	गोधूलि, रा. ल. ७ (श. दान)-तुलायां गुरु दृष्टि प्रशस्ता	
मार्ग. कृष्ण ९, चंद्र	29 नवं.	१४ मार्ग.	उ.फा.	सिंह	I I I I S गु S रा I S I I	रा. ल. ७ (सू. श. दान)-गुरू दृष्टि प्रशस्ता	
मार्ग. कृष्ण ९, मंग	30 नवं.	१५ मार्ग.	उ.फा.	कन्या	I I I I S गु I I S I S	दि. ल. १० (मं. बु. दा.), गोधू., रा. ल. ५ (गु. दा.) सिंह ल. रात 24/30 तक द. परिहार	
मार्ग. कृ.९/१०, मंग	30 नवं.	१५ मार्ग.	हस्त	कन्या	S बु I S श I I I S S I S	रा. ल. ५ (गु. शु. श. दा.), ७ (चं. श. दान) शनि युति एवं दग्धा परिहार, भद्रा पाताले शुभा	
मार्ग. कृष्ण १०, बुध	1 दिसं.	१६ मार्ग.	हस्त	कन्या	S बु I S श I I S चौ S S I I	दि. ल. १० (मं. रा. दान), गोधूलि, शनि युति परिहार	
मार्ग. कृष्ण ११, बुध	1 दिसं.	१६ मार्ग.	चित्रा	कन्या	S के I I S गु I S चौ I S I I	दि. ल. ५ (चं. गु. शु. दान), ७ (चं. श. दान–पादेन गुरु युति अभावः) गुरू दृष्टि शुभदा।	
मार्ग. कृष्ण १२, गुरु	2 दिसं.	१७ मार्ग.	चित्रा	तुला	S के I I S गु I I I S I I	दि. ल. १०, (मं. बु. दा.), गोधूलि, गुरु वेधऽभावः	
मार्ग. कृष्ण १२, गुरु	2 दिसं.	१७ मार्ग.	स्वा.	तुला	I I S शु I I I S S I I	रा. ल. ५, (गु. शु. दान)–पादेन शुक्र युति अभावः	
मार्ग. शु. ३/४, बुध	8 दिसं.	२३ मार्ग.	उ.षा.	ध./मक.	S मं I I I I S रा S I I I	रा. ल. ५ (गु. शु. दान), ७ (शनि दान) लग्ने गुरु दृष्टि प्रशस्ता	
मार्ग. शुक्ल ४, गुरु	9 दिसं.	२४ मार्ग.	उ.षा.	मकर	S मं I I I I I S I I I	दि. ल. १ (शुक्र ७वें पूजा व दान), गोधूलि, रा. ल. ४ (चं. गु. दा.) कर्क ल. रात्रि 20/47 तक	
मार्ग. शु. ४/५, गुरु	9 दिसं.	२४ मार्ग.	श्रवण	मकर	I I I I I I S S I I	रा. ल. ४ (चं. गु. दा.), ७ (श. का दान), लग्नोपरि गुरू दृष्टि प्रशस्ता, भद्रा परिहार	
मार्ग. शुक्ल ५, शुक्र	10 दिसं.	२५ मार्ग.	श्रवण	मकर	I I I I I S चौ S S I I	ल. गोधूलि, रा. ल. ४ (चं. गु. दान)	
मार्ग. शु. ५/६, शुक्र	10 दिसं.	२५ मार्ग.	धनि.	मकर	I I I I I S चौ S I I I	रा. ल. ७ (श. दान) तुला पर गुरू की दृष्टि शुभा	
मार्ग. शुक्ल ६, शनि	11 दिसं.	२६ मार्ग.	धनि.	म./कुंभ	I I I I I I S I I I	सायं ल. मेष (शु. सप्तम पूज्य दान व) गोधूलि–आवश्यके	

★ माघ मासे ★ (जनवरी–फरवरी)—सन् 2011 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	[illegible]	लग्नादि दस गुण दोष रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)	पंडित जी के लिए ज़रूरी नोट
पौष शु.११/१२, रवि	16 जन.	३ माघ	रोह.	वृष	I I I I S शु S अ I I I S	दि. ल. वृष (शु. ७वें पूज्य दान-आवश्यके) गोधूलि, रा. ल. अभाव	
माघ कृष्ण ४/५, रवि	23 जन.	१० माघ	उ.फा.	सिं./कं.	I I I I I I I S I I	गोधूलि, रा. ल. ७ (चं. श. दा.), ८	
माघ कृष्ण ७, मंग	25 जन.	१२ माघ	चित्रा	कं./तु.	S बु S I I I S अ I I I I	गोधूलि, रा. ल. ८ (वृश्चिक लग्ने चंद्र शनि दान)	
माघ कृष्ण १०, शुक्र	28 जन.	१५ माघ	अनु	वृश्चिक	I I I I I I S S I I	लग्न गोधूलि, रा. ल. ७ (चं. शु. दा.)	
माघ शुक्ल १, शुक्र	4 फर.	२२ माघ	धनि	कुम्भ	I S I I I I I I I I	दि. ल. १ (मं. दान), गोधूलि च	
माघ शुक्ल४/५, चंद्र	7 फर.	२५ माघ	रेवती	मीन	Sरा S सा I I S शSचौ I S I I	रा. ल. ८ (श. दा.) वृश्चिक लग्न रात्रि 25/54 के बाद ग्राह्य	
माघ शुक्ल ५, मंग	8 फर.	२६ माघ	रेवती	मीन	S रा S सा I I S श I I S I I	दि. ल. १ (चं. मं. दा.), गोधूलि, रा. ल. ८ (श. दा.), वसन्त पंचमी	
माघ शुक्ल ६, बुध	9 फर.	२७ माघ	अश्वि	मेष	I I I I I S रो S I I I	गोधूलि, रा. ल. ७ (चं. शु. दा.)	

★ फाल्गुन मासे ★ (फरवरी–मार्च)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	[illegible]	लग्नादि दस गुण दोष रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)	पंडित जी के लिए ज़रूरी नोट
माघ शुक्ल पूर्णि. शुक्र	18 फर.	६ फाल्गु.	मघा	सिंह	I I I I S बु I S अति S I I	दि. ल. १, गोधूली, रा. ल. ७ (शु. श. दा.), ८ (श. दा.) रात्रि वृश्चिक लग्ने गुरू दृष्टि शुभप्रदा	
फाल्गु. कृष्ण २, शनि	19 फर.	७ फाल्गु.	उ.फा.	सिं./कं.	I I I I I S चौ I I I I	रा. ल. ७ (शु. दा. तुला ल. 23/47 बाद) ल. रात्रि 23/47 बाद, ८ (श. दा.), १० (शु. दा.) (29/30 बाद) लग्न गोधूली	
फाल्गु. कृ. ३/४, रवि	20 फर.	८ फाल्गु.	उ.फा.	कन्या	I I I I I I I I I I		

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)	पंडित जी के लिए ज़रूरी नोट
फाल्गु. कृ. ४/५, चंद्र	21 फर.	९ फाल्गु.	चित्रा	कं./तु.	IS IIIIISIS	रा. ल. ७ (चं. शु. श. दा.), ८ (श. दा.), १० (शु. दा.), दग्धातिथि परिहार	
फाल्गु. कृष्ण ५, मंग	22 फर.	१० फाल्गु.	चित्रा	तुला	IS गं IIIIIS II	दि. ल. १ (चंद्र सप्तम पूज्य, दान व), गंडयोग परिहार	
फाल्गु. कृष्ण ७, गुरु	24 फर.	१२ फाल्गु.	अनु.	वृश्चिक	S शु S II ISअS व्याS II	रा. ल. ७ (चं. शु. श. दा.), १० (शु. दा.), व्याघात की प्रथम ९ घड़ियां त्याज्य (श्रीहनुमान पूजा)	
फाल्गु. कृष्ण ८, शुक्र	25 फर.	१३ फाल्गु.	अनु.	वृश्चिक	S शु S हर्ष IIIISS II	दि. ल. १ (मेषे चंद्र दान) हर्षण योगे गौरी पूजा	
फाल्गु. शु. २/३, चंद्र	7 मार्च	२३ फाल्गु.	रेवती	मीन	IIIIS श IS III	दि. ल. १ (चं. बु. दा.), २ (मं. दा.), रा. ल. ८ (शु. श. दा.), १० (रा. दा.)	
फाल्गु. शुक्ल ३, मंग	8 मार्च	२४ फाल्गु.	रेवती	मीन	IIIIS श IS III	दि. ल. १ (चं. बु. दा.), २ (मं. दा.) वृष ल. 11/19 तक	
फाल्गु. शु. ३/४, मंग	8 मार्च	२४ फाल्गु.	अश्वि.	मेष	IIIIS श IS IIS	दि. ल. २ (चं. मं. दा.), रा. ल. ७ (चं. श. दा.), १० (बु. रा. दा.)–भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा	
फाल्गु. शुक्ल ४, बुध	9 मार्च	२५ फाल्गु.	अश्वि.	मेष	IIIIIS चौ IIIS	दि. ल. २ (चं. मं. दा.)–भद्रा स्वर्गे शुभदा	
फाल्गु. शुक्ल ७, शुक्र	11 मार्च	२७ फाल्गु.	रोहि.	वृष	S गु IIIIISS II	रा. ल. ८ (चं. शु., श. दा.), १० (बु. रा. दा.) वृश्चिक लग्ने गुरु दृष्टि शुभप्रदा	
फाल्गु. शुक्ल ७, शनि	12 मार्च	२८ फाल्गु.	रोहि.	वृष	S गु IIIIISS II	दि. ल. १ (बु. दा.), २ (चं. दा.) वृष लग्ने चंद्र परिहार	
फाल्गु. शुक्ल ८, शनि	12 मार्च	२८ फाल्गु.	मृग.	वृष	IIS के IIS IS II	रा. ल. ८ (चं. शु. केतु का दान), केतु युति परिहार, 28/24 से मृत्युबाण दोष प्रा.	

वि. संवत् २०६८ में सम्भावित समय–शुद्धि विचार–गुरु जोकि 25 मार्च, 2011 ई. को पश्चिम में अस्त हुआ है, आगामी वि. संवत् २०६८ में लगभग 26 अप्रैल, सन् 2011 ई. को उदय होगा तथा शुक्र लगभग 23 जुलाई, 2011 ई. को पूर्व में अस्त होकर लगभग 27 सितम्बर, 2011 ई. को पश्चिम में उदय होगा।

➠ त्रयोदश (तेरह) दिन का पक्ष–द्वि. (शुद्ध) वैशाख शुक्ल पक्ष (14 मई से 27 मई के मध्य) में दो तिथियों (प्रतिपदा एवं चतुर्दशी) का क्षय होने से "त्रयोदश दिनात्मक" (तेरह दिन वाला) विश्वघस्र पक्ष बना है। मुहूर्त शास्त्रों में इस पक्ष में भी विवाहादि शुभकृत्य वर्जित कहे गये हैं—

उपनयनं परिणयनं तु वेश्मारम्भादि कर्माणि। यात्रा–द्विक्षयपक्षे कुर्यात् न जिजीविषु पुरुषः॥ (ज्योतिर्निबन्धः)

➠ मृत्युबाण/अग्निबाण आदि दोष के बारे स्पष्टीकरण—षष्ठ-दोष, मृत्युबाण, अग्निबाण, रोगादि बाण का विचारणीय सूर्यांश से लेकर अर्ध अंश (30′ कला) तक विचार किया गया है। जोकि न्यायसंगत व तर्कसंगत माना जाता है। गत लगभग 40 वर्षों से पंचाँग दिवाकर में यही प्रणाली प्रयोग में लाई जाती रही है। उदाहरण—जैसे मृत्युबाण सूर्यांश के 1° (एक डिग्री) अंश पर होता है, तो हमने मृ. बाण सूर्यांश के एक अंश से 1 अंश 30 कला तक ग्रहण किया है। इसी भान्ति अग्निबाण मुहूर्त्त ग्रंथों में सूर्यांश 1 अंश पर होता है, परन्तु हमने 2 अंश 30′ कला तक अग्निबाण दोष लगाया है।

"त्रिबल शुद्धि-चक्र"

त्रिग्रह बल->	सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरूबल
शुभ एवं ग्राह्य	३, ६, १०, ११	१, ३, ६, ७, १०, ११	२, ५, ७, ९, ११
अल्प-शुभ एवं पूज्य	१, २, ५, ७, ९	२, ५, ९, १२	१, ३, ६, १०
निन्द्य एवं त्याज्य	४, ८, १२	४, ८	४, ८, १२

वर तथा कन्या दोनों की राशि से विवाह मुहूर्त्त समय की राशि (गोचर चन्द्र) १, ३, ६, ७, १० या ११वें हो, तो वह चन्द्र शुभ होता है एवं २, ५, ९ या १२वें चन्द्र हो, तो कुछ अशुभ एवं पूज्य होता है तथा ४ या ८वें चन्द्र हो, तो अशुभ एवं निन्द्य माना जाता है। (मु. पारिजात) ऊपर दिए गए त्रिबल-शुद्धि चक्र से वर-कन्या के शुभ विवाह मुहूर्त्त का निर्णय करने में सुविधा होगी।

नामकरण संस्कार मुहूर्त्त–(अन्न प्राशन मुहूर्त्त में भी ग्राह्य)

अपनी कुल परम्परा अनुसार सूतक समाप्ति के पश्चात् जन्मदिन से १०, ११, १२, १३, १६, १९ या २२वें या ४१वें तथा विपणि में दिए गए शुभ मुहूर्त्तों में नामकरण संस्कार करना चाहिए। मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास में उसकी प्रसिद्ध नाम राशि का विशेष महत्त्व होता है। व्यापार, व्यवहार, सर्विस, संकल्पपूर्वक दान दीक्षा-मंत्र-सिद्धि आदि कार्यों में नाम की ही प्रधानता रहती है। नामकरण संस्कार अपने कुल के वृद्ध व्यक्ति, महात्मा, गुरु, पण्डित, ज्योतिषी, पिता या कुल पुरोहित जी से परामर्श के अनुसार अथवा जन्म-नक्षत्र के चरणाक्षर से प्रारम्भ होने वाले अक्षर से युक्त किसी महान् पुरुष, कुलदेवता, ईश्वर या देववाचक, मंगल/कल्याणार्थक तथा कानों को मधुर लगने वाले अक्षर वाला नाम रखना चाहिए। यदि जन्म नक्षत्र/राशि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो लग्न, लग्नेश या भाग्येश ग्रह से सम्बन्धित राशि वाले अक्षर से प्रारम्भ होने वाला नाम रखना चाहिए। उस दिन किसी ब्राह्मण द्वारा स्वास्ती वाचन, पंचदेव एवं नवग्रह पूजनादि करवा कर ब्राह्मण का भोजन, वस्त्र, फल दक्षिणा आदि द्वारा सत्कार करना चाहिए।

त्रिबल शुद्धि पर आधारित

वर-कन्या की राशि अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त संवत् २०६७ वि. (सन् 2010-11 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। विवाह लग्न का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करें। उदाहरण—मिथुन राशि का लड़का और कुम्भ राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त मार्ग. (नवंबर, 2010 ई.) में देखना हो तो दोनों की राशियों में नवम्बर की २७, २८, एवं २९ ता. के रात्रिकालिक मुहूर्त्तों में समानता मिलती है। इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं।

कार्तिक मास के मुहूर्त्त केवल पर्वतीय (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। ध्यान रहे, विवाह के मास का निर्धारण मुख्यत: लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। कन्या की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अत: गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते हुए एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १; २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मेष राशि—मई की १५, २९, ३१, जून की १, २, ३, ६ (चं.दा.), ८, ९, १६, १७, १९, २०, २१, २२, २७, २८, २९, ३०, जुला. की ३-४ (चं.दा.), ८, ९, १४, अग. की १९, २१, २२, २३, २४, २६ (चं.दा.), २७, २९, ३०, सितं. की १, २, ३, ९, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, अक्तू. की ८, ९, १५ [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५, फर. की ४, ७-८ (चं.दा.), ९, १८, १९, २०, २१, २२, मार्च की ७-८ (चं.दा.), ९, ११, १२ तारीखें शुभ रहेंगी।	मेष राशि के लड़के को ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रावण और मार्ग. मास वर्ज्य माने गए हैं। इस राशि की कन्या को 2 मई से 31 अक्तू. तक तथा पुन: 6 दिसं. से संवतान्त तक विशेष रूपेण पूज्य रहेगा।	**मेष राशि**—मई की १५, २९, ३१, जून की १, २, ३, ६, ८, ९, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २७, २८ २९, ३०, जुला. की ३-४, ८, ९, १४, १७, १८, १९, २३, २५, २६, २७, २८, ३०-३१, (चं.दा.), अग. की १, २, ५, ६, ११, १२, १३, १४, १९, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २९, ३०, सितं. की १, २, ३, ९, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, अक्तू. की ८, ९, १५ [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] मार्गशीर्ष में नवं. की १८ (चं.दा.), २२, २३, २७, २८, २९ ३०, दिसं. की १, २, ८, ९, १०, ११, सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५, फर. की ४, ७, ८, ९, १८, १९, २०, २१, २२, मार्च की ७, ८, ९, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।
वृष राशि—मई की १५, २८, ३१ (22/45 बाद), जून की १, २, ३, ६, ८-९ (चं.दा.), १९, २०, २१, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, जुला. की ३, ४, ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २५ (13/13 बाद), २६, २७, २८, ३०, ३१, अग. की १ (चं.दा.), २, ५, ६, १२ (18/35 बाद), १३, १४, सितं. की १७ (25/05 बाद), १८, १९, २०, अक्तू. की ८, ९, १०, ११, १५ (8/02 बाद) [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] मार्गशीर्ष नवं. की १८ (चं.दा.), २२, २३, ३०, दिसं. की १, २, ८ (25/32 बाद), ९, १०, ११, सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३ (19/40 बाद), २५, २८, फर. की ४, ७, ८, ९ (चं.दा.), १९ (29/03 के बाद), २०, २१, २२, २४, २५, मार्च की ७, ८-९ (चं.दा.), ११, १२ शुभ रहेंगी।	वृष के लड़के को ज्येष्ठ, आश्विन., मार्ग. व माघ मासों में सूर्य पूज्य तथा वैशाख व भाद्र. मास अशुभ एवं त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या के लिए संवतारम्भ से 1 मई तक तथा पुन: 1 नवं. से 5 दिसं. तक गुरु साधारण पूज्य रहेगा।	**वृष राशि**—मई की २८, ३१ (22/45 बाद), जून की १, २, ३, ६, ८-९, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, जुला. की ३, ४, ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २५ (13/13 बाद), २६, २७, २८, ३०, ३१, अग. की १, २, ५, ६, १२ (18/35 बाद), १३, १४, १७, २१ (19/08 बाद), २२, २३, २४, २६, २७, २९-३० (चं.दा.), सितं. की १, २, ३, ९, १० ११, १२, १३, १७ (25/05 बाद), १८, १९ २०, अक्तू. की ८, ९, १०, ११, १५ (8/02 बाद) [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] मार्गशीर्ष नवं. की १८, २२, २३, ३०, दिसं. की १, २, ८ (25/32 बाद), ९, १०, ११, सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३ (19/40 बाद), २५, २८, फर. की ४, ७, ८, ९, १९ (29/3 बाद), २०, २१, २२, २४, २५, मार्च की ७, ८, ९, ११, १२ शुभ रहेंगी।
मिथुन राशि—जून की १६, १७, २१, २२, २३, २४, २७, ३० (18/32 बाद), जुला. की ३, ४, ८-९ (चं.दा.) १४, १८, १९, २०, २१, २३, २५ (13/12 तक), २७ (25/23 बाद), २८, ३०, ३१, अग. की १, २, ५-६ (चं.दा.), ११, १२ (18/35 तक), १४ (22/54 बाद), १७, १९, २१ (दि.ल.), २४, २६, २७, २९, ३०, सितं. की १-२ (चं.दा.), ३, ११, १२, १३, [कार्तिक मासे नवं. की १४] मार्गशीर्ष नवं. की १८, २२-२३ (चं.दा.), २७, २८, २९, दिसं. की २, ८, (25/32 तक), ११ (12/11 बाद), सन् 2011 ई. में फर. की १८, १९ (29/03 तक), २१ (29/08 बाद), २२, २४, २५, मार्च की ७, ८, ९, ११-१२ (चं.दा.) शुभ रहेंगी।	मिथुन के वर को आषाढ़ श्रावण, कार्तिक व फागुन मासों में सूर्य पूज्य, दानादि तथा ज्येष्ठ आश्वि. व माघ मास त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या को 2 मई से 31 अक्तू. तक तथा पुन: 6 दिसं. से संवतान्त तक गुरु साधारण रूपेण पूज्य एवं दान योग्य रहेगा।	**मिथुन राशि**—मई की १५, २८, २९, ३१ (22/45 तक), जून की ३ (10/55 बाद), ६, ८, ९, १६, १७, २१, २२, २३, २४, २७, ३० (18/32 बाद), जुला. की ३, ४, ८-९, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २५ (13/12 तक), २७ (25/23 बाद), २८, ३०, ३१ अग. की १, २, ५-६, ११, १२ (18/35 तक), १४ (22/54 बाद), १७, १९, २१ (19/08 तक), २४, २६, २७, २९, ३०, सितं. की १, २, ३, ११, १२, १३, २० (13/36 बाद) अक्तू. की ८ (15/40 बाद), ९, १०, ११, १५ (8/02 तक) [कार्तिक मासे नवं. की १४], मार्गशीर्ष नवं. की १८, २२-२३, २७, २८, २९, दिसं. की २, ८, (25/32 तक), ११ (12/11 बाद), सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३ (19/40 तक), २५ (21/34 बाद), २८, फर. की ४, ७, ८, ९, १८, १९ (29/03 तक), २१ (29/08 बाद), २२, २४, २५, मार्च की ७, ८, ९, ११, १२ शुभ रहेंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
कर्क राशि—मई की १५, २८, २९, ३१, जून की १, २, ३ (10/55 तक), ६, ८, ९, जुला. की १७, २०, २१, २३, २५, २६, २७ (25/23 तक), ३०, ३१, अग. की १, २, ५, ६, ११, १२, १३, १४ (19/46 तक), १७, १९, २१, २२, २३, २६, २७, २९, ३०, सितं. की १, २-३ (चं.दा.), ९, १०, १३, १७, १८, १९, २० (13/36 तक), अक्तू. की ८ (15/39 तक), १०, ११, १५, नवं. की १८, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की १, ८, ९, १०, ११ (12/10 तक), सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५ (21/34 तक), २८, फर. की ७, ८, ९ तारीखें शुभ रहेंगी।	कर्क के लड़के को श्रावण, भाद्र, मार्ग. व माघ मासों में सूर्य की पूजा, दान तथा आषाढ़ कार्तिक व फागुन मास त्याज्य होंगे। कर्क राशि की कन्या को संवतारम्भ से 1 मई तथा पुनः 1 नवं. से 5 दिसं. तक गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा।	***कर्क राशि***—मई की १५, २८, २९, ३१, जून की १, २, ३ (10/55 तक), ६, ८, ९, १६, १७, १९, २०, २३, २४, २७, २८, २९, ३० (18/31 तक), जुला. की ३, ४, ८, ९, १४, १७, २०, २१, २३, २५, २६, २७ (25/23 तक), ३०, ३१ अग. की १, २, ५, ६, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१, २२, २३, २६, २७, २९, ३०, सितं. की १, २, ३ (चं.दा.), ९, १०, १३, १७, १८, १९, २० (13/36 तक), अक्तू. की ८ (15/39 तक), १०, ११, १५, [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३] मार्गशीर्षे नवं. की १८, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की १, ८, ९, १०, ११ (12/10 तक), सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५ (21/34 तक), २८, फर. की ७, ८, ९, १८, १९, २०, २१ (29/08 तक), २४, २५, मार्च की ७, ८, ९, ११, १२ शुभ रहेंगी।
सिंह राशि—मई की १५, २९, ३१, जून की १, २, ३, ८, ९, १६, १७, १९, २०, २१, २२, २७, २८, २९, ३०, जुला. की ८, ९, १४, अग. की १९, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, सितं. की १, २, ३, ९, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, अक्तू. की ८, ९, १५ [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] सन् 2011 ई. में जन. की १६,२३,२५, फर. की ४, ९, १८, १९, २०, २१, २२, मार्च की ८ (11/19 बाद), ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।	सिंह राशि के लड़के को आश्विन एवं फाल्गुन मासों में सूर्य की पूजा/दानादि रहेगा। श्रावण, मार्ग. व चैत्र मास त्याज्य होंगे। सिंह की कन्या को 2 मई से 31 अक्तू. तक तथा पुनः 6 दिसं. से संवतान्त तक गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा।	***सिंह राशि***—मई की १५, २९, ३१, जून की १, २, ३, ८, ९, १६, १७, १९, २०, २१, २२, २७, २८, २९, ३०, जुला. की ८, ९, १४, १७, १८, १९, २३, २५, २६, २७, २८, अग. की १, २, ५, ६, ११, १२, १३, १४, १९, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, सितं. की १, २, ३, ९, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, अक्तू. की ८, ९, १५ [कार्तिक मासें नवं. की १२, १३, १४] मार्गशीर्षे नवं. की १८ (27/58 बाद), २२, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की १, २, ८, ९, १०, ११ सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५, फर. की ४, ९, १८, १९, २०, २१, २२, मार्च की ८ (11/19 बाद), ११, १२ शुभ होंगी।
कन्या राशि—मई की १५, २८, ३१ (22/45 बाद), जून की १, २, ३, ६, १६-१७, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, जुला. की ३, ४, ८, ९, १४ (चं.दा.), १७, १८, १९, २०, २१, २५ (13/13 बाद), २६, २७, २८, ३०, ३१, अग. की ५, ६, ११-१२ (चं.दा.), १३, १४, सितं., की १७ (25/05 बाद), १८, १९, २०, अक्तू. को ८, ९, १०, ११, १५ (8/02 बाद) [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] मार्गशीर्षे नवं. को १८ (27/58 तक), २२, २३, २७-२८-२९ (चं.दा.), 30, दिसं. को १, २, ८ (25/32 बाद) ९, १०, ११, सन् 2011 ई. में जन. को १६, २३ (चं.दा.), २५, २८, फर. को ४, ७, ८, १८-१९ (चं.दा.), २०, २१, २२, २४, २५, मार्च को ७, ८ (11/19 तक), ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।	कन्या राशि के वर को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में सूर्य की पूजा/दानादि होगा। वैशाख, भाद्र. मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को सवंतारम्भ से 1 मई तक तथा पुनः 1 नवं. से 5 दिसं. तक गुरु साधारण रूप से पूज्य रहेगा।	***कन्या राशि***—मई की १५, २८, ३१ (22/45 बाद), जून की १, २, ३, ६, १६, १७, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, जुला. की ३, ४, ८, ९, १४, १७, १८, १९, २०, २१, २५ (13/13 बाद), २६, २७, २८, ३०, ३१, अग. की ५, ६, ११, १२, १३, १४, १७, २१ (19/08 बाद), २२, २३, २४, २६, २७, सितं. की १, २, ३, ९, १०, ११, १२, १३, १७ (25/05 बाद) १८, १९, २०, अक्तू. की ८, ९, १०, ११, १५ (8/02 बाद) [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३ १४] मार्गशीर्षे नवं. की १८, (27/58 तक), २२, २३, २७-२८-२९, ३०, दिसं. की १, २, ८ (25/32 बाद) ९, १०, ११, सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५, २८, फर. की ४, ७, ८, १८, १९, २०, २१, २२, २४, २५, मार्च की ७, ८ (11/19 तक), ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।
तुला राशि—जून की १६, १७, १९-२० (चं.दा.), २१, २२, २३, २४, २७, ३० (18/32 बाद), जुला. की ३, ४, १४, १७ (चं.दा.), १८, १९, २०, २१, २३, २५ (13/13 तक), २७ (25/23 बाद), २८, ३०, ३१ अग. की १, २, ६ (17/4 बाद), ११, १२, १३-१४ (चं.दा.) १७, १९, २१ (19/08 तक), २४, २६, २७, २९, ३०, सितं. की २ (25/45 बाद), ३, ९-१० (चं.दा.), ११, १२, १३, [कार्तिक मासे नवं. की १४], मार्गशीर्षे नवं. की १८, २३ (20/01 बाद), २७, २८, २९, ३०, दिसं. की १ (चं.दा.), २, ८ (25/32 तक), ११ (12/11 बाद), सन् 2011 ई. में फर. की १८, १९-२० (चं.दा.), २१, २२, २४, २५, मार्च की ७, ८, ९ तारीखें शुभ होंगी।	तुला के वर को वैशा., आषाढ़, कार्ति., मार्ग. व फागु. मासों में सूर्य की पूजा/दान होगा। ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को 2 मई से 31 अक्तू. तथा पुनः 6 दिसं. से संवतान्त तक गुरु साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	***तुला राशि***—मई की २८, २९, ३१ (22/45 तक), जून की ३ (10/55 बाद), ६, ८, ९, १६, १७, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७, ३० (18/32 बाद), जुला. की ३, ४, १४, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५ (13/13 तक), २७ (25/23 बाद), २८, ३०, ३१ अग. की १, २, ६ (17/04 बाद), ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१ (19/08 तक), २४, २६, २७, २९, ३०, सितं. की २ (25/45 बाद), ३, ९, १०, ११, १२, १३, २० (13/36 बाद), अक्तू. की ८, ९, १०, ११, १५ (8/02 तक), [कार्तिक मासे नवं. की १४], मार्गशीर्षे नवं. की १८, २३ (20/01 बाद), २७, २८, २९, ३०, दिसं. की १, २, ८ (25/32 तक), ११ (12/11 बाद), सन् 2011 ई. में जन. की २३, २५, २८, फर. की ४, ७, ८, ९, १८, १९, २०, २१, २२, २४, २५, मार्च की ७, ८, ९ शुभ होंगी।
वृश्चिक राशि—मई की १५, २८, २९, ३१, जून की १, २, ३ (10/55 तक), ६, ८, ९, जुला. की १७, १८-१९ (चं.दा.), २०. २१, २३, २५, २६, २७ (25/23 तक), ३०, ३१, अग. की १, २, ५, ६ (17/04 तक), ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१, २२, २३, २६, २७, २९, ३०, सितं. की १, २ (25/45 तक), ९, १०, ११-१२ (चं.दा.), १३, १७, १८, १९, २० (13/36 तक), अक्तू. की ८-९ (चं.दा.), १०, ११, १५, नवं. की १८, २२, २३ (20/01 तक), २७, २८, २९, ३०, दिसं. की १, २ (चं.दा.), ८, ९, १०, ११ (12/10 तक), सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५, २८, फर. की ७, ८, ९ तारीखें शुभ होंगी।	वृश्चिक राशि के वर को ज्येष्ठ, श्राव. और मार्ग. मासों में सूर्य पूजा/दानादि तथा आषाढ़, कार्तिक व फागु. त्याज्य हैं। इस राशि की कन्या को गुरु संवतारम्भ से 1 मई तक तथा पुनः 1 नवं. से 5 दिसं. तक विशेष रूप से पूज्य रहेगा।	***वृश्चिक राशि***—मई की १५, २८, २९, ३१, जून की १, २, ३ (10/55 तक), ६, ८, ९, १६, १७, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७, २८, २९, ३० (18/32 तक), जुला. की ३, ४, ८, ९, १४, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २७ (25/23 तक), ३०, ३१, अग. की १, २, ५, ६ (17/04 तक), ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१, २२, २३, २६, २७, २९, ३०, सितं. की १, २ (25/45 तक), ९, १०, ११, १२, १३, १७, १८, १९, २० (13/36 तक), अक्तू. की ८, ९, १०, ११, १५ [कार्तिक मासे नवं की १२, १३] मार्गशीर्षे नवं. की १८, २२, २३ (20/01 तक), २७, २८, २९, ३०, दिसं. की १, २, ८, ९, १०, ११ (12/10 तक), सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५, २८, फर. की ७, ८, ९, १८, १९, २०, २१, २२, २४, २५, मार्च की ७, ८, ९, ११, १२ शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑ | वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि | ❑ कन्या (लड़की) ❑

वर (लड़का)	वर कन्या को शुभ पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
धनु राशि—मई की १५, २८ (चं.दा.), २९, ३१, जून की १, २,३, ८, ९, १६, १७, १९, २०, २१, २२, २३-२४, (चं.दा.), २७, २८, २९, ३०, जुला. की ८, ९, १४, अग. की १७ (चं.दा.), १९, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, सितं. की १, २, ३ ९, १०, ११, १२, १३ (चं.दा.), १७, १८, १९, २०, अक्तू. की ८, ९, १०-११ (चं.दा.), १५ [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५, २८ (चं.दा.), फर. की ४, ९, १८, १९, २०, २१, २२, २४-२५ (चं.दा.), मार्च की ८ (11/19 बाद), ९, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।	धनु के लड़के को वैशा., आषा., भाद्र. मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रावण, मार्ग. मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु संवतारम्भ से 1 मई तक तथा पुनः 1 नवं. से 5 दिसं. तक साधारण पूज्य तथा 2 मई से 31 अक्तू. तथा 6 दिसं. से संवतान्त तक विशेष पूज्य रहेगा।	**धनु राशि**—मई की १५, २८ (चं.दा.), २९, ३१, जून की १, २, ३, ८, ९, १६, १७, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७, २८, २९, ३०, जुला. की ८, ९, १४, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २७, २८, अग. की १, २, ५, ६, ११, १२, १३, १४, १७ (चं.दा.), १९, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, सितं. की १, २, ३, ९, १०, ११, १२, १३, १७, १८, १९, २०, अक्तू. की ८, ९, १०, ११, १५ [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] मार्गशीर्षे नवं. की १८ (27/58 बाद), २२, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की १, २, ८, ९, १०, ११, सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५, २८, फर. की ४, ९, १८, १९, २०, २१, २२, २४, २५, मार्च की ८ (11/19 बाद), ९, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।
मकर राशि—मई की १५, २८, २९-३१ (चं.दा.), जून की १, २, ३, ६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७ (चं.दा.), २८, २९, ३०, जुला. की ३, ४, ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २३-२५ (चं.दा.), २६, २७, २८, ३०, ३१, अग. की ५, ६, १२ (18/35 बाद), १३, १४, सितं. की १७, १८, १९, २०, अक्तू. की ८, ९, १०, ११, १५ (चं.दा.) [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८ (27/58 तक), २२, २३, ३०, दिसं. की १, २, ८ (चं.दा.), ९, १०, ११, सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३ (19/40 बाद), २५, २८ फर. की ४, ७,८, १९ (29/03 बाद), २०, २१, २२, २४, २५, मार्च की ७, ८ (11/19 तक), ११, १२ शुभ होंगी।	मकर के लड़के को ज्ये., श्राव. एवं आश्विन मासों में सूर्य की पूजा तथा वैशा., भाद्र. मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को 2 मई से 31 अक्तू. तक तथा पुनः 6 दिसं. से संवतान्त तक गुरु साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**मकर राशि**—मई की १५, २८, २९, ३१, जून की १, २, ३, ६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७, २८, २९, ३०, जुला. की ३, ४, ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २७, २८, ३०, ३१, अग. की ५, ६, १२ (18/35 बाद), १३, १४, १७, १९-२१ (चं.दा.), २२, २३, २४, २६, २७, सितं. की १, २, ३, ९, १०, ११, १२, १३, १७, १८, १९, २०, अक्तू. की ८, ९, १०, ११, १५ [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८ (27/58 तक), २२, २३, ३०, दिसं. की १, २, ८, ९, १०, ११, सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३ (19/40 बाद), २५, २८ फर. की ४, ७, ८, १९ (29/03 बाद), २०, २१, २२, २४, २५, मार्च की ७, ८ (11/19 तक), ११, १२ शुभ होंगी।
कुम्भ राशि—जून की १६, १७, २१, २२, २३, २४, २७, २८-२९-३० (चं.दा.), जुला. की ३, ४, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २५-२६-२७ (चं.दा.), २८, ३०, ३१, अग. की १, २, ६ (17/04 बाद), ११, १२ (18/35 तक), १४ (19/46 बाद), १७, १९, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २९, ३०, सितं. की २ (25/45 बाद), ३, ११, १२, १३, [कार्तिक मासे नवं. की १२-१३ (चं.दा.), १४] मार्ग. में नवं. की १८, २३ (20/01 बाद), २७, २८, २९, दिसं. की २, ८-९-१० (चं.दा.), ११, सन् 2011 ई. में फर. की १८, १९ (29/03 तक), २१ (29/08 बाद), २२, २४, २५, मार्च की ७, ८, ९ तारीखें शुभ होंगी।	कुम्भ के लड़के को आषा. भाद्र. व कार्तिक में सूर्य की पूजा होगी। ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य होंगे। कुम्भ राशि की कन्या को संवतारम्भ से 1 मई तक तथा पुनः 1 नवं. से 5 दिसं. तक गुरु साधारण पूज्य रहेगा।	**कुम्भ राशि**—मई की २८, २९, ३१, जून की १, २, ३, ६, ८, ९, १६, १७, २१, २२, २३, २४, २७, २८, २९, ३०, जुला. की ३, ४, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, अग. की १, २, ६ (17/04 बाद), ११, १२ (18/35 तक), १४ (19/46 बाद), १७, १९, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २९, ३०, सितं. की २ (25/45 बाद), ३, ११, १२, १३, १७, १८, १९, २०, अक्तू. की ८ (15/40 बाद), ९, १०, ११, १५, [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] मार्गशीर्षे नवं. की १८, २३ (20/01 बाद), २७, २८, २९, दिसं. की २, ८, ९, १०, ११, सन् 2011 ई. में जन. की २३ (19/40 तक), २५ (21/34 बाद), २८. फर. की ४, ७, ८, ९, १८, १९ (29/03 तक), २१ (29/08 बाद),२२, २४, २५, मार्च की ७, ८, ९ शुभ होंगी।
मीन राशि—मई की १५, २८, २९, ३१, जून की १, २, ३ (चं.दा.), ६, ८, ९, जुला. की १७, २०, २१, २३, २५, २६, २७-२८ (चं.दा.), ३०, ३१, अग. की १, २, ५, ६ (17/04 तक), ११, १२, १३, १४ (19/46 तक), १७, १९, २१, २२, २३, २४ (चं.दा.), २६, २७, २९, ३०, सितं. की १, २ (25/45 तक), ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, अक्तू. की ८ (15/40 तक), १०, ११, १५, नवं. की १८, २२, २३ (20/01 तक), २७, २८, २९, ३०, दिसं. की १, ८, ९, १०, ११ (चं.दा.) सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५ (21/34 तक), २८, फर. की ४, ७, ८, ९ तारीखें शुभ होंगी।	मीन के वर को ज्येष्ठ, भाद्र. व माघ मास शुभ, वैशाख, श्रावण, आश्वि. व मार्ग. मास पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक व फागुन मास त्याज्य होंगे। मीन राशि की कन्या को मीनस्थ गुरु काल साधारण पूज्य रहेगा। (ता. 2 मई से 31 अक्तू. तथा फिर 6 दिसं. से संवतान्त)	**मीन राशि**—मई की १५, २८, २९, ३१, जून की १, २, ३, ६, ८, ९, १६, १७, १९, २०, २३, २४, २७, २८, २९, ३०, जुला. की ३, ४, ८, ९, १४, १७, २०, २१, २३, २५, २६, २७, २८ (चं.दा.), ३०, ३१, अग. की १, २, ५, ६ (17/04 तक), ११, १२, १३, १४ (19/46 तक), १७, १९, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २९, ३०, सितं. की १, २ (25/45 तक), ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, अक्तू. की ८ (15/40 तक), १०, ११, १५, [कार्तिक मासे नवं. की १२, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८, २२, २३ (20/01 तक), २७, २८, २९, ३०, दिसं. की १, ८, ९, १०, ११ सन् 2011 ई. में जन. की १६, २३, २५ (21/34 तक), २८, फर. की ४, ७, ८, ९, १८, १९, २०, २१ (29/08 तक), २४, २५, मार्च की ७, ८, ९, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।

मुण्डन संस्कार मुहूर्त–सं. २०६७

नीचे लिखे विविध मुहूर्त्तों में अधिक मास, तेरह दिनात्मक पक्ष, क्रूर-ग्रह की युति, क्रूर-ग्रह वेध आदि का यथासम्भव ध्यान दिया गया हैं जबकि कुछ पंचाँगकार मुहूर्त शास्त्र नियमों की अवहेलना करके शास्त्र विरूद्ध आचरण कर रहे हैं। पाठक वृन्द अशुद्ध एवं गलत पंचांगों से सावधान रहें।

मुहूर्त्तों के सम्बन्ध में किसी पाठक को कोई शंका हो, तो टैलीफोन या पत्र-व्यवहार करके स्पष्टीकरण माँग सकते हैं। पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

बालक के आयु के विषम वर्षों में, उत्तरायण मासों में तथा बालक की जन्मराशि से अष्टमस्थ राशि/लग्न को छोड़कर, ज्येष्ठ मास में बड़े (ज्येष्ठ) लड़के का मुण्डन करना शुभ नहीं होता। मुण्डन करने वाले बालक के सगोत्र परिवार में यदि छ: मास के भीतर किसी का उपनयन या विवाह सम्पन्न हुआ तो गृह में मुण्डन नहीं करना चाहिए। कुल परम्परानुसार कुछ लोग नवरात्रों में अथवा अक्षया तीज आदि शुभ मुहूर्तों में, देवी माता के मन्दिर में या सिद्ध तीर्थ स्थल पर विना सुनियोजित मुहूर्त के भी मुण्डन आदि शुभ कार्य कर लेते हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये. कृ. २, शनि	29 मई	१६ ज्ये.	ज्ये.	ल. ४, अभिजित
ज्ये. कृ. ६, गुरु	3 जून	२१ ज्ये.	धनि.	ल. ४, (चं. दा.), अभिजित
ज्ये. कृ. ७, शुक्र	4 जून	२२ ज्ये.	शत	ल. ४, अभिजित
ज्ये. कृ. १२, बु.	9 जून	२७ ज्ये.	अश्वि	ल. ४, शु. दा.
ज्ये. शु. १०, चं.	21 जून	७ आषा.	चित्रा	ल. ४ (सू. दा.)
—सन् 2011 ई. में—				
माघ कृ. १, गुरु	20 जन.	७ माघ	पुष्य	ल. १, अभिजित
माघ कृ. १२, र.	30 जन.	१७ माघ	ज्ये.	8/23 तक
माघ शु. १, शुक्र	4 फर.	२२ माघ	धनि.	9/55 बाद, ल. १, अभि.
माघ शु. २, शनि	5 फर.	२३ माघ	शत	ल. १, अभिजित (वैश्यां)
माघ शु. ५, मंग	8 फर.	२६ माघ	रेव	ल. १, (चं. दा.) क्षत्रियाणां
माघ शु. ६, बुध	9 फर.	२७ माघ	अश्वि	अभिजित
माघ शु. ७, गुरु	10 फर.	२८ माघ	अश्वि	मु. 7/34 तक
माघ शु. १३, बु.	16 फर.	४ फाल्गु	पुष्य	प्रातः 10/20 बाद
फागु. कृ. ६, बु.	23 फर.	११ फाल्गु	स्वा.	दि. ल. १, अभिजित
फागु. शु. ३, चं.	7 मार्च	२३ फाल्गु	रेव	ल. १, २, अभि. (प्रा. 8/21 बाद)
[illegible]	[illegible]	[illegible] फाल्गु	अश्वि	[illegible] 12/07 बाद (भद्रा के बाद)

–नवरात्रों में विशेष शुभ दिन–

परम्परागत वासन्त (चैत्र) या शरद् नवरात्रों में मुण्डनादि कर्म करने का संकल्प हो, तो नवरात्रों में भी विशेष शुभ एवं ग्रहणीय मुहूर्त्त इस प्रकार से होंगे—

शरद् नवरात्रों में—

आश्वि. शु.१, शु.	8 अक्तू.	२३ आश्वि	चित्रा	दि. ल. ८, १० (चं. मं. दा.)
आश्वि.शु.२, शनि	9 अक्तू.	२४ आश्वि	स्वा.	ल. ८, १० (चं. मं. दा.)

चैत्र नवरात्रों में 19 मार्च (2010 ई.) तक गुरु अस्त, होने के कारण मुण्डन संस्कार करने शुभ नहीं होंगे।

नींव एवं गृहारम्भ मुहूर्त्त सं. २०६७

नींव (शिलान्यास) एवं गृह निर्माण आदि के मुहूर्तों में गृहस्वामी की राशि अनुकूलता देखकर निम्न शुभ मुहूर्तों में वास्तु पूजन, नवग्रह शान्ति, होम यज्ञादि करके, शिलान्यास, नींव भरण, गृहारम्भ (निर्माण) प्रारम्भ करना चाहिए। गृहारम्भ में ५, ७, ९, १५, २१, २४ प्रविष्टों में भूमि-शयन (सुप्त भूमि) का भी विचार किया गया है। सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ एवं २६वें चन्द्र नक्षत्र पर भी भूमि शयन का विचार किया जाता है। अधिक सूक्ष्मता के लिए आगे दिए गए सूर्यभाद् वृष चक्र का भी प्रयोग कर सकते हैं। लैंटर (छत) डालना और स्तम्भ आरोहणादि काल में पंचक नक्षत्रों का भी अवश्य विचार कर लेना उपयुक्त होगा।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये. कृ. ७, शुक्र	4 जून	२२ ज्ये.	शत.	अभिजित चं. दा.
ज्ये. कृ.१०, चंद्र	7 जून	२५ ज्ये.	उ.भा.	मु. 7/22 तक तदुप. भद्रा
ज्ये.कृ. १२, बुध	9 जून	२७ ज्ये.	अश्वि	ल. ४ (शु. दा.) अभि.
आषा.शु.६, शनि	17 जुला	२ श्राव.	हस्त	ल. ७, ८ तुलायां चं.दा. अभि.
आषा.शु.११, बु.	21 जुला	६ श्राव.	अनु.	सिंह-तुला (चं. श. दा.)
आ. शु.१५, चंद्रे	26 जुला	११ श्राव.	उ/श्र.	ल. ७ (श.मं.दा.), ८ (श.दा.)
श्रा. कृ. २, बुधे	28 जुला	१३ श्राव.	धनि.	ल. ५ (सू.चं.दा.), ७ (श.शु.मं.दा.)
श्रा. कृ. ३, गुरू	29 जुला	१४ श्राव.	शत.	ल. 14/05 बाद, वृश्चिक
श्रा. कृ. ५, शनि	31 जुला	१६ श्राव.	उभा.	अभि., ल. ८ (श. दा.)
श्रा. कृ. १०, गु.	5 अग.	२१ श्राव.	रोह.	प्रातः 10/26 तक
श्रा. कृ.११, शुक्र	6 अग.	२२ श्राव.	मृग	ल. ५ (सू.गु.दा.), ८ चं.दा., अभि.
श्रा.शु. ५, शनि	14 अग.	३० श्राव.	चित्रा	ल. ७ (श.शु.दा.), ८ (श.दा.)
श्रा. शु.१२, शनि	21 अग.	६ भादों	उ.षा.	ल. तुला 12/29 के बाद वृश्चिक (८) श. दा.)
भा. कृ.१, बुध	25 अग.	१० भादों	शत.	ल. ७, ८ अभिजित
भा. कृ.३, शुक्र	27 अग.	१२ भादों	उ.भा.	मु. प्रातः 10/35 तक, चंद्र दान
भा. कृ.७, बुध	1 सितं.	१७ भाद्र	रोह.	मु. 13/19 के बाद
भा. कृ.८, गुरू	2 सितं.	१८ भाद्र	रोह	ल. वृश्चिक

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
भा.कृ.१०, शुक्र	3 सितं.	१९ भाद्र	मृग	मु 9/51 उप. ल. ७ (श.मं.दा.)
भा. शु. १, गुरू	9 सितं.	२५ भाद्र	उफा.	ल. ८ (मं.शु.दा., अभि.)
भा. शु. २, शुक्र	10 सितं.	२६ भाद्र	हस्त	ल. ८ (मं. शु. दा.)
भा. शु. ६, सोम	13 सितं.	२९ भाद्र	अनु.	मु. 14/02 उप.
कार्ति.शु.६, शुक्र	12 नवं.	२७ कार्ति.	उ.षा.	मु. 11/54 तक
कार्ति. शु. ७, श.	13 नवं.	२८ कार्ति.	श्रव.	मु. 14/25 तक
का. शु. १२, गु.	18 नवं.	३ मार्ग.	रेवती	ल. १०, अभिजित
का. शु. १३, शु.	19 नवं.	४ मार्ग.	अश्वि	ल. १०, अभिजित
मा. कृ.१०, बुधे	1 दिसं.	१६ मार्ग.	हस्त	दि. ल. १ (श. चं. दा.)
मा. कृ. १२, गुरू	2 दिसं.	१७ मार्ग.	चित्रा	ल. १०, १, अभि. चं. दा.
मा. शु. ६, शनि	11 दिसं.	२६ मार्ग.	धनि.	ल. १०, अभि. मं. दा.
—सन् 2011 ई. में—				
माघ कृ.५, चंद्रे	24 जन.	११ माघ	उ.फा.	ल. १२, अभि., आवश्यके मुहूर्त (7/47 तक) चं. दा.
माघ कृ.११, श.	29 जन.	१६ माघ	अनु.	
माघ शु. १, शुक्र	4 फर.	२२ माघ	धनि.	ल. १ (मं. दा.) अभिजित
मा. शु. २, शनि	5 फर.	२३ माघ	शत.	ल. १ मं. दा., अभिजित
माघ शु. ६, बुधे	9 फर.	२७ माघ	अश्वि	ल. १२ (श. ७वें पूज्य दान व) आवश्यके
माघ शु. ७, गुरू	10 फर.	२८ माघ	अश्वि	मु. प्रातः 7/34 तक
माघ शु.१३, बुध	16 फर.	४ फागु.	पुष्य	ल. १ (चं.पू. दान व.), अभि.
फा. कृ.७, गुरू	24 फर.	१२ फागु.	अनु.	मुहूर्त 13/36 उप.
फागु. कृ. ८, शु.	25 फर.	१३ फागु.	अनु.	ल. वृष (चं. मं. दा.)
फा.शु.२/३, चंद्रे	7 मार्च	२३ फागु.	रेव.	मु. 8/21 उप. ल. १, २, अभि.
फा. शु. ५, बुधे	9 मार्च	२५ फागु.	अश्वि	मु. दुपै. 12/07 उपरांत
फा. शु. ७, शनि	12 मार्च	२८ फागु.	रोह.	ल. १, २, अभि.

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त संवत् २०६७

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी से पूछ कर रखे गए पूर्व निर्धारित मुहूर्त पर नव-गृह में वास्तु-पूजा शान्ति, नवग्रह पूजन-शान्ति, स्वस्तिवाचन एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को यथाशक्ति भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन, सवत्सा गाय, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये.कृ. १, शुक्रे	28 मई	१५ ज्ये.	अनु.	ल. कर्क (शु. दा.), अभि.
ज्ये.कृ. ६, गुरू	3 जून	२१ ज्ये.	धनि.	ल. कर्क (चं. दा.), अभि.
ज्ये. कृ. ७, शुक्र	4 जून	२२ ज्ये.	शत.	अभिजित चं. दा.
ज्ये. कृ.१०, सोम	7 जून	२५ ज्ये.	उ.भा.	ल. कर्क, (शु. दा.), अभि.
ज्ये.कृ. १२, बुध	9 जून	२७ ज्ये.	अश्वि	ल. कर्क, (शु. दा.), अभि.
ज्ये.शु. ८, शनि	19 जून	५ आषा.	उ.फा.	ल. कर्क-गुरु दृष्ट्याशुभः

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये.शु.१०, सोम	21 जून	७ आषा.	चित्रा	दिवा. ल. कर्क सू.दा., अभि.
कार्ति.शु.६, शुक्र	12 नवं.	२७ कार्ति	उ.षा.	मु. 11/54 तक, अभिजित
कार्ति. शु.७, श.	13 नवं.	२८ कार्ति.	श्रव.	मु. 14/25 तक, अभि.
का. शु.१२, गुरू	18 नवं.	३ मार्ग.	रेवती	ल. मकर, अभि., भीष्म पं. वि.
का.शु.१३, शुक्र	19 नवं.	४ मार्ग.	अश्वि	ल. मकर, अभिजित रूद्री पूजन (भीष्म पंचक)
मा. कृ. १, सोम	22 नवं.	७ मार्ग.	रोह.	ल. मकर, अभिजित
मा. कृ. ३, बुधे	24 नवं.	९ मार्ग.	मृग.	मुहूर्त्त प्रातः 7/57 तक
मा.कृ.१०, बुधे	1 दिसं.	१६ मार्ग.	हस्त	ल. मकर (चं.दा.), अभि.
मा.कृ.१२, गुरू	2 दिसं.	१७ मार्ग.	चित्रा	ल. मकर, मेष, चं. दा.
मा. शु.६, शनि	11 दिसं.	२६ मार्ग.	धनि.	मकर (मं.दा.), अभिजित

—सन् 2011 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ कृ.१, गुरू	20 जन.	७ माघ	पुष्य	मीन, मेष, अभिजित
माघ कृ.५, चंद्रे	24 जन.	११ माघ	उ.फा.	मीन, अभिजित, आवश्यके
मा.कृ.१०, शुक्रे	28 जन.	१५ माघ	अनु.	वृष, अभिजित, (चंद्र दा.)
मा.कृ.११, शनि	29 जन.	१६ माघ	अनु.	मुहूर्त्त 7/47 तक
माघ शु.१, शुक्रे	4 फर.	२२ माघ	धनि.	ल. १ (मं. चं. दा.), अभि.
माघ शु. २,शनि	5 फर.	२३ माघ	शत.	ल. १ (मं. दा.), अभि.
माघ शु.६, बुध	9 फर.	२७ माघ	अश्वि	ल. मीन (श. पू. दान), अभि. (आवश्यके)
माघ शु.७, गुरू	10 फर.	२८ माघ	अश्वि	प्रातः 7/34 तक आवश्यके
माघ शु.१३,बुध	16 फर.	४ फागु.	पुष्य	ल. १ (चं.पू. दान व), अभि.
फा.कृ. ७, गुरू	24 फर.	१२ फागु.	अनु.	मुहूर्त्त 13/36 उप.
फा. कृ.८, शुक्र	25 फर.	१३ फागु.	अनु.	ल. वृष (चं. मं. दा.)
फा.शु.२/३, चंद्रे	7 मार्च	२३ फागु.	रेव.	मु. 8/21 उप. ल. मेष, वृष
फागु.शु.५, बुध	9 मार्च	२५ फागु.	अश्वि	मु. दुपै. 12/07 उप.
फागु.शु.७, शनि	12 मार्च	२८ फागु.	रोह.	ल. १, २, अभिजित

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त २०६७ संवत

अस्थायी तौर पर किराये आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मूहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे। ध्यान रहे, पुराने निजी या किराये के मकान में प्रवेश के समय भी कलश पूजन, देव पूजन, नवग्रह शान्ति, ब्राह्मण भोजन आदि करवाना शुभ होता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ३,रवि	16 मई	३ ज्ये.	मृग	ल. ५ (मं. दा.), अभि. स्वयं सिद्ध आवश्यके
आषा.शु.६, शनि	17 जुला	२ श्राव	हस्त	ल. ७ चं. दा., ८, अभि.
आषा.शु.८, रवि	18 जुला	३ श्राव	चित्रा	सिंह, तुला
आषा.शु.११,बु.	21 जुला	६ श्राव	अनु.	सिंह तुला, (चं.दा.), अभि.
आषा.शु.१५,चं.	26 जुला	११ श्राव	उ/श्र.	ल. तुला, वृश्चि. (श. दा.)
श्राव.कृ.२, बुधे	28 जुला	१३ श्राव	धनि.	ल. सिंह, तुला दानं च मुहूर्त्त
श्राव.कृ.३, गुरू	29 जुला	१४ श्राव	शत.	मूहूर्त्त 14/05 बाद, वृश्चिक
श्रा. कृ.५, शनि	31 जुला	१६ श्राव	उभा.	ल. वृश्चिक, अभिजित
श्रा. कृ.१०, गुरू	5 अग.	२१ श्राव	रोह.	ल. सिंह व वृश्चिक
श्रा. कृ.११,शुक्र	6 अग.	२२ श्राव	मृग	सिंह, वृश्चिक, अभि. चं.दा.
श्राव. शु.३, गुरू	12 अग.	२८ श्राव	उ.फा.	ल. वृश्चिक
श्रा. शु. ५, शनि	14 अग.	३० श्राव	चित्रा	ल. तुला, वृश्चिक, अभि.
आ.शु. १, शुक्र	8 अक्टू	२३ आश्वि	चित्रा	मुहूर्त्त प्रातः 9/06 तक
आ.शु. १०, रवि	17 अक्टू	१ कार्ति	श्रव.	अभिजित
कार्ति.कृ.३०,शु.	5 नवं.	२० कार्ति	स्वा.	सायं प्रदोष काले

विपणि (दुकानादि) या व्यवसाय शुरू करने के मुहूर्त्त—संवत् २०६७

व्यवसाय में दुकान, कार्यालय आदि शुरु करने के मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव पूजा, नवग्रह पूजन के पश्चात् दृढ़ कलश स्थापन एवं कन्या पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगी जनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए। कार्तिक मास में सूर्य की पूजा, दान आदि करना शुभ होगा।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु.१, भौमे	16 मार्च	३ चैत्र	उभा.	वृष, अभि. स्वयं सिं. आव.
वैशा.शु.३, रवि	16 मई	३ ज्ये.	मृग.	ल. सिंह (मं. दा.), अभि., स्वयं सिद्ध यो. आवश्यके
ज्ये. कृ. १, शुक्र	28 मई	१५ ज्ये.	अनु.	ल. कर्क (शु.दा.) अभि.
ज्ये.कृ. ६, गुरू	3 जून	२१ ज्ये.	धनि.	दि. ल. कर्क (चं. शु. दा.)
ज्ये.कृ.१०, चंद्र	7 जून	२५ ज्ये.	उ.भा.	मुहूर्त्त 7/21 तक भद्रापूर्वे
ज्ये.कृ.१२, बुध	9 जून	२७ ज्ये.	अश्वि	ल. कर्क (शुक्र दान)
ज्ये.शु.८, शनि	19 जून	५ आषा.	उ.फा.	कर्क, तुला, व्यतीपाते रूद्री पू.
ज्ये.शु.१०, चंद्र	21 जून	७ आषा.	चित्रा	कर्क, अभिजित
ज्ये.शु.१२, बुध	24 जून	१० आषा.	अनु.	ल. कर्क (सू.चं.दा.), तुला (श. दा.)
आषा.कृ.२, चंद्र	28 जून	१४ आषा.	उ.षा.	कर्क (चं.दा.), तुला (शं.दा.)
आषा.कृ.५, गुरू	1 जुला	१७ आषा.	धनि.	मुहूर्त्त प्रातः 8/02 तक
आषा. कृ.७,रवि	4 जुला	२० आषा.	उ.भा.	ल. कर्क वृश्चि. (सू. दा.), 16/27 तक
आषा. शु.६,शनि	17 जुला	२ श्राव.	हस्त	ल. तुला, वृश्चिक
आषा.शु.८, रवि	18 जुला	३ श्राव.	चित्रा	ल. वृश्चिक
आषा.शु.११,बु.	21 जुला	६ श्राव.	अनु.	ल. ५, ७ चं. दा., अभि.
आषा.शु.१५, र.	25 जुला	१० श्राव.	उ.षा.	ल. ५, ७, ८ (श. दाः)
आषा.शु.१५,चं.	26 जुला	११ श्राव.	श्रव.	ल. तुला, वृश्चिक
श्राव. कृ.२, बुध	28 जुला	१३ श्राव.	धनि.	ल. सिंह, तुला
श्रा. कृ.१०, गुरू	5 अग.	२१ श्राव.	रोह.	ल. सिंह, वृश्चिक
श्रा. कृ.११,शुक्र	6 अग.	२२ श्राव.	मृग	सिंह व वृश्चिके
श्रा. शु.३, गुरू	12 अग.	२८ श्राव.	उ.फा.	ल. वृश्चिक
श्रा. शु.५, शनि	14 अग.	३० श्राव.	ह/चि	ल. सिंह तुला, वृश्चिके श. शु. दो.
श्रा. शु.१२,शनि	21 अग.	६ भादों	उ.षा.	तुला 12/29 के बाद, वृश्चि.
श्रा. शु.१३, रवि	22 अग.	७ भादों	उ.षा.	तुला (मं.शु.श.दा.), वृश्चि.
भा.कृ. ३, शुक्र	27 अग.	१२ भादों	उभा	मुहूर्त्त प्रातः 10/35 तक चं. दान व पूजा
भा.कृ.४/५, रवि	29 अग.	१४ भादों	अश्वि	ल. तुला (श.चं.दा. ८, अभि.)
भा. कृ.५, चंद्रे	30 अग.	१५ भादों	अश्वि	ल. तुला (10/28 तक)
भा. कृ.७, बुध	1 सितं.	१७ भादों	रोह.	मु. 13/19 उपरांत
भा. कृ. ८, गुरू	2 सितं.	१८ भादों	रोह.	वृश्चिक
भा. कृ.१०,शुक्र	3 सितं.	१९ भादों	मृग	तुला ल. 9/51 उप. (शं.मं.दा.)
भा. कृ.१२, रवि	5 सितं.	२१ भादों	पुष्य	तुला (प्रातः 10/53 के बाद)
भा. शु. १, गुरू	9 सितं.	२५ भादों	उ.फा.	ल. वृश्चिक (मं. शु. दा.)
भा. शु. २, शुक्र	10 सितं.	२६ भादों	हस्त	मु. 14/02 उपरांत
भा. शु. ६, चंद्र	13 सितं.	२९ भादों	अनु.	मु. 14/02 उपरान्त
भा. शु. १२, चं.	20 सितं.	५ अश्वि	धनि.	ल. वृश्चिक मं. शु. दा.
का. शु. ६, शुक्र	12 नवं.	२७ कार्ति.	उ.षा.	मु. 11/54 तक
का. शु. ७, शनि	13 नवं.	२८ कार्ति.	श्रव.	मु. 14/25 तक
का. शु.१२, गुरू	18 नवं.	३ मार्ग.	रेव.	ल. मकर, अभि., भीष्म पं. वि.
का. शु.१३,शुक्र	19 नवं.	४ मार्ग.	अश्वि	ल. मकर, अभि. भीष्म पं. वि.
मार्ग. कृ.१, चंद्र	22 नवं.	७ मार्ग.	रोह.	ल. मकर, अभि.
मार्ग. कृ.३, बुध	24 नवं.	९ मार्ग.	मृग.	मु. प्रातः 7/57 तक
मार्ग. कृ.१०,बु.	1 दिसं.	१६ मार्ग	हस्त	दि. ल. १० (श. चं. दा.)
मार्ग. कृ.१२,गु.	2 दिसं.	१७ मार्ग	चित्रा	ल. १०, १, अभि. चं. दा.
मार्ग. शु. ५,शुक्र	10 दिसं.	२५ मार्ग	श्रव.	अभिजित
मार्ग.शु.६, शनि	11 दिसं.	२६ मार्ग	धनि.	ल. १०, अभि. मं. दा.

—सन् 2011 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ कृ. ५, चंद्र	24 जन.	११ माघ	उ.फा.	ल. १२ (शनि पूज्य) अभि.—आवश्यके
माघ कृ.१०, शु.	28 जन.	१५ माघ	अनु.	ल. वृष (चं. शु. दा. व पूजा)
माघ कृ.११, श.	29 जन.	१६ माघ	अनु.	मु. प्रातः 7/47 तक आवश्यके
माघ शु. १,शुक्र	4 फर.	२२ माघ	धनि.	ल. मेष (मं.दा.) अभिजित

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
माघ शु.६, बुधे	9 फर.	२७ माघ	अश्वि	ल. १२ (श. दा. व पूज्य) आव.
माघ शु.१३,बुधे	16 फर.	४ फागु	पुष्य	ल. १ (चं. पू. दान व) अभि.
फा.कृ. ३, रवि	20 फर.	८ फागु	उफा.	अभिजित
फागु.कृ.७, गुरू	24 फर.	१२ फागु	अनु.	मुहूर्त 13/36 उपरांत
फागु.कृ.८, शुक्र	25 फर.	१३ फागु	अनु.	ल. वृष (चं. मं. दा.)
फा.शु.२/३, चंद्र	7 मार्च	२३ फागु	रेव.	ल. मेष, वृष, अभि.
फागु.शु.५, बुध	9 मार्च	२५ फागु	अश्वि	मुहूर्त 12/07 उपरांत
फागु.शु.७, शनि	12 मार्च	२८ फागु.	रोह.	ल. मेष, वृष, अभिजित

द्विरागमन (मुकलावां) मुहूर्त सं. २०६७

विवाह उपरान्त पिता के गृह में आकर दूसरी बार पुनः पति के गृह में जाने को द्विरागमन (मुकलावा) कहते हैं। विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्तों के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है—अर्थात् शुक्र जिस दिशा (पूर्व या पश्चिम) में उदित होता हो, उस दिशा में शुक्र सम्मुख तथा उससे दाहिनी ओर की दिशा दक्षिणस्थ अशुभ मानी जाती है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.शु. ३, रवि	16 मई	३ ज्ये.	मृग	ल. सिंह, अभि. स्वयं सिद्ध मु.
का.कृ. ३०,शुक्र	5 नवं.	२० कार्ति.	स्वा.	सायं प्रदोष काले स्वयं सिद्ध
का.शु. १२, गुरु	18 नवं.	३ मार्ग	रेवती	ल. मकर, अभि. भीष्म पंचक (आवश्यके)
का.शु. १३,शुक्रे	19 नवं.	४ मार्ग	अश्वि	मकर, अभि. भीष्म पंचक रूद्री पू. (आवश्यके)
मार्ग.कृ. १,सोम	22 नवं.	७ मार्ग	रोह.	ल. मकर, अभिजित
मार्ग. कृ.३, बुध	24 नवं.	९ मार्ग	मृग.	मु. प्रात: 7.57 तक, आव.
मार्ग कृ.११,बुधे	1 दिसं.	१६ मार्ग	हस्त	ल. ११ (मं. बु. दा.), अभि.
मार्ग.कृ.१२, गुरु	2 दिसं.	१७ मार्ग	चित्रा	ल. मकर (मं.बु.दा.), अभि.
मार्ग.शु. ५, शुक्र	10 दिसं.	२५ मार्ग	श्रव.	ल. मकर (चं. दा. पूज्य बा)
मार्ग.शु.६, शनि	11 दिसं.	२६ मार्ग	धनि.	मकर (चं. केन्द्रे पू. दान व), मेषे (शुक्र पूजा)

—सन् 2011 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
माघ शु.१३,बुध	16 फर.	४ फागु.	पुष्य	ल. मेष, अभिजित
फा. कृ.३, रवि	20 फर.	८ फागु.	उफा.	अभिजित
फा.कृ. ७, गुरु	24 फर.	१२ फागु.	अनु.	मु. 13/36 उपरांत
फा. कृ.८, शुक्र	25 फर.	१३ फागु.	अनु.	ल. वृष (चं. मं. दान)
फा.शु. ३, चन्द्र	7 मार्च	२३ फागु.	रेव.	मु. 8/21 उप. ल. मेष, वृष
फा. शु.५, बुध	9 मार्च	२५ फागु.	अश्वि	मु. 12/08 से 14/08 तक
फा. शु. ७, शनि	12 मार्च	२८ फागु.	रोह.	ल. मेष, वृष (बु. मं. दा.)

यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार मुहूर्त २०६७

यज्ञोपवीत धारण में जन्म मास तथा ज्येष्ठ लड़के के लिए ज्येष्ठ मास त्याज्य माना गया है। गर्भाधान से अथवा जन्म से ब्राह्मणों को ८वें वर्ष क्षत्रिय बालक को ११वें वर्ष और वैश्यों के बालकों को १२वें वर्ष उपनयन (यज्ञोपवीत) धारण कराना शुभ होता है। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मणों को ८ से १६ वर्ष, क्षत्रिय को १२ से २२ वर्ष तथा वैश्यों को १३ से २४ वर्ष पर्यन्त उपनयन संस्कार कराना गौण काल माना जाता है। मुहूर्त वाले दिन बालक की राशि से चन्द्र ४, ८ या १२वें स्थान पर नहीं होना चाहिए। सं. २०६७ के कुछ मुख्य मुहूर्त इस प्रकार से होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. ६, रवि	21 मार्च	८ चैत्र	रोह.	मु. 13/17 के बाद
चैत्र शु. ७, चंद्र	22 मार्च	९ चैत्र	रोह.	ल. मेष, वृष
चैत्र शु.१०, गुरु	25 मार्च	१२ चैत्र	पुर्न.	ल. मेष, वृष (10/41 तक)
चैत्र शु.१३, रवि	28 मार्च	१५ चैत्र	पूफा.	ल. मेष, वृष, अभिजित
शु.वै.कृ.२, बुध	31 मार्च	१८ चैत्र	चित्रा	ल. मेष, चं. दा. अभिजित
शु.वै.कृ.३, गुरु	1 अप्रै.	१९ चैत्र	स्वा.	मेष (चं. दा.), अभि.
शु.वै.शु.३, रवि	16 मई	३ ज्ये.	मृग.	अभि. स्वयं सिद्ध मु.
ज्ये. कृ.१, शुक्र	28 मई	१५ ज्ये.	अनु.	ल. कर्क, अभि., शु.चं.दा.
ज्ये. कृ. ३, रवि	30 मई	१७ ज्ये.	मूल	अभिजित, चं. दा.

—सन् 2011 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
पौष शु.११,रवि	16 जन.	३ माघ	रोह.	दि. ल. २ (चं. शुक्र पूज्य दान व)
माघ कृ. १, गुरु	20 जन.	७ माघ	पुष्य	ल. १, अभि.
माघ कृ. २,शुक्र	21 जन.	८ माघ	अश्ले	ल. १, अभि.
माघ कृ. ५, रवि	23 जन.	१० माघ	उफा.	मुहूर्त 14/46 उपरांत
माघ कृ. ५, चंद्र	24 जन.	११ माघ	उफा.	मु. 11/55 तक
माघ शु. १,शुक्र	4 फर.	२२ माघ	धनि.	दि. ल. मेष, अभि.
माघ शु. ३, रवि	6 फर.	२४ माघ	पू.भा.	मेष ल., अभि.
माघ शु.१३,बुध	16 फर.	४ फागु.	पुष्य	बुधास्त (आवश्यके)
माघ कृ. ३, रवि	20 फर.	८ फागु.	उफा.	अभिजित
फागु. शु. २, चं.	7 मार्च	२३ फागु.	रेवती	ल. मेष, वृष, अभि.
चैत्र कृ. ५, गुरु	24 मार्च	११ चैत्र	अनु.	ल. वृष (चं. दा.), अभि.

चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त

शुभ तिथियाँ—(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल। शुभ वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार। शुभ नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्टा, रेवती। शुभ लग्न—(इ) १, ४, ७, १०। विशेष—केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो। संसद् में शपथ ग्रह के समय स्थिर लग्न प्रशस्त होता है।

अभिजित मुहूर्त

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त सब दोषों को नाश कर देता है।

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त का मध्य भाग निकल आता है। 'नारद पुराण' के अनुसार अभिजित् के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को अभिजित् काल कहा जाता है।

उदाहरण—मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होंगे। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिनट पर अभिजित मुहूर्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिनट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिनट = १२ घं. ४० मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त

श्री विष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। भैरव आदि तामस देवों के लिए दक्षिणायन एवं मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं।

श्री शिव मूर्त्ति, शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्री) विशेषतया प्रशस्त है।

श्री दुर्गा माता, श्री महालक्ष्मी, सरस्वती, गौरी एवं काली माता की भी प्रतिष्ठा में दक्षिणायण (गुर्वास्तादि रहित) मास में नवरात्रे, अष्टमी/नवमी तिथि, मूल नक्षत्र, दीवाली एवं बसन्त पंचमी, नवरात्रे विशेष शुभ माने जाते हैं।

श्री हनुमान जी की मूर्ति स्थापना में चैत्र शु. पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण चौदश, मंगल, रविवार एवं आर्द्रा नक्षत्र विशेष शुभ माने जाते हैं। आगे दिए गए मुहूर्त भगवान् विष्णु, राम, शिव-शक्ति माता, श्री गणेश, हनुमान आदि देवों के लिए शुभ एवं ग्राह्य होंगे।

अगले पृष्ठ पर सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्तों में श्रीगणेश, श्रीदुर्गा एवं शिवजी सम्बन्धी मुहूर्तों के साथ-साथ आगे लिखे विशेष मुहूर्त भी ग्रहणीय रहेंगे।

सर्वदेव प्रतिष्ठा (मूर्त्ति स्थापना) मुहूर्त्त सं. २०६७

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कुआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण काल विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। देवी भगवती की स्थापना के लिए उत्तरायण के अतिरिक्त दक्षिणायन मास एवं दोनों नवरात्रे भी प्रशस्त माने जाते हैं—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. ९, बुध	24 मार्च	११ चैत्र	पुनर्वसु	श्रीराम, विष्णु मुहूर्त्त (दुपै. 12.03 के बाद)
वैशा. शु. ३, रवि	16 मई	३ ज्ये.	मृग.	अभिजित, स्वयं सिद्ध मु. (भगवान् विष्णु, श्री कृष्ण)
ज्ये. कृष्ण १, शु.	28 मई	१५ ज्ये.	अनु.	ल. कर्क, अभि., बाला, शक्ति
ज्ये.कृ.४/५, मंग.	1 जून	१९ ज्ये.	उषा.	कर्क, अभि. श्रीगणेश श्री हनुमान
ज्ये. कृ. ६, गुरू	3 जून	२१ ज्ये.	धनि.	ल. कर्क (चं.दा.) श्री दुर्गा, कार्ति
ज्ये. कृ. ७, शुक्र	4 जून	२२ ज्ये.	शत.	अभिजित महाकाली
ज्ये. कृ. १२, बुध	9 जून	२७ ज्ये.	अश्वि	ल. कर्क (शु. के. दा.), भगवान विष्णु
ज्ये शु. ८, शनि	19 जून	५ आषा	उ.फा.	ल. कर्क (श. दा.) शिव शक्ति
ज्ये. शु. १०, चं.	21 जून	७ आषा	चित्रा	ल. कर्क (सू. दा.) श्री विष्णु श्री शिव
—सन् 2011 ई. में—				
पौ.शु.११/१२,र.	16 जन.	३ माघ	रोह.	ल. वृष (श्री कृष्ण विष्णु)
माघ कृ. १, गुरु	20 जन.	७ माघ	पुष्य	ल. मेष, वृषे ब्रह्मा
मा.कृ.४/५, रवि	23 जन.	१० माघ	उफा.	मु. दुपै. 14/46 उप. श्रीगणेश
माघ कृ. ५, चंद्र	24 जन.	११ माघ	उफा.	वृषे (शु. पू.), शिव शेषनाग
माघ कृ.१०, शुक्र	28 जन.	१५ माघ	अनु.	वृष (चं. शु. पू. दान व)
माघ शु. १, शुक्र	4 फर.	२२ माघ	धनि.	ल. मेष महालक्ष्मी
माघ शु. २, शनि	5 फर.	२३ माघ	शत.	ल. मेष (मं.दा.), शनि देव, भैरव
माघ शु. ५, मंग	8 फर.	२६ माघ	रेवती	ल. मेष (चं.मं.दान), श्री हनुमान, गणेश (सरस्वती, दुर्गा) गणेश
माघ शु. ६, बुध	9 फर.	२७ माघ	अश्वि	अभिजित, श्री कृष्णराधा
माघ शु.१२, मंग.	15 फर.	३ फागु	आर्द्रा	मेष, अभि., श्री हनुमान
माघ शु.१३, बुध	16 फर.	४ फागु	पुष्य	ल. १ (चं.दा.), अभि. शिव
फा. कृ. ३, रवि	20 फर.	८ फागु	उ.फा.	अभिजित, गौरी माता
फा. कृ. ५, मंग.	22 फर.	१० फागु	चित्रा	ल. मेष (चं. दा.), अभि. (श्री गणेश, श्री हनुमान)
फा. कृ. ७, गुरु	24 फर.	१२ फागु	अनु.	मु. 13/36 के बाद कार्तिक
फा. कृ. ८, शुक्र	25 फर.	१३ फागु	अनु.	ल. वृष श्री कृष्ण शिव शक्ति, लक्ष्मी, ल. वृष. (चं. मं. दा.)
फा. शु. ३, चंद्र	7 मार्च	२३ फागु	रेव.	ल. वृष, अभि. श्रीदुर्गा, गौरी
फा.शु.३/४, मंग	8 मार्च	२४ फागु	रेव.	ल. मेष गणेश, सरस्वती
फा.शु.४/५, बुध	9 मार्च	२५ फागु	अश्वि	ल. वृष श्री गणेश सरस्वती माँ
फा. शु. ७, शनि	12 मार्च	२८ फागु	रोह.	ल. मेष, वृष

श्रीगणपति प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०६७

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
शुद्ध चै.कृ.४, शु.	2 अप्रै.	२० चैत्र	विशा.	ल. मेष, अभिजित
ज्ये.कृ.४/५, मंग	1 जून	१९ ज्ये.	उ.षा.	ल. ४, अभिजित
आषा. कृ. ४, बु.	30 जून	१६ आषा	धनि.	ल. ४, अभिजित
श्राव. कृ.४, शुक्र	30 जुला	१५ श्राव.	पू.भा.	ल. ५, अभिजित
भा. कृ. ४/५, र.	29 अग.	१४ भाद्र	अश्वि	ल. तुला
भाद्र. शु.४, शनि	11 सितं.	२७ भाद्र	स्वा.	मु. सायं 4 बजे से बाद, भद्रा परि. (सिद्धि विनायक व्रत)
अश्वि शु.४, चंद्र	11 अक्तू	२६ अश्वि	अनु.	ल. मकर, भद्रा परि.
मार्ग. कृ. ४, गुरु	25 नवं.	१० मार्ग	आर्द्रा	प्रात: 7/34 तक
पौष कृ.३/४, शु.	24 दिसं.	९ पौष	पुष्य	मु. 8/07 बाद, मकर, अभि.
—सन् 2011 ई. में—				
माघ कृ. ४, रवि	23 जन.	१० माघ	पू.फा.	अभिजित, 14/14 तक
फा. कृ. ४, चंद्र	21 फर.	९ फागु	चित्रा	अभिजित
चै.कृ. ३/४, मंग	22 मार्च	९ चैत्र	स्वा.	ल. १, २, भद्रा परिहार

श्रीदुर्गा व अन्य देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

(निम्न मुहूर्त्त जो द्वितीया या तृतीया तिथियों को लगाए गए हैं, देवी गौरी प्रतिष्ठा में भी ग्राह्य होंगे।)

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चै. शु. ८, मंग	23 मार्च	१० चैत्र	मृग	ल. वृष, अभि., भवान्युत्पति
शु.वै.कृ.९, बुध	7 अप्रै	२५ चैत्र	उषा.	ल. वृष, अभिजित
द्वि. वै.शु.३, रवि	16 मई	३ वैशा	मृग.	अभिजित
द्वि.वै.शु. ९, शनि	22 मई	९ वैशा.	पूफा	(त्रयोदश-दिन का पक्ष) (आवश्यके)
ज्ये. शु.९, रवि	20 जून	६ आषा.	हस्त	ल. कर्क, तुला
ज्ये. शु. १५, श.	26 जून	१२ आषा.	मूल	मुहूर्त 10/28 उप.
आषा.शु. ९, चं.	19 जुला	४ श्राव	स्वा.	ल. वृश्चिक, अभि.
आषा.शु.१३, शु.	23 जुला	८ श्राव	मूल	ल. सिंह तुला (श्रीदुर्गा, लक्ष्मी, गौरी)
श्राव. शु. ३, गुरू	12 अग.	२८ श्राव.	उ.फा.	ल. वृश्चि. अभि.
श्रा.शु. ८/९, मंग	17 अग.	२ भाद्र.	अनु.	ल. तुला, अभि.
श्रा.शु.१०, गुरू	19 अग.	४ भाद्र	मूल	तुला, वृश्चि.
भा.शु.२/३, शुक्र	10 सितं.	२६ भाद्र	हस्त	ल. वृश्चि., मकर (गौरी, दुर्गा, शक्ति आदि)
भा. शु. ९, गुरू	16 सितं.	१ अश्वि	मूल	ल. वृश्चिक अभि.
आ. शु. ३, रवि	10 सितं.	२५ अश्वि	विशा	वृश्चि. श्री दुर्गा, गौरी
आ. शु. ६, बुध	13 अक्तू	२८ अश्वि	मूल	वृश्चि. अभि.
आ. शु. ९, शनि	16 अक्तू	३१ अश्वि	श्रव.	वृश्चिक अभि.
का. शु. ९, चंद्र	15 नवं.	३० कार्ति.	शत.	अभि. अक्षय नवमी
मार्ग. शु. २, मंग	7 दिसं.	२२ मार्ग	मूल	भौम-युति-आवश्यके (मु. 10/22 उप. आ.)
—सन् 2011 ई. में—				
माघ शु. ३, रवि	6 फर.	२४ माघ	पूभा	गौरी-शिवा, दुर्गा
माघ शु. ९, शनि	12 फर.	३० माघ	रोह.	मेष, अभि.

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त २०६७ सं.

[शिव प्रतिष्ठा सम्बन्धी मु. सर्व देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों से भी ग्राह्य]

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फा.कृ. १४, शुक्र	12 फर.	१ फागु.	उ.षा.	ल. मेष, वृष महाशिवरात्री
चैत्र शु. ९, बुध	24 मार्च	११ चैत्र	आर्द्रा	ल. वृष, अभि.
शु.वै.कृ.१३, चंद्र	12 अप्रै.	३० वैशा.	पूभा	ल. वृष, अभि.
शु.वै.शु. ३, रवि	16 मई	३ ज्ये.	मृग.	अभिजित, स्वयं सिद्ध
शु.वै.शु.१३, मंग	25 मई	१३ ज्ये.	चित्रा	ल. कर्क, गुरू दृष्टि शुभ
ज्ये. कृ. ३, रवि	30 मई	१७ ज्ये.	मूल	अभिजित
ज्ये. कृ. ८, शनि	5 जून	२३ ज्ये.	पूभा	अभिजित
ज्ये. शु. २, चंद्र	14 जून	३२ ज्ये.	आर्द्रा	ल. कर्क, अभि.
ज्ये. शु. ८, शनि	19 जून	५ आषा	उफा	कर्क, अभि.
ज्ये. शु. १३, गु.	24 जून	१० आषा	अनु.	ल. कर्क, अभि.
ज्ये.शु. १४, शुक्र	25 जून	११ आषा	ज्ये.	ल. कर्क, तुला
ज्ये.शु. १५, शनि	26 जून	१२ आषा	मूल	अभि.
ज्ये. शु. २, चंद्र	28 जून	१४ आषा	उषा.	ल. कर्क, अभि.
आषा.शु.१३, शु.	23 जुला	८ श्राव	मूल	ल. ५, ७, अभि.
आ. शु. १५, चंद्र	26 जुला	११ श्राव	उ./श्र	ल. ७, अभि.
श्रा. कृ. १४, चंद्र	9 अग.	२५ श्राव	पुष्य	ल. ५, ७ (तुला 12.15 तक)
श्रा. शु. ८, मंग	17 अग.	२ भादों	अनु.	ल. ७, अभि.
श्रा.शु. १३, रवि	22 अग.	७ भादों	उषा.	ल. ७, ८, अभि.
भा. कृ. १४ मंग	7 सितं.	२३ भादों	मघा	ल. वृश्चिक, अभि.
भा.शु.१२/१३, चं.	20 सितं.	५ अश्वि	धनि.	ल. वृश्चिक
मार्ग. कृ. ८, चंद्र	29 नवं.	१४ मार्ग	पूफा.	मकर, कुम्भ
मार्ग.कृ. १३, शु.	3 दिसं.	१८ मार्ग	स्वा.	मकर, कुम्भ

विवाहादि शुभ कार्यों में दोषपूर्ण, अशुद्ध एवं त्याज्य मुहूर्त–संवत् २०६७ वि.

नीचे वि. संवत् २०६७ में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्त्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। जिज्ञासु पाठकों की शंका समाधान के लिए आगे कुछ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्त्तों का विवरण लिख रहें हैं जिनका प्रत्यक्षतः कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। अति आवश्यक परिस्थितिवश यदि निम्न मुहूर्त्तों में से कोई विवाह आदि शुभ कार्य करना हो, तो विवाह नक्षत्र व योग स्वामी एवं देवता की विशिष्ट संख्या में संकल्पपूर्वक पूजा–पाठ व दानादि करके शुभ कार्य सम्पादित करने चाहिएँ॥ हमारे मतानुसार निम्न दोषपूर्ण एवं अशुद्ध मुहूर्त्त काल में शुभ कार्य के आरम्भ का त्याग ही उचित होगा। (निवेदक—पं. पन्ना लाल ज्योतिषी॥)

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
✦15 अप्रैल से 14 मई तक वैशाख-अधि मास			
✦14 मई से 27 मई तक त्रयोदश दिन का पक्ष			
30 मई	रवि	मूल	लग्नाभाव
1 जून	मंग	श्रवण	भौम वेध
2 जून	बुध	श्रवण	मंगल का वेध
7 जून	चंद्र	उ.भा.	लग्नाभाव
7 जून	चंद्र	रेव	शनि का वेध
8 जून	मंग	रेव	शनि का वेध
13 जून	रवि	मृग	सूर्य-युति, मृत्युबाण दो.
18 जून	शुक्र	उ.फा.	शनियुति, व्यतिपात
19 जून	शनि	उ.फा.	व्यतिपात, शनि युति
25 जून	शुक्र	मूल	मृत्युबाण
26 जून	शनि	मूल	मृत्युबाण, चंद्रग्रहण
28 जून	चंद्र	श्रवण	वैधृति
1 जुला.	गुरु	धनि.	लग्नाभाव
4 जुला.	रवि	रेव	शनि का वेध
5 जुला.	चंद्र	रेव	शनि-वेध, मृत्युबाण
5 जुला.	चंद्र	अश्वि	मंगल का वेध
6 जुला.	मंग	अश्वि	मंगल का वेध
17 जुला.	शनि	चित्रा	मृत्युबाण
22 जुला.	गुरु	मूल	लग्नऽभाव, चंद्र ८
26 जुला.	चंद्र	उ.षा.	लग्नऽभाव:
27 जुला.	मंग	श्रवण	मृत्युबाण दोष
31 जुला.	शनि	रेव	शनि का वेध
1 अग.	रवि	रेव	शनि-वेध, दग्धा तिथि
13 अग.	शुक्र	उ.फा.	लग्नाभाव
14 अग.	शनि	हस्त	लग्नाभाव
15 अग.	रवि	स्वा.	मासान्त, मृत्युबाण

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
18 अग.	बुध	अनु.	मृत्युबाण दोष
20 अग.	शुक्र	मूल	लग्नाभाव
22 अग.	रवि	श्रवण	सूर्य का वेध
23 अग.	चंद्र	श्रवण	सूर्य का वेध
28 अग.	शनि	रेव	शनि का वेध
29 अग.	रवि	रेव	शनि का वेध
7 सितं.	मंग.	मघा	कृष्ण त्रयोदशी
11 सितं.	शनि	चित्रा	मंगल-युति
15 सितं.	बुध	मूल	मासान्त दोष
16 सितं.	गुरु	मूल	संक्रान्ति दोष
18 सितं.	शनि	उ.षा.	मृत्युबाण दोष (6/05 से 18/25)
8 अक्तू.	बुध	स्वा.	वैधृति दोष
12 अक्तू.	मंग	मूल	राहु की युति
13 अक्तू.	बुध	मूल	राहु की युति
14 अक्तू.	गुरु	उ.षा.	लग्नऽभाव:
15 अक्तू.	शुक्र	उ.षा.	16/56 के बाद मृत्युबाण
15 अक्तू.	शुक्र	श्रवण	मृत्युबाण
(17 से 19 अक्तू. तक शुक्र वार्धक्य दोष)			
(3 से 5 नवं. तक शुक्र बाल्यत्व दोष)			
7 नवं.	रवि	अनु	मंगल की युति
8 नवं.	चंद्र	अनु	लग्नाभाव
9 नवं.	मंग	मूल	राहु की युति
10 नवं.	बुध	मूल	राहु की युति
11 नवं.	गुरु	उ.षा.	भुजंगपात, लग्नऽभाव
12 नवं.	शुक्र	उ.षा.	लग्नाभाव:
13 नवं.	शनि	श्रवण	लग्नाभाव:
17 नवं.	बुध	उ.भा.	शनि-वेध, मृत्युबाण
17 नवं.	बुध	रेव.	मृत्युबाणदोष

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
19 नवं.	शुक्र	अश्वि	व्यतीपात दोष
23 नवं.	मंग.	रोहि.	लग्नाभाव:
24 नवं.	बुध	मृग	नक्षत्रान्त दोष
28 नवं.	रवि	मघा	रा. लग्नाभाव
3 दिसं.	शुक्र	स्वा.	कृष्ण त्रयोदशी
6 दिसं.	चंद्र	मूल	मंगल-राहु की युति
7 दिसं.	मंग.	मूल	मंगल-राहु की युति
14 दिसं.	मंग.	उ.भा.	शनि-वेध, मृत्युबाण
(सन् 2011 ई.)			
15 जन.	शनि	रोहि	मृत्युबाण दोष
16 जन.	रवि	मृग	सूर्य-मंग का वेध
17 जन.	चंद्र	मृग	सूर्य-मंग का वेध
21 जन.	शुक्र	मघा	मंगल का वेध
22 जन.	शनि	मघा	मंगल का वेध
24 जन.	चंद्र	उ.फा.	दिवसे लग्नाभाव:
24 जन.	चंद्र	हस्त	मृत्युबाण, शनि-युति
25 जन.	मंग	हस्त	लग्नाभाव:
26 जन.	बुध	चित्रा	लग्नऽभाव, भुजंगपात
26 जन.	बुध	स्वा	भुजंगपात (शूल योग)
27 जन.	गुरु	स्वा	लग्नऽभाव
29 जन.	शनि	अनु	नक्षत्रान्त
30 जन.	रवि	मूल	राहु-युति
31 जन.	चंद्र	मूल	कृष्ण-त्रयोदशी
6 फर.	रवि	उ.भा.	शनि का वेध
7 फर.	चंद्र	उ.भा.	शनि का वेध
8 फर.	मंग	अश्वि	लग्नाभाव:
10 फर.	गुरु	अश्वि	नक्षत्रान्त
12 फर.	शनि	रोहि	मासान्त, वैधृति

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
13 फर.	रवि	रोहि.	संक्रान्ति दोष, वैधृति
14 फर.	चंद्र	मृग	केतु युति, मृत्युबाण
20 फर.	रवि	उ.फा.	लग्नाभाव
21 फर.	चंद्र	हस्त	भुजंगपात, शनि-युति
22 फर.	मंग.	स्वा.	सूर्य का वेध
23 फर.	बुध	स्वा.	मृत्युबाण दोष, सूर्य वेध
26 फर.	शनि	मूल	राहु की युति
27 फर.	रवि	मूल	राहु की युति
28 फर.	चंद्र	उ.षा.	केतु का वेध
1 मार्च	मंग	उ.षा.	केतु का वेध
1 मार्च	मंग	श्रवण	लग्नाभाव
5 मार्च	शनि	उ.भा.	शनि का वेध
6 मार्च	रवि	उ.भा.	शनि का वेध
7 मार्च	चंद्र	उ.भा.	शनि का वेध
13 मार्च	रवि	मृग	मासान्त, होलाष्टक प्रा.

तदुपरान्त 13 मार्च से होलाष्टक, 14 मार्च से चैत्र मास (मीनस्थ सूर्य) रहने तथा 25 मार्च से गुरु भी अस्त रहेगा।

स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, श्रीरामनवमी, अक्षया तृतीया, विजयादशमी, दीपावली तिथियां स्वयं सिद्ध (अणपुच्छ) मुहूर्त्त कहलाती हैं। आवश्यक परिस्थितिवश गृहारंभादि मुहूर्त्तों में कोई मुहूर्त्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्तों में से शुभ कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यो में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। तिथि को शरीर, चन्द्रमा को मन, योग–नक्षत्रों आदि को शरीर के अंग तथा लग्न को आत्मा माना गया है। यथा–

तिथिः शरीरं मन इन्दुर्वीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-आद्याः —ज्योतिर्निबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, लग्न स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। सातवें चन्द्र और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

× ×
चंद्र
विवाह
सभी पाप
ग्रह
शनि
शुक्र
×
×
राहु
मंगल
× ×
सभी ग्रह
[चं.-गु.]
(परिहार)
×
×
लग्नेश
शुक्र, चंद्र
चं. मं.
लग्नेश शुभ ग्रह

"त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥"

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। 'पंचांगदिवाकर' में लगाए गए लग्न मुहूर्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न–मुहूर्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें मंगल, २, ३, ११वें चंद्रमा, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित शुक्र शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं–

लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ द्यूनाये लाभगेऽथवा।
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न–वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्–

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरुप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का स्वामी ग्रह समान हो, अथवा मित्र क्षेत्री हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का स्वामी, केन्द्र स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष–लग्न में पापी ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि दोष होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्यु तुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार–कर्तृरि दोष कारक ग्रह नीच, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टम भौम का परिहार–मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, बारहवें चन्द्र का परिहार–नीच राशि, शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या १२वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे–बृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि ३, ६

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार–"कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ"

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तंड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद–नीच एवं शत्रु राशिगत शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे–

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त्त चिं. पीयूषधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु–सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **"चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।"**

'मुहूर्त्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में गुरु, शुक्र एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार–पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। –ज्योतिर्निबन्ध

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है।

यथा—

स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युति दोषाय न भवेत् दम्पत्योः श्रेयसेतदा॥ (नारदः)

(१०) दग्धा तिथि परिहार—विवाह लग्न समय केन्द्र–त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।—मु० गणपति

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त लगाए गए हैं।

कश्यपर्वि अनुसार लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरू, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है

काव्यो गुरू र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः।
नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृतिः॥ (कश्यप)

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा**, तथा भद्रा मुख छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो—दोषो न, भवेत्सर्वं सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) पीयूषधारानुसार—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।

रात्रिभद्रा यदहि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा–भद्र दायिनी॥

(iii) 'दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्या निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥'

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा स्वर्ग लोक में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से पाताल में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में भद्रा **मर्त्यलोक (भू लोक) में—अर्थात् सम्मुख रहती है। जब भद्रा भू–लोक में (सम्मुख) रहती है, अशुभफल दायिनी एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है—**

स्थिताभूर्लोस्था भद्रा सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा —(मु. मार्त्तण्ड)

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू–लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा–मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः। मृत्युलोके यदा भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **वृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। मतान्तर से, दिन की भद्रा सर्पिणी, रात्रि की भद्रा वृश्चिकी है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण वृश्चिकी भद्रा की पुच्छ और सर्पिणी भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल–शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त में शुद्ध विवाह–लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल—जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने–अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने गोधूलि काल का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥ —मुहूर्त चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। ज्योतिनिर्बन्धानुसार–

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर २ घड़ी (४८ मिनट) का समय गोधूलि काल है।

(ii) मुहूर्त्त गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षातु सप्तमम्॥ –नारद

(iv) कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सप्तम तथा अष्टम भाव में मंगल को भी वर्ज्य माना गया है। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता।

(v) गुरुवार को सूर्यास्त के बाद तथा शनिवार को सूर्यास्त होने से पूर्व (पहले) की ही आधी घड़ी (12 मिनट) को गोधूलिकाल माना गया है, अन्यथा नहीं. (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

——क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन——

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी क्षौर कर्म न करावें।

——तैलाभ्यंग—अर्थात् तैल मालिश करना——

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। निर्णय सिन्धु के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है। प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता—(—अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥)

चतुर्कोणों दिशाशूल विचार

आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में सोम व गुरुवार, नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, वायव्य (उत्तर-पश्चिम) में मंगलवार तथा ईशान (पूर्व-उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन दिशाशूल होता है (मुहूर्त्त गणपति)

दिशापति के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है—

दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बुधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

विशेष—यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि-वार-नक्षत्र, दिशा-शूल, प्रतिशुक्र, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए—यथा "एकस्मिन्पि दिवसे यदि चेद् गमनं प्रवेशश्च। प्रतिशुक्रवार शूलं न चिन्तयेत् योगिनी पूर्वम्॥"—(पीयूषधारा)

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और.२, ३, ५, ७, १०, ११, १३—इन तिथियों में अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.—इन नक्षत्रों में तथा चौर, वाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अत: उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष—ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'—यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'—यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार—

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। ''आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥''

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि।
उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः
जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये।
जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है—

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोत्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। मुनि भारद्वाज के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं (मु. मार्तण्ड)। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। (नारद), परन्तु कन्या-विवाह के प्रश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें (वसिष्ठ) तथा जिस वर को अपनी कन्या देवे, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे (नारदः)।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है (वृन्द्धमनुः)। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे (शार्गधर) जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णय सिंधु) परन्तु अपवाद स्वरूप संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे—

प्रतिकूलेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्ति विधाय गां दत्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥

जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है—

बालान्नभुक्तौ व्रतवन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही जन्म-नक्षत्र का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है—

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह जन्म नक्षत्र एवं जन्म मास में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है—

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह जन्म मास में ग्रहणीय माना गया है—

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

वर—वरण एवं सगाई मुहूर्त्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके लिए निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई, कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबित सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अंगूठी, मिष्टान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित '**विवाह पद्धति**' का अवलोकन करें।

विवाह में प्रतिपादित शुभ मासों **वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मासों** में, रिक्ता (४, ९, १४) तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में (विशेषकर शुक्ल पक्ष प्रशस्त है), चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवारों में तथा कृतिका, रोहिणी, तीनों पूर्वा, मृग, हस्त, श्रवण, चित्रा नक्षत्रों में शुभ लग्न कालीन वर का वरण करें।

कन्या वरण मुहूर्त्त—

उपरोक्त शुभ मासों, तिथियों में तथा कृतिका, तीनों पूर्वा, उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा अनुराधादि विवाहोक्त नक्षत्रों में सुपारी, नारियल, मौसमी फल, सुगन्धित द्रव्य, वस्त्र, आभूषण मिष्टान्न, फल, फूलों आदि के साथ वर परिवार के किसी श्रेष्ठ अग्रज अथवा वृद्धजन के कर कमलों के द्वारा कन्या का विधिवत् वरण करें।

आवश्यक मुहूर्त विचार

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चे का नाम रखना	१ (कृष्ण), तथा दोनों पक्ष की २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) तिथियाँ ॥	सूतकान्त (सप्ताह के बाद) १०, १२, १३, १६ आदि दिनों में एवं चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में ॥	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।
बच्चे को स्कूल डालना (विद्यारम्भ)	२,३,५,७,१०,११,१२, १३ (शु.), १४, बुध एवं पूर्णिमा तिथि	उत्तरायण मासों में (२१ दिसं. से २० जून तक) ५वें ७वें वर्ष, रवि, चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र वार।	अश्वि, मृग, रोह, पुन, पुष्य, श्ले, पूर्वा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, श्रव, धनि, शत, उत्तरा—तीनों।
मुंडन संस्कार	१ (कृष्ण), २,३,५,६,७, १०, ११, १३ (शुक्ल, १५ शुभ तिथियाँ।	जन्म से १, ३, ५ इत्यादि वर्षों में, वैशा, ज्ये., आषा. (२० जून तक), माघ, फागु. (उत्तरायणे), चं. बु. गु. शु.।	अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., श्रव, धनि, शत, रेव एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य ॥
दुकान/बही खाता शुरु करना	१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १० १२, १३(शुक्ल) तिथियां।	रवि, चंद्र, बुध, वीर, शुक्र, शनि। वैशा, ज्ये, आषा, श्रा, भा., मार्ग, माघ, फा।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, हस्त, चित्रा, अनु, मूल, श्रव, धनि, पूभा, रेवती।
नौकरी करना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, वीर, शुक्र, उत्तरायण महीने प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, अनु, ज्ये, श्रव-रेव।
स्कूटर, कारादि सवारी खरीदना	१ (कृ.), २,३,५,६,७,१० ११, १२, १३ (शु.), १५।	चंद्र, बुध, गुरु व शुक्रवारों में।	अश्वि, उत्तरा-३, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, पूर्वा-३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, रेवती।
गृहारम्भ (मकान बनाना)	१ (कृ), २,३,५,६,७,१०, ११, १२, १३ (शु.)ष १५।	चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, वैशा, ज्ये, श्रव, भादर, माघ, फागु. प्रशस्त हैं।	रोह, मृग, जुन, पुष्य, उत्तरी, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, शत, रेव।
शिलान्यास (नींव खोदना)	गृहारम्भ वाली तिथियां ग्राह्य।	गृहारम्भ वाले वार एवं मास ग्राह्य। सुप्त भूमि के प्रविष्टे (५,७,९,१५,२१,२४ त्याज्य)	उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त अश्विनी व श्रवण नक्षत्र सुप्त भूमि के प्रविष्ट।
नए घर में प्रवेश	१(कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	वैशा, ज्ये, मार्ग, माघ एवं फाल्गु. ॥ पुराने गृह में श्राव, भाद्र भी ग्राह्य, चंद्र, बुध, शुक्र व शनि।	अश्वि, रोह, मृग, उत्तरा, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु, धनि, रेव।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
सगाई मुहूर्त्त	१ (कृ), २,३,५,७,८,१०, ११, १२, १३ (शु.), १५ शुभ तिथियां ॥	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आ, श्रा, भा., आश्वि, मार्ग, माघ, फागु.।	अश्वि, कृति, रोह, मृग, मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु, मू, श्रव, धनि, रेवती।
विवाह मुहूर्त्त	१(कृ.),२,३,५,७,८,९,१० ११, १२, १३ (शुक्ल), १५।	वै., ज्ये, आषा, श्रा., भा, अश्वि, मार्ग, माघ, फागु. तथा कार्तिक (पर्वतीये केवल)। रवि, चंद्र बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त। मं. शं. (मध्यम)।	रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूला, रेव।
मुहूर्त्त मुकलावा	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा., मार्ग, माघ व फाल्गुन मास।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु., मूल, श्रव, धनि, रेव।
बीज बोना (हल चलाना)	१ (कृ) २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.) १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, विशा, अनु, मूला, रेवती।
अनाज संग्रह (भरने का मुहूर्त्त)	२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३, (शुक्ल), १५।	चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेवती।
आप्रेशन कराने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३	रवि, मंगल, गुरु	अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव
मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५ तिथि।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में।	अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण, विशाखा।
भूमि खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृष्ण) तथा ५, ६, १०, ११, १५।	मंगल, गुरु, शुक्र।	मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा ३, मूला, रेवती।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८,१०,१३ (शुक्ल) १५, चंद्र व मंग. दोनों बलान्वित होने चाहिएं।	रवि, मंग, बुध, गुरु, वार प्रशस्त हैं।	भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा-३, ज्ये., मूला, नक्षत्र।
पशु खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृ)२,३,५,६,७,८,१०, ११,१२,१३(शुक्ल) १५।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु शनि।	अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती।
औषधि सेवन का मुहूर्त्त	१, (कृ),२, ३, ५, ७, १० ११; १२, १३ (शु.)।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य हैं।	अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुर्न, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवण, धनिष्ठा हैं।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, वायव्य (उ. पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोटर्स Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अनुष्ठान आरम्भ करने का मुहूर्त्त

मास—वैशाख, श्रावण, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

तिथि (शुक्ला)—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

वार—सू. गु. शु. (सोम मध्यम)।

नक्षत्र—अशिव. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे।

लग्न—शिव की आराधना १, ४, ७, १० लग्नों में एवं विष्णु की २, ५, ८, ११ लग्नों में तथा देवी की ३, ६, ९, १२ लग्नों में कर्त्तव्य है।

अन्य देवताओं के अनुष्ठान में वह राशि लग्न ग्रहण करें, जब ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह १, २, ४, ५, ७, ९, १०वें सौम्य ग्रह तथा ८, १२वें प्रहाभाव।

विशेष—आराध्य देवताओं के मास, तिथि, वार, नक्षत्र विशेष शुभ है। पुनश्च, गुरु-शुक्रास्त, बलहीन चन्द्र तथा कुयोग परित्याज्य हैं।

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं मंगलीक दोष पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।

—मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद—(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है—

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहार स्वरूप मुहूर्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा—

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥—फलित संग्रह अन्येऽपि—

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष भंग होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च सदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशो चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता। यथोक्तम्—

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ **—मु. पारिजात**

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता।

"द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते" **—मु. चिंतामणि**

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता—

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ **—मुहूर्त्त दीपक**

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता—

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।
वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः॥ **—मुहूर्त्त दीपक**

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता—

"केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥" **—मु. चिंतामणि**

अपरं च—

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, उच्चस्थ (मकर) का किंवा मित्र क्षेत्री मंगल दोष कारक नहीं होता—

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ **—मु. चिंतामणि**

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है।

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

—मुहूर्त्त दीपक

विवेचन—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक ("लग्ने व्यये पाताले—") के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे—विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिः निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा—

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा। **—मु. संग्रह दर्पण**
सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। सभी लग्न कुण्डलियों में मंगलीक दोष का प्रभाव एक जैसा नहीं होता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ लग्न कुण्डलियों में मंगल अथवा मंगलीक दोष का अशुभ एवं अनिष्ट प्रभाव वर-कन्या के वैवाहिक जीवन पर पड़ता है, परन्तु यदि किसी कुण्डली में मंगल अन्य ग्रहों के सहचर्य से योगकारक हो, उच्चस्थ या स्वराशिगत हो अथवा गुरु आदि शुभ ग्रह की दृष्टि से प्रभावित हो, तो मंगल अशुभ की अपेक्षा शुभ प्रभाव कारक होगा। जैसे—मकर, मेष, बृश्चिक, सिंह, धनु और मीन राशि के मंगल को शुभ माना जाता है तथा कर्क एवं सिंह लग्नों में मंगल केन्द्र त्रिकोणपति होने से मंगल अशुभ न होकर योगकारक माना जाएगा—

"सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहा शुभफलप्रदाः।
इसी भान्ति स्वोच्चस्थितः शुभफलं प्रकरोति पूर्णम्।
नीचर्क्षगस्तु विपलं रिपु मन्दिरेऽल्पम्॥ (सारावली)
भाव सर्वे शुभपतियुता वीक्षितः वा शुभेशै—
तत्तद्भावाः सकल फलदाः पापदृक्योगहीनाः॥"

अतएव वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय उनके सुखी एवं सम्पन्न दाम्पत्य जीवन के लिए केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जिनमें कुछ मुख्य तत्त्व निम्नलिखित हैं—

(१) चलित भाव कुण्डली—जो ग्रह भाव मध्य होते हैं, वह भाव सम्बन्धी पूर्ण फल प्रकट करते हैं, जो ग्रह भाव सन्धि में होते हैं, वह शून्य फल दिखाते हैं। तदनुसार वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय दोनों की कुण्डलियों के ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट एवं चलित भाव कुण्डली बनी होनी चाहिए, तभी मंगल अथवा मंगलीक दोष की वास्तविक स्थिति का पता चल पाएगा। यदि दोनों की कुण्डलियों में मंगल सन्धिगत होगा, तो मंगलीक दोष भंग माना जाएगा।

(२) सप्तम भाव में सप्तमेश या शुभ एवं योगकारक ग्रहों की स्थिति अथवा मंगल या सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि अथवा सप्तमेश ग्रह की स्वगृही दृष्टि होने से मंगलीक दोष क्षीण होगा।

(३) सप्तमेश ग्रह उच्चस्थ या स्व-मित्रादि राशिगत होकर केन्द्र त्रिकोणादि भावों में स्थित हो तो विवाह में मंगल का दोष निष्प्रभावी होगा।

(४) इसके विपरीत सप्तमेश त्रिक में हो, पापग्रह युक्त व पाप दृष्ट, नीच राशिगत अथवा अस्तंगत हो तो विवाह का पूर्ण सुख नहीं होता—

दुःस्थे कामपतौ तु पाप ग्रहगे पापेक्षिते-तद्युते। तज्जाया भवनस्य मध्यमफलं सर्व शुभं चान्यथा॥

(५) इसके अतिरिक्त लग्नेश, कुटुम्बेश (द्वितीयेश), पंचमेश, अष्टमेश, सप्तमेश एवं चन्द्र, शुक्र, गुरु, मंगलादि ग्रहों के बलाबल का विचार करना भी नित्तान्त आवश्यक है।

(६) अष्टकूट नक्षत्र राशि मिलान पर यदि वर-कन्या में परस्पर राशिमैत्री उपलब्ध हो गुणाधिक्य (२७ या अधिक) गुण मिलते हों तो भी मंगलीक दोष अविचारणीय होगा।

इस प्रकार वर-कन्या की कुण्डली में मंगल के अतिरिक्त कुण्डलियों में अन्य सभी ग्रहों के शुभाशुभत्व का सम्यक् विचार करते हुए विद्वान् ज्योतिषी को मेलापक सम्बन्धी अपना अन्तिम निर्णय देना चाहिए।

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के मध्यम से मनुष्य, देव-ऋषि एवं पितरादि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त होता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे—सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वस्थ (शरीर) और आयु—इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर मंगलीक आदि अरिष्ट योगों तथा वर्ग, स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में मंगलीक और अष्टकूट तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में—विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। मंगलीक दोष का विशेष विवरण इसी पंचाँग के अन्य पृष्ठों में दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :—

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा (८) नाड़ी —ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में गुणों का योग ३६ होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(१) वर्ण विचार—४, ८, १२ राशियों का ब्राह्मण, १, ५, ९ का क्षत्रिय, २, ६, १० वैश्य तथा ३, ७, ११ राशियों का शूद्रवर्ण होता है। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्च स्तरीय अथवा समान वर्ण होने पर एक गुण प्राप्त होता है। अन्यथा शून्य गुण होगा।

परिहार—यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है।

(२) वश्य विचार—सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ नर (मनुष्य) राशि के वश में हैं। जल राशियाँ (४।१० उ.।१२) नर राशियों (३।६।७।९ पू.।११) का भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। समान वश्य होने पर २ गुण, एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण, एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होना शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा।

(३) तारा विचार—कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों संख्याओं को अलग-अलग ९ द्वारा भाग देने पर यदि शेष ३, ५, ७ बचे तो अशुभ तारा होती है।

दोनों (वर-कन्या) ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण, एक में तारा शुभ और दूसरे में अशुभ हो तो डेढ़ गुण तथा दोनों में तारा शुभ हो तो ३ गुण होते हैं।

(४) योनि विचार—अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे—गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर है।

[नोट—योनि व महावैर योनि की तालिका चक्र गत पृष्ठों में दिया गया है।]

गुण—वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्र हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

(५) ग्रह मैत्री—ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

गुण विचार—वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर ५ गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो ४ गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो १ गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा—

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —बृहज्जयोतिः सार

अपवाद—वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा—

राशिनाथे विरूद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पत्योः शुभमिच्छता॥

(६) गण विचार—अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का देवता गण, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का मनुष्यगण, कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूला, धनि. और शत. का राक्षसगण।

वर-कन्या का एक ही गण होने पर विवाह उत्तम, देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन—वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

कन्या	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

गुण दोष परिहार—

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में भिन्नता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥

गर्ग—मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। **—पीयूषधारा**

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। **—मुहूर्त मार्त्तण्ड**

(७) भकूट विचार—इसे राशिकूट भी कहते हैं। वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष,** यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार—(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा—१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य, अथवा राशि स्वामी ग्रह समान होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा—

न वर्गवर्णो न गणोः न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ **—बृ. ज्योतिरसार**

नव पंचम परिहार—

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है—

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥

—बृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर—ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥ —शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार—

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पति प्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या द्वि-द्वादश** ग्राह्य है। **—मुहूर्तमार्त्तण्ड**

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे—वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (**समसप्तक**) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु अपवाद रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया— **मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।**
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ **—ज्योतिनिबन्ध**

(८) नाड़ी दोष विचार—अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। 36 गुणों में से इसके 8 गुण होते हैं। भिन्न नाड़ी के आठ गुण तथा नाड़ी समान होने पर गुणाभाव अर्थात् शून्य गुण होता है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है—आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उ.फा.	हस्त	ज्ये.	मूल	शत	पू.भा.
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उ.भा.
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उ.षा.	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की आदि (**प्रथम**) नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है। **—बृहज्योतिषसार**

वर-कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी वाले हों, तो नाड़ी दोष माना जाता है। एक समान नाड़ी वाले वर-कन्या को ज्योतिषाचार्यों ने बहुत अशुभ माना है।

विवाह में नाड़ी दोष का आचार्यों द्वारा विशेष महत्त्व दिया गया है। नारद ऋषि अनुसार—

एक नाडी विवाहश्च गुणैः सर्वे समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योः निधनं यतः॥ (नारद)

अर्थात् विवाह मिलान में चाहे सब गुण मिल रहे हों, परन्तु वर-कन्या की एक ही नाड़ी का प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान नक्षत्र चरण होने पर भी सभी आचार्यों ने एकमत से अनिष्टकारी कहा है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार—

(i) वर-कन्या की एक ही राशि हो, परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।

(ii) वर-कन्या दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो, परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों, तो नाड़ी दोष अविचारणीय है। (विवाह वृन्दावन)

(iii) वर-कन्या, दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।

(iv) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है—

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पादजान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नितान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

हमारे मतानुसार नाड़ी दोष का विचार सभी जाति के वर-कन्याओं के मिलान के सम्बन्ध में समान रूप से करना चाहिए। विशेष रूप से कर्क, वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में।

(v) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता—अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥ —मुहूर्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा—

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥

—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

अन्यत्र भी कहा गया है— **दम्पत्योरेक नक्षत्र भिन्नपादे शुभावहम्।**
दम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥ (का. नि.)

पराशरानुसार भी यही अभिमत है—

पराशरः प्राह नवांशभेदाद एकनक्षत्र राशचोरपि सौमनस्यम्॥

***नोट**—ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा दूसरे एवं तीसरे पाद में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(vi) 'नरपतिजचर्या' अनुसार वर कन्या के नक्षत्र चरणों के I & IV, II & III तथा IV & I, III & II चरणों के मध्य ही पादवेध चरणों का विचार करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र चरणों के वेध जैसे I & III, II & IV नक्षत्र चरणों में वेधाभाव होने के कारण स्वल्पदोष रह जाता है।

आद्यांशेन चतुर्थांश चतुर्थांशेन यादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
ययो भांशव्यधश्चैवं जायते वर कन्ययोः। तयो मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्प दोषदाः॥

(vii) **'ज्योतिष चिन्तामणि'** अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद—इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ —ज्यो० चिन्तामणि

नाड़ी आदि दोषों का परिहार होने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित आधे गुणों को जोड़ (जमा कर) देने का विधान है।

उपयुक्त उपायों से परिहार—

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए श्रीमृत्युञ्जय मन्त्र का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है—

अन्यत्र भी लिखा है—श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त—

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च॥

अर्थात् दुष्ट षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), नवपंचम में चांदी-कांसे का बर्तन, नाड़ी दोष में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा द्विद्वादश में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी अष्टकूट दोषों की शान्ति हो जाती है।

वर-कन्या की कुण्डली में नाड़ी-देष हो, परन्तु अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश विवाह करना आवश्यक हो, तो उस स्थिति में वर/कन्या का अर्क/कुम्भ विवाह, महामृत्युजंय जप, सुवर्ण, रत्न, चांदी, अनाजादि के दान, ब्राह्मण भोजन आदि के पश्चात् ही विवाह कार्य करना प्रशस्त होगा—

हेमाग्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा।
कुर्यादवश्यमुद्वाहे नाडीदोषाऽपनुत्तये॥ (मुहूर्त गणपति)

शुद्ध वर-कन्या मैलापक सारिणी (भाग-१)

कन्या राशि	वर/नक्षत्र → नक्षत्र ↓	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८॥ 1236	२१॥ 1,2,3	२२॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३॥ 3,8	३१॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 1458	१३॥ 1457
	भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४॥ 1238	१८ 1358	२६॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१॥ 3	२३॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८॥ 8,9व	२६ 9,व	२१॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
	कृति 1 चरण	२७॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६॥ 1236	२० 1356	२०॥ 1356	२१ 1356	२५॥ 3,6	२६॥ 3,6	२३॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
वृष	कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६॥ 3,6	१७॥ 2,3,6	१७॥ 2,3,6	१८॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३॥ 3,9
	रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२॥ 3468	१०॥ 3568	२४॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
	मृग 1-2	२३॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९॥ 1,2,8	२४॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९॥ 456व	१५ 3458	२४॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	१३ 6,8,9
मिथुन	मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१॥ 3,4	११॥ 2,4,5	१२ 2358	१४॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८॥ 3,व	३१॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
	आर्द्रा 1 से 4	१९॥ 3,5,8	२७॥ 3,5	२१॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२०॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९॥ 3,4व	२१॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७॥ 4,6
	पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३॥ 3,5,6	२०॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७॥ 3,6
कर्क	पुन. 4	२३ 1,3,8	२९॥ 1,3	२५॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९॥ 3,6	१६॥ 1246	२०॥ 1234	१५॥ 1238	१८ 1358	१९॥ 1358	२१ 1356
	पुष्य 1 से 4	३०॥ 1,3	२१॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११॥ 12358	१८॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५॥ 1238	२३॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२॥ 14568
	श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५॥ 1246	१८॥ 1236	२१॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
सिंह	यघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६॥ 6,9,व	१७॥ 158व	९॥ 1568व	१७॥ 156व	२१॥ 146व	२२॥ 136व	२१ 1346व	१६॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६॥ 1236	२१॥ 123व
	पू.फा. 1 से 4	२६ 9,व	१८॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३॥ 145व	१५॥ 1458	२० 148व	२८॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२॥ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	१६॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५	२४ 1,2व	२३ 123व	७॥ 1238
	उ.फा. 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१॥ 1,3,8	१७॥ 2,3,8	२५॥ 2,3	२० 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६॥ 128व	१३॥ 1238
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१३ 3578	२२॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४॥ 3,9	३१॥ 1,3	२३॥ 1,3,8	२४॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७॥ 8	२५ 3,4,6
	हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 358व	२८ 3,5व	२३ 3,5,6	१८॥ 236व	२२॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
	चित्रा 1,2	१३ 3567	४॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५॥ 1,3,6	२१॥ 356व	१२॥ 3568व	२७ 35,व	२२॥ 2,3,व	८॥ 2368व	१४॥ 2346व	२४॥ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8

नोट--गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-२)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या	नक्षत्र ↓	अश्वि 1 से 4	भर 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२ ॥ 3,4,6	१४ 3468	२८ ॥ 3,4	२४ 3,7	२० ॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९ ॥ 3,6,9	२० ॥ 3,5,6	११ 3568	२६ ॥ 3,5,व	२५ ॥ 3,5,व	११ ॥ 3568	१७ ॥ 456व	१७ ॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,8
	स्वा. 1 से 4	२७ ॥ 3,4	२९ ॥ 3	१७ ॥ 3,6,8	१३ 3678	१५ ॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६ ॥ 4,9	२८ 9	२९ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५ ॥ 3,5व	२५ ॥ 3,5व	२६ 2,3	२७ ॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२ ॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२० ॥ 3,4,8	१५ ॥ 3478	१० ॥ 3678	१८ ॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१ ॥ 4,5,6	१८ ॥ 3,5,8	१७ ॥ 358,व	१९ ॥ 358व	१७ ॥ 2346	१७ ॥ 2346	१९ 2346	२७ ॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४ ॥ 1478	१९ ॥ 1,4,8	१४ ॥ 1368	२२ ॥ 1,3,6	१२ ॥ 1567	१३ 1567	१३ ॥ 1567	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 4,6,9	१५ ॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३ ॥ 136व	२१ ॥ 146व	१७ ॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५ ॥ 1378	२० 1367	२४ ॥ 1,3,6	२७ ॥ 1,3,4	२० ॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२० ॥ 1,5,7	२६ ॥ 9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 138व	२९ ॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११ ॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८ ॥ 1367	२५ 1,3,7	२९ ॥ 1,3	२२ ॥ 1,3,6	२२ ॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५ ॥ 135678	१० ॥ 3669	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४ ॥ 1345
धनु	मूल 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९ ॥ 1,5,7	१३ 1567	१३ ॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७ ॥ 4678	१७ ॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९ ॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पू.षा. 1 से 4	२६ 9	१८ ॥ 8,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 14567	१८ ॥ 1457	११ 14578	१८ ॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	१३ 3478	१७ ॥ 3,6,7	१९ 6,9,व	१७ ॥ 8,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३ ॥ 13568
	उ.षा. 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७ ॥ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	२३ ॥ 3,7,व	८ ॥ 678व	८ ॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२८ ॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उ.षा. 2,3,4	२७ 3,4,5	२८ ॥ 4,5	१४ ॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२२ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२ ॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४ ॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ ॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,4,5	२६ ॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६ ॥ 5678	१८ ॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४ ॥ 4,9व	१९ ॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११ ॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२० ॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९ ॥ 4,5,7	५ ॥ 5678	१२ ॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१० ॥ 4568	२६ 3,4,5	३० ॥ 3,4	२७ 4,6	१९ ॥ 4,6,8	१२ 4689	१९ 4,6,9	१८ ॥ 3469	१३ 4567	४ ॥ 45678	१९ ॥ 357व	२५ ॥ 3,5,व	११ 568व	१८ ॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२ ॥ 3	२५ ॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६ ॥ 3,5,व	२० ॥ 356व	१२ ॥ 568व	११ ॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पू.भा. 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१ ॥ 3,4	३१ ॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७ ॥ 4,8,9	१८ ॥ 4,8,9	१३ ॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	१९ ॥ 5,6,व	२५ ॥ 4,5व	१६ ॥ 458व	१५ ॥ 4,7,8	१५ ॥ 3478	१७ ॥ 3467
मीन	पू.भा. 4	१४ ॥ 1248	२२ 1234	१६ ॥ 1246	१९ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८ ॥ 1458	१९ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	१९ 4,6,9	१८ 1467	२३ ॥ 1347	१४ ॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८ ॥ 1456
	उ.भा. 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 1345	१८ 1358	१७ ॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७ ॥ 9	१९ ॥ 8,9	२१ ॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७ ॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४ ॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७ ॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४ ॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७ ॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३ ॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	१९ ॥ 1456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-३)

वर/नक्षत्र →		तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या	नक्षत्र ↓	चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२ ॥ 1346	२६ ॥ 1,3,4	२२ ॥ 1346	१८ ॥ 3467	२५ ॥ 3,7	१४ ॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३ ॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२० ॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3	२६ 2,4
	भर 1 से 4	१३ ॥ 1368	२९ 1,3	२१ ॥ 1,3,6	१७ ॥ 3467	१७ ॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८ ॥ 8,9	२६ 4,9	२७ ॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९ ॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	२७ 2,3
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 1,3,4	१५ 1368	१९ ॥ 1348	१५ ॥ 3478	१९ ॥ 3,6,7	२५ ॥ 3,7	२५ 3,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 6,8,9	१३ ॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९ ॥ 1356	१७ ॥ 2346	१९ ॥ 2,3,6	१२ 2368
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४ ॥ 1378	२० ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,6	३० ॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१० ॥ 4689	२४ 3,4,9	२९ ॥ 1,3,4	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6	१४ 3568
	रोह 1 से 4	१९ ॥ 1,6,7	१५ ॥ 1378	९ ॥ 1678	१५ 1368	२९ ॥ 3,4	२४ 3,6	१४ ॥ 3567	१९ ॥ 3,5,7	११ ॥ 4578	१६ 4,8,9	१७ ॥ 4,8,9	२० ॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3,4	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5	११ 3,5,8
	मृग 1-2	१२ 1678	२५ ॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१ ॥ 3,5,8	२४ ॥ 3,6	१५ 3567	१० ॥ 3578	१७ ॥ 3457	२२ 3,4,9	२५ ॥ 4,9	१३ 4689	१९ ॥ 1468	२७ 1,4,6	२९ ॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8	२७ 3,5
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८ ॥ 3458	२५ 3,4,5	२० ॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१ ॥ 6,9	२४ 3,9	२५ ॥ 3,5,व	१७ ॥ 3,5,8	२६ ॥ 3,5,व
	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२० ॥ 4,6,9	१३ 4567	१७ ॥ 3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१८ 467व	१९ ॥ 4,6,7	१२ ॥ 4689	१७ ॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६ ॥ 3,5व	२७ 3,5,व
	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१७ ॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4689	१८ ॥ 4,8,9	२८ 5,व	२७ ॥ 3,5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८ ॥ 14678	२१ 147व	२१ ॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८ ॥ 1567	१० ॥ 14578	१६ ॥ 4,8,9	२६ ॥ 9	२६ 3,9
	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६ ॥ 1,3,5	२१ ॥ 1456	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	१७ ॥ 1367	११ ॥ 1478	२१ ॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४ ॥ 145678	१४ 13567	१८ ॥ 1457	२४ 4,9	१८ ॥ 8,9	२७ 9
	श्ले. 1 से 4	२५ ॥ 1,3,5	१२ 1568	१७ ॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२० ॥ 6,9	२६ 9	२३ 1,4,7	१६ 1367	७ ॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७ ॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9	१३ 6,8,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४ ॥ 1,3,5	११ ॥ 13568	१६ ॥ 1358व	२२ ॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९ ॥ 6,9व	८ ॥ 689व	३ ॥ 15678	४ ॥ 15678	१८ ॥ 1,5,7	२४ ॥ 1,5,व	२५ ॥ 1,5,व	१८ ॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7	१३ ॥ 6,7,8
	पू.फा. 1 से 4	१० ॥ 1568	२५ ॥ 135व	१८ ॥ 156व	२४ 3,6व	२३ ॥ 3,8व	२५ ॥ 3,6व	२० 6,9व	१७ ॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८ ॥ 1,5,7	४ ॥ 15678	११ 1568	१९ ॥ 156व	२४ ॥ 135व	२५ 3,7	१७ ॥ 3,7,8	२६ 3,7
	उ.फा. 1	१७ 13456	२५ ॥ 1,3,5	१६ ॥ 13456	२२ ॥ 3,4,6	३१ ॥ 3,व	१७ ॥ 3,6,8	९ ॥ 3689	२५ 9,व	२५ ॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११ ॥ 1567	१७ ॥ 1356	११ 3568	१५ ॥ 358व	१६ 3478	२६ ॥ 3,7	२६ 3,7
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१६ ॥ 1246	२५ ॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७ ॥ 3,5व	१३ ॥ 568व	१४ 3568	२९ ॥ 5	२९ ॥ 5	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६ ॥ 1367	१० ॥ 3678	१४ ॥ 1378	१७ ॥ 3,5,8	२८ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६ ॥ 1,2,3	१८ ॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३ ॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८ ॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4,6,9	१९ 1467	८ ॥ 34678	१३ ॥ 1378	१६ ॥ 3458	२६ ॥ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६ ॥ 1,2,3	२८ ॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७ ॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५ ॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६ ॥ 1467	१९ ॥ 3456	१० 34568	१९ ॥ 3456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-४)

वर/नक्षत्र →	कन्या नक्षत्र ↓	तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूला 1 से 4	पूषा 1 से 4	उषा 1 चरण	उषा 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पूभा 1,2,3	पूभा 4	उभा 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३॥ 4,8,व	१८॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 3457
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१॥ 2,3व	१६॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९॥ 3,7,व	१२ 3576
	विशा 1,2,3	३४॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8व	१६ 246व	२१॥ 234व	२७॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७॥ 368व	३०॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३॥ 4567	४ 45678
वृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६॥ 128व	२८ 8	२७॥ 4,6	३१॥ 3,4	२२ 1234	१७॥ 1362व	९ 12368	१२॥ 13568	१२॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	९॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६॥ 12568	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४॥ 145व	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९॥ 1234	१५ 126व	१९॥ 1234	३१॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४॥ 1248	१७॥ 1236	१७॥ 1236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1358	१० 13568	९॥ 3689	२१॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूल 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 124व	१५॥ 1246	१५ 1248	२८ 8	२८ 4,6	२६॥ 3,6	१५॥ 1236	१५॥ 1236	२०॥ 1234	२८॥ 1,3,4	२१॥ 1,3,8	१४॥ 1468	१६॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पू.षा. 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३॥ 1,2,व	५॥ 1268	१४॥ 1468	२३॥ 1,4,6	२८॥ 1,4	३०॥ 4,व	२३॥ 8,व	३१ 3,व
	उ.षा. 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९॥ 268व	२४ 2,3व	१८॥ 2,3,6	२६॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६॥ 128व	१५ 1248व	१५॥ 1236व	२३॥ 1,3,6	२३॥ 1,3,6	२९॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उ.षा. 2,3,4	२४ 1,3,6	२२॥ 1,3,8	१५॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६॥ 4,6	१७॥ 126व	१७॥ 126व	२३॥ 1234	३०॥ 3,4	३१ 3,4	२२॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२॥ 148व	१७॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७॥ 246व	२३॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१॥ 124व	२८॥ 3,4	२९॥ 3,4	२२॥ 3,4,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8	१८॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६॥ 3,6	१५॥ 4,6,8	२२॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९॥ 3,4	१५॥ 3468	२४॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४॥ 246व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,6	२४॥ 3,4,6	१८॥ 236व	१८॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९॥ 4,6,8	८॥ 2468व	१७॥ 236व	१६ 236व
	पू.भा. 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२०॥ 456व	२६॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९॥ 3,4	३०॥ 3,4	२४॥ 234व	२३॥ 234व	२०॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8,व	२२॥ 2,4,व	२०॥ 234व
मीन	पू.भा. 4	१२ 14567	१९॥ 1457	१३॥ 14567	१९॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५॥ 1468	२.९ 134व	३० 1,3व	२९॥ 1,3,4	२८॥ 1,3,4	२५॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३०॥ 3,4
	उ.भा. 1 से 4	३ 145678	१९॥ 1357	१२॥ 14567	१८॥ 4,6,9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	२४॥ 136व	२२॥ 1,8व	३० 134व	२९॥ 1,3,4	२९॥ 1,3,4	१४॥ 1468	५॥ 12468	१६॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४॥ 145678	१०॥ 4689	२७॥ 9	२२॥ 6,9	२७ 146व	२९॥ 1,3व	२१॥ 138व	२१ 1348	२१॥ 1348	२३ 1346	१४॥ 1246व	१६॥ 1236व	१८॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

अरिष्ट ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवारों के व्रत की विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में कोई अशुभ ग्रह अनिष्टकारक हो अथवा किसी विशेष कार्य सिद्धि में कोई अनिष्ट ग्रह बाधा एवं पीड़ा पहुंचा रहा हो, तो उससे सम्बन्धित वार में विधि अनुसार व्रत, पाठ-पूजा एवं ग्रह मंत्र के जप हवन दानादि करने से अरिष्ट ग्रह की शान्ति होने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से ''व्रत और त्यौहार'' एवं सप्तवार कथा मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मूल्य ३० रुपए। व्रत, जप, हवनादि अनुष्ठान करने से मानसिक व कायिक पापों का प्रायश्चित हो जाता है।

रविवार के व्रत की विधि—सर्व मनोकामना की पूर्ति विशेषकर शत्रु विजय, पुत्र प्राप्ति, नेत्र रोग, कुष्ठ (कोढ़) आदि चर्म रोगों के निवारण हेतु तथा आयु एवं सौभाग्य वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। इस व्रत को सूर्यषष्ठी (विशेषकर रविवासरी), रथ सप्तमी अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके प्रत्येक रविवार कम से कम बारह (१२) अथवा एक वर्ष पर्यन्त व्रत रखें। व्रत के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य के बीज मंत्र **''ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः''** मंत्र का कम से कम तीन माला करके सूर्य भगवान् का ध्यान करें। **आदित्याय विघ्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात्॥** अथवा गायत्री मंत्र की दो माला जाप करें। तदनन्तर ताम्र बर्तन में शुद्ध जल (गंगा जल सहित), गंगाक्षत, लाल पुष्प या लाल चन्दन एवं कुशा डालकर सूर्य देव को इस मंत्र द्वारा अर्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें—**''एहि सूर्य सहस्त्रांशों तेजो राशे जगतपते। अनुकम्पय मां गृहाण अर्घ्य दिवाकर''** स्वयं भी लाल चन्दन या केशरादि से तिलक लगाए। उस दिन नमक-तेलादि तामसिक भोजन से परहेज रखें। उद्यापन-कालीन अंतिम रविवार को सूर्य के बीज मंत्र तथा सूर्य गायत्री मंत्र द्वारा हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को मिष्ठान सहित भोजन करवा कर यथाशक्ति गेहूं, गुड़, ताम्र बर्तन, नारियल, लाल वस्त्र, मिष्ठानादि का दक्षिणा सहित दान करें। **सूर्य शान्ति** हेतु मानक (माणिक्य) रत्न सुवर्ण की अंगूठी में धारण करना तथा लाल वस्त्र दान करना शुभ रहता है।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर **''ॐ नमः शिवाय''** आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, चावल, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगा, जल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमक रहित होना चाहिए। व्रत का उद्यापन भी उपर्युक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद वस्तुओं जैसे—चावल, श्वेत वस्त्र, बरफी, दूध-दही, क्षीर, चांदी, सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति होकर मनोरथ सिद्धि होती है। उद्यापन के दिन ब्राह्मणों तथा बच्चों को खीर, पूड़ी, मिष्ठान भोजन करवा कर यथाशक्ति दान करें।

चन्द्रमा की शान्ति हेतु चांदी की अंगूठी में चन्द्रकान्तमणि एवं मोती धारण करना, श्वेत वस्त्र दान करना, दूध, दही, बरफी, चावलों, बतासे आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। व्रत के दिन इसके बीज मंत्र **''ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः''** की कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्व प्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रु दमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, हृदयमोचनादि के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथाशक्ति जीवन-पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शांत हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फूलों, ताम्र बर्तन तथा नारियल द्वारा पूजा एवं दान करना चाहिए साथ ही श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **''ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः''** बीज मंत्र की कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। मंगल की शुभता के लिए ताम्बे की अंगूठी में मूंगा धारण करना शुभ होता है। **मंगल देवता** का ध्यान निम्नलिखित मंत्र द्वारा करना चाहिए—

रक्त माल्य अम्बरधरः शक्ति शूल गदाधारः। चतुर्भुजः रक्तोमा वरदः स्याद धरासुतः॥

इसके अतिरिक्त श्री हनुमान चालीसा तथा श्री हनुमान उपासना करना भी कल्याणप्रद रहता है।

बुधवार के व्रत की विधि—इस व्रत का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से करें। २१ व्रत रखें। बुधवार के व्रत से बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्रकालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार तक करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करके, बीजमंत्र **''ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः''** का पाठ कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित जैसे—मूंगी से बना हुआ हलवा, मीठी पंजीरी व मूंग के लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी सेवन करें। व्रत के अन्तिम बुधवार को मधुसर्पी, दधि तथा घृत के साथ बीज मंत्र का हवन करें। तदुपरांत सुपात्रव्यक्ति को मूंगी सहित भोजन, हरे फल, हरा-पीला वस्त्र दान करें। गौओं को हरा चारा भी डाल देवें।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारणा करना, छोटी इलाइची, तुलसी तथा कांसे के बर्तन में भोजन करना तथा पन्ना रत्न धारण करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा विद्या-बुद्धि, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र विवाह आदि सुखों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (ज्येष्ठ) वीरवार से प्रारम्भ करके तीन वर्ष अथवा १६ वीरवार तक करना चाहिए। व्रत प्रारम्भ के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करके पीले पुष्पों, चने की दाल, पीला यज्ञोपवीत, पीला चन्दन, बेसन की बरफी, हल्दी व पीले चावलों एवं केला आदि पीले फलों सहित भगवान् विष्णु तथा बृहस्पति (गुरू) की पूजा करनी चाहिए तथा गुरू के बीज मन्त्र की कम से कम तीन या पांच अथवा १६ माला करनी चाहिए। व्रती को बृहस्पति वार को शिर नहीं धोना चाहिए तथा एक समय ही नमक रहित भोजन करना चाहिए। व्रती को उस दिन भोग लगा कर किसी ब्राह्मण व बालक को चने की दाल, बेसन की बर्फी, बेसन का हलुवा, घी, लड्डु, पीले चावल, केलों आदि पीतल का बर्तन तथा पीले वस्त्र का दान दक्षिण सहित करके स्वयं भी ऐसा ही भोजन करना चाहिए। इस दिन केले के वृक्ष की पूजा का भी विधान लिखा है। मन-वचन और कर्म द्वारा शुद्ध चित्त होकर गुरु गायत्री मंत्र अथवा गुरु के बीज मंत्र **''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः''** का यथाशक्ति पाठ करे। उद्यापन में पाठ के दशमांश भाग का समधि,

मधु-सर्पी, घृत, दधि व हरिद्रा सहित सामग्री द्वारा हवन करना कल्याणकारी रहता है। बृहस्पति की शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पहिनना भी शुभ रहता है।

शुक्रवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। यह व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से शुरु किया जाता है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत, चंदन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बाँट दें। ग्रह शान्ति के लिए

"**ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**" की ३ माला या दस माला का जाप करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक का प्रयोग न करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दे। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो या उद्यापन उपरान्त हवनादि के पश्चात्, ब्राह्मणों एवं बालकों (बटुकों) को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी फलादि सफेद पदार्थों का दान करें। यह व्रत शुक्र शान्ति का सरल उपचार है। यह व्रत २१ या ३१ अथवा यथा शक्ति मात्रा में करें—मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी, ऐसा शिवपुराण में लिखा है।

शनिवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन-धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करा कर धूप-गंध, नीले पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। १९ शनिवार करने के उपरान्त उद्यापन के समय पिप्लेश्वर महादेव का पूजन करें। पीपल के वृक्ष के चारों ओर कच्चे सूत को लपेट कर धूप दीप नैवेद्य से शनिदेव की पूजा करे। ७ बार धागे को लपेटने के साथ ही साथ शनिदेव की जय बोलते रहे और गाधि, कौशिक, पिप्लाद तीनों महामुनियों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इस दिन शनि स्तोत्र का पाठ, जूते, जुराब नीले रंग का वस्त्र काला छाता, काले माश, काले चने, चाकू, नारियल और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को देवें और स्वयं भी उड़दादि तथा तेल निर्मित पदार्थों का सेवन करें और एक समय नमक रहित भोजन करना चाहिए। घोड़े की नाल (लोहे का) छल्ला पहनना चाहिए। हनुमान जी को भी तेल चढ़ाना चाहिए और संकटमोचन का पाठ करना चाहिए। शनिदेव की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय का जाप भी कल्याणकारी रहेगा।

राहु की शान्ति के लिए भी शनि का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करे और दान में नारियल, भूरा काबल, जौं आदि दे और पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। सतनाजा दान करना चाहिए। राहु के बीजमंत्र "**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः॥**" का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु-केतु के बीज मंत्र "**ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः**" की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरंभ न करे। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूला	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंगल राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५	
नीचांश	तु. १०	वृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे. २०°	वृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचशला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्द	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उषा
आर्द्रा	कु. घ. ङ छ.	मिथुन	नर (मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पूषा
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूला
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	चं.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उभा
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्व	१	पूभा
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मित्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूला	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ शं.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वे	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ॥जर	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	रूद्र	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थं. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबु	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उफा

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समाः	बुधः	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	बृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र								शत्रु नवपंचम चक्र			
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नव पंचम—कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-बृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष—लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

(मुख्य-मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय स्वंय करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है! जैसे, शास्त्र में कहा गया है—

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, स्वास्थ्य धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं—

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), (९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समावर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।

☛(१) गर्भाधान संस्कार

—यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला)स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। रजोदर्शन के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां—१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार—सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र—रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न—लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त पुत्रार्थी विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल—रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☛(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त

—यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार—रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। मंगल व बुध वारों में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र—रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☛(३) सीमन्त संस्कार

—यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**—रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र—मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूला, श्रवणः

लग्न—१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त

—यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां—२, ७, १२

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☛(४) जातकर्म संस्कार

—कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार ११वें अथवा १२वें दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)

शुभ वार = च., बु., गु., शु.

नक्षत्र—अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☛मेधा-जनन संस्कार

—जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोघृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः "ॐ भूस्त्वपि धधामि।" ॐ भुस्त्वपि दधामि।" तथा ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें। इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☛स्तनपान का मुहूर्त्त

—जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५.

शुभ नक्षत्र—रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☛षष्ठी पूजन

—जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में षष्ठी पूजन,

कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☞प्रसूता स्नान मुहूर्त्त—सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार—रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र—आश्वि, रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु, रेव।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☞नामकरण संस्कार—यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है—

"नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥"

गृहारम्भ—प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☞नामकरण—सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ—१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न—१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो अति सौख्य, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युज्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☞झूला आरोहन मुहूर्त्त—बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☞निष्क्रमण मुहूर्त्त—जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न—२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☞भूम्युपवेशन-मुहूर्त्त—जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त—

शुभ तिथियां—१ (कृ) 2,3,4,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न—२,५,८,११ राशि लग्न।

☞जीविका परीक्षा—'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☞अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त—जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना अन्न प्राशन में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तश्लाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष—अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

कर्ण वेध का मुहूर्त्त—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां छोड़कर)।

वार—चं, बु., गु., शु वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव, विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष—बालक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की शलाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

कन्या की नासिका छेदन—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं—२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यतः लोग अंग्रेजी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्तः एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश मांना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्रातः उठकर गंगा जल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवा कर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य तथा ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान में १, ३, ४, ७ इत्यादि विषम वर्षों के कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक का चौलकर्म (मुण्डन) संस्कार पूर्वान्ह काल में करना चाहिए।

चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण के मासों में —वैशा, ज्ये. आषा. (२० जून तक), माघ, फाल्गुन, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १३ (शु०) १५ तिथियों में, संक्रान्ति आदि पर्व दिनों को छोड़कर, चन्द्र, स्वा, ज्ये. श्रव, अभि., धनि. और शतभिषा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ है। लोकाचार अनुसार कुछ लोग नवरात्रों में, अक्षयातीज आदि शुभ दिनों में बिना सुनिश्चित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि कार्य कर सकते हैं।

बालक का जन्म मास त्याज्य है। परन्तु जन्म नक्षत्र या जन्म राशि शुभ है। तथा जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो। बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, तो मुण्डन कार्य न करावें परन्तु यदि गर्भ ५ मास से अधिक का हो तो या बालक की आयु ५ बर्ष से अधिक हो, तो दोष नहीं। ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं।

क्षौर (हज़ामत) कर्म मुहूर्त्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां, नक्षत्र और वार शुभ बतलाए गए हैं, वे ही क्षौर (हजामत) के लिए शुभ हैं। मंगल, शनि, व रवि वारों में क्षौर से पुनः ९वां दिन, रिक्ता तिथियों और विशेष ग्राम (नगर) में जाने के दिन, स्नान करने के बाद, शरीर में उबटन लगाने के बाद और भोजन कर लेने के बाद अपना कल्याण चाहने वाले वाले क्षौर कर्म (हजामत) न करावें॥

विशेष—यज्ञ में, विवाह, मृतक कर्म में कारागार (जेल) से छूटने पर, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म निषेध दिनों में भी करा लेना शुभद होता है।

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्र बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु, मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तेल चढ़ाना चाहिए। इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिन	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

—वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार—

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गढ़ा खोद कर उसे जल भर दें। प्रातःकाल आकर उसे देखने पर, यदि वह गढ़ा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गढ़ा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग ढेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गढ़ा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसे गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गढ़ा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि ज़मीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

सुप्त भूमि (भू-शयन) का विचार

प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १०, २१, एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है, अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, होम, गृह निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

एक अन्य मतानुसार, सूर्य-नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९, तथा २६ वे नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है।

भू-रजस्वला—सूर्य संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९ वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अतः इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि,तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें।

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १०. दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में राहु कालम का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार—प्रातः ७/३० से प्रातः ९ बजे तक
मंगलवार—अपरान्ह ३/०० से ४/३० बजे तक
बुधवार—दोपहर १२/०० से १/३० बजे तक
बृहस्पतिवार—दोपहर १/३० से ३/०० बजे तक
शुक्रवार—प्रातः १०/३० से दुपै. १२ बजे तक
शनिवार—प्रातः ९/०० से प्रातः १०/३० बजे तक
रविवार—सायं ४/३० से सायं ६/०० बजे तक

नींव खोदने के लिए विशेष ज्ञातव्य

(i) सूर्य वृष, मिथुन या कर्क में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ नैर्ऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) कोण में करें।

(ii) सूर्य सिंह, कन्या या तुला में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ आग्नेय कोण (पूर्व-दक्षिण) से करें।

(iii) सूर्य वृश्चिक, धनु या मकर में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) से करें।

(iv) सूर्य मेष, कुम्भ या मीन में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिम) से करें।

नींव में रखने योग्य पदार्थ

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री—

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वीं को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें।
- ५ नई ईंटे
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- (विशेष) —भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पांव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।
- नारियल

अथ प्रसूति लग्नादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज़ स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

ग्रह व राशियों के तत्त्वों पर से शारीरिक स्थिति

जन्म समय जिस प्रकार की उदित लग्न राशि और ग्रह के तत्त्व होंगे, जातक की शरीर संरचना भी वैसी ही होगी। शरीर की स्थिति के सम्बन्ध में विचार करने के लिए ग्रह और राशियों के तत्त्व नीचे लिखे जाते हैं—

ग्रह	शुष्कादि	तत्त्व	कद
सूर्य	शुष्क ग्रह	अग्नि	मध्यम
चन्द्र	जल ग्रह	जल	दीर्घ
मंगल	शुष्क ग्रह	अग्नि	ह्रस्व
बुध	जलीय	पृथ्वी	मध्यम
गुरु	जलीय	आकाश या तेज़	मध्यम या ह्रस्व
शुक्र	जलीय	जल तत्त्व	ह्रस्व
शनि	शुष्क	वायु तत्त्व	दीर्घ
राहु	शुष्क	वायु	दीर्घ
केतु	शुष्क	वायु	मध्यम

(१) जन्म लग्न में जल राशि हो एवं उसमें जल तत्त्व ग्रह की स्थिति हो, तो जातक का शरीर मोटा एवं पुष्ट होगा।

(२) लग्न एवं लग्नाधिपति ग्रह जलराशिगत हो, तो भी शरीर स्थूल एवं पुष्ट होगा।

(३) यदि जन्म लग्न अग्नि राशि का हो और अग्नि तत्त्व के ग्रह उसमें स्थित हों, तो मनुष्य शक्तिशाली एवं बली होता है, पर शरीर देखने में दुबला लगेगा।

(४) पृथ्वी राशि का लग्न हो और उसका राशि स्वामी ग्रह जल राशि में हो तो शरीर साधारणतया स्थूल होता है।

(५) पृथ्वी राशि लग्न हो और लग्नपति ग्रह पृथ्वी राशि में हो, तो शरीर स्थूल और दृढ़ होता है।

(६) यदि लग्न राशि पृथ्वी तत्त्व की हो और उसमें पृथ्वी तत्त्व का ही ग्रह पड़ा हो, तो जातक नाटे (छोटे) कद वाला होता है।

(७) यदि लग्न वायु तत्त्व राशि वाला हो और उसमें वायु तत्त्व के ग्रह हों, तो जातक दुबला, परन्तु तीक्ष्ण बुद्धि वाला होगा।

(८) यदि लग्न अग्नि या वायु तत्त्व को राशि वाला हो और लग्नाधिपति जल राशिगत हो तो शरीर स्थूल होगा।

(९) यदि लग्न में अग्नि या वायु तत्त्व की राशि हो और लग्नेश ग्रह पृथ्वी राशिगत हो, तो हड्डियाँ साधारणतया मज़बूत और शरीर पुष्ट होगा।

इसके साथ ही लग्न की राशि ह्रस्व, दीर्घ या सम (मध्यम), जिस प्रकार की हो, उसी के अनुसार जातक के शरीर की ऊँचाई समझनी चाहिए।

इसी भान्ति लग्न राशि और लग्नेश ग्रह के अनुसार जातक के रूप-रंग का निर्णय करना चाहिए।

पंचाँग-परिवर्तन करना

'पंचांगदिवाकर' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए 8 अप्रै., 2010 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/08 सू.उ. प्राप्त ('भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदयास्त' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/13) से 6 मिनट पूर्व (पहले) है। अत: घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 6 मिनट के घटी पल 15 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। ध्यान रहे, सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

8 अप्रैल, 2010 ई. को जालन्धर का पंचांग—8 अप्रैल, 2010 ई. को दिल्ली का पंचांग

8 अप्रैल, 2010 ई. को जालन्धर का पंचांग (घटी पल)	8 अप्रैल, 2010 ई. को दिल्ली का पंचांग (घटी पल)
तिथि — १/२० (समाप्ति काल)	तिथि — १/३५ (समाप्ति काल)
नक्षत्र — ५८/२८	नक्षत्र — ५८/४३
योग — १९/१०	योग — १९/२५

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०६७ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में वैशाख कृष्ण सप्तमी प्रविष्टे २३ चैत्र, तदनुसार 5 अप्रै., 2010 ई. को दोपहर २ बजकर २४ मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ३० पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/२१°/२७'/४५" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई उसके निकटवर्ती अक्षांश ३१/२० की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जा सकती है। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और २१° अंश के नीचे कोष्ठक में हमें १/४३ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/३० में जमा कर देने से कुल जोड़ २२/१३ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुन: लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २२/१३ कर्क (३) राशि के सामने और २७ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २२/१३से केवल २ पल अधिक है। अब अनुपातिक विधि द्वारा २ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। जैसे यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ५ कला का अन्तर पड़ेगा। इसी प्रकार २ पलों के पीछे १० कलाओं का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/३० घट्यादि) ३ गत राशि अर्थात् कर्क लग्न, २६ अंश, ५० कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ३/२६°/५०'/००")। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक **'ज्योतिष तत्त्व'** का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५।०।५०

लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०)

चरखण्ड १५१।१२०।५१

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे—लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१ वृष	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२ मिथुन	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	११
३ कर्क	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४ सिंह	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६ तुला	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०१	२३	३७	५१	०५
७ वृश्चिक	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८ धनु	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९ मकर	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९°

पलभा ४।७।५५

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	प.	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१ वृष	घ.	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	प.	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२ मिथुन	घ.	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	प.	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३ कर्क	घ.	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	प.	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	प.	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५ कन्या	घ.	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	प.	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	प.	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७ वृश्चिक	घ.	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
	प.	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८ धनु	घ.	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
	प.	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९ मकर	घ.	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	प.	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	प.	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३°

पलभा ५।५।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	५९	६	१४	२१	२९	३७	४४	५२	०	९	१८	२६	३५	४४	५२	१	१०	१८	२७	३५	४४	५३	१	१०	१९	२७	३६	४४	५३	२	१०
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
वृष	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२८	३३	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	७
२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२७	३८
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१७
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१४	२५	३६	४७
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	४२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	५	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६	१४	२३	३२	४०	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	४९	५८	७	१५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	४८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५	२	१०	१७	२५	३३	४१	४७	५५	३	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	११	१८	२६	३३	४१	४९	५६	४	११	१९	२७	३४	४२	४९	५७	५	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४३	५१	५९

अक्षांश २७°

पलभा ६।६।५०

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	२	११	१९	२७	३६	४४	५२
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३	४३
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	००	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	०९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५६	०८	१९	३१	४२	५४
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१५	२५	३६	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	०६
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	४३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	६	१६	२६	३६	४६	५६	०७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	३	१२	२०	२८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३४	४१	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५९	६	१३
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	५९	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०

लग्न सारणी अक्षांश ३१/२० उत्तर पलभा (७/१७/२१)

जालन्धर, अमृतसर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८
	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९
	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१
	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७
	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३
	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	२९	३९	४९	५९	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७
	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८

अंश		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१ वृष	घ.	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
२ मिथुन	घ.	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५
३ कर्क	घ.	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
४ सिंह	घ.	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
५ कन्या	घ.	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३
६ तुला	घ.	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७ वृश्चिक	घ.	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८ धनु	घ.	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९ मकर	घ.	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४१	४७	५४	०१	८	१५	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११ मीन	घ.	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९° उत्तर पलभा (६/३९/०५)

दिल्ली, अमरोहा, रोहतक, जीन्द, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९
	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१

अंश		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१ वृष	घ.	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२ मिथुन	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३ कर्क	घ.	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४ सिंह	घ.	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५ कन्या	घ.	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६ तुला	घ.	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७ वृश्चिक	घ.	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८ धनु	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९ मकर	घ.	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११ मीन	घ.	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३०°) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२१	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°) पलभा ७/४८/३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३ कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४ सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
१ वृष	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
२ मिथुन	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	४५	५५	०६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४३	५७	८
३ कर्क	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९
	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
४ सिंह	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	५५
५ कन्या	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	००	१०	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३
६ तुला	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३
	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
७ वृश्चिक	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३४	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
८ धनु	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४
	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
९ मकर	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९
	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
१० कुम्भ	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५
११ मीन	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८
	५५	४	१३	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।**—लग्न स्पष्ट करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो योगफल मिले उसको दशम लग्न सारिणी के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही दशम लग्न स्पष्ट होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २०।४५ घट्यादि है तथा जालंधर लग्न सा० से सूर्य स्पष्ट (०।१२।७) द्वारा प्राप्तांक ४।९ है, और लग्न स्पष्ट ४।१०।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगांकों को दशम् लग्न सारिणी में देखने पर हमें दशम् भाव स्पष्ट १।८।३६ प्राप्त हुआ। दशभाव स्प. में ६ राशि जोड़ने से चतुर्थ भाव तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह षष्ठांश कहलाता है। षष्ठांश को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। द्वितीय भाव में षष्ठांश जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से तृतीय भाव होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से ३रे भाव की सन्धि, और इस सन्धि में षष्ठांश जोड़ने से चतुर्थ भाव प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से पंचम भाव होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

—पं० पन्ना लाल ज्यो.

षट्वर्ग सारणी चक्रम्

राशि	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
रा. षट्		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
६	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
७	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
बृ.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१०	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
११	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

षड्वर्गी फलादेश विचार

षड्वर्ग में १ होरा, २ द्रेष्काण, ३ सप्तमाश, ४ नवमांश, ५ द्वादशांश, ६ त्रिशांश स्पष्ट कुण्डलियों का विचार किया जाता है। यदि ६ वर्गों में वर्गेश अधिकांश शुभ ग्रह हों तो शुभफल यदि अधिकांश अशुभ ग्रह हों तो अनिष्ट फल देते हैं।

षड्वर्ग सारणी—होरादि ६ वर्गों के लग्न व उनमें ग्रह स्थापन हेतु पीछे जो षड्वर्ग सारिणी दी गई है। अपने लग्न स्पष्ट से प्राप्त राशि अंशानुसार नवांशादि लग्न का ज्ञान करें। राशि व होरादि वर्ग के सामने और अंशों के नीचे कोष्ठक में जो अंक होगा, वही उस वर्ग का लग्न होगा।

उदाहरण—मान लें लग्न स्पष्ट ५।४।२९।२५ है। यहां पर लग्न राशि कन्या और अंशादि ४।२९।।२५ है। सारिणी में ३ भाग ४।१७ पर समाप्त होता है। अत: हमारे अभीष्ट अंशादि (४।२९) ४ चतुर्थ खाने के नीचे पड़ेगे। अतएवं कन्या राशि के सामने (दाईं ओर) तथा चतुर्थ भाग के नीचे की तालिका पर होरा के सामने ४ अर्थात् कर्क लग्न, द्रेष्काण ६ (कन्या), सप्तमांश का १ (मेष), नवमांश का ११ (कुम्भ), द्वादशांश का ७ (तुला), एवं त्रिशांश का २ (वृष) लग्न निकलेगा। इन वर्गों के स्वामी क्रमश: चंद्र, बुध, मंगल, शनि, शुक्र व शुक्र ग्रहों में २ पापग्रह तथा शेष ४ शुभ ग्रह होने के कारण उक्त कन्या लग्न शुभग्रह फलयुक्त-श्रेष्ठ फल होगा। ग्रहस्थापन हेतु उदाहरणार्थ यदि सूर्य स्पष्ट ७।८।१०।४२ है, ७वें भाग एवं ८।३४।१७ अंशादि के नीचे तथा (७) एवं राशि वृश्चिक के सामने दाईं ओर कोष्ठक के होरादि वर्गों में क्रमश: ४।८ ।३ ।६ ।११ ।६ राशियां होंगी। सूर्य होरादि वर्गों में तदनुसार राशि में स्थापित करे। इसी भाँति अन्य चन्द्रादि ग्रहों की स्थापना करेंगे।

होरा फल

होरा लग्न में सिंह (५) अथवा कर्क लग्न ही रहता है। होरा लग्न विषम ५ राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक पुरुषार्थी, उच्चपदाभिलाषी, शूरवीर होगा, गुरु, मंगलादि मित्र ग्रह साथ में हों तो व्यक्ति विद्वान, धन धान्य युक्त उत्तम मित्र युक्त, उच्चपदासीन, नेता व सम्पत्तिवान् होगा। यदि सम ४ राशि सूर्य होरा में शनि, भौम क्षीण चंद्र, राहु आदि पाप ग्रह हों तो जातक नीच प्रकृति वाला, कुल मर्यादा विरुद्ध आचरण करने वाला एवं निर्धनी होता है। होरा लग्न में सम राशि हो और चन्द्रमा उसी में स्थित हो तथा साथ में शुक्रादि शुभ ग्रह हों तो जातक मृदु-भाषी, शान्त स्वभाव, व्यवसायी, समृद्ध, धनी, सुखी परिवार वाला, सुशील व राजदरवार से लाभ प्राप्त करने वाला होगा। यदि चन्द्र होरा में सूर्य, शनि आदि पाप ग्रह हों तो नीचाचरण वाला निर्धनी, नीच कार्यों में प्रवृत्त, सुख में कमी होगी।

द्रेष्काण फल विचार

अपने वर्ग के द्रेष्काण में स्थित सौम्य ग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों तो जातक सत्यवक्ता, धनी, विद्वान् व अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। द्रेष्काणपति शुभ ग्रह की राशि में हो या शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट अथवा युक्त हो तो धन, मान व यश की वृद्धि और अनेक सुखों की पूर्ति करता है। द्रेष्काणपति चन्द्रमा से युक्त व भौम अथवा शुक्र द्वारा वीक्षित हो तो जातक को स्वार्जित धन की प्राप्ति होती है। द्रेष्काणेश शत्रु या नीच राशि में हो तो उस राशि अनुसार शरीर में घाव, चोटादि का चिन्ह होगा। जिस द्रेष्काण में चन्द्रमा स्थित हो उस द्रेष्काण का स्वामी सौम्य ग्रहों द्वारा दृष्ट हों तो तदग्रहानुरूप शुभफलदायक होगा।

सप्तमांश फल विचार

सप्तमांश लग्नपति चन्द्रमा से युक्त या शुभ ग्रहों द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक भाई बन्धुओं से युक्त प्रसिद्ध कांतिवान, धनी, वाक्पटु, एवं मित्रों द्वारा सहायक होता है। सप्तमाँश में पड़े अधिकांश ग्रह उच्च राशिस्थ हों तो जातक समृद्ध, नीच हों तो दरिद्र होता है। सप्तमांशपति पुरुष ग्रह स्वराशि हों या मित्रराशि में हों या शुभ ग्रहों से युक्त हों तो जातक को सुन्दर, सुशील, गुणी, पुत्र संतान का सुख प्राप्त होता है। सप्तमांश लग्नपति पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो अयोग्य व नीच कर्म करने वाली सन्तान होती है। सप्तमांश लग्रपति स्त्री ग्रह हो और शुक्र, बुध आदि स्त्री ग्रहों द्वारा दृष्ट हों तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होंगी। सप्तमांश लग्नपति लग्न से ७ ।८ ।१२वें स्थान में पापग्रह से दृष्ट या गृष्ट हो तो जातक संतानहीन होता है। तृतीय स्थान स्थित रवि या गुरु अथवा भौम सप्तमांश में हो तो जातक सत्यवादी, मनोवांछित अर्थात् निर्वाह योग्य धन प्राप्त करने वाला होता है।

नवमांश कुण्डली विचार

वर्गोत्तम (लग्नानुरूप नवांश) को छोड़कर लग्न का प्रथम नवांश हो तो जातक चंचल, दुष्ट स्वभाव व चोर होता है। द्वितीय नवांश हो तो पुरुष संगीत और स्त्रियों का प्रेमी व भोगी होता है। तृतीय नवांश में उत्पन्न धर्मात्मा, रोगी व ज्ञानी होगा। चतुर्थ में उत्पन्न व्यक्ति गुरुभक्त व सम्पन्न होता है। पंचम में दीर्घायु प्रसिद्ध व बहुपुत्र वाला, षष्ठ में स्त्री के वशीभूत, नपुसंक अपव्ययी व प्रमादी होता है। सप्तम में उत्पन्न पराक्रमी व बुद्धिमान्, अष्टम नवांश में व्यक्ति कृतघ्न द्वेषी, बहुसंतान युक्त व क्लेश में रहता है। नवांश में उत्पन्न पुरुष प्रतापी, कार्य-कुशल व धनधान्य से युक्त होता है। जो ग्रह जन्मकुण्डली व नवमांश कुण्डली-दोनों में उच्चराशिस्थ या स्वराशिस्थ हो वह वर्गोत्तम कहलाता है जिसका फल अत्युत्तम कहा जाता है। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो या मंगल द्वारा दृष्ट हो तो जातक की स्त्री मिलनसार, श्वेत वर्ण पर कुछ तेज स्वभाव की होगी। बुध हो तो सुन्दर आकृति, चतुर, शिल्पविद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, विद्यावान, धार्मिक स्वभाव व शुभाचरभ वाली। शुक्र हो तो चतुर, श्रृंगारप्रिय, श्वेतवर्णा सुन्दरी व कामुक होगी। नवमांशपति शनि हो तो क्रूर स्वभाव की, श्यामवर्णा पति से विरोध करने वाली स्त्री होती है। नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह स्वराशिस्थ अथवा केन्द्र त्रिकोण में स्थित तो जातक को स्त्री का अच्छा सुख मिलता है। नवांशपति भाग्येश के साथ २।५।११वें भाव में उच्च या स्वराशि का होकर पड़ा हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल से धन लाभ होता है। नवमांशपति पाप ग्रहों से युक्त या पाप ग्रह से दृष्टय होकर ६, ८वें या १२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री सुख नहीं मिलता। अधिकांश ग्रह यदि नीच नवांश में हों तो जातक पराधीन होकर जीवन निर्वाह करता है। नवाँश कुण्डली में जितने पुरुष ग्रह बलवान् होकर ५वें भाव में

स्थित हों व ५वें भाव पर पूर्ण दृष्टि करें उतने ही पुत्र होंगे। यदि ५वें चन्द्रमा, शुक्र या बुध हो या इनसे दृष्ट हो तो कन्याएं होती हैं। केतु या शनि होने से गर्भ स्थिर नहीं रहता अर्थात् गर्भपात का भय होता है।

द्वादशांश फल विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुःख तथा आयु सीमा का विचार किया जाता हैं। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह स्वराशि, मित्रराशि या उच्च राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें भावों में स्थित हो, तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि हो तो पिता का अल्प सुख होता है इसी भांति द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह शुभ ग्रहों युक्त, स्वराशि, मित्र या उच्चराशिस्थ होकर १।४।५।७।९।१० वें भावों में हो तो माता का विशेष सुख होता है। यदि स्त्री ग्रह पापयुक्त या दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हों तो माता के बहुसुख में कमी रहती है। बारह राशि के द्वादशांश में क्रम से आयु प्रमाण इस प्रकार से वर्णित है। ८०, ८४, ८६, ८४, ६०, ५३, ७०, ५०, ६६, १०० अर्थात् क्रम से द्वादशांश में इतने वर्ष की आयु प्राप्ति की संभावना होती है।

त्रिशांश फल विचार

त्रिशांश में जो ग्रह मित्र के घर में या उच्च में हो वह सभी कार्यों में उत्साही धनी, धर्मिष्ठ व पूज्य होता है। मंगल अपने त्रिशांश में स्थित हो तो वह प्राणी तेजस्वी धैर्यवान स्त्री-धन से युक्त, बुध अपने त्रिशांश में हो तो बुद्धिमान, संगीत, प्रेमी, गुरु हो तो जातक उद्यमी, धनवान, शुक्र हो तो जातक बहुपुत्रों वाला, अनेक स्त्रियों से मित्रता करने वाला होता है। शनि हो तो परस्त्रीगमन करने वाला, दुःखी व मलिन हृदय होगा।

पंजाब के नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं.	क.
अमृतसर	31	37	74	55	30	20
अजनाला	31	51	74	48	30	48
अटारी	31	37	74	36	31	36
अमलोह	30	37	76	15	25	00
अहमदगढ़	30	41	75	51	26	36
अबोहर	30	08	74	12	33	12
अकालगढ़	29	50	75	54	26	24
अमरगढ़	30	28	76	01	25	56
अलावलपुर	31	27	75	26	28	16
आनन्दपुर सा.	31	15	76	32	23	52
आदमपुर	31	21	75	26	28	16
उरमर-टाण्डा	31	40	75	41	27	16
कपूरथला	31	23	75	25	28	20
करतारपुर	31	27	75	32	27	52
कादियां	31	49	75	23	28	28
कीरतपुर साहिब	31	11	76	34	23	44
कुराली	30	50	76	35	23	40
कोटकपुरा	30	34	74	52	30	32
खन्ना	30	42	76	13	25	08
खरड़	30	45	76	37	23	32
खेमकरण	31	08	74	35	31	40
गढ़दीवाला	31	44	75	45	27	00
गढ़शंकर	31	13	76	11	25	16
गुरदासपुर	32	03	75	27	28	12
गोईन्दवाल सा.	31	22	75	08	29	28
गोराया	31	06	75	47	26	52
गोबिन्दगढ़ मण्डी	30	41	76	18	24	28
गुरु हरसहाय	30	40	74	32	31	42
घनौर	30	21	76	37	23	32
चण्डीगढ़	30	44	76	53	22	28
चमकौर साहिब	30	55	76	24	24	24

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं.	क.
छहरटा	31	16	74	53	30	28
जण्डियाला गुरु	31	51	75	37	27	32
जगरांव	30	48	75	30	28	00
जलालाबाद	30	37	74	15	33	00
जालन्धर	31	19	75	34	27	44
जालन्धर कैंट	31	20	75	26	28	16
जीरा	30	57	74	59	30	04
जैतों	30	28	74	53	30	28
जैजों	31	21	76	09	25	24
जाखल	29	48	75	41	26	36
ढिलवां	31	25	75	19	28	44
डबवाली मण्डी	29	59	74	42	31	12
डेरा बाबा नानक	32	02	75	04	29	44
तपा मण्डी	30	19	75	21	28	36
तरनातरन	31	28	74	58	30	08
तलवाड़ा	32	05	75	38	27	38
तलवंडी साबो	29	59	74	59	30	04
दतारपुर	31	53	75	45	27	00
दसूहा	31	49	75	39	27	24
दीनानगर	32	08	75	30	28	00
दोराहा मण्डी	30	49	76	01	25	56
दमदमा साहिब	30	50	76	04	25	44
दौलतपुर	31	58	75	38	27	28
धारीवाल	31	57	75	19	28	44
धूरी	30	22	75	52	26	32
धर्मकोट	30	53	75	14	29	04
नकोदर	31	07	75	29	28	04
नूरमहल	31	01	75	22	28	32
नवांशहर	31	07	76	08	25	28
नाभा	30	25	76	09	25	24
नूरपुर बेदी	31	09	76	29	24	04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं.	क.
नंगल	31	23	76	23	24	28
पटियाला	30	20	76	25	24	20
पट्टी	31	17	74	51	30	36
पठानकोट	32	17	75	42	27	12
फरीदकोट	30	40	74	57	30	12
फाजिल्का	30	24	74	04	33	44
फगवाड़ा	31	13	75	47	26	52
फतेहगढ़ साहिब	30	39	76	22	24	32
फिल्लौर	31	01	75	48	26	48
फतेहगढ़ (फिरोज)	31	03	75	03	29	48
फिरोजपुर	30	55	74	40	31	20
बरनाला	30	23	75	33	27	48
बस्सी	30	35	76	50	22	40
ब्यास	31	32	75	18	28	48
बसी पठानां	30	40	76	23	24	28
बटाला	31	49	75	14	29	04
बंगा	31	11	75	59	26	04
बलाचौर	31	03	76	19	24	44
बेला	30	56	76	24	24	24
बिलगा	31	02	75	26	28	16
बुढलाडा	29	56	75	34	27	44
भटिण्डा	30	11	75	00	30	00
भुलत्थ	31	32	75	32	27	32
भवानीगढ़	30	16	76	01	25	56
भुच्चो (मण्डी)	30	13	75	06	29	36
भीखीविण्ड	31	21	74	52	31	12
मजीठा	31	46	74	57	30	12
मोरांवली	31	18	76	01	25	56
मुकेरियां	31	57	75	37	27	32
मलोट	30	13	74	29	32	04
मलकाणा	29	56	75	03	29	48
मलेरकोटला	30	31	75	59	26	04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं.	क.
मोगा	30	48	75	10	29	20
मोरिण्डा	30	48	76	30	24	00
माच्छीवाड़ा	30	56	76	14	25	04
मोहाली	30	43	76	42	23	12
मानसा (मण्डी)	29	59	75	23	28	28
मुबारिकपुर	30	37	76	51	22	36
मुक्तसर	30	29	74	31	31	56
राजपुरा	30	29	76	34	23	44
रामपुरा फूल	30	17	75	14	29	04
रायकोट	30	41	75	36	27	36
राहों	31	03	76	07	25	32
रोपड़ (रूपनगर)	30	57	76	32	23	52
लोहियां खास	31	08	75	28	28	04
लहरगागा	29	55	75	54	26	04
लुधियाना	30	55	75	54	26	24
शाहकोट	31	03	75	19	28	44
शाहपुर	32	17	75	46	26	56
संगरूर	30	12	75	53	26	28
सुजानपुर	32	19	75	26	28	16
सुल्तानपुर लोधी	31	11	75	12	29	12
सरहिन्द	30	38	76	23	24	28
समराला	30	51	76	11	25	16
सनौर	30	18	76	30	24	00
समाना	30	09	76	12	25	12
सोहाणां	30	42	76	42	23	12
सुनाम	30	08	75	48	26	48
हमीरा	31	27	75	19	28	44
हरयाणा	31	36	75	48	26	48
हरीके पत्तन	31	30	74	57	30	12
होशियारपुर	31	32	75	57	26	12
हाजीपुर	31	57	75	37	27	32

उत्तराखण्ड के नगरों के अक्षांश-रेखांश व स्टैं. अन्तर

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं. अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
अल्मोड़ा	29 37	79 40	11 20
आमपाटा	30 17	78 37	15 32
आदिबद्री	30 10	79 12	13 12
उत्तरकाशी	30 44	78 27	16 12
उरवीमठ	30 31	79 07	13 32
ऋषिकेश	30 07	78 18	15 12
कर्णप्रयाग	30 15	79 16	12 56
कपकोट	29 58	79 54	10 54
काठगोदाम	29 16	79 32	11 52
काशीपुर	29 13	78 57	14 12
काण्डी	29 56	78 25	16 20
केदारनाथ	30 44	79 04	13 44
केनूर	30 03	79 01	13 56
कोटद्वार	29 45	78 32	15 52
खानपुर	29 36	78 07	17 32
खाती	30 08	79 54	10 54
गरजिया	29 29	79 06	13 36
गंगनाणी	30 55	78 42	15 12
गंगोत्तरी	30 39	79 02	13 52
गिरगाँव	30 02	80 07	9 32
घरमघर	29 52	80 01	9 56
घनस्याली	30 27	78 13	17 08
चकराता (देह.)	30 42	77 51	18 36
चम्बा	30 18	78 25	16 20
चमौली	30 24	79 21	12 36
चन्दौसी	28 27	78 46	14 56
चम्पावत	29 20	80 06	09 36
चुरानी	29 47	78 55	14 20

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं. अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
जसपुर	29 16	78 48	14 48
छाम	30 29	78 19	16 44
जोशीमठ	30 34	79 34	11 44
जमनोत्री	31 01	78 27	16 12
टिहरी	30 32	78 31	15 56
टनकपुर	29 02	80 08	09 28
द्वाराहाट	29 47	79 31	11 56
थातीकठूड़	30 33	78 37	15 32
तेजम	29 56	80 10	09 20
डाण्डा	29 10	79 55	10 20
डीडीहाट	29 48	80 12	09 12
डोईवाला	30 12	78 06	17 36
देहरादून	30 19	78 02	17 52
धनोलटी	30 25	78 19	16 44
डांगचौरा	30 17	78 19	15 32
नरेन्द्रनगर	30 10	78 18	16 48
नन्द्रप्रयाग	30 19	79 24	12 24
नैनीताल	29 23	79 27	12 12
पिन्सवार	30 38	78 42	15 12
पिथौरागढ़	29 35	80 13	09 08
पौड़ी	30 06	78 50	14 40
पीपलकोटी	30 26	79 27	12 12
पुरोला	30 52	78 42	15 12
पीपलकोटी	30 26	79 31	11 56
पौड़ी गढ़वाल	30 09	78 47	14 52
पोखंरी	30 31	79 12	13 12
बैजनाथ	29 55	79 42	11 12
बागेश्वर	29 52	79 42	11 12

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं. अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
बद्रीनाथ	30 44	79 29	12 04
भगवानपुर	29 59	77 56	18 16
भटवाड़ी	30 49	78 36	15 36
मोलनेऊँ	30 22	78 36	15 36
मंगलौर (हरि.)	29 48	77 52	18 32
मनेरी	30 41	78 30	16 00
मसूरी	30 27	78 05	17 40
रालम	30 16	80 12	09 12
रानीखेत	29 39	79 25	12 20
राजगढ़ी	30 52	78 49	14 44
रामनगर	29 24	79 07	13 32
राजपुर	30 25	78 06	17 36
रामपुर	28 49	79 02	13 52
रायपुर	30 19	78 06	17 36
रूद्रपुर	30 26	77 59	18 04
रूद्रप्रयाग	30 16	78 59	14 04
रूड़की	29 52	77 53	18 28
लक्सर	29 49	78 02	17 52
लम्बगाँव	30 29	78 31	15 56
लालकुआं	29 06	79 32	11 52
लालढाग	29 50	78 19	16 44
लैंसडाऊन	29 50	78 41	15 16
लिसकोट	29 46	79 01	13 56
विकासनगर	30 29	77 50	18 40
श्रीनगर (गढ़वा.)	30 13	78 47	14 52
सहसपुर (देहरा)	30 24	77 58	18 08
सोमेश्वर	29 47	79 36	11 36
हरिद्वार	29 58	78 10	17 20
हरकीदून	30 58	78 24	16 24
हल्द्वानी	29 13	79 31	11 56

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्राय: संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में प्रथम चरण में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, दूसरे चरण में फिजूलखर्ची, तीसरे चरण में भ्रमणशील तथा चतुर्थ नक्षत्र में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्राय: चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। प्रथम चरण में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, दूसरे चरण में पैतृक धन की हानि, तीसरे चरण में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा चतुर्थ चरण में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके।
तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। प्रथम चरण में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, दूसरे चरण में पिता को परेशानी, तीसरे चरण में जन्म हो तो शुभ फलदायक, चतुर्थ चरण में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम पाद (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, दूसरे चरण में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, तीसरे चरण में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि चतुर्थ चरण में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्ठाद्यपादेऽवग्रमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

उत्तर-प्रदेश के नगरों के अक्षांश-रेखांश व स्टैं. अन्तर

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं- अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिं. से.
अलीगढ़	27 53	78 05	-17 40
अमरोहा	28 55	78 28	-16 08
अमेठी	26 08	81 50	-02 40
अयोध्या	26 48	82 14	-01 04
अकबरपुर	26 25	82 33	+00 12
अगोरी	24 34	82 56	+01 44
अच्छनेरा	27 12	77 46	-18 56
अम्बाह	26 44	78 15	-17 00
अतरौली	28 00	78 16	-16 48
अफ़ज़लगढ़	29 23	78 41	-15 16
अल्लापुर	27 52	79 19	-12 44
अलीगंज	27 30	79 11	-13 16
आजमगढ़	26 03	83 13	+02 52
आगरा	27 10	78 00	-18 00
इलाहाबाद	25 28	81 54	-02 24
इटावा	26 47	79 02	-13 52
इतवा	27 20	82 42	+00 48
ईसानगर	27 54	81 14	-05 04
उझानी	28 00	79 02	-13 52
उतरौला	27 19	82 25	-00 20
उन्नाव	26 33	80 31	-07 56
उरई	25 58	79 27	-12 12
उस्का	27 08	83 12	+02 48
एटा	27 38	78 40	-15 20
ऐत	25 56	79 12	-13 12
औरैया	26 26	79 32	-11 52
औरंगाबाद	24 44	84 22	+07 28

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं- अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिं. से.
कच्छवा	25 15	82 43	+00 52
कतर्नियां घाट	28 22	81 10	-05 20
कदौरा	26 00	79 50	-10 40
कन्नौज	27 03	79 58	-10 08
कानपुर	26 28	80 22	-08 32
कमसिन	25 32	80 56	-06 16
करहल	27 02	78 58	-14 08
कर्वी	25 12	80 54	-06 24
कसिया	26 44	83 56	+05 44
कांठ	29 01	78 38	-15 28
कादीपुर	26 11	82 24	-00 24
कान्धला	29 20	77 15	-21 00
काम्पिल	27 36	79 16	-12 56
काल्पी	26 06	79 44	-11 04
कसिवा	26 44	83 56	+05 44
कासगंज	27 50	78 40	-15 20
किच्छौच्छा	26 23	82 50	+01 20
कीरतपुर	29 31	78 12	-17 12
कुञ्छा	28 06	84 21	+07 24
कुण्डा	25 43	81 30	-04 00
कुराओं	25 00	82 05	-01 40
कुरौली	27 25	79 00	-14 00
कुलपहाड़	25 20	79 40	-11 20
कूँच	26 00	79 08	-13 28
कैसरगंज	27 20	81 34	-03 44
कैप्टनगंज	26 56	83 43	+04 52
कैराना	29 24	77 14	-21 02

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं- अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिं. से.
कैमगंज	27 35	79 20	-12 40
कौपागंज	26 00	83 34	+04 16
कोरा	26 06	80 27	-08 12
कोरियालाघाट	28 20	81 04	-05 44
कोसी	27 50	77 26	-20 16
खतौली	29 18	77 43	-19 08
खागा	25 48	81 07	-05 32
खिलचीपुर	24 00	76 34	-23 44
खुर्जा	28 15	77 50	-18 40
खेड़ी	27 55	80 49	-06 44
खैर	27 57	77 50	-18 40
खैरागढ़	26 58	77 53	-18 28
खैराबाद	27 31	80 45	-07 00
गंगापुर	26 30	76 44	-23 04
गंगोह (सहार.)	29 45	77 16	-20 56
गढ़मुक्तेश्वर	28 49	77 05	-17 40
गरौठा	25 35	79 19	-12 44
गाजियाबाद	28 40	77 26	-20 16
गाजीपुर	25 34	83 35	+04 20
गुरसराए	25 38	79 12	-13 12
गुन्नौर	28 15	78 27	-16 12
गुलावठी	28 37	77 48	-18 48
गोण्डा	27 08	82 01	-01 56
गोरखपुर	26 45	83 24	+03 36
गोलागोकर्णनाथ	28 06	80 30	-08 00
गोवर्धन	27 32	77 28	-20 08
गौरीफण्टा	28 40	80 32	-07 52

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं- अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिं. से.
चकला	25 02	83 12	+02 48
चकिया	26 26	85 02	+10 08
चन्दौसी	28 28	78 48	-14 48
चरखाड़ी	25 25	79 46	-10 56
चित्रकूटधाम	25 12	80 52	-06 32
चिरगांव	25 36	78 50	-14 40
चुनार	25 10	82 56	+01 44
चोपां	24 30	83 00	+02 00
छतरपुर	24 56	79 38	-11 28
छपरा	24 39	76 48	-22 48
छाटा	27 45	77 30	-20 00
छितौनी	27 10	83 58	+05 52
जगदीशपुर	25 30	84 26	+07 44
जंघई	25 35	82 18	-00 48
जपिया.	24 34	84 00	+06 00
जरवा	27 40	82 31	+00 04
जलालपुर	26 19	82 45	+01 00
जलालाबाद	27 44	79 40	-11 20
जलेसर	27 29	78 20	-16 36
जसरा	25 17	81 48	-02 48
जसराना	27 15	78 42	-15 12
जसवन्तनगर	26 52	78 56	-14 16
जहांगीराबाद	28 26	78 06	-17 36
जहानाबाद	25 12	84 58	+09 52
जाईस	26 16	81 30	-04 00
जानसठ (मु.)	29 20	77 52	-18 32
जालौन	26 10	79 20	-12 40

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं- अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिं. से.
जिगनी	25 46	79 26	-12 16
जौनपुर	25 45	82 40	+00 40
झाँसी	25 27	78 37	-15 32
टप्पल	28 04	77 36	-19 36
टाण्डा	26 32	82 39	+00 36
टाण्डा	28 56	78 59	-14 04
टूण्डला	27 10	78 15	-17 00
टैकाडी	24 58	84 50	+09 20
ठाकुरद्वारा	29 10	78 50	-14 40
डिबाई	28 12	78 16	-16 56
डुमराओं	25 32	84 10	+06 40
डेरापुर	26 28	79 48	-10 48
ताजपुर	29 08	78 30	-16 00
तालबाहट	25 02	78 27	-16 12
तिहार	27 59	79 44	-11 04
दरयाबाद	26 54	81 34	-03 44
दानापुर	25 40	85 02	+10 08
दालमऊ	26 02	81 02	-05 52
दूधी	24 13	83 15	+03 00
देवगांव	25 24	83 01	+02 04
देवबन्द	29 42	77 41	-19 16
देवरिया	26 32	83 45	+05 00
देहरी	24 52	84 11	+06 44
दोहरीघाट	26 16	83 31	+04 04
धनौरा	28 58	78 15	-17 00
धामपुर	29 19	78 31	-15 56
नकुर	29 55	77 18	-20 48

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं-अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिं. से.
नगीना	29 27	78 27	-16 12
नजीबाबाद	29 38	78 20	-16 40
नरैनी	25 11	80 29	-08 04
नवाबगंज	28 33	79 38	-11 28
नवाबगंज	26 52	82 08	-01 28
नानपाड़ा	27 52	81 30	-04 00
निघासन	28 14	80 52	-06 32
निहतौर	29 20	78 23	-16 28
नौतांवा	27 26	83 25	+03 40
पट्टी	25 55	82 12	-01 12
पदरौना	26 55	83 59	+05 56
पयागपुर	27 25	81 48	-02 48
पवायां	28 04	80 06	-09 36
पिलखुआं	28 43	77 39	-19 24
पिहानी	27 38	80 12	-09 12
पीलीभीत	28 38	79 48	-10 48
पुखरायां	26 14	79 51	-10 36
पुरवा	26 28	80 50	-06 40
पूरनपुर	28 31	80 09	-09 24
फतेहपुर	25 56	80 48	-06 48
फतेहपुर	27 10	81 13	-05 08
फतेहपुरसीकरी	27 06	77 40	-19 20
फतेहाबाद	27 01	78 19	-16 44
फरीदनगर	28 46	77 37	-19 32
फरीदपुर	28 13	79 33	-11 48
फर्रुखाबाद	27 24	79 34	-11 44
फिरोजाबाद	27 09	78 25	-16 20
फूलपुर	25 33	82 06	-01 36
फैजाबाद	26 47	82 08	-01 28

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं-अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिं. से.
बक्सर	25 35	83 59	+05 56
बगहा	27 06	84 05	+06 20
बदायूँ	28 02	79 07	-13 32
बनारस	25 20	83 00	+02 00
बबीना	25 15	78 28	-16 08
बहजोई	28 24	78 37	-15 32
बहराइच	27 35	81 36	-03 36
बहेड़ी	28 47	79 30	-12 00
बरवासागर	25 23	78 44	-15 04
बरौट	29 06	77 16	-20 56
बलिया	25 45	84 10	+06 40
बरेली	28 21	79 25	-12 20
बलरामपुर	27 26	82 11	-01 16
बस्ती	26 48	82 43	+00 52
बागपत	28 57	77 13	-21 08
बाड़ी	26 39	77 36	-19 36
बादशाहपुर	25 47	82 49	+01 16
बान्दा	25 29	80 20	-08 40
बाराबंकी	26 55	81 12	-05 12
बांसी	27 11	82 56	+01 44
बाह	26 53	78 36	-15 36
बिजनौर	29 22	78 08	-17 28
बिधूना	26 49	79 31	-11 56
बिलग्राम	27 11	80 02	-09 52
बिलसी	28 08	78 55	-14 20
बिलारी	28 38	78 48	-14 48
बिलासपुर	28 53	79 16	-12 56
बीसलपुर	28 18	79 48	-10 48
बुलन्दशहर	28 24	77 51	-18 36

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं-अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिं. से.
बेरी	28 42	76 35	-23 40
बेला	25 56	81 59	-02 04
बैजनाथ	29 55	79 37	-11 32
भदोही	25 25	82 34	+00 16
भरथाना	26 45	79 14	-13 04
भाण्डेर	25 44	78 45	-15 00
भींगा	27 43	81 56	-02 16
भोनगांव	27 15	79 11	-13 16
भोवाली	29 23	79 31	-11 56
मऊ	25 17	81 23	-04 28
मऊ-ऐम्मा	25 42	81 55	-02 20
मऊनाथभंजन	25 57	83 33	+04 12
मऊरानीपुर	25 15	79 08	-13 28
मखदूमनगर	26 28	82 46	+01 04
मछलीशहर	25 41	82 25	-00 20
मथुरा	27 30	77 41	-19 16
मन्दावर (बि.)	29 30	78 08	-17 28
मवाना	29 06	77 55	-18 20
मलीहाबाद	26 55	80 43	-07 08
महमूदाबाद	27 18	81 07	-05 32
महरौनी	24 35	78 43	-15 08
महाराजगंज	26 07	84 29	+07 56
महाराजगंज	27 09	83 34	+04 16
महोवा	25 17	79 52	-10 32
माणिकपुर	25 04	81 07	-05 32
मिर्जापुर	25 09	82 35	+00 20
मिसरिख	27 27	80 31	-07 56
मुंगरा-बादशाहपुर	25 40	82 11	-00 16
मुजफ्फरनगर	29 28	77 41	-19 16

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं-अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिं. से.
मुगलसराय	25 18	83 07	+02 28
मंसूरपुर	29 24	77 41	-19 16
मुबारकपुर	26 05	83 18	+03 12
मुरादाबाद	28 51	78 49	-14 44
मुरादनगर (गा.)	28 47	77 30	-20 00
मुस्किरा	25 40	79 48	-10 48
मुहम्मदाबाद	26 02	83 23	+03 32
मुहम्मदी	27 57	80 13	-09 08
मेरठ	28 59	77 42	-19 12
मेहनगर	25 53	83 07	+02 28
मेहन्दाबाल	26 59	83 07	+02 28
मैनपुरी	27 14	79 01	-13 56
मैलानी	28 17	80 21	-08 36
मौडहा	25 41	80 07	-09 32
रसरा	25 51	83 51	+05 24
राजाखेड़ा	26 55	78 11	-17 16
राथ	25 35	79 34	-11 44
राबर्ट्सगंज	24 42	83 04	+02 16
रामनगर	25 17	83 02	+02 08
रायबरेली	26 13	81 14	-05 04
रुदौली	26 45	81 45	-03 00
लखनऊ	26 51	80 55	-06 20
लखीमपुर	27 57	80 46	-06 56
लखेड़ी	25 40	76 10	-25 20
ललितपुर	24 41	78 25	-16 20
लहरपुर	27 38	80 57	-06 12
लहार	26 12	78 57	-14 12
वाराणसी	25 20	83 00	+02 00
शाहगढ़	24 19	79 08	-13 28
शाहजहांपुर	27 53	79 55	-10 20

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैं-अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिं. से.
शाहाबाद	27 39	79 57	-10 12
शिकोहाबाद	27 06	78 36	-15 36
सदाबाद	27 27	78 03	-17 48
सम्भल	28 35	78 33	-15 48
सरधना	29 09	77 37	-19 32
सहसवां	28 05	78 45	-15 00
सहारनपुर	29 58	77 33	-19 48
साण्डिला	27 05	80 31	-07 56
सासनी	27 43	78 05	-17 40
सहानीकलां	28 41	77 25	-20 20
सहानीखुर्द	28 42	77 25	-20 20
सिंगरामऊ	25 57	82 23	-00 28
सिधौली	27 17	80 50	-06 40
सिरसागंज	27 03	78 42	-15 12
सीतापुर	27 34	80 41	-07 16
सुआर	29 02	79 03	-13 48
सुल्तानपुर	26 16	82 04	-01 44
सेमरिया	24 16	79 54	-10 24
सैदपुर	25 33	83 11	+02 44
सोनवां	27 40	81 45	-03 00
हमीरपुर	25 57	80 09	-09 24
हरदोई	27 25	80 07	-09 32
हरपालपुर	25 17	79 20	-12 40
हरिनागब	27 09	84 19	+07 16
हैरया	26 47	82 36	+00 24
हलिया	24 48	82 20	-00 40
हसनपुर	28 43	78 17	-16 52
हाजीपुर	25 41	85 13	+10 52
हाथरस	27 36	78 03	-17 48
हापुड़	28 43	77 47	-18 52

साभार: International Atlas तथा Oxford Atlas, निवेदक: पं. विवेक शर्मा

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नोट–जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश में उतने मिनट पश्चिम है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
अमृतसर (पंजा.)	31 37	74 55	-30 20
अलीगढ़ (उ. प्र.)	27 53	78 05	-17 40
अगरतला (त्रिपुरा)	23 49	91 18	+35 12
अटारी (पं.)	31 36	74 35	-31 40
अहमदाबाद (गुज.)	23 03	72 40	-39 20
अहमदनगर (महा.)	19 05	74 48	-30 48
अखनूर (कार.)	32 54	74 45	-31 00
अजमेर (राज.)	26 27	74 42	-31 12
अल्मोड़ा (उत्तरां)	29 37	79 40	-11 20
अलवर (राज.)	27 34	76 38	-23 28
अमरावती (महा.)	20 56	77 48	-18 48
अम्बाला (हरि.)	30 21	76 52	-22 32
अम्बिकापुर (म. प्र.)	23 10	83 15	+03 00
अंकलेश्वर (गुज.)	21 38	73 03	-37 48
अमेठी (उ. प्र.)	26 08	81 50	-02 40
अमरोहा (उ. प्र.)	28 55	78 28	-16 08
आनन्दपुर सा. (पं.)	31 15	76 32	-23 52
आनन्द (गुज.)	22 32	73 00	-38 00
अनन्तनाग (कार.)	33 43	75 12	-29 12
अनूपगढ़ (राज.)	29 07	73 06	-37 36
आजमगढ़ (उ. प्र.)	26 03	83 13	+02 52
अयोध्या (उ. प्र.)	26 48	82 14	-01 04
अबोहर (पंजा.)	30 08	74 12	- 33 12
आसनसोल (बंगा.)	23 42	87 01	+18 04
आगरा (उ. प्र.)	27 10	78 00	-18 00
आबू (राज.)	24 40	72 45	-39 00
इलाहाबाद (उ. प्र.)	25 28	81 54	-02 24
इटावा (उ. प्र.)	26 47	79 02	-13 52
इम्फाल (मणि.)	24 46	93 58	+45 52
इन्दौर (म. प्र.)	22 44	75 50	-26 40
इटारसी (म. प्र.)	22 30	77 55	-18 20
उदयपुर (राज.)	24 35	73 41	-35 16

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
उज्जैन (म. प्र.)	23 09	75 43	-27 08
उन्नाव (उ. प्र.)	26 33	80 31	-07 56
उत्तरकाशी (उत्तरां.)	30 44	78 27	-16 12
ऊना (हि. प्र.)	31 32	76 18	-24 48
उधमपुर (ज. का.)	32 55	75 07	-29 32
ऋषिकेश (उत्तरां)	30 07	78 18	-15 12
ऐजावल (मिज़ो)	23 43	92 44	+40 56
एटा (उ. प्र.)	27 38	78 40	-15 20
औरंगाबाद (महा.)	19 53	75 23	-28 28
कटक (उड़ी.)	20 78	85 54	+13 36
कठुआ (ज. का.)	32 22	75 31	-27 56
कारगिल (ज. का.)	34 30	76 13	-25 08
किश्तवाड़ (ज. का.)	33 19	75 48	-26 48
कटरा (ज. का.)	33 01	74 58	-30 08
कटनी (म. प्र.)	23 47	80 27	-08 12
करनाल (हरि.)	29 42	77 02	-21 52
करतारपुर (पंजा.)	31 27	75 32	-27 52
कपूरथला (पंजा.)	31 23	75 25	-28 20
करौली (राज.)	26 30	77 01	-21 56
कांगड़ा (हि. प्र.)	32 05	76 18	-24 48
कानपुर (उ. प्र.)	26 28	80 22	-08 32
कालका (हरि.)	30 49	76 57	-22 12
कुल्लू (हि. प्र.)	31 58	77 10	-21 20
कुराली (पंजाब)	30 50	76 35	-23 40
कोटकपूरा (पंजाब)	30 34	74 52	-30 32
कादियां (पंजाब)	31 49	75 23	-28 28
करसोग (हि. प्र.)	31 23	77 14	-21 04
किन्नौर (हि. प्र.)	31 32	78 20	-16 40
कंडाघाट (हि. प्र.)	30 57	77 08	-21 28
कोहिमा (ना.)	25 41	94 07	+46 28
कुमारसेन (हि. प्र.)	31 18	77 37	-19 32
कुरुक्षेत्र (हरि.)	29 59	76 48	-22 48

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
कैथल (हरि.)	29 48	76 26	-24 16
कोल्हापुर (महा.)	16 42	74 16	-32 56
कोचीन (केर.)	9 58	76 14	-25 04
कोलकाता (बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोटखाई (हि.प्र.)	31 08	77 36	-19 36
कन्नौज (उ. प्र.)	27 03	79 58	-10 08
कोटा (राज.)	25 10	75 52	-26 32
खन्ना (पंजाब)	30 42	76 13	-25 08
खरड़ (पंजाब)	30 45	76 37	-23 32
खुर्जा (उ. प्र.)	28 15	77 50	-18 40
खण्डवा (म. प्र.)	21 50	78 07	-24 28
खेमकरण (पं.)	31 08	74 35	-31 40
गया (बिहार)	24 49	85 01	+10 04
गगरेट (हि. प्र.)	31 41	76 04	-25 44
ग्वालियर (म. प्र.)	26 14	78 10	-17 20
गंगटोक (सि.)	27 22	88 36	+24 24
गिलगित (ज. का.)	35 55	74 22	-32 32
गुरदासपुर (पंजाब)	32 03	75 27	-28 12
गुड़गांव (हरि.)	28 28	77 04	-21 44
गोरखपुर (उ. प्र.)	26 45	83 24	+03 36
गुवाहाटी (आसा.)	26 11	91 47	+37 08
गोधरा (गुज.)	22 45	73 40	-35 20
गाजीपुर (उ. प्र.)	25 34	83 35	+04 20
गोइंदवाल (पंजा.)	31 22	75 08	-29 28
गोराया (पंजा.)	31 06	75 47	-26 52
गोण्डा (उ. प्र.)	27 08	82 01	-01 56
गढ़शंकर (पंजा.)	31 13	76 11	-25 16
गाजियाबाद (उ. प्र.)	28 40	77 26	-20 16
गाजीपुर (उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गुलमर्ग (ज. का.)	34 05	74 25	-32 20
गुना (म.प्र.)	24 40	77 20	-20 40
गोवा (पंजिम)	15 27	73 50	-34 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
गोलकुण्डा (आ. प्र.)	17 24	78 23	-16 28
घुमारवीं (हि. प्र.)	31 28	76 42	-23 12
चम्बा (हि. प्र.)	32 34	76 08	-25 28
चित्तौड़गढ़ (राज.)	24 54	74 42	-31 12
चण्डीगढ़ (के. प्र.)	30 44	76 52	-22 32
चन्दौसी (उ. प्र.)	28 27	78 49	-14 44
चमौली (उत्तरां.)	30 24	79 21	-12 36
चूरु (राज.)	28 19	75 01	-29 56
छपरा (बिहा.)	25 47	84 45	+ 9 00
छतरपुर (उ. प्र.)	24 54	79 38	-11 28
छिन्दवाड़ा (म. प्र.)	22 03	78 58	-14 08
जालन्धर (पंजा.)	31 19	75 34	-27 44
जण्डयाला	31 36	75 03	-29 48
जंडियाला गुरु	31 51	75 37	-27 32
जम्मू (ज. का.)	32 43	74 54	-30 24
जौनपुर (उ. प्र.)	25 46	82 44	+00 56
जैसलमेर (राज.)	26 55	70 54	-46 24
जयपुर (राज.)	26 55	75 52	-26 32
जीन्द (हरि.)	29 19	76 21	-24 36
जमशेदपुर (बिहार)	22 50	86 10	+14 40
जामनगर (गुज.)	22 27	70 07	-49 32
जोगिन्द्रनगर (हि. प्र.)	31 58	76 45	-23 00
जोधपुर (राज.)	26 18	73 04	-37 44
जबलपुर (म. प्र.)	23 10	79 59	-10 04
जलगांव (महा.)	21 03	75 39	-27 24
जैतों (पंजाब)	30 28	74 53	-30 28
ज़ीरा	30 57	74 59	-30 04
जगाधरी (हरि.)	30 10	77 16	-20 56
ज्वालामुखी (हि. प्र.)	31 53	76 20	-24 40
जाखल (हरि.)	29 49	75 49	-26 44
जूनागढ़ (गुज.)	21 31	70 36	-47 36
जोरहाट (आसा.)	26 46	94 16	+47 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
झांसी (उ. प्र.)	25 27	78 37	-15 32
झरिया (बिहार)	23 50	86 24	+15 36
झुंझुनू (राज.)	28 06	75 25	-28 20
टांडा उडमड़ (पंजा.)	31 40	75 39	-27 24
टोहाना (हरि.)	29 43	75 53	-26 28
टिहरी (उत्तरां.)	30 20	78 00	-16 00
टोंक (राज.)	26 11	75 50	-26 40
टोडारायसिंह (राज.)	26 00	75 29	-28 04
डबवाली मंडी (पं.)	29 59	74 42	-31 12
डोडा (ज. का.)	33 11	75 34	-27 44
डलहौज़ी (हि. प्र.)	32 31	76 00	-26 00
डिब्रूगढ़ (आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डिगबोई (आसा.)	27 22	95 40	+52 40
डूँगरपुर (राज.)	23 50	73 43	-35 08
तरनतारन (पंजा.)	31 28	74 58	-30 08
तिरुपति (आंध्र)	13 40	79 24	-12 24
तेजपुर (आसा.)	26 38	92 49	+41 16
त्रिवेन्द्रम (के.)	08 29	76 57	-22 12
थानेसर (हरि.)	29 58	76 56	-22 16
दिल्ली	28 39	77 12	-21 12
देहरादून (उत्तरां.)	30 19	78 02	-17 52
दसूहा (पंजा.)	31 49	75 39	-27 24
दीनानगर (पंजा.)	32 08	75 30	-28 00
देहरा गोपीपुरा (हि.प्र.)	31 55	76 14	-25 04
देवास (म. प्र.)	22 58	76 06	-25 36
दतारपुर (पंजा.)	31 53	75 45	-27 00
दार्जिलिंग (बंगा.)	27 03	88 18	+23 12
दुर्गापुर (बंगा.)	23 30	87 20	+19 20
दुर्ग (छत्तीसगढ़)	21 10	81 17	-04 52
द्वारिका (गुज.)	22 14	69 01	-53 56
देवरिया (उ. प्र.)	26 32	83 45	+05 00
दतिया (म. प्र.)	25 39	78 27	-16 12
धनबाद (बिहा.)	23 47	86 30	+16 00
धर्मशाला (हि. प्र.)	32 16	76 23	-24 28
धौलपुर (राज.)	26 42	77 53	-18 28
धूरी (पंजा.)	30 22	75 52	-26 32
नागौर (राज.)	27 11	73 40	-35 20
नवलगढ़ (राज.)	27 51	75 18	-28 48
नकोदर (पंजा.)	31 07	75 29	-28 04
नूरमहल (पंजा.)	31 01	75 22	-28 32
नौहर (राज.)	29 11	74 46	-30 56
नसीराबाद (राज.)	26 18	74 46	-30 56
नरवाणा (हरि.)	29 36	76 08	-25 28
नासिक (महा.)	20 01	73 50	-34 40
नागपुर (महा.)	21 09	79 09	-13 24
नारनौल (हरि.)	28 02	76 14	-25 04
नंगल (पंजा.)	31 23	76 23	-24 28
नवांशहर (पंजा.)	31 07	76 08	-25 28
नाभा (पंजा.)	30 25	76 09	-25 24
नाहन (हि. प्र.)	30 33	77 21	-20 36
नालागढ़ (हि. प्र.)	30 57	76 22	-24 32
नैनीताल (उत्तरां.)	29 23	79 27	-12 12
नौशेहरा (ज. का.)	33 11	74 17	-32 52
पठानकोट (पंजा.)	32 17	75 42	-27 12
पटियाला (पंजा.)	30 20	76 25	-24 20
पट्टी (पंजा.)	31 17	74 51	-30 36
पंचकूला (हरि.)	30 43	76 53	-22 28
पानीपत (हरि.)	29 23	77 01	-21 56
पिहोवा (हरि.)	29 56	76 36	-23 36
पिथौरागढ़ (उत्तरां.)	29 35	80 13	-09 08
पिंजौर (हरि.)	30 49	76 55	-22 20
पुँछ (ज. का.)	33 51	74 08	-33 28
पहलगाँव (ज. का.)	34 01	75 24	-28 24
पटना (बिहार)	25 37	85 13	+10 52
पीलीभीत (उ. प्र.)	28 38	79 48	-10 48
पालमपुर (हि. प्र.)	32 06	76 33	-23 48
पपरौला (हि. प्र.)	32 04	76 34	-23 44
प्रतापगढ़ (उ. प्र.)	25 50	81 59	-02 04
पाली (राज.)	25 46	73 25	-36 20
पोरबन्दर (गुज.)	21 40	69 37	-51 32
पंचमढ़ी (म. प्र.)	22 30	78 22	-16 32
पुरी (उड़ी)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया (बंगा.)	23 20	86 24	+15 36
पूना (महा.)	18 34	73 53	-34 28
पोर्टब्लेयर (अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पन्ना (म. प्र.)	24 44	80 14	-09 04
पिलानी (राज.)	28 23	75 35	-27 40
पुष्कर (राज.)	26 30	74 34	-31 44
पौड़ीगढ़वाल (उत्तरां)	30 09	78 47	-14 52
फतेहगढ़ सा. (पंजा.)	30 39	76 22	-24 32
फैज़ाबाद (उ. प्र.)	26 47	82 06	-01 36
फर्रुखाबाद (उ. प्र.)	27 24	79 35	-11 40
फगवाड़ा (पंजा.)	31 13	75 47	-26 52
फतेहपुर (उ. प्र.)	25 56	80 52	- 6 32
फतेहपुर सीकरी (उ.प्र.)	27 07	77 40	-19 20
फतेहाबाद (उ. प्र.)	27 01	78 19	-16 44
फतेहाबाद (हरि..)	29 31	75 29	-28 04
फरीदकोट (पंजा.)	30 40	74 45	-31 00
फाज़िल्का (पंजा.)	30 24	74 04	-33 44
फिरोज़पुर (पंजा.)	30 55	74 40	-31 20
फिल्लौर (पंजा.)	31 01	75 48	-26 48
फरीदाबाद (हरि.)	28 25	77 20	-20 40
बटाला (पंजा.)	31 49	75 14	-29 04
बंगा (पंजा.)	31 11	75 59	-26 04
बलाचौर (पंजा.)	31 03	76 19	-24 44
बद्रीनाथ (उत्तरां.)	30 44	79 30	-12 00
बक्सर (उ. प्र.)	25 35	83 59	+05 56
बड़ौदा (गुज.)	22 18	73 13	-37 08
बड़गाम (ज. का.)	34 00	74 44	-31 04
बरनाला (पंजा.)	30 23	75 33	-27 48
बिजनौर (उ. प्र.)	29 23	78 09	-17 24
बुलन्दशहर (उ. प्र.)	28 24	77 52	-18 32
बनारस (उ. प्र.)	25 20	83 00	+02 00
बरेली (उ. प्र.)	28 22	79 27	-12 12
बलिया (उ. प्र.)	25 44	84 11	+06 44
बहराईच (उ. प्र.)	27 35	81 36	- 3 36
बदायूं (उ. प्र.)	28 02	79 07	-13 32
बाराबंकी (उ. प्र.)	26 56	81 13	-05 08
बारामूला (ज. का.)	34 10	74 20	-32 40
बनिहाल (ज. का.)	33 32	75 19	-28 44
बल्लभगढ़ (हरि.)	28 21	77 19	-20 44
बहादुरगढ़ (हरि.)	28 42	76 55	-22 20
बीकानेर (राज.)	28 01	73 22	-36 32
बांसवाड़ा (राज.)	23 30	74 24	-32 24
बागपत (उ. प्र.)	28 57	77 13	-21 08
बून्दी (राज.)	25 27	75 40	-27.20
बेजनाथ (हि. प्र.)	32 03	76 36	-23 36
बिलासपुर (हि. प्र.)	31 19	76 45	-23 00
बिलासपुर (छत्ती.)	22 05	82 12	-01 12
बस्तर (म. प्र.)	19 10	81 59	-02 04
बैंगलुरू (क.)	12 58	77 36	-19 36
बुढलाडा (पं.)	29 56	75 34	-27 44
बगुसराय (बि.)	25 25	86 08	+14 32
भटिंडा (पंजाब)	30 11	75 00	-30 00
भद्रवाह (का.)	33 01	75 50	-26 40
भिवानी (हरि.)	28 47	76 08	-25 48
भुवनेश्वर (उड़ी)	20 10	85 50	+13 20
भरतपुर (राज.)	27 05	77 30	-20 00
भावनगर (गुज.)	21 46	72 11	-41 16
भुज (गुज.)	23 15	69 40	-51 20
भिलई (छत्ती.)	21 13	81 26	-04 16
भिण्ड (म. प्र.)	26 36	78 46	-14 56
भीलवाड़ा (राज.)	25 21	74 40	-31 20
भोपाल (म. प्र.)	23 16	77 24	-20 24
मलेरकोटला (पंजा)	30 31	75 59	-26 04
मजीठा (पंजाब)	31 46	74 57	-30 12
मलोट (पंजाब)	30 13	74 29	-32 04
मानसा (पंजाब)	29 59	75 23	-28 28
मोगा (पंजाब)	30 48	75 10	-29 20
मोहाली (पंजा.)	30 43	76 42	-23 12
मार्तण्ड (का.)	33 48	75 18	-28 48
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	28 18	76 09	-25 24
मनसादेवी (हरि.)	30 44	76 52	-22 32
मकराना (राज.)	27 04	74 43	-31 08
मेरठ (उ. प्र.)	29 00	77 42	-19 12
मिर्ज़ापुर (उ. प्र.)	25 10	82 36	+00 24
मुरादाबाद (उ. प्र.)	28 51	78 49	+14 44
मुगलसराय (उ. प्र.)	25 17	83 11	+02 44
मंसूरी (उत्तरां.)	30 27	78 06	-17 36
मथुरा (उ. प्र.)	27 30	77 41	-19 16
मुज़फ्फर नगर (उ.प्र.)	29 28	77 41	-19 16
मुक्तसर (पंजाब)	30 29	74 31	-31 56
मन्दसौर (म. प्र.)	24 03	75 08	-29 28
मैसूर (कर्ना.)	12 18	76 42	-23 12
मण्डी (हि. प्र.)	31 43	76 58	-22 08
मनीकरण (हि. प्र.)	32 01	77 20	-20 40
मनीमाजरा (ह.)	30 42	76 52	-22 32
मनाली (हि. प्र.)	32 17	77 10	-21 20
मद्रास (चेन्नई) (ता.ना.)	13 05	80 17	-08 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुम्बई (महा.)	19 00	72 54	-38 24
मोरिण्डा (पं.)	30 48	76 30	-24 00
यमुनानगर (हरि.)	30 08	77 16	-20 56
रामपुर बुशै. (हि. प्र.)	31 28	77 39	-19 24
रोहड़ू (हि. प्र.)	31 12	77 44	-19 04
रोपड़ (पंजाब)	30 57	76 32	-23 52
राजपुरा (पंजाब)	30 29	76 34	-23 44
रायकोट (पंजाब)	30 40	75 36	-27 36
रोहतक (हरि.)	28 54	76 38	-23 28
रिवाड़ी (हरि.)	28 12	76 40	-23 20
रामबन (ज. का.)	33 14	75 15	-29 00
रियासी (ज. का.)	33 04	74 53	-30 28
रामनगर (ज. का.)	32 50	75 22	-28 32
रतलाम (म. प्र.)	23 21	75 07	-29 32
राजौरी (ज. का.)	33 23	74 18	-32 48
रायपुर (छत्ती.)	21 15	81 41	-03 16
रायबरेली (उ. प्र.)	26 14	81 16	-04 56
रामपुर (उ. प्र.)	28 48	79 2	-13 52
राँची (झार.)	23 23	85 23	+11 32
रायसिंहनगर (राज.)	29 32	73 27	-36 12
रानीखेत (उत्तरा.)	29 39	79 25	-12 20
राबर्टसगंज (उ. प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
रिवालसर (हि. प्र.)	31 38	76 50	-22 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
राजकोट (गुज.)	22 18	70 48	-46 48
रामेश्वरम् (ता.)	09 17	79 22	-12 32
रूड़की (उत्तरां.)	29 52	77 53	-18 28
रुद्रप्रयाग (उत्तरां.)	30 16	78 59	-14 04
लुधियाना (पंजा.)	30 55	75 54	-26 24
लेह (ज. का.)	34 10	77 40	-19 20
लक्सर (उत्तरां.)	29 48	78 02	-17 52
ललितपुर (उ. प्र.)	24 41	78 25	-16 20
लैंसडाऊन (उत्तरां.)	29 50	78 41	-15 16
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	-10 00
लखनऊ (यू.पी.)	26 52	80 56	-06 16
लखीमपुर (उ. प्र.)	27 57	80 49	-06 44
लाडवा (हरि.)	29 59	77 05	-21 40
वाराणसी	25 20	83 00	+02 00
विशाखापट्टनम	17 42	83 20	+03 20
विदिशा (म. प्र.)	23 32	77 50	-18 40
शिमला (हि. प्र.)	31 06	77 13	-21 08
शाहदरा (दिल्ली)	28 40	77 20	-20 40
शाहाबाद (हरि.)	30 10	76 55	-22 20
शाहजहांपुर (उ. प्र.)	27 54	79 57	-10 12
शोलापुर (महा.)	17 42	75 56	-26 16
शिलांग (मेघा)	25 34	91 56	+37 44
श्रीनगर (का.)	34 06	74 51	-30 36

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
श्रीगंगानगर (राज.)	29 49	73 50	-34 40
श्रीमाधोपुर (राज.)	27 25	75 32	-27 52
संगरूर (पं.)	30 12	75 53	-26 28
सरहिन्द (पं.)	30 38	76 23	-24 28
सुल्तानपुर लोधी (पं.)	31 11	75 12	-29 12
समाना (पं.)	30 09	76 12	-25 12
समराला (पं.)	30 51	76 11	-25 16
सुनाम (पंजाब)	30 08	75 48	-26 48
समस्तीपुर (बि.)	25 55	85 50	+13 20
सिलीगुड़ी (बं.)	26 42	88 26	+23 44
साम्बा (ज. का.)	32 33	75 07	-29 32
सुन्दरनगर (हि. प्र.)	31 33	76 54	-22 24
सोलन (हि. प्र.)	30 55	77 09	-21 24
सुजानपुर टि. (हि.प्र.)	31 50	76 31	-23 56
सरकाघाट (हि. प्र.)	31 43	76 22	-24 32
सिरसा (हरि.)	29 32	75 06	-29 36
सोनीपत (हरि.)	28 58	76 59	-22 04
सूरतगढ़ (राज.)	29 19	73 57	-34 12
सूरत (गुजरात)	21 10	72 50	-38 40
सीकर (राज.)	27 36	75 09	-29 24
सवाईमाधोपुर (राज.)	25 59	76 30	-24 00
साम्भर (राज.)	26 55	75 10	-29 20

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सिरोही (राज.)	24 54	72 55	-38 20
सागर (म. प्र.)	23 50	78 48	-14 48
सिहोर (म. प्र.)	23 12	77 00	-22 00
सहारनपुर (उ. प्र.)	29 58	77 30	-20 00
सीतापुर (उ. प्र.)	27 36	80 42	-07 12
सीतामढ़ी (बि.)	26 35	85 32	+12 -8
सीवां (बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सोमनाथ (गुज.)	21 04	70 26	-48 16
होशियारपुर (पंजा.)	31 32	75 57	-26 12
हमीरपुर (हि. प्र.)	31 42	76 30	-24 00
हांसी (हरि.)	29 06	76 00	-26 00
हिसार (हरि.)	29 10	75 46	-26 56
हरिद्वार (उत्तरां.)	29 58	78 10	-17 20
हल्द्वानी (उत्तरां.)	29 13	79 31	-11 56
हाथरस (उ. प्र.)	27 36	78 06	-17 36
हनुमानगढ़ (राज.)	29 35	74 21	-32 36
हापुड़ (उ. प्र.)	28 43	77 50	-18 40
हरदोई (उ. प्र.)	27 23	80 10	-09 20
हसनपुर (उ. प्र.)	28 43	78 17	-16 52
हुबली (कर्ना.)	15 20	75 14	-29 04
होशंगाबाद (म. प्र.)	22 46	77 45	-19 00
हैदराबाद	17 24	78 30	-16 00
हावड़ा (बंगाल)	22 25	88 23	+23 32

गण्डमूलादि शान्ति आवश्यक क्यों ?

गण्डान्त नक्षत्रों की शान्ति करवाने का प्रचलन प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। फलित दृष्टि से भी आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूलादि गण्डमूलक षड् नक्षत्रों के अरिष्ट प्रभाव का उल्लेख फलित ग्रन्थों में सर्वत्र मिलता है। कुछ गण्डान्त नक्षत्र-चरणों के विशेष अंशों में शिशु के जन्म को अपने शरीर अथवा अपने परिवार के सदस्यों (माता, पिता, भाई आदि) के लिए अशुभ माना गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से तो महान् सन्त तुलसीदासजी का जन्म भी मूल नक्षत्र में होने से, उन्हें भी उसके अरिष्ट प्रभाव स्वरूप माता-पिता के सुख से वंचित रहना पड़ा। केवल गण्डान्त नक्षत्र (आश्ले., मघा, ज्ये., मूल, रेवती एवं अश्विनी) ही अरिष्ट प्रभावोत्पादक नहीं होता, बल्कि कुछ अन्य नक्षत्रों को भी किसी विशेष आयु में अशुभ फल प्रकट करता है।

यदि किसी कारणवश जन्म काल से लगभग 27वें दिन उसी नक्षत्र में गण्डान्त शान्ति न करवाई जा सकी हो, तो जातक के जन्मदिन के आसपास, अथवा 27वें मास या 27वें वर्ष में विवाह से पूर्व उसी गण्डमूल नक्षत्र में शान्ति करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश गण्डान्त शान्ति करवाने वाले सुयोग्य पण्डित न उपलब्ध हो सकें, तो फिर उसी नक्षत्र में जातक द्वारा **महांमृत्युजयं का पाठ या अमोघ शिव कवच का पाठ**, अथवा **श्री दुर्गा सप्तशती का दुर्गा कवच सहित** पाठ करके जातक द्वारा **तुलादान** करवाकर, उस अनाज को अन्धविद्यालय आदि किसी समाज संस्था में वस्त्र-फल आदि सहित लंगर करवा देना चाहिए। अभुत् मूल गण्डान्त की स्थिति में तो यदाशक्ति गौओं एवं कुष्टों की सेवा करने का भी विधान है। **ग्रह-नक्षत्रों का प्रतीकात्मक रूप से ध्यान, अर्चन, होमादि करना वास्तव में उस विराट, परमपुरुष परमात्मा की ही पूजा है। पं. पन्नालाल ज्यो. की छपी 'सम्पूर्ण गण्डमूल शान्ति' मंगवाएं।**

हिमाचल प्रदेश के नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर (स्टैण्डर्ड अन्तर सर्वत्र ऋण है।)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अम्ब	31 43	76 06	25 36
अर्की	31 09	76 59	22 04
आनी	31 28	77 20	20 40
आलमपुर	31 54	76 30	24 00
इन्दौरा	32 06	75 41	27 16
ऊना	31 32	76 18	24 48
करसोग	31 23	77 14	21 04
कसौली	30 54	77 02	21 52
कथला	31 59	76 47	22 52
कल्पा	31 34	78 16	16 56
कण्डाघाट	30 57	77 08	21 28
कांगड़ा	32 05	76 18	24 48
काला अम्ब	30 29	77 13	21 08
कुफरी	31 07	77 12	21 12
कुम्हारहट्टी	30 52	77 03	21 48
कोटखाई	31 08	77 36	19 36
कोटगढ़	31 19	77 29	20 04
कोटला	32 17	76 02	25 52
कुल्लू	31 58	77 10	21 20
कुमारसेन	31 18	77 37	19 32
कुनिहार	30 58	77 10	21 20
किन्नौर	31 32	78 20	16 40
केलांग	32 37	77 05	21 40
खजियार	32 31	76 03	25 40
गर्ली (परागपुर)	31 48	76 18	24 48
गगरेट	31 41	76 04	25 44
गोहर	31 32	77 02	21 52
घुमारवीं	31 28	76 42	23 12
चम्बा	32 34	76 08	25 28
चच्योट	31 36	77 04	21 44
चामुण्डा देवी	32 08	76 22	24 32
चिन्तपूर्णी	31 47	76 04	25 44
चायल	31 03	77 14	21 04
चौपाल	30 58	77 36	19 36
जवाली	32 06	76 01	25 56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जस्सूर	32 17	75 55	26 20
जतोग	31 08	77 08	21 28
जुब्बल	31 07	77 38	19 28
जोगिन्द्र नगर	31 58	76 45	23 00
ज्वालामुखी	31 53	76 20	24 40
टीसा	32 48	76 12	25 12
ठ्योग	31 08	77 33	19 48
डमटाल	32 13	75 41	27 16
डगशाई	30 53	77 06	21 36
डल्हौज़ी	32 31	76 00	26 00
डैहर	31 29	76 52	22 22
ढलियारा	31 52	76 11	25 16
तारादेवी	31 04	77 10	21 20
तत्तापानी	31 14	77 10	21 20
त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	23 24
त्रिलोकपुर	30 34	77 09	21 24
ददाहू	30 35	77 28	20 08
देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	25 04
दौलतपुर	31 46	75 58	26 08
धनेटा	31 38	76 29	24 04
धर्मशाला	32 16	76 23	24 28
धर्मपुर	30 54	77 04	21 44
धारा	31 49	77 15	21 00
धौलाकुआं	30 30	77 29	20 04
नगर	32 08	77 08	21 28
नगरोटा बगवां	32 06	76 22	24 32
नादौन	31 47	76 22	24 32
नाहन	30 33	77 21	20 36
नालागढ़	30 57	76 22	24 32
नूरपुर	32 18	75 56	26 16
नगरोटा	32 07	76 23	24 28
निरमण्ड	31 28	77 34	19 44
नारकण्डा	31 15	77 28	20 08
नैना देवी	31 19	76 31	23 56
पच्छाद	31 47	77 08	21 28

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पण्डोह	31 41	77 07	21 32
पपरोला	32 04	76 34	23 44
परवाणू	30 52	77 05	21 40
पाओंटा साहिब	30 28	77 38	19 28
पालमपुर	32 06	76 33	23 48
बरसर (भोटा)	31 34	76 28	24 08
बसौली	31 34	76 23	24 28
बंगाना तै.	31 33	76 27	24 16
बड़ागांव	31 20	77 15	21 00
बंजार	31 40	77 20	20 40
बनीखेत	32 32	75 58	26 08
बकलोह	32 27	75 59	26 04
बिलासपुर	31 19	76 45	23 00
बैजनाथ	32 03	76 36	23 36
भरवाईं	31 47	76 07	25 36
भरमौर	32 27	76 32	23 52
भुन्तर	31 54	77 09	21 24
भांखड़ा	31 20	76 30	24 00
मण्डी	31 43	76 58	22 08
मनाली	32 17	77 10	21 20
मनीकरण	32 01	77 20	20 40
मुबारकपुर	31 44	75 59	26 04
मशोबरा	31 07	77 14	21 04
मंगवाल	32 03	76 05	25 40
महासू	31 05	77 13	21 08
मैहतपुर	31 22	76 17	24 52
रिवालसर	31 38	76 50	22 40
रामपुर बुशैहर	31 28	77 39	19 24
राजगढ़	30 52	77 22	20 32
रायसन	32 05	77 07	21 32
रोहड़ू	31 12	77 44	19 04
लाहौल स्पीति	32 31	77 01	21 56
शाहपुर	32 14	76 12	25 12
शिमला	31 06	77 10	21 20
शेरपुर	32 34	75 59	26 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सपाटू	30 59	76 59	22 04
सरकाघाट	31 43	76 22	24 32
सन्धोल	31 59	76 45	22 56
संतोखगढ़	31 21	76 20	24 40
सैंज	31 49	77 19	20 44
सोलन	30 55	77 09	21 24
सुन्दरनगर	31 33	76 54	22 24
सुजानपुर टिहरा	31 50	76 31	23 56
हमीरपुर	31 42	76 30	24 00
हड़सर	32 21	76 33	23 48
हाटकोटी	31 09	77 44	19 04
हरिपुर	32 39	76 11	25 16
हरिपुरधार	30 53	77 28	20 08

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। जैसे– एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि। यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है। पं. विवेक शर्मा

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
अर्थींस (Athens)*	Greece	37 54 उ.	23 52 पू.	-24 32	30 00 पू.	+03 30
आकलैण्ड*	Newzealand	36 52 द.	174 42 पू.	-21 12	180 00 पू.	-06 30
ओटावा (E.T.)*	Canada	45 26 उ.	75 42 प.	-02 48	75 00 प.	+10 30
अबु-धाबी	U.A.E.	24 58 उ.	54 10 पू.	-22 20	60 00 पू.	+01 30
आस्टिन (Texa) (Austin)*	U.S.A.	30 16 उ.	97 45 प.	-31 00	90 00 प.	+11 30
ऐबीलेन (Abilen)*	U.S.A.	32 27 उ.	99 44 प.	-38 56	90 00 प.	+11 30
ऐबटसफोर्ड (Abotsford)*	U.S.A.	49 10 उ.	122 30 प.	-10 00	120 00 प.	+13 30
ऐमस्टर्डम* (Netherland)	U.S.A.	52 22 उ.	04 53 पू.	-40 28	15 00 पू.	+04 30
ओक्सफोर्ड (C.T.)*	U.S.A.	34 22 उ.	89 32 प.	+01 52	90 00 प.	+11 30
ऐडनबर्ग (Adenberg)*	England	55 52 उ.	3 12 प.	-12 48	00 00	+05 30
एडमंटन (Edmonton)*	Canada	53 33 उ.	113 29 प.	-33 56	105 00 प.	+12 30
ओक्सफोर्ड (Oxford)*	England	51 46 उ.	1 15 प.	-5 00	00 00	+05 30
ईस्लामाबाद*	Pakistan	33 40 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
इस्तबूल (Istanbul)*	Turkey	41 00 उ.	29 00 पू.	-04 00	30 00 पू.	+03 30
काठमण्डू	Nepal	27 42 उ.	85 19 पू.	-03 44	86 15 पू.	-00 15
कुआलालमपुर	Malaysia	03 02 उ.	101 40 पू.	-73 20	120 00 पू.	-02 30
कुवैत	Kuwait	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30
कराची	Pakistan	24 52 उ.	67 03 पू.	-31 48	75 00 पू.	+00 30
काबुल	Afghanistan	34 32 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
कन्धार	Afghanistan	31 33 उ.	65 30 पू.	-08 00	67 30 पू.	+01 00
कैण्डी (Kandy)	Sri Lanka	07 18 उ.	80 38 पू.	-07 28	82 30 पू.	+00 00
कोलम्बो	Sri Lanka	06 56 उ.	79 51 पू.	-10 56	82 30 पू.	00 00
कोपनहेगन*	Denmark	55 40 उ.	12 30 पू.	-10 00	15 00 पू.	+04 30
कैलीफोर्निया*	U.S.A.	35 58 उ.	118 40 पू.	+05 20	120 00 प.	+13 30
कोलम्बस (E.T.)*	U.S.A.	32 28 उ.	84 59 प.	-39 56	75 00 प.	+10 30
कोलम्बिया (C.T.)*	U.S.A.	38 57 उ.	92 20 प.	-09 20	90 00 प.	+11 30
कालगिरी (Calgary)*	Canada	51 03 उ.	114 03 प.	-36 12	105 00 प.	+12 30
ग्रीनविच*	England	51 29 उ.	00 00	00 00	00 00	+05 30
जनेवा (Geneva)*	Switzerland	46 12 उ.	06 09 पू.	-35 24	15 00 पू.	+04 30
जकार्ता	Indonesia	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	105 00 पू.	-01 30
जाफना	Sri Lanka	09 40 उ.	80 00 पू.	-10 00	82 30 पू.	00 00
जेरूसलाम	Israel	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	30 00 पू.	+03 30
टोरंटो (Toronto)*	Canada	43 39 उ.	79 23 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
टोक्यो (Tokyo)	Japan	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	-03 30
टैरेस (Terrace)*	Canada	54 17 उ.	128 57 प.	-35 48	120 00 प.	+13 30
डोनकास्टर (Doncaster)*	England	53 27 उ.	01 02 प.	-04 08	00 00	+05 30
डेट्रोट (Detroit Michi)*	U.S.A.	42 20 उ.	83 03 प.	-32 12	75 00 प.	+10 30
डबलिन (Dublin)*	Ireland	53 21 उ.	06 15 प.	-25 00	00 00 प.	+05 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सैं.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
डर्बी (Derby)*	England	52 58 उ.	01 25 प.	-05 40	00 00 प.	+05 30
दालेस (Dales Texas)*	U.S.A.	29 56 उ.	97 34 प.	-20 16	90 00 प.	+11 30
दारे-सलाम	Tanzania	06 50 द.	39 17 प.	-22 52	45 00 पू.	+02 30
दुबई (Dubai)	U.A.E.	25 19 उ.	55 18 पू.	-18 48	60 00 पू.	+01 30
न्यूयार्क (New York)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
न्यूजर्सी (E.T.)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 09 प.	+03 24	75 00 प.	+10 30
नौटिंघम(Nottingham)*	England	52 51 उ.	01 18 प.	-05 12	00 10	+05 30
नैरोबी	Kenya	01 18 द.	36 52 पू.	-32 32	45 00 पू.	+02 30
न्यू कैसल (New Castle)*	England	52 27 उ.	09 04 प.	-36 16	00 00	+05 30
पैरिस (Paris)*	France	48 50 उ.	02 20 पू.	-50 40	15 00 पू.	+04 30
पर्थ* (Perth)	Australia	31 57 द.	115 52 पू.	-16 32	120 00 पू.	-02 30
पेशावर	Pakistan	34 01 उ.	71 33 पू.	-13 48	75 00 पू.	+00 30
प्लाईमाउथ(Plymouth)*	England	50 25 उ.	04 05 प.	-16 20	00 00	+05 30
प्रिंस जार्ज(Prince George)*	Canada	53 55 उ.	122 46 प.	-11 04	120 00 प.	+13 30
प्रिंस रूपर्ट(Prince Rupert)*	Canada	54 19 उ.	130 19 प.	-41 06	120 00 प.	+13 30
पोर्ट लुईस(Port Louis)*	Mauritius	20 10 द.	57 30 पू.	-10 00	60 00 पू.	+01 30
फ्लोरिडा (Florida City)	U.S.A.	25 27 उ.	80 29 प.	-21 56	75 00 प.	+10 30
बगदाद	Iraq	33 18 उ.	44 30 पू.	-2 00	45 00 पू.	+02 30
बहावलपुर	Pakistan	30 00 उ.	73 16 पू.	-06 56	75 00 पू.	+00 30
बैंकाक	Thailand	13-43 उ.	100 31 पू.	-17 56	105 00 पू.	-01 30
बीजिंग	China	39 55 उ.	116 25 पू.	-14 20	120 00 पू.	-02 30
बर्लिन*	Germany	52 32 उ.	13 25 पू.	-06 20	15 00 पू.	+04 30
बर्न*	Switzerland	46 55 उ.	07 30 पू.	-30 00	15 00 पू.	+04 30
बरमिंघम (Birmingham)*	England	52 30 उ.	01 50 प.	-07 20	00 00	+05 30
ब्रैडफोर्ड (Bradford)*	England	53 46 उ.	01 40 प.	-6 40	00 00	+05 30
ब्रैम्पटन (Brampton)*	Canada	43 41 उ.	79 48 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
बेकर्सफील्ड(Bakersfield)*	Cal. U.S.A.	35 23 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 पू.	+13 30
ब्रिसटल (Bristol)*	England	51 27 उ.	02 35 प.	-10 20	00 00	+05 30
बॉन (Bonn)*	Germany	50 44 उ.	07 04 पू.	-31 44	15 00 पू.	+04 30
बोस्टन (Boston)*	U.S.A.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Frederick (Delaware Maryland)*	U.S.A.	39 38 उ.	78 31 प.	-14 04	75 00 प.	+10 30
ब्रिसबेन*	Australia	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	-04 30
मस्कट	(Oman)	23 37 उ.	58 35 पू.	-5 40	60 00 पू.	+01 30
मानचैस्टर*	England	53 28 उ.	02 12 प.	-8 48	00 00	+05 30
मिलवाकी सिटी (Milwaukee)*	U.S.A.	42 53 उ.	88 03 प.	+07 58	90 00 प.	+11 30
मौंट्रियाल (Montreal)*	Canada (E.T.)	45 31 उ.	73 33 प.	+05 48	75 00 प.	+10 30
मिसीसागा(Mississauga)*	Canada (E.T.)	43 33 उ.	79 35 प.	-18 20	75 00 प.	+10 30
मैक्सिको सिटी*	Mexico	19 26 उ.	99 10 प.	-36 40	90 00 प.	+11 30
मैलबार्न*	Australia	37 50 उ.	144 59 पू.	-20 04	150 00 पू.	-04 30
मनीला (Manila)*	Philippines	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	-02 30
मुल्तान	Pakistan	30 11 उ.	71 29 पू.	-14 04	75 00 पू.	+00 30
रियाध	Soudi Arabia	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	45 00 पू.	+02 30
रावलपिंडी	Pakistan	33 36 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
*रोम (Rome)	Italy	41 55 उ.	12 27 पू.	-10 12	15 00 पू.	+04 30
लाहौर (Pakistan)	Pakistan	31 15 उ.	74 18 पू.	-2 48	75 00 पू.	+00 30
लीड्स (Leeds)*	England	53 50 उ.	01 35 प.	-06 20	00 00	+05 30
लिवरपूल (Liverpool)*	England	53 24 उ.	02 58 प.	-11 52	00 00	+05 30
लंदन*	England	51 32 उ.	00 05 प.	-00 20	00 00	+05 30
लिसबन (Lisbon)*	England	38 43 उ.	09 10 प.	-36 40	00 00	+05 30
लास एंजलस*	U.S.A.	34 03 उ.	118 17 प.	+06 52	120 00 प.	+13 30
वोल्वरहैम्पटन (Wolvehampton)*	England	52 36 उ.	02 05 प.	-08 20	00 00	+05 30
वैनकोवर*	Canada (P.T.)	49 17 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
विक्टोरिया*	Canada (P.T.)	48 25 उ.	123 21 प.	-13 24	120 00 प.	+13 30
वाशिंगटन*	U.S.A.	38 55 उ.	77 04 प.	-08 16	75 00 प.	+10 30
वैलिंगटन (Wellington)*	New Zealand	41 16 द.	174 47 पू.	-20 52	180 00 पू.	-06 30
शिकागो (C.T.)*	U.S.A.	41 51 उ.	87 39 प.	+09 24	90 00 प.	+11 30
सेन फ्रांसिसको(P.T.)*	U.S.A (P.T.)	37 48 उ.	122 25 प.	-09 42	120 00 प.	+13 30
सान्ता रोसा(Santa Rosa)*	U.S.A (P.T.)	38 30 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
साउथ-हैम्पटन*	England	50 54 उ.	01 24 प.	-05 36	00 00	+05 30
सिंगापुर	Singapore	01 17 उ.	103 54 पू.	-64 24	120 00 पू.	-02 30
सिडनी*	Australia	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	-04 30
हाउसटन (Texas)*	U.S.A.	29 45 उ.	95 22 प.	-21 28	90 00 प.	+11 30
हैमल्टन (Hamilton)*	Canada	43 15 उ.	79 50 प.	-19 20	75 00 प.	+10 30
Yuba City (California)*	U.S.A.	39 08 उ.	121 08 प.	-04 32	120 00 प.	+13 30
Winnipeg (Manitoba)*	Canada	49 54 उ.	97 08 प.	-28 32	90 00 प.	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (—) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (—) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०' के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्रायः सभी नगर ८२°/३०'पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका** रेखांतर (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (—) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग २/३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको २ फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश २८/५८, रेखांश ७६/५१ तथा स्टै. अन्तर —२२/०४ मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. ६/४९ प्राप्त हुआ। इसमें स्टै. अन्तर (—२२/०४) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टै. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय ७/११ प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् ७/१४

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे—इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, भारत के अधिकांश नगर अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।

—शुभचिन्तक पं. विवेक शर्मा गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या — करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 ,,	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 ,,	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 ,,	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16 07	8 18	15 56
9 ,,	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 ,,	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 ,,	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 ,,	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 ,,	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 ,,	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 ,,	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 ,,	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 ,,	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 ,,	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 ,,	6 23	18 05	6 37	17 49	6 45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 ,,	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 ,,	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 ,,	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 ,,	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 ,,	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 ,,	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 ,,	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 ,,	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 ,,	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 ,,	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 ,,	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 ,,	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 ,,	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 ,,	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 ,,	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 ,,	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 ,,	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 ,,	6 11	18 11	6 14	18 08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 ,,	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 ,,	6 08	18 11	6 11	18 09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 ,,	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 ,,	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 ,,	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 ,,	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 ,,	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 ,,	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 ,,	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 ,,	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 ,,	5 58	18 10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 ,,	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 ,,	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 ,,	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 ,,	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 ,,	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 ,,	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 ,,	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 ,,	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 ,,	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 ,,	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 ,,	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 ,,	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 ,,	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 ,,	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 ,,	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 ,,	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 ,,	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 ,,	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 ,,	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 ,,	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 ,,	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 ,,	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 ,,	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 ,,	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 ,,	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 ,,	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 ,,	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 ,,	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 ,,	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 ,,	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 ,,	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 ,,	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 ,,	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 ,,	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 ,,	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 ,,	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 ,,	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 ,,	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 ,,	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 ,,	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 ,,	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख जुलाई	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
19जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 17
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 14
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 11
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 07
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 04
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 01
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्टू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख अक्तूबर	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
11 अक्तू	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग २/३ मिनट घटाने तथा अस्त में २/३ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में ११ अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें जिला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय ६ घण्टे १ मिनट तथा सूर्यास्त १८ घण्टे ४४ मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार—१ घण्टे ०४ मिनट घटाने से हमें ५ घण्टे ५९ मिनट ५६ सैकेण्ड और १८ घण्टे ४२ मिनट २६ सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	17 29	7 27	17 28	7 27	17 29	7 23	17 28	7 24	17 26
4	7 28	17 32	7 28	17 31	7 28	17 32	7 24	17 31	7 25	17 29
7	7 29	17 34	7 28	17 33	7 28	17 33	7 24	17 32	7 25	17 31
10	7 29	17 37	7 29	17 36	7 29	17 36	7 24	17 34	7 25	17 33
13	7 28	17 39	7 28	17 38	7 28	17 39	7 23	17 36	7 25	17 36
16	7 28	17 42	7 27	17 41	7 28	17 42	7 23	17 39	7 25	17 39
19	7 27	17 44	7 26	17 43	7 27	17 43	7 23	17 42	7 24	17 43
22	7 26	17 47	7 25	17 46	7 26	17 46	7 22	17 44	7 23	17 45
25	7 25	17 50	7 25	17 49	7 25	17 49	7 21	17 47	7 22	17 48
28	7 23	17 52	7 23	17 51	7 24	17 52	7 19	17 50	7 20	17 50
31	7 21	17 55	7 21	17 54	7 21	17 54	7 17	17 53	7 18	17 54
3 फर.	7 20	17 58	7 19	17 57	7 19	17 57	7 16	17 56	7 17	17 57
6	7 18	18 00	7 17	17 59	7 18	18 00	7 14	17 58	7 15	17 59
9	7 15	18 03	7 14	18 03	7 15	18 02	7 12	18 02	7 12	18 02
12	7 12	18 06	7 12	18 06	7 12	18 06	7 08	18 04	7 09	18 04
15	7 10	18 08	7 09	18 08	7 10	18 08	7 06	18 06	7 06	18 06
18	7 07	18 10	7 06	18 10	7 07	18 10	7 03	18 08	7 03	18 08
21	7 04	18 13	7 03	18 13	7 04	18 13	7 00	18 11	7 00	18 11
24	7 01	18 15	7 00	18 14	7 01	18 15	6 57	18 13	6 57	18 13
27	6 58	18 18	6 57	18 17	6 58	18 18	6 54	18 16	6 54	18 16
2 मार्च	6 54	18 20	6 53	18 20	6 53	18 19	6 50	18 18	6 50	18 19
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 47	18 20	6 47	18 20
8	6 46	18 24	6 46	18 23	6 46	18 24	6 43	18 22	6 43	18 23
11	6 43	18 27	6 42	18 26	6 43	18 26	6 39	18 24	6 40	18 24
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 39	18 27	6 36	18 25	6 36	18 25
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 35	18 29	6 32	18 27	6 32	18 27
20	6 31	18 32	6 30	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 31

नगर	सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 27	17 29	7 22	17 27	7 23	17 27	7 27	17 29	7 22	17 25	7 22	17 26
4	7 27	17 31	7 23	17 30	7 24	17 29	7 28	17 31	7 23	17 29	7 22	17 28
7	7 27	17 33	7 24	17 32	7 24	17 31	7 28	17 34	7 23	17 30	7 22	17 29
10	7 28	17 35	7 24	17 34	7 24	17 33	7 28	17 36	7 23	17 32	7 22	17 31
13	7 27	17 38	7 23	17 36	7 24	17 35	7 28	17 39	7 23	17 35	7 22	17 34
16	7 26	17 41	7 23	17 39	7 23	17 38	7 27	17 42	7 22	17 37	7 21	17 37
19	7 25	17 43	7 22	17 41	7 22	17 42	7 26	17 46	7 21	17 41	7 21	17 41
22	7 25	17 45	7 21	17 43	7 21	17 43	7 25	17 48	7 20	17 43	7 20	17 43
25	7 24	17 48	7 20	17 46	7 20	17 46	7 24	17 50	7 19	17 46	7 19	17 46
28	7 23	17 51	7 18	17 49	7 19	17 49	7 23	17 53	7 17	17 48	7 17	17 48
31	7 22	17 55	7 16	17 52	7 18	17 52	7 22	17 56	7 15	17 51	7 15	17 51
3 फर.	7 19	17 57	7 15	17 55	7 16	17 54	7 20	17 58	7 14	17 54	7 13	17 54
6	7 17	17 59	7 13	17 57	7 14	17 57	7 18	18 01	7 12	17 56	7 12	17 56
9	7 14	18 01	7 10	18 01	7 11	18 00	7 15	18 04	7 09	18 00	7 09	18 00
12	7 12	18 04	7 07	18 03	7 09	18 02	7 13	18 06	7 06	18 02	7 06	18 02
15	7 09	18 07	7 05	18 05	7 06	18 05	7 10	18 09	7 05	18 04	7 04	18 04
18	7 06	18 09	7 02	18 07	7 03	18 07	7 07	18 12	7 02	18 07	7 02	18 07
21	7 03	18 12	6 59	18 10	7 00	18 10	7 04	18 14	6 59	18 09	6 58	18 10
24	7 01	18 15	6 56	18 12	6 57	18 12	7 01	18 16	6 56	18 11	6 55	18 12
27	6 56	18 17	6 53	18 15	6 54	18 15	6 57	18 19	6 52	18 14	6 53	18 14
2 मार्च	6 53	18 20	6 49	18 17	6 50	18 17	6 53	18 20	6 48	18 16	6 49	18 16
5	6 50	18 22	6 46	18 19	6 47	18 19	6 51	18 23	6 46	18 18	6 46	18 18
8	6 46	18 24	6 41	18 21	6 43	18 21	6 47	18 25	6 42	18 21	6 40	18 20
11	6 43	18 26	6 38	18 24	6 40	18 23	6 44	18 17	6 39	18 22	6 37	18 23
14	6 39	18 27	6 36	18 25	6 37	18 24	6 40	18 28	6 35	18 24	6 35	18 24
17	6 35	18 29	6 31	18 27	6 32	18 26	6 36	18 30	6 31	18 25	6 30	18 26
20	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 27	6 32	18 32	6 27	18 26	6 25	18 28

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुश.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 28	18 34	6 27	18 33	6 28	18 33	6 24	18 30	6 25	18 31	6 28	18 33	6 23	18 31	6 25	18 30	6 29	18 34	6 24	18 28	6 22	18 30
26	6 24	18 36	6 23	18 35	6 24	18 35	6 21	18 33	6 21	18 33	6 24	18 35	6 20	18 33	6 21	18 33	6 25	18 36	6 20	18 31	6 19	18 32
29	6 21	18 38	6 20	18 37	6 20	18 37	6 18	18 34	6 18	18 34	6 20	18 37	6 16	18 35	6 17	18 35	6 21	18 38	6 16	18 33	6 15	18 34
2 अप्रै.	6 15	18 40	6 14	18 39	6 15	18 40	6 12	18 37	6 13	18 38	6 15	18 40	6 11	18 37	6 12	18 37	6 16	18 41	6 11	18 36	6 10	18 36
5	6 12	18 43	6 10	18 42	6 12	18 42	6 08	18 39	6 09	18 39	6 12	18 42	6 07	18 39	6 09	18 39	6 13	18 43	6 08	18 37	6 06	18 38
8	6 09	18 45	6 08	18 44	6 08	18 43	6 05	18 42	6 06	18 42	6 08	18 43	6 04	18 41	6 05	18 41	6 09	18 44	6 04	18 39	6 03	18 40
11	6 04	18 47	6 03	18 46	6 04	18 46	6 01	18 44	6 01	18 44	6 04	18 46	6 00	18 43	6 01	18 43	6 05	18 47	6 00	18 41	5 59	18 42
14	6 01	18 50	6 00	18 49	6 01	18 49	5 58	18 47	5 58	18 47	6 01	18 49	5 57	18 46	5 58	18 46	6 02	18 49	5 57	18 44	5 56	18 45
17	5 57	18 51	5 56	18 50	5 57	18 51	5 54	18 49	5 54	18 49	5 57	18 50	5 53	18 47	5 54	18 48	5 58	18 51	5 53	18 46	5 52	18 46
20	5 54	18 54	5 53	18 53	5 54	18 53	5 51	18 51	5 51	18 51	5 54	18 53	5 50	18 50	5 51	18 51	5 55	18 54	5 50	18 49	5 49	18 49
23	5 50	18 56	5 50	18 56	5 50	18 55	5 47	18 53	5 47	18 53	5 50	18 55	5 46	18 52	5 48	18 52	5 51	18 56	5 47	18 51	5 45	18 51
26	5 48	18 58	5 47	18 58	5 48	18 57	5 45	18 55	5 45	18 55	5 48	18 57	5 44	18 54	5 45	18 54	5 49	18 58	5 44	18 52	5 43	18 53
29	5 46	19 01	5 45	19 00	5 45	19 00	5 42	18 58	5 42	18 58	5 45	19 00	5 42	18 57	5 42	18 57	5 46	19 01	5 41	18 55	5 41	18 56
2 मई	5 44	19 02	5 43	19 01	5 43	19 01	5 40	18 59	5 40	18 59	5 43	19 01	5 39	18 58	5 40	18 58	5 44	19 02	5 39	18 56	5 38	18 57
4	5 41	19 03	5 39	19 02	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	18 59	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	19 00	5 41	19 03	5 36	18 58	5 36	18 58
7	5 38	19 05	5 37	19 04	5 37	19 04	5 34	19 00	5 34	19 00	5 37	19 04	5 34	19 01	5 34	19 01	5 38	19 05	5 33	19 00	5 33	19 00
10	5 35	19 07	5 34	19 06	5 35	19 06	5 32	19 03	5 33	19 04	5 35	19 06	5 32	19 03	5 32	19 03	5 36	19 07	5 31	19 03	5 31	19 02
13	5 34	19 09	5 32	19 08	5 33	19 09	5 30	19 06	5 30	19 06	5 33	19 09	5 30	19 05	5 30	19 05	5 34	19 10	5 29	19 05	5 29	19 04
16	5 32	19 11	5 30	19 11	5 31	19 11	5 28	19 07	5 29	19 07	5 31	19 11	5 28	19 07	5 28	19 07	5 32	19 12	5 27	19 06	5 27	19 06
19	5 30	19 13	5 28	19 12	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 09	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 10	5 30	19 14	5 25	19 08	5 25	19 08
22	5 28	19 14	5 26	19 13	5 27	19 14	5 24	19 11	5 24	19 11	5 27	19 14	5 24	19 11	5 25	19 11	5 28	19 15	5 23	19 10	5 24	19 10
25	5 27	19 16	5 25	19 15	5 26	19 16	5 23	19 14	5 24	19 14	5 26	19 16	5 23	19 13	5 24	19 14	5 27	19 17	5 22	19 12	5 23	19 12
28	5 25	19 18	5 24	19 17	5 25	19 18	5 22	19 16	5 22	19 16	5 25	19 18	5 21	19 15	5 21	19 15	5 26	19 19	5 21	19 14	5 21	19 14
31	5 24	19 20	5 22	19 21	5 24	19 20	5 21	19 17	5 21	19 17	5 24	19 20	5 20	19 17	5 20	19 17	5 25	19 21	5 20	19 16	5 20	19 16
3 जून	5 23	19 23	5 22	19 22	5 23	19 22	5 20	19 19	5 20	19 19	5 23	19 22	5 20	19 20	5 20	19 19	5 24	19 23	5 19	19 18	5 19	19 19
6	5 23	19 24	5 21	19 23	5 22	19 24	5 20	19 21	5 20	19 21	5 22	19 24	5 19	19 21	5 20	19 21	5 23	19 25	5 19	19 20	5 18	19 20
9	5 22	19 25	5 21	19 25	5 22	19 25	5 19	19 22	5 19	19 22	5 22	19 25	5 19	19 22	5 20	19 22	5 23	19 26	5 19	19 21	5 19	19 21
12	5 22	19 27	5 21	19 26	5 22	19 27	5 18	19 23	5 18	19 23	5 22	19 27	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 28	5 19	19 22	5 18	19 22
15	5 22	19 28	5 21	19 27	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 29	5 18	19 23	5 18	19 22
18	5 21	19 30	5 21	19 29	5 21	19 30	5 18	19 24	5 19	19 25	5 21	19 29	5 17	19 24	5 19	19 24	5 23	19 30	5 18	19 24	5 17	19 23
21	5 22	19 31	5 22	19 30	5 22	19 31	5 19	19 25	5 20	19 26	5 22	19 31	5 18	19 25	5 20	19 25	5 23	19 31	5 19	19 24	5 18	19 24
24	5 23	19 32	5 22	19 31	5 23	19 32	5 21	19 25	5 22	19 26	5 23	19 32	5 19	19 25	5 21	19 25	5 24	19 32	5 20	19 24	5 18	19 24
27	5 25	19 33	5 23	19 32	5 25	19 32	5 22	19 27	5 22	19 27	5 25	19 32	5 21	19 26	5 22	19 26	5 26	19 33	5 21	19 25	5 20	19 25
30	5 25	19 33	5 24	19 33	5 25	19 33	5 23	19 27	5 23	19 27	5 25	19 33	5 22	19 26	5 23	19 27	5 26	19 32	5 22	19 25	5 22	19 25
3 जुला	5 26	19 32	5 25	19 32	5 26	19 32	5 24	19 28	5 25	19 28	5 27	19 32	5 23	19 27	5 24	19 28	5 28	19 32	5 23	19 25	5 23	19 26
6	5 28	19 32	5 27	19 31	5 28	19 32	5 26	19 27	5 26	19 28	5 28	19 31	5 25	19 28	5 25	19 28	5 29	19 32	5 24	19 25	5 25	19 27
9	5 30	19 30	5 29	19 29	5 30	19 31	5 27	19 27	5 28	19 27	5 30	19 30	5 27	19 27	5 27	19 27	5 31	19 31	5 26	19 24	5 27	19 26
12	5 32	19 29	5 31	19 28	5 31	19 29	5 29	19 26	5 29	19 26	5 31	19 29	5 29	19 26	5 28	19 25	5 32	19 30	5 27	19 23	5 28	19 25

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 27	5 33	19 28	5 30	19 26	5 31	19 25	5 33	19 28	5 30	19 25	5 30	19 24	5 34	19 29	5 29	19 22	5 30	19 24
18	5 34	19 27	5 33	19 26	5 34	19 27	5 32	19 24	5 32	19 24	5 34	19 27	5 31	19 23	5 32	19 22	5 35	19 28	5 31	19 21	5 31	19 22
21	5 36	19 25	5 35	19 25	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 22	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 21	5 37	19 26	5 32	19 20	5 33	19 20
24	5 38	19 23	5 37	19 22	5 38	19 23	5 35	19 19	5 36	19 20	5 38	19 23	5 35	19 19	5 35	19 19	5 39	19 24	5 34	19 18	5 35	19 18
27	5 40	19 22	5 39	19 21	5 40	19 22	5 37	19 17	5 38	19 18	5 40	19 22	5 37	19 18	5 37	19 18	5 41	19 23	5 36	19 16	5 37	19 16
30	5 42	19 19	5 41	19 19	5 42	19 19	5 39	19 15	5 40	19 16	5 42	19 19	5 39	19 16	5 39	19 15	5 43	19 20	5 38	19 14	5 38	19 14
2 अग.	5 44	19 18	5 43	19 17	5 44	19 18	5 41	19 14	5 42	19 15	5 44	19 18	5 41	19 14	5 41	19 13	5 45	19 19	5 40	19 12	5 40	19 13
5	5 46	19 16	5 45	19 15	5 46	19 16	5 43	19 12	5 44	19 13	5 46	19 16	5 43	19 13	5 43	19 11	5 47	19 17	5 42	19 10	5 43	19 12
8	5 48	19 13	5 47	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 46	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 45	19 09	5 49	19 14	5 44	19 07	5 45	19 10
11	5 50	19 11	5 49	19 10	5 50	19 11	5 47	19 08	5 48	19 09	5 50	19 11	5 47	19 08	5 57	19 06	5 51	19 12	5 46	19 04	5 47	19 07
14	5 51	19 09	5 50	19 08	5 51	19 09	5 48	19 06	5 49	19 07	5 51	19 09	5 48	19 05	5 48	19 02	5 52	19 10	5 47	19 00	5 48	19 05
17	5 53	19 04	5 52	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 51	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 50	18 59	5 54	19 05	5 49	18 57	5 50	19 00
20	5 55	19 01	5 55	19 01	5 55	19 01	5 52	18 59	5 53	19 00	5 55	19 01	5 52	18 59	5 52	18 57	5 56	19 02	5 51	18 55	5 52	18 58
23	5 57	18 58	5 57	18 58	5 57	18 58	5 54	18 55	5 55	18 55	5 57	18 58	5 54	18 55	5 54	18 54	5 58	18 59	5 53	18 53	5 53	18 54
26	5 59	18 54	5 59	18 53	5 59	18 53	5 56	18 50	5 57	18 51	5 58	18 54	5 56	18 50	5 56	18 51	5 59	18 55	5 55	18 48	5 55	18 49
29	6 01	18 50	6 00	18 49	6 00	18 50	5 58	18 46	5 59	18 47	5 59	18 50	5 58	18 46	5 58	18 46	6 02	18 50	5 57	18 45	5 57	18 45
1 सितं.	6 02	18 46	6 02	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 43	6 04	18 46	5 59	18 41	5 58	18 43
4	6 04	18 43	6 03	18 41	6 04	18 42	6 02	18 40	6 03	18 41	6 04	18 42	6 01	18 39	6 02	18 39	6 06	18 42	6 01	18 39	6 00	18 38
7	6 06	18 40	6 06	18 39	6 06	18 40	6 04	18 37	6 04	18 37	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 36	6 07	18 39	6 03	18 37	6 02	18 35
10	6 09	18 35	6 09	18 34	6 09	18 34	6 06	18 32	6 06	18 32	6 08	18 33	6 06	18 32	6 05	18 32	6 09	18 35	6 05	18 31	6 05	18 31
13	6 11	18 31	6 11	18 30	6 11	18 30	6 07	18 28	6 08	18 29	6 10	18 29	6 07	18 28	6 07	18 28	6 11	18 31	6 06	18 27	6 07	18 27
16	6 12	18 27	6 12	18 26	6 12	18 27	6 09	18 24	6 10	18 25	6 12	18 27	6 09	18 24	6 09	18 24	6 13	18 28	6 08	18 24	6 09	18 23
19	6 14	18 23	6 14	18 23	6 13	18 23	6 10	18 20	6 11	18 21	6 14	18 23	6 10	18 20	6 10	18 20	6 14	18 23	6 09	18 18	6 10	18 19
22	6 16	18 18	6 16	18 18	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 17	18 18	6 12	18 13	6 12	18 14
25	6 17	18 15	6 17	18 15	6 17	18 15	6 14	18 12	6 15	18 13	6 17	18 15	6 14	18 12	6 14	18 12	6 18	18 15	6 13	18 10	6 14	18 11
28	6 19	18 11	6 19	18 11	6 19	18 11	6 16	18 08	6 17	18 09	6 19	18 11	6 15	18 08	6 16	18 08	6 19	18 12	6 15	18 07	6 15	18 07
1 अक्टू	6 22	18 07	6 21	18 07	6 22	18 07	6 18	18 04	6 18	18 04	6 21	18 07	6 17	18 04	6 18	18 03	6 22	18 07	6 17	18 02	6 16	18 03
4	6 23	18 04	6 23	18 03	6 23	18 04	6 19	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	17 59	6 18	17 59
7	6 25	18 01	6 24	18 00	6 24	18 00	6 21	17 57	6 21	17 57	6 24	18 00	6 20	17 57	6 21	17 56	6 25	18 00	6 20	17 56	6 20	17 56
10	6 27	17 57	6 26	17 56	6 26	17 56	6 23	17 54	6 24	17 55	6 26	17 56	6 22	17 53	6 23	17 53	6 27	17 56	6 23	17 52	6 23	17 52
13	6 29	17 53	6 28	17 52	6 29	17 52	6 26	17 50	6 26	17 50	6 29	17 52	6 24	17 49	6 26	17 49	6 30	17 53	6 25	17 49	6 25	17 48
16	6 31	17 50	6 30	17 49	6 31	17 49	6 28	17 47	6 28	17 47	6 31	17 49	6 26	17 46	6 28	17 45	6 32	17 49	6 27	17 45	6 26	17 45
19	6 33	17 46	6 32	17 45	6 33	17 45	6 30	17 43	6 30	17 43	6 33	17 45	6 29	17 42	6 30	17 42	6 34	17 46	6 29	17 41	6 29	17 41
22	6 36	17 43	6 35	17 43	6 35	17 42	6 32	17 40	6 32	17 40	6 35	17 42	6 31	17 39	6 32	17 40	6 36	17 43	6 31	17 38	6 30	17 38
25	6 38	17 40	6 38	17 40	6 37	17 40	6 34	17 37	6 34	17 36	6 37	17 40	6 33	17 36	6 34	17 36	6 38	17 40	6 33	17 35	6 32	17 35
28	6 40	17 37	6 40	17 37	6 39	17 37	6 36	17 34	6 36	17 33	6 39	17 37	6 35	17 33	6 36	17 34	6 40	17 37	6 35	17 32	6 35	17 32
31	6 43	17 34	6 43	17 34	6 42	17 33	6 39	17 31	6 39	17 31	6 42	17 34	6 38	17 30	6 39	17 31	6 43	17 34	6 38	17 29	6 38	17 29
3 नवं.	6 45	17 30	6 45	17 31	6 44	17 30	6 41	17 28	6 41	17 28	6 44	17 31	6 40	17 27	6 41	17 28	6 45	17 32	6 40	17 27	6 40	17 26

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	6 48	17 29	6 47	17 28	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 26	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 25	6 47	17 29	6 42	17 24	6 42	17 25
9	6 50	17 27	6 49	17 26	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 24	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 23	6 50	17 27	6 44	17 22	6 44	17 23
12	6 52	17 25	6 51	17 24	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 23	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 21	6 52	17 25	6 46	17 20	6 46	17 21
15	6 54	17 23	6 53	17 23	6 54	17 23	6 51	17 20	6 51	17 20	6 54	17 23	6 49	17 20	6 51	17 20	6 55	17 24	6 49	17 19	6 48	17 19
18	6 57	17 21	6 56	17 21	6 57	17 21	6 54	17 19	6 54	17 18	6 57	17 21	6 52	17 18	6 54	17 18	6 58	17 22	6 53	17 17	6 51	17 17
21	7 00	17 20	6 59	17 19	6 59	17 20	6 56	17 18	6 56	17 17	6 59	17 20	6 55	17 17	6 56	17 17	7 00	17 21	6 55	17 16	6 54	17 16
24	7 02	17 19	7 01	17 18	7 02	17 19	6 59	17 17	6 59	17 18	7 03	17 19	6 58	17 16	6 59	17 16	7 04	17 20	6 58	17 15	6 57	17 15
27	7 04	17 19	7 04	17 18	7 04	17 18	7 01	17 17	7 01	17 17	7 04	17 18	7 00	17 16	7 02	17 15	7 05	17 19	7 01	17 14	6 59	17 15
30	7 07	17 18	7 06	17 18	7 07	17 18	7 04	17 16	7 04	17 16	7 06	17 18	7 03	17 15	7 04	17 15	7 07	17 19	7 03	17 14	7 02	17 14
3 दिसं	7 09	17 18	7 08	17 18	7 09	17 18	7 06	17 16	7 06	17 16	7 09	17 18	7 05	17 15	7 06	17 15	7 10	17 19	7 05	17 14	7 04	17 14
6	7 12	17 18	7 11	17 17	7 12	17 18	7 09	17 15	7 09	17 15	7 12	17 18	7 08	17 15	7 09	17 15	7 13	17 19	7 08	17 14	7 07	17 14
9	7 14	17 18	7 13	17 18	7 14	17 18	7 11	17 15	7 11	17 15	7 14	17 18	7 10	17 15	7 11	17 15	7 15	17 19	7 10	17 14	7 09	17 14
12	7 16	17 19	7 15	17 18	7 16	17 19	7 14	17 16	7 14	17 16	7 16	17 19	7 12	17 16	7 14	17 16	7 17	17 20	7 13	17 15	7 11	17 15
15	7 18	17 21	7 17	17 20	7 18	17 21	7 16	17 18	7 16	17 17	7 18	17 21	7 14	17 18	7 16	17 17	7 19	17 22	7 15	17 16	7 13	17 16
18	7 20	17 22	7 19	17 21	7 20	17 21	7 17	17 19	7 17	17 18	7 20	17 22	7 16	17 18	7 17	17 18	7 21	17 23	7 16	17 17	7 15	17 17
21	7 22	17 23	7 21	17 22	7 22	17 23	7 19	17 21	7 19	17 20	7 22	17 23	7 18	17 20	7 19	17 19	7 23	17 24	7 18	17 18	7 17	17 18
24	7 23	17 24	7 22	17 23	7 23	17 24	7 20	17 22	7 21	17 22	7 23	17 24	7 19	17 21	7 20	17 21	7 24	17 25	7 19	17 20	7 18	17 19
27	7 25	17 26	7 24	17 25	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 23	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 22	7 26	17 27	7 20	17 21	7 20	17 21
30	7 26	17 28	7 25	17 27	7 26	17 28	7 22	17 24	7 22	17 24	7 26	17 27	7 22	17 24	7 22	17 24	7 27	17 28	7 21	17 23	7 21	17 14

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

धर्मशाला

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
काँगड़ा	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
भुन्तर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नौर	– ५ २८

मण्डी

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५६
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

नगर	संस्कार
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
कोटरवाई	– १ ३२
रोहड़ू	– २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार
सपाटू	+ ० ३२
परवाणु	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार
पाँटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग ३/४ मिनट घटाने तथा अस्त में ३/४ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जन.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जन.
1	7 34	17 34	7 28	17 30	7 23	17 29	7 21	17 32	6 59	17 20	7 20	17 40	7 32	17 47	7 17	17 24	7 05	17 43	6 20	16 59	6 48	17 15	1
2	35	34	29	31	23	30	21	33	6 59	21	20	41	32	48	17	25	05	44	21	17 00	48	16	2
3	35	35	29	32	23	31	21	34	7 00	21	21	43	33	49	17	25	06	44	21	00	48	17	3
4	35	36	29	33	24	32	22	35	00	22	21	43	33	50	18	26	06	45	21	01	48	17	4
5	35	36	29	34	24	32	22	35	00	23	21	43	33	51	18	27	06	45	22	02	49	18	5
6	35	37	29	35	24	33	22	36	00	24	21	44	33	51	18	28	06	46	22	02	49	19	6
7	35	38	29	36	24	34	22	37	00	24	22	45	33	52	18	28	07	47	22	03	49	20	7
8	35	39	29	36	24	35	22	38	00	25	22	46	33	52	18	29	07	47	22	04	49	20	8
9	35	40	29	37	24	36	22	39	01	26	22	46	33	53	18	30	07	48	22	04	49	21	9
10	35	40	29	38	24	37	22	39	01	26	22	47	33	54	18	31	07	49	22	05	49	22	10
11	35	41	29	39	24	38	22	40	01	27	22	48	33	55	18	32	07	49	23	06	49	23	11
12	35	42	29	39	24	39	22	41	01	28	22	49	33	56	18	32	07	50	23	06	49	23	12
13	35	43	29	40	24	40	22	42	01	29	22	50	33	57	18	33	07	51	23	07	49	24	13
14	35	44	29	41	24	40	22	43	01	30	21	50	33	58	18	34	07	51	23	08	49	25	14
15	35	45	29	42	24	41	22	44	01	30	21	51	33	17 59	18	35	07	52	23	09	49	26	15
16	35	46	29	43	24	42	22	45	01	31	21	52	33	18 00	18	36	07	53	23	09	49	26	16
17	34	47	29	44	24	42	21	46	01	32	21	53	33	01	18	37	07	53	23	10	49	27	17
18	34	47	28	46	23	43	21	46	00	33	21	53	32	01	17	38	07	54	23	11	49	28	18
19	34	48	28	47	23	44	21	47	00	34	21	54	32	02	17	39	07	55	23	11	49	29	19
20	34	49	28	46	23	45	21	48	00	34	21	55	32	02	17	40	07	56	23	12	49	29	20
21	33	50	27	47	23	46	20	48	00	35	20	56	32	03	17	41	06	56	23	13	49	30	21
22	33	51	27	48	22	47	20	49	7 00	36	21	56	32	04	16	42	06	57	22	13	49	31	22
23	33	52	27	49	22	48	20	50	6 59	37	20	57	31	05	16	43	06	58	22	14	48	32	23
24	32	53	27	50	21	49	20	51	59	37	20	58	31	06	16	43	06	59	22	15	48	32	24
25	32	54	26	51	21	49	19	52	59	38	19	17 59	31	08	15	44	06	17 59	22	16	48	33	25
26	31	55	26	52	21	50	19	53	59	39	19	18 00	30	08	15	44	05	18 00	22	16	47	34	26
27	31	56	25	53	20	51	19	54	59	41	18	01	30	09	14	46	05	01	21	18	47	35	27
28	30	57	25	54	20	52	18	55	58	41	18	01	30	09	14	46	05	01	21	18	47	35	28
29	30	58	24	55	19	53	18	56	57	41	18	02	30	10	13	47	05	02	21	18	46	36	29
30	29	17 58	23	56	19	54	17	56	57	42	17	03	29	11	13	48	05	02	21	19	46	37	30
31	7 29	18 00	7 23	17 57	7 18	17 55	7 17	17 57	6 57	17 43	7 17	18 03	7 29	18 12	7 12	17 49	7 04	18 03	6 20	17 20	6 46	17 38	31
फर.	28	18 00	7 22	17 57	7 18	17 56	7 16	17 58	6 56	17 44	7 16	18 04	7 28	18 13	7 12	17 50	7 04	18 04	6 20	17 20	6 45	17 38	फर.
2	27	01	22	58	17	56	15	59	56	44	16	05	28	14	11	50	03	05	20	21	45	39	2
3	27	02	21	17 59	17	57	15	17 59	55	45	15	06	27	15	11	51	03	06	19	22	44	40	3
4	26	03	21	18 00	16	58	14	18 00	55	46	15	06	26	15	10	52	03	06	19	22	44	41	4
5	25	04	20	01	15	17 59	14	01	54	47	14	07	26	16	09	53	02	07	18	23	43	41	5
6	25	05	21	02	15	18 00	13	02	53	47	14	08	25	17	09	54	02	08	18	23	43	42	6
7	24	06	19	02	14	01	13	03	53	48	14	08	25	18	08	55	01	08	17	24	42	43	7
8	7 23	18 07	7 18	18 03	7 13	18 02	7 12	18 04	6 52	17 49	7 13	18 09	7 24	18 18	7 07	17 56	7 00	18 09	6 17	17 25	6 41	17 43	8

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ	
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9	7 22	18 08	7 17	18 04	7 12	18 03	7 11	18 05	6 52	17 50
10	21	08	16	05	11	04	10	06	51	50
11	20	09	15	06	11	05	09	06	50	51
12	20	10	14	07	10	06	09	07	50	52
13	19	11	13	08	09	06	08	08	49	53
14	17	12	12	09	08	07	07	09	48	53
15	18	13	11	10	07	08	06	09	47	54
16	16	14	10	11	06	09	06	10	47	55
17	15	14	10	11	05	09	05	11	46	55
18	13	15	09	12	04	10	04	12	45	56
19	14	16	08	13	03	11	03	13	44	57
20	12	17	07	13	02	11	02	13	43	57
21	11	18	06	14	01	12	01	14	42	58
22	10	18	05	15	7 00	13	7 00	14	42	59
23	09	19	04	16	6 59	13	6 59	15	41	17 59
24	08	20	03	17	58	14	58	15	40	18 00
25	07	21	02	18	57	15	57	16	39	01
26	06	22	01	19	56	15	56	16	38	01
27	05	22	7 00	20	55	16	55	17	37	02
28	7 03	18 23	6 58	18 20	6 54	18 17	6 54	18 18	6 36	18 02
मार्च	7 02	18 24	6 57	18 20	6 53	18 18	6 53	18 19	6 34	18 03
2	01	25	56	21	52	19	52	19	33	04
3	7 00	26	55	22	51	19	51	20	32	05
4	6 58	26	54	23	50	20	50	21	30	05
5	57	27	53	23	49	20	49	22	29	06
6	56	28	51	24	48	21	48	22	28	06
7	55	29	50	25	47	21	47	23	27	07
8	54	29	49	25	45	22	45	23	26	07
9	53	30	48	26	44	23	44	24	25	08
10	51	31	46	27	43	23	43	24	24	08
11	50	31	45	27	42	24	42	25	23	09
12	49	32	44	28	41	25	41	26	22	09
13	48	33	43	29	40	26	40	27	21	10
14	46	34	42	29	39	27	38	27	20	11
15	45	34	40	29	38	27	37	28	19	11
16	44	35	39	30	36	28	36	28	18	12
17	43	66	38	31	35	28	35	29	17	12
18	41	36	36	31	34	29	34	29	16	13
19	40	37	35	32	33	30	33	30	15	13
20	39	38	34	33	31	31	31	30	14	14
21	38	38	33	34	30	31	30	31	13	14
22	36	39	32	34	29	32	29	31	12	15
23	35	40	31	34	28	32	28	32	11	15
24	34	40	30	35	26	33	26	32	10	16
25	32	41	28	36	25	33	25	33	09	16
26	31	42	27	37	24	34	24	33	08	17
27	6 30	18 42	6 25	18 37	6 23	18 34	6 23	18 34	6 07	18 17

तारीख	जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 12	18 10	7 23	18 19	7 07	17 56	7 00	18 09	6 16	17 25	6 41	17 44	9
10	11	11	23	19	06	57	6 59	10	16	26	40	45	10
11	10	12	22	20	05	58	59	11	15	26	39	45	11
12	10	12	21	21	04	17 59	58	11	15	27	39	46	12
13	09	13	20	22	03	18 00	58	12	14	28	38	47	13
14	08	14	19	23	03	00	57	12	14	28	37	47	14
15	07	14	18	23	02	01	57	13	13	29	37	48	15
16	06	15	18	24	01	02	56	13	12	29	36	49	16
17	06	16	17	25	7 00	03	55	14	12	30	35	49	17
18	05	16	16	26	6 59	04	55	14	11	30	34	50	18
19	04	17	15	26	58	04	54	15	10	31	34	50	19
20	03	18	14	27	57	05	53	15	10	31	33	51	20
21	02	18	13	28	56	06	52	16	09	32	32	52	21
22	01	19	12	28	55	07	51	17	08	32	31	52	22
23	7 00	20	11	29	54	07	50	17	07	33	30	53	23
24	6 59	20	10	29	53	08	50	17	07	33	29	53	24
25	59	21	09	30	52	09	49	18	06	34	29	54	25
26	58	21	08	31	51	09	48	18	05	34	28	55	26
27	57	23	07	31	50	10	47	18	04	35	27	55	27
28	6 55	18 23	7 06	18 32	6 49	18 11	6 47	18 19	6 03	17 35	6 26	17 56	28
मार्च	6 55	18 23	7 05	18 33	6 47	18 12	6 46	18 20	6 01	17 37	6 25	17 56	मार्च
2	54	24	04	33	46	13	45	20	6 00	38	24	57	2
3	53	24	03	34	45	14	44	21	5 59	38	23	57	3
4	52	25	02	34	44	14	43	21	58	38	22	58	4
5	51	26	01	35	43	15	42	22	57	39	21	58	5
6	50	26	7 00	35	41	16	42	22	56	39	20	59	6
7	49	27	6 59	36	40	18	41	23	56	40	19	17 59	7
8	48	27	58	36	39	17	40	23	55	40	18	18 00	8
9	46	28	57	37	38	18	39	23	54	40	17	00	9
10	45	28	56	38	37	18	38	24	53	41	16	01	10
11	44	29	55	39	36	19	37	24	52	41	15	01	11
12	43	30	54	39	35	20	36	25	51	42	14	02	12
13	42	31	53	40	33	20	35	25	50	42	13	02	13
14	41	31	52	40	32	21	34	26	49	42	12	03	14
15	40	32	50	41	31	21	33	26	48	43	11	03	15
16	39	32	49	41	30	22	32	26	47	43	10	03	16
17	38	33	48	42	29	23	31	27	46	44	09	04	17
18	37	33	47	42	27	23	31	27	45	44	08	04	18
19	36	34	46	43	26	24	30	27	45	44	07	05	19
20	35	34	45	43	25	25	29	27	44	45	06	05	20
21	33	35	44	44	24	25	28	28	43	45	05	06	21
22	32	35	43	44	23	26	27	28	42	45	04	07	22
23	31	36	41	45	21	26	26	28	41	46	03	07	23
24	30	36	40	45	20	27	25	29	40	46	02	07	24
25	29	37	39	46	19	28	24	29	39	46	01	08	25
26	28	37	38	46	18	28	23	29	38	47	6 00	08	26
27	6 27	18 38	6 37	18 47	6 17	18 29	6 22	18 30	5 37	17 47	5 59	18 09	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मार्च
28	6 29	18 43	6 24	18 38	6 21	18 35	6 22	18 35	6 05	18 18	6 26	18 38	6 36	18 47	6 15	18 29	6 21	18 30	5 36	17 47	5 57	18 09	28
29	27	44	23	39	20	35	21	36	04	18	25	38	35	48	14	30	20	31	35	48	57	09	29
30	26	44	22	39	19	36	20	36	03	19	24	39	34	18 49	13	31	19	32	34	48	56	10	30
31	6 25	18 45	6 21	18 40	6 18	18 37	6 19	18 37	6 02	18 19	6 23	18 39	6 32	19 49	6 12	18 31	6 18	18 32	5 33	17 48	5 55	18 10	31
अप्रै.	6 23	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 37	6 01	18 20	6 22	18 40	6 31	19 50	6 10	18 32	6 17	18 32	5 33	17 48	5 54	18 11	अप्रै.
2	22	46	18	42	15	38	16	38	6 00	20	21	40	30	51	09	32	16	32	32	48	53	11	2
3	21	47	17	42	14	39	15	38	5 59	21	20	41	29	51	08	33	15	33	31	49	52	11	3
4	20	48	16	43	13	40	14	39	58	21	19	41	28	52	07	34	15	33	30	49	51	12	4
5	19	48	15	43	12	40	13	39	57	22	18	42	27	52	06	34	14	33	29	49	50	12	5
6	17	49	13	44	11	41	12	40	56	22	16	42	26	53	05	35	13	34	28	50	49	13	6
7	16	50	12	44	10	41	11	40	55	23	15	43	24	53	03	35	12	34	28	50	48	13	7
8	15	50	11	45	09	82	09	41	54	23	14	43	23	54	02	36	11	34	24	50	47	14	8
9.	14	51	10	46	08	42	08	42	53	24	13	44	22	54	01	37	10	35	26	51	46	14	9
10	16	52	09	47	06	43	07	43	52	24	12	44	21	55	6 00	37	09	35	25	51	45	15	10
11	11	52	07	47	05	43	06	43	50	25	11	45	20	55	5 59	38	08	35	24	51	44	15	11
12	10	53	06	48	03	44	05	44	49	25	10	45	19	56	58	39	07	36	23	52	43	15	12
13	09	54	05	48	02	44	04	44	48	26	09	46	18	56	57	39	06	36	22	52	42	16	13
14	08	54	04	49	01	45	03	45	47	26	08	46	17	57	55	40	05	37	21	53	41	16	14
15	07	55	03	50	6 00	45	02	45	47	26	08	46	16	57	55	40	05	37	21	53	41	16	15
16	05	56	01	50	5 59	46	01	46	45	27	06	47	15	58	52	42	02	38	20	53	39	17	16
17	04	56	6 00	51	48	47	6 00	46	44	28	05	48	14	58	52	42	02	38	19	54	38	18	17
18	03	57	5 59	52	57	48	5 59	47	43	28	04	48	13	59	51	42	01	38	18	54	37	18	18
19	02	58	57	53	56	48	58	47	43	28	03	49	12	59	51	42	6 01	38	18	54	37	19	19
20	01	58	56	54	55	49	57	48	42	29	02	49	11	00	49	43	5 59	39	17	55	35	19	20
21	6 00	18 59	55	55	54	50	56	49	41	29	01	50	10	00	49	44	59	40	16	55	34	20	21
22	5 59	19 00	54	55	54	50	56	49	41	29	6 01	50	10	00	49	45	59	40	15	55	33	20	22
23	58	00	53	56	52	51	54	50	40	30	5 59	51	08	01	47	45	57	41	14	56	23	21	23
24	57	01	52	57	51	51	53	51	39	31	59	52	07	02	46	46	56	41	14	56	32	21	24
25	56	02	51	57	50	52	52	51	38	31	58	52	06	03	45	46	55	41	13	57	31	21	25
26	55	02	50	57	49	53	51	52	37	32	57	53	05	04	44	47	55	42	12	57	30	22	26
27	54	03	49	58	48	53	50	52	36	32	56	53	04	04	43	47	54	42	11	57	29	22	27
28	53	04	48	58	47	54	49	53	35	33	55	54	03	05	42	48	53	43	11	58	28	23	28
29	52	04	47	18 59	46	55	48	53	34	34	54	54	03	05	41	49	53	43	10	58	27	23	29
30	5 51	19 05	5 46	19 00	5 45	18 55	5 47	18 54	5 33	18 34	5 53	18 55	6 02	19 06	5 40	18 49	5 52	18 43	5 09	17 59	5 26	18 24	30
मई	5 50	19 06	5 45	19 01	5 44	18 56	5 46	18 54	5 32	18 35	5 53	18 55	6 01	19 07	5 34	18 50	5 51	18 44	5 09	17 59	5 25	18 24	मई
2	49	06	45	02	43	57	45	55	37	35	52	56	6 00	07	38	51	50	44	08	17 59	29	25	2
3	48	07	43	03	43	57	44	56	31	36	51	56	5 59	08	37	51	50	44	07	18 00	24	25	3
4	47	08	43	03	42	58	44	57	30	36	50	57	58	08	36	52	49	45	07	00	23	26	4
5	46	09	42	04	42	59	43	57	30	37	50	57	57	09	36	53	49	45	06	01	23	26	5
6	45	09	41	05	41	18 59	43	58	29	37	49	58	56	09	35	53	48	46	05	01	22	27	6
7	44	10	40	05	40	19 00	42	58	28	38	48	59	55	10	34	54	48	46	05	02	21	27	7
8	44	11	40	05	39	00	41	18 59	27	38	47	18 59	55	11	33	55	47	47	04	02	21	28	8
9	43	11	39	07	38	01	41	19 00	27	39	47	19 00	54	11	32	55	47	47	04	03	19	29	9
10	42	07	38	07	38	02	40	01	26	40	46	00	54	12	32	56	46	48	03	03	19	29	10
11	41	13	37	07	37	02	39	01	25	40	46	01	53	12	31	56	46	48	03	03	19	29	11
12	5 41	19 13	5 37	19 08	5 36	19 03	5 39	19 02	5 25	18 41	5 45	19 01	5 53	19 13	5 30	18 57	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 30	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मई
13	5 40	19 14	36	19 09	5 36	19 04	5 38	19 02	5 24	18 41	5 44	19 02	5 52	19 13	5 30	18 58	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 31	13
14	39	15	35	10	35	04	38	03	24	42	44	02	51	14	29	58	44	50	01	05	17	31	14
15	38	15	34	11	34	05	37	03	23	42	43	03	50	14	28	18 59	44	50	01	05	17	32	15
16	38	16	34	11	33	06	36	04	23	43	43	04	50	15	28	19 00	43	51	00	06	16	32	16
17	37	17	33	12	33	06	36	04	22	44	42	04	50	15	27	00	43	51	5 00	06	16	33	17
18	37	17	33	12	32	07	35	05	22	44	42	05	49	16	26	01	42	52	4 59	07	15	33	18
19	36	18	32	13	32	08	34	06	21	45	41	05	49	17	26	02	42	52	59	07	15	34	19
20	35	19	32	13	31	08	34	07	21	45	41	06	48	18	25	02	41	53	59	08	15	34	20
21	35	20	31	14	31	09	33	07	20	46	40	06	48	18	25	03	41	53	58	08	14	35	21
22	34	20	31	15	30	09	33	08	20	46	40	07	47	19	24	03	40	53	58	09	14	35	22
23	34	21	30	15	30	10	32	08	19	47	40	07	47	19	24	04	40	54	58	09	14	36	23
24	33	22	30	16	29	10	32	09	19	47	39	08	47	20	23	05	40	54	57	09	13	36	24
25	33	22	29	16	29	11	31	09	19	48	39	08	46	20	23	05	39	55	57	10	13	37	25
26	33	23	29	17	29	11	31	10	18	48	39	09	46	21	23	06	39	55	57	10	13	37	26
27	32	24	28	18	28	12	30	10	18	49	38	10	46	21	22	06	39	56	57	11	12	38	27
28	32	24	28	18	27	13	30	11	18	49	38	10	45	22	22	07	39	56	56	11	12	38	28
29	31	25	27	19	27	14	30	11	17	50	38	11	45	22	22	08	38	57	56	12	12	39	29
30	31	26	27	19	27	14	29	12	17	50	37	11	45	23	21	08	38	57	56	12	12	39	30
31	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 12	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 12	18 40	31
जून	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 13	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 11	18 40	जून
2	30	27	26	21	26	16	28	13	17	52	37	12	44	24	21	10	38	59	55	13	11	40	2
3	30	27	26	22	26	16	28	14	16	52	37	13	44	25	20	10	38	59	55	14	11	41	3
4	30	28	26	23	26	17	28	14	16	53	37	13	44	25	20	11	38	18 59	55	14	11	41	4
5	30	28	27	23	26	17	28	15	16	53	36	14	44	26	20	11	38	19 00	55	15	11	42	5
6	30	29	26	23	26	18	28	15	16	54	36	14	44	26	20	12	38	00	55	15	11	42	6
7	29	29	26	24	26	18	28	16	16	54	36	15	44	27	20	12	38	00	55	15	11	43	7
8	29	30	26	24	25	19	28	16	16	54	36	15	44	27	20	13	38	00	55	16	11	43	8
9	29	30	26	24	25	19	28	17	16	55	36	15	44	28	20	13	38	01	55	16	11	43	9
10	29	30	26	25	25	19	28	17	16	55	36	16	44	28	20	13	38	01	55	16	11	44	10
11	29	31	26	25	25	20	28	18	16	56	36	16	44	29	19	14	38	02	55	17	11	44	11
12	29	31	26	26	25	20	28	18	16	56	36	16	44	29	19	14	38	02	55	17	11	44	12
13	29	32	26	26	25	20	28	19	16	57	36	17	43	29	20	15	38	03	55	18	11	45	13
14	29	32	26	26	25	21	28	19	16	57	36	17	43	30	20	15	38	03	55	18	11	45	14
15	29	32	26	27	25	21	28	19	16	57	36	17	43	30	20	15	38	03	56	18	11	45	15
16	29	33	26	27	25	21	28	19	16	58	37	18	43	30	20	15	38	03	56	18	11	45	16
17	30	33	26	27	25	22	28	20	16	58	37	18	43	30	20	15	38	04	56	19	12	46	17
18	30	33	26	27	25	22	28	20	16	58	37	18	44	31	20	16	38	04	56	19	12	46	18
19	30	34	26	27	25	22	29	20	17	58	37	19	44	31	20	16	39	04	56	19	12	46	19
20	30	34	26	28	26	23	29	21	17	59	37	19	44	32	20	17	39	05	57	19	12	47	20
21	30	34	27	28	26	23	29	21	17	59	37	19	44	32	20	17	39	05	57	20	12	47	21
22	30	34	27	28	26	23	30	21	17	59	37	20	44	32	20	17	39	05	57	20	12	47	22
23	31	34	27	28	26	23	30	22	17	59	38	20	44	32	20	17	39	05	57	20	13	47	23
24	31	35	27	29	27	23	30	22	18	18 59	38	20	44	32	21	18	40	05	57	20	13	47	24
25	31	35	28	29	27	23	30	22	18	19 00	39	20	45	32	21	18	40	05	57	20	13	48	25
26	31	35	28	29	27	23	31	22	18	00	39	20	45	32	22	18	40	05	58	21	13	48	26
27	31	35	28	29	27	24	31	22	19	00	39	20	46	32	22	18	41	06	58	21	14	48	27
28	5 32	19 35	5 28	19 29	5 27	19 24	5 31	19 22	5 19	19 00	5 39	19 20	5 46	19 32	5 22	19 18	5 41	19 06	4 58	18 21	5 14	18 48	28

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जून	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जून
29	5 32	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 41	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	29
30	5 33	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	30
जुला	5 33	19 35	5 30	19 29	5 29	19 24	5 32	19 22	5 20	19 00	5 41	19 21	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	जुला
2	34	35	29	29	30	24	32	22	20	00	41	21	48	33	24	18	42	06	5 00	21	16	48	2
3	34	35	30	29	30	24	33	22	20	00	41	21	48	33	24	18	43	06	00	21	16	48	3
4	34	35	30	29	31	24	34	22	21	00	41	21	49	33	25	18	43	06	00	21	16	48	4
5	35	35	31	29	31	24	34	22	21	00	42	21	49	33	25	18	43	06	01	21	17	48	5
6	35	35	31	29	31	23	34	22	22	00	43	20	50	33	26	18	44	06	01	21	18	48	6
7	36	35	33	29	32	23	32	22	22	00	42	21	50	33	25	18	44	06	01	21	17	48	7
8	36	34	33	29	32	23	35	21	23	00	43	20	51	33	26	18	44	06	02	21	18	48	8
9	37	34	33	29	3	23	35	21	23	19 00	43	20	51	33	27	17	44	06	02	21	18	48	9
10	37	34	34	2	33	22	36	21	23	18 59	44	20	52	32	27	17	45	06	02	21	19	48	10
11	38	34	3	28	34	22	36	21	24	59	44	20	52	32	28	17	45	05	03	21	19	48	11
12	38	33	35	28	34	22	37	20	24	59	45	20	52	32	28	17	45	05	03	21	20	48	12
13	39	33	36	27	35	22	38	20	25	59	45	19	53	32	29	17	46	05	04	20	21	47	13
14	39	33	36	27	35	21	38	20	25	59	46	19	53	32	29	16	46	05	04	20	21	47	14
15	40	32	37	27	36	21	39	20	26	58	46	19	54	31	30	16	47	05	05	20	21	47	15
16	41	32	37	26	36	21	39	19	26	58	47	18	54	31	30	16	47	04	05	20	22	47	16
17	41	32	37	26	37	21	40	19	27	58	47	18	55	30	31	15	48	04	05	20	22	46	17
18	42	31	38	26	38	20	40	19	27	57	48	18	55	30	32	15	48	04	06	19	23	46	18
19	42	31	39	25	38	20	41	18	28	57	48	17	56	29	32	14	49	04	06	19	23	46	19
20	43	30	39	25	39	20	41	18	28	57	49	17	56	29	33	14	49	03	07	19	23	45	20
21	44	30	39	24	39	19	42	17	29	56	49	17	57	29	33	13	50	03	07	19	24	45	21
22	44	29	40	24	40	19	42	17	29	56	50	16	57	29	34	13	50	03	07	18	24	45	22
23	45	29	41	23	40	18	43	16	30	55	50	16	58	28	34	12	51	02	08	18	25	44	23
24	45	29	41	23	41	18	43	16	30	55	51	15	58	27	35	12	51	02	08	17	25	44	24
25	46	28	42	22	42	17	44	15	31	54	51	15	59	27	36	11	52	02	09	17	26	43	25
26	47	27	43	22	42	17	44	15	31	54	52	14	5 59	26	36	11	52	01	09	17	26	43	26
27	47	26	44	21	42	16	45	14	32	53	32	14	6 00	25	37	10	53	01	10	16	26	43	27
28	48	26	44	21	43	16	45	14	32	53	53	13	01	25	37	10	53	01	10	16	27	42	28
29	48	25	44	20	44	15	46	13	33	52	53	13	01	24	38	09	54	00	10	15	27	41	29
30	49	24	45	19	45	14	46	13	33	52	54	12	01	24	39	08	54	19 00	11	15	28	41	30
31	5 50	19 23	5 46	19 18	5 45	19 13	5 47	19 12	5 34	59	5 54	19 12	6 02	19 23	5 39	19 08	5 54	18 59	5 11	18 14	5 28	18 40	31
अग.	5 50	19 23	5 46	19 18	5 46	19 13	5 47	19 12	5 34	18 51	5 55	19 11	6 02	19 22	5 40	19 07	5 55	18 59	5 12	18 14	5 29	18 40	अग.
2	51	22	47	17	46	12	48	11	35	50	55	10	03	22	40	06	55	58	12	13	29	40	2
3	52	21	48	16	47	11	49	10	35	49	56	10	03	21	41	05	55	57	12	13	30	38	3
4	52	20	49	15	47	10	50	09	36	49	56	09	04	20	42	05	56	56	13	11	31	37	4
5	53	20	49	15	48	10	50	09	37	48	57	08	04	19	42	04	56	56	13	11	31	37	5
6	54	19	49	13	49	09	51	08	37	47	57	08	05	18	43	03	57	55	14	11	31	36	6
7	54	18	50	12	49	08	51	07	38	46	58	07	06	18	43	02	57	55	14	10	32	36	7
8	55	17	51	11	50	07	52	06	38	46	58	06	07	17	44	01	58	54	14	10	32	36	8
9	55	16	51	11	51	06	32	05	39	45	59	05	07	16	45	00	58	54	15	09	32	34	9
10	56	15	52	05	51	05	53	04	39	44	5 59	04	08	15	45	19 00	58	53	15	08	33	34	10
11	57	14	53	09	52	04	53	03	40	43	6 00	04	08	14	46	18 59	59	52	16	08	33	33	11
12	57	14	54	08	52	03	54	02	40	42	00	03	09	14	46	58	59	51	16	07	34	32	12
13	58	12	54	07	53	92	54	01	41	42	01	02	09	13	47	57	5 59	51	16	06	34	31	13
14	5 59	19 11	5 55	19 06	5 54	19 01	5 55	19 00	5 41	18 41	6 01	19 01	6 10	19 12	5 48	18 56	6 00	18 59	5 17	18 05	5 35	18 30	14

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अग.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अग.
15	5 59	19 10	5 56	19 04	5 55	18 59	5 57	18 58	5 52	18 39	6 02	18 59	6 11	19 10	5 49	18 54	6 01	18 48	5 18	18 04	5 36	18 29	15
16	6 00	09	56	04	55	59	57	58	42	39	02	59	11	10	49	54	01	48	18	04	36	29	16
17	01	08	56	03	55	58	57	57	43	38	03	58	11	9	49	53	01	47	18	03	36	28	17
18	01	07	56	02	56	57	58	56	43	37	04	58	12	8	50	52	02	46	18	02	36	27	18
19	02	06	57	19 01	56	56	58	55	43	36	04	57	12	7	50	51	02	45	19	02	36	27	19
20	02	05	59	18 59	57	55	59	54	44	35	05	56	13	06	51	50	03	45	19	02	36	26	20
21	03	04	59	59	58	54	5 59	53	44	34	05	55	13	5	52	49	03	44	19	18 00	37	24	21
22	04	03	5 59	58	58	53	6 00	52	45	33	05	54	14	4	52	48	03	43	20	17 59	38	24	22
23	04	02	6 00	57	59	52	00	51	45	32	06	53	14	3	53	47	04	42	20	58	38	23	23
24	05	19 00	01	55	5 59	51	01	50	56	31	07	52	15	02	53	46	04	41	20	57	39	22	24
25	06	18 59	01	55	6 00	50	01	49	46	30	07	51	15	1	54	54	04	40	21	51	39	22	25
26	06	58	02	54	00	49	02	48	47	29	07	50	16	00	54	43	05	39	21	56	39	21	26
27	07	57	03	52	01	47	02	47	47	28	08	49	16	59	55	42	05	38	21	55	40	20	27
28	07	54	04	50	01	46	48	27	48	27	08	47	17	57	56	40	06	38	22	55	40	18 19	28
29	08	54	04	49	02	45	03	45	48	26	08	47	17	57	56	40	06	37	22	53	41	18	29
30	09	53	04	49	03	44	04	44	49	25	09	46	18	56	57	39	06	36	22	52	41	17	30
31	6 09	18 52	6 05	18 48	6 04	18 43	6 04	18 42	5 49	18 24	6 09	18 46	6 18	18 56	5 57	18 39	6 06	18 36	5 22	17 52	5 41	18 17	31
सितं.	6 10	18 51	6 06	18 46	6 04	18 42	6 05	18 41	5 49	18 23	6 10	18 44	6 19	18 58	5 55	18 36	6 06	18 34	5 22	17 51	5 42	18 14	सितं.
2	10	50	06	46	05	41	05	40	50	22	10	42	19	53	58	35	07	33	22	50	42	13	2
3	11	48	06	45	05	40	06	39	50	21	11	41	20	52	59	34	07	32	22	49	43	12	3
4	12	47	07	43	06	39	06	33	51	20	11	40	20	50	5 59	33	07	31	23	48	43	11	4
5	12	46	09	41	06	37	07	37	51	19	11	39	21	49	6 00	32	07	30	23	47	44	10	5
6	13	45	08	41	07	36	07	36	52	18	12	38	21	48	00	30	08	29	23	46	44	09	5
7	13	43	09	40	07	35	08	34	52	17	12	37	22	46	01	29	08	28	24	45	44	07	7
8	14	42	10	38	08	34	08	32	52	15	13	36	23	45	02	28	08	27	24	44	45	06	8
9	15	41	11	36	08	32	09	31	53	15	13	35	23	44	02	27	07	26	24	43	45	05	9
10	15	39	11	35	09	31	09	30	53	13	14	34	23	43	03	26	09	25	25	42	46	04	10
11	16	38	12	18 34	09	29	10	29	54	12	14	33	23	42	03	24	09	24	25	41	46	03	11
12	16	37	12	17 33	10	28	10	28	54	11	14	31	23	41	04	23	10	23	25	40	46	02	12
13	17	36	13	18 31	10	27	11	27	55	10	15	30	24	40	04	22	10	22	25	39	47	01	13
14	17	34	13	31	11	26	11	26	55	09	15	29	24	38	05	21	10	21	26	38	47	18 00	14
15	18	33	13	30	11	24	12	25	55	08	16	28	25	37	05	19	10	20	26	38	47	17 59	15
16	19	32	14	28	12	23	12	24	56	06	16	27	25	36	06	18	10	19	26	37	48	58	16
17	19	30	15	25	12	22	13	22	56	05	17	26	26	35	06	17	11	18	26	36	48	57	17
18	20	29	15	25	13	21	13	21	57	04	17	25	26	34	07	16	11	17	27	35	49	56	18
19	20	28	16	24	13	19	14	20	57	03	17	23	27	32	07	14	11	16	27	33	49	55	19
20	21	26	17	22	14	18	14	19	58	02	18	22	27	31	08	13	11	15	27	32	49	53	20
21	22	25	18	20	14	17	15	18	58	01	18	21	28	30	09	12	12	14	27	31	50	52	21
22	22	24	18	19	15	16	15	17	58	18 00	19	20	28	29	09	11	12	13	28	30	50	51	22
23	23	23	18	19	16	14	16	16	59	17 58	19	19	29	28	10	09	13	12	28	29	50	50	23
24	23	21	19	18	16	13	16	14	5 59	57	20	18	29	27	10	08	13	11	28	28	51	49	24
25	24	20	20	15	17	12	17	13	6 00	56	20	17	30	26	11	07	14	10	29	28	51	48	25
26	25	19	20	14	17	11	17	12	00	55	20	15	30	24	11	06	14	09	29	27	52	47	26
27	25	17	21	13	18	09	18	11	01	54	21	14	31	23	12	04	14	08	29	26	52	46	27
28	26	16	21	12	18	08	18	09	01	53	21	13	31	22	12	03	14	07	29	25	53	45	28
29	27	15	22	10	19	07	19	08	02	52	22	12	32	21	13	02	15	06	30	24	53	43	29
30	6 27	18 13	6 23	18 10	6 19	18 06	6 19	18 07	6 02	17 51	6 22	18 11	6 32	18 20	6 13	18 01	6 15	18 05	5 30	17 23	5 53	17 43	30

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अक्तू	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अक्तू
अक्तू	6 28	18 12	6 23	18 08	6 20	18 04	6 20	18 06	6 02	17 49	6 23	18 10	6 33	18 19	6 14	17 59	6 15	18 04	5 32	17 21	5 54	17 42	अक्तू
2	28	11	24	07	21	03	20	05	03	48	23	09	33	18	15	58	15	03	32	20	54	40	2
3	29	10	25	05	21	02	21	03	6 03	47	24	08	34	16	15	47	16	02	32	19	54	39	3
4	30	08	25	04	22	01	21	18 01	5 04	46	24	06	34	15	16	56	16	01	33	18	55	38	4
5	30	07	25	02	22	18 00	22	17 00	04	45	25	05	35	14	16	55	17	18 00	33	17	55	37	5
6	31	06	26	02	23	17 58	23	59	05	44	25	04	35	13	17	53	17	17 59	33	16	55	36	6
7	32	05	27	00	23	57	24	58	05	43	26	03	36	12	18	52	18	58	34	15	56	35	7
8	32	03	27	18 00	24	56	24	57	06	42	26	02	36	11	18	51	18	57	34	14	57	34	8
9	33	02	27	17 59	25	55	25	56	06	42	27	01	37	10	19	50.	18	56	34	13	57	33	9
10	34	01	29	57	25	54	25	55	5 07	40	27	18 00	37	09	19	49	18	56	35	12	57	32	10
11	34	18 00	30	55	26	53	26	54	6 07	39	28	17 59	38	08	20	48	19	55	35	11	58	31	11
12	35	17 59	30	55	27	51	26	53	08	38	28	58	38	07	21	46	19	54	36	10	58	30	12
13	36	57	31	54	27	50	27	52	08	37	29	57	39	06	21	45	19	53	36	09	59	29	13
14	36	56	32	52	28	49	27	51	09	36	29	56	40	05	22	44	20	52	36	09	59	28	14
15	37	55	33	51	29	48	28	50	09	35	30	55	41	04	23	43	20	51	37	08	6 00	27	15
16	38	54	33	50	29	47	28	49	10	34	30	54	41	03	23	42	20	50	37	07	00	27	16
17	39	53	33	49	30	46	29	48	10	33	31	53	42	02	24	41	21	49	38	06	01	26	17
18	39	52	34	48	30	45	30	47	11	32	31	52	42	01	24	40	21	49	38	05	01	25	18
19	40	50	35	48	31	44	31	46	12	31	32	51	43	18 00	25	39	22	48	38	05	01	24	19
20	41	49	35	46	32	43	31	45	12	30	33	50	43	17 59	26	38	22	48	39	04	02	23	20
21	42	48	36	45	32	42	32	44	13	29	33	49	44	58	26	37	23	47	39	03	03	22	21
22	42	47	37	44	33	41	33	43	13	28	34	48	45	57	27	36	23	46	40	02	03	21	22
23	43	46	38	42	34	40	34	42	14	27	34	47	46	56	28	35	24	45	40	01	04	20	23
24	44	45	39	42	35	39	34	41	15	26	35	47	46	55	29	34	24	44	41	01	05	20	24
25	45	44	40	41	35	38	35	40	15	25	36	45	47	54	29	33	25	43	41	17 00	05	19	25
26	45	43	40	39	36	37	35	39	16	25	36	45	47	53	30	32	25	42	42	16 59	06	18	26
27	46	42	41	38	37	36	36	38	16	24	37	44	48	52	31	31	26	42	43	59	06	17	27
28	47	41	42	37	37	35	36	37	17	23	37	43	48	51	31	31	26	41	43	58	07	16	28
29	48	40	42	37	38	34	37	36	18	22	37	42	49	51	31	30	27	41	43	57	07	16	29
30	49	39	43	36	39	35	38	35	19	21	39	42	50	50	33	28	27	40	44	57	08	15	30
31	6 49	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 10	17 14	31
नवं.	6 50	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 09	17 14	नवं.
2	51	37	45	33	41	31	40	34	20	19	41	39	52	48	34	26	29	38	45	55	10	13	2
3	52	36	47	32	42	31	41	33	21	18	41	39	53	47	36	25	30	38	46	54	11	12	3
4	53	35	48	31	43	30	42	32	22	18	42	38	54	46	37	24	31	37	46	54	11	12	4
5	53	34	48	31	43	30	42	32	22	18	42	38	54	46	37	24	31	37	46	54	11	11	5
6	54	33	48	30	44	29	43	31	23	17	44	37	56	45	38	23	32	36	47	53	12	10	6
7	55	33	50	30	45	28	44	30	24	16	44	36	56	45	39	22	32	36	48	52	13	10	7
8	56	32	51	29	46	27	45	29	24	15	45	36	57	44	40	21	33	35	48	52	14	09	8
9	57	31	52	28	47	27	45	29	25	15	46	35	57	44	41	21	33	35	49	51	15	09	9
10	58	31	52	27	47	26	46	28	26	14	46	35	58	43	41	20	34	34	50	51	15	08	10
11	59	30	53	27	48	25	47	28	26	14	47	34	6 59	42	42	20	34	34	50	50	16	08	11
12	7 00	29	54	26	49	24	48	27	27	13	48	33	7 00	41	43	19	35	33	51	50	17	07	12
13	00	29	54	26	50	23	48	27	28	13	49	33	01	41	44	18	35	33	55	50	17	07	13
14	01	28	55	26	51	23	49	26	29	12	49	33	01	40	45	18	36	33	52	49	18	06	14
15	02	28	56	25	52	22	50	26	29	12	50	32	02	40	46	17	37	32	53	49	19	06	15
16	7 03	17 27	6 58	17 24	6 53	17 22	6 51	17 25	6 30	17 12	6 51	17 32	7 03	17 39	6 46	17 17	6 38	17 32	5 53	16 49	6 19	17 06	16

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
नवं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	नवं.
17	7 04	17 26	6 58	17 24	6 53	17 21	6 52	17 24	6 31	17 11	6 52	17 31	7 03	17 39	6 47	17 16	6 38	17 32	5 54	16 48	6 20	17 05	17
18	05	26	6 59	23	54	21	53	24	32	11	52	31	05	39	48	16	39	31	55	48	21	05	18
19	06	26	7 00	23	55	21	54	23	32	10	53	31	05	39	49	16	40	31	55	48	22	05	19
20	07	25	01	22	56	21	55	23	33	10	54	30	06	38	50	15	41	31	56	48	22	04	20
21	07	25	01	22	57	20	55	23	34	10	55	30	06	38	51	15	41	31	57	48	23	04	21
22	08	24	02	22	57	20	56	22	35	10	55	30	07	38	51	15	42	30	57	47	24	04	22
23	09	24	04	22	58	20	57	22	35	09	56	30	08	38	52	14	42	30	58	47	24	04	23
24	10	24	05	21	6 59	20	58	22	36	09	57	29	09	37	53	14	43	30	59	47	25	04	24
25	11	23	06	21	7 00	19	6 59	22	37	09	58	29	09	37	54	14	43	30	5 59	47	26	03	25
26	12	23	06	21	01	19	7 00	22	38	09	58	29	10	37	55	14	44	30	6 00	47	27	03	26
27	13	23	07	21	02	19	01	22	38	09	6 59	29	11	37	55	13	45	30	01	47	27	03	27
28	14	23	08	20	03	19	02	22	39	09	7 00	29	12	37	56	13	46	30	01	47	28	03	28
29	14	23	08	20	03	19	02	21	40	09	01	29	13	37	57	13	46	30	02	47	29	03	29
30	7 15	17 23	7 09	17 20	7 04	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 58	17 13	6 47	17 30	6 02	16 47	6 30	17 03	30
दिसं.	7 16	17 22	7 10	17 20	7 05	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 59	17 13	6 48	17 30	6 03	16 47	6 30	17 03	दिसं.
2	17	22	11	20	06	19	04	21	42	09	03	29	15	36	6 59	13	49	30	04	47	31	03	2
3	18	22	11	20	06	19	04	21	43	09	04	29	16	36	7 00	13	49	31	05	47	32	03	3
4	19	22	12	20	07	19	05	21	44	09	05	29	17	36	01	13	50	31	05	47	32	03	4
5	19	22	13	20	08	19	06	21	44	09	06	29	17	36	02	13	51	31	06	48	33	04	5
6	20	22	14	20	09	19	07	21	45	49	07	29	18	37	03	13	52	31	07	48	34	04	6
7	21	22	14	20	09	19	07	21	46	09	07	29	19	37	03	13	52	31	07	48	35	04	7
8	22	23	15	20	10	19	08	22	46	09	08	30	20	37	04	13	53	32	08	48	35	04	8
9	22	23	16	20	11	19	09	22	47	09	09	30	20	37	05	13	53	32	09	48	36	04	9
10	23	23	17	20	12	19	10	22	48	10	09	30	21	37	06	14	54	32	09	49	37	05	10
11	24	23	18	20	12	19	10	22	49	10	09	30	22	37	06	14	54	33	10	49	37	05	11
12	25	23	19	21	13	20	11	23	49	10	10	30	23	38	07	14	55	33	11	49	38	05	12
13	25	24	19	21	14	20	12	23	50	10	11	31	23	38	08	14	56	33	11	50	38	05	13
14	26	24	20	21	14	20	13	23	50	11	11	31	24	39	08	15	57	33	12	50	39	06	14
15	27	24	21	22	15	21	13	24	51	11	12	31	24	39	09	15	57	34	12	50	40	06	15
16	27	25	22	22	16	21	14	24	52	12	13	32	25	39	10	15	58	34	13	51	41	06	16
17	28	25	22	22	16	21	14	24	52	12	13	32	25	39	10	16	58	34	14	51	41	07	17
18	28	25	23	23	17	22	15	25	53	12	14	32	26	40	11	16	59	35	14	51	41	07	18
19	29	26	23	23	17	22	15	25	53	13	14	33	26	40	11	17	6 59	35	15	52	42	08	19
20	30	26	24	23	18	23	16	26	54	13	14	33	27	41	12	17	7 00	36	15	52	42	08	20
21	30	27	24	24	18	23	16	26	55	14	15	34	27	41	12	17	01	36	15	53	43	09	21
22	13	27	25	25	19	14	17	27	55	14	16	34	28	42	13	18	01	37	16	53	44	09	22
23	31	28	25	25	19	24	17	27	55	15	16	35	28	42	13	18	02	37	17	54	44	10	23
24	32	28	25	26	20	25	18	28	56	15	17	35	29	43	14	19	02	38	17	54	45	10	24
25	32	29	25	26	20	26	18	28	56	16	17	36	29	43	14	20	03	38	18	55	45	11	25
26	32	29	26	27	21	26	19	29	57	16	18	37	30	44	15	20	03	39	18	55	45	11	26
27	33	30	26	27	21	27	19	29	57	17	18	37	30	44	15	21	03	39	19	56	45	21	27
28	33	31	27	28	21	27	20	30	58	17	18	38	30	45	15	21	04	40	19	57	46	12	28
29	33	31	27	28	22	28	20	30	58	18	19	38	30	45	16	22	04	40	19	57	47	13	29
30	34	32	28	29	22	28	21	31	58	19	19	39	31	47	16	23	04	41	20	58	47	14	30
31	7 34	17 33	7 28	17 30	7 22	17 28	7 21	17 31	6 59	17 19	7 20	17 40	7 31	17 47	7 16	17 23	7 05	17 41	6 20	16 58	6 47	17 14	31

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। **ध्यान रहे,** आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करें॥

उदाहरण—यदि आपका चन्द्र स्पष्ट ५। १°। ५२′ है तो इसका तात्पर्य हुआ कि **चन्द्रमा कन्या राशि** के १° अंश ५२′ कला पर संचार कर रहा है। अब **सारिणी नं. I (क)** में चन्द्र-स्पष्ट के नीचे व १° अंश ५० कला के सामने और **चन्द्र राशि कन्या** के नीचे तालिका में देखने पर **सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ८ मास और ३ दिन** प्राप्त हुई। अब शेष २ कलाओं हेतु आगामी पृष्ठों पर **सारिणी नं. II (ख)** में सूर्य की २ कलाओं का भोग्यकाल देखने से ५ दिन प्राप्त हुए क्योंकि जैसे जैसे चन्द्रमा के अंश बढ़ते हैं, दशा का भोग्यकाल कम होता जाता है। अत: **५ दिन घटा देने से हमें सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ७ मास, २८ दिन** प्राप्त हुई। शुद्ध चन्द्र स्पष्ट की गणित प्रक्रिया जानने के लिए **ज्योतिष तत्त्व** पढ़ें।

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१		०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००	केतु	४	१०	२४	सूर्य	२	८	१२	मंग	१	४	२४	शनि	१८	०	१८

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
४	१०	केतु	४	९	२३	सूर्य	२	७	१५	मंग	१	३	२२	शनि	१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	०९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	०	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	०	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०	केतु	२	८	१७	सूर्य	०	९	२७	राहु	१५	११	२१	शनि	१२	१	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
८	२०	केतु	२	७	१५	सूर्य	०	९	०	राहु	१५	९	०	शनि	११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०	शुक्र	१८	३	०	चंद्र	६	७	१५	राहु	७	५	३	शनि	३	१	१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१४	४०	शुक्र	१८	०	०	चंद्र	६	६	०	राहु	७	२	१२	शनि	२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०		१७	३	०		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९
१५	२०		१७	०	०		६	०	०		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१		०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	११
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५		०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०	शुक्र	८	९	०	चंद्र	१	१०	१५	गुरु	१५	०	०	बुध	११	८	७

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	०	चंद्र	१	९	०	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०		०.	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	०७
२४	२०		३	६	०		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	०		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०	सूर्य	५	९	९	मंग	४	११	२६	गुरु	७	४	२४	बुध	३	७	१०
२७	२०	सूर्य	५	८	१२	मंग	४	१०	२४	गुरु	७	२	१२	बुध	३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०		४	६	०		३	६	०		४	०	०		०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	कला
	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	
१	० ०३	० ०९	० ०३	० ०५	० ०३	० ०८	० ०७	० ०९	० ०८	१
२	० ०६	० १८	० ०५	० ०९	० ०६	० १६	० १४	० १७	० १५	२
३	० ०९	० २७	० ०८	० १४	० ०९	० २४	० २२	० २६	० २३	३
४	० १३	१ ०६	० ११	० १८	० १३	१ ०२	० २९	१ ०४	१ ०१	४
५	० १६	१ १५	० १४	० २३	० १६	१ ११	१ ०६	१ १३	१ ०८	५
६	० १९	१ २४	० १६	० २७	० १९	१ १९	१ १३	१ २१	१ १६	६
७	० २२	२ ०३	० १९	१ ०२	० २२	१ २७	१ २०	२ ००	१ २४	७
८	० २५	२ १२	० २२	१ ०६	० २५	२ ०५	१ २८	२ ०८	२ ०१	८
९	० २८	२ २१	० २४	१ ११	० २८	२ १३	२ ०५	२ १७	२ ०९	९
१०	१ ०१	३ ००	० २७	१ १५	१ ०१	२ २१	२ १२	२ २६	२ १७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान—जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को १२ से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को ३० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से ज्योतिष तत्त्व मंगवा कर पढ़ें।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृ. उ. फा. उ. षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा.पू. भा.				पुष्य. अनु.उ. भा. ५७			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूला. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भ्रद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
भा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
श्रवण, आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि			पुष्य विशा शत.			श्ले. अनु. पूभा. अश्वि			मघा. ज्ये. उभा. भर.			पूफा मूला रेव कृत्ति			उफा. पूषा रोह			हस्त उषा मृग		

योगिनी दशा विचार—योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगिनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा—ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि—अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ—यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा—अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा—मंगला, धा. भ. सि., **नेष्टदशा**—पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि—जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा और अष्टोतरी दशा।** अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षों** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत—विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर-दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र—6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	6
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	16	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	16	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	श.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	26	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

स्वप्न—शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छ: मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रात:काल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता	कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद	गर्भपात	गम्भीर रोग	ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक	ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख	कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले	घूंघट देखना	नया कारोबार	जुआ खेलना	धन हानि	तम्बू देखना	नया काम शुरु करें
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति	कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो	घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता	जेब काटना	धन हानि	तलवार चलाना	शत्रु पर विजय
अन्धेरा देखना	दु:ख मिले	कबूतर देखना	शुभ समाचार	घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा	जड़ें देखना	दीर्घायु	तपस्वी देखना	आत्म उन्नति
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता	काला नाग	राज्य सम्मान	घायल देखना	संकट से मुक्त होना	जड़ें काटना	संकट का सूचक	तैरते देखना	आयु में वृद्धि
अर्थी देखना	रोग मुक्त	किला देखना	तरक्की पाना	घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो	जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की	तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग	कोढ़ी देखना	रोग सूचक	घडी देखना	यात्रा का संकेत	झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि
आकाश देखना	तरक्की होना	कन्या देखना	तीर्थ यात्रा	घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक	झाड़ू देखना	नुकसान हो	तीर मारना	खुशी मिले
आँवला खाना	स्वास्थ्य लाभ	कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा	चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ	झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ	तूफान देखना	परेशानी बढ़े
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो	चरखा देखना	आर्थिक लाभ	झांकी देखना	अशुभ	तीर्थ देखना	धार्मिक खींच
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो	कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी	चावल खाना	शुभ समाचार	झोली देखना	विजय संकेत	तितली देखना	प्रेम सम्बन्ध में सफलता
आत्महत्या करना	दीर्घायु	कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो	चोर देखना	धन प्राप्ति	झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक	तोता देखना	धन लाभ
आलू देखना	मुसीबत आना	कोयल देखना	कोई शुभ समाचार	चादर देखना	बदनामी हो	झरना देखना	दु:ख दूर हों	तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह	कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता	चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद	टिकट लेना	सम्बन्ध टूटना	तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता
अस्त्र-शस्त्र देखना	दु:खों से निपटारा हो	कबाब खाना	अपयश/विवाद	चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत	टोकरी देखना	व्यापार में वृद्धि	तराजू देखना	व्यापार लाभ
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख	कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	चीखें मारना	परेशानी व कष्ट	टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति	ताली बजाना	खुशी मिले
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति	खून करना	संकट आना	चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	ताश खेलना	व्यापार लाभ
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की	खिलौना देखना	सुख शान्ति	छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद	टापू देखना	संकट लक्षण	ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट
ईंजन देखना	योजनाएं असफल	खरबूजा देखना	धन लाभ	छिपकली देखना	अचानक धन लाभ	टोपी देखना	प्रगति हो	तरबूज देखना	परेशानी
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति	खेत देखना	संकट पूर्ण	छींकना	कार्य बाधा	ठग मिलना	धन हानि	तांगा देखना	झगड़ा हो
ईमली का पेड़ देखना	स्वास्थ्य	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप	छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा	ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य	थूक देना	परेशानी बढ़े
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन	गुरु देखना	कार्य सफलता	छपाई देखना	अपमानित होना	ठोकर लगते देखना	सफलता का सूचक	थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो	गोबर देखना	पशु लाभ हो	छंटनी देखना	पदोन्नति	ठाकुर देखना	आध्यात्मिक प्रवृत्ति	थप्पड़ खाना	शुभ
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले	गंगा देखना	शेष जीवन सुखी	जख्म देखना	परेशानियां	डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति	धन स्पर्श करना	धन प्राप्ति
ऊँट देखना	अंग घात	ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता	जादूगर देखना	अशुभ लक्षण	डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना	दूध पीना	खुशी प्राप्ति
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान	गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण	जहाज देखना	परेशानी दूर हो	डोली देखना	कोई परेशानी हो	दरवाजा देखना	नए कार्य का आरम्भ
ऐनक देखना (काली)	निराशा	गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो	जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति	डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो	दही देखना	सफलता
कमल देखना	धन प्राप्ति	गरीबी देखना	सुख समृद्धि	जल देखना	मान सम्मान	डाकू देखना	धन हानि	दाँव लगाना	भारी हानि

स्वप्न	फल
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
दांत गिरते देखना	दुःख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
दुकान (खाली) देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति
दक्षिणा देना	मंगल कार्य सूचक
दरिया में नहाना	रोग नाश
दीवार गिरना	धन हानि
दक्षिणा देना	मंगल कार्य
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्राप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो
धुआं देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
धनुष खींचना	लाभप्रद यात्रा हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
पत्थर देखना	विपत्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	शुभ यात्रा हो
परछाई देखना	अशुभ होना
पर्व दखना	शुभ हो
पशु देखना	व्यापार में लाभ

स्वप्न	फल
पहरेदार देखना	चोरी होना
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पतंग देखना	परेशानी बढ़े
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय प्रबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता का सूचक
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दुःख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बालू देखना	धन लाभ हो
बादाम देखना	स्वास्थ्य लाभ
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े

स्वप्न	फल
भोजन पकाना	शुभ समाचार
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दुःख दूर हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
मधुमक्खी देखना	व्यापार वृद्धि
मिर्च खाना	लड़ाई संकेत
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यन्त्र देखना	असफलता प्राप्ति
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रुद्राक्ष देखना	कल्याण का प्रतीक
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दुःख निवृत्ति
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रथ देखना	यात्रा पड़े
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रीछ देखना	शुभ समाचार
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लहंगा देखना	दाम्पत्य सुख प्राप्ति

स्वप्न	फल
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	चिन्ता, हानि
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
साईकिल चलाना	कार्य सिद्धि
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
सेब देखना	दीर्घायु
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि
हिम गिरते देखना	धन प्राप्ति
त्रिशूल देखना	सफलता मिले

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण				कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	१	२	३	४						
अश्विनी १	रोग दिन संख्या ०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवैद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवैद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्त्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुडोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्घखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्रचयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ।५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यौ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धवलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्लया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नंहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण १	२	३	४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
स्वाती १५	६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्वान्न दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्याँ नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपघृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्यायश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कापना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतमिंद्र Ω स्वास्ति नो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदेवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसुवर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कल्बिषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य-सुव. ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै ॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्णगोदानब्राह्मणभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्या ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरस नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरुणाय नमः॥	कुंकुम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र-पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र घृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा-द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिरस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्त्वाय ॥२६॥) ॐ अहिर्बुधाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीड़ा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषनु तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पूफा	उफा	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुनर्व	मघा	हस्त	विशा	मूला	श्रव०	पूभा	अश्वि	रोहि
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वाती	पूषा	उषा	उभा	रेवती	मृग

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि-आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि-भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह गतवर्ष होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। मुन्था जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का चन्द्रमा निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो सूर्य की, २ बचें तो चन्द्रमा, ३ बचें तो मंगल, ४ से राहु, ५ बचें तो गुरु, ६ बचें तो शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ अथवा ० बचे तो शुक्र की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि—सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल के २१ दिन, राहु के ५४ दिन, गुरु के ४८ दिन, शनि के ५७ दिन, बुध के ५१ दिन, केतु के २१ दिन तथा शुक्र के ६० दिन मुद्दा दशा में होते हैं।

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल—सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७—इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९
गुप्त मित्र	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११
प्रत्यक्ष शत्रु	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७
गुप्त शत्रु	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुनः जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। ''सूर्य सिद्धान्तानुसार'' उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से **'वर्षफल चन्द्रिका'** लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनती हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे।

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में—अर्थात् 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुन: उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुन: उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्पयूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न निकालने के लिए इसका प्रयोग और भी अधिक सरल है।**

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 3	22	44
	8	28	14
अर्थात् (रविवार)	1 वार	4	14

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि—आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे,** सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रात: साढ़े पाँच (5/30) बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2005 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2005 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 31 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 31 के सामने हमें 3 वार, 22 घण्टे एवं 44 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 7 वार 28 घण्टे, 14 मिनट प्राप्त हुए। अब 28 घण्टों में से 24 घं. घटा देने और 1 वार बढ़ा देने से हमें 8 वार अर्थात् रविवार की प्रात: 4 बजकर, 14 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू. की मध्य रात्रि एवं 2 अक्तू. की प्रात: 4 बजकर 14 पर हमें **सिंह वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न सिंह में सं. २०६२ की पंचांग से 2 अक्तू. 2005 ई. प्रात: 4/14 स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित **'वर्षफल चन्द्रिका'** पुस्तक का अध्ययन करें।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46	1	19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

जनवरी — दैनिक लग्न सारणी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

फरवरी — दैनिक लग्न सारणी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 20	7 48	9 12	10 48	12 43	14 57	17 18	19 36	21 51	24 10	2 29	4 33
25	6 16	7 44	9 08	10 44	12 39	14 53	17 14	19 32	21 47	24 06	2 25	4 29
26	6 12	7 40	9 04	10 40	12 35	14 49	17 10	19 28	21 43	24 02	2 21	4 25
27	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
28	6 05	7 32	8 57	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 01	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मार्च ता.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अप्रैल ता.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

मई — दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

जून — दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	1 134	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्टू.	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	24 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	24 54	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

नवंबर	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं	5 49	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

दिसंबर	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज़ देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**—में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**—भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**— पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र

वार	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

।।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६.००
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७.३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१.३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	३.००
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४.३०

।।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	६.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	७.३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	९.००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	१.३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	४.३०

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त्त १½ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टष्मांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमश: उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाश: रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**—सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

दैनिक लग्न सारणी–समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)–जम्मू (Jammu) जनवरी–फरवरी (Jan.-Feb.)

ता.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.
1	8 28	10 08	11 30	12 51	14 22	16 15	18 30	20 53	23 15	1 37	4 00	6 21
2	8 24	10 04	11 26	12 47	14 18	16 11	18 27	20 49	23 13	1 34	3 56	6 17
3	8 20	10 00	11 22	12 43	14 14	16 07	18 23	20 45	23 09	1 30	3 52	6 13
4	8 16	9 56	11 18	12 39	14 10	16 03	18 19	20 41	23 05	1 26	3 48	6 09
5	8 12	9 52	11 14	12 35	14 06	15 59	18 15	20 37	23 01	1 22	3 44	6 05
6	8 08	9 48	11 10	12 31	14 02	15 55	18 11	20 34	22 57	1 18	3 40	6 01
7	8 04	9 44	11 06	12 27	13 58	15 51	18 07	20 30	22 53	1 14	3 36	5 57
8	8 00	9 40	11 02	12 23	13 54	15 47	18 03	20 26	22 49	1 10	3 32	5 53
9	7 56	9 36	10 58	12 19	13 50	15 43	17 59	20 22	22 45	1 06	3 28	5 49
10	7 52	9 32	10 54	12 15	13 46	15 39	17 55	20 18	22 41	1 02	3 24	5 45
11	7 48	9 28	10 50	12 11	13 42	15 35	17 51	20 14	22 37	0 58	3 20	5 41
12	7 44	9 24	10 46	12 07	13 38	15 31	17 47	20 10	22 33	0 54	3 16	5 37
13	7 40	9 20	10 42	12 03	13 34	15 27	17 43	20 06	22 29	0 50	3 12	5 33
14	7 36	9 16	10 38	11 59	13 30	15 23	17 39	20 02	22 25	0 46	3 08	5 29
15	7 32	9 12	10 34	11 55	13 26	15 19	17 35	19 58	22 21	0 42	3 04	5 25
16	7 28	9 09	10 30	11 52	13 23	15 16	17 32	19 54	22 18	0 39	3 00	5 21
17	7 24	9 05	10 26	11 48	13 19	15 12	17 28	19 50	22 14	0 35	2 56	5 17
18	7 20	9 01	10 23	11 44	13 15	15 08	17 24	19 46	22 10	0 31	2 52	5 13
19	7 16	8 57	10 19	11 40	13 11	15 04	17 20	19 42	22 06	0 27	2 48	5 10
20	7 12	8 53	10 15	11 36	13 07	15 00	17 16	19 38	22 02	0 23	2 44	5 06
21	7 08	8 49	10 11	11 32	13 03	14 56	17 12	19 34	21 58	0 19	2 40	5 02
22	7 05	8 45	10 07	11 28	12 59	14 52	17 08	19 30	21 54	0 15	2 36	4 58
23	7 01	8 41	10 03	11 24	12 55	14 48	17 04	19 26	21 50	0 11	2 32	4 54
24	6 57	8 37	9 59	11 20	12 51	14 44	17 00	19 22	21 46	0 07	2 29	4 50
25	6 53	8 33	9 55	11 16	12 47	14 40	16 56	19 18	21 42	0 03	2 25	4 46
26	6 49	8 30	9 51	11 13	12 44	14 37	16 53	19 14	21 39	23 59	2 21	4 42
27	6 45	8 26	9 47	11 09	12 40	14 33	16 49	19 11	21 35	23 55	2 17	4 38
28	6 41	8 22	9 43	11 05	12 36	14 29	16 45	19 07	21 31	23 51	2 13	4 34
29	6 37	8 18	9 40	11 01	12 32	14 25	16 41	19 03	21 27	23 47	2 09	4 30
30	6 33	8 14	9 36	10 57	12 28	14 21	16 37	18 59	21 23	23 43	2 05	4 27
31	6 30	8 10	9 32	10 53	12 24	14 17	16 33	18 55	21 19	23 39	2 01	4 23
फर.	6 26	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

फर.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
1	8 06	9 28	10 49	12 20	14 13	16 28	18 51	21 13	23 35	1 57	4 19	6 22
2	8 02	9 24	10 45	12 16	14 09	16 24	18 47	21 09	23 31	1 53	4 15	6 18
3	7 58	9 20	10 41	12 12	14 05	16 20	18 43	21 05	23 27	1 49	4 11	6 14
4	7 54	9 16	10 37	12 08	14 01	16 16	18 40	21 01	23 23	1 45	4 07	6 10
5	7 50	9 12	10 33	12 04	13 57	16 12	18 36	20 57	23 19	1 41	4 03	6 06
6	7 46	9 08	10 29	12 00	13 52	16 08	18 32	20 53	23 15	1 38	3 59	6 02
7	7 42	9 04	10 25	11 56	13 49	16 04	18 28	20 49	23 11	1 34	3 55	5 58
8	7 38	9 00	10 21	11 52	13 45	16 00	18 24	20 45	23 07	1 30	3 51	5 54
9	7 34	8 56	10 17	11 48	13 41	15 56	18 21	20 42	23 03	1 26	3 47	5 50
10	7 30	8 52	10 13	11 44	13 37	15 52	18 17	20 38	22 59	1 22	3 43	5 46
11	7 26	8 48	10 09	11 40	13 33	15 48	18 13	20 34	22 55	1 18	3 39	5 42
12	7 22	8 44	10 05	11 36	13 29	15 44	18 09	20 31	22 51	1 14	3 35	5 38
13	7 19	8 40	10 01	11 32	13 25	15 40	18 05	20 27	22 47	1 10	3 31	5 34
14	7 15	8 36	9 57	11 28	13 21	15 36	18 01	20 23	22 43	1 06	3 27	5 30
15	7 11	8 32	9 53	11 24	13 17	15 32	17 57	20 19	22 39	1 02	3 23	5 26
16	7 07	8 29	9 49	11 20	13 13	15 28	17 53	20 15	22 35	24 58	3 19	5 22
17	7 03	8 25	9 45	11 16	13 09	15 24	17 49	20 11	22 31	24 54	3 15	5 19
18	6 59	8 21	9 41	11 12	13 05	15 20	17 45	20 07	22 27	24 50	3 11	5 15
19	6 55	8 17	9 37	11 08	13 01	15 16	17 41	20 03	22 23	24 46	3 07	5 11
20	6 51	8 14	9 34	11 05	12 57	15 12	17 37	19 59	22 19	24 42	3 03	5 07
21	6 47	8 10	9 30	11 01	12 54	15 08	17 33	19 55	22 15	24 38	3 00	5 03
22	6 43	8 06	9 26	10 57	12 50	15 05	17 29	19 51	22 11	24 34	2 56	4 59
23	6 39	8 02	9 22	10 53	12 46	15 01	17 25	19 47	22 07	24 31	2 52	4 55
24	6 35	7 58	9 18	10 49	12 42	14 57	17 21	19 43	22 03	24 27	2 48	4 51
25	6 31	7 54	9 14	10 45	12 38	14 53	17 17	19 39	21 59	24 23	2 44	4 47
26	6 27	7 50	9 10	10 41	12 34	14 49	17 13	19 35	21 55	24 19	2 40	4 43
27	6 23	7 46	9 06	10 37	12 30	14 45	17 09	19 31	21 51	24 15	2 36	4 39
28	6 20	7 42	9 02	10 33	12 26	14 41	17 05	19 27	21 47	24 11	2 32	4 34

दैनिक लग्न सारणी—समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) मार्च-अप्रैल (Mar.-Apr.)

मार्च

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 38	8 58	10 29	12 22	14 37	17 01	19 23	21 43	24 07	2 28	4 31	6 12
2	7 34	8 54	10 25	12 18	14 33	16 58	19 20	21 40	24 03	2 24	4 27	6 08
3	7 30	8 51	10 22	12 15	14 30	16 54	19 16	21 36	23 59	2 20	4 23	6 04
4	7 26	8 47	10 18	12 11	14 26	16 50	19 12	21 32	23 55	2 16	4 19	6 00
5	7 22	8 43	10 14	12 07	14 22	15 46	19 08	21 28	23 52	2 12	4 16	5 56
6	7 18	8 39	10 10	12 03	14 19	15 42	19 04	21 24	23 48	2 08	4 12	5 52
7	7 14	8 35	10 06	11 59	14 15	16 38	19 00	21 21	23 44	2 04	4 08	5 48
8	7 10	8 31	10 02	11 55	14 11	16 34	18 56	21 17	23 40	2 00	4 04	5 44
9	7 06	8 27	9 58	11 51	14 07	16 31	18 53	21 13	23 36	1 57	4 00	5 40
10	7 02	8 23	9 54	11 47	14 03	16 27	18 49	21 09	23 32	1 53	3 56	5 36
11	6 58	8 19	9 50	11 43	13 59	16 23	18 45	21 05	23 28	1 49	3 52	5 32
12	6 54	8 15	9 46	11 39	13 55	16 19	18 41	21 01	23 25	1 45	3 48	5 29
13	6 51	8 11	9 42	11 35	13 51	16 15	18 37	20 57	23 21	1 42	3 45	5 25
14	6 47	8 07	9 38	11 31	13 47	16 11	18 33	20 53	23 17	1 38	3 41	5 21
15	6 43	8 03	9 34	11 27	13 43	16 07	18 29	20 49	23 13	1 34	3 37	5 17
16	6 39	7 59	9 30	11 23	13 39	16 03	18 25	20 45	23 09	1 30	3 33	5 13
17	6 35	7 55	9 26	11 19	13 35	15 59	18 21	20 41	23 05	1 26	3 29	5 09
18	6 31	7 51	9 22	11 15	13 31	15 55	18 17	20 37	23 01	1 22	3 25	5 05
19	6 27	7 47	9 18	11 11	13 27	15 51	18 13	20 33	22 57	1 18	3 21	5 01
20	6 23	7 43	9 14	11 07	13 24	15 47	18 09	20 29	22 53	1 14	3 17	4 57
21	6 19	7 39	9 10	11 03	13 20	15 43	18 05	20 25	22 49	1 10	3 13	4 53
22	6 15	7 35	9 06	10 59	13 16	15 39	18 01	20 21	22 45	1 06	3 09	4 49
23	6 11	7 32	9 02	10 56	13 12	15 35	17 57	20 17	22 41	1 02	3 05	4 45
24	6 07	7 28	8 58	10 52	13 08	15 31	17 53	20 13	22 37	0 58	3 01	4 42
25	6 03	7 24	8 54	10 48	13 04	15 27	17 49	20 09	22 33	0 54	2 57	4 38
26	5 59	7 20	8 50	10 44	13 00	15 23	17 45	20 06	22 29	0 50	2 53	4 34
27	5 55	7 16	8 47	10 40	12 56	15 19	17 41	20 02	22 25	0 46	2 49	4 30
28	5 51	7 12	8 43	10 36	12 52	15 15	17 37	19 58	22 21	0 41	2 46	4 26
29	5 47	7 08	8 39	10 32	12 48	15 11	17 33	19 54	22 17	0 38	2 42	4 22
30	5 44	7 04	8 35	10 28	12 44	15 07	17 29	19 50	22 13	0 34	2 38	4 18
31	5 40	7 00	8 31	10 24	12 40	15 03	17 25	19 46	22 09	0 30	2 34	4 14
अप्रै.	5 36	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

अप्रै.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
1	6 56	8 27	10 20	12 36	14 59	17 21	19 42	22 05	00 26	2 30	4 10	5 32
2	6 52	8 23	10 16	12 32	14 55	17 17	19 38	22 01	00 22	2 26	4 06	5 29
3	6 48	8 19	10 12	12 28	14 51	17 13	19 34	21 57	00 18	2 22	4 02	5 25
4	6 44	8 15	10 08	12 24	14 47	17 09	19 31	21 53	00 14	2 18	3 58	5 21
5	6 40	8 11	10 04	12 21	14 43	17 05	19 27	21 50	00 11	2 14	3 54	5 17
6	6 37	8 08	10 00	12 17	14 39	17 01	19 23	21 46	24 07	2 10	3 50	5 13
7	6 33	8 04	9 57	12 13	14 35	16 58	19 19	21 40	24 03	2 06	3 46	5 09
8	6 29	8 00	9 53	12 09	14 31	16 54	19 15	21 38	23 59	2 02	3 42	5 05
9	6 25	7 56	9 49	12 05	14 27	16 50	19 11	21 34	23 55	1 58	3 39	5 02
10	6 21	7 52	9 45	12 01	14 24	16 46	19 07	21 30	23 51	1 54	3 35	4 58
11	6 17	7 48	9 41	11 57	14 20	16 42	19 03	21 26	23 47	1 50	3 31	4 54
12	6 13	7 44	9 37	11 53	14 16	16 38	18 59	21 22	23 43	1 46	3 27	4 50
13	6 09	7 40	9 33	11 49	14 12	16 34	18 55	21 18	23 39	1 42	3 23	4 46
14	6 05	7 36	9 29	11 45	14 08	16 30	19 51	21 14	23 35	1 38	3 20	4 42
15	6 01	7 32	9 25	11 42	14 04	16 26	18 47	21 10	23 31	1 34	3 16	4 38
16	5 57	7 28	9 21	11 38	14 00	16 22	18 43	21 06	23 27	1 30	3 12	4 34
17	5 53	7 24	9 17	11 34	13 56	16 19	18 39	21 02	23 23	1 26	3 08	4 30
18	5 49	7 20	9 14	11 30	13 53	16 15	18 36	20 58	23 19	1 22	3 04	4 26
19	5 45	7 16	9 10	11 26	13 49	16 11	18 32	20 54	23 15	1 18	3 00	4 22
20	5 41	7 12	9 06	11 22	13 45	16 07	18 28	20 50	23 11	1 14	2 56	4 18
21	5 37	7 08	9 02	11 18	13 41	16 03	18 24	20 46	23 08	1 10	2 52	4 14
22	5 33	7 04	8 58	11 14	13 37	15 59	18 20	20 42	23 04	1 06	2 48	4 10
23	5 29	7 00	8 54	11 10	13 33	15 55	18 16	20 39	23 00	1 02	2 44	4 06
24	5 25	6 56	8 50	11 06	13 29	15 51	18 12	20 35	22 56	00 58	2 40	4 02
25	5 21	6 52	8 46	11 02	13 25	15 47	18 08	20 31	22 52	00 54	2 36	3 58
26	5 17	6 48	8 42	10 58	13 21	15 43	18 04	20 27	22 48	00 50	2 32	3 54
27	5 13	6 45	8 38	10 54	13 17	15 39	18 00	20 23	22 44	00 46	2 28	3 50
28	5 09	6 41	8 34	10 50	13 13	15 35	17 56	20 19	22 40	00 42	2 24	3 46
29	5 05	6 37	8 30	10 46	13 09	15 31	17 52	20 15	22 36	00 38	2 20	3 42
30	5 01	6 33	8 26	10 42	13 05	15 28	17 48	20 11	22 32	00 34	2 16	3 38
मई	4 57	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी—समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) मई-जून (May-June)

मई	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 29	8 22	10 38	13 01	15 24	17 44	20 07	22 28	00 31	2 12	3 34	4 54
2	6 25	8 18	10 34	12 58	15 21	17 40	20 03	22 24	00 27	2 08	3 30	4 50
3	6 21	8 14	10 30	12 54	15 17	17 37	19 59	22 20	00 24	2 04	3 27	4 46
4	6 17	8 10	10 26	12 50	15 13	17 33	19 55	22 16	00 20	2 00	3 23	4 42
5	6 13	8 06	10 22	12 46	15 09	17 29	19 51	22 12	00 16	1 56	3 19	4 38
6	6 09	8 02	10 18	12 42	15 05	17 25	19 47	22 08	00 12	1 52	3 15	4 34
7	6 05	7 58	10 14	12 38	15 01	17 21	19 43	22 04	24 08	1 48	3 11	4 30
8	6 01	7 54	10 10	12 34	14 57	17 17	19 39	22 00	24 04	1 44	3 07	4 26
9	5 57	7 50	10 06	12 30	14 53	17 13	19 35	21 56	24 00	1 40	3 03	4 22
10	5 53	7 46	10 02	12 26	14 49	17 09	19 31	21 52	23 56	1 36	2 59	4 18
11	5 49	7 43	9 58	12 22	14 45	17 05	19 27	21 48	23 52	1 32	2 55	4 14
12	5 45	7 39	9 54	12 19	14 41	17 01	19 23	21 44	23 48	1 28	2 51	4 10
13	5 41	7 35	9 50	12 15	14 37	16 57	19 19	21 40	23 44	1 24	2 47	4 06
14	5 37	7 30	9 46	12 09	14 32	16 53	19 15	21 36	23 40	1 20	2 43	4 02
15	5 33	7 26	9 42	12 05	14 28	16 49	19 11	21 32	23 36	1 16	2 39	3 58
16	5 29	7 22	9 38	12 01	14 24	16 45	19 07	21 28	23 32	1 12	2 35	3 54
17	5 25	7 18	9 34	11 57	14 20	16 41	19 03	21 24	23 28	1 08	2 31	3 50
18	5 21	7 14	9 30	11 53	14 16	16 37	18 59	21 20	23 24	1 04	2 27	3 46
19	5 17	7 10	9 26	11 49	14 12	16 33	18 55	21 16	23 20	1 00	2 23	3 42
20	5 13	7 06	9 22	11 45	14 08	16 29	18 51	21 12	23 16	24 56	2 20	3 38
21	5 09	7 02	9 18	11 41	14 04	16 25	18 47	21 08	23 12	24 52	2 16	3 34
22	5 05	6 59	9 14	11 37	14 00	16 21	18 43	21 04	23 08	24 48	2 12	3 30
23	5 01	6 55	9 10	11 33	13 56	16 17	18 39	21 00	23 04	24 44	2 08	3 26
24	4 57	6 51	9 06	11 30	13 52	16 14	18 36	20 57	23 00	24 41	2 04	3 22
25	4 53	6 47	9 02	11 26	13 48	16 10	18 32	20 53	22 57	24 37	2 00	3 18
26	4 49	6 44	8 59	11 22	13 44	16 06	18 28	20 49	22 53	24 33	1 56	3 14
27	4 45	6 40	8 55	11 18	13 40	16 02	18 24	20 45	22 49	24 29	1 52	3 10
28	4 41	6 36	8 51	11 14	13 36	15 58	18 20	20 41	22 45	24 26	1 48	3 07
29	4 37	6 32	8 48	11 10	13 32	15 54	18 16	20 37	22 41	24 22	1 44	3 03
30	4 34	6 28	8 44	11 06	13 28	15 50	18 12	20 33	22 38	24 18	1 40	2 59
31	4 30	6 24	8 40	11 02	13 24	15 46	18 08	20 29	22 34	24 14	1 36	2 55
जून	4 26	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

जून	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
1	6 21	8 36	10 59	13 21	15 42	18 05	20 26	22 30	24 10	1 32	2 52	4 23
2	6 17	8 32	10 55	13 16	15 38	18 01	20 22	22 26	24 06	1 28	2 48	4 19
3	6 13	8 28	10 51	13 12	15 34	17 57	20 18	22 22	24 02	1 24	2 44	4 15
4	6 09	8 24	10 47	13 08	15 30	17 53	20 14	22 18	23 58	1 20	2 40	4 11
5	6 05	8 20	10 43	13 04	15 26	17 49	20 10	22 14	23 54	1 16	2 36	4 07
6	6 01	8 16	10 39	13 00	15 22	17 45	20 06	22 10	23 50	1 12	2 32	4 03
7	5 57	8 12	10 35	12 56	15 18	17 41	20 02	22 06	23 46	1 08	2 28	3 59
8	5 54	8 08	10 31	12 52	15 14	17 37	19 58	22 03	23 42	1 04	2 24	3 55
9	5 50	8 04	10 27	12 48	15 11	17 33	19 54	21 59	23 38	1 00	2 20	3 51
10	5 46	8 00	10 23	12 45	15 07	17 29	19 50	21 55	23 34	0 57	2 16	3 47
11	5 42	7 56	10 19	12 41	15 03	17 25	19 46	21 51	23 30	0 53	2 12	3 43
12	5 38	7 52	10 15	12 37	14 59	17 21	19 42	21 47	23 26	0 49	2 08	3 39
13	5 34	7 48	10 11	12 33	14 55	17 17	19 38	21 43	23 22	0 45	2 04	3 35
14	5 30	7 44	10 07	12 29	14 51	17 13	19 34	21 39	23 18	0 41	2 00	3 31
15	5 26	7 40	10 03	12 25	14 47	17 09	19 30	21 35	23 14	0 37	1 56	3 27
16	5 22	7 36	9 59	12 21	14 43	17 05	19 26	21 31	23 10	0 33	1 52	3 23
17	5 18	7 32	9 55	12 17	14 39	17 01	19 22	21 27	23 06	0 29	1 48	3 19
18	5 14	7 29	9 51	12 13	14 35	16 57	19 18	21 23	23 03	0 25	1 44	3 15
19	5 10	7 25	9 47	12 10	14 31	16 53	19 14	21 19	22 59	0 21	1 40	3 11
20	5 06	7 21	9 43	12 06	14 27	16 49	19 10	21 15	22 55	0 17	1 36	3 07
21	5 02	7 17	9 40	12 02	14 23	16 45	19 06	21 11	22 51	0 13	1 32	3 03
22	4 58	7 14	9 36	11 58	14 19	16 41	19 02	21 07	22 47	0 09	1 28	2 59
23	4 54	7 10	9 32	11 54	14 15	16 37	18 58	21 03	22 43	0 05	1 24	2 55
24	4 50	7 06	9 28	11 50	14 11	16 33	18 54	20 59	22 39	0 02	1 21	2 51
25	4 47	7 02	9 24	11 46	14 07	16 30	18 51	20 55	22 35	23 58	1 17	2 47
26	4 43	6 58	9 20	11 42	14 03	16 26	18 47	20 51	22 31	23 54	1 12	2 44
27	4 39	6 54	9 16	11 38	13 59	16 22	18 43	20 47	22 27	23 50	1 09	2 40
28	4 35	6 50	9 13	11 34	13 56	16 18	18 39	20 43	22 23	23 46	1 05	2 36
29	4 31	6 46	9 09	11 31	13 52	16 14	18 35	20 40	22 19	23 42	1 01	2 32
30	4 27	6 42	9 05	11 27	13 48	16 11	18 32	20 36	22 16	23 38	24 58	2 29
जुला	4 23	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी—समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) जुलाई-अग. (July-Aug.)

जुलाई

ता.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.
1	6 38	9 01	11 23	13 44	16 07	18 28	20 32	22 12	23 34	24 54	2 25	4 19
2	6 34	8 57	11 19	13 40	16 03	18 24	20 28	22 08	23 30	24 50	2 21	4 15
3	6 30	8 53	11 15	13 36	15 59	18 20	20 24	22 04	23 26	24 46	2 17	4 11
4	6 26	8 50	11 11	13 32	15 55	18 16	20 20	22 00	23 22	24 42	2 13	4 07
5	6 22	8 46	11 07	13 28	15 51	18 12	20 16	21 56	23 18	24 38	2 09	4 03
6	6 19	8 42	11 03	13 24	15 47	18 08	20 12	21 52	23 14	24 34	2 05	3 59
7	6 15	8 38	10 59	13 20	15 43	18 05	20 08	21 48	23 10	24 30	2 01	3 55
8	6 11	8 34	10 56	13 17	15 39	18 01	20 04	21 44	23 06	24 27	1 57	3 51
9	6 08	8 30	10 52	13 13	15 35	17 57	20 00	21 40	23 02	24 23	1 54	3 47
10	6 04	8 26	10 48	13 09	15 32	17 53	19 56	21 36	22 58	24 19	1 50	3 43
11	6 00	8 22	10 44	13 05	15 28	17 49	19 52	21 32	22 54	24 15	1 46	3 39
12	5 56	8 18	10 40	13 01	15 24	17 45	19 48	21 28	22 50	24 11	1 42	3 35
13	5 52	8 14	10 36	12 58	15 20	17 41	19 44	21 24	22 46	24 07	1 38	3 31
14	5 48	8 10	10 33	12 54	15 16	17 37	19 40	21 20	22 42	24 03	1 34	3 27
15	5 44	8 07	10 29	12 50	15 12	17 33	19 37	21 17	22 38	24 00	1 31	3 23
16	5 40	8 03	10 25	12 46	15 08	17 29	19 33	21 13	22 34	23 56	1 27	3 19
17	5 36	7 59	10 21	12 42	15 04	17 25	19 29	21 09	22 30	23 52	1 23	3 15
18	5 32	7 55	10 17	12 38	15 00	17 21	19 25	21 05	22 27	23 48	1 19	3 11
19	5 28	7 51	10 13	12 34	14 57	17 17	19 21	21 01	22 23	23 44	1 15	3 07
20	5 24	7 47	10 09	12 30	14 53	17 13	19 17	20 57	22 19	23 40	1 11	3 03
21	5 20	7 43	10 05	12 26	14 49	17 10	19 13	20 53	22 15	23 36	1 07	2 59
22	5 16	7 39	10 01	12 22	14 45	17 06	19 09	20 49	22 11	23 32	1 03	2 55
23	5 12	7 35	9 57	12 18	14 41	17 02	19 05	20 45	22 07	23 28	24 59	2 52
24	5 08	7 31	9 53	12 14	14 37	16 58	19 01	20 41	22 04	23 24	24 55	2 48
25	5 04	7 27	9 49	12 11	14 33	16 54	18 58	20 38	22 00	23 20	24 51	2 44
26	5 00	7 23	9 45	12 07	14 29	16 50	18 54	20 34	21 56	23 16	24 47	2 40
27	4 56	7 19	9 41	12 03	14 25	16 46	18 50	20 30	21 52	23 12	24 43	2 36
28	4 52	7 15	9 37	11 59	14 21	16 42	18 46	20 26	21 48	23 08	24 39	2 33
29	4 48	7 11	9 33	11 55	14 17	16 38	18 42	20 22	21 44	23 04	24 36	2 29
30	4 44	7 07	9 29	11 51	14 13	16 34	18 38	20 18	21 40	23 00	24 32	2 25
31	4 40	7 03	9 25	11 47	14 10	16 31	18 34	20 14	21 36	22 56	24 28	2 21
अग.	4 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अग.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
1	6 59	9 21	11 43	14 06	16 27	18 30	20 10	21 32	22 53	24 24	2 17	4 32
2	6 55	9 17	11 39	14 02	16 24	18 27	20 06	21 28	22 49	24 20	2 13	4 28
3	6 51	9 13	11 35	13 59	16 20	18 23	20 02	21 24	22 45	24 16	2 09	4 24
4	6 47	9 09	11 31	13 55	16 16	18 19	19 59	21 20	22 41	24 12	2 05	4 20
5	6 43	9 06	11 27	13 51	16 12	18 15	19 55	21 16	22 37	24 09	2 01	4 16
6	6 39	9 02	11 23	13 47	16 08	18 11	19 51	21 12	22 34	24 05	1 57	4 12
7	6 35	8 58	11 19	13 43	16 04	18 07	19 47	21 09	22 30	24 01	1 53	4 09
8	6 32	8 54	11 15	13 39	16 00	18 03	19 43	21 05	22 26	23 57	1 49	4 05
9	6 28	8 51	11 11	13 35	15 56	18 00	19 39	21 01	22 22	23 53	1 45	4 01
10	6 24	8 48	11 07	13 31	15 52	17 56	19 36	20 57	22 18	23 49	1 42	3 57
11	6 20	8 44	11 03	13 27	15 48	17 52	19 32	20 53	22 14	23 45	1 38	3 54
12	6 16	8 40	10 59	13 23	15 44	17 48	19 28	20 49	22 10	23 41	1 34	3 50
13	6 12	8 36	10 56	13 19	15 40	17 44	19 24	20 45	22 06	23 37	1 31	3 46
14	6 08	8 32	10 52	13 16	15 36	17 40	19 20	20 42	22 02	23 33	1 27	3 42
15	6 04	8 28	10 48	13 12	15 33	17 36	19 16	20 38	21 59	23 30	1 23	3 38
16	6 00	8 24	10 44	13 08	15 29	17 32	19 12	20 34	21 55	23 26	1 19	3 35
17	5 56	8 20	10 40	13 04	15 25	17 28	19 08	20 30	21 51	23 22	1 15	3 31
18	5 52	8 16	10 36	13 00	15 21	17 24	19 04	20 26	21 47	23 18	1 11	3 27
19	5 48	8 12	10 32	12 56	15 17	17 20	19 00	20 22	21 43	23 14	1 07	3 23
20	5 44	8 08	10 28	12 52	15 13	17 16	18 56	20 18	21 39	23 10	1 03	3 19
21	5 40	8 04	10 24	12 48	15 09	17 12	18 52	20 14	21 35	23 06	0 59	3 15
22	5 36	8 00	10 20	12 44	15 05	17 08	18 48	20 10	21 31	23 02	0 55	3 11
23	5 33	7 56	10 16	12 40	15 01	17 04	18 44	20 06	21 27	22 58	0 51	3 07
24	5 29	7 52	10 13	12 36	14 57	17 00	18 40	20 02	21 23	22 54	0 47	3 03
25	5 25	7 48	10 09	12 32	14 53	16 56	18 36	19 58	21 19	22 50	0 43	2 59
26	5 21	7 44	10 05	12 28	14 49	16 52	18 32	19 54	21 15	22 46	0 40	2 55
27	5 17	7 40	10 01	12 25	14 46	16 49	18 29	19 51	21 12	22 42	0 36	2 51
28	5 13	7 36	9 57	12 21	14 42	16 45	18 25	19 47	21 08	22 38	0 32	2 47
29	5 09	7 32	9 53	12 17	14 38	16 41	18 21	19 43	21 04	22 34	0 28	2 43
30	5 05	7 28	9 49	12 13	14 34	16 37	18 17	19 39	21 00	22 30	0 24	2 39
31	5 01	7 24	9 45	12 09	14 30	16 33	18 13	19 35	20 56	22 26	0 20	2 35
सितं	4 57	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी—समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) सितं.-अक्तू. (Sept.-Oct.)

ता.	सिंह		कन्या		तुला		वृश्चिक		धनु		मकर		कुम्भ		मीन		मेष		वृष		मिथुन		कर्क	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1	7	19	9	41	12	05	14	26	16	29	18	09	19	31	20	52	22	22	0	16	2	31	4	53
2	7	15	9	37	12	01	14	22	16	25	18	05	19	27	20	48	22	18	0	12	2	27	4	49
3	7	11	9	33	11	57	14	18	16	21	18	01	19	23	20	44	22	14	0	08	2	24	4	45
4	7	07	9	30	11	53	14	14	16	17	17	57	19	19	20	40	22	10	0	04	2	20	4	41
5	7	03	9	26	11	49	14	10	16	13	17	53	19	15	20	36	22	06	24	00	2	16	4	38
6	6	59	9	22	11	45	14	06	16	09	17	49	19	11	20	32	22	02	23	56	2	12	4	34
7	6	55	9	18	11	41	14	02	16	05	17	45	19	07	20	28	21	58	23	52	2	08	4	30
8	6	51	9	14	11	37	13	58	16	01	17	41	19	03	20	24	21	54	23	48	2	04	4	26
9	6	47	9	10	11	33	13	54	15	57	17	37	19	00	20	20	21	50	23	44	2	00	4	22
10	6	43	9	06	11	29	13	50	15	53	17	33	18	56	20	16	21	46	23	40	1	56	4	18
11	6	39	9	02	11	25	13	46	15	49	17	29	18	52	20	12	21	42	23	36	1	52	4	14
12	6	35	8	58	11	21	13	42	15	45	17	25	18	48	20	08	21	38	23	32	1	48	4	10
13	6	31	8	54	11	17	13	38	15	41	17	21	18	44	20	04	21	34	23	28	1	44	4	06
14	6	27	8	50	11	13	13	34	15	37	17	17	18	40	20	00	21	30	23	24	1	40	4	02
15	6	23	8	46	11	09	13	30	15	33	17	13	18	36	19	56	21	26	23	20	1	36	3	58
16	6	19	8	42	11	05	13	26	15	29	17	09	18	32	19	52	21	22	23	16	1	32	3	54
17	6	15	8	38	11	01	13	22	15	25	17	05	18	28	19	48	21	18	23	12	1	28	3	50
18	6	11	8	34	10	57	13	18	15	21	17	01	18	24	19	44	21	14	23	08	1	24	3	46
19	6	07	8	30	10	53	13	14	15	17	16	57	18	20	19	40	21	10	23	04	1	20	3	42
20	6	03	8	26	10	49	13	10	15	13	16	53	18	16	19	36	21	06	23	00	1	16	3	38
21	5	59	8	22	10	45	13	06	15	09	16	49	18	12	19	32	21	02	22	56	1	12	3	34
22	5	55	8	18	10	41	13	02	15	05	16	45	18	08	19	28	20	58	22	52	1	08	3	30
23	5	51	8	14	10	37	12	58	15	01	16	41	18	04	19	24	20	54	22	48	1	04	3	26
24	5	47	8	10	10	33	12	54	14	57	16	37	18	00	19	20	20	50	22	44	1	00	3	22
25	5	43	8	06	10	29	12	50	14	53	16	33	17	56	19	16	20	46	22	40	0	56	3	18
26	5	39	8	02	10	25	12	46	14	49	16	29	17	52	19	12	20	42	22	36	0	52	3	14
27	5	35	7	58	10	21	12	32	14	45	16	25	17	48	19	08	20	38	22	32	0	48	3	10
28	5	31	7	54	10	17	12	38	14	41	16	21	17	44	19	04	20	34	22	28	0	44	3	06
29	5	27	7	50	10	13	12	34	14	37	16	17	17	40	19	00	20	30	22	24	0	40	3	02
30	5	23	7	46	10	10	12	31	14	34	16	14	17	36	18	57	20	27	22	21	0	36	2	58
अक्तू	5	20	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अक्तू	कन्या		तुला		वृश्चिक		धनु		मकर		कुम्भ		मीन		मेष		वृष		मिथुन		कर्क		सिंह	
1	7	42	10	06	12	27	14	30	16	10	17	32	18	53	20	23	22	17	0	32	2	55	5	16
2	7	38	10	02	12	23	14	26	16	06	17	28	18	49	20	19	22	13	0	28	2	51	5	12
3	7	34	9	59	12	19	14	22	16	02	17	24	18	45	20	15	22	09	0	24	2	47	5	08
4	7	30	9	55	12	15	14	18	15	58	17	20	18	41	20	11	22	05	0	21	2	43	5	05
5	7	26	9	51	12	11	14	14	15	54	17	16	18	37	20	08	22	01	0	17	2	40	5	01
6	7	22	9	47	12	07	14	10	15	50	17	12	18	33	20	04	21	57	0	13	2	36	4	58
7	7	18	9	43	12	03	14	06	15	46	17	08	18	29	20	00	21	53	0	09	2	32	4	54
8	7	14	9	39	11	59	14	02	15	42	17	04	18	25	19	56	21	49	0	05	2	28	4	50
9	7	10	9	35	11	55	13	58	15	38	17	01	18	21	19	52	21	45	0	01	2	24	4	46
10	7	06	9	31	11	51	13	54	15	34	16	57	18	17	19	48	21	41	23	57	2	20	4	42
11	7	02	9	27	11	47	13	50	15	30	16	53	18	13	19	44	21	37	23	53	2	16	4	38
12	6	58	9	23	11	43	13	46	15	26	16	49	18	09	19	40	21	33	23	49	2	12	4	34
13	6	55	9	19	11	39	13	42	15	22	16	45	18	05	19	36	21	29	23	45	2	08	4	30
14	6	51	9	15	11	35	13	38	15	18	16	41	18	01	19	32	21	25	23	41	2	04	4	26
15	6	47	9	11	11	31	13	34	15	14	16	37	17	57	19	28	21	21	23	37	2	00	4	22
16	6	44	9	07	11	27	13	30	15	10	16	33	17	53	19	24	21	17	23	33	1	56	4	18
17	6	40	9	03	11	23	13	26	15	06	16	29	17	49	19	20	21	13	23	29	1	52	4	14
18	6	36	8	59	11	19	13	22	15	02	16	25	17	45	19	16	21	09	23	25	1	48	4	10
19	6	32	8	55	11	15	13	18	14	58	16	21	17	41	19	12	21	05	23	21	1	44	4	07
20	6	28	8	51	11	11	13	14	14	54	16	17	17	37	19	08	21	01	23	17	1	40	4	03
21	6	24	8	47	11	07	13	10	14	50	16	13	17	33	19	04	20	57	23	13	1	36	3	59
22	6	20	8	43	11	03	13	06	14	46	16	09	17	29	19	00	20	53	23	09	1	32	3	55
23	6	16	8	39	10	59	13	02	14	42	16	05	17	25	18	56	20	49	23	05	1	28	3	51
24	6	12	8	35	10	55	12	58	14	38	16	01	17	21	18	52	20	45	23	01	1	24	3	47
25	6	09	8	32	10	52	12	54	14	35	15	58	17	18	18	49	20	42	22	58	1	20	3	44
26	6	05	8	28	10	48	12	51	14	31	15	54	17	14	18	45	20	38	22	54	1	16	3	40
27	6	01	8	24	10	44	12	47	14	27	15	50	17	10	18	41	20	34	22	50	1	12	3	36
28	5	57	8	20	10	40	12	43	14	23	15	46	17	06	18	37	20	30	22	46	1	09	3	32
29	5	53	8	16	10	36	12	39	14	19	15	42	17	02	18	33	20	26	22	42	1	05	3	28
30	5	49	8	12	10	32	12	36	14	15	15	38	16	58	18	29	20	22	22	38	1	01	3	24
31	5	45	8	08	10	28	12	32	14	11	15	34	16	54	18	25	20	18	22	34	24	57	3	20
नव.	5	41	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी–समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) नवं.-दिसं. (Nov.-Dec.)

नवम्बर ता.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.
1	8 04	10 25	12 28	14 08	15 30	16 51	18 21	20 15	22 30	24 53	3 16	5 37
2	8 00	10 21	12 24	14 04	15 26	16 47	18 17	20 11	22 26	24 49	3 12	5 34
3	7 56	10 17	12 20	14 00	15 22	16 43	18 14	20 07	22 23	24 46	3 08	5 30
4	7 52	10 13	12 16	13 56	15 18	16 39	18 10	20 03	22 19	24 42	3 04	5 26
5	7 48	10 09	12 12	13 52	15 14	16 35	18 06	19 59	22 15	24 38	3 00	5 22
6	7 44	10 05	12 08	13 48	15 10	16 31	18 02	19 55	22 11	24 35	2 56	5 18
7	7 41	10 01	12 04	13 44	15 06	16 27	17 58	19 51	22 07	24 31	2 53	5 14
8	7 37	9 57	12 00	13 40	15 02	16 23	17 54	19 47	22 03	24 27	2 49	5 10
9	7 33	9 53	11 56	13 36	14 58	16 19	17 50	19 43	21 59	24 23	2 45	5 06
10	7 29	9 49	11 52	13 32	14 54	16 15	17 46	19 39	21 55	24 19	2 41	5 02
11	7 25	9 45	11 48	13 28	14 50	16 11	17 42	19 35	21 51	24 15	2 37	4 58
12	7 21	9 41	11 44	13 24	14 46	16 07	17 38	19 31	21 47	24 11	2 33	4 54
13	7 17	9 37	11 40	13 20	14 42	16 03	17 34	19 27	21 43	24 07	2 29	4 50
14	7 13	9 33	11 36	13 16	14 38	15 59	17 30	19 23	21 39	24 03	2 25	4 46
15	7 09	9 29	11 32	13 12	14 34	15 55	17 26	19 19	21 35	23 59	2 21	4 42
16	7 05	9 25	11 28	13 08	14 30	15 51	17 22	19 15	21 31	23 55	2 17	4 38
17	7 00	9 21	11 24	13 04	14 26	15 47	17 18	19 11	21 27	23 51	2 13	4 34
18	6 56	9 17	11 20	13 00	14 22	15 43	17 14	19 07	21 23	23 47	2 09	4 30
19	6 52	9 13	11 16	12 56	14 18	15 39	17 10	19 03	21 19	23 43	2 05	4 26
20	6 48	9 09	11 12	12 52	14 14	15 35	17 06	18 59	21 15	23 39	2 01	4 22
21	6 44	9 05	11 08	12 48	14 10	15 31	17 02	18 55	21 11	23 35	1 57	4 18
22	6 40	9 02	11 05	12 45	14 07	15 28	16 59	18 52	21 08	23 32	1 54	4 15
23	6 37	8 58	11 01	12 41	14 03	15 24	16 55	18 48	21 04	23 28	1 50	4 11
24	6 33	8 54	10 57	12 37	13 59	15 20	16 51	18 44	21 00	23 24	1 46	4 07
25	6 29	8 50	10 53	12 33	13 55	15 16	16 47	18 40	20 56	23 20	1 42	4 03
26	6 25	8 46	10 49	12 29	13 51	15 12	16 43	18 36	20 52	23 16	1 38	3 59
27	6 21	8 42	10 45	12 25	13 47	15 08	16 39	18 32	20 48	23 12	1 34	3 55
28	6 17	8 38	10 41	12 21	13 44	15 04	16 35	18 28	20 44	23 08	1 30	3 51
29	6 13	8 35	10 38	12 18	13 40	15 01	16 32	18 25	20 40	23 04	1 26	3 47
30	6 10	8 31	10 34	12 14	13 36	14 57	16 28	18 21	20 36	23 00	1 22	3 43
दिसं	6 06	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दिसं	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
1	8 27	10 30	12 10	13 32	14 53	16 24	18 17	20 32	22 56	1 18	3 39	6 02
2	8 23	10 26	12 06	13 28	14 49	16 20	18 13	20 28	22 52	1 15	3 36	5 58
3	8 19	10 22	12 02	13 24	14 45	16 16	18 09	20 24	22 48	1 11	3 32	5 54
4	8 15	10 18	11 58	13 20	14 41	16 12	18 05	20 20	22 44	1 07	3 28	5 50
5	8 11	10 14	11 54	13 16	14 37	16 08	18 01	20 16	22 40	1 03	3 24	5 46
6	8 07	10 10	11 50	13 12	14 33	16 04	17 57	20 12	22 36	0 59	3 20	5 42
7	8 03	10 06	11 46	13 09	14 29	16 00	17 53	20 08	22 32	0 55	3 16	5 38
8	7 59	10 02	11 42	13 05	14 25	15 56	17 49	20 04	22 28	0 51	3 12	5 34
9	7 55	9 58	11 38	13 02	14 21	15 52	17 45	20 00	22 24	0 47	3 08	5 30
10	7 52	9 55	11 35	12 58	14 18	15 49	17 42	19 57	22 20	0 43	3 05	5 27
11	7 48	9 51	11 31	12 54	14 14	15 45	17 38	19 53	22 16	0 39	3 01	5 23
12	7 44	9 47	11 27	12 50	14 10	15 41	17 34	19 49	22 12	0 35	2 57	5 19
13	7 40	9 43	11 23	12 46	14 06	15 37	17 30	19 45	22 08	0 31	2 53	5 15
14	7 36	9 39	11 19	12 42	14 02	15 33	17 26	19 41	22 04	0 27	2 49	5 11
15	7 32	9 35	11 15	12 38	13 58	15 29	17 22	19 37	22 00	0 23	2 45	5 07
16	7 28	9 31	11 11	12 34	13 54	15 25	17 18	19 33	21 56	0 19	2 41	5 03
17	7 24	9 27	11 07	12 30	13 50	15 21	17 14	19 29	21 52	0 15	2 37	4 59
18	7 20	9 23	11 04	12 26	13 46	15 17	17 10	19 25	21 48	0 11	2 33	4 55
19	7 16	9 19	11 00	12 22	13 42	15 13	17 06	19 21	21 44	0 07	2 29	4 51
20	7 12	9 15	10 56	12 18	13 38	15 09	17 02	19 17	21 40	0 03	2 25	4 47
21	7 08	9 11	10 52	12 14	13 34	15 05	16 58	19 13	21 36	23 59	2 21	4 43
22	7 04	9 07	10 48	12 10	13 30	15 01	16 54	19 10	21 32	23 55	2 17	4 39
23	7 00	9 03	10 44	12 06	13 26	14 57	16 50	19 06	21 28	23 51	2 13	4 35
24	6 56	9 00	10 40	12 02	13 22	14 53	16 47	19 02	21 25	23 47	2 09	4 31
25	6 52	8 56	10 36	11 58	13 18	14 49	16 43	18 58	21 21	23 43	2 05	4 27
26	6 49	8 52	10 32	11 54	13 15	14 45	16 39	18 54	21 17	23 39	2 01	4 23
27	6 45	8 48	10 28	11 50	13 11	14 42	16 35	18 50	21 13	23 35	1 57	4 20
28	6 41	8 44	10 24	11 44	13 07	14 38	16 31	18 46	21 09	23 31	1 53	4 16
29	6 37	8 40	10 20	11 42	13 03	14 34	16 27	18 42	21 05	23 27	1 49	4 12
30	6 33	8 36	10 16	11 38	12 59	14 30	16 23	18 38	21 01	23 23	1 45	4 08
31	6 29	8 32	10 12	11 34	12 55	14 26	16 19	18 34	20 57	23 19	1 41	4 04
दिसं	6 25	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

श्री दुर्गा चरित् एवं सप्तशती की महिमा

कलियुग में समस्त दुःखों एवं कष्टों के निवारण का एकमात्र उपाय भगवती देवी दुर्गा की उपासना ही शास्त्रों में बतलाया गया है। **"कलौ हि कार्य सिद्ध्यर्थमुपायं श्री दुर्गार्चनम्॥"** श्री दुर्गासप्तशती में वर्णित श्री दुर्गा जी के चरितों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। शुभ कार्यों में बार-बार पड़ने वाले विघ्नों की शान्ति होती है। विधिपूर्वक पाठ करने से जीवन के चारों क्षेत्रों-धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में मनोवाँछित फल प्रदान कराने वाली **मन्दाकिनी** है।

जो व्यक्ति चैत्र, आश्विनादि नवरात्रों में दीपावली, दशहरा, अष्टमी आदि पर्वों पर अथवा कोई आकस्मिक संकट उपस्थित हो जाने पर श्रद्धा भक्ति के साथ श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है। माँ दुर्गा की कृपा शक्ति से समस्त विघ्न दूर होकर मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो जाती है। पाठोपरान्त पाठ की दशांश संख्या में श्री दुर्गा हवन करने से शीघ्र ही कामना सिद्धि होती है।

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्म ग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रन्थ है। पं. पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा प्रणीत श्री दुर्गा सप्तशती के प्रस्तुत नवीन संशोधित संस्करण में मूल पाठ के साथ हिन्दी टीका, श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ विधि, श्री दुर्गा पाठ सार कथा, श्री नवदुर्गा महिमा, देवी कवच, अर्गला स्तोत्र, तीनों रहस्य, नवचण्डी, शतचण्डी-विधान, श्री सप्तशती के प्रत्येक अध्याय के मन्त्रों की आहुतियां हवन विधि सहित, अनुष्ठान हेतु अनेक **काम्य तान्त्रिक प्रयोग**, कनकधारा स्तोत्र, आरतियां इत्यादि अनेक नवीन विषय जो अन्य किसी भी अन्य प्रचलित सप्तशती में आप नहीं पाएँगे॥ धर्म पारायण प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय एवं उपयोगी पुस्तक। इसमें दिए गए तान्त्रिक प्रयोगों की सहायता से मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति हो सकती है। श्रीदुर्गासप्तशती (सरल भाषा में) भी उपलब्ध है।

पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।
भेंट—65 रु., डाक व्यय अलग॥

नोट—कार्यालय के नियमानुसार 50 रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

शिवमन्त्रावली भा. टी.

प्रस्तुत बृहद् पुस्तक **"शिवमन्त्रावली"** में भगवान् **शिव** के अतिरिक्त अन्य प्रमुख देवी-देवताओं जैसे गौरीपुत्र गणेश, भगवान् विष्णु, महालक्ष्मी, भगवान् कृष्ण, माता-गायत्री, श्री राम, माता सरस्वती देवी, श्रीदुर्गा माता, श्रीहनुमान, भगवान् सूर्य, ब्रह्म मन्त्र, यक्षिणी, बगुलामुखी, महाकाली, अन्नपूर्णा देवी इत्यादि देवी-देवताओं के प्रमुख जपनीय मन्त्रों का अपूर्व संग्रह किया गया है।

इसके साथ ही शिवलिङ्ग का प्रादुर्भाव, सृष्टिक्रम, जपानुष्ठान के नियम, विविध कल्याणकारी मन्त्र, महामृत्युञ्जय मन्त्रों के विभिन्न स्वरूप बीज मन्त्रों का रहस्य, **यन्त्र निर्माण विधि**, प्राण-प्रतिष्ठा, **भगवान् शिव के त्रिनेत्र, सर्पादि रहस्यमय प्रतीक चिह्न, रूद्राक्ष महिमा, शिवोपासना से अनिष्ट ग्रहों की शान्ति,** महाशिवरात्रि व्रत माहात्म्य, द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग, मन्त्र और स्तोत्र में अन्तर, विविध स्तोत्र, अभीष्ट वर, कन्या प्राप्ति प्रयोग आदि अनेक विषयों का समावेश दिया गया है। मूल्य 150 रु., फोन—0181-2457959

मंगवाने का पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-8 (पं.)

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी ३१°।१९ अक्षांश जालन्धर, एवं २३°।३० अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यतः अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन २८ की अपेक्षा २९ होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की १ तारीख से २८ फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **१ मार्च से ३१ दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

२९ फरवरी के लग्न मान के लिए २८ फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**—ता. १६ अप्रैल, १९९५ को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. १६ अप्रैल को ७.२९ पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +२ मिनट प्राप्त हुए। अतः सन् १९९५ में मेष लग्न ७.३१ पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९९३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१९९४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
१९९६A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९६B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१	–१
१९९७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१९९८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०००A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०००B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	—१
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	—१
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	—१
२००९	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०
२०१०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल-मई (वैशाख) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३१	६ ००
15	२	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	३	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	४	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	५	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	६	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	७	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	८	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	९	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	१०	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	११	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१२	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१३	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१४	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१५	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१६	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१७	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१८	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	१९	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२०	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२१	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२२	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२३	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२४	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२५	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२६	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२७	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२८	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	२९	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३०	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	ज्ये.	५ ३९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मई-जून (ज्येष्ठ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३३	९ ४७	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ ०९	२१ २९	२३ ३४	०१ १५	२ ४०	४ ०२	५ ३५
15	२	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	३	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	४	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	५	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	६	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	७	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	८	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	९	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	१०	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	११	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	१२	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१३	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१४	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१५	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१६	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१७	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१८	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१९	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	२०	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०० ०१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२१	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२२	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२३	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२४	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२५	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२६	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२७	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२८	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२९	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	३०	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३१	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३२	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ.	५ २८	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	०० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८ ०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	भाद्र	६ ०१	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५	५ ५७
17	२	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	३	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	४	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	५	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	६	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	७	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	८	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	९	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	१०	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	११	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	१२	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१३	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१४	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१५	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१६	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं	१७	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१८	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१९	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १५	० १०	२ २४	४ ४६
4	२०	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२१	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२२	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२३	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२४	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२५	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२६	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२७	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२८	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२९	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	३०	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३१	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	आ.	६ १५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्टू. (आश्विन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४	६ १५
17	२	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	३	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	४	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	५	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	६	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	७	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	८	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	९	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	१०	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	११	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	१२	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१३	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१४	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१५	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्टू	१६	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१७	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१८	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१९	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	२०	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२१	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२२	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२३	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२४	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२५	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२६	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२७	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२८	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२९	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	३०	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३१	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अक्तू.-नवं. (कार्तिक) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्तूबर	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७
16	मा.	६ ५९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	३०	७ २५	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१
16	पौ.	७ २१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी दिसं.-जन. (पौष) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	२	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	३	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	४	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	५	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	६	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	७	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	८	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	९	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	१०	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	११	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१२	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१३	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१४	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ०६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१५	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ०२	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१६	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१७	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१८	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	१९	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२०	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२१	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२२	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२३	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२४	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२५	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२६	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२७	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२८	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	२९	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जन.-फर. (माघ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	३०	७ १७	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२
13	फा.	७ १४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५६	९ १८	१० ५१	१२ ४५	१४ ५९	१७ २२	१९ ४२	२२ ००	० २२	२ ४२	४ ४६	६ २७
25	१३	७ ५३	९ १५	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
26	१४	७ ५०	९ १२	१० ४५	१२ ३९	१४ ५३	१७ १६	१९ ३६	२१ ५४	० १६	२ ३६	४ ४०	६ २१
27	१५	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३६	६ १८
28	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३२	६ १४
29	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २८	६ ११
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	३१	६ ०८	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३
14	वै.	६ ०४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश **३१।१९** पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (—) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। उदाहरण स्वरूप—मान लो आपने **१६** जुलाई, **२००७** को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें **१६** जुलाई को कन्या लग्न **१२।४१** पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में दिल्ली के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें —**८** मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., **१२।४१** (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३** (घं. मिं.) पर कन्या लग्न समाप्ति काल प्राप्त हुआ। कन्या लग्न का समाप्ति काल ही तुला लग्न का प्रारम्भकाल होगा। नोट—नीचे लग्न संस्कार तालिका में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। पं. विवेक शर्मा.

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	−५	−५	−५	−३	−३	−६	−५	−५	−४	−५	−५	−५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	−१	−३	−४	−१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	−१	−५	−४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	−१५	−१२	−१३	−१५	−२१	−२९	−३४	−३७	−३६	−३२	−२६	−२०
अलीगढ़	−४	−३	−३	−५	−७	−१३	−१६	−१७	−१७	−१३	−११	−७
अयोध्या	−१८	−१८	−१५	−१९	−२१	−२५	−२८	−३०	−२८	−२७	−२४	−१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	−४	−६	−७	−७	−४	+१	+४
आगरा	−४	−२	−३	−६	−७	−१२	−१५	−१६	−१६	−१३	−१०	−६
अगरतला	−५०	−४७	−४६	−५३	−६०	−६७	−७५	−७८	−७६	−७३	−६४	−५३
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	+३	−८	−१४	−१९	−१७	−१०	−१	+७
ऊना (हि.प्र.)	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−३
उधमपुर	−२	−२	−२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१३	+१६	+१४	+८	+०	−७	−१४	−१९	−१७	−१०	−२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	−४	−८	−६	−१	+६	+१३
करनाल	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−४	−३
कालका	−५	−५	−५	−४	−४	−५	−६	−६	−७	−७	−४	−३
कुरुक्षेत्र	−४	−३	−३	−४	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−३	−३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	−१	−१	+१	−०	−०	−०	−०	−१
कोटखाई	−७	−७	−७	−७	−७	−८	−७	−७	−७	−६	−६	−७
कोटा	+९	+११	+१०	+५	−१	−६	−११	−१४	−१३	−८	−२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	−०	−०	−१	+०	−०	−०	−०	−०	−१
काठमण्डू	−३२	−३१	−३१	−३०	−३३	−३८	−४०	−४२	−४२	−४०	−३६	−३३
कोलकत्ता	−३७	−३२	−३५	−४०	−४९	−५८	−६४	−६९	−६८	−६१	−५३	−४४
कानपुर	−११	−१०	−१०	−१३	−१८	−२२	−२५	−२७	−२६	−२१	−१७	−१३
कांगड़ा	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४
कुल्लू	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−५	−४	−४	−४	−५	−५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कठुआ	−२	−२	−२	−१	−०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	−१	−१	−१	−०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	−२	−३	−३	−२	−२	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−३
ग्वालियर	−२	+१	+०	−५	−९	−१२	−१६	−१८	−१७	−१३	−८	−५
गुरदासपुर	−१	−१	−१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	−२३	−२१	−२२	−२४	−२७	−३२	−३५	−३७	−३६	−३२	−२७	−२४
गुड़गांव	−१	−१	−१	−३	−३	−७	−१०	−११	−११	−९	−६	−४
गोहाटी	−५५	−४८	−५३	−५५	−६१	−६८	−७२	−७५	−७३	−६९	−६४	−६०
गाज़ियाबाद	−२	−१	−१	−२	−२	−७	−९	−११	−११	−९	−६	−३
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गाया (बिहार)	−२६	−१८	−२३	−२७	−३३	−४२	−४७	−५१	−४१	−४४	−३७	−३२
चण्डीगढ़	−५	−४	−४	−५	−५	−६	−६	−६	−५	−५	−५	−५
चिन्तपूर्णी	−२	−१	−२	−२	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−१
चम्बा	−६	−६	−६	−५	−४	−२	+१	+२	+१	+०	+३	−४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	−३	−७	−९	−९	−७	−२	+३
ज्वालामुखी	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४
जम्मू	−१	−२	−१	−१	+१	+४	+६	+७	+६	+५	+२	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	−२	−१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	−१	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	−२	+१	+०	−६	−११	−१७	−२२	−२५	−२३	−१८	−१३	−७
जगन्नाथपुरी	−२२	−१६	−१३	−२६	−३७	−४९	−५९	−६४	−६३	−५५	−४४	−३२
दिल्ली	−२	−१	−१	−४	−४	−८	−११	−१२	−१२	−१०	−७	−५
दुर्ग (म. प्र.)	−६	−०	−२	−१०	−१९	−२७	−३७	−४२	−४२	−३१	−२१	−१४
देहरादून	−१०	−१०	−९	−१०	−९	−११	−१२	−१२	−१३	−११	−९	−९
धर्मशाला	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५६	९ १८	१० ५१	१२ ४५	१४ ५९	१७ २२	१९ ४२	२२ ००	० २२	२ ४२	४ ४६	६ २७
25	१३	७ ५३	९ १५	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
26	१४	७ ५०	९ १२	१० ४५	१२ ३९	१४ ५३	१७ १६	१९ ३६	२१ ५४	० १६	२ ३६	४ ४०	६ २१
27	१५	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३६	६ १८
28	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३२	६ १४
29	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २८	६ ११
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	३१	६ ०८	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३
14	वै.	६ ०४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (—) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। उदाहरण स्वरूप—मान लो आपने १६ जुलाई, २००७ को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें १६ जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में दिल्ली के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें —८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें १२।३३ (घं. मिं.) पर कन्या लग्न समाप्ति काल प्राप्त हुआ। कन्या लग्न का समाप्ति काल ही तुला लग्न का प्रारम्भकाल होगा। नोट—नीचे लग्न संस्कार तालिका में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। पं. विवेक शर्मा.

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	-५	-५	-५	-३	-३	-६	-५	-५	-४	-५	-५	-५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	-१	-३	-४	-१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	-१	-५	-४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	-१५	-१२	-१३	-१५	-२१	-२९	-३४	-३७	-३६	-३२	-२६	-२०
अलीगढ़	-४	-३	-३	-५	-७	-१३	-१६	-१७	-१७	-१३	-११	-७
अयोध्या	-१८	-१८	-१५	-१९	-२१	-२५	-२८	-३०	-२८	-२७	-२४	-१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	-४	-६	-७	-७	-४	+१	+४
आगरा	-४	-२	-३	-६	-७	-१२	-१५	-१६	-१६	-१३	-१०	-६
अगरतला	-५०	-४७	-४६	-५३	-६०	-६७	-७५	-७८	-७६	-७३	-६४	-५३
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	+३	-८	-१४	-१९	-१७	-१०	-१	+७
ऊना (हि.प्र.)	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३
उधमपुर	-२	-२	-२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१३	+१६	+१४	+८	+०	-७	-१४	-१९	-१७	-१०	-२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	-४	-८	-६	-१	+६	+१३
करनाल	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-४	-३
कालका	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-६	-६	-७	-७	-४	-३
कुरुक्षेत्र	-४	-३	-३	-४	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-३	-३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	-१	-१	+१	-०	-०	-०	-०	-१
कोटखाई	-७	-७	-७	-७	-७	-८	-७	-७	-७	-६	-६	-७
कोटा	+९	+११	+१०	+५	-१	-६	-११	-१४	-१३	-८	-२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	-०	-०	-१	+०	-०	-०	-०	-०	-१
काठमण्डू	-३२	-३१	-३१	-३०	-३३	-३८	-४०	-४२	-४२	-४०	-३६	-३३
कोलकत्ता	-३७	-३२	-३५	-४०	-४९	-५८	-६४	-६९	-६८	-६१	-५३	-४४
कानपुर	-११	-१०	-१०	-१३	-१८	-२२	-२५	-२७	-२६	-२१	-१७	-१३
कांगड़ा	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४
कुल्लू	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-५	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कठुआ	-२	-२	-२	-१	-०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	-१	-१	-१	-०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-३
ग्वालियर	-२	+१	+०	-५	-९	-१२	-१६	-१८	-१७	-१३	-८	-५
गुरदासपुर	-१	-१	-१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	-२३	-२१	-२२	-२४	-२७	-३२	-३५	-३७	-३६	-३२	-२७	-२४
गुड़गांव	-१	-१	-१	-३	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-६	-४
गोहाटी	-५५	-४८	-५३	-५५	-६१	-६८	-७२	-७५	-७३	-६९	-६४	-६०
गाज़ियाबाद	-२	-१	-१	-२	-२	-७	-९	-११	-११	-९	-६	-३
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	-२६	-१८	-२३	-२७	-३३	-४२	-४७	-५१	-४१	-४४	-३७	-३२
चण्डीगढ़	-५	-४	-४	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
चिन्तपूर्णी	-२	-१	-२	-२	-३	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-१
चम्बा	-६	-६	-६	-५	-४	-२	+१	+२	+१	+०	+३	-४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	-३	-७	-९	-९	-७	-२	+३
ज्वालामुखी	-५	-५	-६	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४
जम्मू	-१	-२	-१	-१	+१	+४	+६	+७	+६	+५	+२	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	-२	-१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	-१	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	-२	+१	+०	-६	-११	-१७	-२२	-२५	-२३	-१८	-१३	-७
जगन्नाथपुरी	-२२	-१६	-१३	-२६	-३७	-४९	-५९	-६४	-६३	-५५	-४४	-३२
दिल्ली	-२	-१	-१	-४	-४	-८	-११	-१२	-१२	-१०	-७	-५
दुर्ग (म. प्र.)	-६	-०	-२	-१०	-१९	-२७	-३७	-४२	-४२	-३१	-२१	-१४
देहरादून	-१०	-१०	-९	-१०	-९	-११	-१२	-१२	-१३	-११	-९	-९
धर्मशाला	-५	-५	-६	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन(हि.प्र.)	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-५	-६
नंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
नैनीताल	-१३	-११	-१२	-१४	-१३	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१४	-११
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+७	+५	+४	-१४	-२३	-३२	-३५	-३३	-२७	-७	-६
नदौन(हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-३	-३	-४	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-२	-१	+१	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-२०	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	-२९	-२६	-२३	-३०	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-२	-२	-३	-५	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१६	-१६	-२३	-२६	-३३	-३८	-४१	-४१	-३७	-३२	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-१०	-११	-१३	-१२	-१५	-१७	-१९	-१९	-१७	-१३	-११
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-५	-५	-७	-८	-१२	-१४	-१५	-१५	-१४	-११	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१८	-२०	-२८	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	+०	-५	-८	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+८	+२	-३	-१३	-२०	-२३	-२२	-१७	-९	-१
मेरठ(उ.प्र.)	-६	-३	-४	-७	-४	-७	-१०	-११	-११	-१०	-७	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुरादाबाद	-८	-७	-७	-८	-१०	-१४	-१६	-१८	-१७	-१४	-११	-८
मण्डी (हि.प्र.)	-७	-७	-७	-७	-७	-६	-४	-४	-४	-६	-६	-६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	-२	+०	-१	-४	-६	-१०	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
मद्रास	+१०	+१८	+१६	+१	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-१	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-३	-३	-४	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-३
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रायपुर (छत्ती.)	-८	-२	-४	-१२	-२१	-२९	-३९	-४४	-४४	-३४	-२३	-१६
रोहतक	-१	+१	+१	-२	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
लुधियाना	-२	-२	-१	-२	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-१२	-१२	-१६	-२२	-२४	-३०	-३०	-३०	-२७	-२३	-१८
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	-३	-१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-६	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-६	-५	-७	-६	-७	-८	-९	-९	-७	-५	-६
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-७	-७	-९	-८	-१०	-११	-११	-१२	-११	-१०	-९
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+४	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-३	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-२	-३
हमीरपुर	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+२	+४	+३	+१	+०	-२	-३	-४	-४	-२	-१	+१

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

टैक्निकल पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
सट्टे का कल्प वृक्ष (मंदा–तेजी)	120 रु.
मोटर मैकेनिक गाईड	50 रु.
मोटर वाईडिंग	40 रु.
पशु चिकित्सा	40 रु.
विवाहित आनन्द	35 रु.
पत्नी पथ प्रदर्शक	35 रु.
कष्टनिवारक उपाय–टोटके	100 रु.
स्वर लिपि संग्रह	75 रु.
व्यापार रत्न	350 रु.
तबला वादन कोर्स	80 रु.
Dictionary (Big)	250 रु.
Dictionary (Med.)	120 रु.
ताश के जादू	40 रु.
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज (बड़ी)	150 रु.
इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स	150 रु.
कम्पयूटर कोर्स (बड़ा)	200 रु.
इलैक्ट्रिक गाईड	120 रु.
फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग	60 रु.
जूडो कराटे सीखें	30 रु.
हारमोनियम सीखिए	60 रु.
होम टेलरिंग कोर्स	50 रु.
सिलाई कटाई शिक्षा	50 रु.
101 मैजिक ट्रिक्स	48 रु.
मोटर ड्राइवरी शिक्षा	40 रु.
हिन्दी उर्दू टीचर	25 रु.
मिलिंग मशीन	45 रु.
महिलाओं के उद्योग	120 रु.
पोल्ट्री फार्मिंग	50 रु.
मॉडर्न सोप इन्डस्ट्रीज	300 रु.
कॉस्मेटिक्स इन्डस्ट्रीज	200 रु.
इन्वर्टर सर्विसिंग	80 रु.
ए. सी. मोटर वाईडिंग	80 रु.
स्टीम बायलर्स और इंजन	100 रु.
आर्य संगीत रामायण (नाटक)	111 रु.

घर में रखने योग्य पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
बनाइये खाना वेजीटेरियन	75 रु.
खाना खजाना	250 रु.
कुकरी बुक (बड़ी)	100 रु.
आचार, चटनी व मुरब्बे	40 रु.
भारतीय व्यंजन	25 रु.
आलू पनीर के व्यंजन	40 रु.
माइक्रोवेव कुकिंग	40 रु.
फल सब्जी से चिकित्सा	40 रु.
चाइनिज कुकरी	35 रु.
शहनाज ब्यूटी बुक	140 रु.
योगासन चिकि. स्वा. रामदेव	125 रु.
प्राणायाम चिकित्सा	50 रु.
ब्यूटी पार्लर कोर्स (रंगीन)	70 रु.
हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार	35 रु.
55 चालीसा एवं आरती संग्रह	40 रु.

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
एलोपैथिक चिकि. (कोकचा)	200 रु.
वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा	180 रु.
अमृतसागर	200 रुपए
माधवनिदान	100 रुपए
स्वदेशी चिकित्सा सार	70 रुपए
घर का वैद्य	60 रुपए
रसराज महोदधि	250 रुपए
सूर्य शक्ति से ईलाज	25 रुपए
आयुर्वेदिक गाईड	150 रुपए
अनुपम आयुर्वेदिक गाईड	65 रुपए
एलोपैथिक मैडी. गाईड	135 रुपए
न्यू एलोपैथिक मैडी. गाईड	40 रुपए
होम्योपैथी द्वारा ईलाज	50 रुपए
योगासन एवं साधना	50 रुपए
वृहद् बूटी प्रचार	50 रुपए
जड़ी–बूटियाँ	30 रुपए
आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ)	170 रु.
यूनानी चिकित्सा सार (वैद्यनाथ)	150 रु.
सचित्र योगासन व ध्यान	95 रु.
वनौषधि शतक (वैद्यनाथ)	100 रु.
भैषज्य भास्कर	50 रु.
ईलाजुलगुर्बा	85 रु.
शरीर रचना क्रिया वि.	50 रु.
भोजन द्वारा चिकित्सा	40 रु.
आयुर्वेद मंथन	30 रु.
महत्त्वपूर्ण जड़ी–बूटियां	200 रु.
रसेन्द्र सार संग्रह	245 रु.
गुणकारी जड़ी–बूटियां	60 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	60 रु.
होम्योपैथिक चिकित्सा	70 रु.
भाव प्रकाश निघन्टु	135 रु.
योग के अद्भुत चमत्कार	50 रु.
आपका आरोग्य आपके हाथ	55 रु.
योगासन	30 रु.
प्राकृतिक चिकित्सा	30 रु.
घरेलू इलाज	30 रु.
चरक संहिता (सम्पूर्ण)	150 रु.
आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान	100 रु.
84 योगासन व स्वास्थ्य	40 रु.
प्राणायाम कुण्डलिनी हठयोग	50 रु.

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र

पुस्तक	मूल्य
काली किताब	500 रु.
काली किताब (छोटी)	200 रु.
महाइन्द्रजाल	500 रु.
असली प्राचीन इन्द्रजाल	100 रु.
शाबर मंत्र विद्या	50 रु.
तंत्र–मंत्र–यंत्र रहस्य	300 रु.
यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र (छोटी)	40 रु.
इस्लामी तंत्र शास्त्र	60 रु.
हिन्दू तंत्र शास्त्र	105 रु.
श्री दुर्गा साधना तंत्र	125 रु.
भारतीय तंत्र विद्या	200 रु.
अनुभूत यंत्र तंत्र ओर टोटके	120 रु.
बगुलामुखी रहस्यम्	40 रु.
कालिका सिद्धि	150 रु.
सिद्ध शाबर मन्त्र	60 रु.
तांत्रिक सिद्धियां	60 रु.
काली तंत्र शास्त्र	75 रु.
तारा तंत्र शास्त्र	75 रु.
तांत्रिक मुद्रा विज्ञान	60 रु.
तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग	30 रु.
यंत्र–मंत्र–तंत्र टोटके	40 रु.
छिन्नमस्तका तंत्र शास्त्र	80 रु.
ब्रह्मास्त्र विद्या व बगुलामुखी सा.	700 रु.
महाकाल संहिता	600 रु.
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	40 रु.
11000 गंडे ताबीज और टोटके	200 रु.
महाशक्तिशाली टोने टोटके	200 रु.
मंत्र रहस्य	80 रु.
यंत्र विधान	150 रु.
यंत्र विद्या के 121 प्रयोग	75 रु.
नवग्रह अनुकूलन तंत्र	50 रु.
धन प्रदायक साधनाएं	50 रु.
ग्रह नक्षत्र तंत्रम्	60 रु.
श्री यन्त्रम् महिमा	60 रु.
मनोकामना सिद्धि	60 रु.
वशीकरण मन्त्र	60 रु.
चीन बंगाल का जादू	30 रु.
कामाक्षा मन्त्र	30 रु.
सूर्य तन्त्रम्	50 रु.
कामाख्या उपासना	60 रु.
रुद्रायमल तंत्र (बड़ा)	150 रु.
महाविद्या मंत्र तंत्र	35 रु.
परमसिद्ध 121 चमत्कारी यन्त्र	80 रु.

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
गण्डमूल नक्षत्र शांति प्रयोग	40 रु.
कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति	20 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	30 रु.
कर्मकाण्ड प्रदीप:	95 रु.
विवाह पद्धति	55 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)	25 रु.
कर्मकाण्ड पद्धति	125 रु.
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	65 रु.
नित्यपूजा (क्यों और कैसे ?)	150 रु.
कर्मकाण्ड भास्कर	100 रु.
कर्मकाण्ड भारती	100 रु.
पूजा पद्धति	50 रु.
पूजा भास्कर	50 रु.
हवन रहस्यम्	50 रु.
नवग्रह पूजा विधान (नवग्रह उपायों सहित)	30 रु.
नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति	55 रु.
रुद्राष्टाध्यायी भा. टी.	60 रु.
श्रीसूक्तम् व कनकधारा	20 रु.
महालक्ष्मी पूजन विधान	25 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा टीका)	70 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा) बड़ा	125 रु.
सनातन संस्कार विधि	150 रु.
षोडश संस्कार पद्धति	120 रु.
श्राद्ध विवेक	150 रु.
नित्यकर्म पद्धति	55 रु.
पितृकर्म पद्धति	75 रु.
सर्वदेव पूजा पद्धति	20 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	200 रु.
हवन पद्धति	25 रु.
वशिष्ठी हवन पद्धति	25 रु.
आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.)	40 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा (लघु)	100 रु.
अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्	40 रु.
सर्व व्रतोद्यापन प्रकाश	100 रु.
नित्यकर्म पूजा प्रकाश	60 रु.
दुर्गार्चन पद्धति	150 रु.

अपने आर्डर के साथ 50/- रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता–

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

फोन–2457959

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LL.B.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा **गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का संक्षिप्त विवरण लिख रहे हैं—

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्मराग, हिन्दी में माणक, मानिक, अंग्रेज़ी में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि—असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (२) **कांच के पात्र में रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती** दिखाई देंगी। (३) गाय के दूध में असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि—माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा **नक्षत्रों, रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३; ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र—ॐ, ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान को विधिपूर्वक** अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, हिन्दी-पंजाबी में मोती एवं अंग्रेज़ी में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान—शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा—(१) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (२) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि अथवा सफेद पुखराज धारण किया जा सकता है।**

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति—चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि—मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'** के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न—चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)—यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे संस्कृत में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी में कोरल (Coral) कहते हैं।**

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह मंगल है।

परीक्षा—(१) **असली मूंगे** को खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा** यदि गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता आदि की प्राप्ति होती है। इसके **अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी का प्रयोग किया जाता है। मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न वालों** को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र

में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र—ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

"पन्ना" बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। संस्कृत में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा—(१) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (२) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण—'पन्ना' धारण करने से बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद माना जाता है। पन्ना सुख एवं आरोग्यकारक भी है। यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।

धारण विधि—यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र—ॐ, ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु—रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। संस्कृत में इसे पुष्प राजा, हिन्दी में पुखराज, व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि—जो पुखराज स्पर्श में चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त हो वह उत्तम कोटि का माना जाता है।

परीक्षा—(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण—पुखराज धारण करने से बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु की वृद्धि होती है। वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के विवाहसुख की बाधा को दूर करने में सहायक होता है।

औषधी प्रयोग—इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि में लाभदायक होता है।

धारण विधि—पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं "ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः" के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक, राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न—सुनैला इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व 'हीरा' है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, हिन्दी में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान—अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा—(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण—हीरे में वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है। इसके पहनने से वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य में लाभ होता है। वैवाहिक सुख में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण—हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे—दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, ह्रदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः) का १६ हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।

शुक्र के उपरत्न—(1) फिरोज़ा नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)– यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। हिन्दी में नीलम तथा अंग्रेजी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान—असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा—(i) असली नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।

गुण—नीलम धारण करने से धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति—नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि—नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं पुष्य, उभा, चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों में शनि के बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः मन्त्र से २३००० की संख्या में अभिमन्त्रित करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न-गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेजी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि—सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि—गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र—''ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः''

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेजी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया ४ रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान—(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि—लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र—''ॐ स्रां स्रीं, स्रौं, सः केतवे नमः''

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूर्मवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'रत्न ज्योतिष विज्ञान' पुस्तक 35 रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। बृहदरत्न शास्त्र, मूल्य १०० रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।

मानव जीवन को सुधारने वाले धार्मिक ग्रन्थ

गो. तुलसीकृत रामायण (भाषा–टीका)

आठ काण्ड वाली सम्पूर्ण रामायण जिसमें गो० स्वामी तुलसी कृत दोहे व चौपाइयों को इतनी सरल भाषा में दिया गया है कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी श्रीराम चरित् की महिमा को हृदयंगम कर सकता है। इस पवित्र रामायण को पठन-पठनार्थ घर में रखना अथवा दान-दहेज में देना पुण्य का काम समझा जाता है। सुन्दर छपाई, चित्रों सहित व मोटे अक्षरों में इस रामायण की कीमत 251/- रु.। आर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम रामायण का मूल्य 150 रु. (डाक व्यय अलग)

श्री वाल्मीकि रामायण (सचित्र)

हिन्दी भाषा में सुन्दर मोटे अक्षरों में प्राप्य हैं। (मूल्य 250 रु.) ये ग्रन्थ पंजाबी भाषा में भी उपलब्ध हैं। मूल्य 800 रुपए। डाक व्यय अलग।

श्री प्रेम सागर (सचित्र)

प्रेम, भक्ति और भावना से परिपूर्ण भगवन् श्री कृष्ण की बाल लीलाओं तथा उनके जीवन चरित्रों का सजीव एवं सचित्र वर्णन जिसे धर्म में श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ना चाहिए। मूल्य 100 रुपए, डाक व्यय अलग।

सुखसागर बड़ा

श्रीमद्भागवत पुराण के 12 स्कन्धों का सरल हिन्दी अनुवाद जिसमें भगवान् विष्णु के 24 अवतारों का विशद वर्णन, शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षत को श्री कृष्ण, इत्यादि तत्त्वों को उदाहरण देकर समझाया गया है। इसके श्रवण और मनन मात्रा से परम शान्ति प्राप्त हो जाती है। मूल्य सचित्र 250 रुपए आर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। **मध्यम सुखसागर—मूल्य 100 रु.।**

सम्पूर्ण 'कार्तिक माहात्म्य'

प्रस्तुत पुस्तक में कार्तिक मास में व्रत, स्नान, पूजन आदि के विशेष नियम, तुलसी एवं श्रीगङ्गा की उत्पत्ति, तुलसी, आँवला, पीपल, करवा-चौथ, अहोई व्रत तथा कार्तिक मास में दीप दान एवं मार्जन का महत्त्व, मुख्य पर्वों जैसे—एकादशी, धन, त्र्योदशी, दीपावली, अन्नकूट, भाई-दूज, भीष्मपंचक, कार्तिक व्रत उद्यापन, तुलसी विवाह विधि, तुलसी स्तोत्र एवं आरती और भगवान की आरतियां संग्रहीत हैं। मूल्य—25 रु.

अष्टावक्र गीता

चित्त के सन्देहों को दूर करने एवं ज्ञान के मुमुक्षयों को तमोमय अंधकार नष्ट करने तथा शान्त, अद्वैत और निर्मल आत्मा के लिए इस पुस्तक का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। (मूल्य 120 रु.)

श्री दुर्गा सप्तशती (भाषाटीका)

भगवती देवी पर यह पुस्तक अनेक वर्षों से अप्रकाशित रही है जोकि अब पं० देवी दयालु ज्योतिष कार्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। इसमें दुर्गा हवन विधि, सिद्ध सम्पुट मन्त्र नवार्ण, दुर्गा पाठ, शतचण्डी विधि श्री दुर्गा पाठाध्याय के अतिरिक्त और भी बहुत विशेषताओं का समावेश कर दिया गया है। मूल्य केवल 55 रुपए। सजिल्द 65 रुपए।

श्री हरिवंश पुराण

नि:सन्तान दम्पत्ति को सन्तान प्रदान करने वाला, निर्धन को धन देने वाला और महापातकी मनुष्य के सब पापों का नाश कर देने में समर्थ ये 'हरिवंश पुराण' सुनने से अथवा पढ़ने से कलियुग में व्यक्ति महापापों से भी मुक्त हो जाता है।

मूल्य 350 रुपए।

श्रीमद्भगवत् गीता (सचित्र)

भगवद् गीता विश्व ज्ञान का अपूर्व भण्डार है जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। अर्जुन को दिया गया भगवान् कृष्ण का परम ज्ञान जो प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। 18 अध्याय वाली महात्म्य व अनेक आरतियों सहित यह पुण्य ग्रन्थ आज ही मंगवाएँ। मूल्य 120 रु.।

चारों वेद (भा. टी.)

ऋग्वेद-4 खण्डों में, यजुर्दवेद-1 खण्ड, अर्थर्ववेद-2 खण्ड, समावेद-1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। मूल्य सम्पूर्ण सैट-500 रु.।

श्री शिव महापुराण (बड़ा) सचित्र

जिसमें शिव महिमा, पार्थिव, पूजन, शिव पूजन विधि, सृष्टि वर्णन, योग वर्णन इत्यादि पौराणिक कथाओं सहित विस्तृत वर्णन दिया गया है। शिव-भक्ति में श्रद्धा रखने वालों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है। **मूल्य केवल 200 रु.।** मनीआर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। डाक व्यय पृथक।

शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.) 25/-

कुछ अन्य उपयोगी ग्रन्थ

ग्रन्थ	मूल्य
श्रीमद्देवी भागवत पुराण	200/-
श्री विष्णु पुराण	175/-
श्री विश्वकर्मा महापुराण	150/-
योग वशिष्ठ (दो भाग)	500/-
व्यापार रत्न	350/-
धर्मसिन्धु (भाषा टीका)	350/-
निर्णयसिन्धु (भाषा टीका)	450/-
व्रतराज	425/-
चाणक्य नीति	40/-
विदुर नीति	50/-
महामृत्युञ्जय साधना	60/-
श्री गरुण पुराड़ (प्रेतकल्प)	60/-
कर्मकाण्ड कुसुमाञ्जली	35/-
कर्मकाण्ड प्रदीप:	95/-
कर्मठगुरु	85/-
कवच संग्रह	30/-
भद्रबाहु संहिता (मंदा-तेजी पर)	150/-
लाल किताब गुटका	135/-
मंत्र महोदधि	450/-
षोडश संस्कार पद्धति	80/-
वास्तु शान्ति प्रयोग	25/-
मन्त्र सागर	100/-
बगुलामुखी उपासना	40/-
मंत्र द्वारा कामना सिद्धि	40/-
मंत्र द्वारा रोग निवारण	60/-
मंत्र शक्ति	40/-
मनोकामना पूरक मंत्र	60/-
वृहद् कौवा तंत्र	30/-
सूर्यशक्ति से इलाज	25/-
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	40/-
आरती संग्रह ग्लेजचित्र	30/-
योग वसिष्ठ महारामायण	150/-
55 चालीसा संग्रह आरतियों सहित	40/-
गरुड़ पुराण भा. टी.	60/-
विशाल हस्त सामुद्रिक	100/-
वैशाख महात्म्य	25/-
विशाल भृगु संहिता पद्धति	250/-
पं. देवीदयालु का राशिफल	30/-
माघ महात्म्य	25/-
चन्द्र हस्त विज्ञान	225/-
कार्तिक महात्म्य	25/-
ज्योतिष सर्व संग्रह	45/-
वशिष्ठी हवन पद्धति	25/-
असली आल्हाखण्ड	101/-
विवाहपद्धति देवीदयालु	50/-
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	65/-
सूर्य पुराण (भा. टी.)	60/-
हस्त रेखा विज्ञान	60/-
सूर्य उपासना	60/-
तान्त्रिक सिद्धियाँ	60/-
रामायण तर्ज राधेश्याम	150/-
मन्त्र सिद्धि	35/-
श्री हरिवंश पुराण (मध्यम)	125/-
श्रीगणेश महापुराण	225/-
मनुस्मृति	60/-
देवी-देवता सिद्धि	50/-
कर्मकाण्ड पद्धति	125/-
भजन सरोवर	100/-
लाल किताब (हिन्दी)	800/-
शिव मंत्रावली	150/-

अपने आर्डर के साथ 50/- रुपए पेशगी अवश्य भेजें। अपना नाम व पता साफ पूरा लिखें। वी. पी. द्वारा मंगवाने का पता—

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर

फोन—2457959